महाराणा सर्दारसिंह,

सत्रहवां प्रकरण – १८८९ – १९०८.

विषय.	पृष्ठांक.
जानी बिहारीलालकी कारगुज़ारी और उनकी उदयपुरसे रवानगी, और प्रिन्स ऑफ़ वेल्सकी मुलाक़ातके लिये महाराणाका बम्बई पधारना वगैरह हाल	२१४८ – २१५२
हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल लॉर्ड नॉर्थब्रुकका उदयपुर में आना वगैरह हाल	२१५२ – २१५३
ईडरके महाराजा केसरीसिंहका उदयपुर आना, और कृष्णगढ़के सम्बन्धकी बातचीत, गोस्वामी गिरधरलालकी सरकशी दूर करनेको नाथद्वारेपर फ़ौजकशी, नाथद्वारेका नया प्रबन्ध और गोस्वामी गिरधरलालको पदच्युत करके वृन्दावन भेजना वगैरह हाल	२१५३ – २१५७
जोधपुरके सम्बन्धका मुआमला, महाराणाका कृष्णगढ़में विवाह, महाराणाका जयपुर और दिल्ली के कैसरी दर्बारमें पधारना और राजपूतानहके रईसों व लॉर्ड लिटनसे मुलाक़ात	२१५७ – २१६२
दिल्लीके कैसरी दर्बारका हाल	२१६२ – २१८७
महाराणासे मंडीके राजा तथा इन्दौरके महाराजा वगैरह रईसोंकी मुलाक़ात और महाराणाकी दिल्लीसे वापसी	२१८७ – २१८९
इजलासख़ासका क़ाइम होना	२१८९ – २१९१
पहाड़ी ज़िलेके हाकिम व अहलकारों वगैरहकी ज़ुल्म ज़ियादती की तहक़ीक़ात और वहांका नया प्रबन्ध, महाराणाका कुम्भलगढ़का दौरा, महाराणाका सर्दारगढ़ पधारना और ठाकुर मनोहरसिंहको ठाकुरका ख़िताब वगैरह इज़्ज़त बख़्शना और संवत् १९३४ के क़हतका प्रबन्ध	२१९१ – २१९३
मगरा ज़िलेके विलायती पठानोंकी ज़ुल्म ज़ियादतियोंका रोकाजाना वगैरह प्रबन्ध, महाराणा का तीसरा विवाह ईडरमें, नमककी बाबत सर्कारी इन्तिज़ाम, बम्बईके गवर्नर सर रिचर्ड टेम्पलका उदयपुर आना	२१९३ – २१९४
पुलिसका नया प्रबन्ध	२१९४ – २१९६
मेवाड़में सेटलमेण्टका प्रबन्ध, कर्नेल् इम्पीका नयपाल जाना, देशहितैषिणी सभाका क़ाइम होना, और मेवाड़के ज़िलों वगैरहका इन्तिज़ाम	२१९६ – २१९९
महाराणाका मेवाड़में दौरा	२१९९ – २२०१
नये प्रबन्धसे मुल्की व माली तरक़्क़ी, और साइरका प्रबन्ध	२२०१ – २२०४
महाराणाका नाथद्वारा, राजनगर व गढ़बोर पधारना, सज्जननिवास महल की प्रतिष्ठा, चित्तौड़का दौरा और क़िलेकी मरम्मत, महाराणाका कृष्णगढ़, जयपुर व जोधपुर पधारना और वापस उदयपुर पधारना वगैरह हाल	२२०४ – २२११
मेवाड़में पैमाइश शुरू होनेपर किसानोंका बलवा, वाल्टर	

सत्रहवां प्रकरण.

महाराणा सर्दारसिंह.

महाराणा जवानसिंहकी उत्तरक्रिया करके महलोंमें वापस आने बाद राज्यके कुल कारख़ानह वालोंने (१) महाराणाके कोई वलीअ़ह्द न होनेके कारण रियासती क़ाइदह के अनुसार कुल कारख़ानोंकी कुंजियां महाराणा भीमसिंहके बड़े कुंवर अमरसिंहकी पत्नी चांपावतके पास पहुंचादीं. उक्त बाईजीराजने दूसरे सब कारख़ानह वालोंको तसल्लीके साथ कुंजियां वापस देकर ४ कारख़ानों, याने पांडेकी ओवरी (जिसमें ज़ेवर वग़ैरह रहता है), सिलहख़ानह, सेजकी ओवरी और कपड़ेके भंडारकी कुंजियां अपने पास रखलीं, इस

---

(१) मेवाड़में यह क़ाइदह है, कि जब कोई महाराणा गुज़र जाते हैं, तो कुल शहरके दर्वाज़े बन्द होकर राज्यके कारख़ानोंके भी ताले लगादिये जाते हैं, और उत्तरक्रिया करके वापस आनेपर कुल कारख़ानह-वाले अपने अपने कारख़ानहकी कुंजियां वलीअ़ह्दको नज़्र करदेते हैं, कि वह, जो कारख़ानह जिस शख़्सको सौंपना मुनासिब समझें, उसीको उसकी कुंजी देदें; और अगर किसीको कारख़ानहसे अलग करना चाहें, तो उसकी कुंजी अपने पास रखलें. लेकिन् अक्सर ऐसा होता रहा है, कि जो कारख़ानह जिस शख़्सकी सम्भालमें पहिलेसे रहता है, उसीके सुपुर्द किया जाता है, मगर यह बात ख़ासकर मालिककी मर्ज़ीपर मुन्हसर है; और रसोड़ा व पाणेराका कारख़ानह तो अक्सर बदल ही दियाजाता है.

ग़रज़से, कि किसी तरहका नुक्सान न हो. इसके बाद कुल सर्दार व अहलकार जमा होकर स्वर्गवासी महाराणाकी जगह गादीपर बिठायाजानेवाला शख़्स तज्वीज़ करनेके लिये आपसमें सलाह करने लगे. इस वक़ बागौरके महाराज शिवदानसिंहके तीन बेटे सर्दारसिंह, शेरसिंह और स्वरूपसिंह गद्दीके हक़दार थे; बाज़ मुसाहिबोंकी राय बागौरके महाराज सर्दारसिंहको, और बाज़ोंकी शेरसिंहके पुत्र शार्दूलसिंहको गद्दी नशीन करानेकी हुई, लेकिन् पुख़्तह तौरपर कोई जानशीन तै न पाया जानेसे गद्दी नशीनीका वह दिन टल गया, बल्कि इसी बहसमें तीन चार रोज़ और भी गुज़र गये. आख़रकार विक्रमी १८९५ भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १२५४ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १८३८ ता० ४ सेप्टेम्बर] को यह क़रार पाया, कि महाराज सर्दारसिंह गद्दीपर बिठाये जावें. उक्त महाराज महाराणाकी दग्धक्रिया करके सेठ ज़ोरावरमल्लकी बाड़ीमें जा ठहरे थे, और महाराणाकी उत्तर-क्रिया उनके हाथसे होने लगी थी. इस दिन कुल उमराव, सर्दार व अहलकार ज़ोरावर-मल्लकी बाड़ीमें जाकर उनको महलोंमें ले आये, और जब वह ज़नानहमें जाकर सलाम करके वापस बाहिर आये, तो चारणोंने उन्हें महाराणा जवानसिंहके क्रमानुयायी होनेकी आशिस दी. इसके बाद विक्रमी आश्विन कृष्ण ४ शुक्रवार [हि० ता० १७ जमादियुस्सानी = ई० ता० ७ सेप्टेम्बर] को मातमी दर्बार हुआ, जिसमें बेदलाके राव बख़्तसिंहने दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणाके सिरसे मातमी पछेवड़ी (१) उतारकर ज़ेवर नज़ किया. विक्रमी आश्विन कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = ई० ता० ११ सेप्टेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिबने महलोंमें आकर मातमपुर्सीका दस्तूर अदा किया.

विक्रमी आश्विन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ रजब = ई० ता० २५ सेप्टेम्बर] को नयपालके महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहके भेजे हुए मोतमद व दासियों वग़ैरहको रुख़्सत दी गई, जो महाराणा जवानसिंहके समयमें यहां आये थे, और उक्त महाराणाका देहान्त होजानेके कारण बड़े रंजके साथ वापस गये.

महाराणा सर्दारसिंहके गद्दीनशीन होतेही रियासतमें फ़सादकी बुन्याद पड़ी, और उसका शुरू कारण यह हुआ, कि महाराणाने गद्दीनशीनीके दूसरे रोज़ गोगूंदाके राज शत्रुशालके बेटे लालसिंहको बुलाकर धमकाया, जिसने वैकुंठवासी महाराणाका इन्तिक़ाल होने बाद उनकी जगह शार्दूलसिंहको गद्दीपर बिठानेकी कोशिश की थी, और रावत् दूलहसिंहके बर्ख़िलाफ़, जो महाराणा सर्दारसिंहको गद्दीनशीन कराना चाहता था, उक्त महाराणाकी बुरी आदतें बयान करके सब लोगोंके

(१) मातमी दर्बारके वक्त जानशीनकी पघड़ीपर जो सिफ़ेद चादर रहती है उसको हटाना, मातम दूर करनेका चिन्ह है.

सामने उनका अपमान किया था, क्योंकि वह दूलहसिंहके साथ पहिलेसे कुछ अदावत रखता था. महाराणाके धमकानेपर लालसिंहने ऊपर बयान कियेहुए कुसूरोंकी मुआफ़ी चाहने और आगेको नमकहलाली व वफ़ादारीके साथ नौकरी करते रहनेकी ग़रज़से इक्रारनामहके तौर एक अर्ज़ी महाराणाकी ख़िझतमें पेश की, लेकिन् इसी अरसहमें उसपर एक दूसरा शुबह पैदा हुआ, जिसका मुफ़स्सल हाल यहां दर्ज किया जाता हैः–

विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रजब = ई० ता० १६ ऑक्टोबर] को लालसिंहका कामदार माणकचन्द और एक ब्राह्मण कुछ मन्त्र विधान करते हुए भीमपद्मेश्वर महादेवके मन्दिरके पास तालाबकी तीरपर पकड़े गये, और दर्याफ्त कियेजानेसे उक्त ब्राह्मणने महाराणापर लालसिंहका जादू कराना बयान किया. इसी दिन पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिब महलोंमें आये, जिनसे महाराणाने सर्दारोंकी उदूल हुक्मी और नौकरी तथा छटूंदके बारेमें उनके बेजा उज़्रोंका बयान करके, उस विषयमें कुछ बात चीत की, और लालसिंहको जादू करानेके कुसूरमें क़त्ल करनेके लिये शाहपुराके राजाधिराज माधवसिंहको सर्कारी फ़ौज व तोपख़ानह समेत गोगूंदाकी हवेली (जहां लालसिंह ठहरा हुआ था) पर जानेका हुक्म दिया. यह ख़बर सुनकर बेगूंके रावत् किशोरसिंहने शाहपुराके राजाधिराजको कहलाया, कि पेश्तर हमसे लड़कर बाद उसके लालसिंहके पास जाना चाहिये; और इसी तरह सलूंबरके रावत् पद्मसिंह, कोठारियाके रावत् जोधसिंह और आमेटके रावत् सालिमसिंहने भी महाराणासे अर्ज़ किया, कि जबतक पूरी पूरी तह्क़ीक़ात होकर लालसिंहपर कुसूर साबित न होजावे, फ़ौज भेजना मौक़ूफ़ रक्खें, वर्नह हम लोग भी उसके शरीक होंगे. महाराणाने बखेड़ा बढ़ता हुआ देखकर पहिले हुक्मको मुल्तवी रक्खा, और गोगूंदापर ख़ालिसह भेजदिया. इसके बाद विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ता० ९ शअ्बान = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को पीछोला तालाबके किनारे जलनिवास महलमें पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिबके रूबरू कुल सर्दार बुलाये गये, और महाराणाके साथ सर्दारोंका एक अह्दनामह हुआ, जिसके अनुसार अमलदरामद करनेके लिये उक्त साहिबने सर्दारोंको हिदायत की, और कहा, कि अगर इसमें किसी तरहका फ़र्क़ होगा, तो महाराणा साहिब तुमको सज़ा देंगे. सर्दार लोग भी उस वक़्त ऊपरी दिलसे बड़ी नर्मीके साथ साहिबकी बातोंको मन्ज़ूर करते रहे, लेकिन् इस बह्सका कुछ नतीजा न निकला, बल्कि महाराणा और सर्दारोंके दर्मियान दिन ब दिन ज़ियादह रंज बढ़ता गया.

गोगूंदापर ख़ालिसह जानेके सबब लालसिंहका पिता शत्रुशाल उदयपुरमें आया और

उसने रावत् पद्मसिंहकी मारिफ़त एक अर्ज़ी लिखकर महाराणाकी खिदमतमें पेश की, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

गोगूंदाके राज शत्रुशालकी अर्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी.

॥ स्वस्ती श्री श्री श्री श्री श्री श्री हजुर जाला चत्रसाल लीपावता मुजरो अरज मालम वे, श्री जी हजुर मोटा हे, अेकलींग अवतार हे, अप्रच ॥ अवार चरण लालसीघ हरामपोरीरी कसुरमे आया अर वात वंणा ऊपरे सावत वेगइी, जंणी तावे श्री दरबार गोगुदो पटा सुदी पालसेकर जपती मेली, सो कसुर तो वारो अणी मुजवइी हो; पण सेवग अठे आयो अर श्री दरबार हजुर अरज कराइी, सो श्री दरबार सारो गुनो सेवगने ममारक करे ठीकाणो गोगुदारो पटा सुदी पाछो मीया कीदो, सो अठा पछे मारा ठीकाणारी त्या मारा राजकी कोई वातकी लालसीघ भाजगढ करवा पावे न्ही, मारा ठीकाणा म्ह ठेठसु कुवरपदारी सदामद जाअेगा, आजीवका हे, ज्या तो लालसीघने करे देणी, सो मुरजी वे, तो गोगुदे रो, त्या देस परदेस रहो, जठे पाया जासी, अणी सवाअे कोडी देणी न्ही, ओर सेवग वेठो जतरे, तो मालक ठीकाणारो सेवग हे, अर सेवगरा सोइी वरस पुरा होयां केडे सेवगरी अरज हे सो मानजीने ठीकाणारो मालक करे तरवार वंदाअे देवाअे. अणी तावे लालसीघ ऊजर करवा पावे न्ही, अतरी वातमे कसर पडे तो श्री दरबारको ठीकाणो हे, सो मुरजी आवे सो कराअे. दसगत रावल भोपारा राज सावरा कीयाथी लप्या, सं० १८९५ रा मगसर वद ११ सोमे.

मोरे तो श्री हजुर राजी व्हे सो करसुं, सेवगरे हुकम हजुरको मारा माथा ऊपरे छे राज, था अरज राजीपणा सुं मे रूप दीदी हे.

जोकि दश वर्ष पहिलेसे लालसिंहने गोगूंदापर क़बज़ह करके अपने बापको बे दस्ल करदिया था, इसलिये शत्रुशाल भी उसका ठिकानेसे ख़ारिज किया जाना और अपने पोते मानसिंहको वलीअ़ह्द बनाना दिलसे चाहता था. गोगूंदा वालों का बयान है, कि यह सब फ़साद रावत् दूलहसिंहने अपनी ज़ाती अ़दावतके सबब पैदा कराया था. लेकिन् थोड़े ही अ़रसह बाद महता रामसिंहने महाराणासे लालसिंहकी सफ़ाई करवादी, जिसका ज़िक्र आगे कियाजावेगा.

लालसिंहकी तरह महता शेरसिंह भी शार्दूलसिंहकी गद्दीनशीनी चाहने वाले फ़िर्क़हमेंसे था, जिसको महाराणाने मस्नद नशीन होनेके चन्द रोज़ बाद ही क़ैद करके प्रधानेका ख़िल्अ़त अपने मददगार महता रामसिंहको बख़्श दिया. अगर्चि शेरसिंह अपने बाप दादोंकी तरह राज्यका ख़ैरख़्वाह था; लेकिन् उसके रिश्तहदारोंने क़ैदकी हालतमें उसकी जान व माल और इ़ज़्ज़तका ख़तरह देखकर यह हाल पोलिटिकल एजेण्टके कानतक पहुंचा दिया, जिसपर उक्त पोलिटिकल एजेण्टने महाराणासे इस मुआ़मलेकी बाबत् दर्याफ़्त कराया, और उसी समयसे शेरसिंहपर सख़्ती कियाजाना कम होकर उक्त साहिबको उनके ख़तके जवाबमें एक ख़रीतह इस मज़्मूनका लिखागया, कि हमारे यहां शेरसिंहपर किसी तरहकी बेजा सख़्ती नहीं कीजाती, ख़बर देने वालेने झूठी शिकायत बयान की है. इसपर स्पीअर साहिबने महाराणा साहिबके नाम फिर एक ख़रीतह भेजा, जिसमें महता शेरसिंहपर सख़्ती न कीजानेकी ख़बर सुननेसे ख़ुशी ज़ाहिर करनेके अ़लावह नसीहत और ख़ैरख़्वाहीके तौर महाराणाको अपनी नेकनामी व रियासतकी बिह्तरीका ख़याल रखकर कार्रवाई करनेके लिये लिखा था.

इसके बाद महता शेरसिंहकी तरफ़से मुख़ालिफ़ लोगोंने महाराणाके दिलमें और भी ज़ियादह नाराज़गी पैदा की, कि वह आपको अंग्रेज़ी हिमायतसे डराना चाहता है. आख़रकार जब महता शेरसिंहने इस हालतमें अपनी इ़ज़्ज़त व जानका ज़ियादह ख़तरह देखा, और क़ैदमेंसे निकल भागनेके सिवा और कोई तद्बीर बचावकी उसे नज़र न आई, तब उसने रिहाईकी ग़रज़से महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ दश लाख रुपया दण्ड देना क़ुबूल करके रुक़्क़ा लिखदिया, जोकि उसकी हैसियतसे ज़ियादह था. लेकिन् इसपर भी पीछा न छूटा, दुश्मनोंने उसकी ख़लासीके बाद फिर महाराणाके कान भरे, और उसे दोबारह गिरिफ़्तार कराकर उसकी जान लेनेके उपायमें लगे, तब शेरसिंह मए अपने बेटोंके भागकर मारवाड़की तरफ़ चलागया, और कुछ अ़रसह बाद महाराणाकी तरफ़से तसल्ली कीजानेपर वापस उदयपुरमें आया.

महता शेरसिंहका भाई मोतीराम (१) भी, जो पहिले जहाज़पुरका हाकिम और शेरसिंहके प्रधानेमें शरीक था, शेरसिंहके साथ रसोड़ेमें क़ैद किया गया, जिसकी निस्बत

---

(१) महता पृथ्वीराजके दो बेटे अगरचन्द और हंसराज थे, जिनमेंसे अगरचन्दका पुत्र सीताराम और उसका शेरसिंह हुआ; और हंसराजके बेटे दीपचन्दका पुत्र मोतीराम था.

कहाजाता है, कि वह कुछ दिनों बाद कर्णविलास महलके कई मंज़िल ऊंचे झरोखे से नीचेको गिरा दिया गया, और गिरते ही उसका दम निकल गया, जिसका बेटा फूलचन्द हालमें मौजूद है. मोतीराम बड़ा अक्कमन्द और कारगुज़ार शख़्स था, इस- लिये शेरसिंहकी ताकृत घटानेके वास्ते उसकी जान लीगई.

इसी तरह पुरोहित श्यामनाथ भी महाराणा जवानसिंहपर जादू करानेकी तुह्मतमें कैद किया गया, जो कुछ अरसह बाद ३००००) रुपया दण्ड देकर छूटा; कायस्थ किशन्नाथसे ७५०००) रुपये दण्डका रुक्का लिखाया गया, और महता गणेशदास से ६००००) रुपया दण्ड लिया गया. इसी समयसे कुल रियासती कामोंका मुरुतार महता रामसिंह और महाराणाका मुसाहिब आर्सीदका रावत् दूलहसिंह बना.

इन दिनों कुल सर्दार महाराणाके मुख़ालिफ़ बनरहे थे, अल्बत्तह शाहपुराका राजा- धिराज माधवसिंह महाराणाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करता रहा, और महाराणाकी भी उस पर पूरी मिहर्बानी रही, जिसका सुबूत इस बातसे अच्छी तरह हो सक्ता है, कि गवर्मेंएट अंग्रे- ज़ीने जो फूलियाकी चौरासी ज़ब्त करके शाहपुरामें सर्कारी पुलिस रखदी थी, और महाराणा जवानसिंहने लॉर्ड बैंएिटङ्कसे सिफ़ारिश करके ज़ब्ती उठवाई, उसकी निस्बत तस्फ़ियह होजाने या ज़ब्ती उठजानेकी कोई तह्रीरी सनद शाहपुरा वालोंको इस वक्तक नहीं मिली थी, महाराणाने उन्हें सर्कारी सनद दिलानेकी ग़रज़से एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम एक ख़रीतह भेजा, जिसके जवाबी ख़रीतहकी नक्ल यहांपर दर्ज कीजाती है:-

एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके
ख़रीतहकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्तिश्री उदेपुर सुभसुथांने सर्वोपमा विराजमांन महाराजा धिराज महारांणाजी श्री सिरदारसिंघजी बहादुर अेतान करनेल नथानेल अलिविस साहब बहादुर लिपा- वतुं सलांम मालुम हुवे, अठारा समाचार भला छै, आपका सदा भला चाहीजे; अपरंच परीता आपका साहापुराके मुकदमेमें आया मजमुन मालुम हुवा, और छ सात बरस

हुवे महारांणाश्री जुवांनसिंघजी वैकुंठवासी अजमेरके मुकांम नवाव गवरनर जनरल लाट साहव वहादुरसुं मिले, अर इस मुकदमेमें श्रीमहारांणाजी मोसुफनै जो लाट साहव वहादुरकुं कहा, वो सव अेहवाल सदरमै मालुम है, ओर मैंने वी कुल अेहवाल इस्मुकदमै का सदरकुं लिपा है, सो इस मुकदमेमै नवाव लाट साहव वहादुर जो तजवीज करेगें, सो मुनास्व ही करेगें, ओर इस आपकै भेजे हुवे परीतेका मजमुन मैं सदरकुं भेजुंगा, ओर आपके मिजाजकी पुसीका समाचार हमेसां लिपावोगे. तारीप १८ जनवरी सन १८३९ ईस्वी, मिती माघ सुदी ३ संवत १८९५.

अंग्रेज़ीमें एजेएट गवर्नर जेनरलके दस्तख़त.
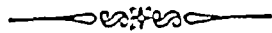
अगर्चि इन महाराणाके मर्ज़ीदां मुसाहिवोंने पुराने अह्लकारों वगै़रहपर दण्ड व जुर्मानह करके वहुतसा रुपया एकट्ठा किया, लेकिन् क़र्ज़्ख़्वाहोंको एक पैसा भी नहीं दिया-गया, और न गवर्मेएटके ख़िराजकी वाक़ियातका कुछ रुपया जमा कराया, जिसकी क़िस्तवन्दी महाराणा जवानसिंहके वक़्में होचुकी थी. इसपर पोलिटिकल एजेएटने वहुतसी ताकीदें लिखीं, परन्तु मुसाहिव लोगोंने उनपर कुछ भी ख़याल न किया, तव लाचार होकर पोलिटिकल एजेएट रॉविन्सन साहिवने फिर एक ख़रीतह भेजा, जिसकी नक़ नीचे लिखी जाती हैः-

पोलिटिकल एजेएटके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी १.

७३ नंवर.

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथांन सरव ऊपमां व्राज्मांन लायक महाराज धिराज महांराणाजी श्री सीरदारसींघजी जोग्ये, मेजर तांमस रावीनसन साहेव बहादुर ली ॥ सलांम मालुम करावसी, ईठारा स्मांचार भला छे, आपके सदा भले चाहेजे; अपरंच आगे परीता १ तारीप २५ अपरेल सन १८३९ ईसवीके रोज सीरकारके टाके तथा और मुकदमां वावत आपके नांम भेजा उसका जवाव आजत्क आया नही, और टांकेका हीसाव वनके श्री सदरमें रवांने हुवा, सो सन १२४६ फसलीके आपर मुतावीक प्रथम जेठ वदी १ स्मत १८९५ ता। ३० अपरेल सन १८३९ ईसवी तक श्री सीरकारके टांका रु ७३२५००) उदेपुरके राजपर वाकी नीकले, और साल गुजसते

मेहता सेरसीघ परधांनने श्री दरबार बेकुठबासीके हुकम माफीक श्री सीरकारकी बाकी बाबत करारनांमां लीषदीया, लाष रुपीया सालीयांना अदा करनेका जो आपने देषा होगा, कदाचत नही देषा हो, तो अब मुलाहजे करें ओर उस करार माफीक सीरकारके रुपीये तारीष ३१ दीस्मबर सन १८३८ ईसके आपर मुताबीक माह बदी १ सं० १८९५ तक रुपीया दो लाष भरना चाहेजे, सो बी आज तक नही पोहचा ओर अब १ महीने २६ रोज बाद पेहला कीसत तारीष १ जोलाई सन १८३८ का आया, सो बी भरना वाजीब हे, ओर चंद रोज पेसतर आपके परधांनने मेरवाडेकी आमदनी वासते लीपा था, जीसकी सीरकारसे मंनजुरी आई, आप कपतांन डीगसन साहेब बहादुर पाससे मंगालेवेगे; ओर ईन दीनामे आमदनी सीवाय दस ग्यारे लाष रुपीये राज्मे ओर आये हे, ईसवासते मनासीब हे, अब सीरकारकी कुल बाकी या कुछ कम ज्यादे भेजो, ओर जो ईतना नही होसके, तो च्यार लाष रुपीये पहली जोलाई सन १८३८ मु॥ असाड बदी ५ स्मत १८९५ की कीस्त तक भेजणेकी जरुर तजबीज कर ताकीदसे मेलावसी, ईस बातकी जेज करावसी नही; ओर जो रुपीया मजकुरके पोहचने ओर परीताका जवाब आनेमे ढील होगी, तो हम श्री सद्रमे लीषेगे ओर श्री गवरनर जनरल साहेब बहादुरकु राजकी बेबदोबसती ओर करार तुटना जाहर होगा, जीसु बोहत वाजीब हे. आप ईस बातकुं षुब षयालकर चीत लगाय सीरकारका टांका भेजणे अर मुलकके बदोबसतका ध्यांन रषो, जीस्मे आपका नेकनांमी जाहर होवे, ज्यादे क्या लीषे, थोडे लीषेकु बसेस जांणसी, ओर मीजाज मुबारीककी षुसीके स्माचार हमेसे लीषावसी. स्मत १८९५ रा जेष्ट बदी ६, तारीष ४ मै सन १८३९ ईसवी मुकाम छावणी मीमच, रोज सनीवार.

अंग्रेज़ीमें पोलिटिकल एजेण्टके दस्तख़त.

ख़िराजकी बाबत् तो साहिब एजेण्टकी ताकीदें आही रही थीं, कि इतनेमें महता रामसिंह व रावत् दूलहसिंहके दर्मियान नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा होने लगी. दूलहसिंह चाहता था, कि रियासतमें जो कोई काम हो मुझसे पूछे बग़ैर नहो; रामसिंहका मन्शा था, कि मेरे सिवा रियासती कामोंमें कोई दूसरा दख़्ल न दे; और महाराणाके दिलमें तीर्थयात्रा करनेकी जल्दी लगरही थी, क्योंकि जब वह बागोरकी गद्दीपर थे और महाराणा जवानसिंहके साथ तीर्थयात्राको गये, उसवक़ काशीमें गंगाके किनारेपर महाराणा और इनके दर्मियान यह अ़ह्द हुआ था, कि हम दोनोंमेंसे जो कोई पहिले गुज़रजावे, उसका गया श्राद्ध पीछे रहने वाला अपने हाथसे करे; इसलिये महाराणा अपना इक़्रार पूरा करनेके वास्ते गया जानेकी तय्यारी करने लगे. लेकिन् इसी अ़रसहमें

जोधपुरके महाराजा मानसिंहपर अंग्रेज़ोंकी फ़ौजकशी हुई, और बीकानेर व रीवां आदि रियासतोंसे महाराणाके नाम इस मज़्मूनके ख़रीते आये, कि ज़िला गोड़वाड़ पीछा मेवाड़में शामिल कियेजानेका वक्त यही है; इसलिये बीकानेरके प्रधान हिन्दूमल्लकी मारिफ़त, जो छावनी नीमचमें था, इस विषयमें कोशिश कीगई, लेकिन् मेवाड़के सर्दारों व मुसाहिबों में परस्पर नाइत्तिफ़ाक़ी होनेके कारण उस कोशिशका कुछ भी नतीजा न निकला. बाज़ लोग गोड़वाड़का मेवाड़में आना न चाहकर कहने लगे, कि महाराणाकी ताक़तका बढ़ना मातहतोंकी बर्बादीका सामान है. पाठक लोग अच्छी तरह समझ सक्ते हैं, कि जहां इस क़िस्मके ताबेदार हों, वहां मालिकका मत्लब सिद्ध होनेकी उम्मेद किसतरह कीजा-सक्ती है? इसके बाद रावत् दूलहसिंहकी मारिफ़त बीकानेरके महाराजा रत्नसिंहके कुंवर सर्दारसिंहकी शादी महाराणाकी राजकन्यासे, और महाराणाकी शादी बीकानेरकी राजकुमारीके साथ होना क़रार पाया, इस कारण गया श्राद्धके लिये जानेमें और भी देर हुई.

विक्रमी १८९६ पौष कृष्ण पक्ष [हि० १२५५ शव्वाल = ई० १८३९ डिसेम्बर] में श्रीनाथजीके दर्शनोंके लिये महाराणा नाथद्वारे गये थे, उधरसे बीकानेरके महाराजा रत्नसिंह भी अपने राजकुमार सर्दारसिंहकी शादी करनेको आये, और नाथद्वारेमें दोनों रईसोंकी मुलाक़ात हुई. उक्त दोनों महाराजा वहांसे रवानह होकर कांकड़ौलीमें पहुंचे, और द्वारिकाधीशके दर्शन करने बाद उदयपुरमें आये. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १८४० ता० १६ जैन्युअरी] को महाराणाकी राजकुमारी महूतावकुंवरबाईका विवाह महाराजा बीकानेरके कुंवर सर्दारसिंहके साथ हुआ; और पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिब भी इस शादीके जल्सहमें शरीक हुए. विक्रमी पौष शुक्ल १४ [हि० ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १८ जैन्युअरी] के दिन महाराणाकी तरफ़से महाराजा रत्नसिंहको फ़ौज समेत दावत दीगई; इस शादीका उत्सव बड़ी खुशी और बाहमी मुहब्बतके साथ ख़त्म हुआ. विक्रमी माघ कृष्ण २ [हि० ता० १५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २० जैन्युअरी] को महाराजा रत्नसिंहके डेरेपर बरातको विदा करनेके लिये महाराणा पधारे, और वहां नज़्र, निछावर वग़ैरह मामूली रस्में अदा हुईं.

बरातको रुख़्सत करने बाद महाराणाने तीर्थयात्राकी तय्यारी की, और सर्दारोंको सफ़रके लिये तय्यार होनेका हुक्म दिया, लेकिन् बहुतसे उमराव व सर्दारोंने बहानह-बाज़ी करके साथ चलनेको हामी न भरी, सिर्फ़ बेदलाका राव बख़्तसिंह और कोठारि-का रावत् जोधसिंह वग़ैरह चन्द सर्दार मुस्तइदीके साथ हमराह होलिये. विक्रमी [illegible] कृष्ण १३ [हि० ता० २६ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १ फ़ेब्रुअरी] को [illegible]

कूच होकर महाराणाका पहिला मक़ाम चम्पा बाग़में हुआ, और विक्रमी माघ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ ज़िल्हिज = .ई० ता० १० फ़ेब्रुअरी] को वहांसे चलकर श्री एकलिंगेश्वरकी पुरी, नाथद्वारा और कांकड़ौली होते हुए विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १३ ज़िल्हिज = .ई० ता० १७ फ़ेब्रुअरी] के दिन गढ़बोर पहुंचे. जोकि रावत् दूलहसिंहने महाराणाके साथ चलनेमें टालाटूली की, और महता रामसिंहसे उसकी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई थी, इस कारण रामसिंहने मौक़ा पाकर दूलहसिंहके मुख़ालिफ़ गोगूंदाके कुंवर लालसिंहसे दोस्ती पैदा करके उसे गढ़बोरमें महाराणाके पास बुलवालिया, और उसकी तरफ़से महाराणाकी नाराज़गी दूर करादी. इस बारेमें जो रुक्का महाराणाने लालसिंहके नाम लिखा, उसकी नक़्ल यहांपर दर्ज कीजाती हैः-

लालसिंहके नामके ख़ास रुक्केकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ती श्री लालसीघजी जोग अप्रच। : अबे थे रुको बाचता गडबोरका डेरा श्री हुजुर आअे हाजर वीजो, कोई बातको अंदेसो रापो मती, आज में थाने हात अपरा रुको लीष देवाणो, ज्णी अपराम्हे तफ़ावज पड़े न्हीं; और अबार थारे डोड व्रसमें बषेडो रयो जीमें काम कीदो वे ज्या तीरासु वाजबी साऊकारी लेषो समज लीजो, लेषामें पाऐकी व्रसे जीरी मालम कीजो, सो देवाड्यो जावेगा; अर आगे दस व्रस था गोगुदारी मालकी कीदी जीमें थाका मुडा आगे काममें रया वे ने पाऐकीदार वे जी तीरासु थे लीजो, और थारो सावध्रमी वे जीने रापजो, ने थाहारो चाकर वना राहरी पुकार करेगा, तो सुणाऐगा नही, थे पुसी रापजो. थारो सावध्रमो हे जी सुजब बंदगी कीदा जाजो, और थारा ताबारा राज अपर करदीया सो रद छे, सं० १८९६ वृषे म्हा सुद १४ रवे.

ऊपर लिखे हुए रुक्केके साथ रामसिंहने भी लालसिंहको महाराणाकी खिदमतमें जल्द हाज़िर होनेके लिये एक ख़ानगी ख़त लिखा था. इसी समयसे रावत् दूलहसिंहपर महाराणा की नाराज़गी होजानेके कारण रामसिंहका इख्तियार ज़ियादह बढ़ने लगा.

विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ ज़िल्हिज = .ई० ता० २ मार्च] को महाराणा पुष्कर मक़ामपर पहुंचे, और वहां धर्मशास्त्रके मुवाफ़िक़ तीर्थ गुरु तथा ब्राह्मण

आदिको दान दक्षिणा देकर विधि पूर्वक स्नान किया. यहांसे चलकर विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० १२५६ ता० १ मुहर्रम = .ई० ता० ६ मार्च] को ग्राम चावण्डेमें मक़ाम हुआ, जहां विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ४ [हि० ता० २ मुहर्रम = .ई० ता० ७ मार्च] को सदलैंण्ड साहिब आये, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उनसे मुलाक़ात हुई. इसी मक़ामपर विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० ता० ८ मुहर्रम = .ई० ता० १३ मार्च] को महाराणा भीमसिंहके कुंवर अमरसिंहकी बेटी कीकीबाई महाराणासे मिलनेके लिये कृष्णगढ़से आई, जो वहांके महाराजा मुह्कमसिंहके साथ व्याही गई थीं. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १२ [हि० ता० १० मुहर्रम = .ई० ता० १५ मार्च] को हरमाड़ेमें मक़ाम हुआ; इस मक़ामपर कृष्णगढ़के महाराजा मुह्कमसिंह भी महाराणाकी मुलाक़ातको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेशवाई वग़ैरह रस्में अदा हुईं. यहांसे कूच होकर विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ मुहर्रम = .ई० ता० २२ मार्च] को चौमूमें क़ियाम हुआ; ठाकुर लक्ष्मणसिंह नाथावतने बड़े आदर सत्कारके साथ पेशवाई करके महाराणा को कुल फ़ौज सहित दावत दी, और घोड़ा व ज़ेवर वग़ैरह सामान नज़्र किया. दूसरे रोज़ सामोदमें पहुंचे, जहां रावल शिवसिंहने भी चौमू वालोंकी तरह सब दस्तूर अदा किये. ये दोनों सर्दार जयपुरके मुसाहिब और बागौरके रिश्तहदार थे.

इन दिनों जयपुरके महाराजा रामसिंह कम उम्र होनेके कारण ज़नानहसे बाहिर नहीं निकलते थे, इसलिये महाराणाने जयपुर जाना मुल्तवी रक्खा; लेकिन् रियासतकी तरफ़से .इलाक़ह भरमें, जहां जहां होकर वह गुज़रे, बड़ी मुहब्बतके साथ उनकी ख़ातिर तवाज़ो कीगई. विक्रमी चैत्र कृष्ण ९ [हि० ता० २२ मुहर्रम = .ई० ता० २७ मार्च] को सैंथल मक़ामपर महाराजा जयपुरकी तरफ़से लवाणका राजा हरिदेवराम महाराणाके लिये गद्दीनशीनीके टीकेका सामान लेकर आया, जो दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश हुआ; और विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० ता० २५ मुहर्रम = .ई० ता० ३० मार्च] को क़स्बह राजगढ़में अलवरके रावराजा विनयसिंहके मोतमद लोग हाज़िर हुए, यहां कुल फ़ौजको अलवर रावराजाकी तरफ़से दावत दीगई. विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ मुहर्रम = .ई० ता० २ एप्रिल] को क़स्बह नगर .इलाक़ह भरतपुरमें मक़ाम हुआ, जहां भरतपुरके राजाकी तरफ़से भी मोतमद लोग आये. इन दोनों रियासतों (अलवर व भरतपुर) की तरफ़से बड़ी मुहब्बतका बर्ताव ज़ाहिर किया गया, लेकिन् मुलाक़ातकी दस्तूरी रस्मोंमें कुछ एतिराज़ पेश आनेके सबब रईसोंमें बाहम मुलाक़ात न होने पाई.

विक्रमी १८९७ चैत्र शुक्ल २ [हि० ता० ३० मुहर्रम = .ई० ता० ४ एप्रिल] को महाराणा गिरिराज मक़ामपर ठहरकर विक्रमी चैत्र शुक्ल ४ [हि० ता० २ सफ़र

=.ई० ता० ६ एप्रिल] को वृन्दावन पहुंचे, और वहांसे रवानह होकर विक्रमी चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ४ सफ़र = .ई० ता० ८ एप्रिल] को मथुरामें दाख़िल हुए; इस मक़ामपर जयसलमेरके रावल गजसिंह और बाई रूपकुंवर, जो तीर्थ यात्राको आये थे, मिले. महाराणाने उक्त रावलको फ़ौज समेत दावत दी, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १० [हि० ता० ७ सफ़र = .ई० ता० ११ एप्रिल] को बलदेवमें मक़ाम हुआ. यहांसे कूच होकर रास्तहमें कई जगह क़ियाम करने बाद विक्रमी वैशाख शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० ७ मई] को प्रयागमें पहुंचे; यहां भी विधि पूर्वक यात्रा हुई, दान पुण्य आदिके सिवा तीर्थ गुरुको हाथी, घोड़ा, वस्त्र, शस्त्र, और ज़ेवर वग़ैरह कई चीज़ें दक्षिणामें दीगईं. विक्रमी वैशाख शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० १६ मई] को काशीमें पहुंचे, जहां साहिब कमिश्नरने पेश्वाई वग़ैरह मामूली रस्मोंके साथ महाराणा का आतिथ्य किया. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० १९ मई] को काशीसे रवानह होकर विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० ३१ मई] के दिन महाराणाका लश्कर गया मक़ामपर पहुंचा, वहां भी ज़िलेके साहिब कमिश्नर वग़ैरह प्रतिष्ठित लोग पेश्वाईको आये, तीन दिनतक मक़ाम रहा, महाराणाने अपने हाथसे स्वर्गवासी महाराणा जवानसिंहका गया श्राद्ध किया, और तीर्थ गुरु आसारामको हाथी, घोड़ा, नक़्द व ज़ेवर वग़ैरह देकर खुश किया. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ४ [हि० ता० १८ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० १९ जून] को वहांसे रवानगी हुई, और विक्रमी श्रावण कृष्ण १ [हि० ता० १५ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० १५ जुलाई] के दिन वापस काशीमें दाख़िल हुए; यहांकी यात्रा करके विक्रमी श्रावण कृष्ण ३ [हि० ता० १७ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० १७ जुलाई] को प्रयागकी तरफ़ कूच हुआ, और विक्रमी श्रावण कृष्ण ७ [हि० ता० २१ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० २१ जुलाई] को वहां पहुंचे. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २५ ऑगस्ट] को फिर बलदेवमें पधारे, और वहांसे मथुरा तथा वृन्दावनकी यात्रा करते हुए विक्रमी आश्विन शुक्ल ८ [हि० ता० ७ शअ़्बान = .ई० ता० ४ ऑक्टोबर] को बीकानेरमें दाख़िल हुए, जहां आश्विन शुक्ल ९ [हि० ता० ८ शअ़्बान = .ई० ता० ५ ऑक्टोबर] को महाराजा रत्नसिंहकी कन्याका विवाह महाराणाके साथ हुआ. महाराजा रत्नसिंहने बड़ी मुहब्बतके साथ लश्कर सहित महाराणाकी मिह्मानदारी की. नागोरके महाराज शेरसिंहके पुत्र शार्दूलसिंह और शिवरतीके महाराज दलसिंहकी शादी भी महाराजा रत्नसिंहके नज़्दीकी रिश्तहदारों (१) की लड़कियोंके साथ इसी समय हुई.

---

(१) शार्दूलसिंहकी शादी शक्तिसिंहकी बेटी नन्दकुंवरबाईके साथ, और दलसिंहका विवाह अक्षयसिंहकी बेटी अजीतकुंवरबाईके साथ हुआ.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ शअ्बान = .ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को बीकानेरसे महाराणाके लश्करका कूच हुआ, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ रमज़ान = .ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को अजमेरमें प्रवेश हुआ. इस मकामपर राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल सदर्लैण्ड साहिबसे मुलाकात हुई. उक्त साहिबने मुलाकातके वक्त बेदलाके राव बख्तसिंहका बहुत कुछ आदर सन्मान और तारीफ़ की, और कहा, कि महाराणा साहिबके साथ इस सफ़रकी ख़िझतोंमें हाज़िर रहनेके सबब गवर्मेएट अंग्रेज़ी आपसे बहुत खुश है. इसवक्त रावत् दूलहसिंह भी महाराणाकी पेश्वाईके लिये यहां आगया था, सदर्लैण्ड साहिबने उसे बहुत कुछ उलाहना दिया, और महाराणाके साथ सफ़रमें हाज़िर न रहनेके सबब सख्त नाराज़गी ज़ाहिर की. इसी तरहकी बहुतसी बातें होने बाद महाराणाको तीर्थयात्राका धन्यवाद देकर उक्त एजेएट गवर्नर जेनरल साहिब रुख्सत हुए. उसी दिनसे बेदलाके राव बख्तसिंहका अंग्रेज़ी अफ्सरों के साथ ज़ियादह मेलमिलाप शुरू हुआ, और लाइक़ सर्दार होनेके कारण उसने इस विषयमें दिन ब दिन और भी अधिक तरक़्क़ी की. यहांसे कूच होकर भिणाय व बागोर होते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रमज़ान = .ई० ता० १६ नोवेम्बर] को महाराणा उदयपुर पहुंचे, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रमज़ान = .ई० ता० १९ नोवेम्बर] को राज्य महलोंमें दाख़िल हुए.

विक्रमी १८९८ वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२५७ ता० १६ सफ़र = .ई० १८४१ ता० ९ एप्रिल] के दिन महाराणा अपनी ससुराल (गोगूंदा) को पधारे, जहां गणगौरके उत्सव पर जानेका इरादह था, लेकिन् उन दिनों राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल सदर्लैण्ड साहिबके उदयपुरमें आजानेके कारण वह विचार मुल्तवी रहकर धींगा गणगौर (१) के दिन वहां मिह्मान हुए, और तीन दिनतक ठहरे. इस जगह महाराणाने आड़ा स्वरूपसिंह, रोहड़िया बारहट लक्ष्मणदान, आड़ा चिमनसिंह, तथा महडू प्रभूदान वगैरह चारणोंको हाथी व सरोपाव आदि इन्आम दिया, और राज शत्रुशालकी तरफ़से कुल फ़ौज व हम्राहियोंको दावत दीजानेके अलावह, चारणों व पास्वानोंको सरोपाव दियेगये. तीन दिनतक क़ियाम करनेके बाद महाराणा वापस उदयपुर आये. फिर चारभुजाकी यात्राके लिये विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष [हि० रबीउ़स्सानी = .ई० मई] में उदयपुरसे रवानह

---

(१) राजपूतानहमें यह त्यौहार चैत्र शुक्ल ३ को बड़ी धूम धामसे होता है, लेकिन महाराणा राजसिंह अव्वलने किसी ख़ानगी बर्तावको बढ़ानेके लिये वैशाख कृष्ण ३ के दिन भी यह त्यौहार स्थापन किया, जो प्राचीन समयसे प्रचलित न होने और धींगाई (मुठमर्दी) से जारी करनेके कारण " धींगा गणगौर " नामसे प्रसिद्ध हुआ.

होकर देलवाड़ा व कोठारियामें मिह्मान रहते हुए चारभुजा, कांकड़ौली और नाथद्वाराके दर्शन करके विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रबीउस्सानी = .ई० ता० ७ जून] को वापस उदयपुरमें दाखिल हुए.

इस वक्त महाराणाको अपने कोई खास वलीअह्द न होनेके कारण किसी रिश्तहदारको गोद लेनेका विचार हुआ, जिसकी बाबत् सदर्लैण्ड साहिब और रॉबिन्सन साहिबसे भी पेश्तर कुछ बात चीत करली गई थी. उन्होंने बागौरपर हुकूमत करनेके ज़मानहमें अपने छोटे भाई शेरसिंहके साथ नाइत्तिफ़ाक़ी रहनेके सबब उसका हक़ खारिज करके तीसरे भाई स्वरूपसिंहको दत्तक (१) मान लिया था, और इस वक्त भी उन्हींको युवराज बनाना चाहा. लेकिन् शेरसिंहका हक़ खारिज किये जानेमें महाराणाने गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे इस मुआमलहकी मंजूरी हासिल करना मुनासिब समझा, और साहिब लोगोंने भी यही सलाह दी. तब विक्रमी द्वितीय आश्विन शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रमज़ान = .ई० ता० २३ ऑक्टोबर] के दिन बागौरके महाराज शिवदानसिंहके तीसरे पुत्र स्वरूपसिंहको दत्तक लेकर वलीअह्द बनाया, और उनसे इक़ारनामहके तौर एक अर्ज़ी लिखाई गई, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती हैः-

युवराज स्वरूपसिंहकी अर्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीध श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री अंदाताजी हजुर सरुपसीघकी अरज मालुम होवे. श्री हजुर वडा हे, प्रमेसुर हे, छोरु ओपमा अरज करे जतरी ही थोडी,

(१) इन महाराणाने बागौरकी हुकूमतके वक्त स्वरूपसिंहको दत्तक लेनेका इक़ारनामह लिखदिया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती हैः-

॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीनाथजी. ॥ श्रीवाणनाथजी.

॥ रुको ॥ १ ॥ भाई सरूपसिंहजी सु म्हारो मुजरो वंचै, अप्रंच थाने मे वेटा करे राष्या, सो म्हारा कआ माफक चाल्या जाजो, म्हारो हुकम माथा पर राष्या जाणो, ने मन राजी राषणो, ने मारे वेटो होअजावे, तो पछे थाने हजार रुप्यारो ऊपजतारो गाम मे काड देस्यां, वोर पछे म्हारा पटासु थारे सली जतरो दावो न्ही, ने श्री दरवाररी कानीरी कोडी लागे, तो पटा लाई थारेई पाती आवे सो देकाडवो करजो; ओ मे मारी मनरी कुसीसु लपदीओ छे. वोर भाई सेरसीघजी तथा वारा वेटा, कोई थान् दाईओ करे न्ही, म्हारी राजी कुसीमु मे थाने राष्या छे, संवत १८९१ असाढ वीद १२.

अप्रंचे मने श्री हजुर कुवरपदो वगस्यो अर जोलया राप्यो, सो मु हजुरका हुकम सवाञ्ये चालु न्ही, हजुर हुकम करे ज्या करणी, ओर वायांका व्याव करदेणा, ओर राण्याहे ज्यो आजके दीन श्री हजुर वगसे हे जी मुजव कसर पाङु न्ही, ओर श्री हजुर क्रोड़ दीवाली राज करो. कदाचीत श्री हजुरके कंवरजी होजावे तो गादीसु मारे दावो न्ही अर मने छोटा कवरकी रा वरते अर रुपीया २५०००) पचीस हजारको पटो वगसे, सो राजी होञ्जने वुरो लेवु, ञ्योर कोई सटपटमे कणीके कीञ्जा लागु नही; ञ्योर मारी तथा मारी ञ्योलादकी धणीकी नजरमे गेर चाल दीपे, तो धणी तार काडे, अने कसुर सावत दीपे, तो काडदेवे जीको वुजर कोही करवा पावे न्ही. ञ्योर हजुरका हुकममे कवरपदाकी टसक लाञ्येन हजुरको हुकम लोपु न्ही, लप्यामे कसर पाङु, तो हजुर वचे रे मो वचे श्री ञ्येकलीगजी हे, जठा सवाअे जठा सवाञ्ये कसर पाङु तो ञ्यंगरेज सरकारमु मने दुर करदेवे हजुरका लपवासु, ओर गया सराद तावे होकम फरमायो सो श्री जी वु दीन वादलामे रापे, कदाचत भगवत रजा हे, तो डीला तथा प्रोतजी दुवारे ञ्या चाकरी नही करु, तो मने ईसटदेव पुगे, संवत १८९८ रा दुती ञ्यासोज सुदी ९ नोमी.

इसके बाद एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह व पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़के नाम ख़रीते लिखे गये, जिनमेंसे पहिलेकी नक़्ल यहां लिखी जाती हैः-

नक़ल मुरब्बहह ख़रीतह बनाम कर्नेल जॉन सदर्लैण्ड
साहिब, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह.

अप्र साहेव अठे आया हा जद कोठीके मुकाम साहेव इी हा, अर करनेल तामस राबीसन साहेव इी हा, सो दोइी साहेव वेठा म्हे कय्यो, के प्रभु म्हारेइी ओलाद करदेगा, ने कदाचीत न्ही वे, तो म्हारो मनोरथ सरूपसिघजीने पाछाथी ञ्यठे राज ऊप्र रापवारो हे; जीप्र साहेव कय्यो, सो आप वीराज्या थका, तो आप मालक हे, जीसकुइी रपलेवे, जोइी हो-सकता हे, अर पीछेसे तो अेसा होणा मुसकल हे, सो म्हे साहेवका केवाप्र चीत देर अवार दसरावारो मोरथ आछो हो, सो म्हे चीरणजीव सरुपसिघजीने पोल्या राप्या हे, सो

साहेब जस्या दोसत म्हाके ओर कुण हे, जीसु ईकी कुसी मानेगा; ओर सरुपसिघजी म्हाने अरज लीप दीदी हे, जीकी नकल साहेब नषे भेजी हे, सो बाच वाकब वोगा, ओर साहेबकी कुसीकी पवर सासता लपवो करोगा; संवत १८९८ ०र्षे दुती आसोज सुद १० भोमे दुवे म्हेता वगतावरजी रे.

इसी मज़्मूनका एक ख़रीतह मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल टॉमस रॉबिन्सन साहिबके नाम लिखा गया, जो तवालतके ख़यालसे यहां दर्ज नहीं कियागया.

इन्हीं दिनोंमें इस मुआमलहकी बाबत् महाराज शेरसिंहकी एक अर्ज़ी महाराणाकी ख़िद्मतमें पेश हुई, जिसका मज़्मून नीचे लिखे हुए मुसव्वदहके मुवाफ़िक़ था:-

महाराज शेरसिंहकी अर्ज़ीके मुसव्वदहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

अप्रंच ॥ श्री हजुर भाई सरुपसीघजीने पोल्या लीदा, सो या गणी आछी वीचारवामे आई, अणी वात सु तो मारोई मन राजी हुवो, मु तो श्री हजुरको छोरु जु श्री हजुरकी वदगीमे हु जुई श्री कुवरजी सरुपसीघजी री बदगीमे जाणेगा; अणीमे तफावज जाणु, तो मने श्री ऐकलीगजी री आण, वा श्री हजुरकी आण. या अरजमे मारा मन सु राजी वे लपी हे.

गोदनशीनीका मुआमलह तो शेरसिंहकी अर्ज़ी पेश होने और गवर्नर जेनरलकी मन्ज़ूरी आजानेसे तै होगया, लेकिन् सर्दारोंका वखेड़ा दिन ब दिन बढ़ने लगा, और चाकरीके मुआमलहमें भी छेड़छाड़ शुरू हुई; परन्तु महाराणा अपनी तन्दुरुस्ती विगड़जानेके कारण इस तरफ़ तवज्जुह न कर सके, क्यौंकि उनके वदनमें जलनकी बीमारी बड़े ज़ोरके साथ बढ़ने लगी थी, और वह उसके रोकनेकी फ़िक्रमें थे. यह बीमारी पहिले पैरोंके तलवोंसे शुरू होकर सख़्त जलनके साथ बढ़ते बढ़ते कुल शरीरमें फैलगई; देशी वैद्योंने इसके इलाजमें बहुत कुछ कोशिश की, लेकिन् किसीसे कुछ फ़ायदह न हुआ, तब महाराणाने अपनी जानका ख़तरह समझकर कुल रियासती इन्तिज़ाम युवराज स्वरूपसिंह और महता रामसिंहके सुपुर्द करने बाद मज़्हबी अक़ीदेके मुवाफ़िक़ वृन्दावनको चला जाना चाहा; लेकिन् महता रामसिंहने अर्ज़ किया, कि एक दफ़ा अंग्रेज़ी

डॉक्टरके .इलाजको भी आज़मालेना वाजिब है. महाराणाको उसका कहना मन्ज़ूर हुआ, और पोलिटिकल एजेएट रॉबिन्सन साहिबकी मारिफ़त एक यूरोपिअन डॉक्टर बुलाया गया. उक्त डॉक्टरने उदयपुरमें आकर अपना .इलाज शुरू किया, और वह महाराणाको तसल्ली दिलानेकी गरज़से बीमारीमें सिहत होना बयान करता रहा, लेकिन् अस्लमें कुछ भी फ़र्क़ न दिखाई दिया. आख़रकार महाराणाने वृन्दावन जानेका पुख़्तह इरादह करके पोलिटिकल एजेएटको बुलाया, जिसके जवाबमें उक्त साहिबने एक ख़रीतह लिखा, उसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:-

पोलिटिकल एजेएट कर्नेल टॉमस रॉबिन्सन
साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥श्रीरामजी.

॥ १३६ ॥ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभ सुथाने सरव उपमां व्राज्मांन लायक महाराज धिराज महारांणाजी श्री सीरदारसींघजी श्रेतांन करनेल तांमीस राबीनसन साहब बहादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी. ईठारा स्मांचार भला हे, आपके सदा भला चाहेजे, अप्रंच षरीते २ आपके वेसाष सुदी ९ तथा १५ का लीपा आया, स्मांचार वांचा, तथा ओर श्रेहवाल मेहताजी श्री रांमसींघजीके कहणेसे वाकीफ हुवे, राजे श्री डाकतर साहब बहादुर के लीपेसे मालुम हुवा दीन वदीन आपकी तवीयतकु आरांम होता हे, जीकी हमकुं बहोत षुसी हुई. आपके लीपे माफीक हमने श्री डाकत्र साहेबकुं लीपदीया हे, साहेब आपकी मरजी माफीक सीप लेंगे, और हमारे बुलाणे वासते वहोत लीपा, तथा महताजीकी जुबांनी दरसाया, सो हम तो अपणेही ईरादेसे चहाते थे आपसे मीलाप हो, दोनु त्रफकी वातां होवेसे मन राजी होवे, पण ईन दीनांमें सीरकार कांम ज्यादेके सबब फुरसत नही, जीसु अभी हमारा आणा हो सपता नही, ओर आपके लीषे प्रमाणे साहेब १ साथ जावाने मुकरर हुवे, सो तारीष १० जुन सन १८४२ ईसवी जेठ सुदी २ सं० १८९८ के रोज तक उदेपुर, या देरा होगा जहां पोहचेगे; ओर श्री दरबारके सरीरमे आरांम हुवा हे, तो जलदी जांणा चाहीये, ओर राजके बदोबसत ओर टांके बाबत तथा महताजीकी सीफारस लीपी, सो ठीक हे, आप पात्र ज्मेसे श्री व्रदाबनजी पधारें, महाराजकुवरजी श्री सरुपसीघजी तथा महताजी मीलकर राजका कांम करसी जीस्मे

हम मनासीब देषेगे जो मदद ओर सलाह देगे, आप अंदेसा रषावसी नही अर हमारी मुलाकात नही होवासें कीसी बातका हरज जांणसी नही, कारण में आपके राजके कांमसे अछे वाकीफ हुं, ओर आगे सारु महताजीकुं लीषो वांकी मारफत जुबाब पोहचेगा, ओर मीजाज मुबारकी पुसीके स्मांचार हमेसे लीपावसी स्मत १८९८ रा जेठ वदी ६ तारीष ३० मै सं० १८४२ ईसवी.

(अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त- टॉमस रॉबिन्सन.
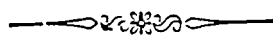
वीमारीमें आरामकी कोई सूरत न दिखाईदेनेपर महाराणाने विक्रमी १८९९ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १२५८ ता० २३ रबीउस्सानी = ई० १८४२ ता० ३ जून] के दिन डॉक्टरको इन्आम इक्राम देकर रुख़सत करनेके बाद विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ता० ३० रबीउस्सानी = ई० ता० १० जून] को वृन्दावनकी यात्राके लिये कूच किया, और राजधानीसे चलकर पहिला मक़ाम आंबेरीमें हुआ; वहांसे देलवाड़ा, नेगड़्या, राबचा, नाथद्वारा, बडारड़ा तथा दोऊंदा नामक स्थानोंमें होते हुए विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० ता० १० जमादियुल-अव्वल = ई० ता० १९ जून] को राजनगर पहुचे, और विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २३ जून] को मोरचणामें मक़ाम हुआ; परन्तु वहां वीमारी अधिक बढ़जानेके कारण कुल हम्राही लोग एक मत होकर विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २६ जून] को उन्हें वापस राजनगरमें लेआये. इस सफ़रमें साथ रहनेके लिये गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से कप्तान कॉस्मिन साहिब भी मुक़र्रर होकर आगये थे.

राजनगरमें पहुंचकर महता रामसिंह, रावत् दूलहसिंह, और पुरोहित श्यामनाथ वगैरह मुसाहिबोंको बड़ी घबराहट और विचार हुआ, कि अब क्या कियाजावे ? क्योंकि वीमारीके आख़री दरजहपर पहुंचजानेके सबब महाराणा बेहोशीकी हालतमें थे, और यह नौबत पहुंचगई थी, कि मथुरा जाना छोड़कर वापस उदयपुर पहुंचना भी उनके लिये मुश्किल होगया. तब उक्त हम्राही सर्दारोंने देशी वैद्य साधु रामरत्न दादूपंथीको बुलाकर महाराणाकी नब्ज़ दिखलाई, उसने नब्ज़ और शरीरके चिन्ह देखकर उन्हें वापस उदयपुरमें लौटालानेकी सलाह दी, और कुल मुसाहिबोंने भी यही मुनासिब समझा; लेकिन् बाज़ लोगोंने उनके मिज़ाजसे डरकर कहा, कि यदि अच्छे होजायेंगे, तो मथुरा लेजानेके एवज़ उदयपुर लौटालानेपर सख़्त नाराज़ होकर सबकी ख़बर लेंगे. आख़रकार कुल लोग एक मत होकर महाराणाको उदयपुरकी तरफ़ ले निकले, जब उन्हें रास्तहमें होश आया, तो फ़र्माया, कि "मुझे कहां लिये जाते हो ?"

इसपर सबने दृन्दावनको लेजाना बयान किया. यह सुनकर " बहुत अच्छा " कहते ही फिर बेहोश होगये, और इसी हालतमें राजधानी उदयपुरसे बाहिर रेज़िडेन्सीकी कोठी में लाये गये, जहां वलीअ़हद भी आ पहुंचे. इन महाराणाके गुस्सहसे सब लोग बहुत डरते थे, लेकिन् जुर्अत करके उसी दिन, याने विक्रमी आपाढ़ शुक्ल ६ [हि० ता० ४ जमादियुस्सानी = ई० ता० १३ जुलाई] को उन्हें राज्य महलोंमें लेआये, जहां पिछली रातको उनका इन्तिक़ाल होगया. विक्रमी आपाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुस्सानी = ई० ता० १४ जुलाई] को उनकी दग्धक्रिया हुई, और लच्छूबाई नामक एक ख़वास उनके साथ सती हुई.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १८५५ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० १२१३ ता० १६ रबीउलअव्वल = ई० १७९८ ता० २९ ऑगस्ट] को हुआ था; यह बहुत ख़ूबसूरत थे, इनका क़द मभला, गोर तेजस्वी वर्ण, और चिहरेपर बहुत कम मालूम चेचकके दाग़ थे. यह दिलके बहुत साफ़ और ज़बानके पूरे पाबन्द थे, लेकिन् मिज़ाज किसी क़द्र तेज़ था, जिसका कारण शराबकी ज़ियादती थी.

छप्पय.

श्रीमत रान जवान, जबहि सुरलोक सिधारे ॥
जिनके चामर छत्र, रान सादल सिर धारे ॥
स्वामी सुभट विवाद, बढ़त तब अहद बनाये ॥
महता शेर प्रधान, दूर कर राम मनाये ॥
निज सुता ब्याह विक्रमनयर, तीरथ न्हान प्रयानकर ॥
राना विवाह बीकानयर, कर प्रवेश मेवार घर ॥ १ ॥
राना दत्तक लैन, मत्त सिर्दारसिंह किय ॥
बंधु त्रतिय बागोर, लेख सारूपसिंह लिय ॥
जबहि किये जुवराज, चक्र आमय तन चल्लिय ॥
स्वर्ग गोन सिर्दार, होन सत्ती इक हल्लिय ॥
सादल सुखंड आशय सजन, मय शासन फतमालके ॥
कविराज श्याम पूरन कियउ, सम मुत्तिय बिच लालके ॥ २ ॥

महाराणा सर्दारसिंह,
सत्रहवां प्रकरण समाप्त.
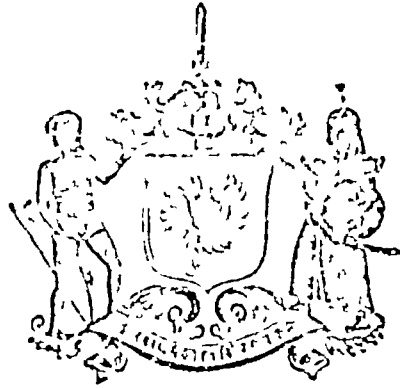
अठारहवां प्रकरण.

महाराणा स्वरूपसिंह.

विक्रमी १८९९ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२५८ ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० १८४२ ता० १५ जुलाई] की शामको यह महाराणा २८ वर्ष ६ महीना और १० दिनकी उम्रमें गद्दीपर बैठे, विक्रमी श्रावण शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० १८ ऑगस्ट] को इनके राज्याभिषेकोत्सवकी सवारी व दर्बार हुआ, जिसमें राज्यके कुल सर्दार, पासवान तथा अहलकारों वगैरहने हाज़िर होकर नज़्रें गुज़रानीं, और चारणोंने उन्हें महाराणा सर्दारसिंहका जानशीन होनेकी आशिस दी. इसके बाद हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल लॉर्ड एलेन्बराका एक फ़ार्सी ख़रीतह (१) मातमपुर्सी और गद्दी नशीनी की बाबत् महाराणाके नाम आया, जिसका तर्जमह नीचे दर्ज किया जाता है:-

लॉर्ड एलेन्बराके फ़ार्सी ख़रीतहका तर्जमह.

महाराणा साहिब आलीशान मुश्फ़िक़ मिहर्बान जगह निकलने मिहर्बानी व इह्सानके सलामत-

पीछे पहुंचाने दस्तूरों ख़्वाहिश बड़ी मुलाक़ात बिल्कुल ख़ुशीके, जो क़लम दो-

---

(١) نقل خریطۂ لارڈ ایلنبرہ گورنر جنرل ہند بنام مہارانا سروپ سنگھ *

مہارانا صاحب عالیشان مشفق مہربان مصدر لطف و احسان سلامت،

بعد از تبلیغ مراسم آرزوی گرامی مواصلت سراسر ملاطفت کہ گنجایش گیر تحریر خامہ و زبان

ज़बानकी लिखावट और ख़त कुशादह बयानकी तक़रीरकी गुंजाइशसे बाहिर है, रौशन दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है. मिहर्बानीका ख़त मिहर्बानीकी मुहर किया हुआ, जिसमें महाराणा सर्दारसिंहके इस दुन्या नापायदारसे इन्तिक़ाल करजानेका भयानक वाक़िअ़ह और दर्दमन्द मुसीबत, और इस जिगर जलाने वाले हादसहसे निहायत रंज और ग़मका हासिल होना, और उस आलीशानका अपने दाग़दार सीनेपर सब्रका पहाड़ रखकर अच्छे मुहूर्तमें महाराणा बैकुण्ठवासीकी जगह रियासत मेवाड़की गद्दीपर विराजना वग़ैरह मरातिब दोस्ती, एक दिली और मिहर्बानीके दर्ज थे, मुहब्बतके साथ वुसूल होकर मुख़्लिसोंके दिलोंमें ग़मका बढ़ानेवाला और दोस्तोंके दिलोंको ख़ुशी बख़्शनेवाला हुआ. अगर्चि उसका पहिला मज़्मून बड़े रंजका सबब था, मगर पिछले मत्लबके मुलाहज़हसे बहुत ख़ुशी पैदा हुई. जोकि ऐसे ज़रूरी हादसों और बे इख़्तियारी वारिदातोंमें सब्रके सिवा और कोई इलाज नहीं है, इसलिये अपने नाज़ुक दिलको रंज और ग़ममें न फंसाकर बड़ी होश्यारी और मुस्तक़िल मिज़ाजीसे रअ़य्यतके पालने और इन्साफ़ करने और रियासतके इन्तिज़ाम व बन्दोबस्तके काममें मश्ग़ूल रहें, कि अस्लमें यही बात परमेश्वरकी बख़्शिशोंका शुक्रियह अदा करनेकी है; और दोस्तदारको बड़ी ख़्वाहिश इस बातकी है, कि परमेश्वर उस आलीशानको ज़मानह दराज़तक मुल्क मेवाड़की रिआ़याके सिरपर हमेशह क़ाइम रक्खे, ज़ियादह क्या लिखे. (अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त- एलन्बरा.

و تقریر بی‌نظیر نامهٔ وسیع البیان نیست، مفهوم ضمیر منیر گردانیده می‌آید* مهربانی نامهٔ شفقت
ختامه متضمن واقعهٔ هائله و سانحهٔ موحشهٔ ارتحال مهارانا سردار سنگه ازین عالم نا پایدار و
دست‌داد کمال اندوه و تکدر ازین حادثهٔ آتش بجگر، و آنکه آن عالیشان کوه صبر و قرار برسینه
داغدار خود نهاده در ساعت سعید و زمان حمید مسند ریاست ملک میواڑ را بجای مهارانا
متوفی زیب و زینت بخشیده‌اند، بدیگر مراتب الفت و یکجهتی و مودت و یگانگی بوصول محبت
شمول خود شکن افزای قلوب مخلصان و مسرت پیرای خاطر دوستان گردیده* اگرچه مضامین
مصدرهٔ آن باعث حسرت و رنج فراوان بوده مگر بملاحظهٔ مطالب موخره فرحت و مسرت
نمایان دست‌داد* ازانجاکه در مثل حوادث ضروریه و وقعات لابدیه چارهٔ کار بجز از صبر و
شکیبائی نیست، لازم که خاطر نازک خود را باین حزن و ملال نگردانیده بکمال هوشیاری و
استقلال مصروف بوالی پروری و معدلت گستری و انتظام ریاست و استدلال سیاست باشند،
که این امر اصل شکرانهٔ عطایای حضرت آفرینندگار جلت عظمته است، و مخلص را نهایت
آرزوی این معنی است که ایزد تعالی آن عالیشان را تا زمان دراز بر سر رعایا و برایای مملکت میواڑ
قایم و پاینده داراد- زیاده چه بر طرازد*

Ellenborough.

गद्दी नशीनीके शुरू ज़मानहमें महाराणाको रियासतका काम चलानेमें बड़ी होश्यारी बरतनी पड़ी, क्योंकि मत्लबी लोगोंका हरएक गिरोह उनको अपनी अपनी तरफ़ खेंचना चाहता था; लेकिन् महाराणा उन सब लोगोंको अपने महाराजगीके ज़मानहमें अच्छी तरह देख चुके थे, याने उसवक्त बागोरके छोटे होनेके सबब उनका किसीको खयाल न था, कि यह मेवाड़के महाराणा होंगे, इसलिये वह बगैर किसी पॉलिसीकी रोक टोकके रियासती कारोबार और आदमियोंके ढगोंको खूब देखते रहे, और वही तजर्बह उनको इस वक्त मुफ़ीद हुआ, कि जिसके ज़रीअहसे वह हरएक आदमीकी मत्लबी कार्रवाईको दिलमें पहचानकर नुक्सान उठानेके एवज़ उनसे अपना मत्लब निकालने लगे. महाराणा ने गद्दीपर विराजकर सलूंबरके कुंवर केसरीसिंहको अपना मर्जीदां बनाया, जिससे आसींद का रावत् दूलहसिंह और प्रधान महता रामसिंह दोनों दबे रहे; और केसरीसिंहने गोगूंदाके कुंवर लालसिंहकी मारिफ़त अपना गिरोह क़ाइम करना शुरू किया; उसका इरादह था, कि दूलहसिंह और रामसिंह दोनोंको अलग करके मुसाहिबीका काम अपने इख्तियार में लेलेवे. महता रामसिंह बड़ा होश्यार मुत्सद्दी था, वह केसरीसिंहका मन्शा पाकर दोनों तरफ़ दम देता रहा; लेकिन् रावत् दूलहसिंह, जो एक अर्सहसे मुसाहिबीमें दख्ल रखता था, कुंवर केसरीसिंह और महाराणाके दर्मियान नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा करादेनेकी कोशिश करने लगा. उसने शुरूमें सलूंबरके रावत् पद्मसिंहको महाराणासे कुंवर केसरीसिंहकी शिकायत करनेके लिये उभारा, जिसने ठिकाने सलूंबरसे उक्त रावत्की हुकूमत बिल्कुल उठादी थी, और उससे इस विषयकी एक अर्ज़ी लिखवाकर महाराणाकी खिदमतमें पेश की, जिसकी नक़ल नीचे लिखी जाती है :-

रावत् पद्मसिंहकी अर्ज़ीकी नक़ल.

॥ श्रीरामजी १.

॥ सीध श्री उदैपुर सुभसुथाने सरब ओपमा [illegible] ओपमा [illegible] म्हाराज धीराज म्हाराणाजी श्री। श्री। श्री। श्री। श्री [illegible] जोग [illegible]

लाअेण अेतान, सलुंबरथी सेवक छोरु रावत पदमसीघ कहेने मुजरो मालम वेसी, अठारा समीचार श्री जीरी सुनजरस्याथी करेने भला हे, श्रीजीरा सदा सीरवदा दीन १ प्रत गडी गडी पुल पुलरा सदा आरोग चाईजे, तो छोरुने प्रम सुष वेसी राज; श्रीजीरा स्हेण, भडार, कपुर, कसतुरी, गगाजल अरोगवारा त्था असवारी सकारी, चडवा ऊतरवारा घणा जतन रपायारो हुकम वेसी राज, जतन तो श्री अेकलीगजी रापे हे, तो पण छोरुने तो अरज लषी चाईजे; श्री जी वडा हे मोटा हे मावीत हे, सदा सुनजर रपावे जुईज रपायारो हुकम वेसी राज. अप्रच। अणा दीनामे रुको मया हुवो न्ही, सो लषवा म्हे आवसी, अठे मारो हक केरीग ऊठावामे कसर मेली न्ही, आगे पण ऐक दोऐ भलामनषाने पकडे ने लेगया, ने गाम छाछदे पड्या पण हे, ने फेरे अवार गाम वसीथी षरवड पुमाणसीघने पकडे ने लेगया, सो आज दीन पेली अठे वडा रावतजी केसरीसीघजी थी लेने आज दीन ताई सलुंबर म्हे रजपुत सीरदार सपाईरो धरम कणी लीदो न्ही, ने मातीरे चाकरी करे जीरा कसाथी अणी अवार या कीदी, सो असी वाता श्री जीरा हुकमथी करे हे के अणारे मनरे जाणे करे हे, अवे मारो हक न्ही सो ऊठाथी श्री दरबाररो भलो मन (प) मेलेगा सो सेररी कुच्या अणाने श्री हजुररा हुकम थी सुपे ने श्री हजुर मने मेलेगा जठे रेऊगा, ओर अरज काकोजी रावत दूलेसीघजी मालम करेगा. छ १८९९ रा काती व्दी २ सुकरे.

यह अर्ज़ी नज़्र करके दूलहसिंहने महाराणासे अर्ज़ किया, कि यदि हुज़ूर रावत् पद्मसिंहकी तसल्ली करदेवें, तो मैं और वह दोनों शामिल रहकर हुज़ूरकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ मेवाड़के कुल सर्दारोंसे छटूंद चाकरीका फ़ैसलह करादेंगे, क्योंकि जिस हालतमें हम दोनों शख़्स इक़ारनामह लिखदेंगे, तो और कोई सर्दार इन्कार नहीं करेगा. महाराणा तो यही चाहते थे, उन्होंने फ़ौरन् पद्मसिंहको बुलानेके लिये उसके नाम तसल्लीका रुक़ा लिख भेजा.

इन्हीं दिनोंमें विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को कोटाके महाराव रामसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकके दस्तूरमें हाथी व घोड़ा वगैरह सामान आया, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० २ शव्वाल = ई० ता० ६ नोवेम्बर] को खुद महाराव रामसिंह मातमपुर्सीके लिये उदयपुरमें आये; महाराणाने दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेशवाई वगैरह रस्मोंके साथ उनका आतिथ्य किया. उक्त महाराव कुछ दिन ठहरकर वापस कोटे चलेगये.

इसके बाद रावत् दूलहसिंहने महाराणासे अर्ज़ किया, कि कुंवर केसरीसिंह बड़ा घमंडी है, वह हुज़ूरके हुक्मकी तामील नहीं करेगा, इसलिये साहिब एजेएटके नाम दोनों बाप बेटोंकी तक्रारका हाल लिखकर उन्हींको इस फ़ैसलेका इख्तियार देदिया जावे, कि वह किसी अंग्रेज़ी अह्लकारको सलूंबर भेजकर केसरीसिंहका इख्तियार ठिकानेसे उठवादेवें; इसमें एजेएट साहिबको हुज़ूरकी मुन्सिफ़ मिज़ाजी मालूम होगी, और वह हुज़ूरके मन्शाके मुवाफ़िक़ फ़ौरन् तामील करावेंगे. महाराणाने दूलहसिंहकी सलाहको पसन्द फ़र्माकर इस बारेमें पोलिटिकल एजेएटके नाम एक ख़रीतह लिखभेजा, जिसपर उक्त पोलिटिकल एजेएटने महाराणाके लिखनेके अनुसार ठिकानेके बन्दोबस्तकी बाबत् एक तज्वीज़ लिखकर उसपर रावत् पद्मसिंह व कुंवर केसरीसिंहके दस्तख़त करालिये और केसरीसिंहसे रावत् पद्मसिंहके नाम एक तह्रीर बतौर इक्रारनामह लिखाकर उनकी नक़्लें अपने जवाबी ख़रीतहके साथ महाराणाके पास भेजदीं, जो मए नक़्ल ख़रीतह साहिब एजेएटके नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

पोलिटिकल एजेएट टॉमस रॉबिन्सन साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

१ श्रीरांमजी १.

॥ ३६ ॥ नंबर

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथांने सरबउपमां ब्राजमांन महाराज धिराज महारांणाजी श्री सरुपसींघजी बहादुर ऐतांन करणेल तामीस राबीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलाम बचावसी, ईठारा स्मांचार भला छे, आपका सदा भला चाहीजे, अपरंच परीता आपका माह बदी ९ का लीपा कुवर केसरीसींघजीके मारफत आया, स्मांचार बांच वाकीफ हुवा, आपने पेसतर मुजसे कै बार फरमाया ने अब षरीतेमे लीषा, जीसु सलुबरका राज सुधरनेकी तदबीर बतलाणेमे आई, ओर उसकु बीचार श्री रावतजी तथा कुवरजीने आपसमे वदोबसत कर करारनांमे मेरे पास भेजे, उसकी नकल ईस परीताकी साथ आपके मुलाहजे सारु भेजताहुं, बांचेसे सब अेहवाल जाहर होगा. ईकीन हे ईस बदोबसतसे राजके घरका सुधारा हो करज उतर जावेगा, ओर श्री रावजी

राजी रहेंगे; और मीजाज मुबारककी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसी, सं० १८९९ रा माह सुदी ७ तारीष ६ फरवरी सन् १८४३ ईसवी.

(अंग्रेज़ीमें)
दस्तख़त- टॉमस रॉबिन्सन.

पोलिटिकल एजेण्टकी तज्वीज़की नक्ल.

नकल. ॥ श्रीरांमजी.

(अंग्रेज़ीमें)
दस्तख़त-टॉमस रॉबिन्सन.

॥ तजवीज बंदोबसत राज सलुंबर आज तरफ करणेल तामस रावीनसन साहेब बहादुर माफीक मरजी श्री महाराणाजी साहेब बहादुर——————

आपरंच मेरी सीरकार दोलतमदार कंप्णी ईंगरेज बहादुरकी मरजी हींदुसतानी सीरदारोंके घरके काममे दषल करनेकी न्ही, ने ईसी सबब मे बी घरु कामोसे आलग रहेता हुं, प्ण श्री महाराणा साहेबने सलुंबरकी बेबंदोबसती फरमाके के बार बंदोबसत ओर बाप बेटेका मीलाप मेरी मारफत चाहा, सो श्री म्हाराणा साहेब बहादुरकी षातर आर षुसी सारु नसीहतके तोर असा षयालमे आता हे, ओर ईसमे बहतर दुसरी कोई तजवीज फीसाद दुर होणेकी नजर आई न्ही, जो मेरी नसीहतसे बंदोबस्त अर घरका फायदा स्मझा जाय, तो ईस कागदपर दसषत सही कीजावे, ओर नही तो फेर मेरा कहेना कुछ जरूर न्हीं.

बंदोबसतरी वीगत.

१– रावतजीकी मालकी त्था हुकम, ओर कुंवरजीकी मुदतीयारी रावतजीकी ताबेदारीमे.

२– पटेकी आमदनीमेसे आगला करार माफीक रु ॥ १२०००) रावतजीने रु ८०००)

कुवरजी सालीना आपणे आपणे षरचके लेवे, दोनुसे ज्यादे षरच करे न्ही, बाकी रहे जीमेसे भाग प्रमाणे करजदारोकु देवे.

३– ओर सीवाय पेदायस उपज दोनुवाकी सलाहसे होणा चावे, ओर वोह उपज बाईका बीवाह तथा करज वालाकु जथा जोग बरताणा चावे.

४– बाप बेटा नषे फीतुरी आदमी रेहेके काम बीगाडे हे, ज्याने कामसु न्यारा करे ने राजको काम दोई ऐषटसु चलावे.

४

ई प्रमाणे मंजुर करवापरे हमारा भला आदमी मागेगे, तो थोडे दीना वासते भला आदमी रहेगा, ओर दोनु कानीका चलन देष कामकी मदद वाजबी राषेगा, सं० १८९९ रा माहा सुदी ३ तारीष २ फरवरी सन् १८४३ ईसवी.

अे कलमा लषी सो कबुल हे.

अे कलमा लषी सो कबुल हे केसरीघके.

रावत् पद्मसिंहके नाम कुंवर केसरीसिंहकी तह्रीरकी नक्ल;

नकल. ॥ श्रीरांमजी.

दस्तख़त–टॉमस रॉबिन्सन.
(अंग्रेज़ीमें)

॥ सीधश्री महाराज धीराज महारावतजी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री काकाजी साहेब श्री पदमसीघजी हजुर अरज छोरु चाकर बेटा कुंवर केसरीसींघको धरती हाथ लगावे न मुज्रो मालम होवेगा, अप्रंच श्री हजुर मने मुंडा आगे कामकी बंदगी चाकरी वतावी सो श्री हजुरका हुकम परमांणे कांम करुंगा, कणी वातसुं श्री हजुरको हुकम लोपुंगा न्ही, ओर वरस ४ च्यार मांहे करज ऊतारे देऊंगा ओर श्री हजुर क (णीके) सीपाअे चाले लागसी न्ही, ओर वरस ४ पाछे श्री हजुरकी मरजी आवेने सुद्दारे ज्णीने कांम देसी ज्णीसुं हुं राजी रेऊंगा, सं० १८९९ का महा सुदी ६ रवेऊ.

केसरीसिंहने अ़क्लमन्दीके साथ ऊपर लिखा हुआ इक़ारनामह लिखकर अपना घरू बखेड़ा मिटादेनेके बाद अपने मालिक (महाराणा) की तरफ़से रंजीदगी ज़ाहिर करके रावत् दूलहसिंहको कहलाया, कि आपको हमारे पितामह होकर घरू बखेड़ा मिटानेके .एवज़ बढ़ाना वाजिब नहीं है. इससे रावत् दूलहसिंह बहुत शर्मिन्दह हुआ, लेकिन् साथ ही इसके उसे ख़ुशी भी हुई, कि महाराणा और केसरीसिंहके दर्मियान रंजकी सूरत पैदा होगई.

इन्हीं दिनोंमें गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको काबुल और ग़ज़्नीपर फ़त्ह हासिल होकर मन्दिर सोमनाथके सन्दली किवाड़ हिन्दुस्तानमें लाये जानेकी मुबारकबादका फ़ार्सी ख़रीतह (१) गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड एलेन्बराने मए एक हिन्दी इश्तिहारके महाराणाके पास भेजा, जिसका तर्जमह और इश्तिहारकी नक़्ल पाठकोंके अवलोकनार्थ यहांपर दर्ज कीजाती है:–

लॉर्ड एलेन्बराके ख़रीतहका तर्जमह.

महाराणा साहिब आ़लीशान मुश्फ़िक़ मिह्र्बान जगह निकलने मिह्र्बानी और इह्सानके सलामत–

पीछे पहुंचाने दस्तूरों ख़्वाहिश बड़ी मुलाक़ात बिल्कुल ख़ुशीके, जो क़लम दो-ज़बानकी तह्रीर और ख़त कुशादह बयानकी तक़्रीरकी गुंजाइशसे बाहिर है, रौशन दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है. जोकि वे मुश्फ़िक़ हिन्दुस्तानके सर्दारोंमेंसे क़दीमी रियासत और बड़े मर्तबहके साथ मुम्ताज़ हैं, इसलिये वह ख़त, जो दोस्तदारकी तरफ़से हिन्दुस्तानके सब सर्दारों और तमाम रिआ़याके नाम जारी हुआ, ख़ास अपनी तरफ़से

---

(۱) نقل خریطهٔ لارڈ ایلنبره گورنر جنرل هند بنام مهارانا سروپ سنگه *

مهارانا صاحب عالیشان مشفق مهربان مصدر لطف واحسان سلامت،
بعد از تبلیغ مراسم آرزوے گرامی مواصلت سراسر طاعت که گنجایش گیر تحریر خامهٔ دوزبان
وتقریر پذیر نامهٔ وسیع البیان نیست، مشهود ضمیر منیر گردانیده می آید * ازانجا که آن مشفق
درزمرهٔ سرداران هندوستان بقدامت ریاست وجلالت قدر ممتاز اند، بآن مشفق ارسال خریطه
از طرف مخلص بجمله سرداران وتمامی خلایق هندوستان جاری شده، بدون تهنیت خاص

ऐसे बड़े कामके ज़ाहिर होनेकी मुबारकबादके बिना, कि जो हिन्दुओंकी नामवरीका बाइस और हमेशहके वास्ते इस ज़मानहकी .इज़्ज़तका सबब है, उन मुश्फ़क़को भेजना मुनासिब न समझकर उस ख़तके साथ लिखताहूं, और यक़ीन करताहूं, कि उन मुश्फ़क़से ज़ियादह हिन्दुओंमेंसे किसी शख़्सको ऐसे बड़े कामके ज़ाहिर होने, याने मन्दिर सोमनाथके सन्दली किवाड़ वापस हाथ लगनेसे ख़ुशी हासिल न होगी; और पाकीज़ह दिलको यक़ीन हो, कि इस ग़नीमत (किवाड़ों) के मुल्क हिन्दुस्तानमें वापस ला देनेका, जिसे सुल्तान महमूद लूटकर लेगया था, मैं दोस्तदार ही ज़रीअ़ह हुआ हूं, इसलिये इस कामको अपनी .इज़्ज़तका सबब ख़याल करता हूं. और जोकि दोस्तदारके मुसाहिबोंमेंसे बहादुरीकी निशानी कप्तान हेरल्स बहादुर दोस्तदारके ख़ास हमराही रिसालहके चन्द सवारों समेत मन्दिर मज़्कूरके किवाड़ोंके मुहाफ़िज़ोंके साथ उस मुश्फ़क़के राजमें होकर जाते हैं, लिहाज़ और .इज़्ज़त उन मुश्फ़क़की जैसी कि मेरे मुहब्बत भरेहुए दिलमें नक़्श है, वह रौशन करेंगे, और इस दोस्तदारकी वह ख़्वाहिश भी, जो वास्ते तरक़्क़ी और पायदारी ख़ानदान उन मुश्फ़क़के है, ज़ाहिर करेंगे. उम्मेद कि, दोस्तदारको हमेशह अपने मिहर्बान मिज़ाजकी ख़ैरियतका ख़्वाहिशमन्द समझकर उसकी इत्तिलासे ख़ुश फ़र्माते रहें, ज़ियादह क्या लिखे.

(अंग्रेज़ीमें)
दस्तख़त- एलेन्बरा.

ومبارکباد بالاختصاص ازطرف خود بظهور چنان واقعه که باعث ناموري هندوان وبراے دوام سبب اعزاز این زمان است، مناسب ندیده همراه آن ارسال نمیمایم وبه یقین میدانم که زیاده ازان مشفق بکدام کس از هندوان ظهور چنان واقعهٔ عظیم یعنے بازیافت دروازهٔ هاے صندل مندر سومنات مسرت وحضور نخواهد بخشید، ویقین خاطر عاطر باشد که چون دوستدار ذریعه بهیهٔ واپس دادن بولایت هندوستان آن غنیمتے که سلطان محمود انتزاع کرده بود گردیده ام، این امر را موجب اعزاز خود تصور میکنم، وشجاعت شعار کپتان هرلس بهادر یکے از مصاحبین مخلص که بامعدودے چند از سواران رسالهٔ خاص همراهي دوستدار به معیت محافظین دروازهٔ هاے مندر مذکوره براه مملکت آن مشفق میروند، پاسداري واعزاز آن مشفق که منقوش خاطر محبت مظاهر است حالي خواهند ساخت، و نیز تمنا و آرزوے این دوستی دوست که به ترقي وبهبودی آن مشفق و دوام و قیام خاندان آن مشفق است، ظاهر خواهند نمود * ترصد که اخلاص پیرا را مدام آرزومند دریافت خیریت مزاج عطوفت امتزاج خود تصور یده باطلاع آن مسرور و محظور مے فرموده باشند- زیاده چه برطرازد *

Ellenborough

नक्ल इश्तिहार.
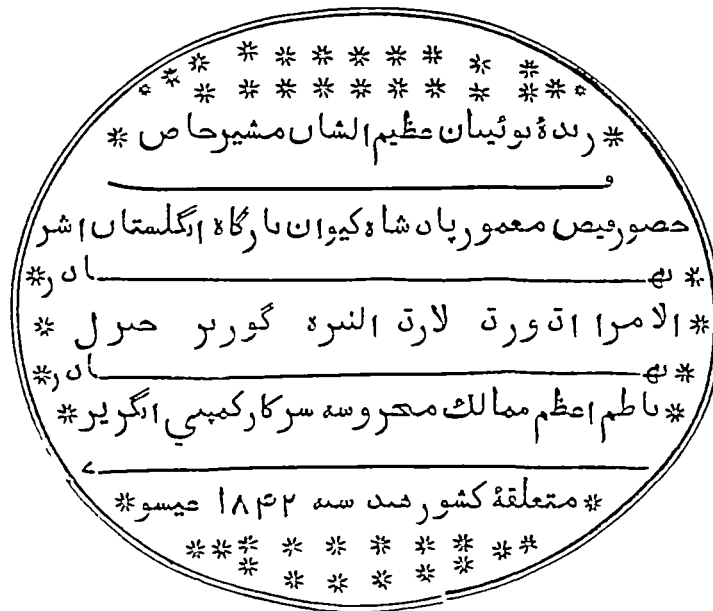
* नवाव गविरनर जनरल की तरफ से हिन्दुस्तान के *
* सब राजा प्रजा को *

भाइयो और मित्रो।

हमारी युद्ध जीत सेना सोमनाथ के मंदिर के किवाड अफगान देश ते धूम धाम के साथ लिये आवती है और सुलतान महमूद के अंगभंग मकबरे परसे अब सारी गजनी उजार परी दीखती है आठ सै वरस की हतक का अंत बदला लिया गया सोमनाथ के मंदिर के किवाड जो इतने दिनौं से तुह्मारी पिछली आधीनता का पता खडे हुये थे वेई किवाड अब तुह्मारे देश की सामर्थ्य और प्रकाश के वडे प्रतापवान निशान वने रहेंगे सिंधु पारवालौं से तुह्मारे शस्त्रौं की अधिकता को सदा अनुमान करवावते रहेंगे सहरंध रजवाडा मालवा और गुजरात के तुह्म सव राजौं सरदारों को मैं विजयी संग्राम का यह वड़ा सुंदर फल समर्पण करता हूं और तुह्म आपही इन्ह चंदन के कवांडौं को वडे आदर सन्मान साथ आप अपने मुलक से सोमनाथ के संस्कार किये हुये मंदिर में पहुंचाय दोगे जिस समे यह सारी विजयवती फौज वे किवाड़ सहरंध के राजों को सुतलज के किनारे सौंपने लगैगी, तव उन्ह राजों को खवर दिई जायगी * भाइयो और मित्रो। मुझे तुह्मारे और सरकार अंगरेजीके आपस के आश्रय पे निश्चय और वडा भरोसा

रहा है तुह्म देखते हो वह सरकार कैसी तुह्मारे आश्रय की योग है जो तुह्मारी और अपनी शोभा को एक समान समझती है जो किवाड अफगानों के आगे तुह्मारी पिछली अधीनता को इतने दिनौंते याद करवावते थे उन्ह के तुह्मे फेर लयाय देणेमें अपने शस्त्रौं का बल लगाती है मैं जो तुह्मारे मनोरथ प्रयोजनको अपना ही समझता हूं, इसी ते इस शूरबीर सेनाके अतुल लाभको तुह्मारे जैसे उतसाहसे देखता हूं, के यह लाभ मेरे जन्मदेश और इस निवास देश पै एक अचल शोभा बराबर बर्षाता है, इन्ह दोनो मुलकके आनंददायक मेलापका बना रहना और बढाना, जो दोनौंके वास्ते ज़रूर है सो मेरी अभिलाषा है, और जो उपद्रव पहले समयमें हिंदुस्तानको सताते थे उन्ह सबसे मित्रौंकी और सारी रइयत अंगरेजीकी रक्षा करणी इसी मेलाप के आधीन है, और इसी मेलापके कारणसे इस सारी फौजने उजार गजनी, काबल और बालाहिसार पै अपनी जयकी धजा फरराई, और और परमेश्वर जिसने अबतलक हमारी ऐसी रक्षा की, आगे भी हमारे उपर ऐसी कृपा दृष्ट करै के जितना बल मेरे हाथ सौंपा गया है, सो सब तुह्मारे ऐश्वर्यके बढाने, माल गांउं और तुह्मारा सुख बना रखूं और इन्ह दोनो मुलकके मेलापकी ऐसी नीव रखूं। जो सदा अजर अमर रहै *

सलूंबरका कुंवर केसरीसिंह तो महाराणासे रंजीदह होकर उनके विरुद्ध कार्रवाइयां करनेकी फ़िक्रमें ही था, कि इसी अरसहमें एक मुजिम ब्राह्मणी, जिसपर कुछ जुर्म सावित हुआ था, भागकर सलूंबरकी हवेलीमें जा बैठी. क़दीम ज़मानहमें कुल हिन्दुस्तान और ज़ियादहतर राजपूतोंकी क़ौममें यह क़ाइदह था, कि जब कोई मुजिम भागकर किसी देवस्थान अथवा धर्मगुरु, वा राजा, या राजपूत सर्दारकी पनाहमें चला जाता, तो राजपूत लोग उसके बचानेके लिये अपनी जानतक देनेमें कोताही न करके शरणमें आने वाले शख़्सको राज्य वालों या उसके दुश्मनको हर्गिज़ नहीं सौंपते थे; अगर वह किसी मन्दिर अथवा धर्मगुरुकी पनाहमें आता, तो मन्दिरोंके पुजारी तथा धर्मगुरु भी उसके बचानेके लिये खुदकुशी करने और उनके पक्षपर राजपूत सर्दार अपने मज़्हबी आईनको क़ाइम रखनेकी ग़रज़से जान देनेको तय्यार होजाते थे. इस रवाजकी बुन्याद क़दीम ज़मानहमें इस तरहपर पड़ी, कि भारतवर्षमें पहिले जुदा जुदा ज़िलोंके अलहदह अलहदह खुदमुरूतार राजा थे, उस हालतमें जहां कहीं कोई ज़ालिम राजा होता, और किसी ग़रीब बेक़ुसूरकी जान लेनेको हुक्म देता, तो उसको बचानेके लिये मज़्हबी पेशवा व राजपूत लोग सहायक बन जाते, और राजाका गुस्सह ठण्डा होनेपर इन्साफ़ करादेते थे. मुसल्मान लोगोंकी हुकूमत

हिन्दुस्तानमें क़ाइम होनेके ज़मानहसे मज़्हबी जोशके सबब इस रवाजने और भी ज़ियादह तरक़्की पाई, और उसी ढंगपर मेवाड़में भी यह दस्तूर जारी रहा, याने श्री एकलिंगेश्वर, नाथद्वारा, कांकड़ौली, चारभुजा, रूपनारायण और ऋषभदेव आदि बड़े बड़े देवस्थान इलाक़हमें, और राजधानी उदयपुरमें जगदीश आदिके प्रतिष्ठित मन्दिर और चित्तौड़-गढ़पर कालिकादेवी व अन्नपूर्णाके मन्दिर तथा धर्मगुरु, राजपुरोहित, सवीनाखेड़ाके गुसाईं और लादूवासके आयसका ठिकाना पनाहकी जगह समझे जाते थे. इसीतरह बहुतसे सर्दारोंकी हवेलियां भी थीं, जिनमेंसे सलूंबरकी हवेली, सबसे बढ़कर पनाहकी जगह गिनी जाती थी, और उसकी हद पीछोलीसे उत्तरी तरफ़ ताणाकी हवेलीतक रावत्जीकी हाटां कहलाती थी; इस इहातहमें यदि कोई मुज्रिम चलाजाता, तो सर्कारी आदमी उससे किसी तरहकी मुज़ाहमत नहीं करने पाते थे. पिछले ज़मानहमें यह रवाज ज़ियादह बढ़जानेके सबब बड़े बड़े मुज्रिम सज़ासे बचकर दोबारह जुर्म करने लगगये थे. महाराणा स्वरूपसिंहको ख़ास शह्रमें जुर्मोंकी ज़ियादती देखकर यह बात नागुवार गुज़री, और उन्होंने उस ब्राह्मणीके लिये, जो सलूंबरकी हवेलीकी पनाहमें थी, कोतवालको हुक्म दिया, कि जब वह रावत्जीकी हाटोंसे बाहिर निकले, फ़ौरन् गिरिफ़्तार करलो. इसवक़्त यह रवाज यहांतक बढ़गया था, कि यदि सलूंबरकी हवेलीका एक आदमी भी मुज्रिमके साथ रहता, और वह कुल शह्रमें फिरता, तो उसको कोई गिरिफ़्तार नहीं करसक्ता था. वह ब्राह्मणी एक रोज़ अपनी जाति वालोंके यहां खाना खानेके लिये गई, और इत्तिफ़ाक़से उसके साथ वाला सलूंबरकी हवेलीका आदमी अपने घर चलागया. यह मौक़ा पाकर कोतवालके आदमियोंने औरतको गिरिफ़्तार करलिया, और कुंवर केसरीसिंहको इसकी ख़बर मिली. केसरीसिंहने सुनते ही फ़ौरन् अपने सौ पचास आदमियोंको भेजा, जो सर्कारी सिपाहियोंसे उस ब्राह्मणीको जब्रन् छुड़ालाये. महाराणाको इस बातपर बहुत गुस्सह आया, और उन्होंने रावत् दूलहसिंहको, जो केसरीसिंहका तरफ़दार बनकर इस बारेमें अर्ज़ करने लगा था, नाराज़ होकर कहा, कि तुम दोनों तरफ़ मिलावट रखकर अपना मत्लब निकालना चाहते हो; और तोपख़ानह लेजाकर सलूंबरकी हवेलीको मए केसरीसिंहके उड़ादेनेका हुक्म दिया. उसवक़्त महता रामसिंहने महाराणाके कानमें अर्ज़ किया, कि हुज़ूरकी शुरू गद्दीनशीनीमें ऐसी बड़ी ख़ूंरेज़ी होना बदनामीका बाइस है, अगर यही मन्ज़ूर हो, तो पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिबको इत्तिला देकर कार्रवाई शुरू करना मुनासिब है. महाराणा भी अक़्लमन्द थे, उन्होंने रामसिंहकी सलाहको मानकर कुंवर केसरीसिंहकी सर्कशीका मुफ़स्सल हाल

पोलिटिकल एजेण्टके पास लिखकर भेजदिया, और उसके जवाबमें रॉबिन्सन साहिबने एक ख़रीतह महाराणाके नाम भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:-

पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी १

॥ १६६ ॥ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथांने सरब उपमां ब्रिाज्मांन लायक महाराज धिराज महारांणाजी श्री सरुपसींघजी साहेब बहादुर ऐतांन करनेल तांमीस राबीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलांम बंचावसी, ईठारा स्मांचार भला छे, आपका सदाभला चाहीजे अपरंच, षरीता आपका बैसाष वदी ४ का ली ॥ कुवर केसरीसींघकी नादांनी ताबे आया, स्मांचार वांच वाकीफ हुवा, ईस्मुकदमेके सुणबेसे कुवरजीकी नादानीका बहोत अफ़सोस मालुम होता हे, तावेदारोंकु असा चाहीजे नही, असी बे-अदवी करणेसे कसुरवार होते हे, लेकन मेरे षयालमे आता हे, के कुवरजीपे आपकी मेहरवांनी ज्यादे थी वीसें गफलतमें आ गऐ होंगे; ओर जो आगे कै ऐक कसुर कीये थे, तो उसी बषत मने करना चाहीये था, फेर ऐसा काहेकु करता, ने आपणा दरजा मरातबा हाथसे क्यु छोडता. अब आपके लीषे माफीक कुंवरजीकु लीपा हे, ने षरीताकी साथ वीसकी नकल भेजताहुं, वींसे आप वाकीफ होंगे; अबभी जो आप मेहरबांनीसे माफ करे, तो आयंदे नोकर चाकरोपर असी नीगाह चाहीये, जीमे श्री दरबारका डर दीलमे राष चाकरी मनसे वजावे, ओर बेअदबी, अदुलहुकमी करने पावे नही, आगे आप दाना हे. मीजाज मुबारककी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसी सं० १८९९ (१) रा बेसाष बदी १० तारीष २४ अप्रेल स० १८४३ ईसवी.

ओर अहवाल वकी(ल)
के कहेणेसे जाहिर हुवा,
जीसका मुफसील जवा-
ब बांके लीखेसे जाहि-
र होसी.

(अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त- टॉमस रॉबिन्सन, पो० ए०

---

(१) यह संवत् चैत्रादि हिसाबसे १९०० होता है.

इन बातोंसे महता रामसिंहका दिली खौफ़ दूर होगया, क्योंकि उसको पहिले यह धोखा था, कि अव्वल तो महाराणाही बड़े अक्लमन्द और होश्यार रईस हैं, दूसरे वैसा ही अक्लमन्द सलूंबर रावत्का पुत्र केसरीसिंह उनका मुसाहिब हो, और ये दोनों रियासतका प्रबन्ध करनेपर तय्यार होजावें, तो मेरा कुछ भी इख्तियार न रहेगा. इसी तरह रावत् दूलहसिंहसे भी महाराणाकी निगाह खिचगई, जो एक तजबेहकार मुसाहिब था; लेकिन् महता रामसिंहको रावत् दूलहसिंहकी तरफ़से अन्देशह था, कि शायद वह महाराणासे फिर अपनी सफ़ाई करलेवे; इसलिये उसने महाराणासे खानगी तौरपर अर्ज़ की, कि रावत् दूलहसिंहने जो सर्दारोंकी छटूंद चाकरीका अमल दरामद करादेने के लिये इक़ार किया था, उसकी तामील अब कराना चाहिये. महाराणाने रामसिंहकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ दूलहसिंहको कहा. इसपर दूलहसिंहने कुल सर्दारोंसे सलाह करके अपने इक़ारके मुवाफ़िक़ अमल दरामद कराना चाहा, लेकिन् उसके मुख़ालिफ़ गोगूंदाके कुंवर लालसिंहने, जो केसरीसिंहका दोस्त और होश्यार शख्स था, कुल सर्दारोंको दूलहसिंहके बर्खिलाफ़ करदिया, और महाराणाके कानतक यह बात पहुंचाई, कि दूलहसिंह पोशीदह तौरपर सर्दारोंसे मिलकर सर्कारी प्रबन्धमें खलल डालता है; इस सबबसे महाराणा दूलहसिंहपर ज़ियादह नाराज़ हुए, और हुक्म दिया, कि रावत् पद्मसिंह व दूलहसिंह दोनों अपने ठिकानोंकी छटूंद चाकरीका इक़ारनामह सरिश्तहके मुवाफ़िक़ लिखकर उसके अनुसार तामील करें. तब दूलहसिंहने कहा, कि रावत् पद्मसिंह तो मेरे कहनेमें नहीं है, और मुझ अकेलेको तामील करनेमें कुल मुल्क बदनाम करेगा, इसलिये हुज़ूर इस बातको कुछ अरसहके लिये मुल्तवी रक्खें, तो मैं आहिस्तह आहिस्तह इस मुआमलहमें कोशिश करूंगा. महाराणाने दूलहसिंहकी बातको बहानहबाज़ी समझकर उसपर ज़ियादह दबाव डाला, और कहा, कि महाराणा जवानसिंह के वक्तमें जो तुमने अपने छोटे छोटे गांव बदलकर उनके एवज़ ज़ियादह आमदनीके गांव लेलिये हैं, उन्हें छोड़कर अपने क़दीम गांव लेलो. इसपर भी दूलहसिंहने बड़ी नर्मीके साथ अपने उज्र पेश किये, लेकिन् वे मन्ज़ूर न हुए, और उसका दर्बारमें आना जाना बन्द होकर वह अपनी हवेलीपर सर्कारी निगहबानीमें रहने लगा; निगहबानीके अलावह उसकी खबरके लिये जासूस भी मुक़र्रर करदिये गये थे. अगर्चि इसवक्त दूलहसिंहका इतना क़ुसूर न था, कि उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जाता; लेकिन् आपसकी अदावतसे इतना तूल खिचा, कि उसको उदयपुरसे निकलकर अपने ठिकानेमें चलेजानेका हुक्म होगया. उसने अपनी जागीरको रवानह होते समय महाराणासे केवल इतना ही अर्ज़ कराया, कि मेरी खैरख्वाहीका हाल हुज़ूरको कुछ अरसहके बाद मालूम होजावेगा;

और इसी क़ौलके मुवाफ़िक़ उसने अमल दरामद रक्खा, जिसका ज़िक्र आगे किया जायेगा. रावत् दूलहसिंहपर महाराणाकी नाराज़गी तो कुछ दिनों पहिलेसे ही थी, लेकिन् इसवक्त और भी ज़ियादह बढ़जानेके सबब रियासती मुआमलातसे उसका दख़्ल बिल्कुल उठगया, इसके बाद वह केवल नामके वास्ते अपने ठिकाने आसींदसे राजधानीमें आता जाता, और उदासीन हालतमें रहता था.

ऊपर बयान कीहुई दोनों पार्टियोंके टूटजानेसे महता रामसिंह बे खटके रियासत का काम करने लगा, और दिन ब दिन उसका पेच फैलने लगा. महाराणा इसवक्त अपना मत्लब निकालनेकी कोशिशमें लग रहे थे, याने वह मुल्क मेवाड़का तफ़्सीलवार जमा ख़र्च देखकर बन्दोबस्त करना चाहते थे, इसलिये रामसिंहपर दिन ब दिन ज़ियादह मिहर्बानी चढ़ाते रहे, यहांतक कि विक्रमी १९०० चैत्र कृष्ण २ [हि० १२६० ता० १६ सफ़र = ई० १८४४ ता० ६ मार्च] को उसकी हवेलीपर मिह्मान हुए और उसे ताज़ीम व काकाजी (चचा) का ख़िताब दिया, जो मेवाड़के अगले प्रधानोंमेंसे किसीको नहीं मिला था. लेकिन् रामसिंह बड़ा चालाक था, वह ज़बानी ख़ैरख़्वाही दिखलाने में तो किसी तरहकी कोताही नहीं करता, परन्तु जब महाराणा उससे रियासती जमा ख़र्चका हिसाब सुनना चाहते, उस वक्त यही अर्ज़ करता, कि इस कामके लिये हम गुलाम लोग पैदा हुए हैं, मैं यह मुनासिब नहीं समझता, कि हुज़ूर ऐसे कामोंमें तक्लीफ़ उठावें; ख़ैरख़्वाह नौकर वही है, जो अपने मालिकके ऐश व इश्रत और आराममें ख़लल न डाले, बल्कि उनकी ख़ुशीके हुक्मोंकी तामील करे. महाराणाने महता रामसिंहकी इन बातोंसे नाउम्मेद होकर महता शेरसिंहको बुलाया, जो वैकुण्ठवासी महाराणा के समयसे मेवाड़के बाहिर अपने दिन गुज़ारता था, जिसका ज़िक्र मुफ़स्सल तौरपर परलोकवासी महाराणा सर्दारसिंहके हालमें लिखा जाचुका है. यह बात महता रामसिंहको बहुत नागुवार गुज़री, लेकिन् शेरसिंहकी पार्टीके बहुतसे लोग मौजूद थे, उन्होंने महाराणाके दिलमें उसकी जगह करदी, और महाराणाने उसे मेवाड़का जमा ख़र्च दिखलानेके लिये हुक्म फ़र्माया. जोकि शेरसिंह पहिले प्रधाना करचुका था, और रियासती कामोंसे अच्छी तरह वाक़िफ़ था, उसने साफ़ दिल होकर महाराणाके हुक्मको मन्ज़ूर किया, और कहने लगा, कि मेरा दादा अगरचन्द अपनी औलादको हमेशह यही नसीहत करता था, कि अपने मालिककी मर्ज़ी और ख़ैरख़्वाहीके बर्ख़िलाफ़ हर्गिज़ न चलना; उसी नसीहतके मुवाफ़िक़ उसकी औलादने आजतक अमल दरामद रक्खा है, जिसको हुज़ूर अच्छी तरह जानते हैं. इस पर महाराणाने शेरसिंहकी बहुत कुछ ख़ातिर की, और थोड़े अरसहतक वह रामसिंहसे

पोशीदह तौरपर हर रोज़ रातके वक्त बाड़ीमहलकी नालके रास्तहसे अकेला बुलाया गया; उस ख़ैरख़्वाहने इस अरसहमें मेवाड़का कुल तफ़्सीलवार जमा ख़र्च महाराणाको लिख दिया. अब महाराणाको रामसिंहसे दिन ब दिन नफ़रत होने लगी, लेकिन् वह बड़ा रोबदार और मज्बूत दिल अहलकार था, उसने अपने घमंडमें किसीकी पर्वा न की, सिवा इसके रामसिंहके बेटे बख़्तावरसिंहपर महाराणाकी पूरी मिहर्बानी होने के सबब वह और भी बे फ़िक्र रहा. आख़रकार विक्रमी १९०१ प्रथम श्रावण कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ११ जुलाई] को महता रामसिंह अपने बाल-बच्चों सहित क़ैद कियागया, और महता स्वरूपचन्दको मोतियोंकी कण्ठी तथा ख़िल्अ़त और महता शेरसिंहको प्रधानेका काम सुपुर्द हुआ. इसके बाद विक्रमी आश्विन शुक्ल ९ [हि० ता० ७ शव्वाल = .ई० ता० २० ऑक्टोबर] को दशहराके रोज़ महाराणाने महता शेरसिंहको प्रधानेका ख़िल्अ़त .इनायत किया, और अपने काका (चचा) दलसिंह व कायस्थ प्राणनाथको साथ देकर उसे अपने मकानपर पहुंचाया. रामसिंहके बेटे बख़्तावरसिंहपर महाराणाकी ज़ियादह मिहर्बानी थी, इसलिये उन्होंने मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० ता० ८ ज़िल्हिज = .ई० ता० १९ डिसेम्बर] के दिन उसको अपने पास बुलालिया. इस बातसे लोगोंके दिलोंमें यह ख़याल पैदा हुआ, कि रामसिंहका पैर रियासतमेंसे उखड़ना मुश्किल है, इसलिये उसके निकालेजानेकी कोशिश शुरू हुई, और अख़ीरमें १००००००) दश लाख रुपये दण्डका रुक्आ लिखवाकर फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० १२६१ ता० २६ सफ़र = .ई० १८४५ ता० ६ मार्च] को महता रामसिंह महाराणा की ख़िद्मतमें सलामके लिये बुलाया गया. अगर्चि इसवक्त प्रधानेका काम शेर-सिंह करता था, लेकिन् दोनों पार्टीके लोग अपनी अपनी कोशिशमें पूरे तौरपर लगे हुए थे, कि इसी अरसहमें विक्रमी १९०३ माघ शुक्ल १४ [हि० १२६३ ता० १२ सफ़र = ई० १८४७ ता० ३० जैन्युअरी] को पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिब उदयपुर में आये, और इन्हीं दिनों यह ख़बर उड़ी, कि बागोरके महाराज शेरसिंहके बड़े बेटे शार्दूलसिंहने गद्दी बैठनेके इरादहसे महाराणाको ज़हर देनेका विचार किया, जिसमें महता रामसिंह और पाणेरी गंगाराम वग़ैरह कई लोग शरीक बतलाये गये. यह ख़बर सुनते ही महता रामसिंह तो अपने मकानसे भागकर पोलिटिकल एजेण्टके कैम्पमें चलागया, और बाक़ी कई लोगोंको सज़ा दीगई, जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा. महता रामसिंह तो पोलिटिकल एजेण्टके साथ खुद ही राजधानीसे निकलकर चलागया था, जो कुछ दिनों शाहपुरामें ठहरनेके बाद नया शहर याने छावनी ब्यावरमें जारहा; और थोड़े ही अरसहके बाद उसके बालबच्चे भी उदयपुरसे निकाल दियेगये. कुछ समय पीछे रामसिंहको

वापस बुलानेकी कोशिश हुई थी, लेकिन् उसी अरसहमें उसका इन्तिकाल होगया (१).

विक्रमी १९०० वैशाख कृष्ण ७ [हि० १२५९ ता० २० रबीउल्अव्वल = .ई० १८४३ ता० २१ एप्रिल] को महाराणा स्वरूपसिंहने परलोकवासी महाराणा जवानसिंहके बनवाये हुए जवानस्वरूपेश्वर महादेवके मन्दिर (२) की प्रतिष्ठा कराई. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० ता० १७ रबीउस्सानी = .ई० ता० १८ मई] को रीवांके महाराजा विश्वनाथसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूरी सामान आया, और नज़ हुआ; विक्रमी आश्विन शुक्ल ३ [हि० ता० १ रमज़ान = .ई० ता० २६ सेप्टेम्बर] को जोधपुरके महाराजा मानसिंहके इन्तिक़ालकी ख़बर आनेके सबब मातमी दर्बार (३) हुआ.

विक्रमी पौष शुक्ल ३ [हि० ता० २ ज़िल्हिज = .ई० ता० २४ डिसेम्बर] को महाराणा तीर्थयात्राके लिये मातृकुण्डकी तरफ़ पधारे, जो मेवाड़में राजधानी उदयपुरसे ईशान कोण को ४० मीलसे कुछ ज़ियादह दूर बनास नदीके तीरपर है. लोगोंका बयान है कि इस जगह परशुरामने अपनी माताका श्राद्ध किया था. इसी समय महाराणाने वहां एक महादेवका मन्दिर और एक घाट भी बनवाया. विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्हिज = .ई० १८४४ ता० १६ जैन्युअरी] को जयसलमेरके महारावल गजसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूरी सामान आया, और नज़ हुआ.

विक्रमी १९०१ आषाढ़ शुक्ल १० [हि० १२६० ता० ८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २५ जून] को महाराणाने नाथद्वारे पधारकर अपना चौथा विवाह घाणेरावके

---

(१) रामसिंहका एक बेटा ज़ालिमसिंह विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = .ई० १८६४] में महाराणा शम्भुसिंहकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ, जिसके तीन बेटे अक्षयसिंह, केसरीसिंह और उग्रसिंह इसवक़ मेवाड़के जुदे जुदे ज़िलोंपर हाकिम हैं.

(२) यह मन्दिर राज्यमहलोंके बड़ीपोल दर्वाज़हके बाहिर पूर्वी लाइनमें है.

(३) इस रियासतमें दस्तूर है, कि जब कोई रिश्तहदार अथवा क्षत्रिय राजा गुज़र जावे, तो पासवान लोग महाराणाको ख़बर सुनानेसे पहिले कानके मोती खोलनेके लिये अर्ज़ करते हैं, और बाद उसके कुल ज़ेवर उतारकर मृत्युके समाचार सुनाये जाते हैं. इसके पश्चात् महाराणा स्नान करते हैं, और नौबत नफ़ीरी वगैरह शादियाने बंद होकर कुल सर्दार उमरावोंको मातमी दर्बारके लिये इत्तिला दीजाती है, और महाराणा सिफ़ेद पोशाक पहिनकर दर्बारमें विराजते हैं, फिर बेदलाके राव वगैरह सम्बन्धी सर्दारोंमेंसे कोई सर्दार महाराणाको कानके मोती व कुल ज़ेवर पीछा पहिनाकर शादियानह बजनेकी इजाज़त देने के लिये अर्ज़ करता है, और पानके बीड़े तक्सीम होकर दर्बार बर्ख़ास्त होजाता है.

मेड़तिया ठाकुर अजीतसिंहकी बेटी अभयकुंवर बाईसे किया. यह ठिकाना क़दीम ज़मानह से उदयपुरके उमरावोंमें था, लेकिन् अब ज़िले गोड़वाड़के साथ रियासत जोधपुरके मातह्त है, जिसका ज़िक्र महाराणा तीसरे अरिसिंहके हालमें लिखागया है-(देखो एष्ठ १५७२). इन महाराणाके तीन विवाह तो पहिले होचुके थे, जिनमेंसे पहिला विवाह ठिकाने बागोरपर गद्दीनशीन होनेके पेश्तर सेंट्रल इण्डियामें राघवगढ़के राठौड़ गुमानसिंहकी बेटी गुलाबकुंवर-बाईके साथ, दूसरा विवाह युवराज नियत कियेजानेपर विक्रमी १८९८ मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० १२५७ ता० १५ शव्वाल = ई० १८४१ ता० २९ नोवेम्बर] को चावड़ा ज़ालिमसिंह की बेटी फूलकुंवर बाईके साथ राजधानी उदयपुरमें, और तीसरा गद्दी विराजनेके बाद विक्रमी १९०१ माघ कृष्ण ४ [हि० १२६१ ता० १८ मुहर्रम = ई० १८४५ ता० २७ जैन्युअरी] को वीसलपुरके भाटी साहिबसिंहकी बेटी चांदकुंवर बाईके साथ देलवाड़ाकी हवेलीमें हुआ.

विक्रमी १९०२ वैशाख कृष्ण ७ [हि० ता० २० रबीउस्सानी = ई० ता० २८ एप्रिल] को जयपुरके महाराजा रामसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूरी सामान आया, जो नियमानुसार पेश हुआ. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ९ (अक्षय नवमी) [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को महाराणाने श्री एकलिङ्गेश्वरकी पुरीमें पधारकर कुल सीसोदियों सहित मद्यपान त्यागन किया; क्योंकि इस वंशमें पहिले शराब पीनेका रवाज बिल्कुल नहीं था, बल्कि यहांतक मश्हूर है, कि महाराणा राहपको किसी सख़्त बीमारीकी हालतमें हकीमोंने धोखेसे दवाके साथ शराब पिलादिया था, महाराणाको आराम होनेपर भेद ज़ाहिर होगया, और उन्होंने पिघला हुआ सीसा पीकर शरीर त्यागन करदिया, तबसे उनकी औलाद सीसोदिया (१) कहलाने लगी; परन्तु इस बयानका कोई तह्रीरी सुबूत नहीं है, और बयानमें भी बहुतसे इख़्तिलाफ़ हैं, अल्बत्तह इसमें शक नहीं, कि सीसोदिया लोग क़दीम ज़मानहमें शराब नहीं पीते थे. इस नशेने सिर्फ़ महाराणा दूसरे अमरसिंहके समयसे, जो विक्रमी १७५५ [हि० १११० = ई० १६९८] में मेवाड़की गद्दीपर बैठे, रवाज पाया, जिसको इन्होंने अपनी कुल मर्यादाके विरुद्ध तथा हानिकारक समझकर दोबारह अपने पुराने रवाजको मज़्बूत करनेके लिये छोड़दिया, और एकलिंगेश्वरकी पुरीमें एक पाषाण लेख क़ाइम कराकर सीसोदिया क्षत्रियोंको शराब पीनेकी मनादी करादी.

---

(१) सीसा एक धातु है, जिससे बंदूककी गोली बनाते हैं, और उद नाम पीनेका है, ये दोनों शब्द मिलकर सीसोद लक़ब हुआ, और उसी लफ़्ज़से सीसोदिया बना है; बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि सीसोदा ग्रामके नामसे सीसोदिया कहलाये. इस शब्दका ज़िक्र पहिले भी एष्ठ ६७३-७४ में होचुका है, परन्तु यहां मौक़ा देखकर दोबारह लिखागया.

उक्त महाराणा यहांसे रवानह होकर नाथद्वारा व कांकड़ोली होते हुए उदयपुर पधारे.

महाराणाको मुल्की इन्तिज़ामकी दुरुस्ती और रियासती क़र्ज़ह अदा करनेकी बहुत फ़िक्र थी, जिसमें महता शेरसिंह और सेठ ज़ोरावरमल्लने बड़ी तन्दिही और ख़ैरख़्वाहीके साथ महाराणाके हुक्मकी तामील की. विक्रमी १९०३ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२६२ ता० २९ रबीउल्अव्वल = .ई० १८४६ ता० २८ मार्च] को महाराणा सेठ ज़ोरावरमल्लकी हवेलीपर मिह्मान हुए, जहां उक्त सेठने घोड़ा, हाथी, ज़ेवर, पोशाक तथा दस हज़ार १००००) रुपया नक्द नज़ करनेके अलावह जो कुछ क़र्ज़ह रियासतकी तरफ़ अपना बाक़ी था उसका फ़ैसलह भी महाराणाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ करदिया. महाराणाने खुश होकर सेठ ज़ोरावरमल्लको पुरानी जागीरके सिवा ग्राम कूंडाल, उसके बेटे चांदनमल्लको पालकी और उसके पोते गम्भीरमल्ल व इन्द्रमल्लको मोतियोंकी कंठी तथा सरोपाव .इनायत किये. इस फ़ैसलहको देखकर रियासतके कुल क़र्ज़ख़्वाहोंने भी रज़ामन्दी और सुहूलियतके साथ फ़ैसले करलिये, और इन नेक ख़िद्मतोंसे महता शेरसिंह व सेठ ज़ोरावरमल्लकी ख़ैरख़्वाही बहुत कुछ प्रसिद्ध हुई.

जोकि महाराणाकी तवज्जुह रियासतके सुधारकी तरफ़ पूरी थी, और वह रफ़्तह रफ़्तह हरएक कामकी दुरुस्ती करते जाते थे, उन्होंने ख़ज़ानहके प्रबन्धकी ग़रज़से रोकड़का भंडार (ख़ज़ानह) कोठारी छगनलालके सुपुर्द किया; और एक सर्कारी दूकान इस ग़रज़से मुक़र्रर की, कि उसमें साहूकारी तरीक़ेसे रुपयेका लेन देन कियाजावे. यह दूकान जो अब " रावली दूकान " के नामसे प्रसिद्ध और बहुत कुछ तरक़्क़ी पर है, लक्ष्मीदास गणेशदासके नामसे मश्हूर कीजाकर कोठारी केसरीसिंहके सुपुर्द कीगई. कोठारी छगनलाल और केसरीसिंह दोनों भाई महाराणाके ख़ानगी और मोतबर अफ़्सरोंमेंसे थे. विक्रमी श्रावण कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रजब = .ई० ता० १७ जुलाई] को महाराणा भीमसिंहके दामाद जयसलमेरके रावल गजसिंहके परलोकवासकी ख़बर आई, जिसके सुननेसे राज्यमें बहुत अफ़्सोस हुआ, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणाने मातमी दर्बार किया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = .ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को बड़ी महाराणी गुलाबकुंवर बाईने तुलसीका विवाह बड़े उत्साहके साथ किया, और सर्दार पासवानोंको ख़िल्अ़त तथा चारणोंको हाथी, घोड़े, और सरोपाव दियेगये. विक्रमी माघ शुक्ल १४ [हि० १२६३ ता० १२ सफ़र = .ई० १८४७ ता० ३० जैन्युअरी] को पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिब नीमचकी छावनीसे उदयपुरमें आये, और १० दिनतक यहां ठहरे.

इन्हीं दिनोंमें एक बड़ा भारी उपद्रव खड़ा हुआ, याने बागोरके महाराज

शेरसिंहका बड़ा पुत्र शार्दूलसिंह, जिसकी निस्वत अव्वल तो शेरसिंहने महाराणासे अर्ज़ की, कि वह (शार्दूलसिंह) मेरी निगाहसे बाहिर और बदख्वाह लोगोंकी बहकावट सिखावटमें आकर बदचलन होरहा है, और दूसरी तरफ़से यह मालूम हुआ, कि वह गद्दी बैठनेकी उम्मेदसे महाराणाको ज़हर देनेकी कोशिश कररहा है. इसपर महाराणाने शार्दूलसिंहको अपने पास बुलाकर धमकाया, और पूछा, मगर वह उसवक़ मारे खौफ़के कांपने लगा, तब उसको तसल्ली देकर साज़िशमें शरीक रहने वाले शख़्सोंके नाम दर्याफ़्त किये. उसने महता रामसिंह व पाणेरी गंगाराम वगैरह कई आदमियोंके नाम लिखवादिये. यह ख़बर सुनते ही महता रामसिंहने तो भागकर शहरके बाहिर पोलिटिकल एजेएटके डेरोंमें पनाह ली, और पाणेरी गंगाराम व कुंवर शार्दूलसिंह वगैरह लोग क़ैद कियेगये. महाराणाने रामसिंहको सौंप देनेके लिये पोलिटिकल एजेएटसे बहुत कुछ कोशिश की, लेकिन् वह महाराणाके सुपुर्द नहीं किया गया. पाणेरी गंगाराम मादड़ी ग्रामका रहने वाला ब्राह्मण था, महाराणाको जल, शराब और दवाई वगैरह पिलाने खिलानेका काम उसीके सुपुर्द था (१), और वह मुसाहिब भी था; महाराणाने उसके ज़िम्महका कुल कारख़ानह अपने ख़ानगी नौकर तेजराम व उदयरामके सुपुर्द करदिया. विक्रमी १९०४ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ता० २ रजब = .ई० ता० १६ जून] को बड़ीपौल दर्वाज़हके बाहिर एक सुरह (पाषाण लेख) खड़ी करवाईगई, जिसमें यह मज़्मून लिखवाया, कि कुंवर शार्दूलसिंह और उसकी औलाद राज्यके हक़से, और महता रामसिंह तथा उसकी औलाद रियासती कामसे हमेशहके लिये ख़ारिज कियेजावें. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रजब = .ई० ता० ३ जुलाई] को महता रामसिंहकी औरत, बेटे और कुटुम्बके लोग शहर तथा मुल्क मेवाड़से बाहिर निकलवाये जाकर उसका कुल माल अस्बाब व जायदाद ज़ब्त करली गई. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रजब = .ई० ता० ५ जुलाई] को रावत दूलहसिंह महलोंमें बुलवाया गया, लेकिन वह क़ैद कियेजाने या मारडाले जानेके खौफ़से न आया, क्योंकि महाराणा तो उसपर पेश्तरसे ही नाराज़ थे, और उसके विरोधी फ़िर्केका इन दिनों ज़ोरशोर था. तब

(१) इस रियासतमें पुराने ज़मानहसे यह दस्तूर था, कि जब कोई महाराणा गद्दी बैठते, तो ग्राम मादड़ीके कुल ब्राह्मण बुलायेजाकर उनमेंसे एक आदमीको महाराणा अपनी नौकरीके लिये चुन लेते थे, और वही उनकी ज़िन्दगीतक इस कामपर मुक़र्रर रहता था. जब दूसरे महाराणा गद्दीनशीन होते, तो फिर उसीतरह ग्रामके ब्राह्मणोंमेंसे कोई दूसरा आदमी चुनलिया जाता, लेकिन थोड़े अर्सहसे यह तब्दीलीका रवाज दूर होगया है.

महाराणाने कायस्थ हरनाथ, ढींकड़्या उदयरङजुर धणयाप करे न प्रवस्ती करे न पाछी
विजयरामको उसके पास भेजकर कहलाया, किनाबारी कदी अरज करु नही, मारो
शरीक होनेके सबब सज़ावार हो; इसपर उसने म्आवे जावे, तो पकडेन नजर कर-
पेश किये, लेकिन् एक भी मन्जूर न हुआ, और विंद्रोबसत करे जीरो मु वारे तावे
ता० १२ शअ़्‌बान = .ई० ता० २५ जुलाई] को वह अपने
अपनी जागीरके गांव आर्सींदमें जा रहा. कहते हैं, कि
ज़हर देनेकी साज़िशमें शार्दूलसिंहके शामिल रहनेकी तुह् लिसह उठगया, लेकिन्
लगाईगई थी. पेंह तुम्हारे ठिकानेमें
त सज़ा पाओगे.

अब हम यहांपर वह हाल लिखते हैं, कि जिसके सबबसे महाराणा और कभी
(सर्दारगढ़) को फ़ौजकशीके साथ रावत् चत्रसिंह शक्तावतसे छीनकर ठाकु.३ = .ई०
डोडियाको दिया. महाराणा लाखाके ज़मानहसे डोडिया धवलकी अर्वा न की.
मेवाड़के महाराणाओंकी सेवामें बड़े ख़ैरख़्वाह और .इज़्ज़तदार नौकर बन दिया,
जिसका ज़िक्र इस इतिहासमें कई मौकोंपर लिखा गया है, और उसी वंशमें अपनी
ठाकुर नवलसिंहके दो बेटे हटीसिंह और इन्द्रभाण थे, जिनमेंसे हटीसिंहकी जागीरों
कंवारियाका पट्टा रहा, और इन्द्रभाणके बेटे सर्दारसिंहको महाराणा दूसरे जगत्सिंहने
लावाका पट्टा देकर उसे अपना उमराव बनालिया था. सर्दारसिंहने विक्रमी १७९५
श्रावण शुक्ल १० [हि० ११५१ ता० ८ रबीउ़स्सानी = .ई० १७३८ ता० २७ जुलाई]
के दिन लावाके किलेकी नीव डाली, और विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = .ई०
१७४३] में किला व महल वग़ैरह कुल इमारत २१०८७९९ ॥-॥ रुपये लागतसे
बनकर तय्यार हुई. इस अवसरपर सर्दारसिंहने महाराणाको किलेमें मिह्मान किया,
और उसी समय किलेका नाम सर्दारगढ़ रक्खा गया. सर्दारसिंहके बाद उसका बेटा
सामन्तसिंह किले और जागीरका मालिक बना, लेकिन् वह बिल्कुल कम अ़क्ल था,
उसने एक तेलीको अपना मुसाहिब बनाकर अपने छोटे भाइयोंसे नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा की.
इसी अ़रसहमें शिवगढ़के जागीरदार रावत् लालसिंहको कुरावड़के रावत अर्जुनसिंह
कृष्णावतने अपने बेटे ज़ालिमसिंहके वैरमें मारडाला, जिसका हाल महाराणा दूसरे भीम-
सिंहके वृत्तान्तमें लिखा गया है-(देखो पृष्ठ १७१२-१३). लालसिंहका बेटा संग्राम-
सिंह इन दिनों आपसकी अ़दावतके सबब अपने बचावके लिये पनाहकी जगह ढूंढता
फिरता था; उसने डोडिया सामन्तसिंहको, अपने ठिकानेके इन्तिज़ाममें ग़ाफ़िल
पाकर विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = .ई० १७८३] में किले सर्दारगढ़
(लावा) से निकाल दिया, और उसपर अपना क़बज़ह जमालिया. सामन्तसिंह

शेरसिंहका बड़ा पुत्र शार्दूलसिंह, जि^नके कारण उसी हालतमें मरगया, और उसके
अर्ज़ की, कि वह (शार्दूलसिंह) तमें अपनी उम्र पूरी की; लेकिन् उसका बेटा
बहकावट सिखावटमें आकर वद[ं] अक्लमन्द होनेके अलावह हिन्दी कवितासे भी
हुआ, कि वह गद्दी बैठनेकी ^हकी ख़िद्मतमें हाज़िर रहकर अपनी जागीर (सर्दारगढ़)
इसपर महाराणाने शार्दूलसिं^हरने लगा, और उसके पूर्वजोंकी ख़िद्मतोंको याद करके
उसवक्त मारे खौफ़के कां^{इत} कुछ मिहर्बानी रखने लगे; इसी तरह दो पीढ़ीतक
वाले शख़्सोंके नाम द^रमेह्नत करते रहनेपर तीसरी पीढ़ीमें महाराणा स्वरूपसिंहने
आदमियोंके नाम[,]से उसकी क़दीम जागीर वापस दिलाई जानेका हुक्म फ़र्माया.
शहरके बाहिर ^सर्दारगढ़पर शक्तावत रावत् संग्रामसिंहके पुत्र जयसिंहका पोता, याने
शार्दूलसिंह ^कटा रावत् चत्रसिंह क़ाबिज़ था, इसलिये महाराणा चाहते थे, कि उसपर कोई
पोलिटिकल करके उसे जागीरसे ख़ारिज करें, कि इसी अरसहमें ऊदावतोंके खेड़ावाले
किया ग^मनसिंह ऊदावतको, जो पहिले बाग़ी होगया था, रावत् चत्रसिंहके काका
जल[,]मसिंहने मारडाला. इसपर महाराणाने फ़र्माया, कि हमने देवगढ़के रावत् नाहरसिंह
व^हमारिफ़त ख़ातिरदारीके साथ मानसिंहको अपने ग्राममें बिठादिया था, उसको सालिम-
सिंहने दग़ासे मारडाला, यह उसका बड़ा भारी कुसूर है; और इस कुसूरमें सालिमसिंहका
ग्राम कुंडेई ज़ब्त होकर सर्दारगढ़पर भी ख़ालिसह भेजदिया गया, लेकिन् कुछ दिनों बाद
रावत् चत्रसिंहकी तरफ़से महाराणाकी ख़िद्मतमें एक अर्ज़ी बतौर इक्रारनामह पेश
होनेपर, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है, सर्दारगढ़से ख़ालिसह उठा लियागया:-

रावत् चत्रसिंहकी अर्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वसती श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री अनदाताजी हजुर पानाजाद
चाकर छोरु रावत चत्रसीघरी अरज मालम वे अप्रंच ॥ ऊदावत मानो दोडतो हो
सो श्री हजुर देवगढ़ रावजीने पातरी रुको बगसेने रावजीरी पातरी वीने देवाअने
पाछो पेडा महे बेसायो, जीने सगतावत सालमसीघ मार नाण्यो, जीप्र श्री हजुर वे-
राजी हुवा ने गाम कुडेइ्री षालसो कीदो, सो वाने पकडलावो, जीप्र नटेन अरज कराइी
न वाने पकड्या नही जीरी भोलप कीदी, जी तावे श्री हजुर बेराजी वेने लावे षालसो

मेल्यो, न पांच रुप्या तगसीरीका लीदा न श्री हजुर धणयाप करे न प्रवस्ती करे न पाछी उठंत्री करायने बगसी, सो अबे मु सालमसीघ ताबारी कदी अरज करु नही, मारो जोर पुगे जठे ठावो वे तथा मारा गाम म्हे पटा म्हे आवे जावे, तो पकडेन नजर करदुं, ओर सालमसीघने कठे ठावो वेन वाने श्री हजुर बंदोबसत करे जीरो मु वारे ताबे अरज करु न्ही, करु तो तगसीरवार.

अगर्चि इस अर्ज़ीके पेश होनेसे लावा (सर्दारगढ़) का ख़ालिसह उठगया, लेकिन् चत्रसिंहपर हमेशह इसी बातका तक़ाज़ह होता रहा, कि सालिमसिंह तुम्हारे ठिकानेमें आता जाता है, उसे गिरिफ़्तार करके हाज़िर न करोगे, तो सख़्त सज़ा पाओगे. रावत् चत्रसिंह भी किसीक़द्र जुनूनी और कमअक़्ल था, वह कभी नम्रता और कभी हठधर्मीके साथ जवाब देता. आख़रकार विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = .ई० १८४७] के शुरूमें उसपर ज़ियादह दबाव डाला गया, लेकिन् उसने कुछ पर्वा न की. इन्हीं दिनोंमें एक रोज़ महाराणाने उसको रुख़्सत होनेके वक़्त बीड़ा (१) न दिया, जिसपर उसने महलोंके अन्दर रसोड़ेके महलमें डेरा करदिया, और अपनी हवेलीपर नहीं गया. महाराणाने नाराज़ होकर चन्द अफ़्सरोंको सौ पचास सिपाहियों समेत लावाकी ज़ब्तीके लिये भेजदिया. जब चत्रसिंहको यह साफ़ मालूम होगया, कि मुझसे लावाका क़िला छीनलिया जायेगा, वह जल्द ही उदयपुरसे भागकर लावेको चलागया. इसके बाद महाराणाने पैदल सिपाहियोंके दो तीन निशान साथ देकर पुरोहित शम्भुनाथको लावे भेजा, और उसने वहां पहुंचकर क़िलेके गिर्द पहरे बिठादिये. चत्रसिंहके काका हमीरसिंहने भी थोड़ासा अन्न तथा गोली बारूद एकट्ठा करके क़िलेके दर्वाज़े बन्द करलिये. महाराणाने फिर फ़ौज व जमइयत भेजी, और पीछेसे कुछ तोपख़ानहके साथ प्रधान महता शेरसिंहका पुत्र ज़ालिमसिंह हुक्म पाकर वहां पहुंचा. विक्रमी आश्विन [हि० शव्वाल = .ई० ऑक्टोबर] के शुरूमें क़िलेकी दीवारपर गोलंदाज़ी शुरू हुई, और सुब्ह शाम बराबर फ़ाइर होते रहे, जिससे क़िलेकी पूर्वी दीवार दो दो तीन तीन हाथ ऊपरकी तरफ़से गिराकर कुछ हिस्सह क़िलेका तोड़ डाला गया, लेकिन् उसके नीचेकी तरफ़ एक बहुत ऊंची और मज़्बूत दीवार और खड़ी थी, इसलिये सिपाहियोंको क़िलेके अन्दर जानेका उम्दह रास्तह न मिला. पुरोहित शम्भुनाथने फ़ौजी अफ़्सरोंसे ताकीद करना शुरू किया, कि सीढ़ियें लगाकर एकदम हमलह करदिया जावे, और महाराणाकी ख़िदमतमें एक अर्ज़ी इस मज़्मूनकी

(१) अव्वल दरजहके उमराव और बाज़ बाज़ दूसरे दरजहके सर्दारोंको भी रुख़्सतके वक़्त महाराणा पानका बीड़ा हमेशह देते हैं.

लिखभेजी, कि अफ्सर लोग हमलह नहीं करते. विक्रमी आश्विन शुक्ल ६ शुक्रवार [हि॰ ता॰ ५ ज़िल्क़ाद = ई॰ ता॰ १५ ऑक्टोबर] के दिन ज़ालिमसिंहने कुल अफ्सरों व सर्दारोंको एकट्ठा करके उनसे यह राय ली, कि हमलह किया जावे या नहीं. इसपर सब लोगोंने मुत्तफ़िक़ राय होकर कहा, कि बाहिरके पड़कोटकी फ़िसील (फ़र्माल) ऊपरकी तरफ़ सिर्फ़ एकही जगहसे किसीक़द्र गिरी है, और उससे आगे भीतरका क़िला बहुत ऊंचा है, इसलिये ऐसी हालतमें हमलह करना बिल्कुल बेफ़ायदह, और सिपाहियों की जान मुफ़्तमें खोना है. लेकिन उसवक़्त पुरोहित शम्भुनाथ बोला, कि यह सिर्फ़ अफ्सरोंकी बहानहबाज़ी है, ये लोग अपनी नौकरीका ख़याल न रखकर, जिसके लिये महाराणा उन्हें तन्ख़्वाह देते हैं, अपना आराम और बचाव ढूंढते हैं. इसी अरसहमें महाराणाका एक ख़ास ताकीदी रुक्का इस ग़रज़से पहुंचा, कि क़िलेपर फ़ौरन हमलह करदो. ज़ालिमसिंहने वह हुक्म तमाम सर्दारों और अफ्सरोंको सुनाया, जिसपर सिपाहियोंने जोशमें आकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ८ [हि॰ ता॰ ७ ज़िल्क़ाद = ई॰ ता॰ १७ ऑक्टोबर] को चार घड़ी रात बाक़ी रहे क़िलेकी दीवारपर सीढ़ियां जा लगाईं. हमलह करनेवाले लोगोंका शोर व गुल सुनकर क़िलेके लोगोंने भी बन्दूकें चलाना शुरू किया, और बड़े भारी भारी पत्थर, जो क़िलेकी दीवारपर पहिलेसे जमा रक्खे थे गिराये, जिनसे दो तीन सीढ़ियां टूटनेके अलावह कई आदमियोंका नुक़्सान हुआ, और कई बहादुर सिपाही दीवारपर चढ़कर मारे गये. इस दीवारके आगे एक दोहरी दीवार और भी थी, इसलिये बाज़ सिपाही क़ाबू न पाकर पीछे कूद पड़े. अगर्चि इस मौक़ेपर फ़ौजके लोगोंने बहादुरीमें किसी तरहकी कमी न की, लेकिन पुरोहित शम्भुनाथकी ख़ामख़यालीसे सिपाहियोंको लौटकर मोर्चोंपर आना पड़ा. इस बारेमें ज़ालिमसिंहने अपने पिता महता शेरसिंहके नाम एक काग़ज़ लिखा था, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज है:-

ज़ालिमसिंहके काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री उदपुर सुभसुथाने सरव ओपमा अनेक ओपता लाअेक भाईजी स्हेब श्री ५ श्री सेरसींघजी अेतान लावाका डेरायी छोरु जालमसींघ लीपावना मुजरो मालम होसी, अठाका स्माचार भला है, आपका स्दा आरोग च्हेजे जु छोरुन

प्रमसुष हुवे स्दा सुनजर हे जुहीज रषावसी, डीलाका घणा जतन रषावसी, डीला पाछे सारो मुदो हे अप्रंच। आपको कागद आयो स्माचार बाच्या, अर काले श्री जीको रुको आयो जी म्ह हलाकी हदसुदी ताकीदी आई, सो आ जगड़ो १ रात रीयो, हलो कीदो जीका स्माचार तो साडीवालरे हाते लष्योईज हो, अर वोतो ठाम पगाई लष्यो हो सो बीस पचीस आदमी अेकलीग पलटणरा चड्या, सो वतरा तो चड्या न्ही अर पाच ज्णा चड्या अर नसरण्या २ टुट गई अर अेक नीसरणीरा गात्या नीसर गया, वलाअेती चड्यो सो नसरण्या पड़गई अर कल्याणसीघ सो चड्यो न्ही सो बाकी हलो चड्यो न्ही, सो अेकलीग पलटणरो हवालदार मरजो गवरबेग तो म्ह जाऐने काम आयो अर म्ह जाअे तरवार वजाई, अर बाकीरा आदमी पाछा कुदेन आया, ओर जमीत लोग फेरु आवे अर तोपा जवरी आवे सो सारी सारकर जलदी भेजसी अर अेकलीग पलटण हाला हदसुदी मरदमी कीदी, प्ण नसरणी टुटगई, जीरो तो हात काई ओर दुसरा लोगा पण तन हद सुदी दीदो, जीकी अठारी अरज करवा तावे सवलालजीने भेजा हे, सो अे मालम करेगा अर ओर स्माचार सारा पाछाथी लषा हा. अठे मे गणा कुसी हा, ओर अेकलीगपलटणका जषमीना तावे केवे सो म्हारा सरसते परमाण मले जीदी तो लेवा, सो स्माचार पाछा लषसी सो काई प्रम्ण देवावा; जगड़ो गतरस होअेगीओ, अर काम पेस पुगो न्ही जीरी म्हारे हद सुदी चंता लागरही हे, सो जीरी वदासीरा स्माचार कठा सुदी लषु, लषबाजु हे न्ही. कागद स्माचार लषबो करसी, छ० १९०४ आसोज सुद ८. ओर गोलो तोपरो मगायो सो पाछाथी भेजा हा, जषमी हुवा मुवा २० आस्रे.

भंडारी गोकलचंदको मुजरो बाचसी स्दा सुनज्र राषसी.

इस लड़ाईमें मारेजाने वाले तथा ज़ख़्मी होनेवाले आदमियोंका हाल, जो फ़ौजमेंसे अजीटन शैख़ चांदने मेजर लालमुहम्मदके नाम लिखकर उदयपुर भेजा था, उस काग़ज़के देखनेसे मालूम होता है, कि बारह तेरह आदमी तो हमलह करनेके वक्त ही जानसे मारेगये, और बहुतसे ज़ख़्मी होकर डेरोंमें लायेजानेके बाद मरे; जिन सब की संख्या ५० या ६० के क़रीब थी, और इतने ही आदमी घायल होकर बचे. यह ख़बर सुनकर महाराणाको बहुत गुस्सह आया, और उन्होंने कई सर्दारोंको मए उनकी जमइयतों तथा पैदल सिपाहके, और मांडलगढ़से शम्भुबाण तोप तथा खैराड़के राजपूतोंकी जमइयत साथ देकर महता गोकुलचन्दको लावे भेजा; और क़िलेपर बड़ी तेज़ीके साथ गोलन्दाज़ी होने लगी. इसके बाद महाराणाने प्रधान महता शेरसिंहको यह हुक्म देकर वहां भेजा, कि जिस तरह होसके क़िला क़ाइम रखकर जागीरदारको

सज़ा देनेकी कोशिश कीजावे. उक्त प्रधानने बड़ी अ़क्लमन्दी और होश्यारीके साथ मोर्चे लगाकर क़िले वालोंको तंग किया, यहांतक, कि अख़ीरमें रावत् चत्रसिंहने घबराकर अपनी इ़ज़्ज़त और जानकी पनाह मांगी; और यह दर्ख्वास्त क़बूल होनेपर उसने विक्रमी १९०४ मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० १२६३ ता० २३ ज़िल्हिज = .ई० १८४७ ता० १ डिसेम्बर] को पिछला चार घड़ी दिन रहे क़िला शेरसिंहके सुपुर्द करदिया, जिसका तफ्सीलवार हाल पाठकोंको महता शेरसिंहकी दो अ़र्ज़ियोंसे, जिनकी नक़्लें नीचे लिखीजाती हैं, मालूम होगाः-

महता शेरसिंहकी पहिली अ़र्ज़ी.

॥ श्रीएकलींगजी. ॥ श्रीरामजी.

लालसीघ, गरधारीसीघ, देवीसीघ, समरतसीघ,गुलाबसीघ, रावत जवानसीघ को धरती हात लगाऐ मुजरो मालम वे, चोइीसा सवलालरो आसरी वचन मालम वे.

॥ सीध श्री श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री प्रथीनाथ हजुर अरज षानाजाद कीदो मनष महेता सेरसीघको धती हात लगाऐ मुजरो अरज मालम वे, श्री षावंद ईश्वर तुल हे अप्रंची ॥ अठाको अहैवाल दीन प्रत लीष्यो, सो तो मालम हुवोइी वेगा, हुकम परमाणे रावत चत्रसीघजी कसुरकी अरज लीष दीदी ओर मगसर बुद १० गुरे दन घड़ी ४ रेता श्री षावंदाका तेज प्रतापथी रावतजी वा हमेरसिंघजी ससत्र मैल अेकलिंग पलटणरा जापता मेंहै आऐ गया, अर बगत तंग आयो जीसु वाका मनष,चाकर वा प्रदेसी हे ज्यांने तो समाल सवेरे नीकाल्या जावेगा अर अेकलिंग पलटणरा पेरा ६, भीम पलटणरा पेरा ४ लेन स्वलाल चौईसाने अर लाला धीरजलालने मेल्या, सो सोबेदार षानमेमद अर पेरा २ ने तो दरवाजे मेल्या, तालो कुची सोबेदार वसु वेगया, अर पेरा ८ वारला डंडारी बुरजाप्र लगाऐ दीदा, नारवुरज १, गणेस बुरज १, जलबुरज १, फतै बुरज १, दंडो तुटो जठाकी २ बुरजा प्र०, १ भेरु बुरज, १ नारबुरज नपे, २ दुजी बुरज हे जठे इी प्रमाणे लगाया, अब अणाका मनषा वासते रथ काकड़ोली श्री जीदुवारा सु मगाया हे जत्रे डेरो पडो कराऐ दीदो है,सो रावतजी अर वारा मनष साराइी ऊठे रहेगा अर जापता

वासते एकलींग पलटण, भीम पलटणका पेरा रहेगा; श्रोर श्री पावंदा फरमाइी छी सो गड पाड़ आवजे, सो गडने सुणता तो सुभक छा, प्रत गड तो श्री पावंदका चार ही हाथ माथै वे अर अछुछ लपसमी लगावे अर हकवाद वड़ी अकलदारी सुं गड बंदावै जस्या है, एक ढंढा इी मजवुत पका है अर घाटापर अर सीवाडा ऊपर है, जीकी अरज तो पेतावा मालुम करु-गा, जठा पछे श्री पावंद हुकम करेगा जी माफक करवामै आवैगा, हाल तो अठे पाडवो तुल्यो हे न्ही, कारण अेक तो साराके वचै हे, दुजो घाटो नजीक, जणीमु अणी जाऐगा तो पालसो अर माथारपौ प्रतीतको रहै जसी जायगा हे, अर जी सवाऐ बुरज ऊड़ावा तौ हजारा तो लागे अर लापाको काम वीगडे; मेल जो अलोकीक है, अर जाऐगा जो हासलकी वदवारीकी हे, सो वी अरज पेतावा मालुम करुगा. अवे दन गणा गोलवो तुल्यो न्ही ज्यो गडने पाडवोइी तुल्यो तो जीने श्री पावंद वीच्यार हुकम करेगा ज्योइी पाड-जावेगा, हाल तो २ नीसांण अफसरां सुदी अेक अमरगढकी भाएप जाजपुर का असवारामे कानावत वड़दसींघ, एक जमादार पाजवगसजीने अर ३० असवार मेल आण हाजर वुगा, ओर चीतोड़, जाजपुर, माड़लगढकी जमीत तोपने तो प्रभारी रवाने करुगा अर ऊदेपुरकी तोपा अर संभुवांण तोपने लेर पेतावा आऊ हुं, क्यो मगराको काम वी गतरस वेरयो है सो वणी वणाइी फोज हे अर छावणी देवारी वारणे रापवारी श्री पावंदा वीच्यारी है. ओर गोकलचंद जाजपुरका काम तावे जमीतकी लपी सो वी सीपदे आऊ-हुं, पानाजादके तो पेतावाको आसरो है, सुदरशट फरमाअे पास रुको ईनाऐत फरमावे-सं० १९०४ मंगसर वीद १० गुरे रात आदी. श्री जी का तपसुं ईतावे साहेवसुं तो मुवंदी सो वादी अने तो मालमहे, पण ईकवाल धणीको; ओर कालुराम लपी सो अरज मालम हुइी जे अर पानाजाद करीआयो सो दुवो वगस्योइी हो, फेर छगनलालने दुवो होजाऐ.

शेरसिंहकी दूसरी अर्ज़ी.

॥ श्रीएकलींगजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री प्रथीनाथ हजुर अरज पानाजाद कीदो मनप मेहेता सेरसीघको ध्रती हातलगाअे मुजरो अरज मालम वै, श्री

हजुर ईश्वर है अप्रंची ॥ श्री षावंदाको रुको ईनायत हुवो, अदब बजाये माथे चडाश्रे लीदो, हुकम आयो वीवरावार जवाब आयां मालुम वेगा, सो कत्रोक अठाको अहेवाल कचो आगे ऊठे लीष्यो सो मालुम हुवोइ वेगा, ओर काले नही लीषाणो जीरी माफ वे, ओर अेवाल ओर कत्री ऊपजी है ज्या सला अठाकी वा षानाजादने ऊपजी ज्या तथा सवाईसीघ, सामनाथने हुकम कीदो जी देस काल की सला अठे ऊपजी सो अरुबरु मालुम करणी है, सो पेतावा आयां मालुम करुंगा; ओर अठाको काम जो श्री षावंदाका हुकम प्रमाणे वेइ गया, ओर षानांजाद वासते लिषी सो प्रतीत कीजे मती, चड़ ऊतरकी सुरत राषजे, सो श्री षावंदा को अकबाल अर सुनजर को प्रताप अस्यो है सो सारी त्रे आनद है, अर मनप कबीला तावे हुकम लिष्यो सो हाल सीष देवो तो तुल्यो नही सो लेराई चलाया है, ओर आवध पाती साराईका लेर बारीमें काड पाला पाला डेरामेंहे आएया, अर सवनाथने ई यां भेलो लेआया अर जनानाने अदबसु रथमें बेठाश्रे मारो डेरो कनातवालो जीने षडो करायो जी मेहै लाया ओर वाकाई चाकरांके माथे आवद पातीका भारा बंदाये मोकल्या है, सो लीयां आवे है; ओर गडको सरंजाम, सलेषानो भरमाअेल जाऐगा बदले हुकम आयो सो आछी वगत देष सारा सरदारां सुदी गडमैहे जाये नसाएकी पुजा कराश्रे गडमै कायम कराऐ-दीदो, पछे षानाजाद अर लालसीघजी, देवीसीघजी, गरधारीजी, समरतसीघजी, अजीठण सेष चांद, चोईसो स्वलाल जाश्रे जनानी मरदानी जगारे ताला जड्या हा जठे तो जड्या राष्या ओर वाकी कत्रोक असबाब संदुक, पेई, गांठ, ठामडा बारणे हा, सो हो जठेई जनानी जगामे है, कोटडीमे मीलाअेदीदा, कुच्या मारी लार पेरा हे जीमे सुपाइी है, अर ताला जडाश्रे कुच्यां अेकलीग भीम पलटणमें सुपाअेदीदी. दुजे दीन देवीसीघजीने, अजीठणने वा स्वलालने मेल ताला कुचीप्र लषोटा छाप कराश्रे छाप कराश्रे दीदी है; हमेरसीघजीने तो गाडीमें वेठाया अर स्वनाथसीघने अर मोडाने जो पालो पेरामें रवाने कर्यो हे. ओर हुकम लीष्यो सलेपानो अणाने काई मले नही, सो देवो मारे हात कठे हे, यो तो सारो श्री षा-वंदाको हुकम वेगा सो वेगा; ओर हुकम आयो भरमाअेल जगा वे सो षुदाअेनाषजे, सो या हाल तुली नही, अरज कीदा पछे हुकम वेगा सो करवाम्हे आवेगा. तेषाना, ओव-स्या गणी है अर फुटी टुटी जो जाश्रेगा गणी है, जीसु तुरतइ देपी जाऐ नही, अणीकी अरुवरु अरज कर वीच्यार ऊठाथी तुलेगा जीने मेलांगा, ओर बंदोबसत ताला कुची अर अेकलीग पलटण भीम पलटणरो जापतो पुरो करदीदो है, ओर मारवाडी प्रदेस्यां का हत्यार धराअे काड्या, दुजे दन पेरामै राष हत्यार दीदा दफेराका, अर हुकम प्रमाणे केदीदो है, सो कोइ हरामपोरी करे ज्यारे चाकर रहोगा तथा पेड़्या आवोगा, तो अबरके तो जीवता काड्या है, आगासु आवावालो मार्यो जावेगा अर देससु वेऊतन साहेब

करेगा; ओर फोज अठेई रापवाको हुकम आयो सो कत्रोक दादनीरो लोग (१) कीदो हो जीको तेह परच पडवो तुल्यो नही जीसु आगे अरज लीपी, जीसवाअे दोअे नसाण जमादार कल्याणसीघका फेर मेलदीदा हे, श्री पावंद गणी कुसी रापै अठाका वंदोवसतमें कसर हे नही, ओर हुकम लिप्यो ऊठे फोज वणीरहे, जीमेह वांकी आंपमेहे वणी रहे सो च्यार नसाण, ५० अस्वार तथा ज्मादार पाजवगसजीनै अर कानावत वडदसीघ अमरगढकी भायेपको पुरी प्रतीतको अर पेटाकी जमीमें रेवा वालो है जीने मेल्या है ओर पास दसपता पानो अरजी लीपती वगत आए पुगो, हुकम आओ वावडी तो वुराऐदेणी, सो वावडी मेहे तो चीज वसत नापदेवारो भरम आओ जीसु वुराई न्ही ओर पानाजादने पेतावा हाजर वेवाको हुकम आया, सो वीद १४ को चाल्यो पेतावा हाजर वेगा, ओर नकसो ऊतारवा पीदरु (२) ने मेलदीदो हे. पानाजाद तो आए हाजर वेतो, अंत हुकम को ईंतजार हो, ओर चीतोड, जाजपुर, माडलगडकी तोप जमीतने हुकम आया पेली रवानह करदीदा हे, संवुवाण तोपने लेरा लीया आऊ हुं ओर रावतजीरे लेरा नसाण ३ सुंतो ज्मादार वालगोवीदने अर १ नसाण भीमपलटनको सोवादार जागीरपा, नसाण १ एकलीग पलटणको जीरो सोवेदार पानमेंमद, भेसरोडकी त्रफकी जमीत चञ्या पालो १०० आदमी, वारगीराका जमादार वलवंतसीग असवार २० सु ओर सलेदारांका तथा सरदारांका हे सो थाणाका सरदाराका असवार तो पेमलीसुं जावेगा. पानाजादके तो फगत पेतावाको ई आधार हे, सुदरसट फरमाअे षास रुको ईनायेत होवे, सं० १९०४ मगस्र वीद १३ रवे तीजापोरा.
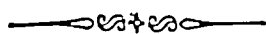
किला फ़त्ह करनेके बाद रावत् चत्रसिंह ओर उसके काका हमीरसिंह वग़ैरहको साथ लेकर महता शेरसिंह उदयपुरमें हाज़िर हुआ, और महाराणाने उसको इस ख़िद्मत के एवज़में ख़िल्अ़त वग़ैरह बख़्शनेके सिवा ताज़ीम और रुख़्सतका बीड़ा इनायत करने का हुक्म दिया, जिनमेंसे उसने सिर्फ़ बीड़ा क़ुबूल करके ताज़ीमके लिये यह अ़र्ज़ की, कि रियासत मेवाड़में इस वक़्ततक केवल दो प्रधानोंको ताज़ीमकी .इज़्ज़त मिली है, याने अव्वल बिहारीदास कायस्थको, और दूसरे महता रामसिंहको, जिसका नतीजह यह हुआ, कि उक्त दोनों प्रधानोंका ख़ातिमह बहुत ही जल्द होगया, इसलिये ताज़ीमकी

(१) दादनीके लोग वह थे, जिनको थोड़े दिनके वास्ते रोज़ानह या खुराक वग़ैरह पर कामके लिये नौकर रक्खा गया था.

(२) एक युरोपिअनका नाम है.

इज़्ज़त (१) तावेदारके लिये मुआफ़ फ़र्माई जावे. महाराणाने उसके इस उज्रको कुबूल किया. इसके बाद लड़ाईमें मारेजाने वाले सिपाहियोंकी विधवा औरतों तथा बालबच्चों की पर्वरिशका हुक्म होकर ज़ख़्मी लोगोंको इन्आम इक्राम दियागया, और रावत् चन्द्रसिंहका कुल माल व अस्बाव सर्कारमें ज़ब्त कियाजाकर उसको गुज़ारेके लाइक़ पहाड़ी ज़िलेमेंसे मए चन्द गांवोंके कोलारी ग्राम जागीरमें दिया, जिसकी औलाद इस वक़ उदयपुरमें मौजूद है; और डोडिया ठाकुर ज़ोरावरसिंहने ६४ वर्षके बाद अपना मौरूसी ठिकाना वापस जागीरमें पाया, लेकिन् क़िलेके बन्दोबस्तके लिये एक सर्कारी निशान वहां रक्खा गया, और फ़ौज ख़र्च व निशान ख़र्च वग़ैरहके एवज़ कुल ठिकाने पर ख़ालिसहका बन्दोबस्त कियाजाकर ज़ोरावरसिंहको जागीरमेंसे सिर्फ़ उसके गुज़ारे के लाइक़ कुछ बन्धान नियत करदिया गया. थोड़े अ़रसहतक यह प्रबन्ध रहनेके बाद विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = .ई० १८५५] में महाराणाने ख़ुश होकर दूसरे बन्दोबस्तके साथ लावा (सर्दारगढ़) का कुल इख़्तियार ज़ोरावरसिंहको इनायत करदिया, जिसका हाल नीचे दर्ज किये हुए काग़ज़ोंसे ज़ाहिर होगाः-

ज़ोरावरसिंहके ख़तकी नक़्ल.

॥ श्रीएकलींगजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ लीपता डोड्या जोरवारसीगजी मनोहरसींगजी राजथान लावे अप्रंच ॥ सेठ जी सुलतानमलजी, ईदरमलजीरा रु० ६२५००) अपरे साडावासट हजार सके ऊदेपुरी जुना चलणरा उदारा लेर श्रीजीका बाकी नीसरता जी पेटे टीप देवाड़ी तीरो व्याज सेकडा १ प्रत रु० ।।।) पुण लपे देणो जीरी तनपावम्हे गाम लावा पेडा सुदी

(१) इस रियासतमें वलीअ़हदसे दूसरे दरजहपर प्रधानकी .इज़्ज़त समझी जाती है, और बहुतसी .इज़्ज़तकी बातें जो ख़ास प्रधानके लिये हैं वे दूसरे सेवकोंको हासिल नहीं होतीं. जिसतरह नराज़ू (एक प्रकारकी सीधी तलवार) हाथमें और सोनेकी छड़ी जलेबमें रखना वग़ैरह, और प्रधान की कचहरीका हुक्म भी कुल सर्दार उमराव वग़ैरह मानते रहे हैं; लेकिन ताज़ीमकी .इज़्ज़त वली-अ़हदके मुवाफ़िक़ प्रधानको भी अपने फ़र्ज़न्दोंमें शुमार करके नहीं दीजाती.

मांड दीदो, सो यां गामारी पडी कोडी सुदा दाम दाम आवसी सो राजरी त्रफथी पोतदार रेगा जी बसु जमां करावांगा. गामांरी बीगत-

गाम लावो. गाम कालेसरो. गाम चतरपुरो.
गाम राजपुरो. गाम कसनपुरो. गाम बीरवास.
गाम डुगारो षेडो. गाम अरण्यो. गाम ओलणारो षेडो.
गाम गोपालपुरो गाम अरसीपुरो.
श्रीएकलीगजीरे भेट कीदो.

ईप्रमाणे गाम तनषावम्हें लगाआ सो हासल, भोग, वीराड़ वगेरे सरब पडी कोडी आवसी सो ई षत पेटे जमा वेगा, ई रुप्या ई रीत जमा वेगा अर पाछा षरचाएगा-

५००) श्री परमेसरारे गाम १ रा भेट करणा सो गाम गोपालपुरो भेट कीदो.

२२००) श्री जी में छटुंदरा दोई साषरा भरणा.

४१६०) जोरावरसीघजीरे रोटी षरचरा ऊपाड़णा ३०००), तालकाई परचरा ११६०).

८०००) बाकी रुप्या आठ हजार जमा करावेगा.

ज्मे रु० १४८६०) चवदा हजार आठसे साठ ई प्रमाणे भराएगा, और गुमासतो १ राज रो जमो अवेरेवा ऊपरे रेगा जीरो रोजगारका रु० ३६०) तीनसे साठ आदमी सुदी भरदीया जावेगा, अर बाकी बरसमे दीन असाढ सुदी १५ लेषोकर व्याज जुडे सो अतो दे बदेगा सो मुल पेटे जमा वेगा, अर नवो षत मांडदीदो जावेगा; आठ हजारको आंक आसरे हे सो ईमे मेनत कर बदतो ज्मो पुगावांगा, ईमेंसु कोडी १ परभारी षरचा न्ही, कोई अस्योई काम आश्रेपडे तो सेटजीराथी लेणो और पोतदारकी सलासु षुन तगसीर वगेरे पाच रुप्या पेदा करे ज्मा करावणा, और लाटा कुंता वगेरे सरब कामम्हे पोतदारने सामल राष करणो, प्रभारी कोई बात करणी न्ही. यो षत म्हेताजी श्री सेरसीगजीरी हवेली बेठा राजी कुसी थी माडदीदो, सो कोई बातरी कसर पाडां न्ही. दसगत पंचोली ऊदेलालका डोड्या जोरावरसीगजी मनोरसीघजीरा केवासु लष्या, सं० १९११ (१) का द्रुती असाढ सुद ९ रवे. दस्वास जोरजीरा हातरो छे.

(१) यह संवत् चैत्रादि हिसाबसे १९१२ होता है.

उठंत्रीकी नक्ल.

॥ श्रीएकलीगजी.　　　　॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री श्री दीवाणजी आदेसातु प्र० दुवे महेता सेरसीघजी वचनातु, ईत्रा गामारा पटेल लोगा कस अप्रंची । ईत्रा गाम प्रगणे वगेरेके रेष टका ————— ऊपत रु० १५०००), हाल ऊपत रु० १८०६०) म्हे डोड्या जोरावरसीग रोडसीगोत हे पटे मआ हुवा है, सो अमल करावजो. गामारी वीगत —————

	ऊपत रु०	हाल ऊपत.	रेप टका.
गाम लावो प्रगणे कोसीथलरे षेडा सुदी	१३०००),	१४८१०),	२९६२०)

१०४६०) गाम लावो सरदारगढ	५२५) गाम कालेसरो
२००) गाम चत्रपुरो	२५०) गाम राजपुरो
२७५) गाम कसनपुरो	८५०) गाम बीरवास
३७५) डुगारो षेडो	८००) अरण्यो
५७५) ओलणारो षेडो	५००) गाम गोपालपुरो
अरसीपुरो षेडो ऊजड सो बस्यो	

गाम जेतपुरो षेडा सुदी प्रगणे केलवारे	२०००),	३२५०),	६५००)

२९००) गाम जेतपुरो	३५०) षेडी आगलगामो

१५०००), १८०६०), ३६१२०).

रेष टका ३६१२०, की चाकरीरा असवार ७२, पाली बंदुका १०४, सो आधी चाकरीकी अेवज तो चठुदरा रुपीआ ३०१०) श्री भंडार भरा जावेगा अर आधी चाकरी सदरुप

असवार ३६, पाली बंदुका ७२ थी हुकम प्रमाणे देस प्रदेस हुकम प्रमाणे आछा घोडा थी रजपुत पाली बंदुका थी सेवा करसी, सो अबार नवो कोलनामो हुवो जी सरसते चाकरी तो असवार १८, पाला बंदुका ३६ थी हुकम प्रमाणे देस प्रदेस करेगा, और चठुंद सो हाल पेदासथी रु० ३०१०) हुवा अर आगे रु० १२५०) देतो, ज्मे रु०४२६०) हुवा जीकी वीचका रु० २१३०) अकवीसेह तीस भरया जावेगा तागीर कालसाथी, प्रवानगी महेता सेरसीग लषतां पंचोली रधीराम राजारामोत बगसी सं० १९११ रा दुती असाड सुद ८.
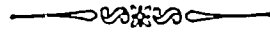
इसके बाद विक्रमी १९१५ [हि० १२७५ = ई० १८५८] में ठाकुर ज़ोरावरसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा ठाकुर मनोहरसिंह सर्दारगढ़का जागीरदार बना. इसके वक़्में भी ठिकानेपर दबाव डालागया, और तरक़्क़ी हुई, जिसका हाल मौक़ेपर आगे लिखा जायेगा.

विक्रमी १९०४ पौष कृष्ण ८ [हि० १२६४ ता० २१ मुहर्रम = ई० १८४७ ता० ३० डिसेम्बर] को बागौरके महाराज शेरसिंहका कुंवर शार्दूलसिंह गुज़रगया, जो महाराणाको ज़हर देनेकी तुहमतपर रसोड़ेके महलमें क़ैद था. विक्रमी १९०५ वैशाख शुक्ल १२ [हि० १२६४ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८४८ ता० १४ मई] को जगत्शिरोमणि और जवानसूरजविहारी (१) के मन्दिरोंकी प्रतिष्ठा हुई. जगत्शिरोमणि का मन्दिर राज्यमहलोंके बड़ीपोल दर्वाज़हके बाहिर पश्चिमी लाइनमें बहुत उम्दह तर्ज़का बना हुआ है. इस मन्दिरका मुफ़स्सल हाल उसकी प्रशस्तिको देखनेसे मालूम होगा- (देखो शेषसंग्रह प्रशस्ति नम्बर १). और जवानसूरजविहारीका मन्दिर जगन्नाथरायके मन्दिरसे उत्तर पश्चिम तथा महाराणा स्कूलके उत्तरमें वाके है. महाराणाने इन मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाका बड़ा भारी उत्सव किया, जिसमें मज़्हबी पेश्वाओंको दान दक्षिणा देनेके सिवा चारणोंको हाथी, घोड़ा तथा ख़िल्अत, और सर्दार पासवानों आदिको सरोपाव बख़्शे. इसी उत्सवपर मेरे (कविराजा श्यामलदासके) पिताको श्रवणगज नामी एक हाथी मिला था.

विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ता० १२ शव्वाल = ई० ता० ११ सेप्टेम्बर] को महाराणाके घुटनेमें बादीका दर्द पैदा हुआ, जो उनके शरीरमें अख़ीर वक़्तक बढ़ता रहा. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १२६५ ता० ४ मुहर्रम = ई० ता० १ डिसेम्बर] को महाराणा उदयपुरसे रवानह होकर एकलिंगेश्वर, नाथद्वारा, कांकड़ोली, चारभुजा और आमेट होते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० १० मुहर्रम

(१) यह मन्दिर इन दिनों "बांकड़े विहारी" के नामसे मश्हूर है.

=.ई० ता० ७ डिसेम्बर] को सर्दारगढ़में पहुंचे, जहां क़िले व महलोंको देखकर बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की, और डोडिया ठाकुर ज़ोरावरसिंहको ताज़ीम .इनायत करके दूसरे दरजेका उमराव बनाया. ठाकुर सर्दारसिंहके बाद तीसरी पीढ़ीमें ज़ोरावरसिंहके तरक़्क़ी पाने और उसकी दोबारह .इज़्ज़त बढ़नेका शुरू ज़मानह इसीको समझना चाहिये.

सर्दारगढ़से रवानह होकर कोठारिया और नाहरमगरे होते हुए विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ मुहर्रम = ई० ता० १५ डिसेम्बर] को महाराणा उदयपुरमें दाख़िल हुए; विक्रमी माघ शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८४९ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को सलूंबरके रावत् पद्मसिंहकी सिहतपुर्सीके लिये, जो उस-वक़्त बहुत सख़्त बीमार था, चंपाबाग़में गये, और विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को उसके इन्तिक़ालकी ख़बर मालूम हुई. रावत् पद्मसिंहकी सख़्त बीमारीका हाल सुनकर उसका बेटा केसरीसिंह उसी रातको कोटड़ेतक आया, और उसे सलूंबर लेगया, लेकिन् कहते हैं, कि वह सलूंबर पहुंचनेसे पहिले ही रास्तेमें मरगया.

विक्रमी १९०६ आश्विन शुक्ल १४ [हि० ता० १३ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १ ऑक्टोबर] को महाराणाके दाहिने घुटनेमें बादीका दर्द शुरू हुआ, और वह फैलकर पैरके तलवेतक जा पहुंचा. इसके इ़लाजके लिये देशी वैद्योंके सिवा अंग्रेज़ी डॉक्टरको भी बुलाकर दिखलाया गया, लेकिन् जोकि महाराणाको अंग्रेज़ी डॉक्टरोंके इ़लाजपर ज़ियादह एतिबार न था, इसलिये हिन्दुस्तानी वैद्योंका ही इ़लाज होता रहा, जिससे विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० १२६६ ता० १८ मुहर्रम = ई० ता० ४ डिसेम्बर] तक वह रोग बिल्कुल मिटगया. परन्तु विक्रमी १९०७ श्रावण शुक्ल ३ [हि० १२६६ ता० १ शव्वाल = ई० १८५० ता० १० ऑगस्ट] को फिर वही दर्द बढ़ा और घुटनेसे नीचे नीचे कुल पैरमें फैलगया. महा-राणाका इरादह था, कि मेवाड़के पर्गनोंमें जो हाकिम प्रधानके इख़्तियारसे भेजे जाते हैं, उनकी जगह अपने ख़ास पासवानोंमेंसे एतिबारी नौकर भेजे जाया करें, और उन्हींकी मारिफ़त मालगुज़ारी बढ़ाईजाकर कुल आमदनी ख़ज़ानहमें दाख़िल हुआ करे; इसलिये उन्होंने पर्गनह कुंभलगढ़ व खैरवाड़ा कोठारी छगनलालके सुपुर्द करके उसके भाई कोठारी केसरीसिंहको विक्रमी श्रावण शुक्ल १३ [हि० ता० ११ शव्वाल = .ई० ता० २० ऑगस्ट] के दिन सर्कारी दूकानके अ़लावह टकशालका काम भी सौंपा, और साइरका ठेका तथा मेवाड़के चन्द पर्गने सेठ ज़ोरावरमल्लके सुपुर्द रहे. लेकिन् इन दिनों महाराणाको अव्वल सर्दारोंका बन्दोबस्त करना ज़रूर था, इस वज्हसे वह आहिस्तह आहिस्तह मुल्की कामों व कारख़ानोंको दुरुस्त करते जाते थे.

सिवा इसके इसी अ़रसहमें बीलख वगै़रह पालोंके भील सर्कश होगये थे, जिनको सज़ा देनेके लिये उन्होंने महता शेरसिंहके बेटे सवाईसिंहको पल्टन, रिसालह और कुछ सर्दारोंकी जम्इ़यत साथ देकर उस तरफ़ भेजा. सवाईसिंहने इस मौके़पर बड़ी तनदिही और बहादुरीके साथ भीलोंको सज़ा दी, कि जिसको वे लोग अबतक याद करते हैं. इसके बाद एक अ़रसहतक इन लोगोंने बदमआ़शी करना छोड़दिया.

अब हम यहांपर सर्दारोंका हाल आगेके लिये छोड़कर महाराणाके दौरे और उनकी दोनों बहिनोंके विवाहका हाल लिखते हैं, जो इस तरहपर है, कि महाराणाका मन्शा कुल मुल्कको अपनी निगाहसे देखकर उ़म्दह इन्तिज़ाम करनेका था, इसलिये वह विक्रमी पौष शुक्ल ३ [हि० १२६७ ता० २ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १८५१ ता० ५ जैन्युअरी] को मए ज़नानी सवारीके एकलिंगेश्वर, नाहरमगरा, सनवाड़, मातृकुण्ड, रासमी, सेंतूरिया, गाडरमाला, मगरोप, और बरसल्यावासमें होतेहुए विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० १४ जैन्युअरी] को मांडलगढ़ पहुंचे; इसवक़ फ़ौज वगै़रह कुल लश्करकी तादाद क़रीब १०००० आदमियोंके थी. मांडलगढ़ पहुंचकर दूसरे रोज़ वहांका क़िला देखनेको महाराणा गढ़पर पधारे, जहां क़िलेदार और हाकिम महता स्वरूपचन्दने उनकी बहुत उ़म्दह तौरपर मिह्मानदारी की. यह शख़्स (स्वरूपचन्द) महता अगरचन्दका पोता और देवीचन्दका बेटा था, कि जिसकी खै़रख़्वाहीसे मरहटोंकी लूट मारमें मांडलगढ़का क़िला और ज़िला महाराणाके तह्तमें बनारहा, क्योंकि उसवक़ कई मुख़ालिफ़ोंने इस क़िलेको दबालेनेकी कोशिश की थी. विक्रमी माघ कृष्ण २ [हि० ता० १६ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० १९ जैन्युअरी] के दिन स्वरूपचन्दने महाराणाको फ़ौज सहित दावत दी, उस समय महाराणाने प्रसन्न होकर स्वरूपचन्दको फ़र्माया, कि तुम्हारा घराना महता अगरचन्दसे लेकर आजतक इस राज्यका खै़रख़्वाह रहा है, इसलिये मैं तुमसे बहुत खुश हूं. इसवक़ मेरे (कविराजा श्यामलदासके) पिताने मारवाड़ी भाषामें कुछ पद्य और कविता भी कही थी, जिसमेंसे एक दोहा नीचे लिखाजाता है:-

दोहा.

समत सात उगणीससे दीह महाबद दोज ॥
पावन कियो सरूपचंद नृप सरूप कुन भोज ॥ १ ॥

इसके बाद महता स्वरूपचन्द और उसके बेटे गोकुलचन्दको ख़िल्अ़त वगै़रह देकर विक्रमी माघ कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० २० जैन्युअरी] को महाराणाने मांडलगढ़से कूच किया, और वहांसे पारसोली व बसी होकर विक्रमी

माघ कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २२ जैन्युअरी] को चित्तौड़गढ़ की तलहटीके डेरोंमें दाखिल हुए, जहां विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २४ जैन्युअरी] को किला देखनेके लिये गढ़पर गये, उसवक्त इस किलेकी किलेदारी और ज़िलेकी हाकमी प्रधान महता शेरसिंहके अधिकारमें थी, इसलिये उसकी तरफ़से दावत हुई. महाराणाने किलेको अच्छी तरह चारों ओर फिरकर देखनेके बाद शामके वक्त वापस डेरोंमें आकर वहांसे कूच किया, और ग्राम हत्याणा, ताणा तथा करणपुर होते हुए विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २८ जैन्युअरी] को राजधानी उदयपुरमें दाखिल हुए. इस दौरेमें जो जो गांव रास्तेमें जागीरदारोंके आये, उनकी तरफ़से महाराणाकी बहुत उम्दह तौरपर मिह्मानदारी कीजानेके सिवा घोड़े वगैरह चीज़ें भी नज़ हुईं; मगर इसवक्त कोई ख़ास मुल्की फ़ायदहकी सूरत पैदा न हुई, क्योंकि हज़ारों आदमियोंकी भीड़ भाड़ साथ रहने और पुराने रवाजकी पाबन्दीके सबब मुल्की इन्तिज़ाम करने और ज़िलोंको अच्छी तरहसे देखनेकी फ़ुर्सत महाराणाको बहुत कम मिलती थी. इसी अरसहमें कोटाके महाराव रामसिंह नाथद्वारेके दर्शनोंको आये, जिनका ख़ास मन्शा उदयपुरमें शादी करनेका था. आख़रकार इस मुआमलहकी बातचीत होकर उक्त महारावसे नीचे लिखी चार शर्तें कुबूल कराई गई और शादी मन्ज़ूर हुई :-

अव्वल यह, कि उदयपुरकी बाईसे जो कुंवर पैदा हो, वह छोटा होनेकी हालतमें भी राज्यका हक़दार रहे.

दूसरे, उदयपुरकी बाईका दरजह सब राणियोंसे बढ़कर रहे.

तीसरे, उदयपुरकी बाईको ५००००) रुपये सालानह आमदनीकी जागीर अलह्दह मिले.

चौथे, उदयपुरकी बाईकी ड्योढ़ी या नौहरेमें कोई मुज्रिम पनाह लेवे, तो वह सज़ासे बचाया जावे.

महाराव रामसिंहकी कुबूलकी हुई इन चारों शर्तोंको महाराणाने एजेएट गवर्नर-जेनरल राजपूतानहके पास मन्ज़ूरीके लिये भेजा, लेकिन् उक्त साहिबने अव्वल शर्तके सिवा बाक़ी शर्तोंको मन्ज़ूर करके कहा, कि यही अव्वल शर्त महाराणा दूसरे अमरसिंह और दूसरे जगत्सिंहके ज़मानहमें क़रार पाई थी, जो राजपूतानहमें आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी और फ़सादकी बुन्याद डालने वाली हुई, और जिससे मरहटोंने राजपूतानहमें दाख़िल होकर इस मुल्कको क़ियामतका नमूनह बनादिया, इसलिये गवर्मेएट अंग्रेज़ी अब ऐसी फ़सादकी बुन्याद क़ाइम करना नहीं चाहती. परन्तु महाराव रामसिंहने अपनी उन्नतिकी

ग़रज़से चारों शर्तें लिखदीं (१), और अख़ीरमें यह शादी महता शेरसिंह व पुरोहित श्यामनाथकी मारिफ़त क़रार पाई, जिसके .एवज़ महाराव रामसिंहने उक्त दोनों मुसाहिबोंको दो ग्राम जागीरमें दिये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ जमादियुल्अव्वल =.ई० ता० ९ मार्च] को महाराव रामसिंह उदयपुरमें आये, महाराणाके काका बागौरके महाराज शेरसिंह तथा शिवरतीके महाराज काका दलसिंह पेश्वाई करके उन्हें डेरोंमें लाये, और उसी दिन उनका विवाह महाराणाकी बहिन फूलकुंवरबाईके साथ बड़ी धूमधामसे हुआ. कोटाके महारावोंमेंसे महाराव दुर्जनशालके बाद दूसरी बार इन महारावने उदयपुर की राजकुमारीके साथ विवाह किया, इसलिये उन्होंने अपनी इच्छा पूरी होनेपर महाराणाको बहुत कुछ धन्यवाद दिया, और बड़ी नर्मीके साथ यह कहा, कि "हमारी रियासतकी .इज़्ज़त बढ़ाने वाले अव्वल तो गोवर्द्धननाथ और दूसरे मेवाड़के महाराणा हैं".

विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० १६ मार्च] की शामको महाराव रामसिंह राजधानी उदयपुरसे रवानह होकर सहेलियोंकी बाड़ीमें ठहरे, और वहांसे चलकर नाथद्वारा होतेहुए कोटे पहुंचे. इसी तरह विक्रमी १९०८ वैशाख कृष्ण १२ [हि० ता० २५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २८ एप्रिल] को महाराणाकी छोटी बहिन सौभाग्यकुंवरबाईका विवाह रीवांके महाराजकुमार रघुराजसिंहके साथ हुआ. इस सम्बन्धमें महाराज विश्वनाथसिंहने भी वही चार शर्तें, जो कोटाके महारावने मन्ज़ूर की थीं, रीवांसे लिख भेजीं. जब कुंवर रघुराजसिंह विवाह करनेके लिये उदयपुरमें आये, तो महाराज शेरसिंह और महाराज दलसिंह पेश्वाई करके उन्हें डेरोंपर लाये, और रातके वक्त विवाहकी रस्में अदा हुईं. इन दोनों शादियोंमें मैं (कविराजा श्यामलदास) भी मौजूद था. विवाहके दस्तूर अदा होने के वक्त राजपूतानहकी बाज़ बाज़ रस्मोंपर रीवां वाले बड़ा तअ़ज्जुब ज़ाहिर करते थे, और रीवां वालोंकी चाल ढाल तथा पहराव देखकर मेवाड़ वाले हंसते थे, जैसा कि सगे सम्बन्धियोंमें परस्पर प्रेम और आनन्दके साथ परिहास होता है. महाराणाने कोटाकी बरातसे बढ़कर रीवां वालोंका आतिथ्य किया, और महाराजकुमार तथा उनके सर्दारोंने भी महाराणाको अपना इष्टदेव मानकर बर्ता, इस तरहपर आपसमें ज़ियादह मुहब्बत बढ़जानेके सबब महाराणाने उनको अपना परम सम्बन्धी जानकर द्विभाव बिल्कुल उठादिया. विक्रमी वैशाख शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० १३ मई] को

(१) महाराणा स्वरूपसिंहने भी ज़मानह देखकर पहिली शर्त मुआफ़ करदी.

जब महाराजकुमार रघुराजसिंह एकलिंगजी, श्री नाथजी तथा कांकड़ोलीके दर्शन करके उदयपुरमें वापस आये, उसवक्त महाराणाने खुद उनकी पेश्वाई की. इसके बाद रीवांके महाराजकुमारने अपनी बहिनके साथ शादी करनेके लिये महाराणासे अर्ज़ कराई, लेकिन् यहांसे लैतलालका जवाब मिला, इसपर उक्त राजकुमारने बहुत कुछ हुज्जत के साथ दोबारह अर्ज़ कराई, परन्तु महाराणा इतना दूर दराज़ सफ़र करके शादी करना नहीं चाहते थे, इसलिये रीवां वालोंकी वह उम्मेद पूरी न होसकी, और महाराजकुमार रघुराजसिंह रंजीदह दिल होकर विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ता० ३० रजब = .ई० ता० १ जून] को उदयपुरकी राजकुमारी सहित रीवांको रवानह हुए, अगर्चि उक्त महाराजकुमार उदयपुरसे रवानह होजानेपर भी महाराणाकी शादी अपनी बहिनके साथ कीजानेकी कोशिश करनेके लिये अपने चन्द मोतमदोंको उदयपुरमें छोड़गये, लेकिन् उन लोगोंको भी साफ़ इन्कारी जवाब मिलगया, तब वह अपनी बहिनकी मंगनी जयपुरके महाराजा रामसिंहके साथ पुख़्तह करगये.

विक्रमी श्रावण [हि० रमज़ान = .ई० जुलाई] याने राजकीय संवत् १९०८ के शुरूमें कोठारी केसरीसिंह साइरके कामपर मुक़र्रर किया गया, जो पहिले सेठ ज़ोरावरमल्लके ठेकेमें था; उक्त कोठारीने इस कामका इन्तिज़ाम बड़ी ख़ैरख़्वाहीके साथ किया.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २३ ज़िल्हिज = .ई० ता० १९ ऑक्टोबर] को यह ख़बर मालूम हुई, कि सलूंबर व देवगढ़ वग़ैरहके जागीरदारोंने अपनी जागीरके गांवोंमेंसे राजकी ज़ब्ती उठादी, जिसका ज़िक्र सिल्सिलेवार आगे लिखा-जायेगा. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० १२६८ ता० ९ मुहर्रम = .ई० ता० ४ नोवेम्बर] को नीमचकी छावनीसे पोलिटिकल एजेण्ट ज्यॉर्ज लॉरेन्स आये, जिनको सर्दारोंकी सर्कशीका हाल कहा गया, लेकिन् उन्होंने महाराणाको यह जवाब दिया, कि आप मुल्कके मालिक हैं, अपने इख़्तियारसे जैसा मुनासिब समझें बन्दोबस्त करें, हम ख़ानगी तक़ारमें दस्तन्दाज़ी नहीं करसक्ते. यह कहकर पोलिटिकल एजेण्ट तो वापस चलेगये, और विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० ता० २० रबीउस्सानी = .ई० १८५२ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेन्री लॉरेन्स उदयपुरमें आये, उनसे भी सर्दारोंकी सर्कशीके बारेमें बातचीत हुई, परन्तु वह भी पोलिटिकल एजेण्टके मुवाफ़िक़ जवाब देकर चलेगये. अगर्चि महाराणा अपने मुल्कका इन्तिज़ाम करना चाहते थे, लेकिन् पैरोंकी बीमारी और सर्दारोंकी सर्कशीमें दिन बदिन तरक़्क़ी होनेके सबब एक काम

दुरुस्त होने पाता, कि दूसरेकी फ़िक्र पड़जाती थी, और जिस्मानी हिफ़ाज़तके लिये भी तद्बीर करना अवश्य था. विक्रमी १९०९ वैशाख कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १२ एप्रिल] को प्रधान महता शेरसिंहने महाराणा को अपने मकानपर मिह्मान करके कुल रियासती लोगों सहित एक बड़ी दावत दी, और १००००) रुपया नक्द नज़ किया. इस मौकेपर महाराणाने महता शेरसिंह और उसके बेटोंको ख़िल्अ़त देकर वही १००००) रुपया वापस .इनायत किया.

अब हम यहां क़िले आर्ज्यापर फ़ौजकशी कीजानेका हाल लिखते हैं, जो इस तरह पर है, कि महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके छोटे पुत्र पूर्णमल्ल (पूरा) का बेटा नाथसिंह था, उसके बेटोंमेंसे महेशदास तो मगरोपका मालिक बना, और छोटे मुह्कमसिंह को आर्ज्या जागीरमें मिला. मुह्कमसिंहके पुत्र बख़्तसिंहने आर्ज्यामें क़िला बनाया, उसके तीन बेटों रणसिंह, अमरसिंह और अचलसिंहमेंसे रणसिंहके पांच बेटे १- प्रतापसिंह, २- पद्मसिंह, ३- मुह्कमसिंह, ४- रूपसिंह, और ५- नवलसिंह हुए. बड़े प्रतापसिंहको उसके भाइयोंने मारडाला और आर्ज्यापर रणसिंहके दूसरे बेटे पद्मसिंहका क़बज़ह होगया. विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = .ई० १८०८] में पानसलके शक्तावतोंने बालेरावकी फ़ौजकी मददसे आर्ज्याका क़िला छीन लिया. फिर प्रतापसिंह रणसिंहोतके दो बेटे, बड़ा उम्मेदसिंह और दूसरा अनोपसिंह, आर्ज्या लेनेकी फ़िक्रमें दौड़ते रहे, जिनमेंसे अनोपसिंह तो (जो महाराणाकी फ़ौजमें था) क़िले हमीरगढ़ पर हमलह करते समय मारागया, और उम्मेदसिंहकी औलाद आर्ज्याकी भोमपर क़ाबिज़ रही, जो आर्ज्या उनके क़बज़हसे निकल जानेके बाद उम्मेदसिंहके बेटे खुमाणसिंहको अंग्रेज़ी अमलदारीके शुरू ज़मानहमें आर्ज्याके क़िले सहित दीगई, और गांव आर्ज्या शक्तावतोंसे छीन लिया गया. खुमाणसिंहके बाद उसका बेटा चन्दनसिंह आर्ज्याकी भोमपर क़ाबिज़ रहा. विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई०१८३४] में महाराणा जवानसिंहने यह गांव (आर्ज्या) अपने मामू चावड़ा कुबेरसिंह और ज़ालिमसिंहको जागीरमें लिखदिया, जिनका हाल इसतरहपर है, कि बसोंड़ा इलाक़ह गुजरातके चावड़ा जगत्सिंहकी बेटी गुलाबकुंवरबाई महाराणा भीमसिंहको उदयपुरमें ब्याही गई थी, जिससे महाराणा जवानसिंह ओर कृष्णकुंवरबाई पैदा हुई. जगत्सिंहका बड़ा बेटा कुबेरसिंह और छोटा ज़ालिमसिंह था, जिनमेंसे कुबेरसिंहके बड़े बेटे फ़तहसिंहका बेटा प्रतापसिंह मौजूद है; ज़ालिमसिंहके एक बेटा कुशलसिंह और दो बेटियां हुईं, उनमेंसे एककी शादी विक्रमी १८९८ [हि० १२५७ = .ई० १८४१] में महाराणा स्वरूपसिंहके साथ और दूसरीकी महाराज दलसिंहके पुत्र गजसिंहके साथ हुई.

कुशलसिंहके एक पुत्र अभयसिंह पैदा हुआ, जो हालमें मौजूद है, और एक बेटी, जो वर्तमान महाराणा साहिबकी महाराणी हैं. चावड़ा कुवेरसिंह और ज़ालिमसिंह जबसे गुजरात छोड़कर आये, तबसे कुटुम्ब सहित उदयपुरमें ही रहते थे, और आर्ज्याके क़िलेमें उन्होंने अपनी तरफ़से बेचर नामी एक नौकरको मुरूतार बना रक्खा था, उसने अपनी कमअक़्लीसे पूरावत चन्दनसिंहको हरएक बातमें तंग किया; चन्दनसिंह भी अपने उसी मौरूसी क़िलेमें रहता था, उसने तंग आकर बग़ावतका इरादह किया, और चन्द कमअक़्ल आदमियोने उसे यह सलाह दी, कि कई उमरावोंने अपनी जागीरसे सर्कारी खालिसहके आदमियोंको निकालदिया है, तुमको भी अपनी मौरूसी जायदादपर क़बज़ह करलेना चाहिये, इसवक्त सर्दारोंका बखेड़ा है, इसलिये चावड़ोंकी मददपर महाराणा ऐसी हालतमें फ़ौज नहीं भेजेंगे. उसने लोगोंके बहकानेमें आकर बेचरको क़िलेमें क़ैद करदिया, और चावड़ोंके दो चार आदमी, जो बाक़ी रहे, भाग गये. इसके बाद चन्दनसिंह, औनाड़सिंह, और नवलसिंहने खुमाणसिंह शैखावत वग़ैरह पांच दस आदमी एकट्ठे करके अन्न, तम्बाकू, तेल, घृत, गुड़ वग़ैरह सामान, जो कुछ उनके हाथ लगा, रिआयासे लूट खोसकर क़िलेमें जमा करलिया. विक्रमी १९०९ आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२६९ ता० ३ मुहर्रम = ई० १८५२ ता० १७ ऑक्टोबर] को चावड़ा ज़ालिमसिंहने महाराणाको यह कुल हाल अर्ज़ किया, जिसे सुनकर वह बहुत ही नाराज़ हुए; लेकिन् उन्होंने पोलिटिकल ढंगसे चन्दनसिंहके नाम एक काग़ज़ महाराज चन्दसिंहका देकर मुख्बरीके तौरपर हर्कारह राधाकृष्णको भेजा, वह आश्विन शुक्ल १३ [हि० ता० ११ मुहर्रम = ई० ता० २५ ऑक्टोबर] को आर्ज्यै पहुंचा, और बड़ी कोशिश करनेपर क़िलेके नज़्दीक जाने पाया, परन्तु हर्कारेके साथ चीमा, करावल, वग़ैरह जो दो तीन आदमी थे उनको गांवमें नहीं आने दिया, सिर्फ़ हर्कारेसे नवलसिंहने क़िलेके बाहिर आकर बातचीत की. उसने कहा, कि हमको किसीका एतिबार नहीं है, और न महाराज चन्दसिंहके काग़ज़पर भरोसा है, लेकिन् श्री दर्बार हमारे मा बाप हैं, यदि उनका पर्वानह चन्दनसिंहके नाम आजावे, तो हम उसीवक्त उदयपुर हाज़िर होजावेंगे. हर्कारेने भीलवाड़ेमें आकर यह ख़बर उदयपुर लिखभेजी. इसपर महाराणाने सियाणाके पुंवार देवीसिंह, पहूनाके राणावत देवीसिंह, भूणावासके बाबा बाघसिंह और मगरोपके बाबा गिरवरसिंह वग़ैरह चन्द सर्दारोंको यह हुक्म लिख भेजा, कि तुम अपनी अपनी जमइयतों सहित भीलवाड़ाके हाकिम भंडारी गोकुलचन्दके साथ जाकर क़िले आर्ज्याके गिर्द मोर्चाबन्दी करदो, और चन्दनसिंहको समझाओ, कि अगर वह पर्वानह देखकर

उदयपुर चला आवे, तो उसकी .इज़्ज़तमें फ़र्क़ न पड़ेगा. इस बारेमें एक पर्वानह चन्दनसिंहके नाम लिखागया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

पर्वानहकी नक़्ल.

॥ श्रीएकलिंगजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयपुर सुथाने महाराजा धिराज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी आदेसात पुरावत चंदणसीघ अनाड़सीघ नवलसीघ कस्य ——————— अप्र ॥ थारो कागद पुवार देवीसीघरे नामे आयो सो मालम हुवो ने देवीसीघ अरज कराई के, कीदी तो वां वेसुरी पण धणी हे सो वारे नामे प्रवानो जावे तो वे पेतावा आऐ पड़े, सो अणीरी अरजसु प्रवानो मेल्यो हे, गढ वा सराजाम वे जो ने वाणयारो सराजाम सारा चावड़ा जालमसीघरा आदम्यारे हवाले करे देवीसीघरी लारे अठे आवजो, नही तो थारा कीदा थे पावोगा सं० १९०९ वर्षे कातीक वदी ७ गुरे.

चन्दनसिंहने भी भींडरके महाराज हमीरसिंह और गोगूंदाके कुंवर लालसिंहके नाम मदद देनेकी ग़रज़से काग़ज़ लिख भेजे, जो सर्कारी आदमियोंके हाथ पकड़ेगये; उन काग़ज़ोंका मत्लब यह है, कि आप हमारे मालिक हैं, और आपहीके भरोसेपर हमने अपनी मौरूसी जागीरको वापस अपने क़बज़हमें लिया है, इसलिये हमारी मदद करना चाहिये. लेकिन् आर्ज्या वालोंका बयान है, कि हमको बनेड़ाके राजा संग्रामसिंहने वर्ग़लाकर बाग़ी बनाया था. महाराणाने मांडलगढ़को महता स्वरूपचन्दके नाम हुक्म लिख भेजा था, कि दो तोप और खैराड़के लोगोंकी कुछ जमइयत साथ देकर गोकुलचन्दको आर्ज्यापर भेजदो. इसीतरह जहाज़पुरकी जमइयतको हुक्म पहुंचगया, और भीम पल्टन व एकलिंग-पल्टनके निशान भी उदयपुरसे रवानह होगये थे. ऊपर लिखे हुए सर्दार हाकिम भीलवाड़ा सहित विक्रमी १९०९ कार्तिक कृष्ण १४ [हि० १२६९ ता० २७ मुहर्रम = ई० १८५२ ता० १० नोवेम्बर] को आर्ज्ये पहुंचे, उन्होंने चारों तरफ़ मोर्चे जमाकर बुलन्द आवाज़से

किलेवालोंको पर्वानहका हाल कहा और पर्वानह उनके पास भेजदिया. अगर्चि इसवक़ किलेवालोंने नर्मीके साथ जवाब दिया, लेकिन् रातके वक़ किलेके मोर्चोंसे पत्थर चलाना शुरू करदिया. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ मुहर्रम = ई० ता० ११ नोवेम्बर] को महाराणाकी फ़ौजके सर्दारोंने नज़्दीक जाकर किलेवालोंको बहुत कुछ समझाया, लेकिन् उन्होंने टालाटूलीका जवाब दिया. इसके सिवा मोर्चा देखनेकी ग़रज़से जो चन्द राजपूत सर्दार चलेजाते थे, उनमेंसे छोटी भाटूके चूंडावत कर्णसिंह की छातीमें एक गोली किलेसे आकर लगी, जिससे वह तुरन्त मरगया, और दोनों तरफ़से सुलहकी एवज़ लड़ाई होने लगी. नीचे लिखे हुए सर्दारोंकी जमइयतें सर्कारी फ़ौजमें शामिल थीं:-

१ मगरोपका बाबा गिरवरसिंह.	२ गुड़लांका बाबा हमीरसिंह.
३ गाडरमालाका बाबा धीरतसिंह.	४ आटूणका बाबा देवीसिंह.
५ सूरासका जागीरदार नवलसिंह.	६ जवास्याका जागीरदार भवानीसिंह.
७ आकोलाका जागीरदार माधवसिंह.	८ हमीरगढ़का रावत् शार्दूलसिंह.
९ खैराबादका बाबा जोधसिंह.	१० ?ड़प्याका बाबा ज़ालिमसिंह.
११ बरसल्यावासका बाबा भवानीसिंह.	१२ बांसड़ाका बाबा रणमल्लसिंह.
१३ भूणावासका बाबा बाघसिंह.	१४ पहूनाका जागीरदार देवीसिंह.
१५ केरयाके बाबा ज़ोरावरसिंहका काका चत्रशाल.	१६ महुवाके जागीरदारका बेटा जवानसिंह.
१७ पानसलका जागीरदार हरनाथसिंह.	१८ रूदके जागीरदार वीरमदेवका भाई दूल्हसिंह.
१९ बड़ी भाटूके जागीरदारका भाई ज़ोरावरसिंह.	२० नीबाहेड़ाका जागीरदार वीरमदेव.
२१ छोटी रूपाहेलीका जागीरदार.	२२ महता गोकुलचन्द मांडलगढ़की जमइयत और दो तोपों समेत.
२३ पुर मांडल ज़िलेके कुल भोमिया.	

इनके अलावह सर्कारी पल्टनोंके निशान वग़ैरह मिलाकर क़रीब दो हज़ार आदमी दूसरे थे; मोर्चोंसे किलेपर तोपें चलने लगीं, और कई गोले दर्वाज़हके किवाड़ोंपर भी लगाये-गये. दैवगतिसे चन्दनसिंहकी छातीमें अकस्मात् एक गोली जा लगी, जिससे वह उसीवक़ मरगया. कई लोगोंका बयान है, कि बाहिरसे तीरकशमें होकर उसके गोली लगी, बाज़ कहते हैं, कि भीतरसे खुमाणसिंह शेख़ावतने ही उसके गोली मारी, और

सींगोलीके बाबा मानसिंहका बयान है, कि फ़ौजके मोर्चोंमेंसे अदावत वालोंने एक आदमीको दरख़्तपर चढ़ाकर उसके गोली लगवाई, जहांसे क़िलेका भीतरी हिस्सह दिखाई देता था. चन्दनसिंहके मारेजाने बाद विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० ११ सफ़र = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को क़िले वालोंने पछेवड़ी फेरकर अम्न चाहा. जबकि चन्दनसिंह मारा गया, उसका छोटा भाई नवलसिंह मोर्चोंमें होता हुआ क़िलेसे निकल भागा, और उसवक्त उसपर बहुतसी गोलियां चलाई गईं, लेकिन् क़ज़ा न होनेके सबब वह बचगया. आख़रकार क़िलेवालोंमेंसे ओनाड़सिंह और खुमाणसिंह शेख़ावत वग़ैरह दो चार आदमियोंको महता गोकुलचन्दने गिरिफ़्तार करलिया, और बाक़ी पांच सात आदमी इधर उधर भागगये. इसवक़ चन्दनसिंहकी स्त्री तो अपने बापके यहां गांव देवलीमें थी, जिससे चन्दनसिंहके मरे बाद राजसिंह नामका एक लड़का पैदा हुआ; और चन्दनसिंहकी बहिन जो क़िलेमें थी, मगरोपके बाबा गिरवरसिंहके सुपुर्द कीगई. उदयपुरमें लायेजानेके बाद ओनाड़सिंह तो जेलख़ानहमें भेजा गया और खुमाणसिंह शेख़ावतको उसकी डाढ़ी जलाई जाकर मुल्कके बाहिर निकलवा दियागया. इसके बाद कुछ अरसहतक सर्कारी ख़ालिसह रहकर आर्ज्या पीछा चावड़ोंको मिला; महाराणाका इन्तिक़ाल होनेपर एजेएटी व पंचसर्दारोंके बन्दोबस्तमें ओनाड़सिंहने जेलख़ानहसे रिहाई पाई, और राजसिंह व नवलसिंहको आर्ज्या तथा बीलियाकी भोम वापस दीगई. इस क़िलेके मुहासरहमें महता गोकुलचन्दने बड़ी दिलेरीके साथ काम दिया था, इसलिये महाराणाने खुश होकर उसे मोतियोंकी माला और पहुंचियों समेत एक क़ीमती सरोपाव .इनायत किया.

विक्रमी १९१० कार्तिक कृष्ण १४ [हि० १२७० ता० २७ मुहर्रम = .ई० १८५३ ता० ३१ ऑक्टोबर] के दिन महाराणाने दूसरे दान पुण्यके अलावह कालपुरुषके दानमें ४०० अशर्फ़ियां ब्राह्मणोंको दीं; विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० २ सफ़र = .ई० ता० ४ नोवेम्बर] को कन्यादानके संकल्पमें ब्राह्मणोंकी ८०० लड़कियोंके विवाह के लिये ८००००) रुपया, याने फ़ी लड़की १००) रुपया दानमें दिया, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १२ सफ़र = .ई० ता० १४ नोवेम्बर] को सुवर्णका तुलादान (१) किया.

---

(१) यह दान इस रीतिसे होता है, कि तराज़ूके एक पलड़ेमें दान देनेवाला शख़्स भगवानकी मूर्ति सहित बैठजाता है, और दूसरे पलड़ेमें उसके बराबर सोना तोला जाकर ख़ैरात कियाजाता है, जिसे "सुवर्ण तुलादान" कहते हैं.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ सफ़र = .ई० ता० २९ नोवेम्बर] को लक्षचंडीका पाठ (१) प्रारम्भ हुआ. विक्रमी माघ शुक्ल ३ [हि० ता० १ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८५४ ता० ३१ जैन्युअरी] को राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल सर हेनूरी लॉरेन्स और मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट ज्यॉर्ज लॉरेन्स उदयपुर में आये. उक्त साहिबोंने महाराणासे जहाज़पुर .इलाक़हके मीनोंकी बहुत शिकायत की, क्योंकि उन लोगोंने ज़िले अजमेर वग़ैरह ग़ैर .इलाक़ोंमें उन दिनों बड़ी लूट मार मचा रक्खी थी; विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह उदयपुरसे रवानह हुए, और इसी दिन महाराणा, मानजी धायभाईके कुएडपर पधारे, जहां एक छोटीसी गोशाला बनवाई गई, और उसी दिनसे इस मक़ामकी दिन बदिन तरक़्क़ी होने लगी, जो अब " गोवर्द्धन विलास " के नामसे प्रसिद्ध है.

मेवाड़में पहिले पर्गनह जहाज़पुरपर अक्सर रियासतके प्रधानका भाई या बेटा हाकिम रहनेके सबब पर्गनहकी आमदनीके सिवा वहांके ख़र्चके लिये कुछ रुपया उदयपुरसे और भी भेजना पड़ता था, इसलिये महाराणाने ख़र्च ज़ियादह देखकर वहांकी हुकूमतपर विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = .ई० १८५१] में महता रघुनाथसिंहको भेजा, जिसने वहां जाकर पर्गनहका जमाख़र्च दुरुस्त करनेके अलावह हुकूमत भी बड़े ज़ोर शोरके साथ की; लेकिन् वह ख़ास जमाख़र्चकी दुरुस्तीके लिये भेजाजानेके सबब उसकी निगाह ज़ियादहतर आमदनीके बढ़ाने और ख़र्चमें कमी करनेकी तरफ़ रही. इन्हीं दिनोंमें .इलाक़ह अजमेरमें डाका डालने वाले गांव लुहारीके मुज्रिम, जिनकी गिरिफ्तारीके लिये गवर्मेएटसे हुक्म था, गिरिफ्तार न होसके, और अंग्रेज़ी अफ्सरोंने इस बारेमें महाराणाके पास बहुत कुछ शिकायत लिखकर भेजी, जिसपर उन्होंने महता रघुनाथसिंहको वहांसे उदयपुर बुलाकर पर्गनह रासमी और गलूंड उसके सुपुर्द किये, जो पहिले सेठ ज़ोरावरमल्लकी सुपुर्दगीमें थे, और कुछ अरसह पीछे पर्गनह सहाड़ां तथा रेलमगरा भी उसके सुपुर्द कियेगये, जिनका इन्तिज़ाम उसने बहुत उम्दह तौरपर किया; और पर्गनह जहाज़पुरपर रघुनाथसिंहकी एवज़ महता अजीतसिंह भेजाजाकर वहांके मीनोंको सज़ा देनेके लिये कुछ फ़ौज व जलिंधरीका जागीरदार अमरसिंह (२) उसके साथ भेजा गया, और

---

(१) इसमें एक लक्ष दुर्गा पाठ करनेके लिये ब्राह्मण मुक़र्रर कियेजाते हैं और पूर्णाहुतिपर उनको ज़ेवर, ख़िल्अत व नक़्द वग़ैरह हज़ारों रुपयेका माल मिलता है. इसे एक बड़ा मज़्हबी जल्सह कहना चाहिये.

(२) अजीतसिंहने अमरसिंहको वृद्ध और तजर्बहकार जानकर उसपर ज़ियादह भरोसा करलिया था.

शाहपुरा, बनेड़ा, बीजोलिया, भैंसरोड़, जहाज़पुर व मांडलगढ़ वगैरह ज़िलोंके कुल जागीरदारोंकी जमइयतें बुलाई गई, और इनके अलावह भीम पल्टन व एकलिंग-पल्टनके निशान तथा जहाज़पुरकी तईनातीके कुल पैदल, सवार, दो तोपें और शुतरनालोंके ऊंट साथ लेकर शक्तावत अमरसिंहकी सलाहके मुताबिक़ महता अजीतसिंह मीनोंको सज़ा देनेके लिये जहाज़पुरसे रवानह हुआ. इसवक्त़ एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी तह्रीरके ज़रीअहसे यह बन्दोबस्त करादिया गया था, कि जयपुर, टौंक और बूंदी वाले अपने अपने .इलाक़हकी सर्हदपर जमइयतें भेजकर एक .इलाक़हके मीनोंको दूसरे इलाक़ह वालोंकी मददके लिये न जाने दें, और उक्त तीनों रियासत वालोंने वैसा ही बन्दोबस्त करादिया. महता अजीतसिंहने शुरूमें छोटी और बड़ी लुहारीको, जो मीनोंके मुखिया गांव थे, धावा करके फ़त्ह करलिया, और मीना लोग भागकर मादों (१) में चलेगये; लेकिन् महता अजीतसिंहने उनका पीछा करके चन्द मीनोंके सिर काटनेके अलावह कुछ मादे भी जलादिये. इसवक्त़ दो-पहरका वक्त क़रीब आगया था, और ज्येष्ठका महीना होनेके सबब गर्म हवा (लू) भी बड़े ज़ोर शोरके साथ चलने लग गई थी, लेकिन् अजीतसिंहने इन बातोंका लिहाज़ न करके अपने साथकी सेनाको उन तीन चार हज़ार मीनोंपर, जो अपने बालबच्चों सहित मनोहर-गढ़ और देवकेखेड़ेकी पहाड़ीमें जमा हो रहे थे, हमलह करनेका हुक्म दिया. इसपर धांधोलाके जागीरदार राणावत रत्नसिंहने, जो इसी ज़िलेका रहनेवाला वृद्ध और तजर्बह-कार शख़्स था, कहा कि इसवक्त़ धूप बहुत सख़्त पड़ रही है, और हवाका भी ज़ोर है, मीना लोग अपने बालबच्चोंकी हिफ़ाज़तके लिये मरनेको तय्यार हैं, फ़ौजके लिये पीनेको पानीका पूरा बन्दोबस्त नहीं है, जो मश्कें और पखालें आती हैं, वे जिनके हाथ पड़ती हैं वही लूटकर पीजाते हैं, मारे पियासके सैकड़ों आदमियोंका दम होटोंपर आरहा है, अलावह इसके जयपुर, टौंक व बूंदी .इलाक़हके हज़ारों मीने उनकी मददको तय्यार हैं, और आज अपनी किसीक़द्र फ़त्ह भी होचुकी है, इसलिये मुनासिब है, कि कल सुब्ह के वक्त़ हमलह किया जावे; और दूसरे कुल सर्दारों व अफ़्सरोंने भी उसे रत्नसिंहकी सलाह के मुवाफ़िक़ ही करनेको कहा. लेकिन् अमरसिंह बोला, कि "ये सब लोग मालिकका काम छोड़कर अपने शरीरका आराम चाहते हैं; अगर कोशिश कीजाये, तो थोड़ेसे मीने, जो इस टेकरीमें छिप रहे हैं अभी मारे जावें या गिरिफ्तार करलिये जावेंगे". अजीतसिंहको तो अमरसिंहकी सलाहपर पूरा भरोसा था, उसने फ़ौरन् सिपाहियोंको हमलह करनेके लिये

---

(१) मादे उन फूससे छाये हुए और कांटोंकी बाड़से घिरे हुए छप्परोंको कहते हैं, जिन्हें मीना लोग मुसीबतके वक्त अपने बालबच्चों व मवेशियों सहित रहनेके लिये झाड़ीमें बनालेते हैं.

हुक्म देदिया, और तोपका लंगर पकड़कर आप सबसे आगे बढ़ा; निदान मीनोंने भी बचावकी सूरत न देखकर डुडकारी (१) मारी और मुक़ाबलहके लिये तय्यार हुए. फ़ौजकी तरफ़से तोपों और बन्दूक़ोंके फ़ाइर होने लगे, जिनका जवाब मीनोंने तीर व गोलियां चलाकर दिया. इसी अ़रसहमें जयपुर, टौंक और बूंदी .इलाक़हके पांच हज़ार मीने अपनी क़ौमवालोंकी मदद्के लिये आ पहुंचे और फ़ौजको चारों तरफ़से घेरकर गोली व तीरोंकी बौछार करने लगे. सघन झाड़ी, गर्म हवा, धूप और पियासके मारे तो फ़ौजके लोग पहिलेसे ही घबरा रहे थे, कि इसी अ़रसहमें झाड़ीकी आड़से मीनोंने जमा होकर उन्हें अपने शस्त्रोंका निशानह बनालिया. उस वक्त महता अजीतसिंह खुद बड़ी बहादुरीके साथ चारों तरफ़से फ़ौजके लोगोंको मदद पहुंचाता था. धांधोलाके जागीरदार रत्नसिंहने मीनोंको ललकारकर कहा, कि "ढेढ़ो (२), तुमको मेवाड़में रहना है या नहीं, याद रक्खो तुमने जो श्री दर्बारके सैकड़ों राजपूत और सिपाही मारडाले हैं उनका बदला लिया जायेगा". यह सुनकर मीने हटगये और फ़ौजके लोग अपने ज़ख्मी आदमियों तथा मुर्दह लाशोंको लेकर ग्राम लुहारीमें आये. इस लड़ाईमें बीजोलियाकी जमइयतमेंसे गोवर्द्धनसिंह पंवार, शाहपुराकी जमइतमेंसे छोटी कनेछणके जागीरदारका भाई गंभीरसिंह राणावत, और सर्कारी पल्टनोंके २७ सिपाही मारेगये; इनके अ़लावह शाहपुराकी जमइयतमेंसे अरण्याका रूपसिंह चहुवाण, राजगढ़का रेवन्तसिंह कान्हावत, जहाज़पुरके सिलहदारोंमेंसे भूरसिंह हाड़ा और २५ या ३० सिपाही ज़ख्मी हुए. इसके बाद महता अजीतसिंह फ़ौज समेत जहाज़पुरको लौट आया. मीना लोगोंने अपने हाथसे सिपाहियोंके मारेजानेका तो कुछ भी खयाल न किया, लेकिन् राजपूतोंके मारेजानेसे उनको बड़ा अन्देशह हुआ, कि वे लोग ज़रूर हमसे बदला लेंगे. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने इस लड़ाईके चन्द रोज़ बाद जहाज़पुरमें लुहारीके गोकुल और गाडौलीके भुवाना पटेल (जो मीनोंके मुखिया थे) से एक मर्तबह पूछा, कि तुमने राजपूतोंको किसतरह मारा? उस वक्त उन्होंने महादेव (३) की क़सम खाकर

---

(१) जिस तरह भीलवाड़के भील बुलन्द आवाज़से "फाइरे फाइरे" कहकर किलकारी मारते हैं, उसी तरह खैराड़के मीना लड़ाईके समय "डू डू डू डू" पुकारते हैं.

(२) भीलवाड़के भीलोंके लिये कांडी और खैराड़के मीनोंके लिये ढेढ़ एक सख्त गाली (हिक़ारतका लफ़्ज़) है.

(३) मीना लोग महादेवको अपना इष्ट मानते हैं, और उसीसे अपनी उत्पत्ति भी बयान करते हैं.

यह कहा, कि "काली अंगरखी होनेसे लीलियों (१) के धोखेमें मारे गये, मीनोंने जानबूझकर राजपूतोंपर वार नहीं किया".

ऊपर लिखे हुए मारिकेका हाल सुनकर महाराणाने उदयपुरसे फ़ौज और सर्दारोंकी जमइयतें फिर भेजीं, और एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने जयपुर, टौंक व बूंदीपर यह दबाव डाला, कि तुम्हारे .इलाक़हका बन्दोबस्त न होनेके सबब मेवाड़की फ़ौजका नुक्सान हुआ है. इसपर उक्त तीनों रियासतोंने अपने अपने .इलाक़ोंके मीनोंकी सज़ादिहीके लिये फ़ौजें रवानह कीं. महाराणाने प्रधान महता शेरसिंह, महता गोपालदास, व चौधरी हमीरसिंहको जहाज़पुर भेजा, और विक्रमी १९११ पौष [हि० १२७१ रबीउल्‌अव्वल = ई० १८५४ डिसेम्बर] में राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेन्‌री लॉरेन्स, मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट ज्यॉर्ज लॉरेन्स, और हाड़ौतीके पोलिटिकल एजेण्ट बर्टन साहिब मए कोटा कन्टिन्जेण्ट पल्टनके जहाज़पुरमें आये, तब मीनोंने मुक़ाबलह करना छोड़कर मुजिमोंको उनके सुपुर्द करदिया. इसके बाद लुहारी और देवाकाखेड़ाके बीचवाली मादोंकी झाड़ी कटवाकर साफ़ मैदान करवादिया गया. उक्त तीनों साहिबोंके मक़ाम एक महीनातक जहाज़पुर और ईटोदामें रहे. सर हेन्‌री लॉरेन्स बड़े मिह्नती तजर्बहकार और इल्म दोस्त थे, उन्होंने एक रोज़ मुझे (कविराजा श्यामलदासको) बड़ी फुर्तीके साथ किताब पढ़ते देखकर गंगाकी नहरके हालकी एक किताब दी, और उनके डॉक्टरने शीतलाका टीका लगानेकी एक किताब दी, जो दोनों बतौर यादगार अबतक मेरे पास मौजूद हैं. इसके बाद साहिब लोग अंग्रेज़ी फ़ौज समेत वहांसे रवानह हुए.

सर हेन्‌री लॉरेन्स और ज्यॉर्ज लॉरेन्स शाहपुरा, बनेड़ा, राजनगर, और नाथद्वाराकी तरफ़ दौरा करतेहुए विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुल्‌अव्वल = .ई० १८५५ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को उदयपुर आये, और सर्दारोंके फ़साद व सती होनेका मुआमलह दर्पेश होनेके सबब पन्द्रह रोज़तक यहां ठहरे, (जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा), उसवक़ खैराड़के मीनोंका बन्दोबस्त करनेके लिये एक अंग्रेज़ी छावनी डालनेकी बाबत् भी बातचीत हुई थी, जो रियासत जयपुर, अजमेर, बूंदी और मेवाड़की सर्हदोंके संगमपर देवली मक़ाममें डालीगई, और मीनोंकी निगरानीके लिये रियासती थाने मुक़र्रर किये गये.

विक्रमी १९१२ श्रावण शुक्ल ७ [हि० १२७१ ता० ६ ज़िल्‌हिज = ई० १८५५

(१) मीना लोग पल्टनके सिपाहियोंको हिक़ारतसे लीलिया और मियांकड़ा बोलते हैं, जो मियांका अपभ्रंश है, क्योंकि उस ज़मानहमें अक्सर पल्टनके सिपाहियोंको वर्दीमें काला दगला मिलता था.

ता० २० ऑगस्ट] को श्री एकलिंगेश्वरके गोस्वामी सवाई शिवानन्द गुज़र-गये, जिनकी जगह उदयपुरके भटमेवाड़ा ब्राह्मण देवरामको ब्रह्मचर्य दिलाया गया, और सन्यास धारण करवाकर सवाई प्रकाशानन्दके नामसे गद्दीपर बिठाया गया. पहिले ज़मानहमें एकलिंगेश्वर महादेवकी भेट पूजा और पर्गने वगैरह कुल जायदाद गोस्वामियोंके ही इख्तियारमें रहती थी, परन्तु इसवक् प्रकाशानन्दके साथ एक इक़ारनामह हुआ, जिसमें ८०००) रुपयेकी जागीर हाथी, घोड़ों, तथा गोस्वामीके ख़ास ख़र्चके लिये मुक़र्रर होकर बाक़ी पर्गने और भेट वगैरह जायदाद सर्कारी निगरानीमें रक्खी-गई. इसके बाद श्री एकलिंगेश्वरके यथाविधि पूजनका प्रबन्ध और ज़ेवर वगैरह मन्दिरके लवाज़िमहका उम्दह बन्दोबस्त होकर एक जुदा ख़ज़ानह मुक़र्रर हुआ, जिसमें इसवक़ ज़ेवर व नक्द वगैरह मिलाकर लाखों रुपयेका सामान मौजूद है.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० १२७२ ता० २० सफ़र = ई० ता० १ नोवेम्बर] के दिन उदयपुरके पश्चिमी ज़िले कालीवास वगैरहके बाग़ी भील लोगोंको सज़ा देनेके लिये महाराणाने महता शेरसिंहके पुत्र सवाईसिंहको मए फ़ौजके भेजा, जिसने उनको ख़ूब सज़ा दी, और गांव जलाकर बहुतसे भीलोंको ज़िन्दह गिरिफ़्तार करनेके अलावह कई भीलोंके सिर काट लाया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ४ रबीउस्सानी = ई० ता० १४ डिसेम्बर] को कर्नेल ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब उदयपुरमें आये, और इसी दिन डूंगरपुरके रावल उदयसिंह भी आये, जिनको नागोंके अखाड़ेतक पेश्वाई करके महा-राणा महलोंमें लाये, और जबतक वह यहां ठहरे, उनकी अच्छी तरह ख़ातिर तवाज़ो कीगई (१). विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० ता० ८ रबीउस्सानी = ई० ता० १८ डिसेम्बर] के दिन महाराणाके हुक्मसे पोलिटिकल एजेएट कर्नेल ज्यॉर्ज लॉरेन्स ने महाराणा और उनके सर्दारोंका मध्यस्थ बनकर एक अह्दनामह क़ाइम किया, जिसपर देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह, बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंह, और शाहपुरा, भैंसरोड़ व बदनोर वगैरह कई ठिकानोंके सर्दारोंसे दस्तख़त कराये गये; इस अह्दनामहका ज़िक्र सर्दारोंके मुआमलातके बयानमें आगे लिखा जायेगा. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रबीउस्सानी = ई० ता० २२ डिसेम्बर] को राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल सर हेन्‌री लॉरेन्स साहिब राज्यमहलोंमें आये, और ऊपर बयान किये हुए मुआमलहमें महाराणासे बातचीत की.

---

(१) डूंगरपुरके रावलको महाराणाकी गद्दीसे नीचे बैठना और नज़ दिखलाना वगैरह दस्तूर तो मातह्त उमरावोंके मुवाफ़िक़ ही अदा करना पड़ता है, लेकिन दूसरी कई बातोंमें उनकी इज़्ज़त उमरावोंसे बढ़कर कीजाती है.

विक्रमी माघ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८५६ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को महाराणाने दूसरी वार सुवर्ण तुलादान किया, जिसमें उदयपुरके तोलका एक मन बारह सेर नो छटांक सुवर्ण तुला, जो ख़ैरातमें तक़्सीम किया गया.

विक्रमी चैत्र कृष्ण १० [हि० ता० २३ रजब = .ई० ता० ३१ मार्च] के दिन पाणेरी गोपाल हवालातमें रक्खागया, जो बड़ा बदचलन, चालाक, दग़ाबाज़, जालसाज़ और लालची शख़्स था. उसके तरक़्क़ी पानेका सिर्फ़ यही सबब था, कि वह महाराणाके हुक्मकी तामील बहुत जल्द करता था, यहांतक कि जो हुक्म उसको एक हफ़्तह की मीआ़दके लिये दियाजाता उसे वह दो ही दिनमें बजालाता; कारण यह कि उसको धर्म, अधर्म और बड़े छोटेका बिल्कुल लिहाज़ न होनेके सबब कुल रियासती लोगोंपर उसका रोब बहुत ग़ालिब होगया था, और महाराणा भी उसके कहनेको बे रू रिआयत समझने लग गये थे. सिवा इसके उसकी कोई शिकायत भी नहीं कर सक्ता था, क्योंकि महाराणा तो उसकी सच्ची शिकायत पेश होनेपर भी यही ख़याल करते, कि हमारे हुक्मकी तामील बहुत जल्द करनेके सबब आम लोग इसके साथ दुश्मनी रखते हैं, और गोपालको मालूम होने पर वह शिकायत करनेवालेकी फ़ौरन् ख़बर लेलेता था. महाराणा स्वरूपसिंहने अपने राज्यशासनमें लाखों रुपया ख़ैरात किया, और इस (गोपाल) को ख़ैरातख़ानहका दारोग़ह बनाया, लेकिन् यह शख़्स ऐसा बदचलन था, कि इसने महाराणाके उत्तम कार्यमें बद दियानती करके बहुतसा माल ख़ैरातके एवज़ अपनी बदकारीमें उड़ादिया. वह रियासती लोगों पर इतना ग़ालिब आगया था, कि कुल अहलकारों और कारख़ानह वालोंको अपना मातहत जानने लगा; ख़ैरातके सिवा ख़बरनवीसीका काम भी इसीके सुपुर्द था, इसलिये जो कोई शख़्स उसको अपने विरुद्ध नज़र आता उसे फ़ौरन् जादू, बदख़्वाही, अथवा [illegible] तहमतमें फांसकर क़ैद करादेता और उसका घरबार ज़ब्त किया जानेपर कुछ [illegible] तो महाराणाके ख़ज़ानहमें दाख़िल कराता और बाक़ीको आप हज़म करजाता [illegible] कार ये सब बातें उसके क़ैद होनेपर महाराणाको मालूम हुईं, जिससे [illegible] हुए, और ज़ियादहतर अफ़्सोस उन्हें इस बातका हुआ, कि उसने [illegible] कारीमें सर्फ़ किया. इसके बाद गोपालका कुल घर ज़ब्त होकर [illegible] महाराणाका संकल्प किया हुआ बहुतसा सुवर्ण वग़ैरह माल [illegible] शख़्सने ऊपर बयान कीहुई बातोंके अलावह और भी बहुतसी [illegible] जो तवालतके सबबसे यहांपर छोड़दीगई हैं, परन्तु पाठक [illegible] कि वह शख़्स आदमी क्या ! जालसाज़ी और फ़ितूर [illegible]

विक्रमी १९१२ [हि० १२७२ = .ई० [illegible]

जि़यादहतर गोवर्द्धनविलासमें रहने लगे, और उसी समयसे वहां महल व मकानात वगैरह बनना शुरू हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ऽऽ [हि॰ १२७३ ता॰ २८ रबीउ़स्सानी = .ई॰ ता॰ २७ डिसेम्बर] को महता शेरसिंहके एवज़ महता स्वरूपचन्द के पुत्र गोकुलचन्दको प्रधानेका खि़ल्अ़त मिला, और काका महाराज दलसिंह, कायस्थ हरनाथ तथा ढींकड़्या उदयराम उसे दस्तूरके मुवाफ़िक़ अपने मकानपर पहुंचानेको गये.

सर हेनूरी लॉरेन्सके राजपूतानहसे लखनऊकी रेज़िडेन्सीपर बदलजाने और ज्यॉर्ज लॉरेन्सके मेवाड़की एजेन्सीसे तब्दील होकर अजमेरके चीफ़ कमिश्नर व एजेएट गवर्नर-जेनरल राजपूतानह नियत होनेपर उनकी जगह मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट कप्तान शावर्स नियत हुए, जो विक्रमी १९१४ [हि॰ १२७३ = .ई॰ १८५७] में पूर्वी हिन्दुस्तानकी तरफ़ अंग्रेज़ी पल्टनोंके बाग़ी होजानेपर डाक द्वारा नीमचसे रवानह होकर विक्रमी वैशाख कृष्ण १४ [हि॰ ता॰ २७ शअ़्बान = .ई॰ ता॰ २३ एप्रिल] को उदयपुरमें आये, और ग़द्र रोकनेके लिये महाराणाको मददगार बनानेकी ग़रज़से बात चीत करके उनकी तरफ़से गवर्मेंएटको पूरी पूरी सहायता मिलनेका पुख़्तह इक़ार होजानेके बाद विक्रमी वैशाख शुक्ल ६ [हि॰ ता॰ ४ रमज़ान = .ई॰ ता॰ २९ एप्रिल] को डाक द्वारा उदयपुरसे आबूकी तरफ़ रवानह हुए; वहांपर एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे मिलकर वापस उदयपुरमें आये और महाराणासे फिर कुछ सलाह मश्वरह करने के बाद नीमचकी तरफ़ चले गये. इन दिनों बाग़ी फ़ौज राजपूतानहमें भी फैलगई थी, जिसका मुफ़स्सल हाल आगे लिखा जायेगा. अब हम ग़द्रके हालको छोड़कर मेवाड़में ठिकाने आमेटके रावत् पृथ्वीसिंहके विक्रमी १९१३ [हि॰ १२७३ = .ई॰ १८५७] में लावलद गुज़रजानेके सबब जो बखेड़ा उसके हक़दारोंमें पैदा हुआ उसका हाल लिखते हैं.

आमेटके रावत् महाराणा लाखाके पुत्र चूंडा (१) की औलादमेंसे हैं, जिनका कुर्सीनामह उनके हक़दारों समेत पाठक लोगोंके अवलोकनार्थ मुख़्तसर तौरपर नीचे दर्ज किया जाता हैः—

---

(१) चूंडाकी औलाद वाले मेवाड़में बहुतसे ठिकानोंपर क़ाबिज़ हैं, जो चूंडावत और उनके अन्तरगत सलूंबर, कुरावड़, भैंसरोड़ व आसींद वाले कृष्णावत, बेगूं वाले मेघावत, देवगढ़ वाले सांगावत और आमेट वाले जगावत कहलाते हैं.

आमेट वालोंका नस्ब नामह.

- चूंडा १
  - कांधल २
    - १ - रत्नसिंह — जिसकी औलादमें सलूंबर व बेगूं वग़ैरहके कृष्णावत और मेघावत हैं.
    - सिंहा ३
      - जग्गा ४ — जिससे जगावत कहलाये.
        - पत्ता ५
          - कर्णसिंह ६ — इसको आमेटका पट्टा मिला.
            - मानसिंह ७
              - माधवसिंह ८
                - गोवर्द्धनसिंह ९
                  - दूलहसिंह १०
                    - पृथ्वीसिंह ११
                      - मानसिंह १२ — पृथ्वीसिंहकी मौजूदगीमें ही मरगया.
                        - फ़तहसिंह १३
                          - प्रतापसिंह १४
                            - सालिमसिंह १५
                              - पृथ्वीसिंह १६
                                - चत्रसिंह १७
                          - नाथूसिंह १ — जिसे जीलोळा मिला
                            - ज़ालिमसिंह २
                              - १ सालिमसिंह — प्रतापसिंहके, बाद आमेटमें गोद गया
                              - २ बख़्तावरसिंह
                                - अर्जुनसिंह ४
                                  - १ चत्रसिंह — जो आमेटमें गोद गया
                                  - २ लक्ष्मणसिंह
                - हरिसिंह १ — यह माधवसिंहका चौथा पुत्र था, जिसको बेमाली मिली
                  - जीवराज २
                    - देवीसिंह ३
                      - चतुर्भुज ४
                        - नाथूसिंह ५
                          - भैरवसिंह ६
                            - ज़ालिमसिंह ७
                              - १ पद्मसिंह
                              - २ अमरसिंह
                              - ३ लक्ष्मणसिंह
      - २ - सांगा — इसकी औलादमें देवगढ़ वग़ैरह सांगावत हैं

रावत् पृथ्वीसिंहकी मौजूदगीमें ठिकाने आमेटका कुल काम बेमालीवाले ज़ालिमसिंह और मान्यावासके समरथसिंहकी सलाहके मुवाफ़िक़ होता था. पृथ्वीसिंहके लावलद गुज़र-जानेपर उसका जानशीन तज्वीज़ कियेजानेका विचार हुआ, उसवक्त आमेटके कुल भाइयों (जगावतों) ने जीलोळावाले दुर्जनसिंहके बड़े बेटे चत्रसिंहको गद्दीपर बिठानेकी सलाह की, बल्कि तीन रोज़तक पृथ्वीसिंहका क्रिया कर्म भी उसीके हाथसे हुआ, लेकिन् दुर्जन-सिंहने अपने छोटे बेटे लक्ष्मणसिंहको गद्दीपर बिठाना चाहा. उसवक्त सर्कारी ख़बरके हर्कारेने ढींकड्या तेजरामके नाम इस मुआमलहकी बाबत् दो काग़ज़ लिखे, जिनका खुलासह यह है, कि आमेटका रावत् पृथ्वीसिंह विक्रमी माघ कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २१ जैन्युअरी] को गुज़र गया, और उसकी जगह शुरूमें जीलोळावालोंके बड़े बेटे चत्रसिंहको गद्दीपर बिठानेकी तज्वीज़ हुई, जिसके लिये कि मरते समय पृथ्वीसिंह कहगया था, परन्तु तीसरेके दिन बेमालीवाले ज़ालिमसिंहने रावत् पृथ्वीसिंहकी माता भटियाणी और उसकी ठकुराणी मेड़तणीको मिलाकर ल्हसाणीके ठाकुर सुल्तानसिंह, और उसके काका समरथसिंह वगैरह चन्द मुख्य मुख्य आदमियोंकी शामलातसे विक्रमी माघ कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २३ जैन्युअरी] के रोज़ अपने बेटे अमरसिंहको आमेटकी गद्दीपर बिठादिया.

विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० ता० ८ रजब = ई० ता० ५ मार्च] को बेमाली वाले ज़ालिमसिंहने और फाल्गुन शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रजब = ई० ता० ८ मार्च] को रावत् पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी मेड़तणीने अमरसिंहका गोद लिया-जाना मन्ज़ूर फ़र्मानेकी ग़रज़से ऊँकार ब्यासके हाथ महाराणाकी ख़िदमतमें बड़ी लाचारीके साथ अर्ज़ियां लिखकर भेजीं, जिनपर महाराणाने अमरसिंहको मन्ज़ूर फ़र्माकर तलवार बन्दीके ख़िराजकी बाबत् बातचीत करनेका हुक्म दिया. उधरसे जीलोळाके जागीरदार दुर्जनसिंहकी अर्ज़ियां भी हक़दारीके उज़्रसे पेश हुईं और उसके तरफ़दार देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह व आमेटके भाइयोंकी कई दर्ख्वास्तें गुज़रीं, जिनमें आमेटपर जीलोळावालोंका हक़ होना बयान कियागया था. ल्हसाणीकी सर्हदके बारेमें कुछ दिनोंसे देवगढ़ वालोंके साथ ज़ालिमसिंह और समरथसिंहकी दुश्मनी चलरही थी, इसलिये रावत् रणजीतसिंहको भी इनकी ताक़तका बढ़ना नागुवार गुज़रता था, और सर्दारोंके बखेड़ेमें समरथसिंह व ज़ालिमसिंह दोनों बड़े सलाहकार रहे थे, जिनपर सलूंबरका रावत् केसरी-सिंह पूरा भरोसा रखता था, इसलिये महाराणाने यह पोलिटिकल कार्रवाई की, कि जीलोळावालोंको तो पोशीदह तौरपर आमेटमें क़बज़ह करलेनेका इशारह करदिया,

और व्यास ऊँकारकी मारिफ़त विक्रमी १९१४ वैशाख कृष्ण ११ [हि० १२७३ ता० २४ शत्र्प्रबान = ई० १८५७ ता० २० एप्रिल] को तलवार बन्दीके ४४०००) और प्रधानकी दस्तूरीके ४०००) रुपयोंका एक रुक़्क़ा रावत् अमरसिंहके नामका लिखवालिया. रावत् अमरसिंहकी अर्ज़ तो कायस्थ हरनाथकी मारिफ़त होती ही थी, अब पोशीदह तौरपर जीलोळावालोंकी अर्ज़ महाराज चन्दसिंहकी मारिफ़त होने लगी. जीलोळावालोंकी मददपर कोठारियाका रावत् जोधसिंह, देवगढ़का रावत् रणजीतसिंह, कान्हौड़का रावत् उम्मेदसिंह, वदनौरका ठाकुर प्रतापसिंह, भैंसरोड़का रावत् अमरसिंह, और कोशीथल व ताल वगैरहके कई सर्दार थे; और बेमाली वालोंके मददगारोंमें सलूंबरका रावत् केसरीसिंह, भींडरका महाराज हमीरसिंह, गोगूंदाका राज लालसिंह, कुरावड़का रावत् ईश्वरीसिंह, बागोरका महाराज शेरसिंह, बनेड़ाका राजा गोविन्दसिंह और ल्हसाणी व मान्यास वगैरहके जागीरदार थे. महाराणाका ख़ानगी इशारह पाकर जीलोळावाले दुर्जनसिंहके बेटे चत्रसिंहने अपने तरफ़दारोंकी मददसे २००० आदमी जमा करके विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० ता० १५ रमज़ान = ई० ता० १० मई] को दो घड़ी रात बाक़ी रहे आमेटपर धावा करदिया और क़स्बहको चारों तरफ़से जाघेरा, उसवक़ अमरसिंहके पास उसका पिता ज़ालिमसिंह बेमाली वाला और ल्हसाणीका जागीरदार सुल्तानसिंह मौजूद थे, लेकिन् ये लोग ग़फ़लतके सबब पहिलेसे कुछ बन्दोबस्त न करसके. सिवा इसके रियासतकी तरफ़से तलवार बन्दी होनेतक दस्तूरके मुवाफ़िक़ आमेटकी ज़ब्तीपर महता ज़ालिमसिंह भेजागया था, जिसकी सुपुर्दगीमें दर्वाज़ोंकी कुंजियां वगैरह कुल ठिकानेकी निगरानी थी, उसने चत्रसिंहके पहुंचनेपर शहरका दर्वाज़ह खुलवादिया, और चत्रसिंह मए जमइयतके दाख़िल होकर कुल क़स्बहपर क़ाबिज़ होगया, सिर्फ़ ठिकानेदारके रहनेका मकान अमरसिंहके क़ब्ज़हमें रहा, और दोनों तरफ़से बन्दूकें चलने लगीं. इस लड़ाईमें बेमाली वाले ज़ालिमसिंहका बड़ा बेटा पद्मसिंह, तथा दो आदमी दूसरे मारेगये, और ल्हसाणीका जागीरदार सुल्तानसिंह सख़्त ज़ख़्मी हुआ. दो रोज़तक बराबर लड़ाई जारी रहनेके बाद विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रमज़ान = ई० ता० १२ मई] को अमरसिंहकी तरफ़से अम्न चाहनेपर महता ज़ालिमसिंह अमरसिंह वगैरह लोगोंको अपने डेरेमें लेआया, और ठिकानेपर चत्रसिंह क़ाबिज़ होगया. इसवक़ रावत् पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी मेड़तणी जो अमरसिंहको गद्दीपर बिठाना चाहती थी, आमेटसे निकलकर अपनी बेटी और रावत् अमरसिंह वगैरह हमराहियों सहित गढ़बोर (चारभुजा) में जाबैठी, जो एक बड़ा मशहूर मज़्हबी पनाहका मन्दिर है, और वहांसे

एक दर्ख्वास्त राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिबके नाम लिख भेजी, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती हैः-

एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम रावत पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी मेड़तणीकी दर्ख्वास्त.

॥ श्रीरामजी.

हुक्म हुवा,
कि इस मेवाड़के गैर मुक़द्दमे
में हमारा मुदाख़लत नहीं होवे,
इसवास्ते इस मुक़द्दमेंको
उदेपुर अजन्ट मारफ़त करणा होवे
सो बमूजिब श्री महाराणा सा-
हिब बहादुर धणी आपणी करो, अर
दरपत आपके पास भेज दीया है,
ता० २३ मई सन् १८५७ ई०
(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.)

॥ सीधश्री आवुजी सुभसुथाने स्रव ओपमा वीराजमान अनेक ओपमा लाएक राज श्री ५ श्री करणेल जारज सेन्ट पांत्रक लारनस साहेव वहादुरजी एतान गडवोर मु लपावता मेडतणीजीकी आमीस वंचावसी, अठाका समाचार श्री जी की क्रपाथी करे भला हे, आपका सदा आरोग चाहीजे, आप मारे गणी वात हो, वडा छो, सदा मेरवानगी हे जीहुइज रपावसी, अप्रंच ॥ अवार जेठ वीद १ के दीन जीलोला ठाकुर दुरजणसींगजी अर वारा वेटा चत्रसीगजी देवगढ वगेरे दो च्यार ठकाणा री जमीत लेने रात गडी दोय रेतारे आसरे आमेठ आया ने श्री दरवारकी तरफसु कामदार धुसपर हा, सो ऊणा दरवाजा पोल ने वणारो हजार दो हजार मनक माहे लेलीदा; ई राजदवारा ऊपरे आण पड्या, जीमे पदमसींगजी ने दो सरदार दुजा तीन सरदाराने तो मार नाक्या, ने चार पाच सरदार गायल हुया, अर रावलाने तो घेर लीदो, अर रावलामे पाणीरो कुंडो हो जीने पण वंदोवसत कर लीदो, जद मारी छोरी पाणी ऊपर भरवा गइ जीने पण गोलीरी देने मार नाकी, दन तीन सुदी माने पण गेर राप्या, पाणी पण पीवादीदो नही, मने आमेट वारे काडदीदी, जद मु रावत अमरसीगने वाइने लेने गडवोर आय वेठी अर मारो रोकड तथा गेणो तथा ओर असवाव ओर ठकाणो कोसलीदो, सो अस्यो जुलम अदना मनकसु

हुओ नही, जस्यो मासु हुओ. आप हाकम हे बड़ा हे, सो मारी सुणवाई करने मासु जुलुम मारे गरे बेठा जगड़ो कीदो, जीने ओलुंबो मीले ने मारो ठकाणो मने मले, मारे तो आसरो आपरो हे, आपरी परवस्तीसु वण्या रांगा, ओर वठे म्हारो काम्दार वगेरे पांच चार आसाम्या अर मारा पीरको भरामण हे, सो ऊणाने तो साराने पकड़ केद कीदा ने गर बंदोबसत कीदा, ऊणाने कूट मार करे हे, सो आपने पुदा बड़ा बणाया हे, सो गरीब जोरावरकी बराबर सुणे हे, सो मारो नरधार करे, श्री दरबार तो ईसवर परमेसर हे, पण श्री दरबारके कामेती दरवाजा पोली न मे वालदीदा, ने ऊपला लीष्या परमाणे मासु जुलम करायो; ने पेल्यारी हगीगत ई मुजब हे, के महा वीद ७ सातमरे दन श्री रावजी साहेबने पेद ज्यादा वी, जद मने हुकम कीदो के अबरके मारे षेद ज्यादा हे, सो चत्रभुजजी बंचावे तो वंचु, पण मारा डीलरी सरदा गठी, सो मारे आराम वेजावे जद तो ठीक हीज हे, ने कदाचीत मरजाउ तो मारे पछाड़ी जोल्या जालमसीगजीरा बेटा अमरसीगने राषज्यो, सो थारी तो चाकरी करेगा ने बाईने परणावेगा अर धणीकी बंदगी करेगा, अर ठकाणाने पण आवादान रापेगा, असो हुकम कीदो; अर महा वीद १० रे दन रावतजी साहेब तो देवलोक पदारे गया, जीसु श्री रावतजी साहेबरो तो हुकम ने मारी कुसीसु अमरसीग जोल्या राष्या ने गोदी बेठायो, जी दन आपी रजवाड़ तथा भाया तथा कामदारांकी कुसीसु नजराणो कीदो ने गादी बेठावाको दसतुर सदा वे ज्यो रजवाड़ वाला कीदो ने जीलोलावाला अपर करदीदा, मे मारा गरमें पाच सरदार कोटड़ी बन्द हे जणा तथा कामदारा श्री दरबारने अरजी लपी, सो मे राजी कुसीसु श्री रावतजीरे जोल्या रावत्जी अमरसींगजीने राष्या, ने आपरी सरकारमे तथा ओर रजवाड़मे यो दस्तुर हे, सो मालक बेठा मालकरी मुरजी वे सो करे, ने पाछासु ठुकराणीने ईकतीयार हे, सो मने श्री रावतजी साहव पण अमरिगजीरे वास्ते हुकम कीदो ने मारा राजीपासु ने रजवाड़रा राजीपासु अमरसीगने जोल्या लीदो, ने श्री दरबार हुकम कीदो, के मने नजराणाका रुप्या ४१०००) अगतालीस हजार ला, जद धणीको पण हुकम माथापर राप्यो ने, रुको नजर कीदो, सो धणी हुकम कीदो, ज्यो मे माथा ऊपर राष्यो ने दरवाजारी कुच्या मागी तो पण कुंच्या सुपी जद कामेत्या दरवाजा षोलेने मेसु ऊपला लीष्या मुजब जुलम करायो, ने आप हाकम हो, सो मेरवानगी कर परवस्ती वेगी करे, मु पुरी दुपी हु, मारे तो आसरो आपरो हे; ओर अठा लाएक काम काज वे सो लषावसी, अठे तो आपरो हुकम हे, संमत १९१३ (१) जेठ वीद ७.

---

(१) यह संवत् चैत्रादि हिसावसे १९१४ होता है.

ऊपर लिखे हुए मज़्मूनका एक काग़ज़ मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट शावर्स साहिबके नाम भी भेजागया, जिसके जवाबमें उक्त पोलिटिकल एजेएटने लॅरेन्स साहिबके मुताबिक़ ही हुक्म दिया. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १५ शव्वाल = .ई० ता० ७ जून] को रावत् अमरसिंह मए रावत् पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी और अपने तरफ़दारोंकी जमइयत के क़िले कंवारियामें जा पहुंचा, जो सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी जागीरमें एक छोटासा क़िला है और आमेट व कंवारियामें तरफ़ैनके पक्षवाले सर्दारोंकी जमइयतें एकट्ठी होने लगीं. इसके कुछ अरसह बाद ल्हसाणीके ठाकुर सुल्तानसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जो आमेटकी लड़ाईमें सख़्त ज़ख़्मी हुआ था, और रावत पृथ्वीसिंहकी स्त्री अपनी बेटी तथा रावत् अमरसिंह सहित कंवारियासे सलूंबरको चली गई. इसी तरह मेवाड़के सर्दारोंके दो जुदे जुदे गिरोह होगये. इन दिनों हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी फ़ौजकी बग़ावत बड़े ज़ोर शोरके साथ फैल रही थी, और महाराणा चाहते थे, कि रावत् चत्रसिंहको मुस्तक़िल तौरसे आमेटकी गद्दीपर क़ाइम करदेवें, लेकिन् ऊपर बयान किये हुए सर्दारोंके दो गिरोहोंमेंसे रावत् अमरसिंहके तरफ़दारोंने खेरवाड़ाके असिस्टेएट पोलिटिकल एजेएट कप्तान ब्रुक साहिबको कहा, कि अगर रावत् अमरसिंह ठिकाने आमेटपर न बिठाया जायेगा, तो मेवाड़में गद्र आम होकर बखेड़ा पैदा होगा, क्योंकि राजपूतानहके कुल राजपूत भी इस मुआमलहमें हमारे मददगार हैं. इसपर कप्तान ब्रुक साहिबकी सलाहके मुवाफ़िक़ महाराणाने चत्रसिंहको उदयपुर बुलाकर कुछ अरसहके लिये उसकी तलवार बन्दी मुल्तवी रक्खी, और हुक्म दिया, कि दोनों तरफ़का दावा पेश होनेपर इन्साफ़के रूसे तह्क़ीक़ात कीजाकर, जिसका हक़ साबित होगा उसको ठिकाना मिलेगा. इस मुआमलहकी बाबत् पोलिटिकल एजेएट शावर्स साहिबने भी एक इश्तिहार जारी किया, जिसका मत्लब यह था, कि इसवक़्त कोई सर्दार फ़साद न उठावे, और जिसको किसी तरहकी तक्लीफ़ हो वह हमको कहे, हम उसकी मुनासिब तह्क़ीक़ात करके वाजिबी तस्फ़ियह करादेंगे, सिवा इसके यदि कोई सर्दार किसी तरहका बखेड़ा या फ़साद पैदा करेगा, तो वह सर्कारी मुजिम क़रार दिया जायेगा, और उसके हक़में बहुत बुरा होगा. इस इश्तिहारके जारी होने और महाराणाकी अक़्लमन्दी और पोलिटिकल कार्रवाईसे मेवाड़में किसी तरहका फ़साद नहीं हुआ. हिन्दुस्तानका गद्र मिटजानेपर विक्रमी १९१७ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १२७६ ता० ७ ज़िल्क़ाद = .ई० १८६० ता० २९ मई] के दिन आमेटके रावत् चत्रसिंहको तलवार बंधाई गई; और महाराणाका इन्तिक़ाल होनेके बाद रावत् अमरसिंह आमेटकी बराबर इज़्ज़त पाकर एक जुदा उमराव बनायागया, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर लिखा जायेगा.

अब हम यहांपर थोड़ासा हाल विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रका लिखते हैं, जो मेवाड़की तवारीख़से सम्बन्ध रखता है; इसका बाक़ी हाल अंग्रेज़ोंकी तवारीख़के साथ पहिले हिस्सहमें लिखागया है.

विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ६ [हि० ता० ५ शव्वाल = .ई० ता० २९ मई] को शावर्स साहिब आबूसे उदयपुर आये, जिनको महाराणाने मेरट और दिल्लीमें ग़द्र फैलनेकी ख़बर सुनकर अपने चार सर्दारों सहित जगमन्दिर महलमें हिफ़ाज़तके साथ रक्खा. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शव्वाल = .ई० ता० २८ मई] को नसीराबादकी छावनीमें बग़ावत पैदा हुई, और नीमचमें भी ग़द्र होनेकी ख़बर मिली, जिसकी बाबत् कर्नेल ऐबट और नीमच व जावदके सुपरिन्टेण्डेण्ट कप्तान लायडने शावर्स साहिबको लिखा, कि रियासतकी फ़ौज लेकर बहुत जल्द नीमचकी तरफ़ आओ, यहां बलवा होने वाला है; और विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ता० १० शव्वाल = .ई० ता० ३ जून] को लायड साहिबका भी एक ख़त ग़द्र फैलनेके बारेमें उनके पास आया, जिसपर उन्होंने इस मुआमलहमें महाराणासे बातचीत की. महाराणाने विचारा, कि मेवाड़की हदमें अंग्रेज़ोंकी रक्षा करना हमपर एक ज़रूरी फ़र्ज़ है, और यह सलाह महाराणाके सलाहकारोंके सामने पुख़्तह होकर मेवाड़की तरफ़से बेदलाका राव बख़्तसिंह रियासती फ़ौज समेत पोलिटिकल एजेण्ट शावर्स साहिबके साथ नीमचकी तरफ़ रवानह किया गया, और एक ख़ास रुक़ा महाराणाने अपने इलाक़ह के सर्दारों और हाकिमोंके नाम इस मज़्मूनका लिखदिया, कि पोलिटिकल एजेण्ट को ज़रूरतके वक़्त दिलोजानसे मदद देवें, और हमारे हुक्मके मुताबिक़ उनके हुक्मकी तामील फ़ौरन् करें. उसवक़्त शावर्स साहिबको यह ख़बर मिली, और उनके पास नीमचके तोपख़ानहका अफ़्सर बार्नस और रोज़ साहिब भी आमिले. इसी अरसहमें कप्तान मैकूडॉनल्डकी एक चिट्ठी शावर्स साहिबके पास इस आशयकी आई, कि यहांपर इसवक़्त बहुत नाज़ुक हालत है, इसलिये मददगार लश्करकी ज़ियादह ज़रूरत है. यह चिट्ठी पढ़कर शावर्स साहिब मए बार्नस साहिब और राव बख़्तसिंह व रियासती फ़ौजके उदयपुरसे रवानह हुए, और रोज़ साहिब सफ़र वग़ैरहसे थकजानेके सबब उदयपुरमें ही रहे. कप्तान शावर्स लिखते हैं, कि महाराणाका यह काम कुल राजपूतानहके लिये एक .उम्दह नसीहत हुआ. इसके बाद प्रधान महता शेरसिंह रियासतके दूसरे मुलाज़िमों सहित उक्त साहिबसे आमिला. वह लिखते हैं, कि आमेट और बीजोलियाकी गोदनशीनीकी बाबत् मेवाड़में फ़साद न फैलने देनेके मुआमलहमें भी महाराणाने मेरी सलाहके मुवाफ़िक़ बन्दोबस्त किया; और लेफ़्टिनेण्ट

कर्नेल ब्रुक और कप्तान आर० एम० एन्सलीने खैरलिटिकल एजेएट शावर्स साहिबके
रखने याने उसे बाग़ी न होने देनेके अलावह उस पहाएटने लॉरेन्स साहिबके मुताबिक़
किया. उसवक्त शावर्स साहिबने महाराणाके दिलसे ५ शव्वाल = .ई० ता० ७ जून]
ज्यॉर्ज लॉरेन्सको लिखभेजा. जब शावर्स साहिबको थर अपने तरफ़दारोंकी जमइयत
भागेहुए ४० अंग्रेज़, मेम और उनके बच्चे डूंगल केसरीसिंहकी जागीरमें एक
और उनकी जान ख़तरेमें है, वह फ़ौरन् मए राव व पक्षवाले सर्दारोंकी जमइयतें
बजे रातको डूंगलामें पहुंचे, और उन्होंने बाग़ियोंको मार ठाकुर सुल्तानसिंहका इन्ति-
मुसीबत ज़दह अंग्रेज़ोंको दुश्मनोंके हाथसे सहीह सलाम था, और रावत् पृथ्वीसिंहकी
ख़ुशी हासिल हुई, उसका हाल शावर्स साहिबकी तह्रीरक यासे सलूंबरको चली गई.
होसक्ता है. राव बख़्तसिंहने महाराणाके हुक्मके मुता . इन दिनों हिन्दुस्तानमें
और हाथी घोड़ोंपर सवार कराकर उदयपुर भेजदिया, जहां महाराणा चाहते थे, कि
तालाबके अन्दर जगमन्दिर महलमें बड़ी हिफ़ाज़तके साथ रक्खा, और ...
ख़ातिरदारी व हिफ़ाज़तके लिये अपने प्रधान महता गोकुलचन्दको तईनात करनेके अला-
वह ख़ुद ने भी वहां जाकर उनकी हरतरहसे तसल्ली की, और दर्याफ़्त करते रहे, कि
उन्हें किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो. इस बारेमें एन्सली साहिबने एक रिपोर्ट की थी,
जिसका मत्लब यह है, कि कल महाराणा साहिब हमारे पास जगमन्दिरमें आये,
और दर्याफ़्त किया, कि हमको किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो, और छोटे छोटे बच्चोंको
देखकर उनमेंसे हरएकको दो दो अश्रफ़ियां दीं, और शामके वक्त उन्हें अपनी महाराणीके
पास लेगये, जहां दो दो अश्रफ़ियां अपनी तरफ़से और दोदो महाराणीकी तरफ़से उन्हें
और देकर पीछा हमारे पास भेजदिया. महाराणा ऐसे सभ्य और दयालु हैं, कि
इनकी बराबरी कोई दूसरा नहीं करसक्ता.

डॉक्टर मेरे साहिबने, विक्रमी १९२० वैशाख कृष्ण ४ [हि० १२७९ ता० १७ शव्वाल = .ई० १८६३ ता० ७ एप्रिल] को शावर्स साहिबके पास एक चिट्ठी बतौर धन्यवादके भेजी थी, जिसका मत्लब यह है, कि हम लोग आपके और महाराणा साहिबके बहुत इह्सानमन्द हैं. आप सर्दारोंके साथ डूंगला में पहुंचे, उसवक्तकी ख़ुशीको मैं नहीं भूला हूं, वह वक्त बड़ा नाज़ुक था, यदि महा-राणा साहिब हमारे बख़िलाफ़ होते, तो हमको इस ज़मीनपर और कोई दूसरा बचानेवाला न था.

डॉक्टर मेरे और डॉक्टर गेन दोनों नीमचके कैम्पमें थे, जब वहां ग़द्र हुआ और छावनी जलाई जाकर तोपख़ानहके सार्जेएट सपल की एक मेम और दो बच्चे

अब हम यहांपर थोड़ासा ‍ लेकर भागे, उसवक़ उक्त दोनों डॉक्टर भागकर के ग़द्रका लिखते हैं, जो मेवाड़ कह मेवाड़में पर्गनह छोटी सादड़ीका एक गांव है; वहां अंग्रेज़ोंकी तवारीख़के साथ पहिलीके साथ अपने यहां रखकर खाना खिलाया. पीछे

विक्रमी ज्येष्ठ शुक्क ६ [कर उन्हें आघेरा, मगर पटैलने बड़ी बहादुरीके साथ शावर्स साहिब आबूसे उदयपु के मुक़ाबलह करके बाग़ियोंको हटाया, और उक्त दोनों फैलनेकी ख़बर सुनकर अपने के साथ कहा, कि आप हमारे मिह्मान और पनाहमें आये रक्खा. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्क ८ भी इस हालतमें आपकी हिफ़ाज़त करना हमपर फ़र्ज़ था. नसीराबादकी छावनीमें बग़ाव तरफ़से भी मदद आपहुंची, जिससे उक्त दोनों साहिबोंकी जिसकी बाबत् कर्नेल ऐबट इस नेक ख़िद्मतसे ख़ुश होकर केशूंदाके पटैलको अपने शावर्स साहिबको लिखा, अ़त और कुछ ज़मीन बख़्शी; इसी उत्तम कार्रवाईके .एवज़में यहां [illegible] कुछ रुपया नक्द बतौर इन्आम देनेके अ़लावह उसे एक कुआं खुदवा दिया. विक्रमी १९१४ आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० १२७३ ता० १९ शव्वाल = .ई० १८५७ ता० १२ जून] को शावर्स साहिब बाग़ियोंका पीछा करतेहुए चित्तौड़गढ़पर पहुंचे, और वहांसे नीमच, नसीराबादके डाकख़ानोंका बन्दोबस्त करके कप्तान लायड और कर्नेल ऐबटके नाम नीमचको यह लिखभेजा, कि वहांपर क़िलेमें जो लेडियां और बच्चे हों उन्हें फ़ौरन् उदयपुर पहुंचादो. इसके बाद विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ शव्वाल = ई० ता० १५ जून] को वह मेवाड़के लश्कर समेत सांगानेरमें पहुंचे, जहां हमीरगढ़ और महुवाके जागीरदार भी उनसे आ मिले. शावर्स साहिब चाहते थे, कि नीमचके बाग़ियोंसे केकड़ीके रास्तेपर मुक़ाबलह करें. वह लिखते हैं, कि बड़ी भरोसादार मेवाड़की फ़ौज हमारे साथ थी. उक्त साहिब यहांसे रवानह होकर शाहपुराको गये, जहां ख़बर मिली, कि दिल्लीके पास बदलाकी सरायपर बाग़ियोंसे बड़ी लड़ाई हुई. इसवक़ शावर्स साहिबका यह इरादह हुआ, कि नीमचके बाग़ियोंपर हमलह करें, लेकिन् बाग़ी लोग आगे निकलगये, और उन्होंने देवलीकी छावनीको जलाकर बर्बाद करदिया, जहांसे एक अंग्रेज़ और दस औरतें तथा बच्चे जान लेकर भागे, उनको महाराणाके मुलाज़िमोंने जहाज़पुरमें पनाह दी. फिर नीमच और महीदपुरके बाग़ी लोग चलेगये, और मऊ, इन्दौर व आगरमें भी बलवा खड़ा हुआ. बेगूंके रावत् महासिंहने महाराणाके मन्शाके मुवाफ़िक़ मन्दसोर वग़ैरहकी तरफ़से भागकर आनेवाले अंग्रेज़ोंको पनाह दी, जिसके .एवज़में गवर्मेएट अंग्रेज़ीसे उसे ख़िलअ़त मिला. शावर्स साहिबने सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी शिकायत इस सबबसे लिखी है, कि उसवक़ उसने

महाराणाको धमकी दी और बखेड़ा उठाना चाहा था. इसकी बाबत् उक्त साहिबका बयान है, कि सर हेनूरी लॉरेन्स साहिबने अपनी विक्रमी १९१३ माघ शुक्ल १२ [हि० १२७३ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १८५७ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] की रिपोर्टमें लिखा, कि सलूंबर और भींडर दोनों ठिकानोंके सर्दार गद्दीसे ख़ारिज कियेजाकर राजपूतानहके बाहिर निकालदिये जावें. इसपर मैंने रावत् केसरीसिंहके नाम एक ख़त इस मज़्मूनका भेजा, कि यदि तुम महाराणाके बर्ख़िलाफ़ बखेड़ा पैदा करोगे, तो तुम्हें हेनूरी लॉरेन्स साहिबकी रिपोर्टमें बयान की हुई तज्वीज़के मुवाफ़िक़ सज़ा मिलेगी, जिसके जवाबमें उसने मुझको लिखा, कि मैं महाराणाके विरुद्ध नहीं हूं.

इन दिनों नीमचकी छावनीमें अंग्रेज़ अफ़्सरोंके पास भरोसेके लाइक़ सिर्फ़ मेवाड़की फ़ौज थी, जिसमें किसीने यह अफ़वाह फैलादी, कि अंग्रेज़ लोगोंने तुम्हारा धर्म भ्रष्ट करनेके लिये आटेमें जानवरोंकी हड्डियां पीसकर मिलाई हैं, परन्तु मेवाड़के वकील कायस्थ अर्जुनसिंहने आटेको अपनी ज़बानपर रखकर उन लोगोंका यह सन्देह दूर करदिया. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्हिज = ई० ता० १५ ऑगस्ट] को उस फ़ौजके लोगोंने बग़ावतके आसार दिखलाये जो मदद्के लिये नीमचमें बुलाईगई थी, परन्तु मेवाड़ी फ़ौजकी मददसे बलवा दबायाजाकर तीन मुख्य उपद्रवी आदमी तोपसे उड़ादिये गये.

इन्हीं दिनोंमें मन्दसोरके नज़्दीक कचरोद गांवमें एक हाजीने अपने तई दिल्लीके बादशाहका शाहज़ादह प्रसिद्ध करके ग़द्र उठाया. पहिली मर्तबह तो मन्दसोरके सूबहदार वग़ैरह सेंधियाके मुलाज़िमोंने इस बलवेको दबादिया, लेकिन् थोड़े ही दिनोंमें उस बनावटी शाहज़ादह और उसके वज़ीर मिर्ज़ाने दो हज़ार आदमी एकट्ठे करके मन्दसोरपर हमलह किया, जिसमें वहांका सूबहदार मारागया, शहरका ब्राह्मण जातिका कोतवाल मुसल्मान बनायागया, और कुमैदान व थानेदार ज़ख़्मी होकर क़ैदमें आये. शाहज़ादहने मालवेका मुख़्तार बनकर दस हज़ार आदमी एकट्ठे करलिये, जिनमें ज़ियादहतर विलायती और मेवाती लोग थे, और मालवाके तमाम रईसोंको अपनी ख़िद्मतमें हाज़िर होनेके लिये हुक्म भिजवाये, लेकिन् रईस लोगोंने गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके मददगार बने रहकर उसकी तह्रीरोंपर कुछ भी ख़याल न किया.

अब हम यहांपर टौंक वालोंके हाथसे नीबाहेड़ा छीने जानेका हाल लिखते हैं, जो इस तरहपर है, कि मन्दसोरका बलवा बढ़ता हुआ देखकर नीमचके अंग्रेज़ अफ़्सरों को फ़िक्र हुई, कि नीबाहेड़ा अपने क़बज़हमें लेलेना चाहिये, क्योंकि उन्हें यह अन्देशह था, कि वहांके मुलाज़िम मुसल्मान हैं, जो अजब नहीं, कि मन्दसोरके बाग़ियोंसे

मिलजावें, और यह कस्बह बागियोंके कबज़हमें चलेजानेसे उन लोगोंकी ताकृत ज़ियादह बढ़जावे; और इसी मत्लबकी एक अर्ज़ी महता शेरसिंहने विक्रमी १९१४ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० ता० २० शव्वाल = ई० ता० १३ जून] को महाराणाकी ख़िद्मतमें भेजी थी. इसलिये विक्रमी आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० १२७४ ता० २८ मुहर्रम = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को कर्नेल् जैक्सन साहिब दो तोप और पल्टनोंके कुछ चुनेहुए सिपाही साथ लेकर नीमचसे रवानह हुए, और पोलिटिकल एजेण्ट शावर्स साहिबने भी मेवाड़की फ़ौज और सर्दारोंको मौक़ेपर रवानह करदिया. सुब्हके वक्त कुल फ़ौज मए अंग्रेज़ी अफ्सरोंके नीवाहेड़ाके (१) पूर्व नदीके किनारेपर पहुंची, और शावर्स साहिबकी रायके मुवाफ़िक़ वहांके हाकिमके पास पैग़ाम भेजागया, कि हम लोग कुछ दिन इस कस्बहपर कबज़ह रक्खेंगे. इसपर टोंकवाले नव्वाबके बख़्शीने पैग़ाम लेजाने-वाले चोबदारको कृत्ल करके शहरपनाहके दर्वाज़े बन्द करादिये, तब तो लाचार अंग्रेज़ अफ्सरोंको मुहासरह करनेकी फ़िक्र हुई. नीवाहेड़ावालोंने भीतरकी तरफ़से कस्बहकी पूरे तौरपर मज़्बूती करके अंग्रेज़ी सेनापर तोपके गोले और बन्दूकोंकी बाढ़ मारना शुरू किया, जिनके मुकाबलहमें बाहिरसे भी बन्दूकें वगैरह खूब चलाई गईं, और देरतक लड़ाई होती रही. इस लड़ाईमें तिरासी पल्टनका यंग नामी एक अंग्रेज़ और मेवाड़की फ़ौज (२) का एक चपरासी तोपके गोलेसे मारागया. पिछली रातके वक्त टोंकवालोंका बख़्शी नीवाहेड़ासे निकल भागा और मन्दसोरके बागियोंके साथ जा मिला. सुब्हके वक्त जब शावर्स साहिब, जेक्सन साहिब, महता शेरसिंह और अठाणाका रावत् दीप-सिंह और सहीवाला कायस्थ अर्जुनसिंह वगैरहने शहरपनाहपर चढ़कर हमलह करना चाहा, तो भीतरसे मुकाबलेका कुछ भी ढंग नज़र न आया, ख़बर कीगई तो क़िला दुश्मनसे ख़ाली पायागया. तब अंग्रेज़ी व मेवाड़ी फ़ौजने यह हाल देखकर कस्बहपर फ़ौरन् अपना कबज़ह करलिया, और कस्बह नीवाहेड़ा मए ज़िलेके अमानतके तौरपर मेवाड़वालोंको सौंपा जाकर वहां का पटैल तोपसे उड़ादिया गया, क्योंकि जिस वक्त नीवाहेड़ामें अंग्रेज़ी चोबदार कृत्ल कियागया, उस समय यह पटैल भी शरीक था. विक्रमी १९१६ भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० १२७६ ता० १९ मुहर्रम = ई० १८५९ ता० १९ ऑगस्ट] तक ज़िला नीवाहेड़ा मुलाज़िमान मेवाड़के कबज़हमें रहा. इसवक्त बाज़े अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी तो राय थी,

---

(१) यह शहर ५१८१ फ़ुट लम्बे, ८ फ़ुट चौड़े और १२ फ़ुटसे २० फ़ुटतक ऊंचे पुरूतह कोटसे सुरक्षित है, जिसमें १९ बुर्जें हैं; और आबादी इसकी १००० घरके क़रीब है.

(२) मेवाड़ी फ़ौजमें महता शेरसिंह और जावद, नीमच ज़िलेके सर्दार शामिल थे.

कि नीवाहेड़ा मेवाड़में ही मिला दियाजावे, क्योंकि वह क़दीम ज़मानहसे इसी मुल्क का हिस्सह था, लेकिन् थोड़े अफ़्सरोंकी राय टोंकको वापस दियेजानेकी ठहरी; उन्होंने कहा, कि गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके अ़ह्दसे इस ज़िलेपर टोंकवालोंका क़ब्ज़ह है, इस-लिये उन्हींको वापस मिलना चाहिये. ये दो मुख़्तलिफ़ रायें पोलिटिकल अफ़्सरोंकी आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीके कारण थीं. इस मुआ़मलहके चन्द काग़ज़ात जो हमको मिले हैं, उनकी नक़्लें नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

कप्तान चार्ल्स सोर साहिबके पहिले काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सीधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरव उपमा आजमान लायक महाराजा धीराज महाराणाजी साहेब श्री सरुपसींगजी वहादुर एतान कप्तान चारलस सोर साहेब वहादुर ली ॥ सलाम मालुम करावसी; इीठाका समाचार भला हे आपके सदा भले चाहीजे अप्रच ॥ अरसा वरस दीनका होने आया के हीसाव आमदनी व परच नीमा-हेडेका तेयार होकर आजतक आया नही, चुनाचे मेंने महेताजीकु लीपा हे, ज्योके वंदो-वस्त नीमाहेडेका आपके तोरपर हे, ईस वास्ते पीदमत मुवारीकमे लीपता हुं के आप महेता सेरसीघजीकु वास्ते तेयार कर भेजणे हीसावके हुकम लीपाय भेजावामे आवसी; ओर कल मै नीमाहेडे गआ था, वहां देपा तो सामान जंगका थोडा नजर आया ओर तनपा सीपाही-यान वगेराकी भी चढी हे, सो माफीक दरपास्त महेता सेरसीघजीके रु० ॥ १५०००) पनरे हजार कचा वास्ते तयारी सामान जंग व तनपाह सीपाहीयानके व दुकान सेट गणेसदास लपमीचंदजीके से भेजवाया गया, सो आपकु मालुम रहे, ओर मीजाज मुवारककी पुसीके स्माचार हमेसे ली०॥ सं० १९१५ आसाड सुदी १५ ता० २५ जुलाइी स० १८५८ ई ० ॥ मुकाम छावणी नीमच दीतवार.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

कप्तान चार्ल्स सोर साहिबके दूसरे काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरव ओपमा व्राजमान लायक महाराजा धीराज महाराणाजी साहेब श्री सरुपसींगजी वहादुर एतान कप्तान चारलीस सोर साहेब वहादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी, यहांका समाचार भला हे आपका सदा भला चाहीये, अप्रंच॥ केई दीन हुवा, के हमने वमुजव दरपास्त जरुरी साहेव एजेंट गवरनर जनरल राजपुतानेके आपके वकीलकी मारफत नीमाहेडेके कई सवाल वास्ते तुरत भेजणे जवावके लीपवाया, सो आजतक जवाव आया नहीं. ईस वास्तेके चीठीका जवाव वहोत जलदीसे संगवाया वो मुलतवी पडा हे, ईस वास्ते आपको लीपाजाता हे के एक वात वहोत जरुर हे, यानी तेसील आमदनी परगने नीमाहेडेकी के जीस दीनसे आपके अहलकारोंके सुपरद हुवा, सो आजतक कुल जमाका आंक ओर परचका जलदीसे हमारे पास भेजणा फरमावे, तफसीलवार लीपणा जरुर नहीं, सीरफ कुल जमा अर परच का आंक लीपावसी, जीसमें हम जलदीसे चीठीका जवाव लीपे; अव हमारे लीपणेमें जादा देरी नहीं होगा, अर दरसूरत मंगाणे साहेव अजंट गवरनर जेनरल राजपुतानाके तपसीलवार हीसाव भेजणा होगा, सो ईसका मुफसील हीसाव मेहेताजी गोपालदासजी अर सेठजी चादणमलजीकी लार जलदीसे भेजणा फरमावसी, ईसमें देर नहीं होवे; अर ईस परीतेके जवाव म्हे आप आपणी पत्राहस नीमाहेडे रपणेकी अर हक दावा हो वो मुफसील लीपावसी, ता० ६ नवंवर सन १८५९ ई०। समत १९१६ काती सुद १२ सोमे.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

मेजर विलिअम फ़्रेडेरिक ईडन साहिबके काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी १ ॥

॥ स्वस्ती श्री सरवोपमा वीराजमान लायक महाराजा धीराज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी वहादुर एतान मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेव वहादुर लीपतुं सलाम

मालुम होय, अठारा समाचार भला छे आपका सदाभला चाहीजे अप्रंच ॥ ईन दीनोंमे बदली कपतान सोर साहेब बहादुर कायम मुकाम अजंट मेवाड़की बहुकम हजुर नवाब मवोला अलकाब गवरनर जनरल बहादुर ओर कामपर फोजके ईलाकेमें हुई ओर मेजर टेलर साहेब बहादुर अजंट राज जेपुर अहोदे अजंटी मेवाड़के अंजाम देणेपर मामुर हुवे, यकीन हे के मेजर साहेब मोसुफ अनकरीब आपसे मुलाकात करेंगे. जोंके उदेपुर के मुकाम हमारी मुलाकात तपलीयेकी बमुजब आपकी मरजीके हुई थी, लेकिन अछी तरेसें के जिस्से आपकी दिलजमी होय पुरी नही हुई थी, अब जो आपको कुछ गुफ़तगु तपलीयेकी मंजुर होय तो मेजर साहब मोसुफके जरीयेसे अछी तरहसे होसकती हे, ओर हमने बमुकाम उदेपुर बरवक्त मुलाकात दरबाब परगने नीमाहेडेके आपसे जीकर कीया था, ओर ये भी आपने जाहीर कीया था. के कपतान सोर साहेब बहादुरने बतोर पुद तमाम परगना नीमाहेडा राज उदेपुरके सुपरद कीया था, ओर आपकु भी मालुम था, के ईस बाबमें मंजुरी ओर रजामंदी जरनेल जारज सेंट पातरक लारनस साहब बहादुरकी न थी, बलके नामंजुरी जरनेल साहब बहादुरकी जाहर हुई थी; अब सदरसे हुकम वापस होणे परगणे मजकुरका रईस टोंकको हमारे नाम सादर हुवा हे, ईस बाबमे मेजर टेलर साहब बहादुर आपको लीपेंगे, वाजब ओर जरुर हे, के आप भी अहलकारान राजके हुकम फरमावे, के जब मेजर साहब मोसुफ नीमाहेडेमे आवे, ओर मोतमद रयासत टोंकको परगना मजकुर सुपरद करे, तो मुलाजमान ओर सीपाहे राज उदेपुर वहींसे बरदास्त होजावे. जोंके आपके फुरमानेसे ऐसा मालुम हुवा था, के वापस होणे परगणे मजकुरसे आपके दीलमें कुछ पयाल हतक राजका हे, आप ईस पयालको दीलसे दुर फरमावे; असल हकीकत ये हे. के येह परगना बवापस बाजे सकके के कपतान सोर साहब बहादुरके दीलमे हुवा, अमानतके तोरपर सुपरद राज उदेपुरके कीयागया था, ओर आपकी तरफसे जो माफक दरपास्त साहब मोसुफके ईकरार अमानत रपणेका हुवा, येहे असर अलामत पेरपाही सरकार दोलत मदार अंगरेजीकी हे, अगर आपकी दोस्ती सीरकारके साथ यकीनी नहीं समजी जाती, तो परगना मजकुर आपके सुपरद क्यों होता; अब ईन बातोका हाल अगर मुफसल लीपा जाय, तो ईस कागजमे गुंजायस नहीं हे, ओर हमकु फुरसत भी नहीं हे, ईस्वास्ते जो कुछके जाहर करणा हे, आपके वकीलसे कहा जायगा. जोंके मेजर टेलर साहब बहादुर दानसमंद ओर बहोत अपलाक वाले हे, यकीन हे, के आप साहब मोसुफसे राजी रहेंगे; जोंके आपने राहोरसम महोबतकी हमारे साथ ज्यादा रपी, जो या दोस्ती सरकार दोलतमदारके साथ ज्यादा की, कीसवास्ते के माफक दरपास्त हमारे, जो तवजो

अंतजाम षेराड अर अमुरमे कीये अमर वापस बंदोबस्तका हुवा, ईसवास्ते मुनासीब हे, के आप आयंदा भी मुतवजे बंदोबस्तके रहे, के ज्यादा नामवरी आपकी उस्मे हे, वास्ते ईतलाको लीषा हे, ओर आपके मीजाजकी षुसीके समाचार लीषावसी, ता० २७ मारच सन् १८६० ईस्वी, मीती चेत सुदी ५ संवत १९१७ का.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

मेजर टेलर साहिबके पहिले काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी१ ॥

॥ सीधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा ब्राजमान लाअेक माहाराजा धीराज महाराणाजी साहेबश्री सरुपसीघजी साहेब बहादुर अेतान मेजर टेलर साहेब बाहादुर लीषावता सलाम मालुम करावसी, अठाका समाचार भला हे, आपका सदा भला चाहीअे अप्रंच ॥ पहेले ईससे परीता कपतान च्यारलीस सोरज साहेब बहादुर कायम पोलेटीकल अजंट राज मेवाड्का दरबाब सुपरत करने प्रगने नीमाहेड्ा आपके अेहलकारानको वास्ते चन्द रोजके ब तारीप २१ सीतंबर सन् १८५७ ईस्वीको आपके नाम लीषागया था, अब हुकम जनाब नबाब मुस्तताब मोला अलकाब गवरनर जनरल बाहादुरका दरबाब वापस दीअेजाने प्रगने मजकुरके नबाब साहेब बालीअे टोकको होगया हे, ईसवास्ते आपके षीदमत मुबारकमे ईतला दीजाती हे, के आप अपने मुलाजमान मुतयने प्रगने मजकुर के नाम हुकम जारी फरमावे, के वे वास्ते सुपरद करने प्रगने मजकुरके मुस्तेद व तयार रहे, ताके बरवकत आने हुकम मुफसल मेजर ईडन साहेब बहादुर कायम मुकाम अजंट गवरनर जनरल बहादुर राजपुतानेके ईस बाबमे प्रगणे मजकूर अहल्कारान नवाब साहेब मोसुफको सुपरद कराया जायेगा, ईतलाअेन मरकुम हुवा; ओर [illegible]

मुबारीककी षुसीका समाचार हमेसे ली० ॥ ता० २ माहे अपरेल सन् १८६० ईसवी, मीती चेत सुद ११ संमत १९१७, मु० छावणी नीमच सोमवार.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

मेजर टेलर साहिबके दूसरे काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सीध श्री उदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा वीराजमान लाअेक महाराजा धीराज माहारानाजी श्री सरुपसींघजी साहेब बहादुर अेतान मेजर रावरट लवीस टेलर साहेब बहादुर ली० ॥ सलाम मालम करावसी, अठारा समाचार भला हे, आपका सदा भला चाहीजे अप्रच ॥ बाबत हीसाब नीमाहेडेके जो रपोट सदरको गई थी, आज जबाब ऊसका हजूर फेज जहूर नवाब गवरनर जनरल बहादुरसे ईस तोरपर आया, के रु० ॥ ५५००००) अपरे पाच लाप पचास हजार नवाब साहेब बहादुर वालीये टोकका बाबत हीसाब नीमाहेडेके जीमे रीयास्त ऊदेपुर चाहीये, मुनासब हे, के अब वोहो रुपीया जलद अदा करे, ईस वास्ते आपको तसदीया दीयाजाता हे, बफोर पोहोचने ईस परीतेके रुपीये मजकुर भेजावेदेसी, अगर ईसमे तवकूफ होगा, तो रोज पोहोचने ईस परीतेसे सुद जेसा नवाब साहेब बहादुर ममदुह म्हाजनोको देते हे, आपसे लीयाजावेगा; ओर मीजाज मुबारीककी षुसीका समाचार हमेसे ली० ॥ ता० ५ माह अगस्त सन् १८६१ ईस्वी मीती सावण वीद १४ संवत् १९१८, मुकाम छावणी नीमच सोमवार.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

हम केवल अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीको ही नीबाहेड़ा वापस टौंकवालोंको मिलनेका कारण बयान नहीं करसक्ते, किन्तु मेवाड़के रियासती अह्लकारोमें भी उन दिनों आपसमें बहुत कुछ नाइत्तिफ़ाक़ी चलरही थी, जिससे उम्दह तौरपर पैरवी

न होसकी; और रियासत टौंककी तरफ़से इस मुआमलहमें पूरी पूरी कोशिश कीगई. यह बात आम तौरपर मशहूर है, कि यदि महता शेरसिंह लॉरेन्स साहिबके पास भेजा-जाता, तो नीबाहेड़ापर मेवाड़वालोंका पुख़्तह क़बज़ह होजाता; लेकिन् ऊपर बयान किये-हुए कारणसे न होसका, बल्कि महाराणाकी नाराज़गी महता शेरसिंहकी तरफ़ दिन व दिन बढ़ती गई.

अब हम यहांपर ग़द्रका बाक़ी हाल फिर शुरू करते हैं. विक्रमी १९१४ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२७४ ता० ४ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८५७ ता० २३ ऑक्टोबर] को ख़बर मिली, कि मन्दसोरके बाग़ी लोग जीरणकी तरफ़ आते हैं, और यह ख़बर पाते ही उसी दिन शामके वक़्त नीमचके सुपरिन्टेण्डेण्ट कप्तान लायड और कप्तान सिम्पसन मए दूसरे ११ अफ़्सरों और क़रीब चार सौ सिपाही तथा दो तोपोंके नीमचसे उनके मुक़ाबलहको रवानह हुए. जीरणमें पहुंचनेपर बाग़ियोंसे लड़ाई हुई, जो तादाद में चार सौ से ज़ियादह न थे. इस लड़ाईमें कप्तान रीड और कप्तान टूकर मारेगये, जिनमेंसे कप्तान टूकरका सिर काटकर बाग़ियोंने मन्दसोरके दर्वाज़हपर लटकादिया, और ५ अंग्रेज़ अफ़्सर घायल हुए. मुख़ालिफ़ोंने जीरणको ख़ूब लूटा, और अंग्रेज़ी अफ़्सर फ़ौज समेत भागकर नीमचमें चले आये. कप्तान लायडने रिपोर्ट की, कि हमारी फ़त्ह हुई, और बाग़ी लोग भागगये, लेकिन् शावर्स साहिब अपनी किताबमें इस बयानको ग़लत बताकर बाग़ियोंकी फ़त्ह होना लिखते हैं; और इसी सबबसे सौ सवार और पांच सौ या छः सो अफ़ग़ान व मकराणी और बाक़ी ज़िलेके लुटेरे, जो तादादमें कुल दो हज़ार आदमी थे, मग़रूर होकर मन्दसोरसे नीमचकी तरफ़ रवानह हुए. यह ख़बर सुनकर कप्तान बैनिस्टर उनके मुक़ाबलहको नीमचसे निकला, और कप्तान शावर्स साहिब भी मए तीन सौ मेवाड़ी सवारोंके उनसे जामिले, छावनीके क़रीब नालेपर मुक़ाबलह हुआ, शामतक गोलियां चलती रहनेके बाद अंग्रेज़ी अफ़्सर मए मेवाड़ी सवारोंके क़िलेमें चले आये, और फ़ौजका कुछ हिस्सह बाग़ियोंके साथ आधी राततक लड़ता रहा. आख़रकार सुब्ह होते ही बाग़ी लोग छावनीमें घुसगये, और अंग्रेज़ अफ़्सर मए थोड़ेसे पैदलोंके क़िलेमें रहे. कप्तान शावर्स साहिबने मेवाड़की फ़ौजसे यह बन्दोबस्त अपने हाथमें लिया, कि मुख़ालिफ़ोंकी लूट मारसे गिर्दोनवाह के मुल्कको बचावे, लेकिन् बाग़ी लोगोंने ग़ालिब आकर क़िलेको घेरलिया, और जावद, रत्नगढ़ व सींगोलीमें चन्द सिपाहियोंके साथ ज़लील लोगोंने मिलकर ग़द्र मचाया. अठाणाके रावत् दीपसिंहने अपने बाल बच्चोंको तो पहाड़में भेजदिया, लेकिन् क़िलेको मज्बूत करके अंग्रेज़ी इलाक़हकी रिआयाको अपने पास पनाह दी.

क़ाइमदीन चूड़ीगर दीनका झण्डा खड़ा करके जावदका मुरुतार बना, यहांतक कि अठाणाके जुलाहे भी उसके शरीक होगये. इसवक्त अलीड़ा नामी एक जुलाहा अठाणाके रावत् दीपसिंहके पास आकर कहनेलगा, कि हमारा नाम अब अलीड़ा नहीं अलियारखा है, और यह कहा, कि हमारे बिस्तरोंकी गठड़ी दीनकी फ़ौजमें पहुंचादो. तब रावत् दीपसिंहने कहा, कि इतने दिन हमारे सिपाहियोंकी गठड़ियां तू अपने सिरपर रखकर पहुंचाता था, अब अपनी गठड़ी लेजानेमें क्यों शरमाता है ? इसपर वह बड़बड़ाता हुआ चलागया, लेकिन् अंग्रेज़ी फ़त्ह होनेके बाद उन ज़लील क़ौम जुलाहोंकी जान रहमदिलीके साथ रावत् दीपसिंहने बचाई. फिर विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रबीउल्-अव्वल = .ई० ता० १२ नोवेम्बर] को कप्तान शावर्स साहिबने लेफ़्टिनेण्ट फ़र्कहर्सनको अपने साथ लेकर बघाणा और निक्सनगंजमें बाग़ियोंपर हमलह किया. इस मुक़ाबलहमें कप्तान शावर्स साहिबकी फ़त्ह हुई, और उधर मऊकी छावनीका लश्कर लेकर कर्नेल् ड्यूरेण्डने मन्दसोरको आघेरा. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रबीउस्सानी = .ई० ता० २३ नोवेम्बर] को मन्दसोरसे शाहज़ादह भागगया, और नीमचके बाग़ियोंमें से भी कुछ लोग तो ड्यूरैण्डकी ख़बर सुनकर पहिले ही मन्दसोरको चलेगये, और कितने एक मारे और काटेगये. आख़रकार नीमचकी छावनीमें फिर अंग्रेज़ी झण्डा फहराया. कप्तान शावर्स साहिबके साथ इन हमलोंमें मेवाड़के दो आदमी शिवदास काबरा कामदार और बाघसिंह राजपूत मारेगये; शिवदासको कप्तान शावर्स साहिबने "ओसरी" लिखा है, जो अस्लमें "महेश्वरी" महाजन और महता शेरसिंहके मातह्त कामदारोंमेंसे था. नीमचका गद्र दूर होनेके बाद कप्तान शावर्स साहिब उदयपुरमें चले आये; और विक्रमी १९१५ आपाढ़ [हि० १२७४ ज़िल्हिज = .ई० १८५८ जुलाई] तक यहीं ठहरे. इन्हीं दिनोंमें उनको यह ख़बर मिली, कि ग्वालियरमें लूट खसोट करनेके बाद सर यूज़ रोज़ साहिबने राव साहिब और तांतिया टोपेको ग्वालियरसे निकालदिया. यह राव साहिब पेश्वाकी औलादमेंसे एक पेन्शनयाफ़्तह शख़्स था, जो हिन्दुस्तानमें गद्र होनेपर बाग़ियोंका सर्दार बनगया. ग्वालियरसे निकलकर वह मेवाड़ की पूर्वी सीमापर जलिन्धरीके घाटेके रास्तेसे मेवाड़में दाख़िल होकर मांडलगढ़ आपहुंचा. मैं (कविराजा श्यामलदास) उसवक्त अपनी जागीरके गांव ढोकलियामें था, जो ज़िले मांडलगढ़में वाके़ है. यक़ीन था, कि वह बाग़ियोंका गिरोह हमारे गांवमें होकर निकले, लेकिन् बारिशकी ज़ियादती और बनास नदीकी चढ़ाईके सबब ये लोग मांडलगढ़के क़रीब दो तीन रोज़तक पड़े रहे. महता स्वरूपचन्द और गोकुलचन्दने दो तीन हज़ार राजपूत वग़ैरह लोग एकट्ठे करके क़िले मांडलगढ़को मज़्बूत किया. बाग़ियोंने

किसी क़िस्मका नुक्सान मेवाड़में नहीं किया, क्योंकि उनको इस बातका ख़ौफ़ था, कि कहीं राजपूत लोग हमारी फ़ौजपर हमलह न करदेवें. नदीकी रोकसे इन लोगोंका इरादह सींगोली और रामपुराके रास्ते होकर नीमचकी तरफ़ जानेका था, लेकिन् ब्रिगेडिअर पार्क और मेजर टेलरने मए अंग्रेज़ी फ़ौजके उस तरफ़का रास्तह रोकलिया, और कप्तान शावर्स साहिब भी मेवाड़की जमइयत समेत उदयपुरसे नीमच आपहुंचे; राव साहिबकी फ़ौजने वरूंदनीके पास वेड़च नदीको पार करके बरसल्यावास होतेहुए विक्रमी श्रावण कृष्ण १४ [हि० ता० २७ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ ऑगस्ट] को भीलवाड़ेमें मक़ाम किया. शावर्स साहिब अपनी किताबमें बाग़ियोंकी तादाद पांच हज़ार लिखते हैं, लेकिन् उस समय मेरा (कविराजा श्यामलदासका) बड़ा भाई औनाड़सिंह मए चन्द राजपूत सर्दारोंके ज़रूरी कामके लिये भीलवाड़े गया था, वह बयान करता था, कि हम लोगोंने बाग़ियोंकी फ़ौजमें घुसकर देखा, तो वे लोग आठ या नौ हज़ारसे कम न थे, उनके पास नक्द व ज़ेवर वग़ैरह बहुतसा माल था, लेकिन् कपड़े और खानेकी यहां तक कमी थी, कि मर्दोंके सिरपर औरतोंकी साड़ियां बंधी हुई थीं, और वे लोग एक एक रोटीका एक एक रुपया देनेको तय्यार थे. विक्रमी श्रावण कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ ज़िल्-हिज = ई० ता० ९ ऑगस्ट] को शामके वक्त जेनरल रॉबर्ट्स मए अंग्रेज़ी फ़ौज और तोपखानहके आपहुंचे, और बाग़ी फ़ौज भी लड़नेको तय्यार होगई. सांगानेरके क़रीब कोटेश्वरी नदीपर मुक़ाबलह हुआ, उस समय औनाड़सिंह अपने हम्राहियों सहित एक मीलके फ़ासिलहसे लड़ाई देख रहा था, और हम लोगोंको अपने गांवमें तोपोंकी आवाज़ सुनकर उनकी जान ख़तरेमें होनेकी बड़ी फ़िक्र होरही थी. थोड़ी देर मुक़ाबलह होनेके बाद बाग़ियोंका लश्कर भाग निकला, और जेनरल रॉबर्ट्सको फ़त्ह नसीब हुई. ये लोग गोवर्द्धननाथके दर्शन करके नाथद्वारासे पीछे फिरे, और कोठारियाके पास विक्रमी श्रावण शुक्र ६ [हि० १२७५ ता० ४ मुहर्रम = ई० ता० १४ ऑगस्ट] को जेनरल रॉबर्ट्सकी फ़ौजसे दोबारह मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें बाग़ियोंकी फ़ौजके बहुतसे आदमी मारेगये, और उनकी चार तोपें रॉबर्ट्स साहिबने छीनलीं. इसके बाद ये लोग आकोलाके रास्ते चित्तौड़से दक्षिण तरफ़ होकर जाठ और सींगोलीको लूटतेहुए झालावाड़में पहुंचे, जहां राजराणा पृथ्वीसिंहकी फ़ौज बाग़ियोंसे मिलगई, जिससे उनका बहुतसा माल असबाब, हाथी, घोड़े और तोपख़ानह वग़ैरह लूटाजाकर ख़ुद राजराणा भी उनकी क़ैदमें आगये; लेकिन् आधी रातके वक्त वह किसी बहानेसे निकल भागे; ब्रिगेडिअर पार्क बाग़ियोंके पीछे लगाहुआ था. यहांसे निकलकर बाग़ी लोग सेंट्रल इण्डियामें होतेहुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रबीउस्सानी = ई० ता० ३ डिसेम्बर]

को नर्मदाके किनारे छोटे उदयपुरमें पहुंचे, जहां ब्रिगेडिअर पार्कने उन्हें शिकस्त दी.

राव साहिब तो देवगढ़ बारियासे ही जुदा होगया था, और तांतिया टोपे कुशलगढ़के रास्ते होकर बांसवाड़े पहुंचा. रास्तेमें कुशलगढ़के ठाकुरने उन लोगोंसे मुक़ाबलह किया, और इस कार्रवाईके बदले उसने गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे इन्आ़म पाया. इस वक्त क़रीब था, कि बाग़ी फ़ौज बांसवाड़ाको लूट लेवे; लेकिन् मेजर लियरमाउथके फ़ौज समेत आपहुंचनेपर तांतिया टोपे वहांसे भागकर सलूंबर, गींगला और भींडरकी तरफ़ आया. इन लोगों (बाग़ियों) का इरादह था, कि उदयपुरमें आवें, लेकिन् महाराणाकी तरफ़से घाटों और पहाड़ी रास्तोंपर पूरी मज्बूती करादीजाने, और मददके लिये नीमचकी फ़ौजके आपहुंचनेसे उनका इरादह पूरा न होसका. इसके अलावह उत्तरकी तरफ़का रास्तह मेजर रॉक और कप्तान शावर्स साहिबने रोक लिया, इसलिये ये लोग भींडरसे ही पहाड़ी रास्ते होकर प्रतापगढ़की तरफ़ पहुंचे. इसवक्त तीन चार हज़ार भील भी इनके शरीक होगये थे, लेकिन् वे लोग विक्रमी पोष कृष्ण ३ [हि० ता० १७ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २३ डिसेम्बर] को मेजर रॉकके पहुंचजानेसे प्रतापगढ़को न लूट सके, और उन्हें शिकस्त पाकर भागना पड़ा. इस लड़ाईमें बाग़ियोंके बहुतसे आदमी मारे व पकड़ेगये, और उनका हाथी घोड़ा वग़ैरह सामान भी छीन लियागया. तांतिया टोपे मन्दसोर होताहुआ जीरापुरमें पहुंचा, जहां कर्नेल बेन्सनने शिकस्त देकर उसके कई आदमी क़त्ल किये. यहांपर बाग़ियोंकी फ़ौजमें बहुत थोड़े आदमी रहगये थे, लेकिन् फ़ीरोज़शाह नामी एक बाग़ी दो हज़ार आदमियोंके साथ उनसे आमिला. फिर विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रजब = ई० १८५९ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को ये लोग मेवाड़में कांकड़ोलीकी तरफ़ आये, लेकिन् ब्रिगेडिअर समरसेट और कप्तान शावर्स साहिबके वहां पहुंचजानेसे बाग़ी लोग पहाड़ोंमें होकर बांसवाड़ेके क़रीब पहुंचे, जहां समरसेट साहिबने उन्हें जा दबाया. तब बाग़ियोंके सर्दार फ़ीरोज़शाह, नव्वाब अब्दुल्शुतरख़ां और पीर हुजूरअ़ली तो लाचार होकर अंग्रेज़ी पनाहमें समरसेट साहिबके पास आगये; और विक्रमी १९१६ चैत्र शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रमज़ान = ई० ता० ७ एप्रिल] को तांतिया टोपे गिरिफ्तार होगया, जिसको फांसी मिली; मगर राव साहिबका पता नहीं लगा, कि वह कहां ग़ाइब होगया.

इस ग़द्रका हाल हमने यहांपर उतनाही लिखा है, जितना कि मेवाड़से तअ़ल्लुक़ रखता था. हिन्दुस्तानका मुल्क पहिले ईस्ट इण्डिया कम्पनीके तह्तमें था, जो इस ग़द्रके बाद शाहान इंग्लिस्तानके ख़ालिसहमें शामिल हुआ. इस बारेमें लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दने इश्तिहार बज़रीए ख़रीतह मेवाड़के महाराणाके पास भेजा, जिन काग़ज़ोंकी नक्लें व तर्जमे नीचे दर्ज कियेजाते हैं.-

लॉर्ड कैनिंग साहिब बहादुर गवर्नर जेनरल व वाइसरॉय हिन्दके
फ़ार्सी ख़रीतह (१) का तर्जमह.

महाराणा साहिब आलीशान मुश्फ़िक़ मिह्र्बान जगह निकलने मिह्र्बानी व एह्-सानके सलामत.

पीछे पहुंचाने रस्मों ख़्वाहिश बड़ी मुलाक़ात बिल्कुल मिह्र्बानीके, जो क़लम दो ज़बानकी तह्रीर और ख़त कुशादह बयानकी तक़ीरमें नहीं समासक्ती है, रौशन दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है. दोस्तदार उस मुश्फ़िक़की वाक़फ़ियतके वास्ते नक़्ल उस इश्तिहारकी, जो मलिकह मुअ़ज़्ज़मह इंग्लिस्ताननने हिन्दुस्तानके सब रईसों, सर्दारों और कुल रिआ़याके नाम जारी फ़र्माया है, इस ख़तके साथ भेजता है; और एक दूसरे इश्तिहारकी नक़्ल भी जिसको दोस्तदार बादशाही इश्तिहारके साथ जारी करता है, इसी ख़तके साथ भेजता है. उम्मेद है, कि दोस्तदारको हमेशह ख़ुशख़बरी सिहत मिज़ाज दोस्ती मिलेहुए अपनेका चाहनेवाला ख़याल करके उसके लिखने और इत्तिलासे राज़ी और ख़ुश फ़र्माते रहें, ज़ियादह क्या लिखे.

(दस्तख़त) कैनिंग.

---

(۱) نقل خریطهٔ لارڈ کینگ گورنر جنرل هند بنام مهارانا سروپ سنگه جی *

مهارانا صاحب عالیشان مشفق مهربان مصدر لطف و احسان سلامت *

بعد از تبلیغ مراسم آرزوی گرامی مواصلت سراسر عاطفت که گنجایش گیر تحریر خامهٔ دو زبان وتقریر بذیر نامهٔ وسیع البیان نیست مشهود ضمیر منیر گردانیده می آید * مخلص برای آگاهی آن مشفق نقل اشتهار که ملکهٔ معظمه انگلستان بنام جملهٔ والیان و رئیسان وجمهور انام هندوستان جاری فرموده‌اند ملفوف رقیمه الوداد هذا ارسال میدارد * ونیز نقل اشتهار یکه اخلاصمند بشمول اشتهار نامهٔ شاهی جاری میکند ملفوف نامه هذا ابلاغ میدارد * مترصد که اخلاص آما را همواره خواهان مژدهٔ صحت مزاج بودد امتزاج تصور نموده بارقام واطلاع آن مسرور وشادمان میفرموده باشند * زیاده چه برطرازد *

(Sd) Canning

मलिकह मुअज़्ज़महके उर्दू इश्तिहार (१) का तर्जमह.

मक़ाम इलाहाबाद तारीख़ पहिली नोवेम्बर सन् १८५८ ई०.

नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरके पास यह मज़्बूत हुक्म मलिकह मुअ़ज़्ज़महका पहुंचा है, कि जो मुबारकबादीका इश्तिहार हिन्दुस्तानके रईसों, सर्दारों और सब लोगों के नाम उक्त महाराणीने जारी फ़र्माया है, सो प्रसिद्ध कियाजावे.

इश्तिहार.

इज्लास कौंसिलसे मलिकह मुअ़ज़्ज़महका, हिन्दुस्तानके रईसों, सर्दारों और सब लोगोंके नाम.

मलिकह मुअ़ज़्ज़मह विक्टोरिया, जो ईश्वरकी कृपासे मुल्क ग्रेटब्रिटिन और आयर्लैण्ड,

---

(۱) نقل اشتہار ملکہ معظمہ *

مقام الہ آباد تاریخ پہلی نومبر سنہ ۱۸۵۸ ع *

نوّاب گورنر جنرل بہادر کے پاس یہ حکم محکم ملکۂ معظمہ انگلستان کا پہونچا ہے کہ جو اشتہار مبارک ہند کے والی اور سردار اور جمہورا نام کو ملکہ ممدوحہ نے نافذ فرمایا ہے، سو مشتہر کیا جاوے *

اشتہار

ملکہ معظمہ باجلاس کونسل بنام والیان و سرداران اور جمہور انام ملک ہند *

ملکہ معظمہ وکٹوریہ بفضل خدا مملکت گریت برٹن اور آیرلند

और आबादियों, इलाक़ों यूरोप, एशिया, आफ़्रिका, अमेरिका, और आस्ट्रेलएशियाकी बादशाह और धर्मकी सहायककी तरफ़से नीचेकी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ ख़ास व आममें प्रसिद्ध कियाजाता हैः-

ज़ाहिर हो, कि कामिल वजूहातोंसे हमारी इस स्वतन्त्रताको हमने मज़हबी और मुल्की अमीरों तथा आम रिआयाके मुख्तियारोंकी सलाह और इत्तिफ़ाक़से, जो पार्लियमेण्टमें जमाहुए हैं, इस सलाहको थामलिया है, कि मुल्क हिन्दका इन्तिज़ाम, जिसका बन्दोबस्त आजतक अमानतन ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीके सुपुर्द रहा है, अपने अधिकारमें लावें.

पस इस काग़ज़की रू से हम इत्तिला देते, और ज़ाहिर करते हैं, कि उक्त राय की सलाह और इत्तिफ़ाक़से हमने मुल्क मज़कूरका इन्तिज़ाम अपने अधिकारमें लिया; और हम इस काग़ज़की रू से अपनी सम्पूर्ण प्रजाको, जो मुल्क मज़कूरमें मौजूद हैं ताकीदन फ़र्माते हैं, कि हमारी और हमारे वारिसों तथा जानशीनोंकी वफ़ादारी व ताबेदारी करें; और जिस किसीको हमारे नाम और हमारी तरफ़से मुल्कके इन्तिज़ाम करनेके लिये आगेको समय समयपर मुक़र्रर करना मुनासिब समझें, उसकी फ़र्मांबर्दारी किया करें.

जो फ़र्ज़न्द भाग्यवान, इ़ज़्ज़तदार, भरोसेवाला और निज सलाहकार नव्वाब चार्ल्स जान वायकूंट कैनिंग साहिबकी वफ़ादारी, लायक़ी, समझ और होश्यारीके

اور آبادیہاے اور مضافات واقعہ یورپ اور ایشیہ اور افریقا اور امریکا اور اسٹرل ایشیا کی ملکہ اور ظہیر المذہب کی طرفسے خاص وعام میں حسب تفصیل ذیل مشتہر کیاجاتاہے *

واضح ہو کہ بوجوہ کاملہ ہماری اس آزادی کو ہمنے بصلاح اور اتفاق راے امراے ملتی اور ملکی کے اور مختاران عوام جو پارلامنٹ مین فراہم ہوئے مصمم کیاہے کہ ممالک ہند کا انتظام جسکا انصرام آنربل ایسٹ انڈیہ کمپنی کو آجتک امانۃً مفوض رہاہے اپنے اہتمام میں لاویں *

پس اس قرطاس کی روسے ہم اطلاع دیتے اور اعلان فرماتے ہین کہ بصلاح اور اتفاق راے مذکورہ بالا کے ہمنے ملک مذکور کا انتظام اپنے اہتمام میں لایا اور ہم اس قرطاس کی روسے ہماری جمیع رعایا کو جو قلمرو مذکور میں موجود ہیں تاکیداً فرماتے ہیں کہ ہماری اور ہمارے ورثہ اور جانشینوں کی وفاداری اور اطاعت کریں اور جس کسیکو ہمارے نام اور ہماری طرف سے ملک کے انتظام کرنیکے لئے وقت بوقت آیندہ مقرر کرنا مناسب سمجھین اوسکی فرمان برداری کیاکرین *

اور جو فرزند ارجمند معزز اور معتمد علیہ مشیر خاص نواب چارلس جان وائکونٹ کینگ صاحب کی وفاداری اور قابلیت اور فہم اور فراست کے

निस्वत हमको भरोसा और पूरी दिलजमई है; इसलिये साहिब मौसूफ़को हमारी तरफ़ और नामसे मुल्क मज़्कूरका प्रबन्ध करनेके लिये, और उन क़ानून व आईनकी रिआयतसे, जो हमारे वज़ीरुल मुमालिकके ज़रीअहसे उसके पास वक्त बवक्त पहुंचे, अमल करनेके लिये हमारा पहिला क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरल नियत किया.

जो कोई हालमें सर्कार ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनीकी नौकरीमें किसी मुल्की, या फ़ौजी उह्देपर नियत हैं, इस काग़ज़की रू से सबको अपने अपने उह्देपर बहाल और क़ाइम फ़र्माते हैं, परन्तु आगेको हमारी मर्ज़ीके अनुसार रहें, और वे सब उन्हीं आईन और क़ानूनकी रिआयत करते रहें, जो आगे जारी किये जायेंगे.

हिन्दुस्तानके रईसोंको इत्तिला देते हैं, कि जिस किसी क़ौल क़रारको ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनीने आप ज़ाहिर किया, या उनकी इजाज़तसे क़रार पाया, उन सबको हम मंज़ूर और क़बूल करते हैं, और उनको वैसे ही बरतते रहेंगे; और उम्मेद है, कि रईसोंकी तरफ़से भी उसी तरह तामील होती रहेगी.

जो मुल्क अबतक हमारे क़ब्ज़हमें है, उसको बढ़ाना नहीं चाहते हैं, और हमको गवारा नहीं होगा, कि कोई शख़्स हमारे मुल्क या हक़में ज़बरदस्ती दख़्ल करे

نسبت ہمکو اطمینان اور خاطر جمع کلی حاصل ہے اسلئے صاحب موصوف یعنی وائکونت کینگ صاحب کو ممالک مذکور کے انتظام ہماری طرف اور نام سے کرنیکے لئے اور برعایت اون قوانین اور آئین کے جو ہمارے وزیرالممالک کے ذریعہ سے اوس کے پاس وقت بوقت پونچیے عمل کرنیکے لئے ہمارا قایم مقام اول اور ممالک مذکور کا گورنر جنرل مقرر کیا *

اور جو کوئی بالفعل کسی عہدے کیا ملکی کیا فوجی سرکار آنربل ایسٹ انڈیہ کمپنی کی نوکری میں مامور ہے اس قرطاس کی روسے سب کسیکو اپنے عہدے پر بحال اور قایم فرماتے ہیں مگر ہماری مرضی آیندہ مشروط رہے اور وہ سب اونہیں آئین وقوانین کی رعایت کرتے رہیں جو آیندہ نافذ کیجاینگے *

اور والیان ہندکو اطلاع دیتے ہیں کہ جس کسی عہد وپیمان کو خود آنربل ایسٹ انڈیہ کمپنی نے ظہور میں لایا یا اوسکی اجازت سے انعقاد پایا اون سبکو ہم بدیرا اور قبول کرتے ہیں اور انکی ایتابعینہ کرتے رہینگے اور چشمداشت ہے کہ والیوں کی طرف سے بھی اوسیطرح تعمیل ہوتی رہیگی *

جو ملک بالفعل ہمارے قبضہ میں ہے اوسکا زیادہ نہیں چاہتے ہیں ہمکو گوارا نہوگا کہ کوئی شخص ہمارے مملکت یا حقوق میں دخل جبر کرے

और बदला न पावे; और इसी तरह किसीके मुल्क या दूसरोंके हक़ोंमें क़दमबढ़ाना हमारी तरफ़से मंज़ूर न होगा. हिन्दवालोंके हक़, मरतबे और .इज़्ज़तकी क़द्र अपने हक़, मरतबे और .इज़्ज़तकी बराबर समझेंगे, और हम चाहते हैं, कि हिन्दुस्तानके रईसोंको और हमारी प्रजाको भी ऐसी नेकबख़्ती और .इल्म अख़्लाक़की तरक़्क़ी, कि जो मुल्ककी सुलह और नेक इन्तिज़ामीसे पैदा होती है, मिलती रहे.

जो लवाज़िमे अपनी दूसरी रिआ़याकी तरह हमारे ऊपर चाहियें, उन्हीं लवाज़िमोंको रिआ़या मुल्क हिन्दकी निस्बत हम अपने ज़िम्मे वाजिब जानते हैं, और ईश्वरकी कृपासे मित्रता और सच्चाईके साथ लवाज़िमे मज़कूरकी तामील करेंगे.

अगर्चि हमको ईसाई मज़्हबकी सच्चाईकी बाबत् पूरा भरोसा है, और दिलजमई़से जो उससे हुआ करती है, हमको शुक्रगुज़ारीके साथ इक़्रार है, तोभी न तो हमको मनसब (मर्तबह) है, न चाहना, कि किसी रअ़य्यतसे ख़ामख़ाह अपने ऐतक़ादको क़बूल करावें. हमारा हुक्म बादशाहानह और मर्ज़ी है, कि किसी एक मज़्हबको किसी दूसरे मज़्हबपर बडप्पन न दिया जावे, और किसी शख़्सको ऐतक़ाद या मज़्हबी रस्मोंके सबबसे दुःख न दियाजावे, और क़ानूनकी रू से बग़ैर तरफ़दारीके सब रअ़य्यतकी हिफ़ाज़त होती रहे; और हमारी तरफ़से ताकीद होती है, कि कोई आदमी हमारी नौकरीमें, जो मुल्क हिन्दके

اور انتقام نپاوے اور علی هذالقیاس پیش قدمی کسیکی بدست مملکت یا حقوق اوروںکے هماری طرفسے منظور هوگی والیان هند کے حقوق اور مرتبت اور عزت مثل اپنے حقوق اور مرتبت اور عزت کے عزیز سمجھینگے اور همکو آرزو هے که والیان هندکو اور هماری رعایا کو بھی ایسی سعادت اور علم اخلاق کی ترقی هو که ملک کی صلح اور نیک انتظام سے پیدا هوتی هے حاصل هوتی رهے *

جو لوازم بدست اپنی دوسری رعایا کے همارے اوپر عاید هے اونهیں لوازم کو بدست رعایاے ممالک هند کے هم اپنے ذمه واجب جانتے هیں اور خدا کے فضل سے وفاداری اور راستی کے ساتھ لوازم مذکور کی تعمیل کرینگے *

اگرچه همکو مذهب عیسائی کے صدق کی بدست یقین کلی حاصل اور تسلی خاطر سے جو اوس سے هوا کرتی هے همکو ساتھ شکرگذاری کے اعتراف هے توبھی همکو نه منصب هے نه آرزو که کسی رعیت سے خواه مخواه اپنے عقیده کو قبول کراویں همارا حکم شاهانه اور مرضی هے که کسی ایک مذهب کو کسی دوسرے مذهب پر ترجیح دی نجاوے و کسی شخص کو بوجه اعتقاد یا رسمیات مذهبی کے ایذا ندیجاوے اور سب رعیت کو قانون کی رو سے بغیر طرفداری کے محافظت هوتی رهے اور هماری طرفسے تاکید هوتی هے که کوئی متنفس جو هماری نوکری مین ملک هند کے

इंतिज़ामके लिये मुक़र्रर हो, किसी रश्रय्यतके मज़हवी ऐतक़ाद और पूजाकी वावत् दस्तन्दाज़ी न करे, नहीं तो हमारा गुस्सह होगा.

यह भी हमारा हुक्म है, कि जहांतक होसके हमारी सब रश्रय्यत किसी क़ौमकी या किसी मज़हवकी हों, विना छेड़छाड़ और तरफ़दारीके हमारी नौकरीमें ऐसे उह्देपर मुक़र्रर कीजावें, जिसकी ख़िद्मतको तालीम, लियाक़त और दियानतकी नज़रसे वख़ूवी अंजाम देसकें.

हमको वख़ूवी मालूम है, कि हिन्दुस्तानके रईस ज़मीनको, जो उनके बुज़ुर्गोंसे मीरास पहुंची है, वहुत प्यारी जानते हैं, उनकी इस समझपर हम मिहर्वानीकी नज़र रक्खेंगे; और उनके हक़ जो ज़मीनसे तश्रल्लुक़ रखते हैं, सर्कारके हक़ अदा करनेकी शर्तपर हिफ़ाज़तमें रखना मंजूर है; और हमारा हुक्म है, कि क़ानूनकी तज्वीज़ और क़ानूनके जारीहोनेमें क़दीमी हक़ और मुल्क हिन्दके रस्म रवाज और दस्तूरोंपर पूरा लिहाज़ होता रहे.

वाज़े फ़सादी लोगोंने झूठी वात फैलाकर अपने देशियोंको वहकाया, और उनसे चौड़े वग़ावत करवाई और मुल्क हिन्दपर वला और आफ़त पड़ी; और ये हाल सुनकर हम को निहायत अफ़्सोस हुआ, सो हमारी प्रभुता और ज़ोर इसतरह ज़ाहिर हुआ है, कि लड़ाईके मैदानमें वाग़ियोंकी वग़ावत दूर कीगई. अव हमारी मर्ज़ी है, कि उन शख़्सोंके निस्वत

انتظام کے لئے مقرر ہو کسی رعیت کے اعتقاد اور عبادت مذہبی کے بست دست اندازی
نکرے والا ہمارا غضب ہوگا *

اور یہ بھی ہمارا حکم ہے کہ جہاں تک ممکن
ہو ہماری سب رعیت کسی قوم یا مذہب کے ہوں بلا تعرض اور طرفداری ہماری نوکری میں
ایسے عہدے پر مقرر کئے جاویں جسکی خدمت کو بلحاظ تربیت اور قابلیت اور دیانت کے
بخوبی انجام دے سکیں *

ہمکو بخوبی معلوم ہے کہ اہل ہند اون آراضی کو جو
اونکے بزرگوں سے وراثۃً پونہچی ہے بہت عزیز جانتے ہیں اور اونکی اس سمجھہ پر ہم نظر التفات
رکھینگے اور حقوق اونکے جو کہ آراضی سے متعلق ہیں بشرط اداکرنے مطالبہ سرکار کے محفوظ رکھنا
منظور ہے اور ہمارا حکم ہے کہ قانون کی تجویز اور بھی قانون کے نفاذ میں عموماً حقوق
قدیمی اور ملک ہند کے رسم ورواج اور دستوروں پر لحاظ ہوتا رہے *

بعض مفسد لوگ کلام دروغ پھیلا کے ہموطنوں
کو ورغلایا اور اون سے بغاوت فاش کروائی اور ملک ہند پر بلا اور آفت پڑی اور یہ حال سنکے
ہمکو نہایت افسوس ہوا سو ہماری قدرت اور اقتدار اسطرح ظاہر ہوا ہے کہ معرکہ کے میدان
مین بغاوت باغیوں کی دفع کی گئی اب ہماری مرضی ہے کہ اون شخصوں کے نسبت

जो धोखे खाये और फिर तावेदारीमें आना चाहें, उनके अपराध क्षमा करनेसे अपनी दयालुता प्रगट करें.

इस नीयतसे कि ज़ियादह खून न होने पावे और हमारे मुल्क हिन्दमें जल्द अम्न चैन होवे. हमारे क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरलने एक ख़तमें यह उम्मेद दिलाई है, कि जो लोग ग़द्रके बुरे समयमें सर्कारी नुक्सान करनेके अपराधी हुए, उनमेंसे बहुतसोंके अपराध कई मुख्य शर्तें होनेपर क्षमा कियेजावेंगे, और जिनके अपराधोंने उनको दया होनेकी सीमासे बाहिर करदिया है, उन लोगोंपर जो दण्ड ठहरेगा, वह भी ज़ाहिर करवाया है, सो हमारे क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरलकी ऊपर लिखी बातोंको हम मंज़ूर और कुबूल करते हैं, और सिवा इसके नीचे लिखे मुवाफ़िक़ ज़ाहिर फ़र्माते हैं, अर्थात्–

जिनके निस्बत साबित हुआ हो, या आगेको साबित हो, कि वे सर्कार अंग्रेज़ीकी रअ़य्यतके क़त्लमें खुद शामिल हुए, उन लोगोंके सिवा दूसरोंकी बाबत् दयालुता प्रगट कीजावेगी; परन्तु क़त्लमें शामिल रहने वालोंके निस्बत इन्साफ़ इस बातको चाहता है, कि उनपर दया न हो.

जिन लोगोंने जान बूझकर कई क़ातिलोंको पनाह दी हो, या जो लोग बाग़ियोंके सर्दार बने हों, या बहकाने वाले हुए हों, उनके निस्बत केवल यही वादह

جو دھوکا کھائے اور پھر اطاعت میں آنی چاہئے اون کی تقصیرات کے معاف کرنیسے اپنے ترحم کو ظاہر کرین *

اس نیت سے کہ زیادہ خونریزی
نہوئے پاوے اور ہمارے ممالک ہند میں جلد امن چین ہووے ہمارا قایم مقام اور گورنر جنرل نے ایک خط مین یہہ امید دلائی ہے کہ منجملہ اون اشخاص کے جو غدر مکروہ کے ایام مین جرم مضر سرکار کے مرتکب ہوئے اکثر کی تقصیرات بشرط بعض شرایط مخصوصہ کے معاف کیجاینگی اور جو سزا اون لوگون پر عاید ہوگی جنکی تقصیرات نے احاطہ ترحم سے اونکو باہر کیاہے اوسکابھی اعلان کروایا ہے چنانچہ ہمارے قایم مقام اور گورنر جنرل کے عمل مذکور کو ہم پذیرا اور قبول کرتے ہین اور علاوہ اس کے حسب ذیل اعلان فرماتے ہیں یعنی *
سواے اون لوگوںکے جنکی نسبت ثابت ہوا ہو یا آیندہ ثابت ہوکہ وے رعیت سرکار انگریزی کے قتل میں بذاتہٖ شریک ہوئے دوسروںکی نسبت ترحم ظاہر کیاجایگا مگر نسبت شرکاء قتل کے انصاف مقتضی اسبات کا ہے کہ اون پر ترحم نہو *
جن لوگون نے جان بوجھکے قاتلوں کو پناہ دی ہو یا باغیوںکے سردار ہوئے ہوں یا ترغیب دینے والے ہوئے ہوں اونکی نسبت صرف یہی وعدہ

हो सक्ता है, कि उनको जीवदान दिया जावे; परन्तु ऐसे लोगोंकी सज़ाकी तज्वीज़में उन सब बातोंपर जिनके भरोसेपर वे अपनी तावेदारीसे फिरगये, फिर ग़ौर किया जायेगा; और उन लोगोंके निस्बत जो वे सोचे फ़सादियोंकी झूठी बातोंपर भरोसा करके अपराधी हुए, बड़ी रिआयत ज़ाहिर कीजायेगी.

दूसरे जो सर्कारसे फिरेहुए हथियारबंद हैं, उन सब लोगोंसे वादह होता है, कि उनके अपराध सर्कारके निस्बत और हमारे राज्य व दरजेकी निस्बत बिना शर्त मुआफ़ किये और भुलादिये जायेंगे; परन्तु वे अपने अपने घरोंको जायें और अपने अपने पेशह सुलह व सहूलियतमें हाथ लगावें.

हमारी बादशाहानह मर्ज़ी यह भी है, कि रहम और मुआफ़ीकी शर्तें उन्हीं सबों से तअ़ल्लुक़ रक्खेंगी, जो तारीख़ १ जैन्युअरी सन् १८५९ .ई० के पहिले ऊपर लिखी शर्तोंके मुवाफ़िक़ अ़मल करें.

जबकि मुल्कमें ईश्वरकी कृपासे फिर अम्नचैन होवे, तो चित्त मनसे हमारी इच्छा है, कि मुल्क हिन्दमें सनतकारीकी मज़बूती होवे, और प्रजाके फ़ाइदहके वास्ते कई काम, जैसा कि सड़क व नहर वग़ैरह बनें; और मुल्कका इंतिज़ाम हमारी ऊपर लिखे मुल्ककी प्रजाके फ़ाइदहकी नज़रसे होता रहे. रअ़य्यतकी वे फ़िक्रीसे हमारी ताक़त

ہوسکتا ہے کہ اونکی جان بخشی ہووے لیکن ایسے لوگونکی سزا کی تجویز میں اون سب
احوال پر جنکے اعتبار سے وے اپنی اطاعت سے پھرگئے غور کیا جایگا اور اون لوگون کے
نسبت جو وے سوچے مفسدونکی جھوٹی باتون پر اعتبار کرکے مجرم ہوئے بڑی رعایت ظاہر
کیجایگی *

دوسرے اور سبھونکو جو سرکارکی مخالفت میں
ہتھیار بند ہیں وعدہ ہوتا ہے کہ اونکی تقصیر سرکار کے نسبت اور ہماری سلطنت اور مرتبت
کے نسبت بلا شرط معاف اور عفو اور فراموش کیجائیگی مگر وے اپنے اپنے گھروںمیں جائیں
اور اپنے اپنے پیشہ صلح و سداد میں ہاتھ لگاویں *

ہماری یہہ بہی مرضی شاہانہ ہے کہ رحم
اور عفوکی یہہ شرایط آنہیں سبہون سے متعلق ہونگی جو قبل تاریخ پہلی جنوری سنہ ۱۸۵۹ع
کے شرایط مذکور کے مطابق عمل کریں *

جب ملک میں خدا کے فضل سے پھر امن چین
ہووے تو دل و جان ہماری آرزو ہے کہ ملک ہند میں صنعتکاری کی تقویت ہووے اور
واسطہ خلایق کے لئے کارہا مثل تیاری سڑک و نہر وغیرہ مرتب ہوویں اور ملک کا انتظام بنظر
افادہ ہماری رعایاے باشندہ ملک مذکور کے ہوتا رہے رعیت کے فراغبالی سے ہمارا اقتدار

और उनकी रज़ामंदीसे हमारी बेफ़िक्री है, और उनकी शुक्रगुज़ारी हमारे लिये पूरा बदला है; और सर्व शक्तिमान जग्दीश्वर हमको और हमारे मातह्त हाकिमोंको ऐसी ताक़त देवे, जो दुनियाको फ़ाइदह पहुंचानेके वास्ते हमारे इन्हीं मत्लबोंको पूरा करें.

इश्तिहार.

जनाब नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुर हिन्द, मक़ाम इलाहाबाद,
तारीख़ पहिली नोवेम्बर सन् १८५८ .ई०, फ़ारिन डिपार्टमेण्ट.

ज़ाहिर हो, कि मलिकह मुअ़ज़्ज़महने अपनी मर्ज़ी मुबारकको इस तरह ज़ाहिर किया है, कि मलिकह मौसूफ़ह अंग्रेज़ी मुल्क, जो हिन्दुस्तानमें है, उसके प्रबन्ध को अपने अधिकारमें लावें, सो जनाब मौसूफ़हके क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरल बहादुर ख़ास व आ़मको इत्तिला देते हैं, कि आजकी तारीख़से मुल्क हिन्दके प्रबन्ध सम्बन्धी कुल काम मलिकह मौसूफ़हके प्रसिद्ध नामसे जारी कियेजायेंगे.

आजकी तारीख़से हर फ़िर्के और क़ौमके लोग, जो ऑनरेबल् ईस्ट इंडिया कंपनीके अ़हदमें मुत्तफ़िक़ होकर इंग्लिस्तानकी शान और ताक़त बरक़रार रखनेमें

اور اونکی قناعت سے ہماری بے خطری حاصل اور اونکی شکرگذاری ہمارے لئے پورا صلہ ہے اور خداے قادر ہمکو اور ہمارے حکام ماتحت کو ایسی قدرت دیوے کہ واسطے افادہ خلایق کے انہیں ہماری مرادونکو تمام میں پہنچاویں *

اشتہار *

جناب نواب گورنر جنرل بہادر ہند مقام الہ آباد
تاریخ پہلی نومبر سنہ ۱۸۵۸ ع فارن ڈپارٹمنٹ *

واضح ہو کہ ملکہ معظمہ نے اپنی مرضی مبارک کو اسطرح ظاہر کیا ہے کہ ملکہ ممدوحہ قلمرو انگریزی واقعہ ہند کے انتظام کو اپنے اہتمام میں لاوین پس جناب ممدوحہ کا قایم مقام اور گورنر جنرل بہادر خاص و عام کو اطلاع دیتے ہیں کہ جملہ اعمال متعلقہ انتظام ملک ہند آجکی تاریخ سے معرفت انہیں کے نام نامی سے جاری کئے جاینگے *

آجکی تاریخ سے ہر فرقہ اور قوم کے لوگ جو انربل ایسٹ انڈیا کمپنی کے عہد میں متفق ہو کر انگلستان کی شان اور اقتدار برقرار رکھنے مین

कोशिश करनेवाले हुए; आगेसे मलिकह मुअज़्ज़महके तावेदार ख़याल कियेजावेंगे.

नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरकी तरफ़से सब लोगोंको फ़हमाइश कीजाती है, कि हर कोई अपने रुत्वेके मुवाफ़िक़ मौक़ेपर जहांतक होसके अपने दिल और जानसे मलिकह मौसूफ़हके हुक्म और मर्ज़ीके पूराकरनेमें, जो इश्तिहार शाहीमें दर्ज है, मदद करें.

मुल्क हिन्दमें मलिकह मुअज़्ज़महकी करोड़ों रिआया हिन्दुस्तानी मौजूद हैं, इन सबपर मलिकह मुअज़्ज़महकी वफ़ादारी और तावेदारी लाज़िम है, सो नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुर मलिकह मुअज़्ज़महके हुक्मपर सबसे हाल और आइंदह रहम और मेहरकी वफ़ा पूरी वैसीही चाहेंगे.

नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरके हुक्मसे जारी हुआ.

(अंग्रेज़ीमें) दस्तख़त-

सेक्रेटरी गवर्मेएट हिन्द फ़ारिन डिपार्टमेएट.

मलिकह मुअज़्ज़महके गवर्मेएट आफ़ इण्डियाका प्रवन्ध अपने तह्तमें लेनेपर आम तौरसे ख़ुशी ज़ाहिर होनेके बाद महाराणा स्वरूपसिंहने एक मुनासिब कार्रवाई यह की, कि मुबारकबादीका एक ख़रीतह मलिकह मुअज़्ज़महके नाम भेजा, जिसका तर्जमह इसतरह पर है:-

---

ساعي هووے ایندہ سے ملکہ معظمہ کے تابع متصور ہونگے *

نواب گورنر جنرل بہادر کیطرف سے سب لوگونکو فہمایش کی جاتی ہے کہ سب کوئی موافق اپنے رتبہ کے موقع پر حتی المقدور اپنے دل و جان سے ملکہ ممدوحہ کے حکم اور مرضی مندرجہ اشتہار شاہی کے انجام دینے کی اعانت کریں *

ملک ہند میں ملکہ معظمہ کی کروڑ ہا رعایا ہے ہندوستانی موجود ہیں ان سب پر ملکہ معظمہ کی وفاداری اور اطاعت واجب پس سب سے حال اور ایندہ نواب گورنر جنرل بہادر ملکہ معظمہ کے حکم پر رحم اور رحمت کی ایفاء پاورا بعینہ طلب کرینگے *

حسب الحکم نواب گورنر جنرل بہادر ہند جاری ہوا *

(انگریزی میں) دستخط-

سکرتری گورنمنٹ ہند فارن ڈپارٹمنٹ *

महाराणाके ख़रीतहका तर्जमह.

ख़ैरख्वाहीकी .इज़्ज़त और सलामके बाद-

शाही इश्तिहारमें जो बात ज़ाहिर कीगई, कि इंग्लिस्तानकी मलिकह हम लोगों पर हुकूमत करेगी, इससे इस अंधेरी ज़मीनपर रौशनी और खुशी फैली है, जिस तरह कि रातको चांद ऊगता है, मेरे दिलमें ख़याल भरे हैं, उन्हींके सबब मैं आपको अपनी ख़ैरख्वाहीका ख़िराज जल्दीके साथ अदा करता हूं, और खुद ब खुद जो मेरी खुशी ज़ाहिर होती है, उसके साथ मैं इस बातका शुक्रियह शामिल करना चाहता हूं, कि आप अपनी हिन्दुस्तानी रिआयापर कैसी नज़र रखती हैं, जो इस बातसे ज़ाहिर होता है, कि आपने हम सबोंको खुद अपनी ही हिफ़ाज़तमें लिया है, और इस तौरपर उस बंधनको निकालदिया, जोकि कुछ दिनों पहिले बीचमें पड़ा हुआ था, और मुहब्बतके उस सिल्सिलेको मज़्बूत करदिया, जिससे कि मेरा छोटे दरजहका तख़्त नज़्दीक लायागया, और आपके तख़्तके साथ इस तौरसे बांधदियागया, कि जुदा न हो सके.

हमारी बिह्तरीके लिये जो आपको लिहाज़ है उसके इस सुबूतकी खुशी, जो मैं भरोसा करता हूं, कि हिन्दुस्तानके तमाम रईस वैसेही मालूम करेंगे, जैसे कि मुझे इस बातसे ज़ियादह होती है, कि आपके शाही इश्तिहारमें ऐसी मिहर्बानीसे याद दिलाया-गया है, कि आप हिन्दुस्तानके रईसोंके हुकूक़, रुत्बह, इज़्ज़त और मज़्हबपर वैसा ही लिहाज़ रक्खेंगी, जैसाकि वे खुद आपके ही हैं. मेरा मत्लब यह नहीं है, कि खुद मेरे संतोषके वास्ते यह इत्मीनान ज़रूर था, क्योंकि मुझे हमेशहसे इंग्लिस्तानकी मलिकह की बड़ाईपर भरोसा है, जो एक बड़ी ताक़तवर क़ौमकी हाकिम होनेके सबब अपनी रक्षामें लियेहुए रईसोंकी तरफ़ अपने उदार चित्तके मन्शाको पूरा करसक्ती हैं.

मैं बड़े ग़द्रके तै कियेजानेपर अपना धन्यवाद देना चाहता हूं, जो ग़द्र कि इस मुल्कपर एक बदला लेनेवाले अवतारके समान होगया, मुझे उस नतीजेके बारेमें कुछ भी संदेह न था, जो मेरी उम्मेद और दुआके अनुसार पूरा हुआ है; मुझे इस

बातसे भी वैसीही खुशी हुई, जैसाकि फ़र्ज़ मालूम होता था, कि ख़तरेके वक्तपर अपने बहुतेरे मैत्री रखने वाले राजाओंको तसल्ली दी, और जब वे लोग अंग्रेज़ी फ़ौज की मददसे अलग होगये और मेरी सलाह मांगी, तब मैंने उनको वे फ़ायदे याद दिलाये, जो हम लोगोंको सर्कार अंग्रेज़ीकी हिफ़ाज़तसे मिले थे, कि आपके तख़्त और खुद आपकी तरफ़ अपनी खैरख्वाहीमें मज्बूतीके साथ मेरे शामिल होवें. इन सब लोगोंने उसीके मुताबिक़ तमाम मुश्किलातमें मज्बूत रहकर अपनी खैरख्वाही दिखलाई है, लेकिन् बहुत थोड़ोंको यह नसीब हुआ, जैसेकि मेरा खुश नसीब हुआ है, कि अपनी न बदलनेवाली दोस्ती अंग्रेज़ी हुकूमतकी तरफ़ अंग्रेज़ी सिपाहियोंकी मदद और हिफ़ाज़त करनेसे दिखलाई जबकि वे मेरे इलाक़हमें आकर ठहरे थे, जिस वक्त कि वे बाग़ी सिपाहियोंसे फंसा दियेगये थे.

जो अच्छी तब्दीलात कि गवर्मेण्टमें अब कीगई हैं, उनसे हिन्दुस्तानको, जो अभीतक हालके ग़द्रकी तक्लीफ़से बिल्कुल नहीं छुट गया है, वैसा ही असर हो जैसे कि आकाशसे वृष्टि होकर ज़मीनकी आग बुझाकर उसको तरो ताज़ा करे. जो फ़ायदे कि आप लाखों आदमियोंको उस कामसे पहुंचावेंगी, उसके ख़यालसे खुद आपके दिलको खुशी बढ़े और उसपर विचार करनेसे आपके शाही खानदानके तमाम लोगोंके दिलमें खुशी और हिफ़ाज़त करनेका ख़याल पैदा करें. यह बड़ी उम्मेद और दुआ आपके ईमान्दार और बहुत खैरख्वाह मुलाज़िमकी है.

उदयपुरकी राज्य मुद्रा.

इस बग़ावतका हाल यहांपर जितना मुनासिब था, लिखकर ख़त्म कियागया है. इस विषयमें मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) यह राय है, कि राजपूतानहकी फ़ौजोंमें यदि राजपूतानहके रहनेवाले लोग भरती कियेजावें, तो ऐसी बग़ावत हर्गिज़ पैदा न हो; लेकिन् शर्त यह है, कि सिपाहियोंमें राजपूत, मीणा, भील, गूजर व मेर वग़ैरह क़ौमोंके लोग हों, और कुल अफ़्सर राजपूत क़ौमसे हों. सिवा इसके उनपर राजा लोगोंकी हुकूमत का भी पूरा पूरा असर रहे. तवारीख़ी हालातसे साबित है, कि राजपूतानहके राजपूत क़दीमसे बहादुर, ईमान्दार और इह्सानको मानने वाले हैं.

ऊपर लिखी हुई बग़ावतकी खैरख्वाहीका नतीजह जैसाकि हिन्दुस्तानकी दूसरी रियासतोंको मिला वैसा उदयपुरको नहीं मिला. महाराणाके लिये सिर्फ़ ख़िल्अ़त और उनके

मातहत जागीरदार बेदलाके राव बख़्तसिंह चहुवानको एक तलवार गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे मिली; लेकिन् इसमें गवर्मेण्टका दोष नहीं है. इसका अव्वल सबब तो पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ और एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी आपसकी ना इत्तिफ़ाक़ी, और दूसरा रियासती बड़े अह्लकारोंका विरोध था.

विक्रमी १९१३ कार्तिक कृष्ण ८ [हि० १२७३ ता० २१ सफ़र = .ई० १८५६ ता० २१ ऑक्टोबर] को चारण आढा कृष्णसिंह (१) के मरजानेपर उसका भतीजा रामलाल गोद लियाजाकर उसकी जगह क़ाइम कियागया, जिसको विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० १० नोवेम्बर] को महाराणाने हाथी, ख़िल्अ़त और मोतियोंकी कंठी देकर गोवर्द्धनविलाससे उदयपुरमें उसके मकानपर भेजा.

देलवाड़ाके राज वैरीशालके कोई पुत्र न होनेके कारण सादड़ी राज कीर्तिसिंहके दूसरे पुत्र फ़त्हसिंहको विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० ता० १० रबीउस्सानी = .ई० ता० ९ डिसेम्बर] के दिन गोद लियेजानेका नज़्रानह लेकर महाराणाने उसे देलवाड़ा राजके पुत्रकी बैठकपर बिठाया. इस गोदनशीनीके लिये गोगूंदाके राजने अपने पोतेके वास्ते बहुत कुछ कोशिश की. लेकिन् महाराणा उससे नाराज़ थे, और सादड़ी व देलवाड़ा वाले दोनों सर्दार उनके दिली फ़र्मांबर्दार थे, इसलिये गोगूंदा वाले महरूम रहे.

विक्रमी १९१४ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १२७३ ता० ८ शव्वाल = .ई० १८५७ ता० १ जून] को गोवर्द्धनविलासके महल और गोवर्द्धनसागर तालाव, पशुपतेश्वर महादेव तथा ऐजनस्वरूपबिहारीके मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई (२). विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १२७४ ता० १४ मुहर्रम = .ई० ता० ४ सेप्टेम्बर] को नयपालके चौतरिया (राजवी) गुरुप्रसादशाहके बेटे हिम्मतबहादुरशाह और दलप्रकाशशाह दोनों नयपालके वज़ीर जंगबहादुरसे मुख़ालफ़त होजानेके कारण नयपालसे निकलकर यहां आये, और कुछ दिनों उदयपुरमें रहे; अब ये लोग नयपालकी सईदपर रहते और उसी रियासतसे पेन्शन पाते हैं. विक्रमी १९१५ द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२७४ ता० २५ शव्वाल = .ई० १८५८ ता० ८ जून] को जोधपुरके महाराजाकी फ़ौज और अंग्रेज़ी रिसालह मेवाड़में कोठारिया मक़ामपर आये, और ज़ाहिर किया, कि यहांके रावत्ने आउवाके ठाकुर कुशालसिंहको पनाहमें

---

(१) इसके वंशवाले सीसोदिया राजपूतोंके सिवा दूसरे राजपूतोंका दान नहीं लेते, क्योंकि महाराणा भीमसिंह दूसरेने कृष्णसिंहको सीसोदा गांव देकर अजाची करदिया था.

(२) गोवर्द्धनविलास उदयपुर शहरसे दक्षिणकी तरफ़ दो मीलके फ़ासिलहपर है, जहां उपरोक्त महल, तालाव, और दोनों मन्दिर बने हुए हैं.

रक्खा है. यह हाल सुनकर कोठारियामें रावत् जोधसिंहके बहुतसे रिश्तहदार एकट्ठे होगये, लेकिन् उक्त रावत्ने फ़ौजके आते ही अंग्रेज़ी अफ्सरको कोठारियाका क़िला दिखलादिया, कि यहां कुशालसिंह नहीं है, इससे सन्देह दूर होकर किसी तरहका फ़साद न होने पाया, और फ़ौज वापस चलीगई.

विक्रमी १९१६ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १२७५ ता० २१ रमज़ान = ई० १८५९ ता० २५ एप्रिल] को उस हरिमन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई, जो महाराणाकी माता बीकानेरीने पीछोला तालाबके किनारे जलनिवास महलके सामने बनवाया था. विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० १ शव्वाल = ई० ता० ५ मई] को कायस्थ मुन्शी गुल्लू तीरोलीके जागीरदार राणावत केसरीसिंहको गिरिफ्तार करके महाराणाकी ख़िद्मतमें लाया. यह जागीरदार महाराणाकी शिकायत करनेवाले सर्दारोंका तरफ़दार था, और शैखावाटीकी तरफ़के डाकू राजपूतोंको पनाह देकर उनसे मेवाड़में डाकाज़नी व लूट खसोट करवाता था. उक्त मुन्शीने बड़ी बहादुरीके साथ इस जागीरदारको गिरिफ्तार करके डाकुओंसे मुक़ाबलह किया, जिसमें कई डाकू लोग मारेगये, और उनका माल अस्बाब व घोड़ियां वग़ैरह छीन लाया. इस मुक़ाबलहमें खुद मुन्शी गुल्लू भी सख़्त ज़ख़्मी हुआ, जिसके इन्आममें महाराणाने उसको एक गांव और ख़िल्अ़त वग़ैरह बख़्शा. यह कायस्थ बड़ा दिलेर, बहादुर और सिपाहियानह ढंगका पुराने नौकरोंमेंसे है. महाराणा ऐसे कामोंपर अक्सर इसी शख़्सको भेजते रहे. अगर्चि अब यह बूढ़ा होगया है, परन्तु अपनी दिलेरी और बहादुरीमें कम नहीं है. यह ज़ियादह जायदाद और इज़्ज़त पानेका मुस्तहक़ था, लेकिन् ज़बांदराज़ीकी आदत और क़िस्मतकी ख़ूबीसे नाउम्मेद रहा, तोभी महाराणा इसकी बहुत इज़्ज़त और ख़ातिर रखते हैं. विक्रमी वैशाख शुक्ल १४ [हि० ता० ११ शव्वाल = ई० ता० १५ मई] को महता शेरसिंहसे सवातीन लाख रुपया दण्ड लियागया. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ७ [हि० ता० २० शव्वाल = ई० ता० २४ मई] को महाराणाका नज़्दीकी रिश्तहदार बागौरका महाराज शेरसिंह अपनी जागीरके गांवमें इन्तिक़ाल करगया, और विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २० जून] को शेरसिंहका पोता शम्भुसिंह मए अपने चचा समरथसिंह, शक्तिसिंह व सोहनसिंहके उदयपुरमें आया. महाराणाने कुछ अर्सह पहिले शेरसिंहपर सख़्तीका बर्ताव किया, जिससे वह नाराज़ होकर अपनी जागीर बागौरको चलागया था; इसवक़्त उसका इन्तिक़ाल होजाने बाद महाराणाने उसके कुटुम्बियोंको उदयपुरमें बुलालिया, और शेरसिंहके बड़े पुत्र शार्दूलसिंहके बेटे शम्भुसिंहको लाइक़ व हक़दार जानकर

जो पहिले बागौर और मेवाड़की हक़दारीसे ख़ारिज करदियागया था, अपने अगले हुक्मको मौकूफ़ रखकर उसे बागौरका वारिस बनाया. विक्रमी १९१६ आश्विन शुक्ल १२ [हि० १२७६ ता० ११ रबीउल्अव्वल = .ई० १८५९ ता० ८ ऑक्टोबर] को महता गोकुलचन्द प्रधानेके कामसे बर्ख़ास्त कियागया. यह शख़्स पुराने ढंगका सीधा सादा और अपने मालिकका ख़ैरख़्वाह व मज़्हबका पाबन्द था. इसके प्रधानेमें महता गोपालदासकी सलाह और कायस्थ मथुरादासकी कारगुज़ारीसे काम चलता था; और ग़द्रके ज़मानहकी कार्रवाई उम्दह होनेके सबब यह नेकनाम हुआ. विक्रमी कार्तिक कृष्ण २ [हि० ता० १६ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] के दिन महाराणाने कोठारी केसरीसिंहको प्रधानेका ख़िल्अ़त बख़्शा, और उसे हाथीपर चढ़ाकर काका महाराज दलसिंहके साथ उसके मकानपर भेजा. यह शख़्स शुरू हीसे महाराणाके एतिबारी नौकरोंमें था; इसने रियासती जमा ख़र्चके अ़लावह और भी कई दूसरे कामोंका उम्दह बन्दोबस्त किया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ रबीउस्सानी = .ई० ता० १४ नोवेम्बर] के दिन कोठारी केसरीसिंह अडाणी व छबा वगैरह .इज़्ज़तका लवाज़मह पाकर बेदलाके राव बख़्तसिंह समेत नीमच की छावनीको इस मत्लबसे भेजागया, कि ये दोनों शख़्स गवर्नर जेनरलके दर्बारमें आगरे जावें; लेकिन् पोलिटिकल एजेण्टने ज़ुरूरत न समझकर उन्हें नीमचसे ही वापस लौटादिया. विक्रमी माघ शुक्ल ६ [हि० ता० ५ रजब = ई० १८६० ता० २९ जैन्युअरी] के दिन देलवाड़ाके राज फ़त्हसिंह बैरीशालोतको तलवार बंधाईगई, और इसी दिन महाराज चन्दसिंहको मए फ़ौजके जहाज़पुरकी तरफ़ रवानह किया, क्योंकि वहांके मीनोंने उन दिनों बड़ा ग़द्र मचा रक्खा था. महाराज चन्दसिंह महाराणा अरिसिंह तीसरेके ख़वासवालोंमेंसे था, और महाराणा उसपर मिहर्बानी रखते थे. इसने उदयपुरसे रवानह होकर सींगोलीके जागीरदार बाबा मानसिंहके ठिकानेपर क़ब्ज़ह करलिया. मानसिंह वहांसे निकलकर शेख़ावाटीमें पहुंचा, जहांसे ढूंढाड़ .इलाक़हके दो सौ या तीन सौ राजपूतोंको अपने साथ लेकर वापस मेवाड़में आया और लूटमार करनेके इरादहसे मांडलगढ़ ज़िलेके ग्राम दाणियांकी कोटड़ीमें घुसा; लेकिन् वहांके भोमिया कान्हावत गोपालसिंह, महताबसिंह, हमीरसिंह, बलवन्तसिंह, सूरजपुराके रौड़सिंह, इन्द्रपुराके राणावत रामसिंह, जशवन्तपुराके राठोड़ शेरसिंह, मेरे (कविराजा श्यामलदासके) चचा खुमाणसिंह, और छोटेभाई ब्रजलाल वगैरहने उसका मुक़ाबलह किया, जिसमें मानसिंहके दो तीन आदमियोंके सिर काटेजाने और इसी क़द्र आदमी व छः घोड़ियां पकड़लीजानेके बाद उसे अपने हमराहियों समेत पीछा भागना पड़ा. इस मुक़ाबलहमें गोपालसिंह, बाबा मानसिंहसे बड़ी बहादुरीके

साथ लड़कर बन्दूक़के छर्रोंसे ज़ख़्मी हुआ, जिसको महाराणाने जागीरमें कुछ ज़मीन, और ऊपर लिखेहुए दूसरे लोगोंको, जो मुक़ाबलह करनेमें शरीक थे, ख़िल्अ़त वग़ैरह दिये. कुछ दिनों बाद फिर मानसिंहने पर्गनह भीलवाड़ाके गांव पुरमें डाका डाला, और वहांके दो तीन महाजनोंका माल अस्बाब लूट लेगया. महाराणाका इन्तिक़ाल होजानेके बाद पंच सर्दारोंने उसकी जागीर सींगोली उसे वापस दिलादी.

महाराज चन्दसिंहने फ़ौज समेत खैराड़में पहुंचकर पर्गनह जहाज़पुरके गाड़ोली और लुहारी वग़ैरह गांवोंके मीनोंको ख़ूब सज़ा दी, उनके गांव लूटलेनेके अ़लावह पांच या छः आदमियोंको तोपसे उड़वादिया, और बहुतसे मीना लोगोंको गिरिफ़्तार करके हमेशह उनकी हाज़िरी लीजानेका बन्दोबस्त किया, जो उस समयसे अबतक बराबर जारी चला-आता है. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १ [हि॰ ता॰ १४ रजब = .ई॰ ता॰ ७ फ़ेब्रुअरी] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल ईडन साहिब मए मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट शावर्स साहिब व जयपुरके पोलिटिकल एजेण्ट टेलर साहिब वग़ैरहके उदयपुरमें आये, और नीबाहेड़ाके हिसाबी मुआमलह व सती होना बन्द करनेके मुक़द्दमहमें बहुत कुछ बात-चीत हुई. जब महाराणाने चौगानके दरीख़ानहमें उक्त साहिबोंकी मुलाक़ात बाज़दीदका दर्बार किया और हाथी लड़ाये, उसवक़्त अंग्रेज़ी रिसालहके एक सिक्ख सवारसे महाराज दलसिंहके चचाके बेटे भाई अजीतसिंहकी कुछ तक़ार होगई, और अजीतसिंह उस सवारपर तलवारका वार करके शहरमें चलाआया. इसपर तमाम रिसालह बदला लेनेको तय्यार होगया, लेकिन् जोकि अजीतसिंह महाराणाका नज़्दीकी रिश्तहदार था, इस सबबसे ईडन साहिबने इस भड़की हुई आगको अपने ठंढे वचनोंसे बुझादिया. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ९ [हि॰ ता॰ २२ रजब = .ई॰ ता॰ १५ फ़ेब्रुअरी] को उक्त साहिब लोग उदयपुरसे वापस रवानह होगये.

विक्रमी १९१७ वैशाख कृष्ण १३ [हि॰ १२७६ ता॰ २६ रमज़ान = .ई॰ १८६० ता॰ १९ एप्रिल] को कप्तान शावर्स साहिबकी एवज़ मेजर टेलर साहिब मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट नियत होकर उदयपुरमें आये, और कई मुआमलोंमें रियासतसे बहुत कुछ बहस रही, लेकिन् कोई बात टेलर साहिबकी सलाहके मुताबिक़ तै न पाई, जिससे वह रंजीदह होकर वापस चलेगये. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि॰ ता॰ ७ ज़िल्क़ाद = .ई॰ ता॰ २९ मई] को आमेटके रावत् चत्रसिंह पृथ्वीसिंहोतको तलवार बंधाईगई.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि॰ १२७७ ता॰ २१ रबीउ़स्सानी = .ई॰ ता॰ ५ नोवेम्बर] को बीजोलियाके राव सवाई गोविन्ददासको तलवार बंधाईगई. इस मुक़द्दमहका हाल इस तरहपर है, कि बीजोलियाका राव सवाई केशवदास पंवार

मेवाड़के अव्वल दरजहके सर्दारोंमें छठे नम्बरका जागीरदार था, उसके आमेटके रावत् प्रतापसिंहकी बेटीसे विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = .ई० १७९९] में शिवसिंह पैदा हुआ, जिसके गिरधरदास, नाथसिंह और गोविन्ददास तीन बेटे हुए. गिरधरदास, जिसका विवाह भींडरके महाराज ज़ोरावरसिंहकी बेटीके साथ हुआ था, और गोविन्ददास ये दोनों तो चावंडके रावत् सर्दारसिंहकी बेटीसे और नाथसिंह बेगूंके रावत् प्रतापसिंहकी बेटीसे पैदा हुआ. परन्तु राव केशवदासकी मौजूदगीहीमें पहिले तो कुंवर शिवसिंहका इन्तिकाल होगया और बाद उसके गिरधरदास भी गुज़र गया, इसलिये इन दोनोंके बाद केशवदासके ठिकानेका हक़दार नाथसिंह रहा, लेकिन् आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी और गिरधरदास व गोविन्ददासके एक मासे उत्पन्न होनेके सबब राव केशवदासकी मन्ज़ूरीसे गिरधरदासकी स्त्री शक्तावतने अपने पतिका दत्तक पुत्र गोविन्ददासको बनालिया; और विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = .ई० १८४७] में राव केशवदासकी कई अर्ज़ियां महाराणाकी ख़िद्मतमें गुज़रीं, जिनका मत्लब यह था, कि गिरधरदास और उसका बेटा मरगया, और उसका इल्ज़ाम नाथसिंहपर आया, इसलिये मैं अपने छोटे पोते गोविन्ददासको गिरधरदासका वारिस और मेरा हक़दार बनानेके लिये हुज़ूरमें भेजताहूं, इसको हुज़ूर भी मन्ज़ूर फ़र्मावें. इस बातकी कोशिश और अर्ज़ मारूज़में भदेसरका रावत् हमीरसिंह, सियाणेका पंवार देवीसिंह और सेठ ज़ोरावरमल्ल थे. महाराणाने बीस हज़ार रुपया नज़्रानह लेकर गोविन्ददासको गिरधरदासका दत्तक और राव केशवदासका वारिस मन्ज़ूर करलिया, और नाथसिंहको सोलह सौ रुपया सालियानह आमदनीकी जागीरका मुस्तहक़ ठहराया. इस बारेमें जो तह्रीरें हुईं, उनकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं:-

महाराणाका रुक़ा सेठ ज़ोरावर-
मल्लके नाम.

॥ श्रीरामजी.

अप्रंच ॥ बीजोल्या राव सवाई केसोदासजीरा बेटा गोमदसीगजीने पाटवी बेटा कीदा, सो बारे नजराणारा रुपीया २००००) बीस हजार ठेरा, जीरो पत थे ज्मापात्रसु कीजो, थारा रुपीया करार मुजब पुगाए देगा, अर कदाचीत करार मुजब नही पुगे, तो अठासु ताकीद मेल रुपीया भराए देवाएगा; संवत १९०४ पोस सुद १५.

रा सावण वीद १ थी, सो रुपया ३००) तीन से तो वीजोल्याकी छटुंद म्हे ज्मा करावेगा अर रुप्या १३००) तेरासे थने दीदा जावेगा, तीम्हे ६५०) तो सीयालुका पोस सुदी १५ ने, अर रुपया ६५०) ऊनालुका असाड सुद १५ ने दीदा जावेगा. ईम्हे कसर पाडेगा, तो थारो पाटवीपणो सावत वेगा, प्रवानगी प्रोथ सामनाथ, संबत् १९०६ ब्पें फागण वीद ८ सोमे.
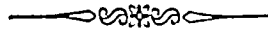
ये हुक्म एह्काम तो होचुके, लेकिन् नाथसिंह और उसके ननिहाल याने बेगूं के रावत् महासिंहकी तरफ़से अर्ज़ मारूज़ होती रही; और इस मुक़द्दमहमें भी आमेटके मुआमलहकी तरह दो फ़िर्के होगये, याने गोविन्ददासके मददगार सलूंबर, भींडर, भैंसरोड़, और भदेसर, और नाथसिंहके मददगार बेगूं व अठाणाके सर्दार बनगये; लेकिन् राव केशवदासकी मौजूदगीमें इन लोगोंको तक्रारका कोई मौक़ा न मिला. विक्रमी १९१३ [हि० १२७३ = ई० १८५६] में जब राव केशवदास गुज़रगया, और गोविन्ददास, जो वहां मौजूद था, ठिकानेका मालिक बना, तब नाथसिंह अपनी ननिहाल बेगूंसे मदद लेकर वीजोलियाके पर्गनहको तबाह और बर्बाद करने लगा, जिससे वहांकी कुल प्रजा घबराकर भाग निकली, और कभी कभी ख़फ़ीफ़ मुक़ाबले भी होते रहे. इस बखेड़ेमें गोविन्ददासको भैंसरोड़की जमइयतसे हमेशह मदद मिलती रही, बल्कि भैंसरोड़का रावत् अमरसिंह उसके लिये हरएक मुआमलहमें हज़ारों रुपया ख़र्च करता रहा, और तर्फ़ैनकी कई अर्ज़ियां उदयपुरमें पेश होती रहीं. आख़रकार विक्रमी १९१४ माघ शुक्ल २ [हि० १२७४ ता० १ जमादियुस्सानी = ई० १८५८ ता० १७ जैन्युअरी] को बेगूंकी जमइयतने बीजोलियापर हमलह किया, याने रावत् महासिंहका बड़ा पुत्र माधवसिंह और अठाणाका रावत् दीपसिंह दोनों दो हज़ार आदमी व दो तोप लेकर मए नाथसिंहके बेगूंसे विजोलियाको रवानह हुए. उसीदिन कुछ फ़ासिलहपर पहुंचनेके बाद उक्त दोनों सर्दार तो मए जमइयतके ठहर गये, और अपने साथियोंमेंसे तीन सौ आदमियोंको आगे रवानह किया, जिनमें ज़ियादहतर बावरी और मीना लोग थे. ये लोग वहां पहुंचे, परन्तु बीजोलियाके गिर्द बहुत ऊंची और पुख़्तह शहरपनाह होनेके सबब इनको भीतर जानेके लिये रास्तह न मिला, इसलिये सीढ़ियोंके ज़रीएसे दीवारपर चढ़े, और भीतरवालोंके ग़ाफ़िल रहनेकी हालतमें दो बुर्ज और एक दर्वाज़हपर उनका क़ब्ज़ह होगया; बीजोलिया वालोंके एक दो सिपाही जो बुर्जोंपर थे, मारडाले गये, कायस्थ रत्नलालके चार तलवारें लगीं, जिनसे वह सख़्त ज़ख़्मी हुआ, और दर्वाज़हपर कायस्थ राधाकृष्ण मारागया; रात भर दोनों ओरसे गोलियां चलती रहीं. बेगूंवालोंके क़रीब डेढ़सौ आदमी जो दीवारपर चढ़े थे, उनमें

बारह तो ठिकानेदार राजपूत, और बाक़ी बावरी व मीना लोग थे. सूर्य निकलनेसे पहिले मीना और बावरी लोग तो कोटपरसे उतर गये, जिनमेंसे दो चार आदमी तफ़ैंनकी गोलियोंकी चोटसे मारेगये, और एक दो दीवारसे गिरकर ज़ख़्मी हुए, बाक़ी सिर्फ़ बारह राजपूत दोनों बुर्जोंपर क़ाबिज़ रहे; और दिनभर गोलियां चलती रहीं. गोविन्ददासकी तरफ़के आदमियोंमेंसे कास्याका पंवार डूंगरसिंह, इन्द्रपुराका पंवार चन्दनसिंह, बौहरा लच्छीराम और मोहनलाल वगैरह पांच सात आदमी और भी मारेगये. जब थोड़ासा दिन बाक़ी रहगया, तब गोविन्ददासने यह सोचकर, कि अब रातका वक्त क़रीब आगया है बेगूंवाले ज़रूर हमलह करेंगे, ढींकड्या चतुर्भुजकी मारिफ़त, जो उसवक्त उदयपुर की तरफ़से वहांके ख़ालिसहपर मुक़र्रर था, सुलह चाही. इसपर चतुर्भुजने बीच बचाव करके यह फ़ैसलह किया, कि नाथसिंह और गोविन्ददास दोनों बीजोलियामें रहें और उदयपुरमें जाकर जो फ़ैसलह कि महाराणा उनके हक़में करें, उसको वे मन्ज़ूर करलें. इस बातको बेगूंके सर्दारोंने भी मन्ज़ूर किया. आख़रकार बीजोलियाके बाहिर एक मन्दिरमें नाथसिंह और गोविन्ददास दोनोंने क़स्म खाई, कि इस इक़ारमें फ़र्क़ न करेंगे. इसी अ़रसहमें बाक़ी जमइयत लेकर कुंवर माधवसिंह और रावत् दीपसिंह भी आपहुंचे; परन्तु नाथसिंहने उन्हें कहलादिया, कि हमारे आपसमें सुलह होचुकी है, इसलिये आप यहां न आवें, आपके आनेसे शक पैदा होगा. इसपर ये दोनों सर्दार तो अपनी जमइयत लेकर वापस बेगूंकी तरफ़ लौटगये, और गोविन्ददास यह कहकर क़िलेमें गया, कि मैं अभी नाथसिंहको बुलाता हूं; लेकिन् फिर कहलादिया, कि आज रात होगई है, कल बुलावेंगे. इसी दिन कुछ देर बाद भैंसरोड़से डेढ़ सौ बन्दूक़्ची आगये, जिनसे गोविन्ददासने मज़बूत होकर दूसरे दिन नाथसिंहको कहलादिया, कि यहां से चलेजाओ; लाचार नाथसिंह निराश होकर बेगूंकी तरफ़ चलाआया. यह हाल मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अठाणाके हाड़ा पद्मसिंहकी ज़बानी सुना है, जो हमलह व लड़ाई करने और सुलह होनेके वक्त शरीक था, और जिसकी तस्दीक़ ढींकड्या चतुर्भुजके बयानसे हुई. फिर नाथसिंहने एक दो बार बीजोलियाके पर्गनहमें धावा किया. इसी अ़रसहमें अठाणाका रावत् दीपसिंह गुज़रगया, जो इस मुआमलहमें बड़ा मददगार था, लेकिन् कुंवर माधवसिंहको इस बातकी शर्मिन्दगी थी, कि कृष्णावतोंका भानजा गोविन्ददास तो हक़दार न होनेपर भी ठिकानेका मालिक बने, और बेगूंका भानजा नाथसिंह हक़दार होकर महरूम रहे; इसलिये उसने पांच सौ आदमी सबन्दी नये नौकर रक्खे, और विक्रमी १९१६ वैशाख [हि० १२७५ रमज़ान = ई० १८५९ मई] में वह दो हज़ार आदमियोंकी भीड़भाड़ लेकर बीजोलियाकी

तरफ़ चढ़ा, उसवक़् मैं (कविराजा श्यामलदास) बेगूंमें मौजूद था. कुंवर माधवसिंहने बीजोलियासे १२ कोस भेनाल मक़ामपर ठहरकर रातके वक़्त अपनी कुछ जमइयतको वहां भेजा, लेकिन् क़िले वालोंके ख़बर्दार होजानेसे इसवक़्त उसे नाउम्मेदी हुई. अगर्चि कुंवर माधवसिंहका इरादह सच्चे दिलसे फिर भी हमलह करनेका था, परन्तु नाथसिंहकी बदक़िस्मतीसे उसका इन्तिक़ाल होगया; माधवसिंहके मरनेसे गोविन्ददासके दिलका भय दूर होगया, और महाराणाने उसको बीजोलियाका मालिक बनादिया, जो अबतक मौजूद है. कुछ अरसह बाद नाथसिंह भी ना उम्मेदीकी हालतमें मरगया.

अब हम यहांपर वह हाल लिखते हैं, जो महाराणा और उनके सर्दारोंके बखेड़ेसे तअल्लुक़ रखता है. इस बखेड़ेका शुरू तो महाराणा सर्दारसिंहके समयसे ही होगया था, लेकिन् इसवक्त महाराणा स्वरूपसिंहने भी चाहा, कि छटूंद चाकरीकी सफ़ाई कीजाकर सर्दारोंको अपना पूरा फ़र्मांबर्दार बनावें, और इसी मन्शासे उन्होंने सलूंबर, देवगढ़ व आमेटके कई गांव ज़ब्त करलिये. मांडलगढ़की तरफ़ दौरह हुआ, उसवक़्त देवगढ़का रावत् रणजीतसिंह महाराणाके सामने पालकीपर सवार होकर निकला (१), इसपर महाराणाने नाराज़ होकर उसे कहलादिया, कि अपने ठिकानेको चलाजावे. आख़रकार यह नाइत्तिफ़ाक़ी दिन बदिन बढ़ती रही. जब सलूंबरका रावत् पद्मसिंह गुज़र गया, तो उसके बेटे केसरीसिंहने यह उज़्र पेश किया, कि महाराणा मातमपुर्सीके लिये हमारे ठिकाने सलूंबरमें आकर मुझको उदयपुर लेजावें. इसके जवाबमें महाराणाने फ़र्माया, कि ऐसे मौक़ेपर ठिकानेमें जानेका दस्तूर वलीअह्दका है, और वलीअह्द नहीं है, इसलिये हमारे काका दलसिंहको सलूंबर भेजेंगे (२). इस तरहकी बहुतसी तक्रारकी बातें होनेपर पोलिटिकल एजेंटके पास शिकायतें पेश हुईं. पोलिटिकल एजेंटने ख़ानगी मुआमलातमें दस्तन्दाज़ी करनेसे इन्कार किया; लेकिन् महाराणाकी तरफ़से इजाज़त होनेपर विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में पोलिटिकल एजेंट कप्तान शावर्स साहिबने सलूंबरके रावत् केसरीसिंहको एक ख़त लिखा, और उसके साथ रियासतकी फ़र्मांबर्दारी क़बूल करनेकी ग़रज़से चन्द कलमें लिख भेजीं, जिनका जवाब रावत् केसरीसिंहने लिखा, और उसका दरजवाब रियासतकी तरफ़से दियागया, उन काग़ज़ोंकी नक़्लें

(१) महाराणाकी सवारीमें या उनके सामने पालकीपर सवार होकर कोई नहीं चलसक्ता. यदि इत्तिफ़ाक़से कोई शख़्स महाराणाकी दृष्टिके सामने आजाता है, तो वह फ़ौरन पालकीसे उतर जाता है, और न उतरना बेअदबी समझा जाता है.

(२) यह रावत् केसरीसिंहकी ज़िद थी, वर्नह पेश्वाई व तलवारबन्दी वग़ैरह मौक़ोंपर वलीअह्द न होनेकी हालतमें नज़्दीकी रिश्तहदार भेजे जाते हैं; इसलिये इन महाराणा (स्वरूपसिंह) के समयमें ऐसे मौक़ोंपर काका महाराज दलसिंह भेजे जाते थे.

नीचे दर्ज कीजाती हैं; केसरीसिंहके जवाबी काग़ज़की नक़्ल यहां इसलिये नहीं दीगई है, कि उसका मत्लब रियासती दरजवाबी काग़ज़में आगया है:-

कप्तान शावर्स साहिबका काग़ज़ रावत् केसरीसिंहके नाम.

नकल. लंबर १५६. ॥ श्रीरामजी.

نقل مطابق اصل است
العبد
طالب علي مير منشي
ايجنسي ميواڑ *

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तखत-

रुजु रामराव पुरुसोतम मु० अजन्सी मेवाड.

॥ नकल कागद साहेब अज्ठ मेवाड नाम रावतजी श्री केसरीसीघजी सलुवर — अप्रंच ॥ सलुबरके जादती, हुकुम अदुल हरकताका पाना मेरे पास आया, सो मेरी नीगाह तो जेसी श्री दरबारकी रीआसत हुकुमतपर हे वेसीही सीरदारोके ठीकाणे वः ईजत हुरमत प्र छे; मैंने न्ही चाहा बे दरीयाफत हाल दुसरी तरफके श्री दरबारने सरदारोका बंदोबस्त वास्ते फोज मदद चाही, ऊसकी दरषास्त श्री सीरकार दौलतमदार करु; ई सबब राजके मातमदांसे लीषाकर जुबाबका पाना लीया, अर जुबांनी भी पुछ्या और दोनु तरफकी बात मुनासीब और ज्यादे नज्र आया, ऊससे राजका हक व : ईजत देष कम कराया, और बाकी रहा हे, सो मेरी दानीस्तमे वाजबी मालुम हुवा; राजकुं चाहीऐ ऐह पानेकु देप बाते वाजवी कबुल कर मेरे सलाह देणेपर राजी हो. माहाराज दलसीघजीके साथ जाणेमें फाऐदा स्मज पक्का ईरादा श्री दरबारसें जाणेका कर मुझे ईतला करो, कुछ ईजतकी हतक न्ही; और आवरुमें फरक आता देषता, तो मै हरगीज सलाह न्ही देता, राज मेरी सलाहकु हर सुरतसे फाऐदा, बहेत्री, नेकनामी, स्यामधरमी आप्णी स्मजे, और राज आप्णे ठीकाणेकी ईजत आबरु प्रे नीगाह रप मेरी सलाहसे राजी पुसी हो ईतला देणा, सो मै श्री म्हाराणा साहेबकु लीष म्हाराज दलसीघ-जीकु सलुंवर भेजाऐ राजके लेजाणेकु लीप भेजुं; और ऐसा न हो के गफलत और वेपरवाईमे श्री दरबारकुं नाराज कर ठीकाणेका नुकसान बीगाड करो, कारण ऐ थोडे लीपेकु वहोत स्मज जुवाव जलदी लीपावसी, सं० १९०७ काती सुदी ४, ता० ८ नवम्बर स० १८५० ई० मु० छाप्णी पेरवाडा.

सलूंबरकी बाबत् कलमबन्दी.

॥ श्रीरामजी.

सलुंबरके रा (व) त ईतना होणा (चा) वे.

१ नोकरी, तावेदारी, पेदास माफक आका हमेसका दसतुर माफक करबो करे.

२ कीसी दुम्रा स्रदार फीसादी श्रीदरबार नाराज होवे, जीनसे मीलावट न्ही रपे.

३ नजराणो वपत जरुरतके माफक ओर सरदारो के देवोकरे राजकी बेत्री, नामवरी, हुकुमतके वासते

१ व्याव स्यादी. २ गादी बीराजे ज्द. ३ तीरथ जात्रा पदारे जद. ४ कोडी जागगा स्वाए मोटो परच आजावे जद.

४ श्री महाराणा साहेवके गादी वराजणेका नजराणा सव स्रदारोंने दीआ, अर सलुवरप्र वाकी हे, सो देवे

५ रावतजीकु लेवा काका दलसींघजी सलुंवर जावे, रावतजी ऊदेपुर आवे जद हवेली श्री दरवार मोपाण पदारे

६ महीकाठा, वागड वगेरे गेर ईलापाकी नालसोका फेसला पंचाऐतसे हुवा, जीसका रीप्या हस्यावकी रुसे वाकी हे, सो व्याजसु दापल करे

७ गेर ईलापेकी नालस्याका फेसला जलदी करता रहे, असामी वगेराकु श्रीदरवार मे वुलाणेका काम पडे, तो वीना ऊजर हीले वाहेनेके भेजदेवे

८ ईनके पटेका वंदोवसत चोरी, लुट, वेपारी, मुसाफर, डाक वगेरेका रपे, ईसकी ज्वावदेही अपने ज्मे समजे

९ अगले कसुर अदुल हुकमी करी, जीसका जरीमाना देवे ओर आगेकु तावेदारी ईकतीआर करे, ओर जीन गामाकी जपती काकड वगेरेकी तकरारके सवव हे, जीसका वाजबी फेसला कराऐ सब गांमांकी ऊठंत्री कराऐ लेवे ———

१० श्री दरवारकी पातरीका रीप्याका करारनामामे लीपी हे ऊस माफक सरदाराकी पंचाअेतसे फेसला पावे ———

रावत् केसरीसिंहके जवाबोंका रद्दिया.

॥ श्रीरामजी.

॥ सलुवर रावतजी केसरीसीघजीने सवालका जवाव गुजराणा, जीसका दर-जवाव ———

नजराणा तावे लपे हे, नजराणा बराड हमारे लागे न्ही, अणी सीवाअे नामा होअे तो दीपावजे, सो ईनोंके बडोने हमेस नजराणा बराड दीआ, सो हमारे पास फरद मोजुद हे; फेर महाराणाजी श्री भीमसीघजीने गीगला वगेरे रुणके गाम पालसे कर रु १८०००) डंडके लेकर अठुत्री करदीदी, ओर माहाराणाजी श्री जवानसीघजी गयाजी पदार पाछा पदारया जद सब सरदारोंने नजराणा दीया, जद रावत पदमसीघजीने भी नजाणा दीया, सो रुप्या ९०००) तो प्रभारा सेट जोरावरमलजीके वयामें ज्मा परच हे, अर रु १००००) का जेवर, असवाव नजर कीना, ज्मे रु १९०००) दीया. अेक दफे रावत पदमसीघजीने कलंगीप्र मोती लगाया, सो मोती तो तुडवाअे दीया ओर रु ११००) जरीमानाका कीया, सो रावत पदमसीघजी, तो सरसतेसे वाकव थे, सो अरज कराई, मे करजसे हलका होजाऊ अर नजर करुंगा; ऊस वातकु ४ वरसका अरसा हुवा. अव रावतजी अेसी जुट वात लीप तकलीफ देते हे, जीसकी चसम नमाई होअे माफक स्रसते स्रदारान मेवाडके नजराणाका रुका होणा चाहीअे, अे कुछ हमेसके वासते न्ही हे, जरुरतके वकत लीया जाता हे ———

छटुंद तावे लीपी, मारे लागे न्ही, जीरो रुको माहाराणाजी श्री भीमसीघजीको वा कागद काप साहेवको मोजुद हे, चाकरी करवाने जो हाज्र हा, सो श्री हजुरने रुका मे लीप्या हे के लीप्यामे कसर न्ही पडेगा. आपका घराणाकी चाल छोड्यामे मा

नरदोस; सो रावतजीरा गराणाकी चाल तो आ हे, सो श्री दरबारकी मरजी माफक नोकरी बजावणी, आका बडावा तो अस्या हुवा, सो चुंडाजीमें कसुर आया, सो देस मेसे नीकाल दीआ सो चल्या गया, कभी दावो नही कस्यो, अर ओ रावतजी कम अकलका आदम्याके चाले लाग केई त्रेका कसुर, अदुल हुकमी कीआ, अर गराणाकी चाल छोडी, जीको हाल पहेले लीष्यो ही हे; फेर छटुद कसी मागाहा, आरी चाकरी सदीव हे जीमाफक करो, अर श्री दरबारकु राजी रपो; नोकरी न्ही करी जीरी तलब दापल करे, सो तो कोल नामेमे ही लपी हे, कुछ ईस रुका कागदमेंहे नही लीपा हे, के चाकरी न्ही करणी. ओर दसतुर लीष्योके रावतजीकी समे वे जदी श्री दरबार सलुंबर ताई लेवा पदारे, सो थेठ चुंडाजीसु लेर पदमसीघजी सुदा श्री दरबार हमेस्या लेवा पदारया, सो जारी हे, सो चुंडाजीको फव्या १७ पीडी हुई जीसमे कीतनी पीडी तो अदुल हुकमी रही, सो पटा बी जपत रखा ओर च्यार पीडी मेहेरवानगीके सात आ दबावसे लेणेकु पदारया, ओर रावत भवानीसीघजी, कुवरजी श्रीअमरसीघजी बरसरोजका था, जब पदार लेआया, सो श्रीदरबारके पदारणेका दसतुर होता, तो बरसदीनका कुवर राजाका कीस वासते पदारता; फेर भीमस्याही पटा बहीमे ईनके भले आदमीयोंने केई दसतुर ईनका लीपाया, जीसमे लीष्या हे के रावतजी रामस्त्रण हुवे, जद पाटवी कुवरजी वे जो सलुंबर पदार रावतजीकु लावे, सो वो सीरसता जारी हे, जीसकी तो करनेल रावीनसेन साहेब बाद्रने पुब दरीआफत कर पलीतामे लीप दीया, सो दफतरमे दरया-फत करलीजे, अर रावत पदमसीघजीको लीपे, सो रावतजी तो बालक था, अर रावत भेरुसीघजीको बंदोबसत था, सो पोट बीचारया, जीसकी पबर रावतजीकी मा ने ऊदेपुर भेजी के पदमसीघजीने मारनापेगा, सो श्रीहजुर ऊदेपुर लेजावे, ओ बालक हे; जद श्रीहजुर ने पाबंदी कर फीसाद मीटाणे वासते सलुंबर पदार ऊदेपुर ले आया, सो ओ दसतुरमे नही हे; जीस स्वाओ मालककी मेहरवानगीके साथ नई बी होजावे, ओर नाराज करे, तो रुदीवकी वो बी मटजावे, ओ दसतुर कदीमका न्ही हे. फेर बेदले रावजीके पदारनेका लीपे हे, सो वारा ठीकाणा तो गंगार हे, अर बेदला तो ऊदेपुरमें हवेली वे जु हे, जीसु रावतजी असो ऊजर कर नोकरीमे हाजर हुवा न्ही, आ भुल हे

ओर केद नजराणा ताबे लीपे, लागे न्ही, सो ईनके बडावोने केई दफे नजराणा दीया, सो अब भी लेणा होगा, अर ईनके पास ओ दसतावेज होवे के तुमसे कभी पीढी द्र पीडी पुसतेन दर पुसत कदे नजराणा न्ही लागे, तो वो दसतावेज पेस करे, जुट वणावट लीपणेमे कोण फाअेदा

रावतजी लपे हे, स्दीव वंदगी करां जीमेह हाज्र हा, सो रावतजी लीषते तो हे, लेकीन लीपेप्र आमल रपते देषे (नहीं), कोलनामेमे क्या लीष्या हे; नोकरीमे हाज्र न्ही रया, जीसकी तलव लीजावेगी. ईनके दसतुर ए हे, के पटेके माफीक जमीत स्मेत बारा मही-ना कवीला सुदी ऊदेपुरमे रहे, श्री दरवारके मरजी माफक नोकरी करे, अबे ए नोकरी मे हाजर न्ही रेते, ईस सबब माफक लीषे कोलनामेके होता हे———

ओर लीपा, मे कणी स्रदार, मसुदीने वेकाया न्ही, मारे मतलब काई, सो आ स्रास्र जुट वणावट लीपी हे, रावतजीका हातका दसतावेज मोजुद है; फेर कोलनामेमे लीष्या हे, कोई स्रदारसु जलावंदी करणी नहीं, अर ए करे हे जीरी तगसीर होए, आगेकु चाल छुटी चावे, जीरी नीसवत लीष देवे———

ओर लीपी, रोटी करतवमे हरकत वे जीरो तो अरज कराई जस्ये श्रीहजुरने राजी रापे तो पावंद पावंदीज करे———

ओर लपी, गेर ईलापारा कोई मारा पटाप्र नालस करे, अर साहेवरा लीष्या प्रमाणे श्री दरवार हुकम लीपे, सो मुदेईका राजीनामा आ ऊस असामीकु श्री दरबारमे भेज्या जावे, ओर मेवाड़का मुकदमा वावत तो साहेवने हुकम कीदा, के गरु मुकदमामे दषल नही, सो पेसत्र डुंगरपुर, महीकाटा वगेरे की नालस सलुबर पटाप्र बोत थी, जब ईनके प्रधान म्हेता स्रदारसीघजीकी पंचाएतसे फेसला कर रु० २५०००) सलुबर वदले श्री दरवारसे दीया गया, वो तो व्याज समेत दापल करे, ओर ईलाषे मेवाड़ या गेरकी नालस्या वाकी जीसका फेसला करे; आगेकु कोलनामारी लीषावट (पर) अमल रापे, ओर मेवाड़का मुकदमाका ऐसा लीपा, सो मेवाड़ ईलापामे षालस्याका क्या ओर जागीर क्या, मालक श्री दरवार हे; फेर असामी वगेरे भेजणे रुबकारीके कीस्वासते ऊजर कीया, ईसकी वी साफ मनजुरी होणी चाईजे———

ओर वे ३३ गाम पालसे लीपे, सो ईस त्रसे हे, गाम सावा, कुवारथ्या पेड़ा भागल सुदी छटुंद चाकरीके एवजमें करनेल तामस रावीनसेन साहेव वहादरकी वाकवीसे माफक लीपे कोलनामोंके पालसे कीया, सो कोलनामाके लीपे माफक हीस्याव करे, सो हीसावकी रुसे लेवे देवे. ज्मे गाम पेड़ा, भागल १५ हे, ज्याने गाम लीष्या हे, ओर गांम चीवोड़ा त्रसीघको आरे पटामें लीप्यो नही, ए गाम तो कल्याणपुरका पटाका हे,

ईनके पास ईस चीवोडाकी सनंद वे तो पेस करे, सो अठुत्री होजावे; ओर मादावतांको फलास्यो प्रोत रेवादत ने स्हा गोरीदास सलुवरवालाने ईजारे दीदो, सो रावतजीने मन वीगाड अपणे पालसेमें लेलीआ, सो ऐ कीतना भारी कसुर हे, के पालसा का गाम पे अपना कवजा करे; ओर पाच सात गांम छोटा पालसे हे, सो सीम वगेरे जगडा जीसका फेसला करने वासते केई दफे रावतजीकु लीपा, भलामनपाकु हुकम दीआ, लेकीन साहेवकु वताणे वासते फेसला नहीं करता, जीसका हाल केई दफे पलीतेमे लीपा, सो दफतरमे मोजुद हे. जीस जीस कसुरसे गाम जपत हे, ऊसका राजीनामा करता जावे, अर गामकी ऊठंत्री लेताजावे; ओर गाम ईस सीवाअे लीपे सो गलत हे

ओर करारनामेमे लीप्यो हे, दाण, वीसवा सव जगा श्री द्रवारका हे, सो पालसेमे लीआजावे हे, सो माफक लीपेके सावा, सलुवरका दाण पालसे करया जावेगा

अजमेर ऊदेपुरका साहुकाराको करज श्री दरवारकी पातरीको त्था वीना पातरीको जो रावतजी सेनाजोरीसे देवे न्ही, सो सवका फेसला करे; सेट धनरुपमल, वागमलजी का करजकी पातरी तो श्री दरवारने ओर स्हेव अजंठने दी हे

ओर रावतजीका अमल कोलनामेप्र न्ही सो हुवा चाहीजे

ओर कीतनेही कसुर रावतजीमे छोटे वडे हे जीसकी फरद वकत फेसलोके पेस कीजावेगा

ओर श्री दरवारका वा साहेवका अदुल हुकमी कीआ जीसका जरीमाना हुवा चाहीजे

ओर माफक सलाहा करनेल तामस रावीनसेन साहेव वहाद्र श्री दरवार मुलक मेवाड चकवंदी, हदवंदी करता है, सो पालसामे तो काम जारी हे, ओर ईनके पटेमे कराने का ईनकार कीआ, सो कराअ दीआ चाहीये

ई माफक ईनसे वंदोवसत होणा जरुर हे
अपीर हुक्म दीदो, सं० १९०७ काती सुद ४.
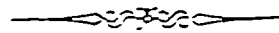
इसी तरह दोनों ओरसे कई सवाल जवाब होते रहे, जिनमें अक्सर तो केवल मुआ़मलहको तूल देनेकी ग़रज़से शामिल किये गये थे, वर्नह उनके कमोवेश करनेमें तर्फ़ैनसे कोई ज़ियादह ज़िद न थी. सलूंबर वालोंकी तरफ़से ख़ास तीन उ़ज्र पेश थे, जिनमेंसे अव्वल यह था, कि उनकी हवेली और उसके आस पासकी मुक़र्ररह हदके भीतर कोई मुजिम शरण में चला आवे, तो पकड़ा न जावे; दूसरा, महाराणा मातमपुर्सीके लिये सलूंबर तश्रीफ़ लावें; तीसरा, सलूंबरका रावत् मेवाड़की मुसाहिबी करे; और इसके सिवा छटूंद व नौकरी का .उज्र था. इनमेंसे ऊपरकी तीन बातोंमें तो महाराणाको पसो पेश था और उनके जवाब भी माकूल वुजूहातके साथ दिये गये; और छटूंदकी मुआ़फ़ीके बारेमें जो एक ख़ास रुक्का महाराणा दूसरे भीमसिंहका, और एक काग़ज़ काफ़ साहिबका सलूंबरसे पेश हुआ, उस पर महाराणाने कुछ मंज़ूरी और कुछ ना मंज़ूरीका जवाब दिया, लेकिन् बारह ही महीना नौकरी करना रावत् केसरीसिंहने इस शर्तपर मंज़ूर किया, कि ऊपर लिखी हुई तीनों क़लमें कुबूल कीजावें, जो महाराणाको मंज़ूर न थीं. देवगढ़के रावत् रणजीतसिंहसे आ़म सर्दारों के मुवाफ़िक़ यह सवाल था, कि ठिकानेकी मौजूदह पैदावारपर।-) पांच आना फ़ी रुपया सर्कारी ख़िराजके हिसाबसे आधेकी एवज़ नौकरी करे, और आधेकी एवज़ नक्द रुपया सर्कारी ख़ज़ानहमें जमा करावे. इसपर उसने टालाटूलीका जवाब दिया, तब महाराणाने उसकी जागीरके कुछ गांव ज़ब्त करलिये. इसी तरह आसींदके रावत् दूलहसिंहके भी कुछ गांव सर्कारी ख़िराजके .एवज़ और आमेसर, बरसणी व बामणी नामके तीन गांव, जो उसने महाराणा जवानसिंहके समयमें छोटे गांवोंकी .एवज़ बदलवालिये थे, ज़ब्त करलिये. आख़िरकार विक्रमी १९०८ कार्तिक कृष्ण ९ [हि० १२६७ ता० २३ ज़िल्हिज = .ई० १८५१ ता० १९ ऑक्टोबर] को जब महाराणाने सुना, कि सलूंबर और देवगढ़ वालोंने ज़ब्तीके अह्लकार, सवार व सिपाहियोंको अपने इलाक़हसे निकालदिया, तो उनको बहुत गुस्सह आया और हुक्म दिया, कि फ़ौज भेजकर दोनोंको सज़ा दीजावे; लेकिन् अख़ीरमें यह सोचागया, कि पोलिटिकल एजेण्टकी मारिफ़त गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे फ़ौज तलब करके इनको सज़ा दिलाना चाहिये. क्योंकि अगर कुल जागीरदार मिलकर मुल्कमें ग़द्र पैदा करेंगे, तो पोलिटिकल
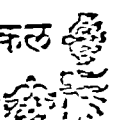
एजेण्टको दस्तन्दाज़ी करनेका मौक़ा मिलजायेगा, जैसा कि दस वर्ष पहिले महाराजा मानसिंहके समय मारवाड़में हुआ था. महाराणाने इस सर्कशीकी ख़बर पोलिटिकल एजेण्टको लिख भेजी. इसी अ़रसहमें सलूंबर और देवगढ़के मोतमदोंने आसींद पहुंचकर रावत् दूलहसिंहसे कहा, कि आप भी अपनी जागीरके गांवोंमेंसे ज़ब्ती वालोंको निकाल दीजिये. उसने इस बातसे इन्कार किया, तब दूसरे रोज़ सलूंबरके मोतमद पुरोहित मोड़ीलालने भंगके नशेमें तेज़ होकर रावत् दूलहसिंहसे कहा, कि कम उम्र लड़कोंने तो अपनी जान देना क़बूल करके महाराणाकी ज़ब्तीको उठादिया, लेकिन् आप बूढ़े होनेपर भी ज़ियादह जीनेकी उम्मेद रखकर लड़कोंसे जुदा होते हैं ! तब रावत् दूलहसिंहने गुस्सेमें आकर यह जवाब दिया, कि इतने दिनतक तो मैं लड़कोंका क़ुसूर जानता था, लेकिन् अब मालूम हुआ, कि यह सब क़ुसूर तुम बदख़्वाह और कम अ़क्ल आदमियोंकी सुह्बत और बहकावटका है. सुनो, महाराणा हमारे मालिक हैं, उनके ख़िलाफ़ काम करना हमारा धर्म नहीं है. हमारे मूल पुरुष रावत् चूंडाको देखना चाहिये, कि उसने मेवाड़से निकालदिये जानेपर भी हर्गिज़ अपने मालिककी बदख़्वाहीकी तरफ़ क़दम न रक्खा, और वापस बुलानेपर जो उसने ख़िद्मतें कीं वे मश्हूर हैं. बेगूंके रावत् मेघसिंहको महाराणा अमरसिंह अव्वलने निकालदिया था, उसने दिल्लीके बादशाह जहांगीरसे मालपुरा जागीरमें पाया, लेकिन् महाराणाके बुलानेपर कुल जागीर छोड़कर चलाआया. सलूंबरके रावत् रघुनाथसिंहको महाराणा राजसिंह अव्वलने निकालकर सलूंबरका पट्टा चहुवान राव केसरीसिंहको देदिया, और रघुनाथसिंहने आ़लमगीरके पास जाकर वहीं अपनी उम्र पूरी करदी, परन्तु उसका बेटा रत्नसिंह महाराणाके पास चलाआया, और उसने आ़लमगीरकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी ख़ैरख़्वाहियां ज़ाहिर कीं. सलूंबरके रावत् जोधसिंहको महाराणा अरिसिंह तीसरेने अपने हाथसे ज़हर दिया, लेकिन् उसका बेटा पहाड़सिंह महाराणाकी ख़ैरख़्वाहीके लिये उज्जैनमें मारागया. और जिन्होंने बदख़्वाही की उनकी सज़ा भी सुनो— महाराणा भीमसिंह दूसरेके समयमें, जिनकी हुकूमत बिल्कुल कमज़ोर होरही थी, सलूंबरका रावत् भीमसिंह चित्तौड़पर ख़ुद मुख़्तार बन बैठा, उस हालतमें महाराणाकी लौंडी बाई रामप्यारी रावत् भीमसिंहको उसके गलेमें रूमाल डालकर लेआई, और उक्त रावत्ने महाराणाके क़दमोंमें गिरकर क़ुसूरकी मुआ़फ़ी चाही. इसी तरह देवगढ़का रावत् जशवन्तसिंह, जो पांच लाख रुपयेकी जागीर रखता था, महाराणाकी नाराज़गीके सबब बर्बाद होकर जयपुरमें मरा; और महाराणा स्वरूपसिंह तो आज तुम लोगोंको सज़ा देनेके लाइक़ हैं, मैं हर्गिज़ इस बुढ़ापेमें बदख़्वाहीका दाग़ अपने नामपर नहीं लगाना चाहता, तुम लोग अभी यहांसे चले जाओ. ये बातें सुनकर दोनों ठिकानोंके मोतमद वहांसे चले गये. इस ख़बरके

सुननेसे महाराणा बहुत खुश हुए, और उन्होंने रावत् दूलहसिंहको अपने पास बुलालेना चाहा, लेकिन् ईश्वरेच्छासे उसका इन्तिक़ाल पहिले ही होगया, जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा.

जब महाराणाने मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट और राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरलको यह फ़साद दूर करनेके लिये बहुत कुछ लिखा पढ़ी की, तब उक्त दोनों साहिब विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० १२६८ ता० २० रबीउ़स्सानी = ई० १८५२ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को उदयपुरमें आये, और सलूंबर, देवगढ़, गोगूंदा, कुराबड़ व भैंसरोड़ वग़ैरह ठिकानोंके सर्दारोंको बुलाया. रावत् केसरी-सिंह मातमपुर्सीके .उज़्रसे उदयपुरमें नहीं आया, और शहरके बाहिर रेज़िडेन्सी के क़रीब अपने साथी सर्दारों समेत ठहरा रहा. क़रीब एक महीनेतक महाराणा और उनके सर्दारोंमें बहुत कुछ बहस रही. पेश्तर सर्दारोंको यह खौफ़ था, कि महाराणा की .उदूल हुक्मी करनेपर गवर्मेएट अंग्रेज़ीसे हम लोगोंको ज़रूर सज़ा मिलेगी, क्योंकि विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में कर्नेल टॉडने एक बड़े दर्बारके वक्त महाराणासे उदयपुरमें यह कहा था, कि इन सर्दारोंमें जो कोई आपके बदख्वाह हों, उनको बतलाइये, गवर्मेएट अंग्रेज़ी उन्हें सज़ा देनेको तय्यार है; उस हुक्मका खौफ़ उनके दिलोंसे इस वक्ततक दूर नहीं हुआ था, बल्कि उसका असर हरएकके दिलपर पूरा पूरा जमाहुआ था; लेकिन् इसवक्त एक महीनेतक पोलिटिकल अफ़्सरोंकी नर्म और सम-झायशी कार्रवाईने उनको बेखौफ़ करदिया. फिर पोलिटिकल अफ़्सर और सलूंबर व देवगढ़ वग़ैरह ठिकानोंके सर्दार उदयपुरसे चलेगये. महाराणाने भींडर, आमेट और बदनोर वग़ैरह ठिकानोंके सर्दारोंको बहुत कुछ तसल्ली दी, कि वे मुखालफ़तमें शरीक नहों, लेकिन् ऊपर लिखेहुए सबबसे इनको भी हौसलह होगया. लहसाणीके ठाकुर जशकरणका छोटा पुत्र मान्यावासका जागीरदार चूंडावत समरथसिंह सर्दारोंको बहकाने की कार्रवाईके क़ुसूरपर नज़र क़ैद कियागया; इसपर कुल मौजूदह सर्दारोंकी जमइयत-वाले मुस्तइद होकर उसे भींडरकी हवेलीमें लेगये, परन्तु महाराणाने शहरमें बल्वा होजानेके खौफ़से दरगुज़र किया, और सर्दार लोग भी अपने अपने ठिकानोंको चलेगये. महाराणाने चाहा, कि रावत् दूलहसिंहको आसींदसे बुलाकर अपना मुसाहिब बनावें, लेकिन् वह बीमार होकर विक्रमी १९०९ आषाढ़ शुक्ल ११ [हि० १२६८ ता० ८ रमज़ान = ई० १८५२ ता० २७ जून] को वहीं गुज़रगया, तब महाराणाने उसके पुत्र रावत् खुमाणसिंहको बुलाकर ज़ब्तीकी उठन्त्री इनायत करके तलवार बंधादी. इस बारेमें जो तह्रीरी कार्रवाई हुई, उन काग़ज़ोंकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं:-

महाराणाका पर्वानह रावत् दूलहसिंहके भान्जे
राठौड़ इन्द्रसिंहके नाम.

॥ श्री रामोजयति.

॥ श्री गणेस प्रसादातु. ॥ श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयपुर सुथाने माहाराजा धिराज म्हाराणाजी श्री सरुपसींघजी आदेशात् ईंद्रसीघ कस्य

१ अप्रं रावत दुलेसीघकी श्री जी सरण हुवाकी पबर मालम हुई, सो वडी चीता हुई, प्रंत ई बातसुं कीकोई जोर न्ही, आगे दो ठीकाणा वाला षालसाने सीष दीदी, अर अणी हुकम माथा ऊप्र राष्यो, जीप्र प्रसन होऐने बुलावाकी ततबीर ही जीमे आ हुई, सो पेर श्री जीकी ईछा, अबे रावत पुमाणसींघने लेर प्रवाना दीसटं आवजे, लेवा म्हेता मोपमहे मोकल्यो हे; प्रवानगी प्रोप लछमनाथ, संवत १९०९ र्व्ये सावण वीद २ सने

आसींदके फ़ौज्दार कामदारोंके
काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

ऊपला प्रमाणे सावत, दसपत
रावत पुमाणसींघरा हातरा.

॥ लीषता रावतजी पुमांणसीघजीरा फोजदारा कामदारा अप्रंची । मारी अठार्रा पलीरी भुल ही, सो माफ कर श्री पावंदा सुनजर कीदी, सो हुकम प्रमांणे वंदगी करणी, श्री कलमा लपदीदी जीपरमाणे चालणो

१ पटो आसीदकी लार रावत दुलेसींघजी (रे) आगे हो सो सावत

२ बाडी आगे हे, सो सावत

३ घोडो बलेणो ऊमरावा सरसते

४ कुरब ऊमरावा सरसते

५ चाकरी मारे सदीव मास १२ की हे, सो सासता हाजर रेणो, गरां कोई काम ऊपजे जदी अरज कराणी, सो धणी सीष वगसे जदी घरा जाओ, काम कार हुकम करे जत्रा दनमें आओ हाजर वेणो; अर अठे काम ऊपजे अर हुकम आवे, गेले तथा पुगताई आवे, तो पाछा फरजाणो, रुको देपताई हाजर वेणो, मुरजी प्रमाणे बंदगी करणी

६ पवासीमे आगे रावत दुलेसीघजी बेठता, सो अबे मने श्री हुजुरकी मुरजी वे

जदी पवासीरी वेठक वगसे, मारी चाल, वरती श्री पावंदाने पुरी नरेण दीषे, परतीत आवे जदी वगसे, जत्रे अरज करुं नही

७ वेठक पारसोली, कुरावड हेटे ऊमरावां स्रसते

८ तरवार वदाईरो नजराणांराको रुको रुपीया ५०००) पांच हजारको नज्र करचा जीरी साहुकारी करावे देणी, ओर नेग ऊमरावा स्रसते देणो करणो

९ ओर सलुंवर, देवगड वगेरे जो कोई श्री जी की मुरजी बारे होवे जीसु कठेई मीलावट रापणी नही, राजीपा लार मीलावट अर श्री जीरा बेराजीपा लार दुसमणी रापणी, ईमे कसर पाडां तो वदलारा गांम ३ आंवेसर, वररुणी, बाम्णी, धणी पालसे करलेवे; अर गांम ३ मे आगे छोड्या, सांगवो, रुपाहेली, भाटीपेडो, सो मांने पाछा वगसे जीरो कई वी ऊजर करा नही; धणी आछा नरधार करने पालसे करे जीमे में राजी कुसी हां

१० ओर देस साही वात देस सरसते ठेरे, सो मारे ई कवुल हे

११ संडे कणीरे वंदणो नही, फगत धणीरी मुरजी प्रमाणे चालणो, राजी राप वंदगी करणी

अणी परमाणे कवुल हां, श्री जीरी मुरजी प्रमाणे रावतजी वा मे सारा चालांगा, कदी वी तफावज पाडा, तो मांने श्री जी का चरणारवंदाकी आंण हे. मे कणीसु ई सटपट, मीलावट रापा, तो नवमी कलम ऊपरकी मुजब गांम पालसे करे वा सीवाअे तगसीर नजर करां. या लपत रावतजीरी लपावट प्रमांणे भांणेज ईद्रसीघजी, चुडावत करणसीघजी, गोड मोकमसीघजी, पंचोली ग्याना लीप्यो, दसगत ग्यानारा सं० १९०९ रा काती वदी ६ वुधवार.

रावत् खुमाणसिंहका काग़ज़ लॉरेन्स साहिबके नाम.

नुकल. ॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीऐकलीगजी. ॥ श्रीभीमेस्त्रजी.

म्हारो जुहार वाचसी.

॥ सीध श्री नीमचरी छावणी सुभसुथाने सरब ओपमा जोग्य राज श्री करनेल सेट पातरक जारज लालन सहेब बहाद्र जोग्य आसीद थी रावत् श्री पुमाण-सीघजी लीपावतां जुहार वाचसी, अठारा समाचार श्री जीरी सुनज्र सु करे भला हे, राजरा सदा भला चाईजे ज्यु म्हाने प्रम सुष वे, मारे राज गणी वात हे, राज सीवाअे कई वात हे न्ही, स्दा हेत ईकलास हे ज्युई रषावसी अप्रंची। मारे रावत् दुले-सीघजीरा चलेवा भुल तावे श्री जी वेराजी हा, अर अबार सुनज्र कर माने पेतावा बुलाया, सो मे लपत करदीदो जणी प्रमाणे चाल्या जावागा; अर ईमे तफावज पाडा, तो तगसीरवार हां; ईको पात्रीको श्री जी प्रवानो करे बगस्यो, जी प्रमाणे वरतेगा, जीका राजीपाकी अरज मे लष नजर कीदी ने राजने वासते ईतलाके श्री साहेबसुं लपी हे, सो मे श्री जी की मुरजी प्रमाणे राजीनामो करलीदो हे, अठारी तरफरी कुसी रापसी, राज कुसी रेसी, काम काज, कागद पत्र लीषावसी, सं० १९०९ रा काती वीद ६ वुधवार.

महाराणाके नाम रावत् खुमाणसिंहकी अर्ज़ी.

॥ श्रीरांमजी. ॥ श्रीभीमेसरजी.

॥ सीधश्री। श्री। श्री। श्री। श्री। १०८ श्री जी हजुर अरज आसीदसु छोरु रावत पुमाणसीघ लीपता मुजरो धरती हात लगावे मालम वेसी, श्री हजुर वडा हे, मोटा हे,

ईसवर हे, पावंद हे, श्री जीने जत्री ओपमा लपु जत्री जोग हे, अप्रच। रावत दुले-सीघजीका चालासुं श्री जी वेराजी हा, अर अबार सलुंबर, देवगढ वाला तो पालसाने सीप दीदी अर मारे रावतजी माथा ऊपर हुकम राप्या, जणी ऊपर श्री जी परसन वेर माने वुलाया, सो वाकी तो समे वरत गई, अर छोरु पेतावा हाजर हुवो, सो धणी तो तगसीर माफ कर पालसे हा सो गांम पाछा कर वगस्या, अर छोरु स्त्रसतां प्रमांणे तरवार-वंदाईको नजराणोको रुको कर कलमवंदीको लपत नजर कीदो, सो जी परमाणे सदा चालेगा, अर श्री जी पात्री कर वगसी जणी परवाना प्रमाणे पावंद वरतेगा, जणीका राजीनांमारी अरज छोरु राजी पुसीसु लप नजर करी वा साहेव बाहादरके नामे वी लपी हे, सो नजर वेगा. छोरुने सदाई पावंदाकी मुरजी सुनजरको ई जांणेगा, सं० १९०९ रा काती वद ६ वुधवार.

आसींदके रावत् खुमाणसिंहकी तसल्लीके लिये
राठौड़ इन्द्रसिंहके नाम पर्वानह.

॥ श्रीरामोजयति.

॥ श्री गणेस प्रसादातु. ॥ श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयेपुर सुथाने म्हाराजाधिराज म्हाराणाजी श्री सरूपसिंघजी आदेशात् ईंद्रसीघ कस्य

१ अप्रं पाछासु दोये सरदारा पालसो ऊठायो, ने दुजाने वेकाया जणीम्हे रावत दुलेसीघ पालसो उठायो न्ही अर रावत पुमाणसीघ पण दुजाकी वेहकावटम्हे न्ही आयो, जीप्र प्रसंन होये वुलाया, सो आगे थने वा भला मनपाने मोकल्या सो मुरजी वा सरसता प्रमाणे कलमा सावत कर अरज लषत नजर कीधा,

सो जणी प्रमाणे सावधरमासु बंदगी कीदा जायगा जतरे पुमाणसीघकी अत्री राहा मुरजाद ऊमरावा प्रमाणे ओर पटो पटा परवाणे पुपत रहेगा, आगलो सुभो रयो न्हीं, सावधरमासु बंदगी कीदा जावे; अठा पछे वना राहाकी पेचल व्हेगा नहीं, जमापात्र रापे, म्हारो वचन हे. प्रवानगी पंचोली हरनाथ, संवत् १९०९ वर्षे मगसर सुद १० सोमे.

———
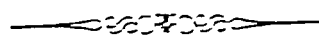
इसके बाद सलूंबर और देवगढ़ वग़ैरह सर्दारोंके मुआमलहमें बहुत कुछ बह्स होती रही, यहांतक कि पोलिटिकल एजेण्ट ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिबके पास कई सर्दार खुद नीमचकी छावनी गये, और उदयपुरसे बेदलाका राव बख्तसिंह, प्रधान महता शेरसिंह और पुरोहित श्यामनाथ भेजेगये. लॉरेन्स साहिबने सर्दारोंको मुसाहिबोंसे सलाह मिलाकर फ़ैसलह करलेनेके लिये बहुत कुछ कहा, लेकिन् उक्त सर्दारोंने राज्यके मुसाहिबोंको अपने साथ मिलालेनेके सिवा फ़ैसलह करनेकी कोई सूरत न निकाली. इसपर ऊपर लिखेहुए मुसाहिबों ने सर्दारोंको साफ़ जवाब देदिया, कि हमको श्री दर्बारने मोतबर और भरोसेका जानकर भेजा है, आप लोगोंसे मिलावट करके बेईमानीकी बदनामी हम हर्गिज़ न उठावेंगे; अगर आप लोगोंको फ़ैसलह करना हो, तो हम श्री दर्बारसे अर्ज़ करके वाजिबी फ़ैसलह करादेवें. लेकिन सर्दारोंको यह कब मन्ज़ूर था, वे तो बखेड़े और नाराज़गीके बहानहसे मामूली नौकरी छोड़कर अपने अपने घरोंमें खुदमुरूतार बन बैठे थे; जब कुछ नतीजा न निकला, तो अपने अपने घरोंको वापस लौटगये. आख़िरकार राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेनरी लॉरेन्सने मध्यस्थ बनकर महाराणा और उनके सर्दारोंमें एक अह्दनामह क़ाइम कराया, और उसपर विक्रमी १९१२ मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० १२७२ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० १८५५ ता० १८ डिसेम्बर] को महाराणा व साहिब एजेण्टके सामने देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह और शाहपुरा, बनेड़ा, भैंसरोड़, बदनोर, आमेट और कोठारिया वग़ैरह ठिकानोंके सर्दारोंने अपने हाथसे अथवा जो सर्दार मौजूद न थे उनके वकीलोंने दस्तख़त करदिये, सिर्फ़ सलूंबर, भींडर, गोगूंदा और कुरावड़ वालोंने नहीं किये. साहिबने देलवाड़ा मकानपर उक्त चारों सर्दारोंको अपने पास बुलाकर उनसे भी दस्तख़त कराना चाहा, लेकिन् उन्होंने इन्कार किया, जिसपर साहिब नाराज़ होकर चलेगये. इस अह्दनामहपर महाराणा इस सबबसे नारज़ामन्द थे, कि उक्त अह्दनामहकी उन्नीसवीं शर्तमें अदालतको, बीसवीं शर्तमें वज़ीरको और बाईसवीं शर्तमें दत्तक लेनेकी बाबत् ठिकानेवालोंको अपनेसे ज़ियादह इख़्तियार हासिल होनेके अलावह सर्दारोंसे सालभरकी एवज़ सिर्फ़ तीन महीना सालानह नौकरी लीजाना वग़ैरह कई बातें दर्ज

थीं, और सबसे बढ़कर नागवार बात उनके लिये यह थी, कि पोलिटिकल एजेएट मध्यस्थ रहकर महाराणा व उनके मातह्त सर्दारोंके फ़ैसले किया करें.

इन दिनों गोगूंदाका राज शत्रुशाल तो गुज़रगया था, और उसका बेटा लालसिंह व कुरावड़का रावत् ईश्वरीसिंह सलूंबर और भींडर वालोंके दिली सलाहकार थे, इसलिये विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] में एक मज्मूनके दो काग़ज़ सर हेनरी लॉरेन्सने गोगूंदा और कुरावड़ वालोंके नाम लिखे, जिनमें महाराणा साहिबके हुक्मकी तामील करने और तलवार बन्दी वग़ैरह नज़ानहका रुपया अदा करनेमें पसोपेश न करनेकी बाबत धमकी दीगई थी, क्योंकि ये दोनों सर्दार कुल मेवाड़के उमरावोंकी तरफ़से पंच बनकर उदयपुरमें आये थे; लेकिन् तसल्लीके लाइक़ कोई फ़ैसलह न हुआ. इसी तरह कई बार महाराणाने फ़ैसलह करना चाहा, परन्तु अव्वल तो सर्दारोंने ही कुबूल न किया, और यदि कुछ दबाव देखकर उन्होंने कुबूल किया, तो महाराणाने अपने वाजिबी हुकूक़ छोड़ना न चाहा, इस तौरपर मुआमलहमें तवालत होती गई. आख़िरकार विक्रमी १९१७ मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० १२७७ ता० १७ जमादियुल्अव्वल = ई० १८६० ता० १ डिसेम्बर] को राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल ज्यॉर्ज लॉरेन्स और मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट टेलर साहिब उदयपुरमें आये. महाराणाका इरादह था, कि महता शेरसिंहसे रियासती क़ाइदहके मुवाफ़िक़ पूरा पूरा दण्ड लियाजावे; लेकिन् यह ख़बर सुनकर ज्यॉर्ज लॉरेन्स विलायतसे सीधा खैरवाड़ाके रास्ते उदयपुर आया, क्योंकि वह शेरसिंहपर ज़ियादह मिहर्बान था; और उसके मकानपर जाकर उसे बहुत कुछ तसल्ली दी, और महाराणाके इस बारेमें ज़िक्र करनेपर भी उनके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ जवाब दिया. शेरसिंहसे दण्ड वुसूल कियेजानेमें पोलिटिकल एजेएट भी लॉरेन्स साहिबके मुवाफ़िक़ राय थे, इस सबबसे महाराणा और पोलिटिकल अफ़्सरोंके दर्मियान ज़ियादह ना इत्तिफ़ाक़ी और रंज बढ़गया.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० ता० २० जमादियुल्अव्वल = ई० ता० ४ डिसेम्बर] को उक्त दोनों साहिबोंके उदयपुरसे चलेजानेपर महता शेरसिंहसे महाराणा ज़ियादह नाराज़ हुए, और दिन ब दिन सर्दारोंका बखेड़ा बढ़ने लगा. पोलिटिकल एजेएट टेलर साहिबने सर्दारोंको साफ़ कहदिया, कि तुम और महाराणा साहिब आपसमें समझलो, हम दस्तन्दाज़ी नहीं करेंगे (१). इस जवाबको सुनकर सर्दारोंने यह समझलिया, कि हमको बखेड़ा बढ़ानेकी इजाज़त मिलगई.

---

(१) इस समय पोलिटिकल एजेएटको लाज़िम था, कि महाराणा साहिबकी वाजिबी हुकूमतके मददगार होकर उसमें ख़लल न आने देते.

अब सर्दारगढ़ याने लावा और बोहेड़ापर भींडर वालोंके हमले होने लगे; उक्त दोनों जागीरदारोंने खूब मुक़ाबलह किया. लावाके शक्तावत चत्रसिंहके चचा सालिमसिंहका गांव कुंडेई, जो १३ वर्षसे ज़ब्त था, भींडरवालोंकी मददसे वापस उसके क़ब्ज़हमें आगया, और सींगोलीके बाबा मानसिंह पूरावतने मेवाड़में लूटमारका बाज़ार गर्म किया. महाराणाने लावाके ठाकुर मनोहरसिंह और बोहेड़ाके रावत् अदोतसिंह (उद्योतसिंह) को मदद देकर भींडरके ठिकानेको बर्बाद करनेका हुक्म दिया, और कुंडेईपर फ़ौज भेजकर सालिमसिंहको वहांसे निकालदेनेके बाद वह गांव जमादार ख़ाजबख़्शको जागीरमें देदिया, जो सिंधी मुसल्मानोंका सरगिरोह था. इस क़िस्मकी बातोंसे मालूम होता था, कि मुल्कमें ज़रूर बग़ावत पैदा होजावेगी, और यदि महाराणा तन्दुरुस्त रहते, तो किसी न किसी ठिकानेदारकी बर्बादीमें भी कमी न रहती, परन्तु महाराणाके शरीरकी हालत दिनोदिन बिगड़ती गई, यहांतक कि उसी बीमारीसे उनका देहान्त होगया, लेकिन् उन्होंने अख़ीर वक़्ततक भी अपनी बहादुरानह हिम्मत न छोड़ी.

अब हम सर्दारोंके बखेड़ेका हाल ख़त्म करके महाराणाके समयके दूसरे हालात लिखते हैं, याने अव्वल तो सती होनेके रवाजपर वह्स बढ़कर उक्त महाराणाके साथ ही उसका ख़ातिमह हुआ, दूसरे डाकिन व जादू वग़ैरह बातोंपर मुज्रिमोंको सज़ा देनेके बारेमें भी खूब वह्स हुई. लॉर्ड हेस्टिंग्ज़, गवर्नर जेनरल हिन्द, ने पहिले सतीके रवाजको बंद करनेकी राय दी थी, जिसकी पैरवी समय समय पर होती रही, परन्तु राजपूतानहकी दूसरी रियासतों वालोंने इस मुआमलहमें उदयपुरकी आड़ ली, इसलिये महाराणा जवानसिंहके वक़्तसे पोलिटिकल अफ़्सरोंने इस बातकी कोशिश शुरू की, लेकिन् काम्याबी न हुई. फिर विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में इन महाराणासे इस मुआमलहमें बहुत कुछ लिखा पढ़ी हुई; और जोकि यह बात बहुत बड़ी और तवारीख़में यादगारके तौरपर दर्ज करनेके क़ाबिल है, इसलिये उन काग़ज़ोंकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं, जो गवर्मेंट अंग्रेज़ी और रियासत मेवाड़के दर्मियान बह्सके तौरपर लिखेगये थे, और महाराणाने जहांतक होसका अपनी ज़िन्दगी भर इस रवाजको बन्द करना न चाहाः—

थर्सबी साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्तिश्री सर्वोपमा विराजमांन महाराजाधिराज म्हारांणाजी श्री सरुपसिंघजी बाहादुर जोग्य मेजर थरसबी साहेब बाहादुर लिषावतुं सलाम मालुम होसी, अठारा समाचार भला

छे आपरा सदाभला चाहीजे अपरंच, सती होणेकी चाल जो हे सो इलाकां राजस्थांनमे अवतक कांही कांही होती हे, अर जेसे के डुंगरसुं पड मरना, कुवेमे गिर मरना वगेरे ये वातां मना अर अयोग्य हे, इसी तरेसे ये वात वी हे; ओर जोकि मनुस्मृति याज्ञवल्क वगेरे धर्मशास्त्र इस युगमे प्रसिद्ध हे, अर जिस्के वर्तमान सर चलणा उचित हे उस शास्त्रांमे दगध सती होणेका जिकर नहीं हे, अर देषा देषीसें ये सती होणेका तोर आपमतिसुं पेदा हुवा होगा. इस्मे आत्मघातका अपराधकी प्राप्ति दीसती हे, इस्वास्ते सिरकार दोलतमदार कु पसंद ये हे, के ये आत्मघातका दोपकी प्राप्ति इलाकां राजस्थानमे न वर्ते, इसी कारण आपकु लिषणेमे आता हे, के बोहोत उचित हे, के आप अपने इलाकेमे असी तजवीज करावे के ये रस्म जारी न रहे. जो कोइ ईरादा करे तो उस्कुं अे समभायस करदीजावे, के पतिके लार जलमरनेसे जीवत सतीका धर्म पाले, तो वहोत ही वेहतर हे, अर उस्के पति के हकमे अछा, अर अज्ञानसुं समझायस न मांने, तो उस्की लकडी व आग देणेकी मदत उस्के संवंधी लोग न करे, तो ये चाल आपसुंही सेहज वंध होजावेगा, तो इससे नेकनामी राजस्थानकी सव्र पृथिवीमे प्रसिद्ध होगा; ओर आपके मिजाज मुवारककी षुसीके समाचार लिषणा फुरमावोगे, तारीष १९ दिसंवर संन १८४५ ईस्वी, मिती पोह वदि ६ सं० १९०२.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.
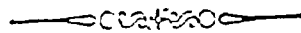
ऊपर लिखेहुए ख़रीतहके साथ इसी मत्लबका एक ख़रीतह कर्नेल रॉबिन्सन साहिबका भी आया, जिसकी नक्ल तवालतके ख़यालसे दर्ज न करके उसके जवाबी काग़ज़की नक़्ल नीचे दीजाती है, जो महाराणाकी तरफ़से उक्त साहिबको लिखागयाः—

कर्नेल रॉबिन्सन साहिबके नाम महाराणाका रुक़ा.
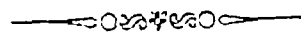
॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री करनेल तामिस रावीनसन साहेव बाहादुर जोग १ अप्रं ॥ षलीतो साहेब को पोस सुद ७ ता० १२ जनवरी संन १८४८ ईसवीको लष्यो सतीका मुकदमामे

आयो, स्माचार मालुम हुवा, ईको जुवाव तो आगे लीप्यो ही हे, सो दुजा राजस्थाना सु ही राजकी वात ठेठ ही जुदी हे, अर अठे तो परमपरायसु होती आवे हे, अर अपणे पतीका ऊधारवा वासते होवे हे, ओर साहेव सासत्र मुरजादकी लीपे हे, सो सासत्रम्हे सती होवाको धरम लीप्यो हे ज्याकी नकलां मेली हे, सो पंडतासे पढाये लेगा. सत तो श्री जी देवे ज्यो करे हे, सो अठे साहेव लोगाही आछा देषी अर कीतावमे लीषी, सो साहेवही जाणे हे, ओर साहेवकी षुसीकी पवर सासता लीषावो करोगा, संवत १९०४ म्हा सुद ८ सुनेऊ.

सर हेन्री लॉरेन्स साहिवका ख़रीतह.

॥ श्रीरांमजी. ॥

॥ स्वस्ति श्री सरव ओपमा विराजमांन लायक महाराजाधिराज महारांणाजी श्री सरुपसिंघजी वहादुर अेतान करनेल सर हिनरी मंटगमरी लारनस साहव वहादुर लिषावतुं सलांम मालुम होसी, अठाका समाचार भला छै आपका सदा भला चाहीजे अपरंच, इसारा सदरका ये था, के किसी वकत आपसे वीच मुकदमे मना होजाणे रसम षराव सती के जिकर कीआ जावे, किसवासते के ये वात न्याहेत वद हे ओर सती होणेसे जीव लोगांका मुफत जाता है, इसवासते मेंने आपसे जिकर इस्का वषत मुलाकातके मुफ-सल कीया था तो आपने फरमाया था, के जेपुरकी सिरकारसे जो तजवीज इसके वंध होनेमे हुइ है ऊस्कुं देषेंगे ओर कुछ तजवीज करेंगे, सो अव इन दिनांमे अेक नकल इस्तहार जारी कीयाहुवा सिरकार जेपुर, लिषेहुवे भादवा सुदि ३ संवत १९०३ की लफ रुवकारी साहव पुलटीकल अजंट वहादुर राज जेपुरके हमारे पास आइ, ऊससे मालुम हुवा, के ऊनुंने अपने इस्तहारमे मददगार वगेरेकुं मवाफक षुंनीके समझकर सजा देनेके वासते लिषा है, ओर अवतक वाद जारीहोणे इस्तहार मजकुरके वंदोवस्त भी हरतरेका वास्ते मनाइ सती होनेके रषते हे, इस्वास्ते नकल ऊस इस्तहारकी इस परीतेमे आपकी पिदमत मुवारकमे भेजी जाती हे, ऊस्के मुलाहजेसे आपकुं मुफसल हाल मालुम होगा, ओर ऊमेद हे, के आप रहमदिलीसे वासते वचाणे जीव ओरतांके इस वुरी रसम सतीके वंध होणेके लीये अेसी तजवीज माकुल फरमावेंगे, के इसमे

आपकी वहोत नेकनांमी होगी ओर ये रसम वद वीलकुल वंध होयजावेगी, ओर ये भी आपकुं मालुम होय के अव वास्तै वंध करदेने इस रसम परावके तमाम हीदुस्थांनमे वहोत वदोवस्त होयगया है ओर राजस्थांनमे भी रईसांने इस्तहारात अपनी अपनी रियास्तमै जारी फरमाये है ओर ऊसीसे रोज वरोज अे रसम वंध होती जाती है, अर दिन वदिन साथ जोरके फेमायस करणेसै, जो सती होनेका इरादा करती थी, वोह वंध होगई. अगर आप थोडासा षयाल इस नेक वातपर फरमावेंगे, तो जलद इस रसमका वंदोवस्त होयजावेगा, ओर आपके मिजाज सरीफकी षुसीके अहेवाल लिषाणेसै हमेसां षुस फरमाते रहोगे, तारीष ७ अगस्त सन १८५४ इस्वी, मिती सावण सुदि १४ संवत १९११ का, मुकाम आवुजीसुं. अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

जयपुरके इश्तिहारकी नक्ल.

॥ श्री ॥

अंग्रेज़ीमें दस्तख़त.

॥ नकल इस्तहार राज सवाई जेपुरकी तरफसै

॥ पहलेसे अेसा दस्तुर देषा देषी चला आता है, कै हीदुवांकी जातमै कोइ सषस मरजावे तो ऊसके पीछे ऊसकी ओरत जीसकुं ज्यादा महोवत महो होवे, सो जलजावै ओर ऊस्कुं सती नांम रषते है, सो ये वात अव जो चरचा ओर वीचारमे आइ, तो मालुम हुवा, के अजोग अर वेवाजवी है. जीती हुई ओरतका आगमै चाहकर जलणा ये वात वहोत वुरी अर पापकी है, इस्वास्तै इतलाय अर वाकफकारीके वास्तै हुकम इस्तहार जारी कीयाजाता है, कै अव अमलदारी राजमै कोई ओरत सतीकै नामसै जीतीहुई जलणे नही पावे, इसकी पुरी मनाई अर वंदोवस्त रहै, सो सव सिरदार, जागीरदार, भोम्या ओर जीलेदार, थाणेदार, जमादार ओर तहसीलदार, तालकदार वागरह [illegible] ईलाकैदार, नोकर राज अेसा पुषता वंदोवस्त रषै, कै कोई ओरत सतीकै नांमसै जीती-हुई नई जलणे पावै, जो कदाची (त) कोइ ओरत कीसीकै इलाकैमै ये वात होवे,

जीसकी वा ऊस ओरतके वारसां वा आसपासके रहणेवाले वा ऊस्के आग लकडी वागरह मदत देणेवालो वा कोई जाण पुछकर ऊसकुं नही रोकणेवालांके जीमे होगा ओर वो सव यहां वुलाये जावेंगे, ओर जीन जीनके जीमे कसुर ऊस्कुं नही जलणे देणेमे मदत न करणेका ओर ऊस्कु आग लकडी वागरह सामानसे मदत देणेका सावत होगा, वो कसुरवार माफीक अपणे अपणे कसुरके जरुर पुनी समझकर सजा पावेगा. इस वास्ते सवकुं चाहीये, के इस ईस्तहारके मजमुनकुं अछी तरह स्मझकर ओसा वंदोवस्त रपो, के फेर इस राजके ईलाकेमे कोई ओरत जीती हुइ जलणे नही पावे, मिती भादवा सुदि ३ सं० १९०३ का.

वीकानेरके इश्तिहारकी नक्ल.

॥ श्रीः ॥

॥ नकल प्रमाणे असल
द। पं। धनराज.

अंग्रेज़ीमें दस्तख़त.

॥ नकल ईस्तहार जो महाराजे साहव वहादुर वीकानेरने वास्ते वंध करणे सतीके जारी किया. । अपरंच सती होणेमे सिरकार अंगरेजीमे आत्मघात अर पुंन मुजव पापरी जाहर हुई, तेसुं सतीरी रसम वंध होवण वास्ते सिरकार अंगरेजीरी वहोत तकरार वा ताकीदी छे, तेसुं सती वंध करणारो ईस्तहार तो मिती महा वदि ५ ने श्री हजुररे हुकम मुजव जारी हुवो छो, पण करनेल सर हिनरी मेंटगमरी लारनस साहव वहादुररो सती होवे जेने मने न करे वा मदत सती होणेमे देवे तेने सजा संगीन देणेरो परीतेमे लिख्यो आयो, तेसु श्री हजुरसुं फुरमायो छे, सव ऊमरावां, सिरदारां, जागीरदारां, आंमलां, तहसीलदारां, जिलेदारां, थांणेदारां, कोतवालां, भोमीयां, साहुकारां, चोधरीयां, रहीयत वगेरे सवने ताकीदीरे साथ पवर करदे, जासु असो पको वंदोवस्त अपणे अपणे तालुकेमे रापे, सु सती होवे तेने ताकीदीरे साथ समजायस अर असी तजवीज करे, सो सती न होय सके वा ऊसके घरवालां वा भाईये वा सनमंदवालांसुं भी ताकीद तकरार करदेवे, सु ऊसकी मदत कोही भी न करे; और सांमी वगेरे जिता समाध लेवे आनि गडजावे छे, सो रसम वंध करदेवे. कदास सती होणेमे वा समाध लेवे जिसकुं सिरदार, जागीरदार, वा आंमल तहसीलदार, थांणेदार, कोतवाल वगेरे श्री दरवाररो मुलाजम मने न करसी ज्यां ज्यांने नोकरीसुं मोकुफ कर

जरीमानो लीजसी, बलके केद वा सजा भी सकत मिलसी, ओर सती होणेमे वा समाध लेणेमे मदत करसी, ज्यांने सजा सकत होयकर केद कसुर माफक होसी, संबत १९११ मिती म्हा सुदि १३.

ज्यॉर्ज लॉरेन्सके नाम महाराणाके खरीतहकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ पलीतो नीमचकी छावणी करनेल जारज लारनस साहेब बाहदरके नामे तीरी नकल——————

अप्र, पलीतो साहेवको वेसाप वीद १३ तारीप १४ अपरेल सन १८५५ ईसवीको लीप्यो आयो, समाचार मालम हुवा, साहेव लपी के भरोसा हे सतीका होणा मोकुफ करे, ओर आप वार वार फरमाते हे, के सरदार हुमारे केणेमे न्ही, ईसवासते हुकम जारी करणेमे देर हे, सो मुनासव हे के ईसतहार ईलाकेमे जारी फरमावे; अर अव जो के कोलनामा वणगया हे, सो आप सरव सरदाराकु मुनाई सतीका करे, अलवत येसेई काममे आपके हुकमसे वारने होगे अर ज्यो हुकम ऊपरात अमलमे लावेगा, तो वो मुजरम सीरकार गीणा जावेगा, सो तो ठीक पण आगे डाकण, भोपा तावे लण्या माफक ईसतहार गया, सो अदुल हुकमवाला कतराक सीरदार रसीद वी न्ही लषी अर जेल्या वी न्ही, सो आगे ईतला करीही, जीसु मुनासव तो या हे, के सब सीरदारने पगा लगाये हुकमप्र अमल करावे, जदी हुकम दे सला मीलाये पकीकर लपदा, क्योक अवारु करदेवामे ज्यो सीरदार अठाकी मुरजीम्हे हे ज्या प्रे दोसण काडेगा, जीसु अठे तो साहेवकी सलाह मंजुरडी हे, सो रुवरु वाने हुकम देर लपा तो ठीक हे, ओर साहेवकी पुसीकी षवर सासता लपवो करोगा, सवत १९११ व्पे वेसाप सुद १३ भोमे.

ज्यॉर्ज सेंटपात्रक लॉरेन्सका खरीतह.

॥ ४४ ॥ लंवर १ श्रीरामजी १

१ ॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरव ऊपमा बीराज्मांन लायक महाराजा धिराज महाराणाजी श्री सरुपसींघजी साहेव बहादुर ऐतांन करनेल जारीज सेटपातरक

लारनस साहेब बहादुर ली॥ सलांम मालुम करावसी, ईठारा स्मांचार भला हे आपके सदा भला चाहीये, अपरंच ईन दीनामे षुलासा चीठी कोरट अफ डरकतरस ईस्मज्मुन का आया, के रसम मारपीट ओर जानसे मारडालणें, तोहमत डाकणसे सब राजपुतानेमे मोकुफ हुई, सो श्री महारांणा साहेब वाली ऊदेपुरने भी सबसे पीछे बमुजीब स्मझाणे साहेबांन ईजंट ईस रस्मकी मुमानअत कबुलकीया, ईससे भरोसा हे के सती होणेकु जलद मोकुफ करेगे; जोक सतीके बाबमे आप बारबार फरमाते हें, के सीरदार हमारे केहणेमे नही ईसवासते हुकम जारी करनेमे तवकुफ हे, सो हमारी रायमे ये मुनासीब हे, के ईसतहार मनादी सती होणेका सब मेवाड ईलाकेमे जारी फरमावें; ओर अब जोक कोलनांमा बणगया हे, आप सरबे सीरदारांकु हुकम मनाई सतीका करें, अलबते असे अेहकांममें आपके हुकमसे सीरदार बाहर न होंगे, ओर जो हुकम ऊपरांत अमलमें लावेगा, तो वोह मुजरीम सीरकार गीणा जायगा; ओर मीजाज मुबारीककी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसीं, स्मत १९१२ बेसाष बदी १३, तारीष १४ अपरेल सन १८५५ ईसवी. अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

ऊपर दर्जहुई तह्रीरोंके बाद महाराणाने भी एक हुक्म इ्लाक़ह मेवाड़में जारी किया, जिसका मज़्मून नीचे दर्ज कियाजाता हैः–

महाराणाकी तरफ़से मेवाड़ इलाक़हमें हुक्म जारी
हुआ, उस मुसव्वदहकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ अप्रंच॥ कोई कोई सती वे हे, सो वीका धणीको तो मोह अर वीका घरकाकी अणबणतसु वा वीके बेटा वा बेट्या परणावाका दुपसु वा करजदारी वा घरमे षरच जादा वा पावाने न्ही मीले जीसु वे, सो या बात बेस्मालकी होवे हे, जीप्र यो हुकम ईत्रा जणाने स्मसत मेवाडका ऊमराव, भाई, बेटा, ठाकुर लोग, कामदार, सासणीक, पटेल, पटवारी, सेणा, भोम्या, गरास्या ओर स्मसत लोगाने, सो ज्यो फतुर करे जीने तो बीलकुल रोक दो, अर ज्यो वीका घरकाकी अणबणतसु वा वीका पावंदका मोहसु वा वीके बेटा बेटयाने परणावा

का दुषसु वा करजदारी वा घरमे षरच जादा वा षावाने न्ही मीले जीसु व्हे, जीने आछा स्मजावज्यो, वा स्मजायासु मानलेवे तो ऊपली कलम लपी हे, जी मुजब वीको हक जठे पुगतो व्हेगा, जठासु कराऐ दीदो जावेगा, अर वा जीवेगा जत्रे रोठी कपडो वीने श्री द्रबारसु मीलेगा, जीसु आछी त्रेह समजावाम्हे पाछ राषो मती, अर फतुर करवावालीके तगसीर वेगा

यो हुकम प्रगणा वालाने सुणाअे दीदो, अर लपाये गयो पको हुवा, सं० १९१३ सा० सुद १२ बुधे.

ऊपर लिखा हुक्म जारी होनेके बाद भी इस मुआमलहमें पोलिटिकल अफ्सरोंसे बहुत कुछ तह्रीरी बहस होती रही, उन काग़ज़ोंकी नक्लें नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

सर हिन्री लॉरेन्सका ख़रीतह.

॥ श्रीरामजी ॥

॥ स्वस्ति श्री सर्वोपमा विराजमांन लायक महाराजाधिराज महारांणाजी श्री सरुपसिंघजी बहादुर एतान् करनेल सरहिनरी मंटगमरी लारनस साहब बहादुर लिषावतं सलांम मालुम होसी, अठाका संमाचार भला छे, आपका सदा भला चाहीजे अपरंच, षरीता आपका लिषाहुवा मिती सावण वदि ७ संमत १९१३ का वजबाव षरीते हमारे के, कि जो वीच मुकदमे सतीके बतोर सलाह बतारीष ५ जोलाइ सन हालकुं लिपागया था आया, ऊसके मजमुनांके पडनेसे किसी तरेकी दिलजमई हमारी नही हुई, किस वास्ते के आपने ऊसमे बहोतसी सिकायत अपणे सिरदारांकी तो लिषणी फरमाई, लिकन वो बातें कि जो हमने लिषी थी अर वो जरुरी बातें थी, ऊनका जवाव आपने कुछ नही लिषणा फरमाया; अब हम फेर आपकी इतलाके वासते लिष्यो हे, के हमने सुणा हे, के ईन दिनांमे अेक ओर भी सती हुइ, ओर वो ओरत सती होणे वाली लुगाइ अेक सषसकी थी, के वो मुलाजम राजका था, ओर ये सती पास शहर ऊदेपुरमें आपकी निजरके नीचे हुइ, ओर जो जो बातें कि हमने पहली सतीके बाबत लिषी थी, वो सब बाते इस सतीके वास्ते भी इलाका रपती हे, हमकुं अफसोस हे, कि आप हमारी सलाह दोस्तांनापर अमल करणेमे फरक करते हें, ओर आप सिरकार

अंगरेजीसे तो हर तरेकी मदत व सलाह चाहते हैं, लिकन आप आपणा चलण व रवईया असा रपते हैं, के जीससे ये जाहर होता हे, के जीन वातांकी के सिरकार अंगरेजीकी चाहना वपुसी हे, ऊनपर अमल आप नही करेंगे; साहव पुलटीकल अजंट वहादुर मेवाड अर हम ये चाहते हे, के आपके दोसत वणे रहे, अगर आप भी इस वातकुं चाहे, ओर अव व निजर असी वातांके कि जो आपकी तरफसे होती हे, हमने चाहा था, के आपके वकीलकुं यहांसे रुपसद देदी जावे, लिकन जो के सिरदार सुलुंवर, भीडर वगेरा कि सिरकसी व वरपीलाफी आपसे रपते हे, इस सववसे हमने वकील मोसुफकुं यहांसे रुपसद नही कीया, अर ये ही लिहाज रपा, कि वकीलकुं रुपसद होणेमे आपकी कुछ हतक सिरदारांमे न होय, ओर आपके मिजाज मुवारककी पुसीके अहवाल लिपावसी, तारीप २ सितंवर सन १८५६ इसवी मिती भादवा सुदि ३ संवत १९१३ का.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

नीमचकी छावणी महता शेरसिंह वग़ैरहके नाम पंचोली हरनाथ व ढीकड्या उदयरामका काग़ज़.

॥ श्रीरामजी.

नक़ल.

यो कागद् घरमें डोल्यो है, सो उठै उजागर नहीं करेगा.

॥ सीध श्री मीमचरी छावणी सुभसुथाने स्त्रव ओपमा लाऐक म्हेताजी श्री सेरसीघजी श्री गोपालदासजी श्री ऊरजणसीघजी एतान श्री ऊदेपुरथी पंचोली हरनाथ, ढी० ऊदेराम लीपावता मुजरो वाचसी, अठारा समाचार श्री जीरी सुनज्र क भला हे, आपरा सदा भला चाईजे, अप्रंच॥ श्री जी हुकम कीदो हे, सो सतीरा मुकदमा म्हे हद सुदी ताकीद आवे हे, सो ईरो अठे तो वडो वीचार लाग रयो हे, मने करवा को हक हे जीमाफक करां, प्रंत ईणी सीवाऐ न्ही माने जद कसीतरेह करां, आपणां घर म्हे सतीका सरापरो पण डर हे, आगे आगे ई सराप हुवा जे आज दीन ताई भुगते हे, जीसु म्हाने तो अठे काही ऊपजे न्हीं, अठे तो या हे, सो वीने वरजा, लालच देवां, डर वतावां, ई सवाऐ पाच रुप्याको परच वे तो या लोगारो कहणो रापवाने भुगतां, प्रंत एकाएक जवरी कसीतरेह करां, अर आपीयाने काहा, सो ये करलो तो कोई भला घरकी तया अटकती वात वे, ने वे जवरी कर हात पकडे, तो ईको वी

बीचार हे, जीसु अबे आपरे ईरी नजरम्हे काई आवे हे, अठे तो ईसतहाररो मसोदो करणो ने लीषावट सारे करणी जीरो तो मसुदो मेल्यो हे सो आप बाचोईगा, ओर या व्हेजावे सो बरज्या स्वाई होजावे, तो वीके जरीबानो करां, असी बात वेजावे तो ठीक हे. दुसरु ओर बात तो काई बी अठे नजरम्हे आवे न्ही, जीसु आगे पण भाई स्वाईसीघजी आपने लीष्यो हो, सो आप तीनही जणा डाकमें बेठ अठे आऐजावो. अर श्री जीरा मुडा आगे ईरी रदलबदली कर घरम्हे बीचारां, क्युं या बडी बात हे, अर आगासु बरसां लग बात रहे जसी हे, जीसु ऊठे आपरी नजरम्हे आवेजावे, अर साहेबने राजी राषने नीकास अठे आवारो काढलो, तो घणी आछी हे, अर या आपने न्ही तुले, तो ईरो बीचारने जाब लीषे, जी थोरे श्री जी मे मालम करां; प्रंत अठे आऐजावे, अर आछीतरे मे बीचारां जद कोई बात दीषे, जीसु आपने तुले ज्यो जाब लीषेगा; ओर वे तीन बाता हे सो तो आपने आगे षुलासा हुकम करही दीयो हो, सो सुबो मीट्या अर दुसरी सारी बाता लीषावटमे वेजावे पकी, जद दुजी काई करणी है, प्रंत दोई आढी सुबो आवे गयो, जीसु सुभो मीटे ज्युं आप करवाम्हे आवे, ओर तो जत्री बात ही, सो तो आपने आगे लीषाऐ दीदी है वी परमाणे आप सारी नजरम्हे करेईगा, ओर कत्राक स्माचार भाई स्वाईसीघजीरा कागदसु जाणेगा. अठा लाऐक काम काज वे सो लीषेगा, सं० १९१३ भा० सुद ९.

सर हेन्‌री लॉरेन्स साहिबके ख़रीतहकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री सर्वोपमा विराजमांन लायक महाराजा धिराज महाराणाजी श्री सरुपसिंघजी बहादुर एतान, करनेल सर हिनरी मंटगमरी लारनस साहब बहादुर लिपावतुं सलाम मालुम होय, अठाका समाचार भला छे, आपका सदा भला चाहीजे, अपरंच लिपणे साहब पुलटीकल अजंट बहादुर मेवाडसे न्याहेत अफसोसके साथ ये मालुम हुवा, के इन दिनुंमें पास सहर ऊदेपुरमे आपके आंपांके सांमने अेक सती होगइ, अगरचे

इन दोय वरसके अरसेमे केइ दफे करनेल जारज लारनस साहब बहादुरने अर हमने अछी तरे आपसे जाहर कीया, के इस रसम बद, यानि सती होणेसे हमारी सिरकारकु विलकुल नफरत व नापसंदगी हे, अर इरादा सिरकार दोलतमदारका इस रसम षराबकुं विलकुल मोकुफ व बंध करणेका हे, तो आपने हर वषत पीछा येही फरमाया, के सतीके मोकुफ करनेमे ओर तो कुछ कवाहत व हरकत नही हे, सिरफ इतनी ही बात हे, के अगर हम इस रसमकी मनाइ वासते हुकम देवेंगे, तो हमारे सिरदार लोग कबुल व तामील ऊसकी न करेंगे, हमने ईसी लिहाजसे अर भी ब पयाल कमजोरी हुकुमत, आपके ताकीद व तकाजा वासते विलकुल बंध करणे इस रसम पराबके जेसा, के ओर रइसां यानि वीकानेर व अलवरपर कीया वेसा आपसे नही कीया; मगर बहोत ऊमेद थी, के आप मकदुर भर अपने मुलकमें सती होनेकी मनाही करनेमे व रोकनेमे षुब कोसस फरमावेंगे, लिकन अफसोस हे, के आपने इस बातमे, यानि वास्ते मोकुफी व मनाही रसम सतीके आजतक कोसस नही फरमाइ, बलके यकीन हे, के बिलकुल कुछ भी षयाल तवजेही इसका आपने नही कीया, अर फेर जो हमने आपके वकीलसे अहवाल इस सती होनेका केइ वार पुछा, तो महीने भरके बाद यानि तीन रोज गुजरे होवेगे, आपके वकीलने हमसे बयांन इस सती होणेका कीया हे, लिकन आप विचारके देपीये, के इस सती होणेमे जवाब माकुल देणेकी जगा अब आपकी तरफसे नही रही हे, किसवासते के इस वारदात सतीकी होणेमे किसी सिरदारका इलाका व वासता नही था, ये सती होने-वाली ओरत वेवा पास आपके राजधांनीसे सेहर ऊदेपुरकी रहनेवाली अर बिलकुल आपके जेर हुकम थी; ओर ये भी आपकुं मालुम होय, कि करनेल जारज लारनस साहब बहादुर अछी चाहणेवाले आपके दरबारके व हर बातमे दोसत मददगार जेसे आपके हें, वेसे दुसरां किसीके नही हे, ऊनोंने केइ दफे हरेक बातमे आपकुं सलाहां बहोत नेक दीवी थी, लिकन आपने ऊसपर कुछ पयाल नही फरमाया, तो इसी सबबसे करनेल साहब बहादुर मोसुफ अपणी तरफसे ये राय लिपते हे, के महेकमा अजंटीका यहांसे ऊठ-जावे अर दरबार अपने कांम काजके अंतजांम बंदोबसतमे पुद मुपत्यार अर भले बुरे कांमके जमेवार रहे, तो इस सुरतमे हमारी दांनसतमे आपके हकमे किसीतरे से फल इसका अछा नही होगा; ओर आपने साहब अजंट बहादुर मोसुफके नेक सलाहां देणेपर पयाल नही फरमाया, बलके हमारे अछी सलाहां कितनीक बातांमे देणेपर भी अमल नही कीया, इससे अब हमारा इरादा हे, के ब सलाह करनेल जारज लारनस साहब बहादुर अजंट मेवाडके रपोट इसकी सदरकु करें, लिकन फेर भी पेहले रपोट करणेसे दोसतीकी राहसे येही मुनासब हमने जांणा, कि

फेर अहतयातन आपकुं आगाह करदीया चाहीये, इसवासते आपकुं लिपणेमे आता हे. के अब भी आप ऊपर नेक सलाहां साहब पुलटीकल अजंट वहादुर मोसुफके अर भी हमारे पयाल फरमायके अमल करावें, तो वहेतर हे; किसवास्ते के ये वात जाहर हे, के आपकुं अपणे मुलक पालसेपर विलकुल ईपत्यार हे, अर जो मुलक कवजे सिरदारांके हे, उसमे भी च्यार हिसेमे से तीन हिसेसे ज्यादे सिरदार भी आपके तावे व कवजेमे हे, इस सुरतमे अगर आप हुकम जारी करके ऊसकी तामीलमे कोसस फरमावेंगे, तो जो लोग के ना फरमांन हे, ऊनका भी तावेदार करलेणा कुछ मुसकल नही होगा. अब हिंदुसथानमे सिरफ मेवाडकी रियासतमे सती होणेकी रसम मोकुफ न्ही होई हे, वावजुद इस्के के जितनी महरवांनी व रियायत सिरकार दोलतमदार अंगरेजीकी तरफसे इस रियासतपर हे, ओर रियासतपर नही हे; ओर ये भी आपकुं जाहर होय, के सती होणेकी मनाहीके वावत हजुर साहवांन सदर अर कोरट अफ डरकटरसकी तरफसे ओर हुकम भी आये हे, लिकन हमने लिपना जवाव ऊस हुकमां का इस परीतेके जवाव आपकी तरफसे आणेपर मुलतवी रपा हे, इस वासते आप कुं लिपणेमे आता हे, के आप जवाव इस परीतेका जलदी भेजणा फरमावे, अर आपकुं ये भी मालुम रहे, ये मुकदमा वहोत भारी हे इसकुं छोटी वात नही समजीये, ओर नकल इसतहार (१) महाराजे साहब वीकानेरकी, जो सतीकी मोकुफी वासते जारी कीया, आपके मुलाहजेके वासते इस परीतेमे भेजी जाती हे, के मरातव ऊस्के आपकुं मालुम होय; ओर आपके मिजाज मुबारककी पुर्सीके समाचार लिपावसी, तारीप ५ जोलाइ सन १८५६ ईस्वी, मिती असाड सुदि ३ संवत १९१३ का.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

मेवाड़के पोलिटिकल एजेंटके काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरांमजी.

॥ २९१ ॥ नंवर

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभ सुथांने सरवओपमां वीराजमांन लाअक म्हाराजधीराज म्हारांणांजी श्री सरुपसीघजी साहेव वहादुर अेतान मेजर रावरट लवीस टेलर साहेव व्हादुर ली ॥ सलाम मालुम करावसी, अठाका स्मांचार भला हे, आपका स्दा भला चाहीजे, अपरंच वकील मेवाडने हमकु षवर दीया, के सनवाड ईलाके मेवाडके

(१) इस इश्तिहारकी नक्ल पृष्ठ २०२० में पहिले दर्ज होचुकी है.

जागीरदारके यांहां सती होगई, ईस बातके सुननेसे अफसोस मालुम हुवा. अब श्री दरबारने जेसा कुछ तजवीज ईस अमरके मोकुफ व सजा देनेकी कीहो, ऊससे ईतला फरमावें; दुसरे ये, के बोहोत रोज होगअे, के हमने डीगरीके रुपीयाका हीसाब बतलब रुपीये भेजा, ऊसका आजतक कुछ जवाब न आया, बलके परीते मुकरर सीकरर मीयादी आठ रोज बतारीप ६ माहे जोलाई सन हाल बतलब रुपीये मजकुर भेजा, मगर रुपीये मजकुर दापल न हुवा; तीसरे ये हे, अब ईतना अरसा हुवा, के बाबत मुबलगान हीसाब नीमांहेडे हमने ईतला की जीसका भी ज्वाब नही आया, अगर आपकी मरजी भेजने रुपीये मजकुर माफीक मनसाअे हुकम गवरनर जनरल व्हादुर न हो, तो हमकु ईतला देवे, के हम रपोट ईसकी सदरकु करे; ओर मीजाज मुबारीककी पुसीका स्मांचार हमेसे लीषे, ता० २९ माहे अगस्त स० १८६१ ईसवी, मीती भादवा वद ९ स्मत १९१८, मुकाम छावणी नीमच रोज बीसपतवार. अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.
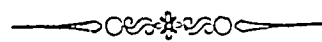
ملاحظه شد

ईडन साहिबके नाम महाराणाके रुक्केकी नक्ल.
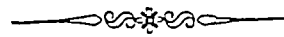
॥ श्री ॥

॥ स्वस्ति श्री मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेब बाहादुर जोग, अप्रं पलीतो साहेबको ता० २१ जोलाई संन १८५९ ईसवीको लीप्यो आयो समाचार मालम हुवा, साहेब लषी के बीच ईन दीनोके आवणे पत अंगरेजी कपतान सोर साहेब बाहादुर अजंट मेवाडकेसे दरयाफत हुवा, के बीच पास बागोरके वारदात सतीकी हुई, आगे ईससे बीच मुकदमे बंदोबसत ईस रसमके करनेल सर हीनरी मंटगुमरी लारनस साहेब ओर दुसरे साहेबांन अजंट बाहादुर राजपुतानेने लीपना कीया हे, ओर अे रसम अेसा नांपसंद ओर बरपीलाप तबीएत सीरकार अवद पाएदारके हें, के बीच बयानके न्ही आता, ओर आप सबब नेक ईरादे सीरकार दोलतमदारकेसे जाहार होनां पेरपवाई ओर दोसतीका करते हे, फेर मालम न्ही होता, के कीसवासते ऊपर ऊसके पयाल न्ही होता हे, सो साहेब दोसतीकी लपे सो, तो युई हे, के अठे तो सीरकार अंगरेजीकी दोसती-ज चावा हां, क्युके यो राज तो फगत सीर (कार) अंगरेजीकी मदतसुई सरसबज हुवो अर होवे हे, सो रात दन श्री जी म्हाराजसु याही अरज करबो कराहां, के सीरकार

अंगरेजीको ईकबाल दनभर दन जादा वदे जीकी अेन कुसी हे. आगे ईस मुकदमामे साहेव लोगाकी लीपावट आई जीको जुवाव तो पाछो मुनासव, ओर रसम ईस मुलक मे सासत्र मरजादसु जारी हे जीमाफक सासत्रका वचनाकी नकल समेत लप्यों गयोई हो, सो साहेवके दफत्रमे मोजुदई हे. ई राजकी अर दुजा रजवाडाकी कत्रीक चालके वडो फरक हे, ओर जगा तो कठे हुई कठे न्ही वी हुई, अर ई राजमे तो या रसम पुरा धरमकी अर परंमपरा श्री रामा अवतारसु चली आवे हे, जीको सव हाल टाटनामा कीताव मे वी लप्यो हे, सो साहेव देप्योई होवेगा, तथा अठासु नकल कराऐ करनेल सर हीनरी मंटगुमरी लारनस साहेव वाहादुर पास संवत १९१३ का काती वीद १२ का पलीता लार भेज्यो हो, सो साहेव मुलाऐजे करलेवे. म्हाकी त्रफसु रोकवाको हक, मने करवो, डर वनावणो, पाणा पीणा वगेरे हरसुरत तसली करवाको हे ज्यो कराई हां, अर ई मीवाऐ नईज माने अर वीरा पावंदकी लार जावोईज ईकत्यार करलेवे, जीसु तो धरम के सवव लाचारी हे. अर साहेव ईने आतमहत्या गणे सो नही हे, सती तो च्यारही जुगमे वेती आई हे, या वात अफरादकी वेती, तो आजताई जारी न्ही रेहेती. अर सीरकार दोलतमदार ज्यो साराको वरण, धरम आप आपको रापे हे, सो अवार श्री वादसाजादी को ईसतहार भेज्यो हुवो नवाव गवरनर जनरल साहेव वाहादुरको आयो, जीमे वी राहा-मरजाद ओर दीन ओर धरम वावत मजमुन लप्यो हे, सो साहेव जाणेई हे, अर अठे ज्यो म्हाराज धरमकी वात हे, सो साहेव ई ईस मुलककी राहा रसम ओर धरमकी वातसु आछा वाकव हे; ओर साहेव लपी के पवर ईस वारदातकी साहेवान आली-सान सदरके करी हे, सो म्हारो लपवो तो साहेवने हे, साहेव ज्योई करेगा ज्यो अठा का फायेदा, वेहेत्रीकीज करोगा; ओर साहेवकी कुसीकी पवर सासता लपवो करोगा, संवत १९१६ र्पे भादवा वीद १० भोमे.

महाराणाकी तरफ़से क़लमबन्दीके साथ हुक्म जारी हुआ उसकी नक़ल.

॥ श्रीरामजी.

॥याद ———— सं० १९१६ का का० वुद ५

पेली कलम तो या, के कठेई सती होवाको ईरादो करे, तो वीका गरका समजावे, के

तु सती मत वे, आछीत्रे धमकाअे केवामे बाकी रापे न्ही

गरकाकी नही माने, तो राजसु बरजावे

बरज्यो न्ही माने, तो षावा पीवाका सरतनको लालच देर रोके, जु रुक सके जणी चालसु समजाअे रोके

ई सवाअे न्हीज माने, तो या केणी, के थारे सती होणोई हे, तो माका देसमें मती हो, ओठे जार वे

ईप्र ई न्ही माने, तो अत्री करणी

अेक तो या, के वीने केणी, के तु होवे तो हे, प्रंत थारी प्रतीत माने आवे जु कर, मे थने तालामे जडदेवा, सो तालो आकसमात षुलपडे जद मे पकी जाणा

दुजी या, के हातमे बासदीका अगीरा लीया रहे, जीमे थारो मन माने, गाडी दीषे, जद जावादा

ई सवाऐ वा साचा दीलसु सत करवोई धारले, तो जरीबानो पाछलाके होवेगा, जीरी वीने केदेणी, अर वीरा गरकाने केदेणो, के सलाको पुरो जापतो कर वेठावजो, पछे राजकी त्रफसु समाल रषावणी सो काठ कम न्ही वे, टाटा च्यारई त्रफ वदाऐ दोगा, गीरत, राल, नीचे, ऊपरे आछीत्रे बछाअे देणो, अर काठ नीचे ऊपरे चुणवावाला आछा समालेर चुणे सो डगवा बपरवा पावे न्ही

ई सवाऐ देवगतसु सलामें बेठा पछे मत बीगड जावे, तो ससत्र बगेरे दुजासु कोई मारे न्ही, ऊई बपत देस बारे काडदेणी, या समाल हाकम करे

ई प्रमाणे सारा प्रगणा वाला षाल राष समाल राषे, ई कलमा ऊपर मडी जी बीना पडदा-वाली बारे फरे जीके वासते हे, अर पडदावालीके वासते तालाकी वा अगीराकीज करावणी

सती ताबे कलमा लपाई, जीमे पडदावालीके वासते या चावे, के कदाक ऊठे पुगा पाछे कुमत आअेजावे, तो वीका गरवाला तीरथा मेलदेवे, सो तीरथ सेवन करे, अर पावाने वीका गरवाला पुगावे

ईडन साहिबके फ़ार्सी खरीतहका तर्जमह.

॥ श्री ॥

मामूली अल्क़ाब व आदाबके पीछे-

खत आपका हमारे खतके जवाबमें, जो तारीख़ २१ जुलाई सन् ५९ .ई० को बमुक़द्दमह वारिदात ताज़ह सती होने बागौरमें, और बाज़े मरातिब मुतऋल्लक़ह उसके इस मज़्मूनसे आया, कि आगे बवक्त आने लिखावटों साहिबान ऋालीशानके जवाब मुनासिब मए नक़्ल क़ौलों शास्त्रके लिखना हुआ, और इस राजकी अक्सर रस्मों और दूसरी रियासतोंकी रस्मोंमें बहुत फ़र्क़ है, इस राजमें क़दीमसे रस्म सती होनेकी जारी है, और मना करनेके लिये केवल समझाना, और उसके खाने पीनेको मुक़र्रर करदेनेका वादह करलेना होसक्ता है; इस पर भी जो सती अपने पतिके संग जानाही इख्तियार करे, तो उसवक्त धर्मके लिहाज़से लाचार हैं, यह बात आत्महत्यामें नहीं गिनीजाती है, चारों युगमें जारी रही है, और मलिकह मुऋज़्ज़महके जारी कियेहुए इश्तिहारमें भी दूसरोंके धर्म सम्बन्धी कामोंमें रोक टोक न करना लिखा है; उसकी लिखावट बिल्कुल ज़ाहिर हुई, और उसके बाज़े मज़्मून जाननेसे सबब तऋज्जुबका हुआ, किसवास्ते कि आप फ़ज़्ल इलाहीसे ज़मानहके ऋक्लमन्द और समझदार व दाना सर्दार हैं, और ज़ाहिर है, कि अगले ज़मानह और हालके ज़मानहमें बहुत फ़र्क़ है; क्योंकि जो बातें इस ज़मानहके ऋादमियोंको बहुत दिनोंके तजबोंसे मिली हैं, अगले ज़मानहके आदमियोंको कहां मुयस्सर थीं; और इस बातसे साफ़ ज़ाहिर है, कि अहालियान सर्कार अंग्रेज़ीने केवल दयाकी राह, और ऋादमियोंके जीव बचानेके खयालसे इस रस्मको बन्द करना चाहा है, और जो मिसाल कि मलिकह मुऋज़्ज़महके इश्तिहारमें किसीके दीनमें दख़्ल न देनेका ज़िक्र होनेकी बाबत् अपने खरीतहमें लिखी है, और इस बातके रोकेजानेको इश्तिहारके मज़्मूनके ख़िलाफ़ समझे हैं, सो यह लिखावट आपकी उक्त इश्तिहारके मज़्मूनपर एक हाशियह (नोट) है. इश्तिहारमें ऐसा लिखा है, कि एक दीनको दूसरे दीनसे बढ़कर नहीं समझा जायेगा, और किसीको धर्म सम्बन्धी रस्मोंमें तक्लीफ़ नहीं होगी. खयाल करनेकी जगह है, कि सती होनेकी मनाहीके बाबमें कोई बात ऊपर लिखीहुई दोनों बातोंमेंसे नहीं पाईजाती, न तो एक दीनको दूसरे दीनसे बढ़ाना है, और न किसी ऋादमीको दुःखदेना है, बल्कि इसके ख़िलाफ़ पूरी तज्वीज़ दुःख मिटाने और आदमियोंके जीव बचानेकी है; इसवास्ते मना करना इसका शास्त्रके भी बाज़े क़ौलोंके ख़िलाफ़ नहीं है, और आप

इस कामको आत्महत्यासे अलहृदह समझते हैं, तो बड़ा तअज्जुब है, किसवास्ते कि इस मुआमलहमें अक्ससे आत्महत्यामें कुछ शक नहीं है, और न इसमें दलील करनेकी ज़रूरत है. रहा शास्त्रका हुक्म, सो शास्त्रसे भी निस्सन्देह यह बात आत्महत्यामें ही दाखिल है; अखीर यह, कि जिन बाज़े क़ौलोंपर आप दलील करते हैं, कि इस तरह जीव देना जाइज़ होवे, जोकि उस दलीलसे भी आत्महत्याकी बात झूठ नहीं है, और शास्त्रके अनुसार भी आत्महत्या के सुबूतकी बाबत् यह मज़्बूत दलील है, कि सती होनेके पीछे नारायणबलि ज़रूर करना होता है, और यह बात ऐसी मौतोंपर होती है, कि किसीने बड़ा पाप या आत्महत्या, या कोई दूसरी बात जो ऐसी हत्यासे निस्बत रखती हो, चाहे हरएक मौतके पीछे (नारायण-बलि) होती है, तोभी आत्महत्यामें कुछ शुबह नहीं रहा. हर हालतमें ऊपर लिखी-हुई बातोंसे सती बन्द होनेका क़ाइदह पसन्द करनेमें बहुत गुंजाइश है, लेकिन् आपके इस लिखनेपर, कि अपनेतईं खैरख्वाह सर्कारका लिखते हैं, और इस हालतमें अहालियान सर्कारकी इख़्तियार कीहुई नेक राहपर चलना योग्य था, साफ़ ज़ाहिर है, कि इस रस्मके मना करनेका बिल्कुल इरादह नहीं रखते हैं, बल्कि आपकी नज़र उसके ख़िलाफ़ है. अब इस बाबकी इत्तिला वक़् वक़्पर सद्रको होती है, इसमें खासकर तर्जमह सरिश्तह दोस्तदारका सद्रको लिखेगा, वास्ते इत्तिलाके लिखा है, उम्मेद है, कि दोस्तदारकेतईं मुन्तज़िर खैरियत मिज़ाज आलीका जानकर लिखने शायक़ लाइक़से खुश फ़र्माते रहें, ज़ियादह खुशी हूजियो, ता० २२ नोवेम्बर सन् १८५९ ई०.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

महाराणाका रुक़्का मेजर ईडन साहिबके नाम.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री मेजर वलीयम फरीडरक डीडन साहेब व्हादुर जोग १ अप्र, साहेब मीरमुनसीने भेज्या, सो आयेने अरज करी, के साहेबने अरज कराई हे, के या दो सती हुई अर हमारेसे ईतला न्ही कराई, अर आप सीरकारकी दोसतीप्र ईतना तो नजर रषते हे, अर अे सती होणा सीरकारकु नापसंद, जीसकु आप रोक नही सकते हे, या बड़ा ताजुबकी बात हे. ईस तावे हम पण मुलाषात करणेकु कोई पण न्ही आवेगे, सो सीरकारकी दोसतीपर, तो अठे पुरी नजर हे, जी दनसु अहेदनामो बंध्यो जठासु बराबर मदत

पेरपाड़ी दोसतीग्र नजर हे सो आछा मसुर हे, अर साहेव पण आछा जाणे हे; अर फेर म्हे तो श्री जीसु याड़ी अरज करवो करा के सीरकारको अकबाल दनभर दन जादा वदावे जीमे कुसी हा, ग्रर सतीकी ईीतला नही हुड़ी जीपर साहेव मुलापात करवा ग्रावो भी माफ राप्यो, सो काल तो साहेवको ग्रावो हुवो, अर ग्राज पेली पेल मुलाकात कुसीकी ही, जीसु वकील ईीतला नही करी, दुजु या वात साहेवसु छपा रापवारी वेती, तो ग्रागे ईीतला कु करता. ग्रठे तो साहेवानका पलीता ग्रागे ग्राया जठासु पुरी ताकीद सारे हे; ग्रर वेड़ी जीने वरजावो वा तंगी करवो वा रोटी तावे केवो, जतरो केवारो हक जत्रो करे. ड़ी सवाये जवरीसु वेजावे जीका लाचार. तोड़ी ग्रठे सुणवामे आड़ी के जोदपुर तो ड़ी तावे कलम मनाड़ीकी वंद होगड़ी जठेड़ी जुरमानाकी ठहरी, ग्रर ग्रेक दो जगा हुड़ी जठे जुरमानोड़ी हुवो सुण्यो; भणाये पण दो सती हुड़ी जठे पण जुरमानो हुवो सुण्यो, सो साहेवरी याड़ी मुरजी हे तो, हे तो घणी म्हाका धरमकी वात, पण सीरकारने कुसी रापणा जीतावे ग्रठेड़ी ड़ीका रोकवा तावे सारे फेर ताकीदको हुकंम पुगावा, ग्रर हर सुरत रोकवा तावे केण करवामें कोताड़ी रहे नही, ड़ीसवाऐ कोड़ी ऊरड देर वेजावे, तो वीके वासते जुरमानाकी ठहरजावे, सो ग्राड़ीदे सती वेवा वालाका घरका वीने कदी वेवा नही दे, कु जरीमानासु पाछला वीगडजावे. ड़ी चालसु रुकती रुकड़ी जावेगा, जीमे मजहवकी वात ग्रर सीरकारका हुकमपर तामील. ग्रोर साहेवरो तो वीलाऐत जावो, ग्रर ग्रजंट साहेवको ग्रावो जीमे मुलाकात करवाने साहेव न्ही ग्रावेगा, ड़ीमें तो पुरो हतक हे. म्हारे ज्यो सरकारकी दोसती सवाऐ काड़ी वात हे. यो राज तो सरकारकी दोसतीसु सरसवज हुवो. मुलाकात कीया वना साहेव हरगज न्ही जावे, जीमे म्हाने ग्रेन कुसी हे; ग्रोर कत्राक समाचार मुपजवानी राव वपतसीघजी, कोठारी केसरीसीघजीने भेज्या हे, सो ड़ीतला करेगा. यो राज तो साहेव लोगाकी म्हेनतसु सरसवज हुवो, ग्रर फेर ड़ी साहेब जस्या दाना हे, सो ग्रठाकी ग्राछीज करोगा. ओर साहेवकी कुसीकी पवर सासता लपवो करोगा, सवत १९१७ वर्षे काती सुद ८ भोमे.

मेजर विलिअम फ्रेडेरिक ईडन साहिबका ख़रीतह.

॥ श्रीरामजी १.

॥ स्वस्ति श्री सरव ग्रोपमा वीराजमान लायेक महाराजा धीराज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी वहादुर ऐतान, मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेव वहादुर लीषतं सलाम

मालुम होवे, अठारा समाचार भला हे, आपरा सदां भला चाहीजे; अपरंच प्रीता आपका लीपा हुवा मीती काती सुदी ८ तारीष २० नवंबर सन १८६० ईस्वी वजवात्र पेगामे जबानीके मारफत मोलवी मोहोमद मोहीयुदीनषां मीरमुनसीके दरवात्र होने २ सतीके आपको कहा था, ईस मजमुनसे आया के दरबारकों हमेसां नजर ऊपर दोसती सरकार दोलतमदार ईंगलसीयाके रहती हे ओर रहेगी, ओर हम तो पेसतरसें वसुजव आने परीते साबकके सबपर वासते न होने सतीके ताकीद करते हें, ओर दबागतसें ओर लालच देनेसें मना करते हें, तोभी असा ईतफाक होजाता हे. ईसकी तजवीज युं मनासव हे, के सती होनेवालेके घरके लोगोंपर जुरमाना ठेरायाजावे, तो ऊसके घरवाले ईस पोफसें जुरमाने के सती न होने देवें; ओर ईसी तरें रुकते रुकते रुकजावे. ओर भी जो जवानी मजमुन मीर-मुनसी मोसुफके ओर बयान मेजर टेलर साहब बहादुर पुलटीकल अजंट मेवाडसें मालुम हुवा, आप फरमाते हें, के हम सब तरेकी तजवीज वासते वंद करने सतीके करते हें. लेकीन में येह पुछता हुं, के जोधपुरमें सती बहोत कम होती हे ओर जेपुरमें मुतलक न्ही होती, ईसका क्या सबब हे के वहांके रईसोंका हुकम रईयतपर जारी होता हे, ओर आपका हुकम जारी नही होता ? ओर जरुर हे के हुकम हाकमोंका जारी होवे. लेकीन बहर हाल में आपके ईस नीयेत नेकसें वासते बंद करने सतीके पुस हुवा; ओर ऐकीन हे, के असी तजवीजसे के आप ताकीद भी करें ओर दबागत भी देवें, ओर जुरमाना सतीके घर-वालोंपर करें, येह रसम बीलकुल बंद होजायेगा. अगर पेसतरसें मुजकों ईस नीयतसें आपके ईतला होती, तो में जरुर मुलाकात करता, लेकीन में रवाने वलायेतकों होता हुं, ओर मुजकों ऊमेद कामील हे, के ता मराजीयेत मेरे असे रसुम, जीसमें ना रजामंदी सरकार दोलत-मदार ईंगलसीयाकी हो, ब सबब आपकी नीयेत नेकके बंद होजायेगी, ओर में मुलाक़ातसें बहोत षुस होऊंगा. ओर मेने येहे हाल आपकी ईस नीयेतका जो मुजकों लीपा ओर कहा, सदरमें रपोट कीया, फकत. ओर आपके मीजाज मुबारककी षुसी हमेसा लीपावसी, तारीप २३ नवंबर सन १८६० ईस्वी, काती सुदी ११ समत १९१७ का.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

मेजर आर० एल० टेलर साहिबका ख़रीतह.

॥ श्रीरांमजी.

॥ १८० ॥ नंबर.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरवओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजा धीराज म्हारानाजी श्री सरुपसीघजी साहेब व्हादुर अतांन, मेजर राबरट लवीस टेलर साहेब

व्हादुर लो॥ सलाम मालुम करावसी. अठाका समाचार भला हे, आपका सदा भला चाहीजे, अपरंच दो कीते तरजुमे चीठी मजरीअे अज पेसगाह जनाब मोओला अलकाब नाअव सीकरतर आजम व नीज साहेब सीकरतर आजम मुमालीक हींदुसथांन, अेक लीपाहुवा १६ माहे फरवरी सन १८६१ ई ॥ व दुसरा लीपाहुवा २७ माहे अपरेल संन सदर, व ईस्म जनाब जरनेल जारज सैट पात्रक लारनस साहेब वाहादुर अजंट गवरनर जंनरल राजसथांन व मुकदमे सती व स्माद लफ चीठी अंगरेजी व मुराद ईनस्दाद हसव मनसाहे मजमुंन मुंदरजे चीठीयात मजकुरे वहर अेक रआस्त मुतालक अजंटी मेवाड मोसुल होकर नकल हर दो चीठीआत लफ परीते पीदमत मुवारीकमे भेजकर तकलीफ दीजाती हे, के मजमुंन मुनदरजे चीठीआत व ईलाके मेवाड मुस्तहर कराअे वंदोवस्त करार वाकडी फरमावे, के हरअेक ईलाकेदार मवाफीक मदारज मुदरजे चीठीआत अमल करे ओर वरपीलाफ ऊसके न कीया करे. ईसका वंदोवस्त कराअे, वंदोवस्त ऊसकेसे ईतला फरमावे, ओर मीजाज मुवारककी पुसीका स्मांचार हमेसे लो॥ ता॥ १ माहे जुन सन १८६१ ईस्वी, मीती जेठ वद ९ स्मत १९१८, मुकांम छावणी नीमच, रोज सनीस्त्रवार.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

हिन्दुस्तानके नाइब सेक्रेटरी आज़मकी अंग्रेज़ी चिट्ठीका तर्जमह.

॥ श्री ॥

नक्ल मुताबिक़ अस्लके है, दस्तख़त मुहम्मद मुहियुद्दीनख़ां.

पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़के ऑफ़िसकी मुहर

(अंग्रेज़ीमें दस्तख़त).
आर० एल० टेलर

मुल्क हिन्दुस्तानके नाइब सेक्रेटरी साहिब बहादुरकी तरफ़से राजपूतानहके साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल बहादुरके नाम ता० २७ एप्रिल सन् १८६१ ई० की लिखीहुई अंग्रेज़ी चिट्ठीका तर्जमह.

मुवाफ़िक़ हुक्म नव्वाब मुस्तताब गवर्नर जेनरल बहादुर इन् कौन्सिल, मुल्क हिन्दुस्तानके बड़े सेक्रेटरी साहिबके ता० १६ फ़ेब्रुअरी सन् १८६१ ई० के लिखेहुए काग़ज़ नम्बरी २० की नक़्ल, जो उन्होंने इलाक़ह राजपूतानहमें औरतको

जीतीहुई जलादेने और गाड़देनेके विषयमें भेजा, आपकी सूचनाके लिये इस चिट्ठीके साथ भेजता हूं, कि आप रईसोंको, ख़ासकर वालिये उदयपुरको इस विषयमें सर्कार मलिकह मुअज़्ज़महके मनूशासे वाक़िफ़ करदोगे, और आप खुद इस मुआमलहमें पूरी कोशिश करोगे, कि उक्त रईस लोग ऐसी बेरहम रस्मोंके वन्द करनेका अपने अपने .इलाक़हमें पूरा प्रबन्ध करें- फ़क़त.

तर्जमह चिट्ठी नम्बरी २० लिखी हुई ता० १६ फ़ेब्रुअरी सन् १८६१ ई०, मक़ाम लन्दन, बनाम नव्वाब मुस्तताब गवर्नर जेनरल बहादुर अधिकारी मुल्क हिन्दुस्तान.

जनाबि आली, मैंने साहिब कौन्सिलकी शामिलातसे इलाक़ह राजपूतानहमें विधवा स्त्रियोंको जीती जलादेने और गाड़देनेके विषयकी मिस्लें देखीं. सर्कार मलिकह मुअज़्ज़महको सती और समाधिकी हक़ीक़त दर्याफ़्त होनेसे, जो अक्सर हिन्दुस्तानी रईसोंके इलाक़हमें हुआ करती है, बड़ा अफ़्सोस हुआ; बल्कि जो वारिदात सती की इलाक़ह अलवरमें हुई, गुमान होता है, कि वह सती अपनी रज़ामन्दी और खुशीसे नहीं हुई. उक्त स्त्रीको उसका मृत ख़ाविन्द दिलसे नहीं चाहता था, बल्कि वह कई वर्षसे अपने ख़ाविन्दसे अलग रहती थी. इससे यह शुब्ह मज़्बूत होता है, कि बेचारीको मरवाडाला; इस सबबसे कि ऐसा न हो, उसके हक़को दूसरी विधवा औरतोंके हक़में दख़्ल हो. ऐसे मुआमलह और इरादहके क़त्लमें तमीज़ और तफ़्रीक़ करना मुश्किल है; और आपको हिन्दुस्तानी रईसोंसे बड़ी ताकीदके साथ कहना चाहिये, कि ऐसे मुक़द्दमोंमें वे मुज्रिमोंको सख़्त सज़ा और जुर्मका दण्ड दिया करें. मैं अरसहसे दिली तअल्लुक़के साथ लेफ़्टिनेण्ट इम्पी साहिब बहादुरकी रिपोर्टके आनेका इन्तिज़ार देखरहा हूं, यह दर्याफ़्त करनेकी ग़रज़से, कि उन्होंने ऐसे संगीन मुआमलहमें क्या क्या प्रबन्ध और क्या तज्वीज़ें कीं? .इलाक़ह मारवाड़में सती होनेकी बाबत् मेजर ईडन साहिब बहादुरकी तज्वीज़ें और प्रबन्ध मुनासिब मालूम होते हैं. मेजर ब्रूक साहिब बहादुर तर्जमह करके लिखते हैं, कि महाराजा साहिबने मुज्रिमोंसे रु० १३२००) तेरह हज़ार दो सौ रुपयेकी तादादसे जुर्मानह लेना तज्वीज़ फ़र्माया, यह बहुत ज़ियादह था; बल्कि उस जायदादको, जिसपर जुर्मानह हुआ, नुक्सान भी पहुंचा हो. प्रगट हो, कि अबतक ऐसे जुर्मोंमें सर्कार अंग्रेज़ीने रईसोंके हाथसे मुज्रिमोंको पूरी सज़ा नहीं दिलाई है. यक़ीन है, कि हालके मुक़द्दमहमें महाराजा साहिबने अपने अन्दाज़ और रायमें जितना जुर्मानह वाजिब और इन्साफ़के रू के मुवाफ़िक़ समझा हो, तो साहिब पोलिटिकल एजेण्टको

कुछ इतना ज़रूर और लाज़िम नहीं है, कि वह सतीके मुक़द्दमहमें ज़ियादह सज़ा देनेकी रोक टोक करें. जोकि सर हेन्री लॉरेन्स साहिब बहादुरने राजपूतानहमें सतियोंकी बाबत् अपनी ता० ५ फ़ेब्रुअरी सन् १८५७ ई० की लिखीहुई रिपोर्टमें लिखा था, कि उदयपुरके महाराणा साहिबने सतीके रोकनेसे इन्कार किया, और हिन्दुस्तानभरमें सिर्फ़ एक राणा साहिब हीके इलाक़हमें ज़रा भी रोक या मनादी सती होने, अथवा समाधि लेनेकी नहीं हुई. मैं अभिलाषा रखता हूं, कि आप मुझको इत्तिला दोगे, कि आपने क्या क्या फ़िक्र और तद्बीर इस बातमें महाराणा साहिबके इन्कारको छुड़ाने या दूर करनेमें की. सर्कार मलिकह मुअज़्ज़महकी रायमें यही है, कि ऐसी वह्शी (असभ्य) और ज़ालिमानह रस्मोंके बन्द करनेकी ग़रज़से आप और आपके कुल अफ़्सर राजपूतानहमें पूरी कोशिश करें; और यह भी फ़र्माती हैं, कि सुननेमें आता है, कि हिन्दुस्तानके रईसोंमेंसे कई एकने मलिकह मुअज़्ज़महके इश्तिहारके मज़्मूनको ऐसा समझा है, कि जोकि उसमें सती और समाधिका ज़िक्र नहीं है, इसलिये ऐसी रस्मोंकी मन्ज़ूरी है. ऐसा अर्थ बिल्कुल उक्त इश्तिहारकी इबारत और मज़्मूनके बर्ख़िलाफ़ है, यह बात रईसोंको अच्छी तरह समझाईजावे.

दस्तख़त चार्ल्स वुड,
प्रधान सेक्रेटरी मुल्क हिन्दुस्तान.

महाराणाके इश्तिहारकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

नकल.

॥ सीधश्री म्हाराज धीराज म्हाराणाजी श्री सरुपसीघजीकी हजुरसे हुकम ईस्ताहार जारी कीयोजावे हे; अप्रंच आगे रेजीदंट साहेव वहादर वा अजंट साहेव वहादरका लीप्या माफक स्ती समादका मुकदमामे हुकम जारी हुवो हो, के कोई स्ती होवा पावे न्ही ओर स्माद लेवे न्ही, वीका घरवाला तथा दुजा रोके, सरवता हे देवे नही, ई सीवाऐ कोई जगा रोकबो बरजबो न्ही होवेगा, सो तो सारा जाणो हो.

ईतावे फेर साहेब बहादरकी पुरी ताकीद आई हे, जीसु दुवारे हुकम लीख्यो जावे हे, सो स्ती समाद होताने कोई न्ही वरजेगा, वा न्ही रोकेगा, अर वेजावेगा, तो वीरा घरवालांके जरीमानो होवेगा, सं० १९१८ साव्रण वुदी १.
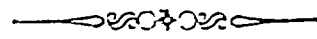
विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] से विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] तकके जो काग़ज़ात हमको मिले हैं उनकी नक़्लें इस वास्ते दीगई हैं, कि सती होनेका एक बड़ा रवाज वन्द करनेमें कैसी कैसी कोशिशें कीगई, और महाराणाने मज़्हबी ख़याल और बाशिन्दगान मुल्ककी शिकायतसे बचनेके लिये कैसे कैसे उ़ज़्र पेश करके इस रस्मको अपने अख़ीर वक्त़तक जारी रक्खा. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने खुद अपनी आंखोंसे कई औरतोंको सती होते देखा है, जो बड़ी बहादुरीके साथ अपने पतियोंके संग चितामें जलती थीं. वर्तमान समयके लोग यह ख़याल न करें, कि उनको कोई नशेकी चीज़ देकर, या जब्रन, या बर्ग़लाकर जलादेते थे, जैसाकि यूरोपिअन लोगोंका ख़याल है. मेरे ख़यालका सुबूत इस तौरपर होसक्ता है, कि अव्वल तो सब औरतें सती नहीं होती थीं, उनकी तादाद सौ में सिर्फ़ दो या इससे भी कम पाईजाती है, अगर लोगोंकी कोशिशसे यह काम कियाजाता, तो कुल औरतें सती होतीं. दूसरे, सती होनेवाली स्त्रीको जलजानेके बाद देवता ख़याल करके लोग पूजते हैं, और अकस्मात् किसी कारणसे जल मरनेवालीको नहीं पूजते. क़दीम ज़मानहके लोगोंका यह ख़याल है, कि सती होनेवाली स्त्री अपनी खुशी और ईश्वरकी इजाज़तसे जलकर अपने पतिके साथ स्वर्गमें वास करती है, और दूसरे कारणसे जल मरनेवाली वहां नहीं जासक्ती. मैंने अपनी आंखसे देखा है, कि विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में उदयपुरमें ज़नानी ड्योढ़ीकी एक दासी, जिसका पति ११ वर्ष पहिले मरगया था, एक दिन दोपहरके वक़्त सोतीहुई अचानक उठ खड़ी हुई, और कहा, कि मेरे जलानेकी तय्यारी करो, मेरे पतिने मुझे जल्दी बुलाया है. इसपर उसके पड़ोसियों वग़ैरहने एकट्ठा होकर उसे मना किया, और कहा कि तुझको स्वप्न आया है. तब उसने अपने सती होनेके सुबूतमें आगके दहकते हुए अंगारेको दोनों हाथोंमें लेकर लोगोंके सामने मलडाला, और कहा, कि मुझको किसी तरहकी जलन या तक्लीफ़ मालूम नहीं होती. इसके बाद महाराणाकी तरफ़से कुछ बन्दोबस्त होकर वह औरत जलादीगई. इस विषयमें मेरा ख़याल ऐसा है, कि औरतको अपने पतिकी मुहब्बतमें जब बहादुरानह जुनून होजाता है, तो वह अपने बदनकी तक्लीफ़को पतिकी जुदाईके मुक़ाबलहमें कुछ भी ख़याल नहीं करती; वर्नह यह एक आम रवाज था, कि सती होनेवाली स्त्री के रिश्तहदार व सर्कारी मुलाज़िम वग़ैरह कुल लोग उसे

समझायशके तरीक़हसे मना करनेमें किसी तरहकी कमी नहीं करते थे; और यह भी रवाज था, कि यदि कोई ओरत मना करनेपर भी हुज्जत करके चितामें बैठनेके बाद आगके सद्मेसे उठ भागती, तो लोग उसे तलवारोंसे मारकर उसी चितामें जलादेते थे; लेकिन् ऐसा मौक़ा बहुतही कम, याने हज़ारमें एक या दो जगह सुनागया है. चाहे कुछ ही हो, मुहब्बतकी हालतमें वे ओरतें जिस बहादुरीके साथ जलती थीं, उसको युद्धके समयकी बहादुरीसे भी बढ़कर समझना चाहिये.

एक बड़ा भारी जुर्म, जो इस मुल्कसे गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी बदौलत दूर हुआ, और जिसको मैं शुक्रियहके साथ लिखताहूं, यह था, कि लोग ओरतोंपर डाकिनकी तुहमत लगाकर उन बेचारियोंको झड़बेरीके कांटोंमें आग लगाकर जलादेते, या उसका सिर काट डालते, या किसी दरख़्तसे उलटी लटकाकर मिरचकी धूनीसे मारडालते थे, और उनको कोई नहीं पूछता, बल्कि उन मारने वालोंका लोग शुक्रियह अदा करते थे, कि तुमने बहुत अच्छा किया, हज़ारों आदमियोंकी तक्लीफ़ मिटादी. जिस ओरतपर डाकिनकी तुहमत लगाई जाती, और वह राज्यमें पेश होनेके वक्त मार पीट या किसी दूसरी तक्लीफ़के सबब डाकिन होना क़ुबूल करलेती, तो उसको राज्यसे भी वही सज़ा होती, जो ऊपर लिखीगई है; और अगर किसी मज़्हबी पेश्वा या ज़नानख़ानहकी तरफ़से सिफ़ारिश होनेपर उसकी जान बख़्श-दीजाती, तो उसके सिरके बाल दो चार जगहसे मुंडवायेजाते और गधेपर चढ़वाकर बाज़ारों व गलियोंमें घुमानेके बाद देशके बाहिर निकाल दीजाती थी; और वह उ़ज़्र करती, कि मैं डाकिन नहीं हूं, तो परीक्षाके लिये गोणके एक बोरेमें उसे मज़्बूत कसकर दूसरे बोरेमें ढाई कंडे रखदेते और तालाबके अन्दर गहरे पानीमें डालदेते थे; यदि खुशक़िस्मतीसे वह ओरत कंडोंके पलड़ेसे पहिले डूबजाती, तो फ़ौरन् उसको निकाल लाते. इस हालतमें उसे सच्ची ख़याल करके राज्यकी तरफ़से साड़ी (ओढ़नी) वग़ैरह दिलानेके बाद उसके घर भेजदेते; और अगर हवाके भरजाने और दमके खींचनेसे वज़न बराबर होकर तैरने लगती और कंडे डूबजाते, तो उसे डाकिन ख़याल करके पानीसे बाहिर निकालनेके बाद ऊपर लिखीहुई सज़ा दीजाती. यह ज़ालिमानह रवाज मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपनी आंखसे देखाहुआ लिखा है, और गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने इसको बन्द किया. अगर्चि अबतक हज़ारों आदमियोंके दिलोंमें ओरतोंके डाकिन होनेका ख़याल जमाहुआ है, लेकिन् रफ़्तह रफ़्तह कम होता जाता है. मैंने इस बारेमें लोगोंकी तसल्लीके लिये बहुत कुछ कोशिश की, और कहा, कि मुझे कोई शख़्स डाकिन बतलावे उसको ५००) पांच सौ रुपया देऊं. बहुतसी ओरतें ऐसी भी हैं, जो बेशर्मी इख़्तियार करके डाकिन होना

मशहूर करदेती हैं, इस ग़रज़से कि वे जिसके घर जावें, वहांसे कपड़ा, ज़ेवर, खाना, अनाज वग़ैरह धमकाकर लेआवें, और अपना गुज़ारह करें. इसी क़िस्मकी औरतोंमेंसे एक बैरागिन वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबके सामने फ़र्यादी आई, जिसको महता गोकुलचन्दके कथाभट्टने पीटा था. उक्त महता उस औरत से ऐसा डरता था, कि उसने महाराणासे पोशीदह अ़र्ज़ की, कि यह डाकिन है, हुज़ूर इसको तसल्ली देकर निकाल देवें. उसवक्त मैं वहां खड़ाहुआ था, मुझे यह सुनकर बहुत हंसी आई, और महाराणा भी मुसकुराये; तब गोकुलचन्दने उस औरतको इम्तिहानके लिये मेरे मकानपर भेजी, मेरे पड़ोसियोंकी औरतें उसके डरसे घर छोड़ छोड़कर भागगईं; मैंने जैसाकि चाहिये, लोगोंकी तसल्लीके लिये उसका इम्तिहान किया, लेकिन् कुछ सचावट न पाईगई, आख़रकार वह मक्कार औरत शहरसे निकलकर चलीगई. यह रवाज भी महाराणा स्वरूपसिंहके समयसेही बन्द हुआ.

इन महाराणाने विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में रुपयेका एक नया सिक्का (स्वरूपशाही), जिसके एक तरफ़ " चित्रकोट उदयपुर " और दूसरी ओर " दोस्ति लन्दन " लिखा है, जारी किया, जो मेवाड़ राज्यके प्राचीन उदयपुरी सिक्केसे क़ीमतमें एक आना ज़ियादह अर्थात् सत्तरह आनेका है, और हालमें ज़ियादहतर यही सिक्का प्रचलित है. इस सिक्केके मुतअ़ल्लिक़ जो चन्द काग़ज़ मिले वे नीचे दर्ज कियेजाते हैं:-

कर्नेल् टॉमस रॉबिन्सनका काग़ज़
महता शेरसिंहके नाम.

॥ श्रीरामजी ॥

२११ नंबर.

॥ सिध श्री छावणी मीमच सुभसुथाने सरब उपमा जोग्य मेहताजी श्री सेर-सिंघजी जोग्य राज्ये श्री करनेल तामीस रावीनसन साहेब बहादुर ली॥ सलाम वंचसी, ईठारा समाचार भला हे राजरा सदा भला चाहीये अपरंच ॥ कागद भादु वदी ५ का लिपा आया जीमे लिषा, के श्री दरबारका हुकम मेरे नाम इस मजमूनका आया हे. ईन दिनो मेवाड चलणका रुपीयामे फरेब दगाबाजी पार वतीकर षोटा रुपीया बणा चलाणेसे

साहुकार, व्योपारी वगेरेका वडा नुकसान नजर आया, ओर आगे पण कपतान जमस टाड साहब बहादुरने ऐसे ही सववोसे भीमसाही रुपीया राजासाही रुपीयेकी बराबर चलाणेकी सलाह दी थी; अव श्री दरवारसे लोगोके नुकसान तकरार वगेरेपर पयाल हो, सीरे चांदी डलवा अपणे नामका हिंदवी सिकाका रुपीया राजकी टकसालमे पडवा चलाणा मनजुर हे, ए सरवे स्माचार वांच वाकिफ हुवे. जोके श्री महाराणाजी साहेब कुं अपणे मुलकके वंदोवसत ओर वेहतरींमे पूरा ईपातियार हे, ओर ए तजवीज ऊपरकी लिपी विचारी सो वहोत दुरसत ओर मुनासीव हो जारी होणेमे आपणे राजका फायदा, रेयतकी वहत्री, श्री दरवारका नामवरी होगा. चाहीये श्री दरवारकी तजवीज माफिक ठेटसे पार पडे उस्मुजीव ओर सीरे चांदी डलवा महाराणाजी श्री सरुपसिंघजीके नामका हिंदी सिका राजकी टकसालमे पडवा जारी करे. अछा रुपीयाका चलण होणेसे ए पवर हमारी सीरकारमे पोहचणेसे सीरकार दोलतमदारकी पुसी, श्री द्रवारका फायदा, नामवरी, रेयतकी वहत्री जाहर होगी. जिस वपत नये सीकाका रुपीया तयार हो एक दो रुपीया हमारे देपणे वासते भेजायदेसी, ओर काम काज हमेसे लीपावसी, स्मत १९०६ का भादु वदी १० तारीप १३ अगसत सन् १८४९ ईसवी.

महाराणाके नाम कर्नेल टॉमस
रॉबिन्सनका ख़रीतह.

॥ श्रीरामजी ॥

२३६ नंवर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरव उपमा व्राजमान लायक महाराज धाज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी साहेब बहादुर एतान करनेल तामीस रावीनसन साहेब वहादुर ली ॥ सलाम वंचाव मालुम करावसी. इठाके स्माचार भले हे, आपके सदा भले चाहीये अपरंच ॥ परीता आपका आसोज विद १२ का लिपा आया, समाचार वांच वाकिफ हुवा; आपने रुपीया २) नया सिकाके मेरे देपणे वास्ते भेजा, सो मेने उसकुं देपकर राजी ओर पुस हुवा, ओर नया पुराणा सिका एपटा कर देपा, तो बहुत

बहतर षुबसुरत पुराणेसे दिषाई दिया, ओर राजासाहीकी बराबर चलण होणेमे जो कबाहत व नुकसान आपकुं सबब तकरार रैयत वयोपारी मुलकके नजर आया, सो ठीक; आप अपणे मुलकके मालिक हो, मुलकी आबादी व रजामंदीके षयाल रषणेमे हर-तरे फायदा, नामवरी हे, सो आपकी तजवीज माफिक ८ मासा चांदी २ मासे षार माफिक कदीम कुछ तकरारकी जघे रैयत व्योपारीकी होगी नही, ओर आपने दोसती लंदन सीकामे लिषवाई सो नये सिकेमे षुदणेसे दीलकी मोहबत जाहर हुई. ईकीन हे श्री सीरकार दोलतमदार भी इस बातकुं षयाल फरमावेगी, ओर आपकी तजवीजपर षुस होगी, ओर ए नये सिकेका रुपीया इस्मुलकके दुसरे सिकोसे वहोत वेहतर व षुबसुरत नजर आता हे, ने आपणी षुसी दील व रजामंदीसे वणवा दोसती लंदन षुदवाई, सो काबिल इसके हे हमेसे कायम ओर जारी रहे. ओर मीजाज मुबारीक की षुसीके समाचार हमेसे लीषावसी, संमत १९०६ का कातीक वदी ३, तारीष ४ अकटुवर सन् १८४९ ईसवी.

कर्नेल टॉमस रॉबिन्सनका काग़ज़ महता शेरसिंहके नाम,

॥ श्रीरामजी ॥

२३९ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब उपमा जोग्य महताजी श्री सेरसींगजी जोग्य राजे श्री करनेल तामीस राबीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलाम वंचसी. ईठारा स्माचार भला हे, राजरा सदा भला चाहीये अपरंच॥ कागद राज आसोज विद ऽऽ का लिषा आया, समाचार वांच वाकीफ हुवा. श्री दरबारका परीता, रुपीया २) नया सिका रा भेजा, सो रुपीयाके देषणेसे हमे षुसी हुई. नया सीका षुबसुरत अछा बणा, श्री महाराणा साहे (ब) मालीक अपणे मुलकका अषतियार रषते हे, तजवीज कीया मुनासीब मालुम हुवा जो बहतर हे. परीतेका जबाब लिष भेजा हे, सो गुजरान कागद समाचार हमेसे लिषसी, सं० १९०६ कातीक वदी ३, तारीष ४ अकटुवर सन् १८४९ ईसवी.

गद्दीनशीनीके बादसे महाराणाके पैरमें बादीका दर्द शुरू होकर रफ्तह रफ्तह यहांतक बढ़ा, कि विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] के बाद तो वे पैदल चलने व घोड़ेपर सवार होनेसे मज्बूर होगये, और कुछ दिनों पीछे उनके लिये सिर्फ़ तामजामकी सवारीही रहगई. इस दर्दसे उनके दोनों पैरोंका मांस सूखकर ख़ाली हड्डियां बाक़ी रहगई थीं. पुराने ख़यालातके सबब अंग्रेज़ी डॉक्टरोंका इलाज जैसाकि चाहिये न हुआ, सिर्फ़ हिन्दू व मुसल्मान वैद्योंकी सलाहसे इलाज होता रहा, कभी कभी गांवोंके जाहिल लोगोंके इलाज मुआलजोंपर भी अमल होता था, और ज़ियादहतर देवताओंकी मानता और ज्योतिषियोंकी भविष्य वाणीपर भरोसा था; लेकिन् इतनी तक्लीफ़ और बीमारीमें भी उन्होंने अपने साहसको कभी नहीं छोड़ा. विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] में जब सर्दारोंका बखेड़ा ज़ियादह बढ़ा और बीमारीने भी अपना आख़री हमलह शुरू किया, तब उनको अपने कोई औलाद न होनेके सबब यह विचार पैदा हुआ, कि वलीअह्द किसको बनाया जावे, और बागोर के महाराज शेरसिंह व शिवरतीके महाराज दलसिंहके पुत्रोंके जन्मपत्र मंगवाकर दिखलाये. इनमेंसे शेरसिंहके पोते और शार्दूलसिंहके बेटे बागोरके महाराज शम्भुसिंह को, जिसकी निस्बत पेश्तर महाराणाने गद्दीके हक़से ख़ारिज किये जानेका हुक्म देदिया था, उसकी हक़दारी और लियाक़त देखकर पीछेको बखेड़ा न उठनेकी ग़रज़से विक्रमी १९१८ आश्विन शुक्ल १० [हि० १२७८ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को वलीअह्दकी बैठकपर बिठाया, और तमाम उमराव व सर्दारोंको, जो उसवक्त मौजूद थे, दस्तूरके मुवाफ़िक़ वलीअह्दको नज़ानह करनेका हुक्म दिया. इसपर कुराबड़का रावत् ईश्वरीसिंह बोला, कि जबतक सलूंबरका रावत् केसरीसिंह मन्ज़ूर न करे, तबतक शम्भुसिंह वलीअह्द न माने जासकेंगे. तब बेदलाके राव बख़्तसिंहको बुलाकर महाराणाने फ़र्माया, कि तुम्हारी इस मुआमलहमें क्या राय है? ऐसा नहो, कि मेरे इन्तिक़ालके बाद रियासतमें बखेड़ा पैदा होजावे. बख़्तसिंहने जवाब दिया, कि हुज़ूर इत्मीनान रक्खें, शम्भुसिंह तो हक़दार है, अगर ग़ैर हक़दारको भी हुज़ूर अपने हाथसे वलीअह्द बना देंगे, तो वही मेवाड़पर राज्य करेगा. यह कहकर राव बख़्तसिंहने युवराज शम्भुसिंहको दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़ानह करदिया, इसी तरह आसींदके रावत् खुमाणसिंहने भी महाराणाकी तसल्लीके मुवाफ़िक़ अर्ज़ करके वलीअह्दको नज़ दिखलाई, और प्रधान कोठारी केसरीसिंह वग़ैरह अह्लकारोंने भी मज़्बूतीके साथ नज़्रें दिखलाईं. जब महाराणाको इस बातकी पूरी पूरी तसल्ली होगई, तब उन्होंने वलीअह्दको, जो हिदायतें करनी मुनासिब समझीं, अच्छी-

तरह करके चुनेहुए खैरस्वाह और वृद्ध आदमियोंको उनके पास रहनेके लिये मुकर्रर कर-दिया. इसके बाद मज़्हबी अकीदहके मुवाफ़िक़ दूसरी दुनयाका रास्तह साफ़ करनेकी कोशिश होने लगी, अर्थात् हज़ारों रुपये और अश्रफ़ियां ब्राह्मणोंको खैरातमें बटने लगीं. लेकिन् उस तक्लीफ़की हालतमें भी रियासती कारोबारकी अर्ज़ होनेपर बराबर जवाब देते रहे. उन्होंने गोवर्द्धनविलासका रहना इसी ग़रज़से इख्तियार किया था, कि गायोंकी सेवामें मेरी ज़िन्दगी पूरी हो; और वहां हमेशह गायों व ब्राह्मणोंको अच्छा अच्छा खाना खिलवाया जाता था. इस बीमारीकी अखीर तरक़्क़ीका हाल इस तरहपर है, कि विक्रमी १९१८ ज्येष्ठ [हि० १२७७ ज़िल्क़ाद = ई० जून] में घुटनेके नीचे एक छोटासा फोड़ा चाठेके मुवाफ़िक़ उठा, जो वैद्योंको बतलाया गया, और मुल्ला अश्रफ़-अलीकी रायसे उसपर तेज़ाबकी पट्टी लगाई गई; लेकिन् उस पट्टीके लगाते ही ऐसी सख्त जलन पैदा हुई, कि उसके दर्दसे बुखार शुरू होगया. तब महाराणाने वैद्योंको एकत्र करके सब हाल कहा, उन लोगोंने पट्टी उतारडालना मुनासिब समझकर अपनी राय और महाराणाके हुक्मसे धीरे धीरे पट्टी उतारडाली. रातको जब महाराणा नींदमें सोगये, तो उस फोड़ेसे डेढ़पावके अनुमान पीब निकली, जिसमें दहीके समान जमा हुआ कुछ सिफ़ेद मवाद था. दूसरे दिन बिछौनेमें पीबके देखते हीं महाराणाको सन्देह हुआ, और वह उदयपुरको छोड़कर गोवर्द्धनविलासमें चलेगये, परन्तु रोग दिनोदिन बढ़ता ही रहा.

विक्रमी श्रावण [हि० १२७८ मुहर्रम = ई० ऑगस्ट] में घुटनेके ऊपर दो फोड़े और उठे और दो तीन नासूर भी पिंडलीमें होकर बहने लगे, जिससे ऐसी ना ताक़ती होगई, कि कर्वट तक स्वयं न बदल सक्ते थे. इस हालतमें वैद्योंसे आयुष्य का निश्चय कराया, तो नागर वैद्यने इसी रोगसे विक्रमी कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १७ नोवेम्बर] या विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २१ नोवेम्बर] को मृत्यु होना निश्चय किया; और बीमारीके हालात लिखकर आगरेके डॉक्टरसे दर्याफ़्त करायागया, तो वहांसे भी आयु बीतजानेकी ही ख़बर आई. इसपर वे सावधानीके साथ अपना मृत्यु सुधारनेकी तय्यारी कराने लगे; गंगाजल, भस्म, रुद्राक्ष आदि सामग्री एकत्र कराकर विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० ११ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १४ नोवेम्बर] के दिन गोशालामें पधारगये, और वहां तीन रात्रितक बड़ी सावधानीसे अजपा मंत्रका ध्यान करके विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १३ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की रात्रिको पहरपर दो घड़ी व्यतीत हुए पूर्णिमामें परलोकको प्राप्त हुए.

गोशालामें पधारनेके समयसे मृत्यु पर्यन्त रामायणका पाठ होता रहा. इन्तिक़ालके समय काका दलसिंह, बेदलाका राव बख़्तसिंह और देलवाड़ाका राज फ़तहसिंह वग़ैरह सर्दार मौजूद थे, उनको आख़री रुख़्सतका पान बीड़ा दिया. इन महाराणाके होश हवास आख़री दमतक दुरुस्त रहे और अपनी अन्तिम क्रियाके लिये सब तरहकी इजाज़त देते रहे. इस समय महाराणाके चारों तरफ़ गायें खड़ी थीं, और गोबर, गोमुत्र व गंगाजल उनके बदनपर ख़ूब मला गया, इसके बाद गंगाजलसे स्नान कराकर कुशके आसनपर विराजनेके पीछे प्राणत्याग हुआ.

इन महाराणाका मज़्हबी अक़ीदह जैसा शुरूसे था उसीके मुवाफ़िक़ आख़री समयतक साबित रहा. देहान्तके समयका यह कुल हाल मैं (कविराजा श्यामलदास) ने पुरोहित पद्मनाथकी ज़बानी सुना हुआ लिखा है, जो उसवक्त महाराणाके पास मौजूद था.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १८७१ पौष कृष्ण १३ [हि० १२३० ता० २६ मुहर्रम = ई० १८१५ ता० ८ जैन्युअरी] को हुआ था. इनका क़द मझले से कुछ ऊंचा; रंग गेहुवां; न मोटा न दुबला शरीर; डाढ़ी मूंछ सुडौल और अन्दाज़के मुवाफ़िक़; लम्बी और चौड़ी पेशानी; बड़ी आंखें; नौकीली और पतली नाक; और ख़ूबसूरत व पतले होंठ थे. चिह्रा ऐसा रोबदार था, कि इनके सामने किसी आदमीको बेधड़क बात करनेकी जुर्अत न होती थी. ख़यालात इनके पुराने और मिज़ाज शाहाना था; अक़्लमन्दी, चतुराई और दिलेरीमें पूरे थे; ख़ैरख़्वाह व बदख़्वाह और भले तथा बुरे आदमीकी पहिचान व क़द्र करने वाले, और दिलसे इन्साफ़ पसन्द थे. इसके सिवा अपने पुराने ख़ानदान और पुरुषोंका अभिमान रखने वाले, मज़्हबी अक़ीदेपर मज़्बूत, और ख़ैरात वग़ैरह मज़्हबी कामोंमें उदार, और रियासती प्रबन्धोंमें किफ़ायत शिआर थे. इसके अ़लावह कुछ उनमें अवगुण भी थे. अव्वल यह, कि रियासती प्रबन्ध और ख़ज़ानह एकट्ठा करनेके लिये लालच अधिक करते थे, दूसरे हसद याने ईर्षा भी बहुत थी. जिस किसी पर नाराज़ होजाते उसके ऐबोंको ज़ाहिर करनेमें कोताही नहीं करते थे. लालच और हसदके सबब उनसे अक्सर बेइन्साफ़ी भी होजाती थी, और कठोर दिल होनेसे दया भी कम थी. इन्हीं ऊपर लिखी हुई आदतोंके कारण आम लोग उनसे नाराज़ थे. लेकिन् मेरी रायमें उनकी नेक आदतोंके मुक़ाबिले [illegible] ज़ियादह न [illegible] चाहे कुछ ही हो, लेकिन् इस रियासतका कुल इन्तिज़ाम, [illegible] ख़र्च और [illegible] ख़ानोंका बन्दोबस्त पहिले ऐसा बिगड़ा हुआ था, कि [illegible] सुधारना [illegible]

महाराणाका काम था; इन्होंने मानो इस वृद्ध राज्यको जवान बनादिया. यदि इनमें लालच, हसद, और कठोरता अधिक न होती, तो महाराणा सांगा, जगत्सिंह अव्वल, संग्रामसिंह, और जवानसिंहके समान लोग इनको भी दीर्घ काल तक देवताके बराबर मानकर याद रखते. महाराणा स्वरूपसिंहकी कार्रवाइयोंको देखकर पिछले राजा लोगोंको नसीहत होगी, कि उनको राज्याधिकार पाकर रियासत का प्रबन्ध किस प्रकार करना चाहिये; अल्बत्तह मज़्हबी ईर्षा और पुराने ख़यालात उनके इस ज़मानहके मुवाफ़िक़ न थे, जिसका सबब यह था, कि उनको शुरू जवानीमें कम .इल्म और पुराने ढंगके आदमियोंकी सुहबत रही, वर्नह यदि जैसे वह अ़क्लमन्द थे वैसाही उनको .इल्म और सत्संग मिलता, तो यक़ीन है, कि हिन्दुस्तानभरमें राजाओंके लिये मिसाल देनेके वास्ते वे बेनज़ीर ठहर सक्ते थे. इनके ४ चार महाराणियां थीं:- अव्वल राघवगढ़की राठौड़ महाराणी गुलाबकुंवर बाई, दूसरी वरसोड़ाकी चावड़ी महाराणी फूलकुंवर बाई, तीसरी बीसलपुरकी भटियाणी चांदकुंवर-बाई, और चौथी घाणेरावकी मेड़तणी महाराणी अभयकुंवर बाई. इनके सिवा एक ख़वास ऐजनकुंवर उनकी पूरी कृपापात्र थी, और वही अकेली महाराणाके साथ सती हुई. इन महाराणाके कोई औरस औलाद न थी.

महाराणा स्वरूपसिंहने अपनी मौजूदगीमें जो कुछ दान पुण्य किया, उसके अ़लावह उनके देहान्तके पीछे क्रिया और दान दक्षिणा आदिमें ४७५०००) रुपया और ख़र्च हुआ.

१- कैलासपुरीमें नंदिकेश्वरके पास वाली सुरह.

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादातु ॥ ॥ श्रीगणेशजी प्रसादातु ॥

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री सरूपसिंहजी आदेशातु प्रतदुवे श्री मुष. आगेशु सीसोद्या मात्रके दारुअरक पीवाकी छांट ही अर महाराणां जी श्री छोटा अमरसिंहजी अरोग्या जठा पाछे साराही पीदो, सो अणी पीवा महें सारी तरे कुफायदोहीज हुवो, अर धर्मशास्त्रकी रीतसु वी दारु पीवाको महा दोस दीप्यो, सो अबार संवत १९०२ का कातीक शुद ९ सने श्री कैलास-पुरी पधार दारु, अरक, मद परो छोड्यो, जीको संकलप श्री परमेसुराका चरणांर-विंदा कीधो, सो अबे सीसोद्या मात्र चोवीसही साप महें दारु पीवेगा जणीने श्री जीरी आण हे, चीतोड मार्‍याको पाप, कोटान कोट गऊ मार्‍याकी हत्या लागेगा. महारा वंस मेहें वेर दारु अरक पीवो विचारे वा दुजा पीवा वाला सीसोद्याने सज्या नही देवे जीने उपरका लप्या प्रमाणे सोगंद हे, श्री जीरो अंजल पावे वा हुकम माने जीने.

२- चित्तोड़गढ़पर पाडणपोलमें घुसते हुए वाईं तरफ़ वाली सुरह (१).

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादातु ॥ ॥ श्रीगणेशजी प्रसादातु ॥

स्वस्ति श्री महाराजा धिराज महाराणा श्री सरुपसिंहजी आदेशातु, हरामपोर शार्दूलसिंह सेरसिंहोत, वा हरामपोर महता रामसिंह रपवदासोत नीबहडामें हरामपोरो विचारकर करतूत अनुष्टान करायो तथा जहर देणेकी तजबीज करी,

(१) इसी मज़्मूनकी सुरह महाराणा स्वरूपसिंहने कैलासपुरी तथा उदयपुरमें राज्य महलोंके बड़ीपोल दर्वाज़ह बाहिर भी रोपाई थी, जिसका हवाला पृष्ठ १९२८ में दियागया है.

सो श्री जीका प्रतापसुं सारी चोडे आई गई. आगे ई राजमें ऐसी तरेकी कदी नही हुई, अर कोई विचारी जीने जीवरी सज्या मली, सो एई सज्या लायक हा, परंत मे आगी काडी; हरामषोर सादुलसिंघने तो वंदोवस्तकी जगामें जन्मकेद राष्यो सो फेर कदीभी केदसु छुटवा पावेगा नही, और हरामपोर रामसिंहने मनप कबीला बेटा सुदा देस भदर कीदो, सो मारा वंसरो कोही हरामपोरांका वंश काने मेवाडका राजका हदमे आवा देवेगा नही तथा चाकरी देस प्रदेसमे भी भलावेगा नही, और जो कोई बी यां हरामपोराकी अरज करेगा, ज्यो ई सुरेनें लोपेगा जीने, ऊषालेगा जीने श्रीएकलिंगजी पुगसी, श्री चीतोड मारयारो पाप, गऊ मारयारी हत्या, हिन्दूने गाय, मुसलमानने सूर, अगरेज वाद्रके होता होवे ज्यो सोगन हे. सं० १९०३ दुतीय जेठ विद ७ शने.

यहांपर बछड़ा चुखाती हुई गायका चित्र है.

३– जगत् शिरोमणिजीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीमदहार्य्यवर्य्यधरायनमः॥ श्रीकृष्णायनमः॥ कालिंदीतट कुंजगुंजदलिभृत् संफुल्लनीपावली द्वाः स्थानेकसुवल्लवीक्षितसुधापूर्णेंदुहास्याननः॥ तिर्यक्प्रेक्षणराधिकाधरसुधा मन्याः पिबन्निन्हुवंस्तांवूलस्य वितीर्णचर्व्वितमिपात् कृष्णः सनोद्धावतात् ॥ १ ॥ वृंदारण्यनिकुंजबद्धवसतिप्राणप्रियाणां हठान् मुष्टीकृत्य मनांसि निन्हुतइमा अंगुष्ठमादर्शयन्॥ वामेनोर्द्धकरेण ताः पुनरसौ नाम्नाह्वयत्युन्मुखं। सोयंश्रीगिरिधारिनामविदितः पायात् सदैवाश्रितान् ॥ २ ॥ गीर्व्वाणैर्गुणगणितो। गोपगुणालांगनांगसंश्लिष्टः ॥ गोकुलगोरसशाली गोविंदोगोगुणेशोऽव्यात् ॥ ३ ॥ बप्यान्ववायंगुणगौरवाढ्यं । वक्तुं बभूवाहमलंनवाग्भिः ॥ तथापि वक्ष्येस्य गुणैर्गुरुः स्यां जातोयथावामनदंडवंशः॥ ४॥ अथ श्रीजगन्नाथरायदेवालयोत्तरपट्टिकायां राणा-राजसिंहावधिवंशवर्णनं तथाप्यनुवादेनाभ्यर्हितान्महाजगतसिंहादनुवर्ण्यते ॥ दाने प्रौढारिराजप्रथितपुरजयप्राप्तवित्तस्य यस्य । चित्तस्फीतोन्नतेर्यो विविधमणिगणस्व-र्णकूट प्रकीर्णः॥स्वर्णाद्रेःकल्पनायांव्यनुददुरुतरं संशयं मार्गणौघो।दृष्ट्वा हेमाश्मराशिं स्वमुप ससमभूच्छ्रीजगतसिंहभूपः ॥ ५ ॥ गत्वा धामचतुष्टयं सुविमलं नाथान्-विलोक्यादरा। द्भक्तानां पुरुषार्थदानचतुरान् प्राच्यादिदिक्षु क्रमात्॥ दाता वैभजनस्य नेति भुवने शून्येंतरे च क्षितेः॥ सत्प्रासादमतोव्यधाज्जगतित न्नाथेपुरायस्य यः॥ ६॥ तस्माद्विराजसिंहोभूत् कः कुर्यात् तत्कृतं नृपः ॥ लोकापेयंविलोक्याब्धिं योऽकरो

द्राजसागरं ॥ ७ ॥ हत्वा म्लेच्छधवेर्पितां प्रथमजां पित्रादिभिर्नात्मना । कन्यां भीष्मकजामिवाप्तबलवान् यः कृष्णदुर्गातुपुरः ॥ चैद्योद्धास्युदुवाह सोच्युतउरस्यात्मैक कांतार्थिनीं । पत्रं प्रेष्य रहोहरं जनमुखाद्वृत्तांतमावेद्य च ॥ ८ ॥ पुत्रस्त्रीगुरुघातनिष्कृतिकृते दृष्टैर्द्विजैः प्रोदितं । धारातीर्थमकातरेण मनसा राज्ञा तथा निश्चितम् ॥ ईर्ष्यावैर्निजजीवितेप्सुभिरयं भक्ष्ये विषैर्घातितो दुष्टांतः करणैश्च ते निरयिणोराजा तु नाकं गतः ॥ ९ ॥ यौ ज्ञात्वौरंगजेबः कृतजनुरुभयस्फारदारापहारौ । विष्णुं विष्णवंशभूपं यवनपतिमिपोद्भूतचैद्योत्यमर्षी ॥ स्वाराट् साहाय्यभाजि क्षितिभृति च रुषा पातयामास विष्णौ । प्रासादं भूभृदिष्टे वितथरुडुदकेशायिनि प्राप्तलज्जः ॥ १० ॥ तस्मादभूदरिवनीदहनातिदावः । सद्धर्मरक्षणविधावतुलप्रभावः ॥ यं प्राप्य सद्धवनिला समवाप्तकामा । राजन्वतीस्मजनिताजयसिंहनामा ॥ ११ ॥ शौर्योदार्यगुणान्वितप्रविलसद्भासा सुधासारभृद् । येनाकारि हसन् जलैः स्वमधुरैरब्धिं यशः सागरः ॥ धीरायं यदुशांति तलगणने निर्देहबलादिति । नाकाश : किमु देहवानिव चलच्छायेन्दुतारागणः ॥ १२ ॥ प्रोच्चंचच्चंडकांडप्रकरकरवलच्छस्त्रपातप्रहारं । त्रासं ग्रासं न सेहे दिशि दिशि सभयं नेत्रतारां क्षिपंती ॥ जन्यारण्ये मृगीवोन्मदयवनपतेः कृष्णसारस्य सेना । तारा आजन्मयूथप्रबलपतिसमाकृष्टिलुब्धस्य यस्य ॥ १३ ॥ तस्यांगजन्मामरसिंहवीरो । वीरैकसूरस्मि मदं व्यधत्त ॥ यस्य प्रसूरासुरितीत्यनिद्रा । देवाः समासे परिसंदिहानाः ॥ १४ ॥ महानसमचीकरद्धरशिवप्रसन्नामर । विलासमपिनिष्कुटान्वितमसौ स्वसौख्याश्रयं ॥ तपः सुपरितोपिताविव भवान्नपूर्णेश्वरौ । समं व विशदालयं ददतुरेव कैलाशकं ॥ १५ ॥ सद्ग्रामग्रामदातुर्नयविनयवतो विश्वविख्यातकीर्ते । स्तस्मात्संग्रामसिंहप्रभवितुरवनौ म्लेछसंघामहेभाः ॥ हर्तुं भागं नशेकुर्ह्यमरहरिकृतावासभोज्यप्रभोक्तुः शक्याभूभृच्छृगालायमककुबुदयाग्रामसिंहाः कुतोन्ये ॥ १६ ॥ देवानां हि परस्परं विवदतां विष्म्वीशसप्तार्वणां । कोगच्छेदिति पूर्वमेव निखिलैरिष्टैः सदक्षैरपि ॥ गंतव्यं नृपतेर्गृहं सममतः स्थूलामहंपूर्विकां ज्ञात्वेषां समचीक्लृपत्सगतये यस्त्रिप्रतोलीं शुभाम् ॥ १७ ॥ ततोभवज्जगत्सिंहोजगन्नाथालयं पुनः॥ जीर्णोद्धारात्कृतं पित्रा दिदृक्षुः स्वकृतं पुरा॥ १८ ॥ देवेऽवर्षन्ति चास्तवृद्धिविभवे धान्यत्रिपादस्थिते । मृत्युं गच्छाति विष्टपे सितरुचौ पापक्षुधासज्जने ॥ उद्घोद्घाटिततोपकोपवितरत्सद्रव्यसञ्जीवनैः । कालंकालमपाकरोत्सविशदप्रासादकर्मच्छलात् ॥ १९ ॥ कलंकमपि नोगतं मम पुनर्ह्यनंताटना । दिति द्विजपतिर्मलं वसति मार्ष्टुं मिच्छन् जले ॥ फलिद्विजनिषेवितोऽतुल सुचित्रशाली पुनः । सुमित्रमदनश्च यत्कृतजगन्निवासच्छलात् ॥ २० ॥ स्वीयं सौभा-

गिनेयं पितृजयनगरोद्भागिनं भागिनेयं । माधोसिंहं नृसिंहः स्फुरदतुलरुषाऽदत्तलक्ष्मीकटाक्षः ॥ प्रल्हादं पक्षपाताद्ययितशतगुणोल्लक्षमुद्रासमुद्रो । देवर्ष्यात्माभ्यर्षिंचद्विबुधजननुतः पित्र्यराज्यासनेयः॥ २१ ॥ तस्मात्प्रतापसिंहो। ह्यरिसिंहोद्वौ सुतौ तयोर्मध्ये ॥ राजति राज्ये ज्येष्ठे । पुत्रोभूद्राजसिंहोऽतः ॥ २२ ॥ स्वर्गे वासं कृतवति। पितरि जगत्याः सपालनेधिकृतः ॥ तस्मिन्नपि पितृसेवां। प्राप्ते राजाऽरिसिंहोऽभूत् ॥ २३ ॥ नयेन नयतः क्षोणिं राजसिंहस्य नाकिनः ॥ भ्रात्रीयस्यार्यपुत्रस्य ह्यरिसिंहो ऽग्रहीत्पदं ॥ २४ ॥ कृत्वासद्वरणं पुरः सपरिखं स्वीयैक रक्षाकरं । संरुद्धत्पुरमागधप्रबलभृद्दुर्म्मोलजित्सिंधियं ॥ लक्ष्मीशः सवलश्च सत्प्रहरणो योजेजयीदुर्जयं । तस्यासीच्छमरुर्हि कालयवनः क्रीडास्पदं संगरे ॥ २५ ॥ किंकालव्यालबालः किमुत मरणकृत्कालजिव्हाग्रमुग्रं। किंशंभोर्भालनेत्रज्वलदनलशिखाज्वालमालासमूहः॥ किंत्रुट्यद्वज्रपातोजनितघनरुचिः कल्पसिंधो स्तरंगो । जन्ये जन्ये ब्यलोकि त्रिदशपरिवृढै र्यत्करे मंडलाग्रः ॥ २६ ॥ स्वामिद्रोहपरायणैश्च लवणोदोद्वंचकैर्द्वेपरै । रौस्नावैः सहकृत्रिमाकृतिनृपः स्वाशाशयाऽस्मिन्सति ॥ घासात्मा किलकर्षुकैरिव नरः क्षेत्रोच्चनीडे धृतः। स्फूर्जत्कुंभलमेरुदुर्गवसतिः श्री मेदपाटावनौ ॥ २७ ॥ जित्वा कृत्रिमराजपक्षतिकृतादिङ्मासमायोध्य यः । क्रुध्यन्मालजिता पटीलविभुना जन्यत्रयं योगिभिः ॥ म्लेच्छाट्टोपल पर्वते च शमरोर्ग्रामे च गंगारके बुंद्यां वीरगतिं गतः कतिपयैर्वर्पैर्हि भुक्का महीं ॥ २८ ॥ हम्मीरसिंहो प्यथ भीमसिंहो । बभूवतुस्तस्य सुतौ सुवीरौ ॥ श्री रामचंद्रस्य कुशोलवश्च तत्रैकराडासतुरत्र चोभौ ॥ २९ ॥ आपंचशरदं क्षोणीं । भुक्का भूपे दिवं गते ॥ हम्मीरवीरे च ततो। भीमसिंहोऽभवन्नृपः ॥ ३० ॥ श्रीमानसीममहिमदस्युविनाशभास्वद्भास्वत्प्रतापउरुबुद्धिविशालभालः ॥ विहारगत्यमतकीरमरालबालः । स्फूर्जन्महाजगति भूपतिभीमसिंहः ॥ ३१ ॥ रूपेणाप्रतिमः प्रियासु रसिकः कामोवपुष्मानिव। दानेनार्जितकर्णभोजमहिमास्वैश्वर्ये आखंडलः॥ भूर्भुक्ता वहुवत्सरं गुणवता जुष्टाः पुमर्थास्त्रयः। प्राप्तं येन सुखं परं च तदियद्वक्तुं कइष्टे जनः॥ ३२ ॥ यश्चाग्रहीन्कुंभलमेरुदुर्गं । वैषम्यनीचैष्कृतसह्यशृंगं॥ वभंज दुष्कृत्रिमराजभीतिं क्षेत्रस्थचंचामिव वै वराहः॥ ३३ ॥ तस्यांगजातोहि युवानसिंहो । यस्याग्रउग्रोपि युवानसिंहः॥ दानेन कीर्त्याच गुणैश्चयेन। मोमेशभक्त्या न समोपि कोपि॥ ३४ ॥ कांतः केलिकलाकुतूहलरतः क्षोणींद्रकन्यावृतः शस्त्रास्त्रैरबहिष्कृतो परिजनैः संसेवितोनुद्धतः ॥ नानाक्षत्रकुलान्वितोगुरुनतोविद्वन्नुतोधीश्रितो । कोप्यासीद्वियुवानसिंहनृपतिः श्रीमान् गुणौघावृतः॥ ३५ ॥ पुत्रः स्याद्यदृणत्रयात्स्वपितरं संमोचयेत्सोनृणः। इत्यालोच्य गयां व्ययेन नयता पौराञ्जनान्नैवृतान्॥

येनापामरमात्मजार्पितसक्तुपिंडोपि विष्णोः पदे। श्रीमद्रामसमानविक्रमकृता जीवौघ उद्धारितः ॥ ३६ ॥ परिहृतउरुडंडउद्धताज्ञः क्षितिपगरुंडधवेन यस्य वाक्यात् ॥ अनुगतनृगणस्य यस्य कस्य सइति बभूव युवानसिंह भूपः॥ ३७ ॥ ब्रह्मांडाधिकृतास्त्रयोपि विबुधा ब्रह्मेशनारायणा। स्तेषां तुष्टिकृते क्रमात्किमथवा धर्मार्थकामाप्तये ॥ यात्रा येन हि लक्षशोवितरता स्वंकारिता त्रिस्थली। या यो-ध्यानयनात्पुनस्तनुभृतां मोक्षोपि हस्तेर्पितः ॥ ३८ ॥ तत्स्थाने शरदारसिंह इति यो राजा प्रजारंजयन्। यदृष्याप्तसमग्रदुष्टजनताशश्वत्स्वधर्म्मादरः॥ वृद्धि-र्वाप्यथ हानिरेव भवताद्यः स्वोक्तनिर्वाहकः। सद्बुद्धिर्मितवाक् स्वधर्म-निरतश्चासीत्तथानापरः॥ ३९ ॥ सचापि यात्रां पितृमुक्तिहेतुं युवानसिंहाग्र-कृतप्रतिज्ञः॥ गयाभवां नाप्तभवामकार्षीन्नवाप्तराज्योपि वचोतिदार्ढ्यात् ॥ ४० ॥ तद्राज्येस्ति सुरूपसिंहनृपतिर्विख्यातकीर्तिर्गुणै। र्न्याय्ये दाशरथिर्मनुर्ह्यनुभवे पार्थः प्रजापालने ॥ दाने चाधिरथिर्व्वसुर्व्वसुचये धैर्ये बलिर्भूक्षमी। वंशेद्यावधि कोपि येन सदृशोभावी न भूतोनृपः॥ ४१ ॥ इंद्रः किम्विति चारणैश्च विबुधै श्चिन्तामणिः कामदः। किं मर्त्यैः किमुकल्पवृक्ष इति किं कर्णैश्चभट्टैरिति ॥ भोजः सत्कविभिः किमेवमखिलैः श्रीमत्सुरूपोनृपो। हृष्टः सन् हृदि केन केन समये दानस्य नोत्प्रेक्षितः॥ ४२ ॥ रामोयं जितदूपणः सुभरतः सल्लक्ष्मणाप्तोनमन्॥ शत्रुघ्नश्चतुरात्ममूर्तिरजितश्रीचित्रकूटस्थितिः ॥ नूनं सज्जनकात्मजाभिरमितो बद्धप्रकोष्टांगदः। कौशल्याप्तकृतावनो विजयते रामायणैकाश्रयः॥ ४३ ॥ आजानेयमसौ कियाहमतुलं वीतिं विनीतं वर। मारुह्याब्जमुखीक्षणप्रसरण स्पर्द्धाकरं सुंदरं ॥ आश्चर्यं व्रजतीत्ति यद्युपवनं कृताश्ववारीं तदा सांगोनंग इति प्रतिस्मृतिभुवं संशेरते किंनरः॥ ४४ ॥ मद्यं त्याजयति प्रियं क्रतुसमं स्या-त्तस्य पुण्यं श्रुता। वुक्तं तत्क्षितिरक्षिणा मधु वृथापानं नृणां त्याजितं ॥ श्रीराजेन्द्र सुरूपसिंहविभुना नैकक्रतूनां च या। देवेंद्रस्तुशतक्रतुस्तदधिकः ख्यातोस्त्य-नंतक्रतुः॥ ४५ ॥ कृतं च येनैवकृतं नकेन। धनापहं दुस्त्यजमेतदेतत्॥ ऋणस्य मद्यस्य च मोक्षणं पुरा। यैस्तत्कृतं मुक्तिदमेव तेषाम्॥ ४६ ॥ प्रतिज्ञापूर्व्वं या नरपति युवानेन हि कृता। यथा चत्वारिंशच्छरदुपरितोमध्वयचये ॥ नजाताष्ट-त्रिंशत्परिमिततदायुःक्षयवशा। त्कृता पूर्णा येन क्षितिपतिवरेणाद्य कृतिना ॥ ४७ ॥ अथ युवानसिंहकारितदेवालयप्रसंगोपक्रमः॥ बाघेलीति युवानसिंहनृपतेराज्ञी समाज्ञापरा पौलोमीव पुरंदरस्य सुभगा शंभोर्भवानीव या॥ चंद्रस्येव च रोहिणी रतिरिव श्रीमन्मथस्यास्य वा। अत्यंतं हृदयंगमा सुचतुरा प्रीत्यास्पदं साभवत्॥ ४८॥

रीमाराड्जयसिंहदेववपुरुद्भूता कुमारीश्वरी । राज्ञोढा गुणशीलरूपसुवयः सौभाग्य तुल्यायतः॥सीता किं रघुनायकस्य यदुभृत्कृष्णस्य किं रुक्मिणी॥विख्याता पतिदेवता मधुरवाक् संतोषितस्वप्रिया ॥ ४९ ॥ आबाल्यात्परिचर्य्यिकां कृतवती गोपालनाम्नो हरेः । श्रद्धाचारपरातिवैष्णवजना भक्त्येकनिष्ठा सदा ॥ रूप्यानिर्मितसूर्प्पकुप्पतितऊः पित्राप्तसद्वैभवा । गीताभागवतादिपाठत उरुं कालं निनायानिशं ॥ ५० ॥ इत्थमच्युतसमर्प्पितचित्ता । पात्रवैष्णवसुरार्प्पितवित्ता ॥ आससाद हरिपादमभीता तत्र नोत्थकफवातकपित्ता ॥५१॥ ज्ञात्वेत्थं धरणीधरेंद्रउत्तमांता । मेतस्यागातिमतिविस्मयं प्रपन्नः ॥ तत्याज प्रभृति ततः कति प्रियस्य । वैराग्यात्तनुविषये कृतप्रतिज्ञः॥ ५२ ॥ वाघेल्या लवसानभानसमये वित्तं स्वपार्श्वे स्थितं तत् सर्वं हरयेऽर्प्पितं च कथितं राज्ञो मुखाग्रे स्फुटं ॥ राजा तेन युवानसिंह इति यो ऽलुब्धोतिहृष्यन्मनाः प्रासादं रचयांचकार विधिवच्छिल्पीश्वरैः शोभनं ॥ ५३ ॥ प्रासादं यमनल्पदत्तविभवैर्मर्ज्जूरकैः शिल्पिभिः । शीघ्रं कारयतो महोत्सवविधामाशास्यमानस्य यत् ॥ स्वीयायुः क्षणभंगुरं च विदुषः सायुज्यसिद्धिर्हरे । जाता ऽप्राप्तमनोरथस्य नृपते दैवात्पदाज्ञाश्रये ॥ ५४ ॥ तत्पश्चाच्छरदारसिंहनृपतिर्यत्नं तथैवा ऽकरोत् । कालानाप्तविचारितः पदमगाच्छ्रीएकलिंगस्य यः ॥ तत्पश्चात्र सुरूपसिंहपृथिवीपालः स्वभाग्योच्छ्रयात् । प्रासादे कलशं दधार मतिमान् संपूर्णतापादिते ॥ ५५ ॥ यथा गंगाप्राप्त्या अहह कृतवंतोवहुतपोंशुमन्नाद्याभूपास्तदपि किमयान्नो सुरसरित् ॥ तपोभागीरथ्यं जगदघहरं सर्व्वविदितं । तथैवेदं पुण्यं महदिति सुरूपक्षितिभृतः ॥ ५६ ॥ पूर्वं श्रीचित्रकूटे क्षितिविदितगिरौ वप्पशैशोदवंशः क्षोणीभृन्मेदपाटद्विपदसहधराद्दुर्गसन्मूलभूमौ ॥ मीराराज्ञीशिरस्थ स्तदनु नृपजयसिंहपुण्यध्वरीत्या शीर्षे स्वस्थापितोसावुदयपुरवरे मंदिरे स्वर्णशृंगे ॥ ५७ ॥ साचोरद्विजसेवकैरनुदिनं तद्रागभोगौ व्यधात् । सेवाप्रेमनदीप्रवाहमतनोत्क्षौणीभृदेवं स्वयम् ॥ प्रासादे ससहेलिकानिजसखीनामप्रभूतोदये । प्रीतिं प्राप जगच्छिरोमणिरयं कालं च कंचित् सुखं ॥ ५८ ॥ म्लेच्छैश्चपिंडारकदाक्षिणात्यैः स्वमातृकुक्षि प्रविदारणैर्यः ॥ उपद्रवेस्मादपि सोऽच्युतः सन् । सस्वामिनीकोत्र रहोन्वतिष्ठत् ॥५९॥ सुरूपसिंहोपि निजैकदेवं पूर्वं जगत्सिंहकृत प्रतिष्ठं। युवानसिंहाभिमतं विचार्य समानयत्तं पुरुपोत्तमं सः ॥ ६० ॥ श्रीरस्तु॥कल्याणमस्तु॥शुभंभवतु॥श्रीगोवर्द्धनोद्धरणधीरोजयति ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ ॐनमः ॥ अथप्रथमपट्टिकाशेषमापूर्यते ॥ श्रीवल्लभान्वयजनिः प्रथितोसौ । श्रीगोकुलोत्सव इतिप्रकटास्यः ॥ श्रीपुष्टिमार्गपुरुपोत्तमप्रतिष्ठांसस्वमार्गविधिना

यथाकरोत् ॥ ६१ ॥ गोष्ठीशालकृतावटंक इति यो गोपालकृष्णः सुधी । भट्टः सर्वगुणैकदक्षउरुधा तैलंगजातिः स्वयं ॥ नाथद्वारतआदरेण नृपतिः स्वानाय्य यं सोथ य च्छीर्षे ऽ धाद्धि जगच्छिरोमणिममुं पुष्ट्यध्वसेवाकृते ॥ ६२ ॥ संवत्यब्धिखनंदभू १९०४ परिमिते सूर्ये वृषे पूषणि । लंबत्युत्तरगोलके शुभकरे वैशाखमासे सिते ॥ पक्षे द्वादशिसत्तिथौ रवियुते चंद्रे च कन्यास्थिते लग्ने सिंहशुभेक्षिते नृपतिना देवप्रतिष्ठा कृता ॥ ६३ ॥ श्रीवृद्धदेवलकृतस्थितिरेव वर्णी । श्रीविष्णुदासइतिनाममहातपस्वी ॥ गायत्र्युपासनपुरश्चरणैकरुद्रो । वाङ्माधुरीजितसमग्रसुधासमुद्रः ॥ ६४ ॥ नित्यं सुरूपनृपसद्धितकृच्छुभार्थी । सद्धर्मकर्मविधिशास्त्रविधानदक्षः ॥ सोत्रोपविश्य विधिपूर्वककर्म तेने । राजापि तद्वचनमेव हितं च मेने ॥ ६५ ॥ अथ प्रासादवर्णनं ॥ गौराभाभ्रनिभैरनेकशिखरैर्युक्तोऽप्युदभ्रंलिहै । नानादिक्पतिदेवतागणकृतप्रत्यक्षवासैरिह ॥ स्त्रीप्राये यइलावृते शिववचः सत्यं हृदा संस्मरन् ॥ मन्ये तद्भयभावभंगुरमनामेरुर्हि तष्ठीयते ॥ ६६ ॥ चंद्राच्चंदनतः पुरंदरगजाच्छ्रीचंद्रचूडादपि । कर्पूरात्करिकोमलोद्भिदरदात्कर्णाटकांतास्मितात् ॥ स्वच्छोयचशओघ एव निपुण प्रासादकायच्छला । द्विष्णोरंघ्रियुगार्थहाटकघटं शीर्षे यमालंबते ॥ ६७ ॥ अश्वैर्मत्तमतंगजैरपि रथैः पादातिगैरन्वितो मन्ये हं चतुरंगिणीप्रतनया यत्पुण्यपुंजोभटः ॥ प्रासादस्य मिपान्महाभटचमूपाथौघमाबाधितुं । स्वांतर्व्वर्मितकृष्ण उद्धतभुजः सन्नद्धउज्जंभते ॥ ६८ ॥ दत्तैः किं किमु रूप्यखर्प्परभवैः खंडैश्च कि प्रस्तरैः । शुभ्रैर्वाहिमसंभवैः किमथवाद्धापारदैस्तंभितैः ॥ प्रासादोयमनिश्चितेकरचनः केनैव निर्मापितो । दृष्ट्वारादपि यं मनागनिमिपं संशिश्यिरे मानुपाः ॥६९॥ पुष्टोहं च जगच्छिरोमणिरहं चास्यैव देवोस्म्यहं । मां हित्वायसुमंदिरे निजजगन्नाथं समास्थापयत् ॥ इत्येवं भ्रशमीर्ष्यया हरिरभूद्रुतोयमद्यावधि । श्रीमद्भूपसुरूपसिंह विभुना स्वस्थोयमध्यासत ॥ ७० ॥ मम गृहमिदमुज्वलं तथोच्चै । रिति हरिरपि सन्मुखस्थमीशं ॥ विवदिपुरिव मार्जनाय पार्श्वे । स्त्रियमपि रहितोन्यतोबिभर्त्ति ॥ ७१ ॥ अथ प्रसंगोपात्तपुष्टिपुरुपोत्तमसंवत्सरोत्सववर्णनम् ॥ श्रीमद्वल्लभविठ्ठलप्रभुवरारूपं न दध्युर्भुवि । संसारं यदि चेत्तदा हि वसुधाशुन्ये यमा स्थास्यति ॥ श्रीमद्गोकुलराजनंदनकृतालीलापि जीर्णांतरा । देवानां क्व गतिस्तथा क्व सुमतिः प्रीत्युन्नतिर्घोपजे ॥ ७२ ॥ आजन्मोत्सवः ॥ जन्मन्यस्य महामनाः परिददौ नंदोपि दानं मुदा । गोपाये च विचिक्षिपुः प्रमुदिताहैयंगवीनं मिथः ॥ गोपीर्याव्रजतीर्विरेजुरधिकं नंदालयं दर्शने । सश्रीकृष्णउदारचित्तचरितः पायान्नइंद्रोगवां ॥ ७३ ॥ प्रेंखः ॥ श्रीप्रेंखपल्यंकवरे स्थितं हरिं । प्रसाधितं मातृपदैर्मुदा भजे ॥

सुभ्रूतटे दृग्धरकृष्णबिंदुं । कंठस्थितव्याघ्रनखादिभूषं ॥ ७४ ॥ अथ बाललीला ॥ मातश्चंद्रमसं लभेय झटिति क्रीडार्थमानीय मे। देहि ह्यंगुलिमुत्क्षिपन्दिवि रुदन् भूमौ लुठन् दर्शयन्॥ स्थालीनिर्मितवारिबिंबितममुं वीक्ष्यातिहृष्यत्तनुः। हिहीत्युत्सुहसन्नतिप्रमुदितो मुग्धोहरिः पातु वः ॥ ७५ ॥ दानलीला ॥ दानंयौवनगर्विताः प्रतिदिनं यांत्यो मुपिला हि नो । रुंधध्वं किलगोरसेन भरितानूनं वयस्याइमाः ॥ श्रुत्वेत्थं पशुपालजस्य वचनं संनर्त्तितभ्रूह या। लालन् गोरसएव कीदृशइति प्राप्यस्त्वया सावतात् ॥ ७६ ॥ नेत्रमीलनलीला ॥ राधायाः शिरसीरयन्प्रणयतोदानं सखीनां पुरः। सख्यामुद्रितचक्षुपस्तिरयितुं यः कांदिशीकः स्वयं ॥ चक्षुर्मीलनकेलिषु प्रियसखीवृंदैर्विशाखेडितः। कृष्णः संभ्रमतोनिकुंजइव मे स्वांते निलीनोस्त्वयं॥ ७७ ॥ रासलीला ॥ आनंदाब्धिरसोऽवनौ हरितनौ बद्धोहि वृंदावने। रुद्धश्चैकतउच्छलन् यमुनया गोपीभिरेवान्यतः ॥ किंचित्तु प्रसृतोमिताद्धरिजनेष्वद्धा निपीतोपि तैः। नं स्पृष्टोभुवि कर्मठैः श्रुतिहरैः शून्यप्रियैर्ज्ञानिभिः ॥७८ ॥ अन्नकूटोत्सवः॥ बिभ्राणोविलसत्सुवर्णकुलहीं गोकर्णवर्हावलीं। चक्रोदारसुवर्णवस्त्रविलसत् सर्वांगसत्कंचुकः॥ धृत्वा रूपमनल्पकं गिरिरिवाद्वेंद्राय मन्युं नयन्। शाकं पाकमदन् निवेदितमुरुं गोवर्द्धनेशोबभौ ॥ ७९ ॥ दोलोत्सवः॥ वासंतीवरजातियूथितरुणीमल्लीमतल्लीलता। कुंजे मंजुलमंजुलैः परिवृते दोलांश्रितं श्रीहरिं॥ आदृक्तं पटवासकैर्दयितया सिक्तं तथा रेचकैः। पश्यन्त्यत्र सखीभिरुत्स्मितमुखं भाग्यैः सनाथानरः॥ ८० ॥ रथयात्रा ॥ सुग्रीवादिभिरन्वितं हयवरैः सत्स्थंभचक्रं रथ। मारुह्य प्रविसत्वरं बहुतरं सत्कंचुकोष्णीषधृक्॥ याति श्रीवृपभानुमंदिरमसौ प्राणप्रियाहूतये। गोपालोमणिमौक्तिकाभरणयुक् शृंगारधृङ्नोवतु ॥८१॥ हिंडोलोत्सवः॥ हिंदोले हि विशाखया ललितया पार्श्वद्वयांदोलितौ। वर्षायां नभसीज्वरत्नखचिते श्रीमत्किशोरौ मुदा॥ राधा वाप्यथ कृष्णउद्धतवपुः शृंगारकौ दंपती। नानाभ्राक्ततडिद्घनाविव महाभाग्यैरिह प्रेक्षितौ॥ ८२ ॥ अष्टदर्शनानि ॥ आदौ मंगलदर्शनं तदनु सच्छृंगारजं ग्वालजं। गोपीवल्लभनामतत्तदनु यच्छ्रीराजभोगोद्भवं ॥ यच्चोत्थापनभोगभोगजनितं चारार्तिजातं पुनः। सायाह्ने शयनं हरेरनुदिनं हीत्थं च दर्शाष्टकं ॥ ८३ ॥ मंगलं ॥ वृंदारण्यविहारिणि प्रविलसद्भास्वत्सुता वारिणि। स्नास्यद्गोपकुमारिकांवरहृतिव्याजान्मनोहारिणि ॥ कालिंदीतटचारिणि क्षितिभृतः शृंगेषु गोचारिणि । गुंजाहारिणि मे मनः प्रविशताद्गोवर्द्धनोद्धारिणि ॥८४॥ उत्सर्गेस्य सुरूपसिंहनृपतिः पृथ्वीमहेंद्रोबभौ। वृष्टिं रूप्यमयीमवर्ष दतुलां सद्ब्राह्मणक्षेत्रगां॥ जातोपूर्वदृढांकुरः पुनरसौ सौख्यैकवृक्षोमहान्। पुष्पं सद्यशएवपुत्रफलवान् भूयाद्विजैरक्षितः ॥ ८५ ॥ तुंगाश्वान्करिणोरथान् पुनरसौ वस्त्राणि

चित्राण्यलं॥ चातुर्वर्ण्यसमाश्रितानपि मुदा योदीददद्वा नृपः। भुक्तं तृप्तमुदप्तमृद्ध-मिति यां वाणीं सदैवाशृणोद्योलोकोपि दिदृक्षुरागतइमं चित्रेणतुल्योऽभवत्॥ ८६॥ समुद्रवचनं यथा भवति वै मणेर्बंधानात्। सुवर्णकटकप्रपत्तिरिति यो मृषैवाकरोत्॥ विनापि तद्रुतादददादगणितानि नृभ्यस्तदा। सुवर्णकटकानि किं कथयतीह शास्त्रं पुनः ॥ ८७॥ अस्मिन्नन्हिजगच्छिरोमणिरसौ सेतुर्बृहन्नामको। रिंगत्सागरसेतुरद्भुततरो मिष्टप्रभूताब्धरः॥ तुर्य्योन्यत्र युवानसूरजविहारी चैव राधावरः॥ सर्वेषामभिजिन्मुहूर्त्तसमये दिव्या प्रतिष्ठा ह्यभूत्॥ ८८॥ आखातामलसारिकावधिमुदारव्य-प्रभूतोदयं। प्रासादस्य पुरोधसा सह विधिन्नातैकसंवेदिना॥ सर्वस्मादमरेश्वरेण सुवरेण श्रीयुवानोनृपः। स्वाराट् चित्रशिखंडिजेन किमपि प्रष्टुं हि विष्णुं गतः ॥ ८९॥ तस्याथास्त्यमरेश्वरस्य तनयो। रामस्य शक्थेः पिता। धौम्योधर्मतनुद्भवस्य व निमेर्यद्वच्छतानंदकः॥ राज्ये पौष्टिकशांतिकर्मविधिवच्छंशी शुभस्यान्वहं। स्वच्छांतः शिवराजइत्यभिधिया राज्ञः पुरोधा द्विजः॥ ९०॥ सांचोरद्विजनत्थुरामतनयं मुख्यं विधायात्र य। स्तत्साहित्यकृतिस्थितावनुरतं संपद्विपद्धर्मसु॥ नान्यत् किंचन वित्तमच्युतममुं हित्वेत्थमालोच्य सः। केदारेश्वरकं द्विजं च कृतवांस्तस्मिन्कथावाचकं ॥ ९१॥ अंतर्वाणिरमंदगुर्जरदयानंदाभिधोब्राह्मणः। श्रीगौडोहि परंपरागतपदो राज्ञः सुकर्मांतिकः॥ ९२॥ तेनेदं सकलं महाविधिविदा प्रासादजोत्सर्गिकं। राजानुग्रह-भाजनेन विधिवद्बलिग्द्विजैः कारितं॥ प्रासादं शुभमेरुजातिममलं शिल्पीशगोवर्द्धनो। भारद्वाजउचेनरामतनयः सच्छिल्पविद्यापरः॥ आखाताद्रचयांचकार विधिवद्राजा-ज्ञया सादरं। यस्येमां रचनां विलोक्य व्यदधच्छ्रीविश्वकर्मा मुदं॥ ९३॥ विप्राग्र्योव्रज-लालइत्यभिधया श्री मेदपाटाख्यया भट्टोगौज्जरउत्तमोदयपुरावास्येव पौराणिकः॥ यत्तद्विप्रकुलोपकारकरणप्रख्यातकीर्तिं व्रजं। तेषांलालयतीति सत्कृतिसतैरन्वर्थना-माभवत्॥ ९४॥ यत्पुत्रः किलकृष्णलालउरुधीः कृष्णस्य संलालनात् कृष्णांशस्य युवानसिंहनृपतेः सप्ताहपारायणात्॥ श्रीमद्भागवतोद्भवादपि तथा विख्यातकीर्तिश्रय। स्तेनेयं रचिता प्रशस्तिरखिला विद्वन्मुदे स्तात्सदा॥ ९५॥ कोटेश्वरेण लिखिता दशोरद्विजजातिना॥ उत्कीर्णा नत्थुजीवाभ्यां शिल्पिभ्यां शुभदा सदा ॥ ९६॥ यावत्सूरसुताद्भुता हरिरता यावच्चभागीरथी। यावत्सर्वजगत्प्रकाशनपरौ श्रीपुष्पवंतौस्थितौ॥ यावन्मेरुरवस्थितिः क्षितितले यावन्महांतोजना। स्तावत्तिष्ठ-तु मत्प्रशस्तिरतुला स्पष्टाक्षरेयं चिरं॥ ९७॥ श्रीरस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ शुभं भवतु॥

छन्द गीतिका.

शिवलोक ग्ये सिरदार भूप सुरूप राज्य विराजकैं ।
बहु राजनीति विचार सार प्रबन्ध उत्तम साजकैं ॥
कर शेरसिंह प्रधान पदतें रामसिंह उतारिकैं ।
सीसोद कुलतें मद्यपान मिटाय दूपण जारिकैं ॥ १ ॥
विप देन दोप अमात्यके हतबंद देश निकारभौ ।
चतरेशपे दल प्रेश तें सिरदार दुग्ग विकारभौ ॥
अरु जोरने निज ठौर पाय अनन्य ईश प्रभावतें ।
शठ भिल्ल लोग अभीत ह्वै हत राजनीति स्वभावतें ॥ २ ॥
युग स्वसा व्याहन हड्ड भूपरु बांधवेश बुलायकैं ।
वर हड्ड राम बघेल त्यों रघुबीरकौं परणायकैं ॥
फिर आर्य दुग्गमकी बगावत मान सार मिटायदी ।
भैचक्क भारत भूमि भौ अंगरेज आन उठायदी ॥ ३ ॥
तब रान भारत भान बानक मित्र भाव बनायकैं ।
जब दै पनाह अनेक इंग्लिश राखि प्रीति जनायकैं ॥
मेवार भट्टन द्वेप बिथ्थुरि वृत्त विस्तर तैं कह्यो ॥
पतिवृत्त पालन अग्गि जालन अंग पालन ना सह्यो ॥ ४ ॥
शुध भाव सज्जन सिद्धको फतमाल शासन पायकैं ।
कविराज श्यामलदासने इतिहास खंड बनायकैं ॥
सारूप रान प्रभाव सूचक बुद्धिमानन मोदको ।
यह खंड पूरण किन्ह कोद विथारिवीरविनोदको ॥ ५ ॥

महाराणा स्वरूपसिंह,

अठारहवां प्रकरण समाप्त.

उन्नीसवां प्रकरण,

महाराणा शम्भुसिंह.

इन महाराणाका राज्याभिषेक विक्रमी १९१८ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १२७८ ता० १४ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८६१ ता० १७ नोवेम्बर] की सन्ध्याको, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी माघ कृष्ण १ [हि० १२७८ ता० १६ रजब = .ई० १८६२ ता० १७ जेन्युअरी] को हुआ था. महाराणा स्वरूपसिंहका इन्तिक़ाल होते ही ये उदयपुर के राज्य महलोंमें आगये थे. जब महाराणा स्वरूपसिंहकी आख़री सवारी महासती सहित गोवर्द्धनविलाससे कृष्णपोल दर्वाज़ह होकर भटियानीचौहटे होती हुई जगन्नाथरायके मन्दिरके सामने प्राचीन रीतिके अनुसार भेट दण्डवत करके बाज़ारके रास्ते (१) दिल्ली-दर्वाज़हसे निकलकर आहड़ ग्रामके पास महासती क्षेत्रमें पहुंची, तो वहां काष्ठके बंगले में महाराणाकी लाशको लेकर पासवान ऐजनकुंवर बैठगई, और विधिपूर्वक दग्ध-क्रिया होनेके बाद कुल उमराव, सर्दार, प्रधान, अहलकार आदि स्नान करके वापस आये, उस समय महलोंमें गद्दीनशीनीकी बाबत सलाह मश्वरह होने लगा; क्योंकि सलूंबर का रावत् केसरीसिंह उसवक्त मौजूद न था, और उसके चचा रावत् ईश्वरीसिंहने इन

(१) इस मौक़ेपर रास्तेमें बहुतसा ज़ेवर, अश्रफ़ियां और रुपये लुटाये गये.

महाराणाकी गोदनशीनीके वक्त इन्कार करदिया था. परन्तु रियासती क़दीम दस्तूर के मुवाफ़िक़, कि एक महाराणाका इन्तिकाल होनेपर उसी दिन उनका क्रमानुयायी गद्दीपर बिठादिया जावे, मौजूदह उमराव, सर्दारों व अह्लकारोंने रावत् खुमाणसिंहको इस ग़रज़से महलोंमें बुलाया, कि वह महाराणा शम्भुसिंहके गोद लिये जानेके वक्त मौजूद था, इसलिये उसे इस मौक़ेपर शरीक रखना चाहिये; लेकिन् उसने कहला भेजा, कि सलूंबरसे रावत् केसरीसिंहके आनेपर गद्दीनशीनीका दस्तूर होगा, उसकी रायके बिना कार्रवाई करके उसका गुस्सह कौन झेल सक्ता है? इसपर बेदलाके राव बख़्तसिंहने कहलाया, कि यदि आपको आना हो, तो जल्दी चले आवें, वर्नह मैं गद्दी-नशीनीका दस्तूर अदा करनेको तय्यार हूं. तब खुमाणसिंहने आकर केसरीसिंहकी नाराज़गीका ख़ौफ़ ज़ाहिर किया, लेकिन् राव बख़्तसिंहने इस धमकीको न मानकर सभाशिरोमणि महलमें महाराणाको गद्दीपर बिठादिया, और उनके सिरसे ग़र्मी (शोक) की सिफ़ेद चादर उतारकर ज़ेवर पहिनानेके बाद नज़्र दिखलादी. इसके बाद रावत् खुमाण-सिंह वगैरह दूसरे मौजूदह लोगोंने भी नज़्रें दिखलाईं; कुल कारख़ानोंके दारोग़ाओंने अपने अपने ज़िम्महके कारख़ानोंकी कुंजियां महाराणाके नज़्र कीं, जो महाराणाके हुक्म से उन्हीं लोगोंको वापस सौंपी गईं, शहरमें महाराणा शम्भुसिंहके नामकी दुहाई फेरी गई. कुल उमराव, व सर्दार अपने अपने ठिकानोंसे जमइय्यतों समेत उदयपुरमें आने लगे, एक शरीरके उठजानेसे रियासतमें अनेक प्रकारकी तब्दीलात नज़र आने लगीं, हर एक आदमीको अपने अपने मत्लबकी फ़िक्र पड़गई. सब लोग इसी सोच विचारमें थे, कि देखाजाये साहिब एजेण्टके आनेपर क्या बन्दोबस्त हो? महाराणा जो कम उम्र थे, उन्हें उनके पास रहनेवाले लोग जैसी सलाह देते वे उसी तरह क़दम भरते थे. इसी अ़रसहमें ईश्वरेच्छासे विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० ता० २१ जमादियुल्-अव्वल = ई० १८६१ ता० २४ नोवेम्बर] को महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी चावड़ीका इन्तिक़ाल होगया.

वैकुण्ठवासी महाराणाकी उत्तर क्रिया बागोरके महाराज शेरसिंहके चौथे पुत्र सोहनसिंहने की, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २५ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २८ नोवेम्बर] को उनके द्वादशाहमें ब्राह्मणभोजन विधिपूर्वक हुआ.

विक्रमी पौष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ जमादियुस्सानी = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब और मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट टेलर साहिब उदयपुरमें आये, जिनकी पेश्वाईके लिये बेदलाका राव बख़्तसिंह और कोठारी केसरीसिंह राजनगर तक गये. मत्लबी लोग जो इसवक्त तक अपनी

अपनी फ़िक्रमें ध्यान लगाये चुपचाप बैठे थे, सावधान हुए. महता शेरसिंह और पुरोहित श्यामनाथ, जो बैकुण्ठवासी महाराणाकी नाराज़गीके सबबसे बाहिर थे, साहिबके साथ वापस उदयपुरमें आये. विक्रमी पौष कृष्ण ६ [हि० ता० २० जमादियुस्सानी =.ई० ता० २३ डिसेम्बर] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल और पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मातमपुर्सीके लिये महलोंमें आये, कुर्सियोंपर दर्बार (१) हुआ; महाराणा चांदीके बड़े सिंहासनपर विराजे. कुछ देर ठहरनेके बाद उक्त दोनों साहिब ज़नानखानहमें सलाम मालूम कराकर कोठी रेज़िडेन्सीको वापस चलेगये. विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ जमादियुस्सानी =.ई० ता० २६ डिसेम्बर] को महलोंके सामने बड़े चौकमें शामियानेके नीचे बड़े जुलूसके साथ शाही दर्बार हुआ, जिसमें बादशाहज़ादीकी तरफ़से खिल्अ़त, हाथी, घोड़ा और ज़ेवर वग़ैरह सामान कर्नेल लॉरेन्स और टेलर साहिबने पेश किया, तोपोंकी सलामी सर हुई; दर्बार बर्खास्त होकर अंग्रेज़ लोग कोठी रेज़िडेन्सीको गये. इसके बाद रियासती बन्दोबस्तके लिये सलाह होने लगी. आख़रकार महाराणाकी बाल्यावस्थातक पोलिटिकल एजेण्टका उदयपुरमें रहना और चन्द सर्दारों व बड़े अहलकारोंकी एक कौन्सिल ऑफ़ रिजेन्सीकी सलाहसे राज्यका प्रबन्ध होना क़रार पाया. विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० १ रजब =.ई० १८६२ ता० २ जेन्युअरी] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल तो उदयपुरसे रवानह होगये, और पोलिटिकल एजेण्ट मेजर टेलर साहिब कौन्सिलके प्रेसिडेण्ट नियत होकर उदयपुरमें रहे. इस कौन्सिलकी बाबत एक ख़रीतह बतौर इत्तिलाके पोलिटिकल एजेण्टने महाराणा साहिबके नाम लिखा था, जिसकी नक़्ल नीचे दीजाती है:-

खरीतहकी नक्ल.

॥ २७ ॥ नंबर ॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजा धीराज म्हारानाजी श्री संभुसीघजी साहेब व्हादुर अेतान, मेजर राबरट लवीस टेलर साहेब

(१) पेश्तर कर्नेल टॉडके ज़मानहसे ४२ वर्षतक यह क़ाइदह जारी रहा था, कि महाराणा गद्दीपर विराजते और एजेण्ट गवर्नर जेनरल व पोलिटिकल एजेण्ट दूसरे सर्दारोंकी तरह गद्दीके सामने फ़र्शपर बैठते, परन्तु बैकुण्ठवासी महाराणाके आख़री अ़हदमें इन्हीं लॉरेन्स साहिबके साथ

व्हादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी. अठाका स्मांचार भला हे, आपका सदाभला चाहीजे, अपरंच जोके साहेब अजीमुस्यांन नवाब मुस्तताब मोओला अलकाब लारड गवरनर व्हादुर मुमालीक हीदको बबाअस सगीरसंन आपके होना तमांम कांम रीआस्त दरवार ऊदेपुरका मारफत पंचाअत मंजुर हुवा, ईस्वास्ते आठ आदमी, उस्मे अेक तो रावतजी श्री वपतसींघजी बेदला, व रावतजी श्री रणजीतसीघजी देवगढ, व म्हांराज श्री हमीरसींघजी भीडर, व रना श्री लालसीघजी गोगुदा, व रावतजी श्री अमरसीघजी भेसरोडगढ, व कोठारीजी श्री केसरीसीघजी, व मेहेताजी श्री सेरसीघजी, व परोहतजी श्री स्यामनाथजी मुकरर कीअेगअे, सो अे लोग हरअेक मुकदमांत दरवार ऊदेपुरमे वाद तेहेकीकात तजवीज ऊस की मै मीसल मुकदमे व ईतफाक राअे अेक दुसरेके वमुराद ईस्तस्वाव व सदुर हुकम मुनास्ब हमांरे पास भेज्या करेगे; वसरत सुनास्व राअे पंचाअत मंजुर होकर हुकम मंजुरी वासते ईजराअेकार ईस मेहेकमेसे होजाया करेगा. ईस्वास्ते ये परीता वतोर ईतलाअे षीदमत मुबारीकमे भेजकर लीपता हुं, के अगर कीसी अमर रीआस्तमें आपको ईतला दरकार हो, तो याहासे आपको भी ईतला दीजावेगी, ओर मीजाज मुवारीक की षुसीका स्मांचार हमेसे ली॥ ता॥ ८ मांहे फरवरी सन १८६२ ई॥ मी॥ म्हा सुद ९ स्मत १९१८ मुकाम कोठी ऊदेपुर रोज सनीसर वार. (Sd) R. L. Taylor.
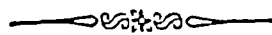
ملا حظه شد

जोकि इस कौन्सिलके नियत होनेसे रियासतको फ़ायदह पहुंचना चाहिये था, लेकिन् बर्खिलाफ़ उसके इन लोगोंने दो बातोंमें अपनी कारगुज़ारी और अक्लमन्दी खर्च की, याने अव्वल तो रियासतके ख़ज़ानह और ख़ालिसहकी ज़मीनसे अपना और अपने दोस्तों व रिश्तहदारोंका घर बनाना और दूसरा आपसकी पहिली अ़दावतोंका एवज़ लेना; क्योंकि हरएक मामूली या ग़ैर मामूली तह्रीर विना हुक्म इन लोगों के जारी नहीं होसक्ती थी, और न इसवक्त इन लोगोंको कोई रोकने वाला या इनकी तज्वीज़का रद्दियह करने वाला था, जो मन माना सो किया. अह्लकार लोग सर्दारों से दबगये, और बाज़ बाज़ उनमेंसे सर्दारोंके साथ मिलकर अपना भी मत्लब बनाने लगे. अल्बत्तह ऊपर लिखे हुए मुसाहिबोंमेंसे तीन शख़्स याने कोठारी केसरीसिंह, महता शेरसिंह और पुरोहित श्यामनाथ महाराणाके खैरख़्वाह, सर्कारी हुकूककी हिफ़ाज़त करने,

---

कुर्सियोंका दर्बार होना क़रार पाया, जिसमें महाराणा चांदीके बड़े सिंहासनपर और अंग्रेज़ ऑफ़िसर, रियासती सर्दार, चारण और अह्लकार वग़ैरह कुर्सियोंपर बैठे. यह दूसरा दर्बार था, जो कुर्सियोंपर हुआ.

और अस्ली बातोंको ज़ाहिर करने वाले, अक्कमन्द व सच्चे आदमी थे, मगर महता शेरसिंहको तो इसवक्त उसके लालची बेटे सवाईसिंहने बदनाम किया, और कोठारी केसरीसिंह व पुरोहित श्यामनाथको दूसरे लोगोंके ख़िलाफ़ सच्ची आदतें इख्तियार करनेके कारण बहुतसा नुक्सान उठाना पड़ा, बल्कि उसके बिगाड़नेमें जहांतक होसका लोगोंने कोताही नहीं की, जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा. इस कौन्सिलके पंच सर्दारोंमें अव्वल राय देनेवाला देवगढ़का रावत् रणजीतसिंह था, कि जिसके मौजूद न होनेकी हालतमें अदालतकी कुल कार्रवाई बन्द रहती थी, और वह सुब्हसे शामतक पूजा पाठ, खाने पीने व आराम करनेसे फ़ुर्सत नहीं पाता था, कि अदालत में आकर बैठे; हां जब अदालती काम जियादह चढ़जानेके सबब अहलकार लोगों की रिपोर्टों और रिआयाकी फ़र्यादोंसे दिक़ होकर सप्ताहमें एक या दो दिन सौ दो सौ आदमियोंके लवाज़िमहसे शामकेवक़्त कचहरीमें जाता भी, तो सिर्फ़ एक या दो घण्टा ठहरकर अपने दो चार तरफ़दारोंका काम बनानेके बाद वापस डेरेपर चलाआता. अगर्चि यह शख़्स उस ज़मानहमें अव्वल दरजेका अक्लमन्द मानागया था, लेकिन् पाठक लोग ख़याल करसक्ते हैं, कि महीनेमें सिर्फ़ दो या चार बार अदालतमें जाना और बे-पर्वाईके साथ कुछ देर ठहरकर वापस चलाआना ऐसी बड़ी रियासतके प्रबन्ध और अदालती इन्साफ़के लिये कब काफ़ी होसक्ता था. आख़रकार उसकी कम फ़ुर्सती और काहिलीने उसको अपनी अक्लमन्दीसे नामवरी हासिल न करने दी. भींडरका महाराज हमीरसिंह, जो अपनी उदारतामें प्रसिद्ध था, वह जगतप्रिय और मिलनसार होनेके सिवा महाराणाका ख़ैरख़्वाह भी था, लेकिन् पान्सलके शक्तावत लछमणसिंह (लक्ष्मणसिंह) और काम्दार रखबदास (ऋषभदास) महाजनपर भरोसा करलेनेसे बहुतसी बातोंमें उसे बद-नामी उठानी पड़ी. इन सब सर्दारोंमें बेदलेका राव बख्तसिंह बड़ा अक्लमन्द व होश्यार था, जो मेम्बरोंकी एक सम्मति न देखकर सबके शामिल और सबसे जुदा रहनेके अला-वह हरएक मुआमलहमें सलाहके वक़्त भी ऐसी बात कहता, कि जिसका मत्लब हर तरफ़ लग सके; और इसी अक्लमन्दीके सबब वह महाराणा व पोलिटिकल एजेण्टका मोतबर सलाहकार बना रहा. अगर यह कौन्सिली लोग अपना अपना मत्लब तो महा-राणा साहिबको इख्तियार हासिल होनेपर अर्ज़ करके निकालते, जोकि संभव था, और इसवक्त रियासतके हुकूक़ बचानेकी कोशिश करते, तो कौन्सिलकी कभी बदनामी न होती; लेकिन् ग़रीब लोग तो रोते रहे और ज़बर्दस्तोंने ऐसा एवज़ लिया, कि जिसके मिलनेका उन्हें ख़्वाबमें भी ख़याल न था. सर्दारोंने तलवार बन्दी व ज़मानतके रुपये, जो ख़ज़ानहमें वे उज़्र दाख़िल कराये थे वापस लेलिये, और जिन लोगोंकी जागीरें संगीन क़ुसूरोंपर ज़ब्त

हुई थीं वापस दिलादी गईं. जोकि मालिकको जागीरोंके देनेमें इख़्तियार है वैसाही लेनेमें भी है, इस हालतमें कौन्सिलको ऐसे मुआमलोंमें हाथ डालना ना मुनासिब था, लेकिन् यहां मत्लबको छोड़कर वाजिब और ग़ैर वाजिबको कौन देखता था. इसी ज़मानहमें पंचायतसे यह तज्वीज़ हुई, कि ठिकाना लावा याने सर्दारगढ़ शक्तावत चत्रसिंहको वापस दिलायाजावे, और ठाकुर मनोहरसिंह डोडियाको समझाया गया, कि सर्दारगढ़की एवज़ तुमको खैरोदा दिलाया जावेगा. इसपर उसने मन्ज़ूर न करके जवाब दिया, कि अगर्चि ज़मीन हमेशह ज़बर्दस्तोंकी होती है, लेकिन् अपनी बापोतीका ठिकाना छोड़कर बे इज़्ज़तीकी बदनामी उठाने से मरना बिह्तर है, परन्तु यहां उसकी कौन सुनता था ? कोठारी केसरीसिंहको यह बात नागुवार गुज़री, और महाराणा साहिबने बे इख़्तियार और कम उम्र होनेपर भी मनोहरसिंहको खानगी तह्रीरके साथ जेनरल लॉरेंस साहिबके पास जानेका हुक्म दिया, और कोठारी केसरीसिंहने भी ख़ूब मदद दी. मनोहरसिंह उदयपुरसे रवानह होकर एजेण्ट गवर्नर जेनरलके पास आबूपर पहुंचा. उक्त साहिबने पंच सर्दारोंका फ़ैसलह रद्द करके ठाकुर मनोहरसिंहको अपनी जागीरपर बहाल रक्खा, और इसी तज्वीज़के मुवाफ़िक़ पंच सर्दारोंको भी तामील करनी पड़ी.

अब यहांसे महाराणाका तवारीख़ी हाल फिर शुरू किया जाता है, जिसके साथ पंच सर्दारोंका हाल भी मिला हुआ है. विक्रमी १९१८ माघ कृष्ण १ [हि० १२७८ ता० १६ रजब = ई० १८६२ ता० १७ जैन्युअरी] को बड़ी धूमधाम के साथ महाराणाका राज्याभिषेकोत्सव हुआ, जिसको मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपनी आंखोंसे देखा था. जबकि महाराणा साहिब दस्तूरके मुवाफ़िक़ रायआंगन के पूर्वी दालानमें गद्दीपर बिराजे, उसवक़ इज़्ज़तदार दर्बारी लोगोंका ऐसा भारी हुजूम था, कि नज़ दिखलानातक लोगोंको मुश्किल होगया, बल्कि गणेश ड्योढ़ीसे महाराणा साहिबकी गद्दीतक पहुंचनेको रास्तह मिलना भी कठिन था. इस जल्सेके बाद मातमी दस्तूरोंका ख़ातिमह हुआ, और विक्रमी माघ कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रजब = ई० ता० १८ जैन्युअरी] को महाराणा श्री एकलिंगेश्वरके दर्शनोंको पधारे, जहां मन्दिरसे दस्तूरके मुवाफ़िक़ उन्हें तलवार मिली. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रमज़ान = ई० ता० ८ मार्च] को पोलिटिकल एजेण्ट मेजर टेलर विलायत जानेकी रुख़्सती मुलाक़ात करनेको महाराणा साहिबके पास आये. टेलर साहिबका यह थोड़ासा ज़मानह मेवाड़की रियासतके लिये बड़ा तअ-ज्जुबके लाइक़ गुज़रा, क्योंकि उक्त पोलिटिकल एजेण्टने कुल इख़्तियारात पंच सर्दारों

को सौंपदिये थे, और जा व बेजा जो उनके मुंहसे निकलता उसीको मन्जूर करलेते; रियासतके हुकूकोंकी तरफ़ बिल्कुल ख़याल नहीं किया. टेलर साहिबके ज़मानहकी इस ख़राबीको ईडन साहिबने आकर रोका, जिसका ज़िक्र आगे लिखाजावेगा. कौन्सिलके इन लोगोंने रियासती इन्तिज़ामको छोड़कर लालच व अदावतको ही अपना ख़ास काम समझलिया था. महता शेरसिंहसे क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ जो ३०००००) रुपया दण्डका महाराणा स्वरूपसिंहने लिया था वह इसवक्त उसके बेटे सवाईसिंहने ख़ज़ानहसे वापस लेलिया. अगर्चि इन रुपयोंके लेनेसे शेरसिंहने तो इन्कार किया था, लेकिन् सवाईसिंहने अपने बापकी नौकरीको धब्बा लगानेके लिये यह काम किया. क़दीम ज़मानहसे यहांके प्रधान लोग राज्यमें इस प्रकारका दण्ड भरना अपने ऊपर एक फ़र्ज़ समझते थे. हक़ीक़तमें यह रवाज कुल राजपूतानहमें राइज है, क्योंकि अपने उह्देपर रहकर मालिककी मिहर्बानीसे लाखों रुपये कमाते और एकट्ठा करते हैं, जिसमें उह्दे से अलग किये जानेकी हालतमें दण्ड देना बेजा नहीं समझते. यह पहिला ही मौक़ा था, कि महाराणाकी बेइख्तियारीकी हालतमें प्रधानने दण्डका रुपया ख़ज़ानहसे वापस लिया. इन रुपयोंका वापस लेना शेरसिंहकी बदनामी या नेकनामी चाहे कुछ ही समझलीजावे, परन्तु इसमें ज़ियादहतर उसके बेटे सवाईसिंहका कुसूर है, वर्नह इस प्रधानने तो .उम्र भर अपने मालिककी नौकरीमें कभी बेईमानी नहीं की. अल्बत्तह आपसकी अदावत के सबब अपने मुख़ालिफ़ोंसे बदला लेनेमें शेरसिंह भी कम न था. इसी तरह सर्दारोंने भी ख़ज़ानह और मुल्कको ख़ूब लूटा.

पाठक लोग यह न समझें कि जो कुछ मैंने बयान किया है वह अपने ही ख़यालसे किया है, बरन उनको पोलिटिकल एजेण्टकी रिपोर्टके देखनेसे, जिसका खुलासह मौक़ेपर दर्ज किया जायेगा, मालूम होगा, कि उन्होंने इस विषयमें अपनी क्या राय ज़ाहिर की है. महता गोपालदासपर यह तुह्मत लगाई गई थी, कि महाराणा स्वरूपसिंहके साथ जो सती हुई उसमें उसीने मदद दी है. इसपर उक्त महताने उदयपुरसे भागकर कोठारियामें पनाह ली. उसको आपसकी अदावतसे जान व .इज़्ज़तका बड़ा ख़ौफ़ होगया था. इधर सुन्दरनाथ पुरोहित वग़ैरह ख़ानगी लोग महाराणाके मुसाहिब बनकर हुक्म चलाने लगे, अलावह इस के ज़नानी ड्योढ़ीसे जुदेही हुक्म जारी होते थे. मेजर टेलर साहिब तो इस इन्तिज़ाम को इसी हालतमें छोड़कर विलायतको चलेगये, और विक्रमी १९१९ चैत्र शुक्ल ६ [हि० १२७८ ता० २० शव्वाल = .ई० १८६२ ता० २० एप्रिल] को कर्नेल ईडन साहिब मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट नियत होकर उदयपुरमें आये. इन्होंने इन्तिज़ामकी यह हालत देखकर मत्लबी लोगोंकी कार्रवाइयोंको रोकना चाहा. कोठारी केसरीसिंहने साहिबका

यह नेक मन्शा मालूम करके खानगी तौरपर कुल हाल उनसे कहदिया, और जब मुसाहिब लोग किसीको ज़मीन जागीर वगैरह दिलाना चाहते तो उस हालतमें भी यह खैरख्वाह प्रधान पोशीदह तौरसे साहिबको अस्ली हाल कहकर ऐसी कार्रवाइयोंको रोकता रहा. इसपर बहुतसे लोग रियासतमेंसे केसरीसिंहका क़दम उखेड़नेकी कोशिश करने लगे, और पुरोहित सुन्दरनाथको उदयपुरसे निकलवादिया. ईडन साहिबको लोगोंने यह बहकाया, कि कोठारी केसरीसिंहने सर्कारी २००००) रुपया गबन किया है.

इसी अरसहमें विक्रमी श्रावण कृष्ण १२ [हि० १२७९ ता० २९ मुहर्रम = ई० ता० २३ जुलाई] को सलूंबरके रावत् केसरीसिंहके मरनेकी ख़बर मिलनेपर महता अजीतसिंह और पुरोहित श्यामनाथ सलूंबर भेजेगये. इस समय केसरीसिंहका नज़्दीकी रिश्तहदार और हक़दार कुरावड़का रावत् ईश्वरीसिंह सलूंबरमें मौजूद था, उसने गद्दीपर बैठनेसे इन्कार किया, तब बेमालीके जागीरदार ज़ालिमसिंह वगैरह लोगोंने बंबोराके रावत् जोधसिंहको केसरीसिंहका दत्तक बनादिया, लेकिन् पीछेसे ईश्वरीसिंह ने उदयपुरमें आकर अपनी हक़दारीका दावा पेश किया, और इसी तरह चावंड, भदेसर व भैंसरोड़के जागीरदारोंने भी अपना अपना हक़ ज़ाहिर किया, और कौन्सिल से भदेसरका रावत् भोपालसिंह सलूंबरका हक़दार मानागया, लेकिन् जोधसिंह सलूंबरपर क़ाबिज़ होगया था, इसलिये उसको साबित रखनेके लिये मेवाड़के अक्सर सर्दारोंकी दर्ख्वास्तें गुज़रीं, जिससे दावेदार (भोपालसिंह) की हक़रसी मुल्तवी रक्खीगई.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब खानगी तौरपर रेज़िडेन्सीकी कोठीको पधारे उसवक्त डॉक्टरके कहनेसे महाराणा साहिबने फ़र्शके नीचे जूतियां उतारदीं, फिर महलोंमें वापस आनेपर इन बातका चर्चा फैला; अक्सर लोगोंने साहिब एजेण्टके कानमें यह बात भरी कि कोठारी केसरीसिंहकी प्राइवेट सलाहपर महाराणा चलते हैं, और उसकी निस्बत २००००) रुपया गबन करनेकी शिकायत पहिलेही हो चुकी थी; इस-लिये साहिब एजेण्टके हुक्मसे विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ता० ९ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २ नोवेम्बर] को केसरीसिंह प्रधानेसे ख़ारिज करदियागया. इसवक्त कुल पंच सर्दारोंके आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी चल रही थी. महता अजीतसिंहको चन्द शिकायतोंके सबब चोरी व डकैतीका बन्दोबस्त करनेके वास्ते मेवाड़में भेज-दिया. वहां उसने धाड़ा और चोरी रोकनेके लिये मुजिमोंको सख़्त सज़ा दीजानेकी

दर्ख्वास्त की, जिसपर पंचसर्दारोंने उसे जानतककी सज़ा देनेका इख्तियार लिख-भेजा. अगर्चि अजीतसिंह खुद तो नेक तबीअत शख्स था, लेकिन् जिसपर वह एतिबार करलेता उसकी सलाहपर बिना विचार किये फ़ौरन् अमल करबैठता था. उसने ज़ालिम आदमियोंकी सलाहसे दो बावरियोंको जानसे मरवाडाला, और बीस तीस आदमियोंको बहुतसा पिटवाया, यहांतक कि किसीका हाथ व पांव तुड़वा डाला और किसीकी आंख फुडवा डाली. जब मैं (कविराजा श्यामलदास) उससे मिलने के लिये चित्तौडगढ़पर गया, तो इस सख्त कार्रवाईको देखकर मैंने उसे सलाहके तौरपर कहा, कि इसका नतीजह तुम्हारे हक्में बहुत खराब होगा, जिसपर उसने उपरोक्त मुजिमोंके कुसूर बयान किये, जो बेशक उसी सख्त सज़ाके लाइक़ थे; और बाबा चन्दसिंहकी कार्रवाईका भी उदाहरण दिया, जो उसने विक्रमी १९१६ [हि० १२७६ = ई० १८५९] में खेराड़के कई मीनोंको तोपसे उड़वादेनेमें की थी. मैंने कहा, कि वह ज़मानह महाराणा स्वरूपसिंहकी खुदमुख्तारीका था, और इसवक्त आईनी बादशाहतकी तरफ़का इन्तिज़ाम है. इसी तरह मेरे और उसके आपसमें कई दलीलें होती रहीं, लेकिन् यह बहस खानगी और दोस्तानह तौरकी थी. अखीरमें मैंने कहा, कि इसका जो नतीजह पैदा हो, उसे देखकर मेरी बातको याद करना. मेरे इस कहनेका इतना असर तो ज़रूर हुआ, कि मुजिमोंपर जो मारपीट और सख्ती होती थी वह उसवक्तसे बन्द कीगई. मेरे कहनेके दो दिन पीछे उदयपुरसे भी यही हुक्म आया, कि मुजिमोंपर सख्ती नहो, तब अजीतसिंहने मेरी बातको ठीक जानकर मुझे कहा, कि सर्कारी तहरीरके अलावह मुझको खानगी तौरपर खबर मिली है, कि पोलिटिकल एजेण्ट मुझसे बहुत नाराज़ हैं, अब तुम उदयपुर जातेहो, वहां मेरे पिता शेरसिंहसे कहना कि मुझे उदयपुर जल्द बुला लेवें, तो मैं पोलिटिकल एजेण्टसे मिलकर सफ़ाई करलूं. मैंने कहा, कि मेरे पहुंचनेसे पहिले ही तुम वहां बुलाये जाओगे. ईश्वरको मेरी खयाली बातका सहीह करना मन्ज़ूर था, दूसरे ही रोज़ अजीतसिंहकी तलबीका हुक्म आया. वह फ़ौरन् उदयपुर पहुंचा, उसीवक्त पोलिटिकल एजेण्टने बुलाकर खुद उसके इज्हार लिये. आखरकार दो तीन रोज़के बाद भागकर उसने सर्दारोंके ठिकानेमें पनाह ली, और पंच सर्दारोंने उसकी बरिय्यतके लिये बहुत कुछ उज़्र पेश किये, जिससे साहिब को इस विषयमें पूरा पूरा शक होगया, कि वह मुसाहिबोंकी साज़िशसे भागगया. इसी तरह कोठारी केसरीसिंहपर २०००००) रुपया गबन करनेका जुर्म सच्चा समझकर प्रधाने मे बरतरफ़ करनेके अलावह उसको क़ैद करवादिया. केसरीसिंहने कहा, कि यदि मैं अपने मालिकका सच्चा खैरख्वाह और ईमानदार हूं, तो ये कुल झूठी बातें अखीर

में रद्द होंगी. हक़ीक़तमें केसरीसिंह मालिकका पूरा ख़ैरख़्वाह था, उसने लोगोंको जागीरें मिलना इस बातपर रोका था, कि जागीर देना मालिकका काम है, जो मालिक के जवान होने व इख़्तियार मिलनेपर मिलसक्ती हैं. इस बातपर अक्सर लोगोंने केसरीसिंहको ज़क देकर मालिककी ख़ैरख़्वाहीसे हटाना चाहा. अगर्चि इसवक़्त महाराणा साहिब कम उम्र थे, लेकिन् ख़ैरख़्वाह कोठारीपर जाल गिरनेसे मुसाहिबोंपर बहुत नाराज़ हुए. इन लोगोंने आइन्दहके ख़ौफ़से महाराणा साहिबको ख़ुश करनेके लिये कोठारीकी बरिय्यतके बारेमें पोलिटिकल एजेएटके सामने कई दलीलें पेश कीं, मगर इस दुतरफ़ी कार्रवाईसे पोलिटिकल एजेएट और भी बिगड़ा, और कोठारीको शहरसे निकालदेनेका हुक्म देदिया. तब वह एकलिंगेश्वरकी पुरीमें जा रहा. पोलिटिकल एजेएटसे दिन ब दिन मुसाहिबोंकी नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ती रही, यहांतक कि महाराणा साहिबको भी इन लोगोंने साहिब एजेएटके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करानेमें मददगार बनालिया, क्योंकि कोठी रेज़िडेन्सीमें जूतियां उतरवानेके सबब नाराज़गी तो पहिलेसे ही चल रही थी, फिर कर्नेल् ईडन पंच सर्दारोंकी कौन्सिलमें आनेके वक़्त सातांकी पायगाहके पास हाथीसे उतरे, जहांतक कि कोई अंग्रेज़ वग़ैरह सवारीपर पहिले कभी नहीं आ सक्ता था; इस बातका भी बड़ा शोर हुआ. फिर साहिब एजेएटने पंडित लक्ष्मणरावको बुलाकर कौन्सिलका मीरमुन्शी और पंडित गोविन्द-रावको महकमह साइरका दारोग़ह बनाया. इसी तरह मौलवी मुहम्मद निज़ा-मुद्दीनखांको दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरह अदालतोंका नाज़िम मुक़र्रर किया. अगर्चि मेवाड़ी अहलकार आपसमें ना इत्तिफ़ाक़ी रखते थे, तोभी विदेशी आदमियोंका बड़े बड़े उहदोंपर मुक़र्रर होना सबको नागुवार गुज़रा, और महाराणा साहिबके हुक्मसे कुल रियासती लोगोंके दस्तख़त होकर एक दर्ख़्वास्त जिसमें पोलिटिकल एजे-एट कर्नेल् ईडनकी शिकायतें लिखी थीं, वाइसरॉयके पास भेजीगई. पोलिटिकल एजेएटने भी मुसाहिबोंके क़ुसूर चुनकर रिपोर्ट की. बाज़ बाज़ मुसाहिबोंने यह चालाकी की, कि महाराणाके सामने तो पोलिटिकल एजेएटकी शिकायती दर्ख़्वास्तपर ख़ुशीसे दस्तख़त करदिये, और ख़ानगीमें पोलिटिकल एजेएटसे कुल हाल कहकर बयान किया, कि हम लोगोंने महाराणाकी दबागतसे दस्तख़त किये हैं, और एक दूसरेको शिकायतका सर-गिरोह बतलाता था. इन सबबोंसे पोलिटिकल एजेएटको रिपोर्ट करनेमें पूरी मदद मिली.

विक्रमी १९२० ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० १२७९ ता० १७ ज़िल्क़ाद = ई० १८६३ ता० ६ मई] को महाराणा साहिबने अपनी दूसरी शादी (१) सादड़ीके राज कीर्तिसिंहकी बेटीके

(१) इन महाराणाका पहिला विवाह बागौरकी महाराजगीके समयमें गढ़ीके चहुवान रत्नसिंहकी बेटी तख़्तकुंवर बाईके साथ हुआ था.

साथ देलवाड़ा मक़ामपर बड़ी धूमधामके साथ की. विक्रमी प्रथम श्रावण शुक्ल ४ [हि० १२८० ता० ३ सफ़र = .ई० ता० २० जुलाई] को महाराणा स्वरूपसिंहकी बड़ी महाराणी राठोड़ गुलाबकुंवरका देहान्त होगया, और विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० ता० १७ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० २ सेप्टेम्बर] को महाराणा स्वरूपसिंहकी तीसरी महाराणी भटियाणी बीसलपुरी परलोकको सिधारी.

जब रियासती लोगों और पोलिटिकल एजेएटमें ज़ाहिरा नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी हुई देखी, तो पोलिटिकल एजेएटकी रिपोर्टको लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दने मन्ज़ूर करके पंच सर्दारोंको मौकूफ़ करदेने और पोलिटिकल एजेएटको रियासती इन्तिज़ाम करनेका पूरा इख़्तियार देदिया. इस बारेमें महाराणाके नाम लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दका हुक्म बज़रीए ख़रीतह पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ आया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

कर्नेल् विलिअम फ़्रेडेरिक ईडन साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरब ओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजा धीराज म्हारांनाजी साहेब श्री संभुसीघजी बहादुर अेतान राजे श्री करनेल बलीयम फर्गडरक डीडन साहेब बहादुर पोलेटीकल अजंट मेवाड लीः सलाम मालुम करावसी. अठाका स्मांचार भला हे, आपका सदा भला चाहीजे; अपरंच बवाअस चुक पंचसरदारान अगले के हुकम सदरसे वास्ते बंदोबस्त जदीद रीआस्त मेवाडके आगया, ईसवास्ते मेने अेक ईस्तहार वास्ते आगाही हर पास व आंमके आजके तारीष [illegible] कीया हे, नकल उसकी वासते ईतलाके षीदमत मुबारीकमे भेजता हुं, ओर ईस हुक पंचसरदारानपर जेसाके मे अफसोस करता हुं दुसरा न करसकेगा, कीसवास्तेके [illegible] मेहनत ऊठाय था सीरफ वासते बेहबुदी व सरस्बजी रीआस्त मेवाडके थी. [illegible] ने बंदोबस्त [illegible] जेसाके मुझे वास्ते बेहतरी ओर सरस्बजी रीआस्त मेवाडके [illegible] होगा नजवीज [illegible] रपोरट सदरको करुंगा. जोके ये बात ईतफाकसे हुईके [illegible] दुर्नीयांमे [illegible] होती. अगरचे आप पुरदसाल हे तोभी ईतला ईसके [illegible] ओर [illegible] थी सो षीदमत मुबारीकमे कीगई, कोई बकत [illegible] ने हाजर हुं षीदमत मुबारीकमे ईतला दुंगा. मुनास्ब हे के [illegible]

सीषने कामकाज रीआस्तके फरमावे, ओर मीजाज मुबारीककी पुसीका स्मांचार हमेसे ली ॥ ता ॥ १९ माहे अगस्त सं ॥ १८६३ ई ॥ मी ॥ दुजा सांवण सुद ५ स्मत १९२० मु ॥ कोठी ऊदेपुर रोज बुधवार.

(Sd.) W. F. Eden,
P. Agent.
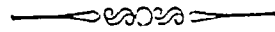
ऊपर लिखे हुए ख़रीतहसे पाठक लोगोंको मालूम होगा, कि कोठारी केसरीसिंहने सर्कारी २०००००) रुपया गबन करना चाहा था, लेकिन् इस बातका पूरा पूरा इन्साफ़ होकर गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको अच्छी तरह यकीन होगया, कि ख़ैरख़्वाह और ईमानदार प्रधान कोठारी केसरीसिंहपर यह तुह्मत अदावतसे लगाई गई थी, जिसका ज़िक्र मौकेपर किया जायेगा. जब पंच सर्दार मौकूफ़ कियेगये, तो उनकी एवज़ महता गोकुलचन्द और पण्डित लक्ष्मणराव मुक़र्रर होकर उस कचह्रीका नाम "अहालियान श्री दर्बार राज्य मेवाड़" रक्खा गया; और कुल कार्रवाई पोलिटिकल एजेंट कर्नेल् ईडन साहिबके हुक्मसे होने लगी. अगर्चि इस वक्त रियासतमें बड़ी बेतर्तीबी होगई थी, और महाराणा साहिबके कम उम्र होनेकी हालतमें रियासती लोगोंने उनके हुक्मसे पोलिटिकल एजेंटकी शिकायतोंपर कमर बांधली थी, तोभी हमारी रायमें पंच सर्दारोंके वक्तकी बनिस्बत अहालियानका समय किसीक़द्र ठीक था, क्योंकि रियासतका नुक्सान कुछ कम होने लगा, और कम उम्र महाराणा साहिबपर भी दबाव रहनेसे ख़राब लोग अपनी सुह्बतका असर पहुंचानेमें कुछ दबते रहे. अगर मैं उस समयके रियासती लोगोंका ख़ानगी हाल लिखूं, तो एक बड़ी किताब बन सक्ती है, लेकिन् तवालतके ख़यालसे ऐसे हालातको छोड़कर सिर्फ़ वही बातें लिखता हूं, जो ज़ियादह ज़ुरूरी और तवारीख़में दर्ज करनेके लाइक़ हैं.

रियासत मेवाड़की रिआया पहिले क़ाइदहकी कार्रवाईसे बिल्कुल नावाक़िफ़ थी, और बाहिरके नये अह्लकारोंने एकदम दबाव डालकर उसे क़ाइदेकी पाबन्द बनाना चाहा, जिससे लोग घबरा गये, और इसी हालतमें रियासती अह्लकार भी

उन्हें भड़काने लगे, कि पोलिटिकल एजेएटकी शिकायत हो. निज़ामतके अफ्सर मौलवी मुहम्मद निज़ामुद्दीनख़ांने चन्द क़ाइदे अदालतोंमें जारी करके शहरमें मनादी करवादी, कि अपने लेनदेनके लिये कोई शख़्स ख़ुद हाकिमानह कार्रवाई अमलमें न लावे, जिस किसीको ज़ुरूरत हो राज्यकीय अदालतोंमें नालिश करे. शहरके महाजन और नगरसेठ चंपालालको रियासती लोगोंने यह समझाया, कि आइन्दह लेन देनके मुआमलेमें यदि कोई श्रीदर्बारकी आण दिलावेगा, तो उसको सख़्त सज़ा होगी. ज़मानह क़दीमसे इस रियासतमें यह दस्तूर जारी था, कि लेन देन वग़ैरह किसी मुआमलेमें यदि एक फ़रीक़ महाराणा साहिबकी आण दिला देता, तो दूसरे फ़रीक़को यह मजाज़ नहीं होता, कि उसके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करसके, चाहे वह सच्चा हो या झूठा; और आणके बर्ख़िलाफ़ बर्ताव करने वाला शख़्स महाराणाके नज़्दीक बड़ा कुसूरवार माना जाता था. इसके लिये कई पुरानी मिसालें (१) मौजूद हैं. मौलवी मुहम्मद निज़ामुद्दीनख़ांकी इस कार्रवाईपर लोगोंने महाराणा साहिबको जोश दिलाया, कि वह हुजूरकी आण रद्द करता है. इससे महाराणा साहिब भी पोशीदह तौरपर रिआयाके मददगार बनगये. विक्रमी १९२० चैत्र कृष्ण ७ [हि० १२८० ता० २१ शव्वाल = ई० १८६४ ता० ३० मार्च] के दिन उदयपुर के कुल व्यापारी और पेशेवाले हज़ारों लोग अपनी अपनी दूकानें बन्द करके उमराव, सर्दार और मुसाहिबोंको गालियां देते हुए कोठी रेज़िडेन्सीपर पहुंचे. कर्नेल् ईडन साहिबने कोठीसे बाहिर निकलकर इन्हें बहुतेरा समझाया, कि वायवैला बन्द करके अपनी तक्लीफ़का हाल कहो, लेकिन् वहां कौन किसकी सुनता था, हज़ारों आदमियोंका शोर था. बदमआश लोग साहिबको भी गालियां देने लगे. तब पोलिटिकल एजेएटने चन्द सिपाहियों और चपरासियोंको हुक्म दिया, कि इनको हटाओ. वे लोग हटाने लगे; जब न हटे तो आपसमें लकड़ी और पत्थर चलानेकी नौबत पहुंची, जिसमें चन्द व्यापारियोंके लगी, और चपरासी व सिपाहियोंके भी चोट आई. बाज़का बयान है, कि पोलिटिकल एजेएटके भी पत्थर लगा. फिर वे लोग रेज़िडेन्सी से वापस आकर एजेएट गवर्नर जेनरलके पास फ़र्यादी जानेको निकलकर सहेलियोंकी बाड़ीमें ठहरे, जो नगरसे उत्तर तरफ़ एक मीलके फ़ासिलेपर है. हटनाल

---

(१) लोग यह मिसाल अबतक देते हैं, कि महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके समयमें दशहरेकी सवारीमें एक व्यापारीने सरे बाज़ार अपना रुपया वुसूल करनेके लिये वलीअह्द जगत्‌सिंहको आण दिलादी, जिसपर महाराणाने अपने पुत्रको बेलिहाज़ हुक्म देदिया, कि अपना घोड़ा एकतरफ़ हटाकर सवारीको निकलनेदो, और व्यापारीको खुश करो, 'आण मुआफ़ नहीं होसक्ती. उस बे आईनी ज़मानहमें ग़रीब लोगोंको आणके दस्तूरसे बड़ा सहारा मिलता था.

होने और पेशावाले लोगोंके निकलजानेसे शहरमें सन्नाटासा मालूम होनेलगा. आख़िर-कार विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शव्वाल = ई० ता० ३ एप्रिल] को बहुत कुछ समझानेपर लोगोंने दूकानें खोलीं, लेकिन् नगरसेठ आदिकी समझाइश के लिये पूरी पूरी कोशिश होरही थी. विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ शव्वाल = ई० ता० ६ एप्रिल] को महाराणा साहिब और पोलिटिकल एजेण्ट सहेलियोंकी बाड़ीमें जाकर शहरकी रिआया और नगरसेठको वहांसे शहरमें लेआये. इसके बाद अदालती कार्रवाईमें कुछ तर्मीम कीगई, और मौलवी निज़ामुद्दीनख़ांको निकाल-कर यह बलवा ठंडा कियागया.

विक्रमी १९२१ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२८१ ता० २३ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २७ ऑगस्ट] के दिन महलोंमें पोलिटिकल एजेण्टको दावत दीगई, क्योंकि विक्रमी १९१४ [हि० १२७४ = ई० १८५७] के गद्रमें महाराणा स्वरूपसिंहकी तरफ़से बेदलाका राव बख़्तसिंह अंग्रेज़ोंकी मदद और बाग़ियोंको सज़ा देनेके लिये पोलिटिकल एजेण्ट शावर्सके साथ तईनात कियागया था, और उसने बमूजिब हुक्म महाराणा साहिबके बड़ी बहादुरी व ख़ैरख़्वाहीके साथ ख़िद्मत अदा की; इसलिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी तरफ़से उसके लिये एक तलवार इन्आममें आई, जो पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् ईडनने महाराणा साहिबके दर्बारमें उसे दी. इस खुशीमें महाराणा साहिबने भी उक्त रावको ख़िल्अ़त व मोतियोंकी कंठी इनायत की, और विक्रमी १९२१ कार्तिक शुक्ल ३ [हि० १२८१ ता० १ जमादियुस्सानी = ई० १८६४ ता० २ नोवेम्बर] को जगन्नाथरायके मन्दिरके पीछे बड़े स्कूलकी नीव डालीगई, जिसका पूरा पूरा ज़िक्र मौक़ेपर आगे लिखाजावेगा.

विक्रमी माघ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ शअ़्बान = ई० १८६५ ता० २७ जैन्युअरी] को मऊ, नीमच और नसीराबादका जेनरल ग्रीन साहिब ज़ाहिरा सैरके लिये और पोशीदह तौरपर शहरके लोगों (१) और पोलिटिकल एजेण्टके बीच तक्रार हुई उसकी तह्क़ीक़ातके लिये उदयपुर आया, जिसके लेनेके लिये राजनगर तक सहीह वाला अर्जुनसिंह भेजा गया था. इन दिनों महाराणा साहिबकी आंखमें कुछ तक्लीफ़ थी, इससे मामूली पेश्वाईके लिये महाराणा साहिब खुद न गये, और शिवरतीका महाराज दलसिंह, बेदलाका राव बख़्तसिंह, महता गोकुलचन्द और पंडित लक्ष्मणराव वगैरह सर्दार व मुसाहिब आहड़के धूलकोटतक पेश्वाई करके

(१) जेनरल ग्रीनने रिआयाकी बग़ावतके हालकी रिपोर्ट तो डेमी आफ़िशिअल की होगी, जिसका हाल ज़ाहिर नहीं हुआ.

लेआये. साहिबके उदयपुरमें दाख़िल होनेपर १३ तोपकी सलामी सर हुई. उक्त साहिब तीन रोज़ उदयपुरमें ठहरकर विक्रमी माघ शुक्क ३ [हि० ता० २ रमज़ान =.ई० ता० ३० जैन्युअरी] को वापस रवानह होगये.

विक्रमी १९२२ चैत्र शुक्क १५ [हि० ता० १४ ज़िल्क़ाद =.ई० ता० ११ एप्रिल] के दिन महाराणा साहिब को यह ख़बर मालूम हुई, कि पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ कर्नेल् ईडन एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मुक़र्रर हुए, जिनकी जगह विक्रमी वैशाख शुक्क ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज =.ई० ता० २ मई] को जोधपुरका पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिब डाकमें उदयपुर आया और विक्रमी वैशाख शुक्क ९ [हि० ता० ८ ज़िल्हिज =.ई० ता० ४ मई] को कर्नेल् ईडन एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह नियत होकर डाकमें उदयपुर आया. महाराणा साहिबने आहड़के धूलकोटतक उक्त साहिबकी पेश्वाई की. इसके बाद विक्रमी वैशाख शुक्क १५ [हि० ता० १४ ज़िल्हिज =.ई० ता० १० मई] को यह साहिब आबूकी तरफ़ रवानह हुए. साहिबको पहुंचाने के लिये पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह और महता गोकुलचन्द महाराणा साहिबकी तरफ़से भेजेगये थे. कर्नेल् ईडन बड़े नेक दिल और अक्लमन्द थे, जिन्होंने मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट रहनेकी हालतमें बड़ी बुर्दबारीके साथ काम किया. अगर यह साहिब अदावत को याद रखने वाले होते, तो मेवाड़की रियासतको बहुत कुछ नुक्सान पहुंचता. अल्बत्तह कोठारी केसरीसिंह व पुरोहित श्यामनाथ और उसके बेटे पद्मनाथका उदयपुरसे निकाला जाना बेजा हुआ; लेकिन् कोठारीके लिये तो उसको लोगोंने धोखा दिया, और पुरोहित श्यामनाथको गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी पॉलिसीमें रोकटोक करनेवाला जानकर निकाला. परन्तु कर्नेल् ईडन क़द्रदान होता, तो वह जिसतरह अपनी अंग्रेज़ी गवर्मेएट की पॉलिसीका फ़र्ज़ अदा कर रहा था उसीतरह पुरोहित श्यामनाथ भी अपनी सच्ची आदतके मुवाफ़िक़ अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही और अपने सुपुर्दगीके कामोंका हक़ अदा करनेपर मुस्तइद था. ख़ैर अब मेवाड़का पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिब मुक़र्रर हुआ, जो अपने आख़री .उह्देतक महाराणा साहिबका शुभचिन्तक व कुल रियासती लोगोंका दोस्त बना रहा.

विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० १८ मई] को उदयपुरके महलोंके दक्षिण कुंवरपदाके महलोंकी जगह "शम्भु निवास" नाम अंग्रेज़ी ढंगका महल बनवानेकी बुनयादका पत्थर महाराणा साहिबके हाथसे डाला गया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ऽऽ [हि० १२८२ ता० २८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १८ नोवेम्बर] को एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ईडन साहिब महाराणा साहिबको इस्ति-

यार देनेके लिये उदयपुरमें आये. राजनगर मकामतक बेदलाका राव बख्तसिंह, और महता गोकुलचन्द पेश्वाईको गये, और महाराणा साहिबने भी मामूलके मुवाफ़िक़ पेश्वाई की. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ और ६ [हि० ता० १ और ५ रजब = ई० ता० २० और २४ नोवेम्बर] को कर्नेल् ईडन महाराणा साहिबकी मुलाक़ातके लिये राज्यमहलों में आये, और विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रजब = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को मिह्मानीके तौर कोठी रेज़िडेन्सीपर उक्त साहिबने महाराणा साहिबको बुलाया. फिर मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ रजब = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को महलोंके चौकमें शामियानहके भीतर बड़ा शाहानह दर्बार हुआ; बीचमें महाराणा साहिब चांदी और सोनेके बड़े सिंहासनपर बैठे और उनके दाहिनी तरफ़ चांदीकी कुर्सीपर एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ईडन, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् निक्सन और कोटाके पोलिटिकल एजेण्ट वग़ैरह कुल २९ साहिब लोग सादी कुर्सियोंपर, और उनके आगे १८ रियासतोंके वकील दरजे ब दरजे बैठे, और महाराणा साहिबके बाएं हाथकी तरफ़ कुर्सियोंपर मेवाड़के सर्दार, चारण और अह्लकार दरजे ब दरजे बैठे, और त्रिपोलियाके भीतरी चौकसे लेकर बड़ीपोलके बाहिरतक अंग्रेज़ी रिसालह, तोपखानह और नीमच तथा खैरवाड़ाकी बटालियन जमाई गई. फिर कर्नेल् ईडनने महाराणा साहिबको मौरूसी इख्तियारातका शुक्रियह दिया, और फिर गवर्नर जेनरल हिन्दका ख़रीतह पढ़ा. इसके पीछे शाही तोपोंकी सलामी सर हुई. महाराणा साहिबने अंग्रेज़ी फ़ौजको १००००) रुपया इन्आमका दिया, इसके पीछे दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रजब = ई० ता० ५ डिसेम्बर] को कर्नेल् ईडन उदयपुरसे रवानह होगये और एक ख़रीतह खैरवाड़ाकी सड़क बनवानेके लिये सलाहके तौर लिखभेजा.

महाराणा साहिबको इख्तियार मिलनेसे पहिले बेमालीका जागीरदार चूंडावत् ज़ालिमसिंह सलूंबरसे उदयपुर आया, जिसकी बातोंपर महाराणा साहिब ज़ियादह भरोसा करते थे. गद्दी नशीनीके प्रारम्भमें पुरोहित सुन्दरनाथ और उसके निकाले-जाने बाद कृष्णगढ़का राठौड़ मोतीसिंह जो महाराणा भीमसिंहकी पर्दायत सह-चरीकी बेटीके पेटसे पैदा हुआ था, और उसकी तनज़्ज़ुली होने बाद चूंडावत् ज़ालिम-सिंह महाराणा साहिबका ख़ानगी सलाहकार बना. महाराणा साहिब बड़े ज़िहीन और अक्लमन्द थे, लेकिन् कम उम्र और साफ़ दिल होनेके सबब ज़ियादह बातचीत करने वाले आदमीको अक्लमन्द जानकर उसपर भरोसा करलेते, लेकिन् रियासतमें उन लोगोंके मुख़ालिफ़ भी मौजूद थे, जो सलाहकारोंके ऐब दिखलानेमें कमी नहीं करते. इस उलटा पलटी वग़ैरहसे उनको भी बहुत कुछ तजरिबह होताजाता था.

अब मैं (कविराजा श्यामलदास) महाराणा साहिबकी इख्तियारीकी हालत अपनी देखीहुई बयान करनेसे पहिले एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी रिपोर्टका खुलासह लिखता हूं:-

राजपूतानहके पोलिटिकल प्रबन्धकी रिपोर्ट, बाबत्
सन् १८६५-६६ और १८६६-६७ .ई०.
पहिला हिस्सह.

(मेवाड़की कार्रवाईका बयान).

(दफ़ा १५७) मेवाड़-.ईसवी १८६१ नोवेम्बर [वि० १९१८ कार्तिक = हि० १२७८ जमादियुल्अव्वल] में परलोकवासी महाराणा स्वरूपसिंहका देहान्त हुआ, और उनके दत्तक पुत्र विद्यमान महाराणा शम्भुसिंह १४ वर्षकी अवस्थामें गद्दीपर विराजे.

(१५८)- उनकी नाबालिग़ीके ज़मानहमें रियासतका कुल प्रबन्ध पोलिटिकल एजेण्टकी निगरानीमें एक रिजेन्सी कौन्सिलके ज़रीए़से होता था.

कौन्सिलकी कार्रवाई ख़राब थी, क्योंकि मेम्बर लोग बनिस्बत रियासती बिह्तरी के ज़ियादहतर अपनाही भला चाहते थे, और पोलिटिकल एजेण्टकी बतलाईहुई रियासती सुधार और तरक़्क़ीकी तद्बीरोंको बहुत ही कुछ रोकते और उनके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करते थे; और जो लोग नाबालिग़ रईसकी हाज़िरीमें रहते थे उनकी यह कोशिश थी, कि महाराणाको हर तरहकी तमाशबीनीकी तरफ़ लगाकर उनके मिज़ाजको अपने आधीन करलें.

.ईसवी १८६३ [वि० १९२० = हि० १२८०] में यह मुआमलात अख़ीर दरजेको पहुंचे; और एक बड़े अह्लकारकी बदचलनी और दूसरेकी ज़ालिमानह सख़्तीके सबब चन्द बावरियोंके जानसे मारेजानेके कारण गवर्मेण्ट हिन्दने पोलिटिकल एजेण्टको ज़ियादह इख्तियारात दिये. हक़ीक़तमें वह रियासतके मुख्य मुआमलातका ज़ियादहतर ज़िम्मेदार बना.

इस तज्वीज़से कामयाबी हुई; पहिले जिन सर्दारोंने और दूसरे लोगोंने ब्रिटिश प्रतिनिधिसे बर्ख़िलाफ़ी की थी, वेही उसके मददगार बनगये, यह जानकर, कि गवर्मेण्ट हिन्द पोलिटिकल एजेण्टकी मददगार है; और महाराणा साहिब भी एक बड़ी भारी बीमारीसे निकलकर अपने पासबानोंके चालचलनको अच्छी तरह जानगये, और अपनी अगली भूलोंको क़बूल करके पोलिटिकल एजेण्टकी सलाह और नसीहत मानने लगे, और बड़े विचार व ध्यानके साथ अपनेको नाबालिग़ीके बाद मिलनेवाले इख्तियारात और ज़िम्मेदारियोंके लाइक़ बनानेकी कोशिश करने लगे.

(१५९)-ईसवी १८६४ [वि० १९२१ = हि० १२८१] में गर्मियोंके मौसमके बाद महाराणा साहिब और पोलिटिकल एजेएटके उत्तम विचारकी एकतामें ख़लल नहीं आया.

(१६०)-ईसवी १८६५ सेप्टेम्बर [वि० १९२१ आश्विन = हि० १२८२ रबीउस्सानी] में महाराणा साहिबकी नाबालिग़ीकी मीआद पूरी हुई, और नोवेम्बरमें उन्हें बड़ी धूमधामके साथ रियासती इख्तियारात दियेगये.

(१६१)-इस थोड़ेसे अरसेमें पोलिटिकल एजेएटने ईमानदारीके साथ जो काम किया, उसका बयान करना आसान नहीं है, क्योंकि जो काम हमने किये हैं वे ख़ासके लिये नहीं, बल्कि फ़ायदे आमके लिये हैं, और हमारी कोशिश रियासतके पुराने दस्तूरोंको मिटाने के लिये नहीं थी, वरन उनकी ख़ामियां मिटानेके लिये कीगई थी. फ़ौज्दारी और दीवानी का प्रबन्ध अच्छा कियागया, राज्यके अहलकारोंका जुल्म मिटादिया गया, और माल-गुज़ारीके प्रबन्धमें इसतरह तरक़्क़ी कीगई, कि जो किसीको नागुवार न गुज़रे. लोगोंके जान व मालकी .उम्दह हिफ़ाज़तके लिये सवारोंकी पुलिस क़ाइम कीगई, एक .उम्दह मद्रसेकी बुन्याद डालीगई, जेलख़ानहका नया बन्दोबस्त कियागया, और शिफ़ाख़ानोंकी बहुत कुछ दुरुस्ती कीगई. महकमह तामीरातपर भी पूरी तवज्जुह कीगई; नीमचकी तरफ़ एक .उम्दह पक्की सड़क बनगई; अर्वली पहाड़की तरफ़ गाड़ियोंकी आमद रफ्तका रास्तह बनायागया, और शहरके भीतर व बाहिर आम लोगोंके आरामके लिये अच्छे अच्छे काम कियेगये. सिवा इसके रियासतका खर्च किफ़ायतके साथ चलाकर आमदनी का अच्छा बन्दोबस्त कियागया, कि महाराणा साहिबको इख्तियार मिलनेके समय ३००००००) से अधिक रुपया ख़ज़ानहमें था, जो एक वर्षकी आमदनीसे ज़ियादह है.

(१६२)-महाराणा साहिबको इख्तियार मिले १८ महीने हुए जिसमें काम अच्छी तरह चला, लेकिन् किसी किसी बातमें ख़ामियां हैं, जो ख़ामियां कि हरएक रियासतमें होती हैं, जहां सर्कार पूरा पूरा दख़्ल नहीं रखती. मैं यह कहनेको खुश हूं, कि महाराणा साहिब बावुजूद अपने आदमियोंकी रोक टोक होनेके हरएक ज़रूरी कामपर अच्छी तरह दिल लगाते हैं, अगर्चि उनको कभी कभी यह बोझा नागुवार मालूम होता है.

(१६३)-जमा ख़र्चका जो हिसाब तय्यार कियागया उससे मालूम होता है, कि संवत् १९२२ मु० सन् १८६५-६६ .ई० की कुल आमदनी २६६१२७३) रुपया हुई, जिसमें ज़मीनकी आमदनी १७३२०५७), साइरकी आमदनी ४०३७०८), सर्दारोंकी छटूंद १६५६७७), नज़ानह ४७५३२), तलवार बन्दी व अदालती फ़ीस वग़ैरह छोटी छोटी आमदनी मिलाकर ३१२२५८) है; और इसी अरसहमें २६८५७२९) रुपया रियासती ख़र्चमें उठा, अर्थात् आमदनीसे २४४५६) रुपये ज़ियादह लगे, तोभी ख़ज़ानहमें

३००००००) से ज़ियादह जमा है, इसवास्ते इस छोटी रक़मकी कुछ फ़िक्र नहीं. महाराणा साहिब जो होश्यार और किफ़ायत शिआर हैं, रियासतके जमा खर्चका तख़्मीनह बनाना चाहते हैं. ब्रिटिश गवर्मेण्टके ख़िराज व खैरवाड़ा भील कॉर्प्सके अलावह नीचे लिखे मुवाफ़िक़ खर्च (१) हुआ हैः- फ़ौज और पुलिसके खर्चमें ५१५५८९) रुपया, महकमह तामीरातके सीगेमें १८१२७३) रुपया, और रियासती प्रबन्ध खर्च (अदालतों तथा ज़िलोंकी कचहरियों आदिके खर्च) में ४५९९५७) रुपया.

(१६४)- पोलिटिकल एजेएट लिखते हैं, कि नीमचके आस पास वाले ज़िलोंमें मेवाड़, टौंक और ग्वालियरकी हदके मिलनेसे बदइन्तिज़ामी होती है. ज़ियादहतर रियासती अहलकारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे मोगिया क़ौम जो तक्लीफ़ देनेवाले और बहादुर हैं, फ़साद करते हैं. जहां दो या ज़ियादह रियासतोंकी हद मिलती है वहां अक्सर ऐसाही होता है. मेजर निक्सन बयान करता है, कि इसमें सर्कारकी दस्तन्दाज़ी होनी चाहिये, लेकिन् मेरी राय नहीं है. जब मैंने फेब्रुअरी महीनेमें उस तरफ़ दौरेपर जाकर देखा, तब नव्वाब टौंकको पुलिसका अच्छा इन्तिज़ाम करनेकी हिदायत की थी, और थोड़ा अरसह हुआ, कि उनकी एक तहरीर भी अच्छा बन्दोबस्त करनेके मत्लबसे आई है.

मेरा इरादह सेंट्रल इण्डियाके एजेएट गवर्नर जेनरलको लिखनेका है, कि वह जावद नीमचका बन्दोबस्त करें. मेरी दानिस्तमें ऐसा हो तो ठीक है, कि पर्गनह सरोंज, छपरा और पड़ावा लेकर महाराजा सेंधिया उनके एवज़में जावद नीमचमेंसे नीबाहेड़ाके पासका उतनाही हिस्सह नव्वाब टौंकको देदेवें, जिससे ग्वालियर और टौंकमें दोस्ती होकर अहलकारोंको प्रबन्ध करनेमें तक्लीफ़ न हो.

(१६५)-मेवाड़ रियासतका मेरवाड़ेका हिस्सह ईसवी १८२१ [वि० १८७८ = हि० १२३६-३७] से अंग्रेज़ोंके तहतमें है. इस बारेमें महाराणा साहिबने एक ख़रीतह पोलिटिकल एजेएटके नाम लिख भेजा है, जिसका ज़िक्र इस रिपोर्टके साथ करना ज़ुरूर नहीं है, वह अलहदह लिखा जायेगा.

(१६६)-गुज़श्तह सालमें महाराणा साहिबने एक बहुत बड़ा काम यह किया, कि वे सलूंबरके रावत्की मातमपुर्सीको वहां गये, जो परलोक वासी महाराणा साहिबको मन्ज़ूर न होनेके सबब चूंडावत् फ़िर्क़ेके सर्दार नाराज़गी और दुश्मनी रखते थे.

(१६७)-मेजर निक्सन साहिब इन फ़सादी रईसों और ठाकुरोंके वर्तावको, जैसा-कि वे दर्बारके साथ रखते थे, ठीक बयान करते हैं, कि राजपूतानहकी किसी रियासतमें ऐसे ज़बर्दस्त सर्दार लोग नहीं हैं, जैसे मेवाड़में हैं. इसवक्तसे पहिले ये लोग रियासती हुक्मको कम मानते थे. मेवाडमें जो बहुतेरी बुराइयां और आफ़तें पाईजाती हैं, वे सब

(१) इसके अलावह कोठार, धर्मखाता, कपड़दारा वगैरह कारखानेजातका खर्च अलहदह है.

इन झगड़ालू व बखेड़िये सर्दारोंकी आज़ादी और मग़रूरीसे हुई हैं.

(१६८)-एजेण्टी हाड़ोतीकी रिपोर्टमें दर्ज है, कि ईसवी १८६० [वि० १९१७ = हि० १२७७] में खैराड़के मीनोंपर दण्ड हुआ था वह इसवक्त महाराणा साहिबने छोड़दिया, जिससे महाराणा साहिबकी क़द्रदानी और उस पर्गनहकी सर्सब्ज़ी है.

(१६९)-मद्रसह जो महाराणा साहिबकी नाबालिग़ीमें खोलागया, अच्छी तरह जारी है, जिसमें ५१३ विद्यार्थी हैं, और उनकी पढ़ाईका प्रबन्ध भी उम्दह है. पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहसे महाराणा साहिबने एक मद्रसह लड़कियोंका भी खोला है, जिसमें ५१ लड़कियां पढ़ती हैं. इससे इसकी ज़ियादह तरक़्क़ी होना दिखाई देता है.

(१७०)-दवाईख़ानह और जेलख़ानहका भी उम्दह इन्तिज़ाम कियागया है.

(१७१)-पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेण्ट याने कारख़ानह तामीरातमें, जो ख़ास व आमके फ़ायदहके वास्ते है, महाराणा साहिबने बड़ी फ़य्याज़ी और सख़ावत ज़ाहिर की है. नीमच और नसीराबादकी सड़कोंके बनानेके वास्ते तीन वर्षके लिये ६००००) रुपया सालानह मुक़र्रर किया है, और अर्व्वली पर्वतकी श्रेणीमेंसे जो रास्तह निकाला गया उसके लिये भी रुपया जमा है. अलावह इसके शहरके अन्दर व बाहिरकी सड़क वग़ैरहका प्रबन्ध अच्छा कियागया है.

(१७२)-मेवाड़के पहाड़ी ज़िलेके सिवा हुकूमत नहीं माननेवाले जंगली (भील) लोगोंके पर्गने हिन्दुस्तानमें बहुत थोड़े हैं. सिर्फ़ खैरवाड़ाके रास्तेको छोड़कर दूसरी तरफ़ एक मीलभर भी गाड़ी चलनेका रास्तह नहीं है, और न वहां तिजारत व सौदागरीका नाम व निशान है; इस सबबसे सौदागर व मुसाफ़िर लोग उस तरफ़ जाना नहीं चाहते, क्योंकि वहांके बाशिन्दे जो उनके दुश्मन हैं, पोलिटिकल एजेण्ट उन लोगोंकी तादाद २००००० के क़रीब ख़याल करता है, लेकिन् मेरे नज़्दीक वे १५०००० होंगे. उन भीलोंके १६ ख़ानदान हैं, जिनमें मेरे ख़यालसे ३०००० आदमी लड़ाई करनेके लाइक़ हैं. उनके ग्राम जिनको वे पाल बोलते हैं, अलहदह अलहदह पहाड़ोंपर घासकी झोंपड़ियोंमें आबाद हैं. इस तरह जुदे जुदे आबाद होनेका यह मत्लब है, कि उनके गांवको कोई एकदम ख़तरेमें न डाल सके. एक भीलके पकड़ेजानेपर एक दूसरेको ख़बर पहुंचानेके लिये वे लोग किल्कारी करते हैं, और दुश्मनपर हमलह करनेको गिरोहके गिरोह हथियार लेकर निकल आते हैं, और इस पहाड़ी हिस्सहका सुपरिन्टेन्डेण्ट वहांकी निगरानी करता है, गोकि उनके दीवानी मुआमले महाराणा साहिबके आधीन हैं (१). थोड़ीसी मालगुज़ारी

---

(१) क़दामतसे तो नहीं लेकिन् पिछले वक़्तसे ज़िले भोमटमें ऐसी कार्रवाई हुई है, वर्नह दूसरे पहाड़ी भीलोंपर फ़ौज्दारी व दीवानीका इख़्तियार महाराणा साहिबका है.

लेनेके सिवा महाराणा साहिबके अह्लकार उन लोगोंपर दस्तन्दाज़ी नहीं करते, हरएक ख़ानदानका सर्दार उनपर हुकूमत करता है, उनमेंसे पानड़वा, ओगना, जूड़ा, मेरपुर और दूसरे भी ताक़तवर हैं, जिन्होंने कचह्रियां मुक़र्रर की हैं और उन कचह्रियोंमें उनके दस्तूरके मुवाफ़िक़ अदब आदाब जारी हैं, फ़क़त.

इस रिपोर्टके ज़मानहका बाक़ी हाल इस तरहपर है, कि महाराणा साहिबको इख़्तियार मिलने बाद कचह्री अहालियानके नामसे कुल रियासती कारोबार होता था. महाराणा साहिबको अपनी बे इख़्तियारीके ज़मानहमें बहुत कुछ तजबह हो चुका था, जिससे वह मेजर निक्सनकी रायके मुताबिक़ कार्रवाई करते थे.

विक्रमी १९२३ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२८३ ता० २१ सफ़र = .ई० १८६६ ता० ५ जुलाई] को कचह्री अहालियानके .एवज़ ख़ास कचह्री मुक़र्रर हुई. महाराणा साहिब अ़क़्मन्द और होश्यार थे, ताहम बाल्यावस्थाके कारण ख़ुद मत्लबी लोगोंके जालमें फंसकर शराब और ऐश व इश्रतकी तरफ़ ख़्वाहिश बढ़ाने लगे. इन दिनों बेमालीका जागीरदार ज़ालिमसिंह उनके दिलका पेश्वा होरहा था, इस शख़्सने यह कोशिश करना शुरू किया, कि महाराणा साहिब सलूंबरके रावत् जोधसिंहको वहां जाकर ले आवें; यह बात एक अ़र्सहसे बह्समें पड़ी हुई थी, जिसका ज़िक्र हम महाराणा स्वरूपसिंहके हाल मे लिख चुके हैं. इस तक़ारका मिटना महाराणा साहिबकी दानाई और ज़ालिमसिंहकी नेक कोशिशोंमें शुमार करना चाहिये. हिन्दुस्तानभरकी रियासतोंमें जो इ़ज़्ज़तें महाराणा साहिब अपने सर्दारोंकी करते हैं वैसी किसी रियासतमें नहीं कीजातीं; बाज़ बर्ताव इस (मेवाड़) रियासतके ऐसे हैं, कि जो बराबर वाले रईसोंसे भी नहीं होते. हक़ीक़तमें ये इ़ज़्ज़तें उन ख़िदमतोंके .एवज़ मिली हैं, जो मेवाड़के सर्दारोंने इ़ज़्ज़त, जान और माल कई पीढ़ियोंतक अपने मालिकोंपर निछावर किये, इससे उनको ऐसी .इ़ज़्ज़तोंका मिलना वाजिब था; लेकिन् जिन सर्दारोंको इतने दरजहपर बढ़ाया गया वे अपने मालिकके यहांतक इह्सानमन्द थे, कि किसी तरह अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही करके उनकी ख़ाविन्दीके क़र्ज़का सूद अदा करे. अगर किसी क़ुसूरमें किसीके बापको महाराणा साहिब ने मारडाला तथा देशसे निकालदिया, तोभी उसका बेटा अपने मालिकपर जान, माल और इ़ज़्ज़त निछावर करनेको तय्यार रहा. अक्सर ऐसा भी हुआ है, कि अपने मालिक की बदख़्वाही करनेपर बापको बेटे और बेटेको बापने मारतक डाला है. ऐसे दृष्टान्त इसी तवारीख़में मौजूद हैं. अगर कोई सर्दार महाराणा साहिबकी किसी बड़ी ख़िदमत को नहीं पहुंचता, तो वह यह विचारकर, कि महाराणा साहिब हमारी जैसी .इ़ज़्ज़त

करते हैं उसका एवज़ में कुछ न देसका, शर्मिन्दगीकी हालतमें ज़िन्दगीभर अपना फ़र्ज़ अदा करनेकी कोशिशमें लगारहता; बर तक़्दीर कोई ख़ैरख़्वाहीका काम न बन-पड़ा, तो मरते दमतक यह पछतावा उसके दिलसे दूर नहीं होता, लेकिन् इसवक़् उसके बर्ख़िलाफ़ नज़र आता है. यह बात मैंने सर्दारोंकी शुभचिन्तकीके लिये लिखी है, कि वे अपने बाप दादोंका चाल चलन सुनकर उसी क़दीम रास्तेको इख़्तियार करें. जिससे उनके बाप दादोंकी बहादुरी, ख़ैरख़्वाही और नेकनामियोंका जीर्णोद्धार होता रहे, वर्नह एक अ़रसहके बाद मेरे इस लेखको पढ़कर पछतावा तो ज़ुरूर करेंगे.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि॰ ता॰ १७ जमादियुस्सानी = .ई॰ ता॰ २७ ऑक्टोबर] को महाराणा सलूंबरके रावत्‌की मातमपुर्सीके लिये उदयपुरसे रवानह होकर विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि॰ ता॰ २२ जमादियुस्सानी = .ई॰ ता॰ १ नोवेम्बर] को सलूंबर पहुंचे. रावत् जोधसिंहने अपने मालिकमहाराणा साहिबके अदब आ-दाब और मिह्मानदारी व नज़्र निछावरमें हज़ारों रुपया ख़र्च किया. मेवाड़में सलूंबर की दावत मश्हूर है, जिसमें भी अपने मालिकका मिहर्बानीके साथ तक़ार मिटाकर .इ़ज़्ज़त बख़्शनेके मत्लबसे पधारना हुआ, जिससे रावत् जोधसिंहको शुरूमें ही बड़ी नेकनामी मिली. भला ऐसे मौक़ेपर मिह्मानदारीमें कमी क्यों होगी! महाराणा साहिब रावत् जोधसिंहको साथ लेकर विक्रमी कार्तिक कृष्ण १४ [हि॰ ता॰ २७ जमादियु-स्सानी = .ई॰ ता॰ ६ नोवेम्बर] को उदयपुर चले आये. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि॰ ता॰ १८ रजब = .ई॰ ता॰ २६ नोवेम्बर] को सादड़ीके राज शिवसिंह, सलूंबरके रावत् जोधसिंह, रावत् अमरसिंह और ल्हसाणी व बंबोरा वालों को महाराणा साहिबने तलवार बंधवादी.

रावत् अमरसिंह (बेमालीके जागीरदार ज़ालिमसिंहका बेटा) जो आमेटके रावत् पृथ्वीसिंहकी गोद बैठगया था, उसको देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह वग़ैरहकी मददसे जीलोळा वाले चत्रसिंहने निकाल आमेटपर क़बज़ह करलिया; इसका कुल हाल हम महाराणा स्वरूपसिंहके वृत्तान्तमें लिख चुके हैं. इन दिनों महाराणा साहिब ज़ालिमसिंह (बेमालीवाले) पर मिहर्बान थे, सलूंबरके रावत् जोधसिंहके अ़र्ज़ करनेपर अमरसिंहको आमेटका रावत् बनाकर तलवार बंधवादी और चत्रसिंहपर बहुत कुछ दबाव डालागया, जिससे इस झगड़ेकी कार्रवाई दोबारह शुरू हुई. आमेटमें रावत चत्रसिंह और उदयपुर आमेटकी हवेलीमें रावत् अमरसिंह एक ठिकानेके दो हक़दार क़ाइम हुए. इस मुआ़मलहका एक अ़रसे बाद फ़ैसलह होकर आमेटपर रा-वत् चत्रसिंह क़ाइम रहा, और अमरसिंहको मेजा, सिंधेर, पचमता वग़ैरह अनुमान

२००००) रुपया आमदनीकी जागीर महाराणा साहिबने अपने ख़ालिसहमेंसे दी, और ८०००) की जायदाद आमेटसे दिलानेका हुक्म दिया, जिसको रावत् चत्रसिंहने भी मन्जूर करलिया; लेकिन् उसने सालियानह नक्द रुपया देना चाहा और अमरसिंहने जागीर लेनेकी दर्ख्वास्त की. यह मुक़द्दमह बहुत दिनोंतक चलताही रहा, कि इसी अरसहमें रावत् चत्रसिंहका तो इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा शिवनाथसिंह कम उम्रमें आमेटका रावत् बना. उसवक्त महाराणा सज्जनसिंह साहिबके अह्दमें पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् इम्पी साहिबके सामने यह क़रार पाया, कि २५००) की जागीर और ५५००) रुपया सालियानह नक्द अमरसिंहको आमेटसे दिलाया जावे. यह मुक़द्दमह बहुत कुछ बह्सके साथ इस ग्रन्थकर्त्ता (कविराजा श्यामलदास) और महता पन्नालाल दोनों सर्कारी मुसाहिब और रावत् अमरसिंहकी रूबकारी होकर तय कियागया. अब आमेट और मेजा एक नशिस्तपर बैठनेवाले दो उमराव मौजूद हैं.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ शअ्वान = .ई० ता० १५ डिसेम्बर] को शिवरतीके महाराज दलसिंहका देहान्त होगया. यह शख़्स साफ़दिल, नेकमिज़ाज और अपने मालिकका ख़ैरख़्वाह था (१). विक्रमी माघ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रमज़ान = .ई० १८६७ ता० ४ फेब्रुअरी] को महोदय पर्वपर महाराणा साहिबने सुवर्ण तुलादान किया. विक्रमी १९२४ मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० १२८४ ता० १ शअ्वान = .ई० ता० २८ नोवेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मेजर निक्सन महाराणा साहिबसे रुख़्सत होकर छुट्टीपर विलायत गये.

मैं ऊपर लिख आया हूं, कि पंचसर्दारोंकी मुसाहिबीमें कोठारी केसरीसिंहपर २०००००) रुपया ग़बन करनेका इल्ज़ाम लगाया गया था, इख्तियार मिलनेपर महाराणा साहिबको कई ख़याल गुज़रे. अव्वल यह कि जिस शख़्सने तमाम .उम्र ख़ैरख़्वाही की है और उसी ख़ैरख़्वाही करनेके ज़मानहमें जो उसके मुख़ालिफ़ बनगये हैं वे लोग इसवक्त उसको नुक़्सान पहुंचावेंगे, तो एक अरसेतक इस दह्शतसे कोई आदमी अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही नहीं करेगा; दूसरे महाराणा साहिब अच्छी तरह जानते थे, कि केसरीसिंहने सर्कारी एक पैसा न तो खुद खाया है और न दूसरोंको खानेदिया, ऐसे आदमीके साथ जो बेइन्साफ़ी हुई उसको मिटाना फ़र्ज़ है; तीसरे महाराणा

---

(१) दलसिंहके तीन पुत्र बड़ा गजसिंह जो अब शिवरतीका महाराज है, दूसरा सूरतसिंह जो दत्तक जानेके कारण महाराज अनोपसिंहकी जगह करजालीका महाराज है, और तीसरे फ़तहसिंह जिनको गजसिंहने अपना क्रमानुयायी मुकर्रर करलिया था और अब मेवाड़के वर्त्तमान महाराणा साहिब हैं.

स्वरूपसिंहके परलोक पधारनेके पीछे रियासती काममें कुछ गड़बड़ होगया था, ज़ियादहतर जमाख़र्चके काममें ख़लल था. इस सबबसे महाराणा साहिबने केसरीसिंहको लाइक़ जानकर प्रधाना देना चाहा, और पोलिटिकल एजेण्टकी मारिफ़त उस इल्ज़ामकी, जो उस (केसरीसिंह) पर लगायागया था, अच्छीतरह तह्क़ीक़ात कराई गई, जिससे अस्ली हाल खुलकर वह तुह्मत साफ़ लोगोंकी अ़दावतोंके सबब लगायाजाना मालूम होगया; तब महाराणा साहिबने विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि॰ ता॰ १५ शअ्बान = .ई॰ ता॰ १२ डिसेम्बर] को अपनी जन्मगांठके दिन कोठारी केसरीसिंहको प्रधानेका ख़िल्अ़त व हाथी इनायत किया, और करजालीके महाराज सूरतसिंह (१), धायभाई बदनमल्ल और पंचोली पद्मनाथको साथ देकर उसे मकानपर पहुंचाया. इस हालकी रिपोर्ट पोलिटिकल एजेण्टने एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी मारिफ़त लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दको की. और महाराणा साहिबने भी ख़रीतह लिखा, जिसके जवाबमें जो ख़रीते आये, उनकी नक़्लें नीचे दर्ज कीजाती हैं:–

कर्नेल् कीटिंग साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्री॰ ॥

सिद्धिश्री उदयपूर शुभस्थाने सर्वोपमा बिराजमान लायक महाराजा धिराज महारानाजी श्री शंभूसिंहजी बहादुर ऐतान लिखावतु करनेल कीटिंग साहिब बहादुर कम्पेनियन स्टार आफ़ इंडया विकटोरिया क्रास अजंट गवरनर जनरल राजस्थानकी सलाम मालूम होवे. अठाका समाचार भला छै, आपका सदा भला चाहीजे; अपरंच आपनै तारीख़ १२ वीं जनवरी सन १८६८ ई॰ के ख़रीतेमें मुझे लिखा था, कि कोठारी केसरीसिंहको आपने परधान मुकर्रर किया है, लेकिन सरकारकी मनाहीके सबबसे मैं उसके साथ काम रियासतमें लिखावट न्हीं करसक्ता था. जब मैं उदयपुर आया था, तो

(१) केसरीसिंहको उसके मकानपर पहुंचानेके लिये महाराज गजसिंहका दस्तूर था, लेकिन् बीमारीके कारण वह ख़ुद नहीं जासका, और अपनी .एवज़ (अपने भाई) महाराज सूरतसिंहको भिजवादिया.

मैंने आपसे इसकी बाबत कुछ जबानी भी कहा था और फिर करनेल हिचनसन साहिबने मेरे इशारेके बमूजिब इस मुक़द्दमेकी अच्छी तरहसे तहक़ीक़ात करी और उस्से साहिब मोसूफ़कू खूब साबित हुआ, कि कोठारी केसरीसिंहकू खज़ाना उड़ानेका क़ुसूरवार करनेमें कुछ भूल थी इन सब बातोंकी रिपोर्ट मैंने सरकारमें की, उसके जवाबमें सरकारने कोठारी केसरीसिंहके साथ काम चलाना या न चलाना मेरे अख़्तियारमें रखा. जोकि हमेशे मेरा यही चाहना है, कि जहांतक बनसके बडे दरजेके रईसोंकी रियासतका कांम उन्हींकी मरजीके मवाफ़िक होवे, इस मुक़द्दमेमें भी आपकी खुसीके मवाफ़िक कोठारी केसरीसिंहके मुक़र्रर करानेमें कोशिश करनेमें मैंने कुछ कमी न्हीं की; और जो आपने दोस्तीकी राहसे इस बातमें मुझसे पहिले सलाह ली होती, तो आपके मतलब हासिल करने वास्ते मुझकू इतनी तकलीफ़ न पड़ती. अब इस वक़्तसे कोठारी केसरीसिंहके साथ, जिसकू आपने अपना परधान पसंद किया है. मैं बहुत खुशीसे लिखावट रखूंगा, और मुझे उम्मेद है, कि वह उन बहुतसी बुराइयों की, जो अभी कुछ २ किसी २ जगह इलाक़े मेवाडमें हैं, सुधारनेमें बहुत कोशिश करेगा; और मिज़ाज मुबारककी खुशीके समाचार हमेसह लिखना फ़रमावसी. तारीख १७ वीं नोम्बर सन १८६८ ई०.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

कर्नेल् हैचिन्सन साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी.

॥ ३३४ ॥ नंबर.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरब ओपमां बीराजमान लायक म्हाराजा धीराज म्हाराणाजी श्री संभुसीघजी साहेब बहादुर अेतान करनेल अलकजंढर रास अलीयट हेचीसंन साहेब बहादुर कायम मुकाम पोलेटीकल अजंट मेवाड ली ॥० सलाम मालुम करावसी. यांहाके स्मांचार भले हे, आपके सदा भले चाहीये, अपरंच चीठी साहेब

अजंट गवरनर जनरल वहादुर राजस्थान लंबरी ३६८ पीहरफ तारीष १७ माहे नवं-वरके साथ ञेक परीता वासते ञापके ञाया हे, जीसके मजमुनसे ञापको मालुम होगा के श्री सरकार गवरमीटकी ईजाजतसे कोठारी केसरीसीघजी परधान रीञास्तका वहाली ञोहोदे मजकुरपर हुवे हे. ये मुकदमां ञापके मरजी माफक षतम होना हमको पुसी हुवा हे, ञोर ईसकी मुवारीकवादी आपको हे; ञोर मीजाज मुवारीककी षुसीका स्माचार हमेसे ली॥ तारीष २६ माहे नवंबर सन १८६८ ईसवी, मीती मगसर सुद १२ स्मत १९२५ मु॥ कोठी ऊदेपुर रोज वीस्पतवार.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

—∞∞∞—
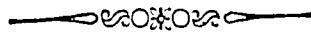
इस वर्षके शुरू याने विक्रमी १९२५ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० १२८५ ता० ३ सफ़र =.ई० १८६८ ता० २६ मई] को मेजर हैचिन्सन क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मुक़र्रर होकर विलायतसे उदयपुर आगया था. कोठारी केसरीसिंहको प्रधाना मिलनेकी कुल कार्रवाई मेजर निक्सन साहिबकी मारिफ़त हुई थी, जिसका तह्रीरी हुक्म आया वह मेजर हैचिन्सनने भेजा. विक्रमी पौष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ शऋबान =.ई० ता० ११ डिसेम्बर] को कोठारी केसरीसिंहकी हवेलीपर महाराणा ज़नानह समेत तश्रीफ़ लेगये. कोठारीने मिह्मानदारीमें कमी नहीं की.

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ =.ई० १८६८] में बारिश न होनेसे राजपूतानह में बड़ा भारी अकाल पड़ा, इसवास्ते गुल्लेका बन्दोबस्त करनेकी फ़िक्र हुई. महाराणा साहिब और पोलिटिकल एजेण्टने कोठारी केसरीसिंहसे कहा, कि गुल्ला न मिलनेसे रिआयाकी जान और तुम्हारी कारगुज़ारी बर्बाद होगी. उस शख्सने उसीदम अपने मकान पर आकर शहरके सब क़िस्मके व्यापारियोंको एकट्ठाकर हुक्म दिया, कि कुल लोग अपनी अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ गुल्ला मंगाओ और रुपये पैसेकी जो मदद चाहिये सर्कार से लो. उस (केसरीसिंह) की समझाइशका ख़ूब असर हुआ, व्यापारी लोग लाखों रुपयोंका नाज ले आये जिससे शहरमें अम्न रहा. और जहांतक होसका उसने मुल्क मेवाड़के लिये भी बन्दोबस्त किया.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ =.ई० १८६९] में लोगोंने एक और कार्रवाई करके महाराणा साहिबको अपने क़ाबूमें करना चाहा, याने एक सन्यासी फ़क़ीर जो कमल्या तालाबमें आ बैठा था उसको करामाती मश्हूर किया. महाराणा साहिब भी

नई .उम्र और बड़े बड़े आदमियोंके धोखा देनेसे उस फ़क़ीरके कहनेपर चलने लगे. वह गैबकी और दूसरेके दिलकी बातें कहता था जो एक भी सच्ची नहीं. कुल रियासती लोग उसकी खुशामदमें लगगये. वह कुल कारखानोंपर महाराणा साहिबके मुवाफ़िक़ हुक्म भेजकर अपनी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ चीज़ मंगवा लेता. इसीतरह खज़ानहकी तरफ़ भी हुक्म दिया, लेकिन् कोठारी केसरीसिंहने इन्कार करके कहा, कि यहां महाराणा साहिबके हुक्मकी तामील होती है, उसी एक हुक्मकी तामील करनेमें इन्कार नहीं और दूसरा हुक्म हम नहीं मानते. इसपर वह फ़क़ीर गुस्से होकर बहुत झुंझलाया. कोठारीके दोस्तोंने भी सलाह दी, कि वक्त देखकर चलना चाहिये, लेकिन् उसने कुछ पर्वा न की. और आखीरमें वह फ़क़ीर उदयपुरसे निकाला गया, जिसका कुल हाल लिखेजाने में तवालतके सिवा कुछ फ़ायदह नहीं.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८५ = .ई० १८६९] के प्रारम्भमें विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = .ई० १८६८] के अकालका नतीजह ज़ुहूरमें आया, याने बहुतसे ग़रीब लोग फ़ाक़ाकशीसे मरनेलगे. पोलिटिकल एजेण्ट और कोठारी केसरीसिंहकी सलाहसे महाराणा साहिबने एक बहुत .उम्दह इन्तिज़ाम किया, कि कान्होड़की हवेलीमें एक ऐसा खैरातखानह खोला, जिससे हज़ारों आदमियोंकी जान बचगई, याने एक धोबा भरकर बाकली (पानीमें पकाई हुई मक्की) अथवा एक धोबा भरकर भूगड़ा (भुने हुए चने) जो मांगे उसको देनेका हुक्म होगया, और इस नेक कामके इन्तिज़ामपर महता मोतीरामके बेटे फूलचन्दको तईनात किया. वहां जाकर हुजूम देखने वालोंको महाराणा साहिबकी फ़य्याज़ी और गरीब लोगोंकी तक्लीफ़का हाल अच्छीतरह मालूम होसक्ता था. इसी इन्तिज़ामके सबब बेदलाके राव बख्तसिंहने उदयपुरके रास्तहपर, और महाराज गजसिंह और दूसरे लोगोंने भी जहां मौक़ा देखा भूंगड़ा देना शुरू किया. इसी मिसालके मुताबिक़ चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, और कपासन वगैरहके साहूकारोंने भी खैरातखानह खोला. विक्रमी १९२६ शुरू वैशाख [हि० १२८५ ज़िल्हिज = ई० १८६९ एप्रिल] से हैज़ा साहिब भी मारे भूखके आखड़े हुए. शहरमें कोई मुहल्ला और गली कूचा ऐसा नहीं था जहां हाहाकार और रोनेका शब्द न हो, जिसे रातको भला चंगा देखा फ़ज्रको नहीं है. शुमारमें २०० आदमी हमेशह मरने लगे, लाशको जलानेमें दोस्त और बिरादरीके लोग किनारा करने लगे, यहांतक कि बाज़ २ शरीफ़ क़ौम ब्राह्मण व महाजनोंके घरोंमें पहरोंतक मुर्दह लाशें पड़ीरहीं रातके वक्त मकानकी छतपरसे देखते तो स्मशानोंकी आगसे पहाड़ोंके दामनतक रोशनी होती दीख पड़ती थी. पीछोला तालाब भी यहांतक खुश्क होगया था, कि

महाराणा साहिब किश्तीके एवज़ जगन्निवाससे ब्रह्मपुरीकी तरफ़ बग्घी सवार होकर जाते थे. तालाबके किनारोंपर अशौच स्नान करने वाले औरत मर्दोंका रात और दिन ऐसा हुजूम रहता था, कि उनका रोना पीटना देखकर सख़्तदिल आदमीकी भी आंखोंमें आंसू आने लगते थे. पानीके किनारे कई मुर्दह लाशें पड़ी हुई रहतीं, जिनको कोतवाल शहर गाड़ियोंमें भरवा स्मशानोंमें पहुंचाकर एकट्ठा जलवादेता था. लाश जलाने वालोंको नहानेके लिये पानी सिवा तालाब (पीछोला) के कहीं नहीं मिलता, बाग़ बगीचे सूख गये थे, शहरके गिर्दो नवाह कुए बावड़ी भी खाली पड़े थे. तालाबके किनारेपर बेरियां खोदकर शहरके लोग पीनेके लाइक़ पानी लेजाते. सब लोगोंने महाराणा साहिबसे कहा, कि हुज़ूर शहरसे १० या ५ कोस दूर तशरीफ़ लेजावें, लेकिन् उन्होंने मन्ज़ूर नहीं किया और यह जवाब दिया, कि हम अपनी प्रजाको ऐसी तक्लीफ़ में छोड़कर नहीं जा सक्ते. यह कुल हाल मैंने अपनी आंखसे देखकर उसका बहुतही थोड़ा खुलासह यहां दर्ज किया है. महाराणा साहिब और अहलकार मुसाहिबोंकी तरफ़ से अच्छा इन्तिज़ाम था, लेकिन् कुद्रती बद इन्तिज़ामीका बन्दोबस्त नहीं होसक्ता. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० १२८६ ता० ५ रबीउस्सानी = ई० ता० १५ जुलाई] को बागोरका महाराज समर्थसिंह इसी (हैज़ेकी) बीमारीसे गुज़रगया. उनके कोई औलाद न थी, इसलिये कमल्या वाले सन्यासी, जिसका बयान ऊपर हुआ है, और पुरोहित सुन्दरनाथने महाराज शेरसिंहके चौथे पुत्र सोहनसिंहको उसका क्रमानुयायी बनानेकी कोशिश की, तब बेदलाके राव बख़्तसिंह व कोठारी केसरीसिंहने मना किया, और कहा, कि शक्तिसिंह समर्थसिंहका हक़दार मौजूद है, इस हालतमें ऐसा करना बेफ़ायदह है. अगर सोहनसिंहपर ज़ियादह मर्ज़ी है, तो उसको १०००) की जागीर पेश्तर दी, उसीतरह फिर सर्कारसे जागीर बढ़ादीजिये, लेकिन् उन्हीं ख़ानगी आदमियोंकी सलाहपर अमल होकर बागोरके बन्दोबस्तपर सियाणाका पंवार हमीरसिंह भेजागया. ख़ौफ़ यह था, कि बागोरके क़रीब सोनियाणामें शक्तिसिंह मौजूद है, जो इस ख़बरके सुनतेही क़बज़ह करलेवेगा, तो उसको निकालनेकी कोशिशमें बड़ी ताक़त दर्कार होगी. आख़िरकार सोहनसिंहको बागोरका मालिक बनादिया, यह ज़िक्र फिर मौक़ेपर लिखाजायेगा.

विक्रमी आश्विन कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० २१ सेप्टेम्बर] को कर्नेल् हचिन्सन साहिब अपनी जगहपर वापस गये, और उसी दिन पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिबने यहां आकर अपने कामका चार्ज लिया.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में बारिश बहुत अच्छी

हुई, मवेशी मरनेसे बची, वह क़ीमती होगई; लेकिन् ग़रीब प्रजाकी तक्लीफ़ अभी-तक दूर नहीं हुई. बारिशके मौसममें नाज पकनेसे पहिले भूखने दौरह किया, जिससे हज़ारों आदमी घरोंके भीतर किंवाड़ लगाकर सोगये, जो फिर कभी न उठे. मैं उन दिनों अपने छोटे भाई व्रजलालके गुज़रजाने और अठाणाके रावत् दूलहसिंहका इन्तिक़ाल होनेके कारण उदयपुरसे मेवाड़में गया था, चित्तौड़ और अठाणामें लावारिस मुर्दोंको कस्रतके सबब जलानेके .एवज़ भंगी घसीटकर गांवसे कुछ दूर डाल आते, जिनकी सड़ी हुई लाशें और हड्डियां देखकर रहम आता था. मैंने अठाणामें कई आदमियोंको लड्डू और रोटियां दिलाईं, जिनको वे लोग बड़ी तेज़ीसे दौड़कर लेते थे; लेकिन् मारे भूखके उनकी यह हालत हुई, कि एक ग्रास मुंहमें और एक हाथमें है, कि जान निकल गई. बरसात ख़त्म होनेपर मक्का, ज्वार वग़ैरह नाज ख़ूब पकगया. पहिले तो ग़रीब लोगोंकी अंतड़ियां मारे भूखके खुश्क होगई थीं, अब एक दम नया नाज कच्चा पक्का मिला जो पेट भरकर खाया, जिससे बुख़ार वग़ैरह बीमारियोंने ऐसा ज़ोर पकड़ा, कि हैज़ेसे भी ज़ियादह लोगोंका ख़ातिमह किया. इससे भी हज़ारों आदमी मरगये, ख़ुद अंग्रेज़ लोगोंने आदमियोंकी ज़िन्दगी बचानेके लिये गवर्मेण्टी .इलाक़ोंमें लौंडी ग़ुलाम ख़रीदनेकी इजाज़त देदी, दो दो रुपयेमें लड़के बिकनेलगे. ईश्वर ऐसा क़ह्त अपने बन्दोंको फिर न दिखलावे. इस ज़मानहमें महाराणा शम्भुसिंह जैसा तो रहमदिल राजा और कोठारी केसरीसिंह जैसा इन्तिज़ाम करनेवाला प्रधान था, जिससे फिर भी मेवाड़में हज़ारों आदमियोंकी जानें बचगईं, लेकिन् दुन्यामें किसीको बेफ़िक्र रहनेका मौक़ा नहीं मिलता. बदख़्वाह आदमीको उसकी बद आदतोंके सबब लोग ज़लील करते हैं, और ख़ैरख़्वाह व नेक आदत आदमीको बहुतसे ख़ुद मत्लबी लोग अपना मत्लब न होनेसे ज़लील करते हैं; अल्बत्तह दोनों ही नेक नामी व बदनामी दुन्यामें छोड़ जाते हैं. कोठारी केसरीसिंहपर फिर हमले होने लगे, लेकिन् महाराणा साहिबके दिलपर उसकी ख़ैरख़्वाही मज़्बूत जमी हुई थी, इससे लोगोंके कहनेका असर कम हुआ. महाराणा साहिबको शराबके नशेपर ख़ुद मत्लबी लोगोंने यहां-तक बढ़ादिया, कि वह एकदम एक बोतल पीलेते. छोटी अवस्थामें इस नशेकी ज़ियादतीने तन्दुरुस्तीमें ख़लल डाला; फिर लोगोंने उनको ऐश व इश्रतकी तरफ़ लगादिया. कहावत है, कि "आदमीका शैतान आदमी होता है" सुह्बतका असर ज़रूर पहुंचता है. ख़ुद महाराणा साहिबने मुझसे कई दफ़ा फ़र्माया था, कि ख़राब आदमियोंने मुझे नशे और .ऐश व .इश्रतमें डालकर ख़त्म करदिया (हरेरिच्छा बलीयसी).

इसी वर्षके अख़ीरमें बेमालीके जागीरदार ज़ालिमसिंहका इन्तिक़ाल होगया.

जिसका क्रमानुयायी लक्ष्मणसिंह अभीतक विद्यमान है. विक्रमी श्रावण कृष्ण २ [हि० ता० १५ रबीउस्सानी = .ई० ता० २५ जुलाई] को कोठारी केसरीसिंहने प्रधानेसे इस्तेफ़ा पेश किया. महाराणा साहिब अव्वल दरजेके अक्लमन्द और बुर्दबार थे, और किसीका लिहाज़ नहीं तोड़ते, यहांतक, कि उनके दिलपर असर रखने वाले आदमी दिल चाहे जिस क़िस्मका हुक्म दिलासक्ते थे, और कोठारी केसरीसिंह किसीसे नहीं दबता, लेकिन् अपने मालिकके हुक्मकी तामील अपने दिलसे फ़ौरन् करना चाहता. वह अपने मालिकका मालिक बनकर काम नहीं करता, बल्कि मालिकका नौकर बनकर रहता था; अगर मालिकका नुक्सान देखता, तो फ़ौरन् खानगीमें नफ़ा नुक्सान दिखलाकर अर्ज़ करदेता, वह अपनी अदावत या मुहब्बतके सबब मालिक की मर्ज़ीके बर्खिलाफ़ कार्रवाई कभी नहीं करता था. इन्हीं सबबोंसे मस्लिहत देखकर उसने इस्तेफ़ा दिया, तब महाराणा साहिबने यह काम महता गोकुलचन्द और पंडित लक्ष्मणरावके सुपुर्द किया.

इसी ऊपर लिखे हुए ज़िक्रके ज़मानहका हाल पोलिटिकल एजेएटने भी अपनी रिपोर्टमें दर्ज किया है, जिसका थोड़ासा खुलासह हम नीचे लिखते हैं:–

पोलिटिकल एजेएट लिखते हैं, कि महाराणा शम्भुसिंह साहिबको ईसवी १८६५ नोवेम्बर [वि० १९२२ मार्गशीर्ष = हि० १२८२ रजब] में इख्तियार मिला, तब मैंने उनको अच्छीतरह समझाया, कि रियासतका काम ख़ास अपने हाथमें लेना चाहिये, और उन्होंने भी ऐसा ही किया; लेकिन् उनके सलाहकार चाहते थे, कि रियासती इन्तिज़ामका भार पुराने ज़मानहके ढंगसे प्रधानपर रक्खाजावे. महता गोकुलचन्द मांडलगढ़को चलागया. महाराणा साहिबके सलाहकारोंमें मुख्य ठाकुर ज़ालिमसिंह था.

इन्हीं दिनोंमें एक फ़साद सर्हदी तनाज़हपर रावत् देवगढ़ और राजा बनेड़ाके बीच हुआ, उसमें १३ आदमी मारेगये, और २२ ज़ख्मी हुए. मैंने महाराणा साहिबको तनाज़ह के गांव ज़ब्त करलेनेकी सलाह दी. जबसे इन्तिज़ाम हमने छोड़दिया तबसे बड़ा फेरफार नज़र आता है, जो डाकू व चोर हम लोगोंसे दबे हुए थे अब वे अपना पेशह करते हैं, और नींबाहेड़ा, जावद नीमचमें पनाह लेते हैं. कुछ यह भूल हम लोगोंकी है, क्योंकि नींबाहेड़ा टोंकको और जावद, नीमच सेंधियाको वापस दिया, यही बुराईकी बुन्याद है; क्योंकि .ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७४] से दोनों पर्गनोंमें दोनों रियासतों का इन्तिज़ाम जमायागया. इन दोनों पर्गनोंपर जो लोग आते हैं वे अपना मत्लब निकालते हैं. जब चोरोंपर जुर्मानह लगाते हैं, तब वे मेवाड़में लूटखसोट करते हैं. मेवाड़से

बहुत सस्त बन्दोबस्त कियेगये हैं, लेकिन यह इन्तिज़ाम जबतक अंग्रेज़ी गवर्मेएटके हाथमें न होगा तबतक मुझको यक़ीन नहीं है, कि यह बन्दोबस्त होसके. .ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७४] के ग़द्रमें नीबाहेड़ाके हाकिम नव्वाब टौंकके मुसाहिब बख़्शी गुलाम मुहियुद्दीनख़ांने थोड़ेसे मकरानी, विलायती और मेवातियोंको एकट्ठा करके क़िले नीमचके लश्करको घेरलिया, जिससे नीबाहेड़ाका पर्गनह ज़ब्त करके कुछ अरसेके लिये मेवाड़को देदिया, जो हम लोगोंके दोस्त रहे हैं. यह पर्गनह मेवाड़के बीच और उसी (मेवाड़) का था, मगर .ईसवी १८६० [वि० १९१७ = हि० १२७६] में फिर टौंकको देदिया, और ५५००००) रुपया भी दिलाया. अगर सेंधिया और टौंकको यह पर्गने दिलाना ही मस्लिहत समझागया, तो पुलिस और इन्तिज़ाम दुरुस्त करनेका पूरा पूरा बन्दोबस्त करके देना लाज़िम था. सब पोलिटिकल अफ़्सरोंने इस बारेमें वर्षोंतक बड़ी कोशिश की, कि मरहटोंको राजपूतानहसे निकालदेवें. मैं लॉर्ड केनिंग साहिबके ऐसे इन्तिज़ामसे अफ़्सोस करता हूं, कि बिना सलाह सर्दारान राजपूतानहके इन लोगोंको इस मुल्कमें जमकर ठहरनेदिया. नीमच शाइस्तगी फैलानेकी .उम्दह जगह थी, जिसको जान बूझकर छोड़दिया. पोलिटिकल एजेएट लिखता है, कि मेवाड़के इन छोटे सर्दारोंकी मग़रूरी और ढिठाई तमाम हिन्दुस्तानसे बढ़कर है, उनमें भी कोठारियाके रावकी अधिक है. जैसाकि .ईसवी १८६५ नोवेम्बर [वि० १९२२ मार्गशीर्ष = हि० १२८२ रजब] में रियासतके मोतमद गांव नवानियामें आप (ईडन साहिब) का डेरा खड़ा करवानेको गये, उसने उनको मारडालनेकी धमकी दी, तब मैंने आपकी सलाहके मुताबिक़ उसका एक गांव बतौर सज़ाके ज़ब्त करलेनेकी सलाह महाराणा साहिबको दी, और उसको उन्होंने मन्ज़ूर फ़र्माई. कोठारियाके रावकी दूसरी बेअदबी यह थी, कि महता शेरसिंहको पनाह दी, जिसने चित्तौड़गढ़की तह्सीलके १५००००) रुपये रियासती ख़ज़ानहमें जमा नहीं करवाये. मैंने महाराणा साहिबको यह सलाह दी, कि ये रुपये कोठारियाके रावसे वुसूल करलीजिये. तब शेरसिंहने भागकर सलूंबरकी हवेलीमें पनाह ली. इसी तरह कितनेएक सर्दार चोरोंको पनाह देकर चोरीके मालमेंसे हिस्सह लेते हैं, और चोरोंको पनाह देना क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ शरणा बतलाते हैं; जिसका ज़िक्र .ईसवी १८५५ [वि० १९१२ = हि० १२७२] के क़ौलनामहमें किया है, इस बेतर्तीबीकी हालतमें हम अच्छे बन्दोबस्तकी उम्मेद जल्दी नहीं रखसक्ते. इन सर्दारोंमें हरएक शख़्स अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ दीवानी व फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम करता है, और अपनेको ख़ुदमुख़्तार समझता है. जब उनको कुछ कहाजावे, तो वे क़दीम दस्तूर बतलाते हैं. फिर इस बेइन्तिज़ामीको

क़ौलनामहने मज़्बूत करदिया है, और ये सर्दार लोग हमेशह क़र्ज़दार रहते हैं और हम महाराणा साहिबको इन सर्दारोंके दबानेकी पूरी सत्ता देवें, तो मेवाड़का फ़ायदह होसक्ता है.

इसके बाद पोलिटिकल एजेएटने अपनी रिपोर्टमें आमेटके रावत् पृथ्वीसिंहके गुज़रजाने और उसकी जगह रावत् अमरसिंहके मुतबन्ना होने व अमरसिंहसे चत्रसिंहने ठिकाना छीन लिया जिसका ज़िक्र लिखा है; जैसाकि पहिले बयान कियागया उससे सिर्फ़ इतना ज़ियादह है, कि मैं आगरेको गया था, तब पीछेसे महाराणा साहिबने अमरसिंहको आमेटका हक़्दार क़बूल करलिया, और धर्म शास्त्रमें भी उसका मुतबन्ना होना दुरुस्त है, लेकिन् मैं उसमें दस्ल करना नहीं चाहता.

इसके आगे सलूंबरके रावत्को महाराणा साहिब ले आये उसका ज़िक्र है.

इसके आगे वे अपने दौरेका हाल लिखते हैं, कि जो पहाड़ी ज़िले मेवाड़में खैरवाड़ेकी तरफ़ हुआ था. वे कुछ कुछ भीलोंका हाल लिखकर मेजर निक्सन (१) की तारीफ़ करते हैं, और खैरवाड़ेकी सड़कके खुलनेसे मुसाफ़िरोंको आराम मिलनेका भी ज़िक्र है.

फिर थोड़ासा बयान खैराड़ ज़िले जहाज़पुरके मीनों और देवलीकी छावनीकी बाबत् लिखा है.

उसके बाद मद्रसेका ज़िक्र लिखकर मेरवाड़ेको वापस करनेके बारेमें महाराणा साहिबकी तह्रीरपर बह्स की है, इत्यादि. मैंने उस रिपोर्टका ज़ियादह खुलासह इस-वास्ते नहीं लिखा, कि पाठक लोगोंको दोबारह मिहनतके सिवा और कुछ फ़ायदह नहीं है. अब मैं थोड़ासा खुलासह ईसवी १८६८ व ६९ [वि० १९२५-२६ = हि० १२८५-८६] की रिपोर्टका लिखता हूं:-

नम्बर ७२-१७-पी० ता० ३१ मई
सन् १८६९ ई०,

लेफ्टिनेएट कर्नेल् ए० आर० ई० हैचिन्सन
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट मेवाड़.

जबसे मैंने इस उह्देका चार्ज लिया है, तबसे महाराणा साहिब और उनका प्रधान कोठारी केसरीसिंह मेरी सलाहपर तुरन्त अमल करते हैं, और मेरी दोस्ती

(१) यह पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ निक्सन साहिबके बेटे और खैरवाड़ाकी फ़ौजके अफ़्सर हैं.

दिन बदिन बढ़ती जाती है. महाराणा साहिब .ऐश व .इश्रतको चाहनेवाले हैं, लेकिन् अ़क्लमन्द और वर्तमान ज़मानहके ढंगको जाननेवाले हैं, और अपने मुल्ककी दुरुस्ती करना चाहते हैं; ख़ासकर ब्रिटिश गवर्मेंएटकी इच्छा और अपनी प्रजाकी भलाई करनेको ज़ियादह उत्कंठित हैं, लेकिन् महाराणा साहिबको क़दीमी दस्तूरपर चलनेसे इन बातोंके पूरा करनेमें दिक़्क़त उठानी पड़ती है. महाराणा साहिब ख़ुद-मुख़्तार हैं, छोटासा काम भी बिदून हुक्म उनके नहीं होसक्ता; प्रधानको भी हमेशह जाकर कुल कामोंके लिये हुक्म लेना पड़ता है, और इसीतरह फ़ौज्दारी व दीवानीके हाकिम भी अख़ीर कार्रवाईको उनके हुक्मसे करते हैं. अगर फ़ुर्सत न हो, तो दूसरे काम बाक़ी रहें, परन्तु पोलिटिकल एजेएटीके कामोंको ख़त्म करनेपर ज़ियादह ध्यान दियाजाता है. ज़ियादहतर राज्यका काम धर्मशास्त्रके अनुसार होता है, और महाराणा साहिब उसको चलानेके लिये पेश्वा हैं, इसलिये उसके बर्ख़िलाफ़ नहीं करसक्ते. महाराणा साहिबके पास कोई भरोसा रखनेके लाइक़ सलाहकार नहीं है.

फिर पोलिटिकल एजेएटने ज़ालिमसिंह और रावत् अमरसिंह व कमालिया वाले सन्यासीकी शिकायत लिखी है. इसके आगे कोठारी केसरीसिंहका ज़िक्र है. वह लिखते हैं, कि केसरीसिंहको प्रधाना मिलनेसे महाराणा साहिब और उनके सर्दार व प्रजा सब लोग बहुत ख़ुश हुए हैं. यह शख़्स मिहनती और जमा ख़र्चकी दुरुस्ती रखने वाला, और जो ज़िम्मेहवारीका काम उसको सौंपा गया उसके वास्ते लाइक़ है, और यह पुराने रवाजके मुवाफ़िक़ रियासती हुकूमतका तरफ़दार है. महाराणा साहिब की नाबालिग़ीमें रियासती नौकरोंको ज़मीनके ठेके लिखदिये थे, उससे नुक़्सान हुआ और ६०००००) रुपये बाक़ी रहगये, तब उस बन्दोबस्तको रद कर तीन वर्षके लिये गांवके लोग, याने पटैल पटवारियोंको पांच पर्गनोंमें ठेका दियागया, लेकिन् वह भी राज्यके कारिन्दोंकी नापसन्दीसे नहीं चला.

इसके बाद ज़मीनके महसूलका तरीक़ह व जमा ख़र्चका ज़िक्र है. फिर कर्नेल् हैचिन्सन्ने मेवाड़के सर्दारोंकी मग़रूरी और नाफ़र्मांबर्दारीका बहुत ज़िक्र लिखकर उसके लिये आमेट, सलूंबर और धांगड़मऊकी गोदनशीनीके मुक़द्दमेकी मिसाल दी है. उसके बाद कोठारियाके रावत्की सर्कशी और भैंसरोड़ वालोंकी .उदूलहुक्मीका ज़िक्र है. बाद इसके डाक पार्सलका बन्दोबस्त महाराणा साहिबने .उम्दह तौरसे किया, और नीमच-नसीराबाद व उदयपुर-नीमचकी सड़कपर पुलिसका इन्तिज़ाम ८८९८०) रुपये सालियानह ख़र्चसे १३८ मीलका किया, जिसका मुफ़स्सल बयान है. फिर मेवाड़, नीवाहेड़ा और जावद नीमचके मिलनेसे मोगिया लोगोंकी चोरी व डकैतीका मुफ़स्सल ज़िक्र है,

जैसाकि ऊपर लिखागया. उन डकैतियोंमेंसे एक संगीन डकैतीका बयान है, कि पीपलियाका रावत् लक्ष्मणसिंह उनके नज़्दीकी रिश्तहदार बख़्तावरसिंह, ऊंकारसिंह, दीपसिंह, फ़ौजसिंह, व हमीरसिंह वगैरहकी साज़िशसे जमादार रामा बावरी वगैरहके हाथसे मारागया. फिर उन्होंने पहाड़ी भीलोंकी आदत और उनकी डकैतियोंका हाल लिखा है.

उसके बाद कर्नेल् हैचिन्सन अपनी रिपोर्टमें विक्रमी १९२५ [हि० १२८५-८६ = ई० १८६८-६९] के अकालका हाल लिखते हैं, जिसमें महाराणा साहिबके उम्दह इन्तिज़ाम, फ़य्याज़ी और लोगोंकी तक्लीफ़का हाल है, जो पहिले लिखागया उसीके मुताबिक़ है, लेकिन् इन्तिज़ामकी तफ़्सील उक्त रिपोर्टसे खुलासहके तौर लिखीजाती है:-

पहिले तो महाराणा साहिबने अनाजका महसूल (दाण मापा वगैरह) आधा और उसके बाद कुल महसूल छोड़दिया, और बाज़ बाज़ अनाजके व्यापारियोंको क़ह्तकी ख़िद्मतके एवज़ हमेशहके लिये किसीको आधा और किसीको चौथाई छोड़दिया, और ख़ास दर्बारने २००००) का इन्दौरसे, १५०००) का ईडरसे अनाज ख़रीदकर मंगवाया. अलावह इसके १०५५००) रुपया शहरके व्यापारियोंको सर्कारसे देकर अनाज मंगवाया. सेठ चांदनमल्लको २५०००), मगराके हाकिमकी मारिफ़त वहांके व्यापारियोंको २५०००), खेमराज हुक्मीचन्दको १००००), हैदर हिसुल्लाह, और ईसा ताजख़ांको २२५००), इब्राहीमको ११०००), रसूल बौहराको ४०००), ईसा ताजख़ांको २०००), रामनारायण मूंदड़ाको ५०००), धनराज चौधरीको २०००); जुमले १४०५००) रुपयेका अनाज तो श्रीदर्बारकी मददसे ख़रीदा गया, और २०००००) रुपये दर्बारने उन लोगोंके लिये ख़र्च किये, जो मज़्दूरी करके पेट भरें. इसमें जहां जहां इमारतें वगैरह बनीं और जिस क़द्र आदमियोंका पालन हुआ, उसकी तफ़्सील निम्न लिखित नक़्शहसे मालूम होगी:-

नाम जगह.	तादाद रुपया.	तादाद मनुष्य.	कैफ़ियत.
उदयपुर	१०००००	११७८	
जहाज़पुर	१८३००	५८४	
भीलवाड़ा	१५०००	२२६	यहांके लिये मन्जूरी १२००० की थी.
चित्तौड़गढ़	२६३००	५१०	
कुंम्भलगढ़	२५०००	४००	
खेमलीके तालाबमें	३२००	३५०	

खैरवाड़ा	६०००	१५०	
नाहरमगरा	४१००	१०६	
नसीराबाद व मऊकी सड़क इलाक़े मेवाड़के लिये	०	०	यहांके लिये ५०००) रुपये माहवारकी मन्ज़ूरी हुई.
मीज़ान	११७९००	३४९४	

इसके सिवा २५०००) रुपया महाराणा साहिबने इसवास्ते दिया, कि (इज़्ज़तदार ग़रीब, जो भीख नहीं मांग सके, उनको) सस्ते भावसे अनाज दियाजावे.

अलावह इसके सदाव्रत्तमें आटा दियागया, उसकी माहवारी तफ़्सील :-

नाम शहर.	आदमी.	चून या आटा.	अनाज.
उदयपुर	३६००	५६ मण	०
जहाज़पुर	४००	७॥ "	०
चित्तौड़	९००	१४॥ "	०
कुम्भलगढ़	५५०	१४ "	७॥ मण
कैलासपुरी	३०००	१९ "	३२॥। "
गढ़बोर	४००	७॥ "	०

इसके उप्रान्त रंधीहुई मक्की (घूगरी) मर्द या औरतको ०॥ आधसेर और बच्चोंको ०। पावसेर अन्दाज़हसे दीजाती, जिसका तख़्मीनह रोज़ानह :—

उदयपुर	७५००	
कुम्भलगढ़	२०००	
भीलवाड़ा	७००	
चित्तौड़	५००	
मीज़ान	१०७००	

छावनी देवलीमें भी इसी क़िस्मका ख़ैरातख़ानह खोलागया, जिसके लिये महाराणा साहिबने १०००) रुपये कल्दार दिये. ख़ास शहर उदयपुरमें तारीख़ १९ एप्रिल से ३१ मई [वि० १९२६ जेष्ठ कृष्ण ६ = हि० १२८६ ता० १८ सफ़र] तक २०९०३७ मनुष्य, जिनमें ४६४६९ मर्द, ७८६५० औरतें और ८३९१८ बच्चोंका पालन हुआ, जिनमें ८४९) ३ । = मण नाज ख़र्च हुआ, जिसकी क़ीमत रु० ६३१२। –)६ हुई. इस क़हतके हालको ख़त्म करके उक्त साहिबने मद्रसह, दवाख़ानह, जेलख़ानह वग़ैरहका हाल लिखा है उसके बाद मुज्रिमोंकी सुपुर्दगीका अह्दनामह हुआ, जिसका ज़िक्र है.

मेवाड़ एजेन्सीकी रिपोर्ट नम्बर ५६—१०– पी०
ता० १६ मई सन् १८७० ई०,

लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् जे० पी० निक्सन पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की तरफ़से
लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् आर० एच० कीटिंग के० सी० एस० आइ०, वी० सी०
एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह.

पिछले सालकी कार्रवाई मेरे इशारेसे महाराणा साहिबने लिखी थी उसका तर्जमह वास्ते मुलाहज़ेके गवर्नर जेनरलकी ख़िदमतमें भेजा था, क्योंकि अपनी रियासतकी कार्रवाईकी बाबत् ख़ुद रईसका लेख सर्कार भी पसन्द करेगी.

मैं ख़ुशीसे लिखता हूं, कि महाराणा साहिबने बाक़ाइदह दीवानी और फ़ौज्दारी की अदालतें क़ाइम करदी हैं, जिनके अफ़्सरोंको बिल्फ़ेल कुछ इख़्तियार देदिये हैं.

मुझे अफ़्सोस है, कि कोई क़ानून अभीतक यहां जारी नहीं हुआ. बाज़ाबितह लिखे हुए क़ानूनकी मुख़ालफ़त यहां बहुत है. मेवाड़के सर्दार तो धर्मशास्त्रके बहानेसे बिल्कुल इससे बर्ख़िलाफ़ हैं, मगर कुल राजपूतानहमें सर्दारोंकी कमोबेश ज़ाहिर या पोशीदह यही कोशिश है, कि अपनी बेजा कार्रवाईको रईसोंके वाजिबी फ़ौज्दारीके दख़्ल से बचावें. सर्दारों और रईसोंके बाहमी मुख़ालफ़तकी बुनयाद यही है, कि सर्दार लोग नहीं चाहते, कि उनके फ़ौज्दारी इख़्तियारातमें रईसका दख़्ल हो. सर्दार तो यह चाहते हैं, कि दीवानी, फ़ौज्दारी हमारी हमारे हाथमें रहे; और अच्छे इन्तिज़ामके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके दबावसे रईस लोग हमेशह उनका इख़्तियार रोकनेकी कोशिश करते हैं. सर्दारोंकी कोशिश तो यह है, कि जो ज़ियादतियां व जुल्म वे ख़ुद करते हैं वा अपने मातहतोंसे कराते हैं, और उनके साथ अपना फ़ायदह उठाते हैं उनकी बाबत् कोई

रोक न हो. मेरी समझमें सर्कारको वाजिबी तरीक़ोंसे इन रईसोंको जबतक, कि वे अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहके मुवाफ़िक़ अच्छी तरह हुकूमत करनेकी कोशिश करते हैं मदद देना चाहिये, ताकि वे अपने सर्दारोंको दबा सकें; लेकिन् बहुतसी हालतोंमें सर्कारकी कार्रवाई बिल्कुल उसके विरुद्ध है. यह बात हम सब जानते हैं, कि रईस लोग खुद जुल्म ज़ियादती नहीं करते और इन सर्दारोंमेंसे ऐसे थोड़े हैं, जो ऐसा नहीं करते. यह बात ज़ाहिर है, कि ये छोटे सर्दार अपनी कार्रवाईमें हमारे पास जवाबदिह नहीं हैं और अपने रईसोंके पास जवाबदिहीको ये टालजाते हैं या नहीं मानते हैं.

इन सर्दारोंकी कार्रवाईकी निगरानीके लिये एक अह्लकार दर्बारका उन ठिकानोंमें हमेशह रहना चाहिये, कि जो उनकी बेजा कार्रवाईकी रिपोर्ट किया करे. हैचिन्सन साहिबने पहिले रिपोर्ट की थी, कि महाराणा साहिब और सर्दारोंमें नाराज़गी है, लेकिन् मैं इसके साथ इत्तिफ़ाक़ नहीं करता, क्योंकि सर्दार लोग महाराणा साहिब को बहुत चाहते हैं; अल्बत्तह इस बातको नापसन्द करते हैं, कि वह हमारी (अंग्रेज़ोंकी) सलाहसे काम करें. मेवाड़के सब लोगोंसे महाराणा साहिब ज़ियादह रौशन राय हैं; इसलिये वे लोग जो पुराने ज़मानहके दस्तूरोंसे लिपटे हुए हैं, उनकी लियाक़तकी ताक़तसे डरते हैं. अगर महाराणा साहिब किसी एक सर्दारको किसी क़ुसूरपर सज़ा देने का इरादह करें, तो इनके ख़िलाफ़ दूसरे सभी मुत्तफ़िक़ होजायेंगे, ताकि इन्साफ़ न होसके. राजपूतानहमें यह चाल बहुत पुरानी है. हालके महाराणा साहिब को उनके पहिलेके तीन राजाओंकी निस्बत लोग ज़ियादह चाहते हैं, क्योंकि वह जुल्म नहीं करते.

पिछले सालकी रिपोर्टमें कर्नेल् हैचिन्सनने कुछ हाल ज़ालिमसिंहका लिखकर उसको बुरा सलाहकार समझा है. हिन्दुस्तानी दर्बारोंमें उस शख़्सके, जिसपर राजा मिहर्बान होता है, बहुत दुश्मन होजाते हैं, ख़ासकर प्रधान तो उसको बहुतही बुरा समझता है. ज़ालिमसिंह स्वतंत्र पुलिसका अफ़्सर था, सर्दार लोग उसको नहीं चाहते थे, तोभी मेवाड़में लूटनेवाली क़ौमोंके रोकनेमें इसने अच्छी नौकरी की है. इसकी बड़ी खूबी यह थी, कि सर्कार अंग्रेज़ीका ख़ैरख़्वाह था और महाराणा साहिबको भी साहिब रेज़िडेण्टकी रायपर अमल रखनेकी सलाह देता रहता था. अफ़्सोस है, कि वह शख़्स मरगया!

मालका इन्तिज़ाम पुराना और सादे तौरका है. ज़मींदार और काश्तकारमें कोई शिकायत नहीं है, और जमा वुसूल करनेमें भी कोई शिकायत नहीं है, क्योंकि साख बिगड़नेपर दर्बारसे हमेशह छूट होजाती है. छोटे मोटे मुक़द्दमात गांवके चौखलेकी पंचायतसे तय होजाते हैं.

महाराणा साहिबकी मर्ज़ी है, कि बाक़ाइदह माली बन्दोबस्त इस मुल्कमें जारी किया जावे, और इसलिये अगले जाड़ेसे बन्दोबस्तका इन्तिज़ाम शुरू होगा, मगर दर्बारके अह्लकार इसके खिलाफ़ हैं, क्योंकि इसमें दर्बारका फ़ायदह और उनकी चोरियोंका शायद खुलना है और ज़मींदारोंपर जो उगाहीमें राजके अह्लकार ज़ियादती करते हैं वह मिटजायेगी.

नीमच- नसीराबादकी सड़क बनरही है, सर्कारी फ़ौजी कामके सिवा इससे कुछ व्यापारका फ़ायदह मालूम नहीं होता. दर्बारने १३००००) रुपया लागत तावे दे- दिया है और ५००००) फिर देना है. उदयपुरसे खैरवाड़ेतक जो सड़क हालमें बन- रही है वह भी ८ मीलतक बनगई है, इससे मेवाड़के रूईके व्यापारको बम्बईकी तरफ़ निकासका रास्तह होनेसे बहुत फ़ायदह होगा.

मैंने मेवाड़के पहाड़ी ज़िले बाबत् .ईसवी १८७० ता० ७ मार्च [वि० १९२६ फाल्गुण शुक्ल ५ = हि० १२८६ ता० ४ ज़िल्हिज] को रिपोर्ट की है, कि मेवाड़की दक्षिणी और पश्चिमी हदपरके गिरासिये सर्दार फ़ौज्दारी मुआमलातमें इस एजेंसीके अव्वल और दूसरे असिस्टैंटोंके तअ़ल्लुक़में हैं, और पहाड़ी .इलाक़हके छोटे सर्दार दर्बारके मातह्त हैं, मगर कुल मुक़द्दमात जिनमें गिरासियोंका कुछ तअ़ल्लुक़ था वे उक्त असिस्टैंटोंने फ़ैसल किये हैं. यह ज़रूर है, कि जो ज़ियादती ग्रासिया और भील सर्हद्से बाहिर करते हैं उसका बदला उन्हींसे दिलाया जावे, ताकि आगेसे ऐसा करनेको रुकें. अबतक ऐसा दस्तूर था, कि हमेशह सारी बेबन्दो- बस्तीका ज़िम्महवार राजके अह्लकारको ठहराया जाता था. अब मेरी राय है, कि अंग्रेज़ी उह्देदार, जो उस इलाक़हमें रहते हैं, ज़ियादह ज़िम्महवार ठहराये जावें.

मेवाड़ और महीकांठाके सर्हदी फ़ैसलोंमें मेवाड़पर ६६५४) रुपयेकी डिगरी हुई. उदयपुर दर्बार डिगरीका रुपया मुज्रिमोंसे वुसूल किया करते हैं उसमें अह्लकारोंके ज़ुल्मकी शिकायत सुनकर मैंने दूसरे असिस्टैंटकी मारिफ़तसे वुसूल करनेका बन्दोबस्त किया है.

पिछले साल सख़्त अकाल था, तोभी इस .इलाक़ेमें ज़ियादह वारिदातें नहीं हुईं; मगर मगरा मेरवाड़ाके मेरोंमें वारिदातें कम नहीं हुई हैं, वे लोग ५० वर्षके क़रीबसे अंग्रेज़ी बन्दोबस्तमें हैं, और यह उम्मेद कीजाती थी, कि लुटेरापन उन्होंने बिल्कुल छोड़दिया, मगर थोड़ीसी तंगी पड़नेपर उनकी अस्ली आदत फिर ज़ाहिर होगई.

पिछले साल कर्नेल् हैचिन्सन् साहिबकी सलाहके मुवाफ़िक़ दर्बारने अफ़ीमका कांटा उदयपुरमें मुक़र्रर कराया, गोकि पहिले सालमें ब एवज़ ६००० पेटीके, जिसकी उम्मेद कीगई थी उज्जैन व इन्दौरके व्यापारियोंकी कार्रवाईसे सिर्फ़ ४४४ पेटी इस कांटे

पर छपीं, लेकिन् कांटेके होनेका फ़ायदह मेवाड़के रईस व ब्यापारियोंको होवेहीगा, इस बातपर भी मैं तवज्जुह दिलाता हूं, कि कांटेका ख़र्च दर्बार मेवाड़से दियाजाता है, यह बात कुछ ग़ैर मामूलीसी है, क्योंकि कांटेसे महसूल सर्कार अंग्रेज़ीको वुसूल होता है.

फ़ौज.

उदयपुरकी फ़ौजकी दुरुस्ती कीजाती है और क़वाइद सिखाई जाती है, कुल तादाद ११५२ सवार, ३६९४ पैदल और ६३२४०२) रुपया सालानह ख़र्च होता है.

शिफ़ाख़ानह.

शहरके दोनों शिफ़ाख़ानोंमें ६८९५ बीमारोंका .इलाज हुआ, ८५८ बालकोंके टीका लगाया गया, और कुल ख़र्च ४६९३) रुपया हुआ. पिछले साल ५४५१ आदमियोंका इलाज हुआ, ५३७ के टीका लगा, और ३२३२) रुपया ख़र्च हुआ था; क़ाइम-मक़ाम डॉक्टर गेलवे साहिबने उम्दह कारगुज़ारी की. अकाल और हैज़ेके वक्त दवा और खाना बांटनेमें बड़ी तन्दिही और कोशिश की; इस सालमें २१ बड़े और ३१५ छोटे ऑपरेशन होकर काम्याब हुए.

जेलख़ानह.

जेलख़ानोंमें इन्तिज़ाम और सफ़ाई अच्छी है, क़ैदी अच्छीतरह रक्खे जाते हैं और उनसे ज़ियादहतर सड़कपर काम लियाजाता है. पिछले सालमें २०९ क़ैदी थे, १३ मरगये जिनमेंसे ५ बवाइस हैज़ाके मरे थे.

स्कूल.

पिछले साल उदयपुरके स्कूलका काम मिस्टर इङ्गल्स असिस्टेंट ओपियम एजेण्टके तहतमें लियागया. हाज़िरी कुछ लड़कोंकी और ज़ियादहतर लड़कियोंकी कम होगई है.

ख़िराज.

उदयपुरका सालियानह ख़िराज अबतक बराबर अदा होजाता है, मेवाड़ भील कॉर्प्सका ख़र्च जो मेवाड़के मगरा मेरवाड़ाकी आमदनीमेंसे लियाजाता है, पहिले सालोंका जमा होते रहनेसे अजमेरके ख़ज़ानहमें अमानत जमा है. पिछले साल फ़स्ल अच्छी हुई, लेकिन् धानका भाव महंगा रहा.

पिछले सालकी रिपोर्टमें लेफ्टिनेण्ट कर्नेल् हेचिन्सन साहिबने महाराणा साहिबकी निस्बत लिखा है, कि यह रईस अपने मुल्कमें सुधारा चलाना चाहते हैं और सर्कार अंग्रेज़ीके मन्शाके मुवाफ़िक़ अपनी रअ़य्यतके आराम पानेके लिये बहुत कोशिश करते हैं, इस बातकी तस्दीक़ पिछले सालकी महाराणा साहिबकी कार्रवाईसे बखूबी

होगई. इस साल मेवाड़में अकाल तो नहीं था; मगर गिरानी वहुत थी, आसपासकी रियासतोंके अकालसे हज़ारहा आदमी उदयपुरमें आपड़े, जो भूख और उससे पैदा हुई बीमारियोंसे मरते थे. महाराणा साहिबने अपनी नेकदिली और कर्नेल् हैचिन्सन साहिबकी सलाहकी मददसे बहुत तद्बीरें इन लोगोंकी मुसीबत कम करनेकी कीं, जिससे वह सख़्त वक़्त बड़ी ख़ूबीसे निकला और हज़ारों जानें उनकी फ़य्याज़ीसे बचीं. उदयपुरमें ११६३७६६ आदमियोंको खाना मिला, इसमें ५००८४।) रुपया उठा. मेवाड़के और बड़े बड़े क़स्बोंमें इसके अलावह तद्बीरें हुईं.

पिछले सालमें महाराणा साहिबको नासूरकी बीमारी होगई थी, जिसमें वह ५ महीना बीमार रहे. डॉक्टर कनिंघमने अपनी रिपोर्टमें इसकी बाबत् लिखा है, कि इस सख़्त बीमारीमें बावुजूदेकि बार बार ऑपरेशन नाकामयाब हुए, तोभी महाराणा साहिब अपनी तबीअतकी मज़बूती और खुश मिज़ाजीसे हमेशह खुशदिल रहे, जिससे उनकी तबीअतकी उम्दगी पाईगई, जो उनके बड़े दरजहके लाइक़ है.

यहांके इन्साफ़ी क़ानूनकी बाबत् लिखता हूं, कि हालमें तो कोई लिखा हुआ क़ानून यहां जारी नहीं है, मगर आपने जो क़ाइदे दिये थे उनका हिन्दी तर्जमह मिस्टर इङ्गलससे कराकर उनपर ग़ौर होरहा है. हिन्दुस्तानी रियासतोंमें राजा कैसा भी हमारी सलाहपर चलता हो, तो क़ानूनका चलना बहुत मुश्किल और देर तलब है, तो-भी उम्मेद है, कि चन्द रोज़में यह क़ानून जारी होजायेगा.
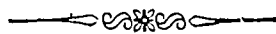
हम ऊपर लिख आये हैं, कि कोठारी केसरीसिंहने प्रधानेसे इस्तेफ़ा दिया और काम महता गोकुलचन्द और पंडित लक्ष्मणरावके सुपुर्द हुआ, लेकिन् पाठक लोगोंको ज्ञात करनेके लिये यह भी अवश्य है, कि दूसरे बन्दोबस्तका हाल भी दर्ज कियाजावे, अर्थात् कोठारी केसरीसिंहके प्रधानेके समय विक्रमी १९२६ पौष कृष्ण ५ [हि० १२८६ ता० १९ रमज़ान = ई० १८६९ ता० २३ डिसेम्बर] को महकमह ख़ासके नामसे एक कचहरी क़ाइम हुई, जिसमें हुक्म देनेवाले तो ख़ास महाराणा साहिब और सेक्रेटरी महता पन्नालाल बनाया गया. यह शख़्स कोठारी केसरीसिंहके बड़े भाई छगन-लालका दामाद, होश्यार और नौजवान अह्लकार जानकर इस कामके लिये चुनागया, जो महता अगरचन्दके भाईकी औलादमें महता मुरलीधरका पुत्र है; इसको कोठारी केसरी-सिंहने भी अपने बड़े भाईका दामाद होनेके सबब पसन्द किया. इस महकमहकी बुन्याद डालनेके लिये पेश्तर भी पंडित लक्ष्मणरावने कोशिश करके अपने दामाद मार्तंडरावको पेश किया था, लेकिन् उससे यह काम नहीं जमा. थोड़ेही दिनोंके बाद प्रधानके करनेका

काम महकमह खासमें होने लगा, जो अबतक महता राय पन्नालालकी सुपुर्दगीमें है.

इस समय ३८ वर्षके बाद मकाम अजमेरमें गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड मेयोसे मुलाक़ात करनेको महाराणा साहिब बुलाये गये. बहुत कुछ बह्सके बाद यह बात मंज़ूर हुई, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है, कि विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = .ई० १८३१] में जब महाराणा जवानसिंह लॉर्ड बेंटिंकसे मुलाक़ात करनेको अजमेर गये थे उसवक्त यह क़रार हुआ था, कि महाराणा साहिब लॉर्ड गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातको आइन्दह अपने इलाक़हसे बाहिर नहीं जावेंगे, उसके बाद आगरा वग़ैरह मकामोंमें दर्बार होकर सब राजा लोग बुलाये गये, लेकिन् महाराणा साहिबका जाना नहीं हुआ. इस-वास्ते लॉर्ड मेयोने अजमेरमें आकर महाराणा साहिबसे मुलाक़ात चाही. ऐसी बातों पर इस रियासतमें ज़मानह क़दीमसे तअस्सुब रहा है, लेकिन् गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी ख़ाहिश्त फ़ह्माइश और कर्नेल् निक्सन साहिबकी कोशिशसे यह बात कुबूल हुई, और विक्रमी १९२७ आश्विन शुक्ल १० [हि० १२८७ ता० ८ रजब = ई० १८७० ता० ४ ऑक्टोबर] को प्रस्थान होकर फ़ौज और पोलिटिकल एजेण्ट विक्रमी आश्विन शुक्ल १२ [हि० ता० १० रजब = .ई० ता० ६ ऑक्टोबर] को उदयपुरसे रवानह होकर खेमली व देपुरमें मक़ाम करते हुए विक्रमी आश्विन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रजब = .ई० ता० ९ ऑक्टोबर] को राजनगर पहुंचे, और इसी दिन फ़ज्रको महाराणा साहिब उदय-पुरसे रवानह हो एकलिंगेश्वरके दर्शन कर देलवाड़े राज फ़तहसिंहके यहां गोट (दावत का खाना) अरोग पलाणेसे बग्घी सवार होकर शामको राजनगर पहुंचगये और राजसमुद्र की पालपर पोलिटिकल एजेण्ट निक्सन साहिबसे मिलकर डेरेमें आराम किया. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १ [हि० ता० १४ रजब = .ई० ता० १० ऑक्टोबर] को फ़ौजका मक़ाम कुरजमें हुआ, और महाराणा साहिब राजनगरसे कोठारियाके रावत् संग्रामसिंहके यहां, जिसका पिता रावत् जोधसिंह गुज़रगयाथा, मातमपुर्सीके लिये उसके डेरेमें होकर कांकड़ोली तश्रीफ़ लेगये, और दर्शन करके रातभर वहीं रहे. विक्रमी कार्तिक कृष्ण २ [हि० ता० १५ रजब = .ई० ता० ११ ऑक्टोबर] को कुरजमें भोजन करनेके बाद ग्राम महाड़ा पधार गये, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रजब = .ई० ता० १२ ऑक्टोबर] की फ़ज्रको बग्घी सवार हो शिवरतीके महाराज गजसिंह व बागोरके महाराज मोहनसिंह इन दोनों की तरफ़की गोट अरोगकर शामको ल्हेसवे पधार गये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ रजब = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को भगवानपुरे और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रजब = .ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को रायला में मक़ाम हुआ. शाहपुराका राजाधिराज लछमणसिंह और भैंसरोड़का रावत् अमरसिंह

गुज़रगया था, इस जगह उनके बेटे राजाधिराज नाहरसिंह और रावत् भीमसिंहके डेरोंपर मातमपुर्सीको पधारे, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १९ रजब = .ई० ता० १५ ऑक्टोबर] को बड़ी रूपाहेली और दूसरे दिन ग्राम बरलमें मकाम हुआ. जहां अजमेर और मेवाड़की हद मिलती है, इसलिये महाराणा साहिबकी पेश्वाईको गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ कर्नेल् निक्सन और एजेएट गवर्नर जेनरलके दूसरे सेक्रेटरी चार्ल्स बटन और ब्यावरके असिस्टैंट रेप्टेन आये. सर्हद पर डेरोंमें मुलाक़ात होकर हाथियोंपर सवार हो महाराणा साहिबको डेरोंमें बरलके बंगलेतक पहुंचाकर अंग्रेज़ अफ्सर अपने डेरोंमें गये. महाराणा साहिबको साथमें फ़ौज कम लेजानेके लिये पोलिटिकल एजेएटने बहुत कुछ कहा, और इसी तरह हिदायत थी, कि ४००० आदमियोंसे ज़ियादह न हों, इसलिये हर एक सर्दार और कारख़ानोंकी तादादी फ़र्द बनकर हुक्म दियागया था, तोभी फ़ौजके ज़ियादह होजानेसे महाराणा साहिबने खुद बिराजकर जमइयतोंकी हाज़िरी ली. बहुत बन्दोबस्त होनेपर भी क़रीब ६ या ७ हज़ार फ़ौजसे कम न हुई. फिर विक्रमी कार्तिक कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रजब = .ई० ता० १७ ऑक्टोबर] को बांदरवाड़े और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रजब = .ई० ता० १८ ऑक्टोबर] को छावनी नसीराबाद पहुंचे. वहां छावनीके ब्रिगेडिअर जेनरल और मैजिस्ट्रेट क़रीब ३ या ४ मीलतक पेश्वाईको आये. घोड़ोंपर मुलाक़ात होकर उन लोगोंने महाराणा साहिबको डेरोंमें पहुंचाया. अंग्रेज़ी कैम्पसे १९ तोपोंकी सलामी सर हुई. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १० [हि० ता० २३ रजब = .ई० ता० १९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब अजमेर पहुंचे, ७ साहिब लोग अनुमान दो या ढाई कोसतक पेश्वाईको आये; कर्नेल् निक्सन पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ और दूसरे सेक्रेटरी चार्ल्स बटन, असिस्टैएट रेप्टेन, मेवर साहिब पोलिटिकल एजेएट हाड़ोती वगैरहसे पेश्वाईकी जगह डेरोंमें मुलाक़ात हुई. इसके बाद हाथियोंपर सवार हुए और साहिब लोग महाराणा साहिबको डेरोंमें पहुंचाकर अपने अपने डेरोंमें गये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रजब = .ई० ता० २० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब हाथीपर सवार होकर मए अपने चन्द सर्दारोंके क़रीब दो कोसपर गवर्नर जेनरल हिन्दकी पेश्वाई को गये. जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह, बूंदीके महारावराजा रामसिंह, कोटाके महाराव शत्रुशाल, टोंकके नव्वाब मुहम्मदइब्राहीम अलीख़ां, कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह और झालावाड़के महाराजराणा पृथ्वीसिंह वगैरह राजा लोग हाथियोंपर सवार थे, और उधर से लॉर्ड मेयो भी हाथीपर सवार होकर आये. लॉर्ड मेयोने हाथीके हौदेपर खड़े हो

टोपी उतारकर पेश्तर महाराणा साहिबसे फिर जोधपुर व बूंदी वगैरहके राजाओंसे सलाम किया. राजा लोगोंने भी अपने अपने हाथियोंपर खड़े होकर सलाम किया. मिज़ाज पुर्सीके बाद लॉर्ड गवर्नरको डेरोंतक पहुंचाकर सब राजा लोग अपने अपने डेरों को गये. फिर लाठ साहिबकी तरफ़से मिज़ाजकी खुशी पूछनेको सब राजाओंके डेरों में अंग्रेज़ अफ्सर भेजेगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रजब = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को प्रातःकालके समय महाराणा साहिब व लाठ साहिबके कैम्पके बीचमें जहां एक शामियानह खड़ा था, महाराणा साहिब तश्रीफ़ लेगये. बाद इसके लॉर्ड मेयोके सेक्रेटरी और एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्रूक, पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ कर्नेल् निक्सन व पोलिटिकल एजेएट हाड़ोती वगैरह ७ या ८ अंग्रेज़ हाथियोंपर सवार होकर महाराणा साहिबको लेनेके लिये आये. महाराणा साहिब भी मए बेदलाके राव बख़्तसिंह, देलवाड़ाके राजरणा फ़तहसिंह, कान्होड़ के रावत् उम्मेदसिंह, पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंह, आसींदके रावत् खुमाणसिंह, शिवरतीके महाराज गजसिंह, करजालीके महाराज सूरतसिंह, बागोरके महाराज सोहनसिंह और प्रधान महता गोकुलचन्दके हाथियोंपर सवार होकर लाठ साहिबके डेरोंमें सिधारे. लाठ साहिबकी तरफ़से १९ तोपें सलामीकी सर हुईं. दस्तूरके मुवाफ़िक़ वाइसरॉय लबे फ़र्शतक पेश्वाईको आये, दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और बाईं तरफ़ लॉर्ड मेयो बैठे. महाराणा साहिबकी तरफ़ उनके सर्दार और लाठ साहिबकी तरफ़ अंग्रेज़ अफ्सर थे. महाराणा साहिबने अंग्रेज़ीमें लाठ साहिबसे बातचीत की, फिर लाठ साहिबने खड़े होकर हीरोंका हार महाराणा साहिबके गलेमें अपने हाथसे पहिनाया और नीचे लिखा हुआ सामान किश्तियोंमें पेश हुआः-

हार हीरोंका पहिनाया गया १.
सर्पेच हीरोंका १.
रूमाल सियाह रंगका १.
मन्दील अब्बासी १.
जामदानी ७.
चुग़ा १.
गाज सुनहरी १.
दुशाला जोड़ी १.
दुपट्टा बनारसी १.
साटण थान १.
हीरोंके जड़ाऊ कड़े जोड़ी १.
गुलूबन्द पश्मीनेका १.
रूमाल बनारसी १.
चुग़ा सिफ़ेद १.
कमख़ाब ३.
ग़ालीचा १.
पामड़ी ज़र्दोज़ी जोड़े ७.
मलमल ढाकेकी १.
खेस बनारसी जोड़ी १.

बन्दूक़ मए पेटी व औज़ारोंके २. तलवार मए सुनहरी तह्नाल मूनाल १.
ढाल सुनहरी फूलोंकी १. परतला ज़र्दोज़ी १.

घड़ी क्लॉक १. घड़ी जैबी मए ज़ंजीरके १.
गिलास रुपहरी मए ढक्कनके १. गिलास दूसरा मए ढक्कनके १.
गुलाबदानी चांदीकी २. दवातें चांदीकी २.

फिर फ़ॉरिन् सेक्रेटरीने लाठ साहिबका हाथ लगवाकर महाराणा साहिबके सर्दारोंको मोतियोंकी माला पहिनाई और नीचे लिखे खिल्अत दिये:-

बेदलाके राव बख़्तसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. गुलूबन्द १.
डोरिया थान १. दुपट्टा १. पघड़ी १. गिलास १.

देलवाड़ाके राजरणा फ़त्हसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. रूमाल १ सियाह.
गाज १. कम्ख़ाब १. दुपट्टा १. पघड़ी १.
मलमल १. डोरिया १. गुलूबन्द १. घड़ी १.

कान्होड़के रावत् उम्मेदसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. रूमाल १.
दुपट्टा १. गाज १. पामड़ी सिफ़ेद १. मलमल १.
जामदानी १. कम्ख़ाब १. गुलूबन्द १. गिलास चांदीका ढक्कनवाला १.
रकाबी चांदीकी १.

पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. गुलूबन्द १. डोरिया थान १.
दुपट्टा १. दुशाला १. पघड़ी १. गिलास चांदीका १.

आसींदके रावत् खुमाणसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. रूमाल १.
जामदानी १. मलमल १. पघड़ी १. रकाबी चांदीकी १.
गिलास चांदीका १.

महाराज गजसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला १. दुपट्टा १. डोरिया १.
पघड़ी १. मलमल १. दूरबीन दोचश्मी १.

महाराज सूरतसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. पघड़ी १. डोरिया १. दुशाला १.
दुपट्टा १. जामदानी १. दूर्बीन १.

महाराज सोहनसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. दुशाला १. पघड़ी १. जामदानी १.
मलमल १. दुपट्टा १. दूर्बीन दोचश्मी १.

महता गोकुलचन्दको

मोतियोंकी कंठी १. दुशाला जोड़ी १. पघड़ी सिफ़ेद १. जामदानी १.
मलमल १. दुपट्टा १. घड़ी १.

फिर दस्तूरी बातें होकर महाराणा साहिबको लॉर्ड मेयोने और सर्दारोंको फ़ॉरिन सेक्रेटरीने इत्र व पान दिया; इसके बाद लबे फ़र्शतक लॉर्ड साहिब और जो अंग्रेज़ लोग पेश्वाईको आये थे वे कैम्पके बाहिरतक पहुंचा गये, शाही तोपखानहसे सलामीके फ़ाइर बदस्तूर सर हुए. इसी तरह महाराणा साहिबके बाद जोधपुर, बूंदी, और कोटा वग़ैरह रियासतोंके राजा लोगोंसे हर एककी इ़ज़्ज़तके मुवाफ़िक़ जुदी जुदी मुलाक़ात हुई.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रजब = ई० ता० २२ ऑक्टोबर] को क़रीब दस बजे आम दर्बार हुआ. महाराणा साहिब मए ऊपर लिखे हुए ९ सर्दारोंके शाही डेरोंमें तश्रीफ़ लेगये, १९ तोपकी सलामी सर हुई. इसी तरह मौजूदह राजा लोग अपनी अपनी इ़ज़्ज़तके मुवाफ़िक़ दर्बारके डेरोंमें आये. गवर्नर जेनरलकी कुर्सीके बाईं तरफ़ अव्वल नशिस्तपर महाराणा साहिबकी कुर्सी और उनके नीचे पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की कुर्सी थी. इसी तरह सब राजा लोगोंके नीचे एक एक पोलिटिकल एजेण्टकी कुर्सी, और अपने अपने मालिककी पीठपर उनके सर्दारोंकी कुर्सियां लगाई गईं, और लाठ साहिबके दाहिनी तरफ़ अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी लाइन थी. सब लोगोंके जमा होने बाद लॉर्ड मेयो दर्बारके स्थानमें आये और दस्तूरके मुवाफ़िक़ दर्बार हुआ. इस दर्बारमें सिर्फ़ जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह नहीं आये, जिनका हाल हम आगे लिखेंगे. बाद इसके लाठ साहिब उठकर अपने बंगलेमें चलेगये. फिर राजा लोग भी अपने अपने डेरोंको सिधारे. हरएक की रवानगीके वक़्त शाही तोपख़ानहसे बदस्तूर सलामी सर हुई. शामके वक़्त लाठ साहिब महाराणा साहिबके डेरोंमें तश्रीफ़ लाये, उनको लेनेके लिये बेदलाका राव बख़्तसिंह, देलवाड़ाका राजरणा फ़त्हसिंह, और महता गोकुलचन्द गये. लॉर्ड मेयो मए अंग्रेज़ अफ़्सरोंके हाथियोंपर सवार हो थोड़ासा दिन बाक़ी रहे महाराणा

साहिबके लश्करमें आये, और हाथीपरसे नीचे उतरकर पैदल चल बड़ी नर्मीके साथ ड्योढ़ी उतार महाराणा साहिबको सलाम किया. महाराणा साहिबने भी लबे फ़र्शतक पेश्वाई करके सलाम लिया और मिज़ाजकी ख़ुशी पूछी, फिर लॉर्ड साहिबके हाथपर अपना हाथ रखकर कुर्सियोंपर तश्रीफ़ ले गये. दाहिनी तरफ़ चांदीकी कुर्सीपर लॉर्ड मेयो और दूसरी कुर्सियोंपर उनके अफ्सर और बाईं तरफ़ वैसीही कुर्सीपर महाराणा साहिब और सादी कुर्सियोंपर उनके सर्दार बैठे; महाराणा साहिब अंग्रेज़ीमें लॉर्ड मेयोसे बात चीत करते रहे. लॉर्ड मेयोकी बातोंका सिद्धान्त यह था, कि अजमेरमें मेरा आना ख़ास आपकी मुलाक़ातके लिये हुआ है. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने जो इस दर्बारमें मौजूद था, आंखोंसे देखा है, कि लॉर्ड मेयो और महाराणा साहिबकी मुहब्बत उनके चिहरोंपर झलक रही थी, फिर पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ कर्नेल् निक्सनने एक ख़िल्अत हाथमें ली और बेदलाके राव बख़्तसिंहसे लेकर कुल सर्दारों व हम लोगोंसे एक एक अश्रफ़ी नज़ कराई. लॉर्ड साहिब हरएकका नज़्रानह सिर झुका झुका हाथसे छूछूकर मुआफ़ करते गये. उस वक्त उनकी मुहब्बतका बर्ताव हम लोगोंके साथ ऐसा मालूम होता था, कि मानो हमेशह उनके पास रहते हों. फिर दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. महाराणा साहिबका हाथ लाट साहिब अपने हाथपर रख लबे फ़र्शतक पहुंचे और बड़ी मुहब्बतके साथ एक दूसरेसे जुदा हुए. महाराणा शम्भुसिंह साहिबका ऐसा उत्तम स्वभाव था, कि जो शख़्स एक दफ़ा उनसे मिला वह ज़िन्दगीतक नहीं भूला; लेकिन् लॉर्ड मेयोका अख़्लाक़ भी उन्हींके मुवाफ़िक़ था. फिर हाथीपर सवार होकर लॉर्ड मेयो अलावह महाराजा जोधपुरके सब राजा लोगोंसे मुलाक़ात करनेको गये. इसी दिन क़रीब साढ़ेदस बजे रातके अचानक सिर्फ़ तीन चार ख़ास्गी आदमियोंके जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह साहिब महाराणा साहिबके डेरेमें आये. महाराणा साहिब भी ख़ानगीमें बेतकल्लुफ़ बैठे थे, डेरेसे बाहिर दौड़कर उनको अन्दर लेआये और एक पलंगपर दोनों बैठकर बात करने लगे. महाराजा साहिबने कहा, कि आज तुमके आम दर्बारमें मेरा जाना न हुआ, वह आपसे नीचे बैठनेका सबब नहीं था, सिर्फ़ मेरे और आपके बीचमें पोलिटिकल एजेन्टका बैठना मैं अपनी हतक ख़याल करता हूं. अगर आपने कुछ और ढंगसे सुना हो, तो हर्गिज़ न मानना चाहिये, और मैं भी इसीलिये आया हूं, कि आपके और मेरे बीचमें कोई रंज न डालदेवे. फिर दोनों तरफ़से शराबके पियाले लेकर दोनों अमीर बग्घीमें सवार हो जोधपुरके डेरोंमें तश्रीफ़ लेगये. दोनों तरफ़से बड़ी मुहब्बतकी बातें होनेके बाद क़रीब एक बजे रातको महाराणा साहिब वापस अपने डेरोंमें दाख़िल हुए. यह मुलाक़ात दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीको दूर करनेका पैग़ाम

थी, लेकिन् अफ़्सोस है, कि थोड़ेही अरसहके बाद महाराजा साहिब जोधपुरका इन्तिक़ाल होगया, जिससे दोनों अधीशोंकी दोबारह मुलाक़ात न होने पाई.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रजब = ई० ता० २४ ऑक्टोबर] को लॉर्ड मेयो अजमेरसे जयपुरकी तरफ़ रवानह होगये, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ रजब = ई० ता० २५ ऑक्टोबर] को कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मुलाक़ात करनेको महाराणा साहिबके डेरेपर आये. उनके बड़े पुत्र शार्दूलसिंह और दूसरे जवानसिंह भी साथ थे. महाराणा साहिब लबे फ़र्शतक पेश्वाई करके उन्हें ले आये, और अपने बाईं तरफ़ गद्दीपर बिठाया, और उनके दोनों पुत्र गद्दीके नीचे बैठे (१). कृष्णगढ़के कुल सर्दारोंने महाराणा साहिबको नज़ें दिखलाईं. बाद इसके दर्बार बर्ख़ास्त होकर आधे फ़र्शतक महाराणा साहिबने उनको वापस पहुंचाया. फिर शामके वक्त महाराणा साहिब भी कृष्णगढ़ महाराजके डेरेपर तश्रीफ़ लेगये. महाराणा साहिब ड्योढ़ीपर सवारीसे उतरे, जहांतक महाराजा पेश्वाईको आये, और ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ गद्दीपर बैठे. फिर महाराणा साहिबको कृष्णगढ़ महाराजा के सब सर्दारोंने नज़ें दिखलाईं. इसके बाद ड्योढ़ीतक जहां महाराणा साहिब सवार हुए महाराजा पहुंचानेको आये. फिर सवार होकर महाराणा साहिब अपने डेरोंमें आये.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ शअ्बान = ई०ता० २६ ऑक्टो-बर] को तीसरे पहरके वक्त एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्रूक और पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् निक्सन महाराणा साहिबके डेरोंमें आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात करके वापस गये. फिर शामको कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह ख़ानगी मुलाक़ातको मए अपने दोनों बेटोंके महाराणा साहिबके डेरोंपर आये, जहां शामका खाना और शराब पीना वग़ैरह महाराणा साहिबके साथ करके वापस गये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० २ शअ्बान = ई०ता० २७ ऑक्टोबर] को जयपुरके महाराजा रामसिंहकी तरफ़से गीजगढ़का चांपावत जुझारसिंह और एक अहलकार गद्दीनशीनीका दस्तूर लाये, वह पेश हुआ जिसमें १ हाथी, ४ घोड़े और ख़िल्अत वग़ैरह दस्तूरके मुवाफ़िक़ चीज़ें थीं. फिर एक बजे दिनके महाराणा साहिबने बग्घी सवार होकर तारघर व गवर्मेण्ट स्कूलको मुलाहज़ह फ़र्माया, और स्कूलके लड़कोंको इन्आम देनेके बाद एजेण्ट गवर्नर जेनरलसे उनके बंगलेपर मुलाक़ात करके वापस डेरोंमें तश्रीफ़

(१) कृष्णगढ़ महाराजाके ज्येष्ठ पुत्र महाराणा साहिबकी गद्दीपर बैठ सक्ते हैं, लेकिन् क़ाइदहके मुवाफ़िक़ जब महाराजाके साथ होते हैं तब नीचे बैठते हैं.

लाये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० ३ शश्र्बान = .ई० ता० २८ ऑक्टोबर] को पुष्कर पधारे, वहां स्नान व चांदीका तुलादान, गजदान व अश्वदान करके वापस अजमेर डेरोंमें पधारगये; फिर अजमेरसे रवानह होकर नसीराबाद दाख़िल हुए, छावनीसे १९ तोपोंकी सलामी सर हुई. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शश्र्बान = .ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबने पाटणके राजराणा पृथ्वीसिंहको अपनी गद्दीपर बैठनेकी इ़ज़्ज़त दी. यह रियासत कोटाके दीवान और कुछ दिनोंतक मेवाड़के जागीरदार रहनेवाले झाला ज़ालिमसिंहकी औलादके क़बज़हमें है, जिसको विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = .ई० १८३८] में गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने कोटासे अलह्दह करके जुदा राज बनादिया. इसवक्त़ कर्नेल् निक्सन पोलिटिकल एजेंएट मेवाड़की कोशिश से यह .इ़ज़्ज़त मिली, वर्नह राजपूतानहके राजाओंने इनको रईसोंमें क़ुबूल नहीं किया था. क़रीब ४॥ बजे शामको राजराणा पृथ्वीसिंह महाराणा साहिबके डेरोंमें आये. महाराणा साहिबने कोटाके बराबर पेशवाई करके उन्हें अपने बाईं तरफ़ गद्दीपर बिठाया, फिर चंवर मोरछल वग़ैरह लवाज़िमह रखनेकी भी इजाज़त दी. बाद इसके इत्र व पान वग़ैरहका दस्तूर करके १ हाथी, २ घोड़े और १३ किश्तियां ख़िल्अत व ज़ेवरकी देकर उन्हें रुख़्सत किया. इसके पीछे महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर राजराणा पृथ्वीसिंहके डेरोंपर तश्रीफ़ लेगये. राजराणा ड्योढ़ी, याने सवारीसे उतरे उस जगहतक पेशवाईको आये, और दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और बाईं तरफ़ राजराणा एक गद्दीपर बैठे. राजराणाकी तरफ़से एक हाथी मए चांदीके हौदेके और २ घोड़े, तलवार, ढाल, पेशक़ब्ज़, मोतियोंकी माला, सर्पेच, और ख़िल्अ़तकी १३ किश्तियां पेश हुईं. फिर इत्र पान होकर राजराणाने महाराणा साहिबको ड्योढ़ी, याने सवार हुए वहां तक पहुंचाया. वहांसे बग्घी सवार होकर डेरोंमें तश्रीफ़ लाये. विक्रमी १९२७ कार्तिक शुक्ल ६ [हि० १२८७ ता० ५ शश्र्बान = .ई० १८७० ता० ३० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब भिणाय मक़ामपर वहांके राजा मंगलसिंहके मिह्मान हुए. उसने अदब आदाबके अ़लावह फ़ौज वग़ैरहकी दावत अच्छी तरहसे की. दूसरे दिन बांदनवाड़े मक़ाम हुआ और वहांसे बरल व रामपुरामें मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ता० ९ शश्र्बान = .ई० ता० ३ नोवेम्बर] को बदनोर पहुंचे. वहांके ठाकुर प्रतापसिंहको निहायत खुशी हुई और उसने फ़ौजको अच्छी तरह दावत दी. दूसरे रोज़ भी वहीं मक़ाम रहा. ठाकुर प्रतापसिंह अपने मालिकके पधारनेसे ऐसा खुश हुआ, कि मानो अपनी ज़िन्दगीभरकी नौकरीका .एवज़ भरपाया. एक हाथी, दो घोड़े और उ़म्दह पोशाक व ज़ेवर महाराणा साहिबके नज़्र करके चारणों और पासबानों

को भी क़ीमती ख़िल्अ़त दिये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल द्वितीय १२ [हि० ता० ११ शअ़्वान = .ई० ता० ५ नोवेम्बर] को वहांसे आसींद पहुंचे. रावत् खुमाणसिंहकी तरफ़से फ़ौजको दावत दीगई, और दूसरे रोज़ भी वहीं मक़ाम रहा, चारणों और पासवानोंको खुमाणसिंहकी तरफ़से ख़िल्अ़त मिले. दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़, निछावर और बख़्शिश होकर विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १३ शअ़्वान = ई० ता० ७ नोवेम्बर] को बेमाली मक़ामपर पहुंचे, जहां रावत् लक्ष्मणसिंहकी तरफ़से फ़ौजकी दावत हुई, और वहांसे विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० ता० १५ शअ़्वान = ई० ता० ९ नोवेम्बर] को रवानगी होकर मांडल, भीलवाड़ा, हमीरगढ़ और गंगारमें मक़ाम करके विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ता० १९ शअ़्वान = ई० ता० १३ नोवेम्बर] को चित्तौड़की तलहटीमें पधार गये. इस सफ़रमें जो सर्दार व पासवान महाराणा साहिबके साथ थे उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:–

सर्दार.

सादड़ीका राज शिवसिंह.	बेदलाका राव बख़्तसिंह.
देवगढ़का रावत् कृष्णसिंह.	बेगमका रावत् सवाई मेघसिंह.
देलवाड़ाका राज फ़त्हसिंह.	आमेटका रावत् चत्रसिंह.
मेजाका रावत् अमरसिंह (१).	कान्होड़का रावत् उम्मेदसिंह.
बदनोरका ठाकुर प्रतापसिंह.	भैसरोड़का रावत् भीमसिंह.
बानसीका रावत् मानसिंह.	कुरावड़का रावत् रत्नसिंह.
पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह.	आसींदका रावत् खुमाणसिंह.
शिवरतीका महाराज काका गजसिंह मए अपने भाई फ़त्हसिंह(२)के.	करजालीका महाराज काका सूरतसिंह.
बागोरका महाराज भाई सोहनसिंह(३).	हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह.
भदेसरका रावत् भोपालसिंह.	बोहेड़ाका रावत् अदोतसिंह.
बेमालीका रावत् लक्ष्मणसिंह.	लावाका ठाकुर (४) मनोहरसिंह.
रामपुराका राठौड़ संग्रामसिंह.	ख़ेराबादका बाबा जोधसिंह मए अपने पुत्र नाहरसिंहके.
महुवाका बाबा ग्यानसिंह.	बनेड़ाका राजा गोविन्दसिंह.

(१) इस समयतक इनको मेजा नहीं मिला था.
(२) यह अब श्रीमान् मेदपाटेश्वर हैं.
(३) पीछेसे यह बागोरकी गद्दीसे ख़ारिज करदिये गये.
(४) इसको ठाकुरका पद पीछेसे मिला है.

शाहपुराका राजाधिराज नाहरसिंह.
केलवाका राठौड़ जोनाड़सिंह.
लूसाणीका चूंडावत जशवन्तसिंह.
नेतावलका काका समन्दरसिंह.
कोठारियाके रावत्का पुत्र केसरीसिंह.
कान्होड़के रावत्का पुत्र नाहरसिंह.
नीमच ज़िले दारूका रावत् भवानीसिंह.
रूपनगरका सोलंखी वैरीशाल.
लाळूड़ाका राठौड़ जैतसिंह.
पहूनाका राणावत् माधवसिंह.
लांबाका राठौड़ बाघसिंह.
जरखाणाके बाबा जशवन्तसिंहका बेटा मदनसिंह.
फलास्याका गौड़ रघुबरसिंह.
आर्ज्याका चावड़ा प्रतापसिंह.
शिवपुरका राठौड़ रायसिंह (१).
जीवाणाका राणावत हमीरसिंह.
गोपालपुराका राणावत गोपालसिंह.
सुवावाका चूंडावत कबीरसिंह.
चूंडावत दौलतसिंह.
आवेसरका राठौड़ भोपालसिंह.
प्रतापगढ़ ज़िले अरणोदका रघुनाथसिंह (२).

ताणाका राज देवीसिंह.
करेड़ाका राजा बहादुर भवानीसिंह.
नीमच ज़िले अठाणाका रावत् चत्रसिंह.
बेदलाके रावका पुत्र तख़्तसिंह.
गोगूंदाके राजका पुत्र अजयसिंह.
भींडरके महाराजका पुत्र मदनसिंह.
बंबोराका रावत् प्रतापसिंह.
काकरवाका राणावत उदयसिंह.
नीमच ज़िले सरवाणियाका बाबा माधवसिंह.
दौलतगढ़का चूंडावत नवलसिंह.
ग्यानगढ़का रावत् रघुनाथसिंह.
कोशीथलके जागीरदारका बेटा.
चन्दसिंह मए अपने बेटे गोविन्दसिंहके.
तुरक्याका राणावत पृथ्वीसिंह.
मदाराका शक्तावत मेघसिंह मए अपने बेटेके.
गंधेरका गोपालसिंह.
कान्हावत चत्रसिंह.
राणावत चत्रसिंह.
चहुवाण लछमणसिंह.

चारण.

नीमोदाका आढा रामलाल.
ढोकलियाका (कविराजा) दधिवाड़िया श्यामलदास (३).

---

(१) उसवक्त इनको शिवपुर नहीं मिला था.
(२) यह अब प्रतापगढ़के वर्तमान महारावत हैं.
(३) उस वक्ततक कविराजाका ख़िताब नहीं मिला था.

खेमपुरका दधिवाड़िया औनाड़सिंह. भाट बख़्तावर.
पाणेड़के बारहट दूलहसिंहका बेटा चतुर्भुज.

अह्लकार, पासवान व ढींकड़िया वग़ैरह.

(ब्राह्मण).

ब्रह्मचारी मथुरादास.
पुरोहित श्रीलाल.
भट संपतराम मए अपने बेटेके.
ख़वास विश्वनाथ मए अपने
पुत्र हीरालाल व शिवराजके.
पंडे किशोरराय.
पाणेरी रत्नलाल.
पाणेरी गिरधरलाल.
दुब्वे भानुदत्त.
दुब्वे श्यामदत्त.
वैद्य नारायण भट मए अपने
पुत्र गोवर्द्धनके.
पुरोहित ऊँकारनाथ.
पुरोहित सवाईलाल.
कर्मान्त्री अमृतराम.
ज्योतिषी जीवणराम.
पुरोहित अक्षयनाथ.
पाणेरी शिवलाल.
पुरोहित सुन्दरनाथ मए अपने
पुत्र श्यामनाथके.
भटमेवाड़ा काशीदत्त.
भट जगन्दत्त.
पाणेरी गोपाल.

(धायभाई व ढींकड़िया).

धव्वा बदनमल्ल.
रंगलाल.
ढींकड़िया तेजराम मए अपने
बेटे नाथूलाल व जगन्नाथके.
धायभाई एका.
ढींकड़िया राधाकृष्ण मए अपने
बेटे श्रीकृष्णके.
पड़ियार रत्ताका बेटा.
धायभाई गणेशलाल.
ऊमा.
ढींकड़िया उदयराम मए अपने बेटे
गणेशलालके.
ढींकड़िया चतुर्भुज.
धायभाई अजीतसिंहका बेटा.
ढींकड़िया गोपाल.

(कायस्थ).

पंचोली प्राणनाथ.
पंचोली अक्षयनाथ.
महासाणी रत्नलाल मए अपने बेटे
मोतीलालके.

महासाणी ब्रजलाल.
महासाणी दौलतसिंह.
सहीहवाला रामसिंह.
पंचोली फूलनाथ.
मुन्शी गुल्लू.
मुन्शी धनलाल.
मुन्शी मोड़ीराम.
राय विनोदीलाल.
पंचोली अक्षयचन्द.
पंचोली मथुरादास.
पंचोली गुमानसिंह.
पंचोली ज़ालिमचन्द.
पंचोली श्यामनाथ.
पंचोली भोजनाथ मए अपने बेटे जोरावर नाथके.
सहीहवाला बख्तावरसिंह.
सहीहवाला अर्जुनसिंह मए अपने बेटे गुमानसिंहके.
पंचोली कुन्दनलाल.
पंचोली ॐकारनाथ.
पंचोली नीमनाथ.
पंचोली गुमानचन्द.
पंचोली दलीचन्द.

(महाजन).

महता गोकुलचन्द मए अपने बेटे विट्ठलदासके.
कोठारी छगनलाल.
महता गोपालदास.
महता प्यारचन्द.
महता माधवसिंह.
महता फूलचन्द.
महता रघुनाथसिंहका पुत्र माधवसिंह.
कोठारी केसरीसिंह.
महता (राय) पन्नालाल (१).
महता तख़्तसिंह.
महता रघुनाथसिंह.
भंडारी शिवलाल.
कालू खिमेसरा.
चौधरी सर्दारसिंह.
साह ज़ोरावरसिंह सूराणा.
वेणीराम वसर.

जेठी बड़ा गणेश.
कोठारी नाथू चाबुकसवार.
जेठी छोटा गणेश.

(मुसल्मान).

मुल्ला किफ़ायतअली.

---

(१) इनको राय व सी० आइ० ई० का ख़िताब पीछेसे मिला है.

यह फ़िहरिस्त हाज़िरीके दारोगह मुन्शी मोडीरामके काग़ज़ोंसे और पुरोहित पद्मनाथकी तस्दीक़से लिखीगई है, जिसमें अजमेरके सफ़रमें साथ रहनेवाले तथा ज़नानी सवारीके साथ चित्तौड़के मक़ामपर हाज़िर हुए वे सब लोग शामिल हैं.

चित्तौड़के मकामपर विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ शअ्बान = .ई० ता० १७ नोवेम्बर] को बीकानेरसे महाराणा साहिबका मामा महाराज लालसिंह आया. महाराणा साहिबकी औरस माता बीकानेरी और दोनों महाराणी साहिबा भी चित्तौड़में आगई थीं; और महाराज शक्तिसिंहपर बागोरकी हक़दारीका दावा करनेसे महाराणा साहिब नाराज़ थे उनकी यहां नज़ लीगई. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० ता० ३० शअ्बान = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को चित्तौड़से कूच करके सींगपुर, मातृकुंडियां व खाखलां होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रमज़ान = .ई० ता० २९ नोवेम्बर] को सर्दारगढ़ पहुंचे. ठाकुर मनोहरसिंहने मए ज़नानहके क़िलेमें पधराकर फ़ौज सहित अच्छी तरह मिह्मानी की, और वहांसे विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ६ रमज़ान = .ई० ता० ३० नोवेम्बर] को सियाणे और विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रमज़ान = .ई० ता० १ डिसेम्बर] को गढ़बोर पहुंचे. वहां चारभुजाकी भेट पूजा करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० ता० ९ रमज़ान = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को क़िले कुम्भलगढ़को तशरीफ़ लेगये. क़िलेको मुलाहज़ह करके दूसरे रोज़ वापस गढ़बोर आये; फिर देसूरीकी नालको मुलाहज़ह करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रमज़ान = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को खरणोटे, और वहांसे केलवे मक़ाम करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = ई० ता० ८ डिसेम्बर] को राजनगर पहुंचे, जहां विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १५ रमज़ान = .ई० ता० ९ डिसेम्बर] को राजसमुद्र तालाबकी पालपर जन्मोत्सवका जल्सह हुआ. फिर कांकड़ोलीमें द्वारिकाधीशके दर्शन और तालाब वगैरहकी सैर करके विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रमज़ान = .ई० ता० १३ डिसेम्बर] को नाथद्वारामें मक़ाम हुआ. यहांपर गोवर्द्धननाथकी भेट पूजा हुई, और विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ रमज़ान = .ई० ता० १६ डिसेम्बर] को कोठारिये और दूसरे दिन श्री एकलिंगेश्वर होकर विक्रमी पौष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रमज़ान = .ई० ता० १८ डिसेम्बर] को गोवर्द्धनविलास पधारे. क़रीब एक महीनातक ज्योतिषी लोगोंकी रोक टोकसे गोवर्द्धनविलास में रहना हुआ. इन लोगोंकी हरवक़्की रोक टोकसे महाराणा साहिबने दिक़ होकर मुझ (कविराजा श्यामलदास) को आज्ञा करके ज्योतिषके फलित ग्रन्थोंके

अनुसार शिवालिखितका पाना बनवाकर अपने लिखनेकी पेटीमें रखलिया, और उसीके अनुसार बर्ताव करते रहे, लेकिन् फिर भी इन लोगोंकी सिद्धाईपर अमल करनाही पड़ता था. विक्रमी माघ कृष्ण १० [हि० ता० २४ शव्वाल = .ई० १८७१ ता० १६ जैन्युअरी] को ज्योतिषियोंके कथनानुसार महाराणा साहिबने राजधानी उदयपुर के महलोंमें प्रवेश किया.

विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ता० २ ज़िल्हिज = .ई० ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को कोटाके महाराव शत्रुशाल शादी करनेको ईडर जातेवक़ उदयपुरमें आये. महाराणा साहिबने मए पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिब व दूसरे सर्दारोंके दो मीलतक पेश्वाई की. महाराव साहिबने दोनों हाथसे और महाराणा साहिबने एक हाथसे सलाम किया, फिर बग़लगीर हुए. इसके बाद महाराव शत्रुशाल पोलिटिकल एजेएटसे दस्तापोशी करके महाराणा साहिबके सर्दारोंसे मिले. बाद इसके महाराणा साहिब तो महलोंमें पधारे और महाराव साहिब अपने डेरोंमें पहुंचे; उसवक़ उदयपुरके तोपख़ानहसे १७ तोपकी सलामी सर हुई. महाराणा साहिबकी तरफ़से दस्तूरके मुवाफ़िक़ मिह्मानदारी [illegible]. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ४ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = .ई० ता० २३ फ़ेब्रुअरी] के दिन शामके वक्त महाराव शत्रुशाल महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको महलोंमें आये, और विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्हिज = ई० ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा साहिब उनके डेरोंमें पधारे और उसी दिन कूच करके महाराव साहिब ईडरकी तरफ़ गये. महाराव साहिबके लिये फ़ौज समेत खाने पीनेकी सामग्री महाराणा साहिबके कोठारसे दिलाई गई. यह महाराव साहिब हरवक्त शराबके नशेमें चूर रहते थे.

इन दिनोंमें कोठारी केसरीसिंहकी तरफ़ महाराणा साहिबकी मिहर्बानी ज़ियादह बढ़ती हुई देखकर चन्द आदमियोंने अधीशको यह लालच दिखाया, कि हुज़ूरका इरादह तीर्थ यात्रा करनेका है और राज्यकी आमदनी व ख़र्च बराबर है, इसलिये अह्लकारोंसे दश पन्द्रह लाख रुपया एकट्ठा करलिया जावे. इसपर पेश्तर कोठारी केसरीसिंह और छगनलालसे तीन लाख रुपयोंका रुक़ा लिखवाया गया, और महता पन्नालालसे १२००००, का, इसी तरह दूसरे आदमियोंकी तरफ़ भी तज्वीज़ होरही थी. एक दिन मैं (कविराजा श्यामलदास) ने गुलाब बाग़में एक हिन्दी कविताकी किताब महाराणा साहिबके पास इस मत्लबसे पेश की, कि इसमें कवित्व अच्छे हैं. महाराणा साहिबको हिन्दी शाइरीका बड़ा शौक़ था. मैंने उस किताबमें एक पत्र इस मज़्मूनका लिखकर रखदिया था, कि कुल रियासती आदमियोंसे एक साथ रुपया वुसूल करनेमें वायवैला

और हुजूरकी बड़ी बदनामीका बाइस होगा. मुझको एक तरफ़ लेजाकर फ़र्माया, कि तुम मौक़ेपर ऐसी अ़र्ज़ बेख़ौफ़ करदिया करो. दूसरे ही रोज़ पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् निक्सनने भी वैसीही सलाह दी, जैसी मैंने अ़र्ज़ की थी. वह रुपया वुसूल करने का काम बन्द कियागया, और थोड़े ही अ़र्सेके बाद कोठारी केसरीसिंह व छगनलाल को १ लाख और महता पन्नालालको अस्सी हज़ार रुपये छोड़े गये, और केसरीसिंहकी तरफ़ दिन बदिन मिहर्बानी बढ़ने लगी.

विक्रमी १९२८ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० १२८८ ता० २२ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० ११ जून] को कोठारी केसरीसिंहकी निगरानीमें कोठारी छगनलाल, महता गोपालदास, साह ज़ोरावरसिंह सूराणा, महता ज़ालिमसिंह, कायस्थ राय सोहनलाल, कायस्थ मथुरादास, ढींकड़िया उदयराम और भंडारी केवलराम इन आठ आदमियोंके सुपुर्द मुल्की व कारख़ाने-जातका काम कियागया. इस समयतक महकमह खासका काम पूरी हालतपर नहीं पहुंचा था, लेकिन् महता पन्नालालकी होश्यारीसे दिन व दिन तरक़्क़ीपर था, और ज़बानी कार्रवाई कमज़ोर होती जाती थी. इसी वक्तसे इन्तिज़ामी हालतका प्रारम्भ समझना चाहिये. महाराणा साहिबकी दिली ख्वाहिश थी, कि मेवाड़में अनाज बांटलेने (लाटा या कूंता) का रवाज बन्द होजावे और किसानोंसे ठेकाबन्दी होकर नक्द रुपया मुक़र्रर करदियाजावे, लेकिन् यह काम कुल रियासती अह्लकारोंके मन्शाके विरुद्ध था, इसलिये महाराणा साहिबने अपना दिली मन्शा कोठारी केसरीसिंहसे जाहिर करके यह काम उसके सुपुर्द किया. उक्त कोठारीने बड़ी तन्दिही और अ़क़्लमन्दीके साथ गुज़रे हुए दस वर्षका औसत निकालकर कुल मेवाड़में ठेका बांधदिया. अव्वल तो कोठारी केसरीसिंह तजर्बहकार, ख़ैरख़्वाह, रोबदार और अ़क़्लमन्द आदमी था, दूसरे महकमह ख़ासका अफ्सर उसके भाईका दामाद महता पन्नालाल और कोठारी छगनलाल वग़ैरह उसके बनाये हुए अह्लकार मददगार होगये, जिससे यह काम अच्छी तरह चलगया, लेकिन् ऐसे आदमीकी कारगुज़ारीमें बखेड़ा डालने-वाले आदमी भी मौजूद थे, तोभी उसने ठेकेके बन्दोबस्तमें ख़लल न आने दिया, मालिक की मिहर्बानी उसके नेक चाल चलनके सबब बढ़ती गई, परन्तु ईश्वरने उसकी ज़िन्दगी इसी विक्रमी के फाल्गुन कृष्ण ३ [हि० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १८७२ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] में ख़त्म करदी. उसका बांधा हुआ माली बन्दोबस्त उसकी अ़दम मौजूदगीमें भी ४ वर्षतक चलतारहा. उसके बाद मालके बन्दोबस्तके मददगार महता राय पन्नालाल व कोठारी छगनलाल थे. अफ़ीमका मह्सूल और निकास भी पेश्तर बेतर्तीब व पुराने ढंगपर था, जिसकी दुरुस्ती पोलिटिकल एजेएटकी सलाहसे महाराणा साहिबने उदयपुरमें कांटा क़ाइम करके की. कुल मेवाड़की अफ़ीम उदयपुरमें होकर खैरवाड़ाके रास्ते अह्मदाबादको

जानेलगी. इस बन्दोबस्तमें महता पन्नालाल और ओपिअम एजेएट इंगल्स साहिबने अच्छी कोशिश की. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १८७१ ता० २५ जून] को शाहपुराके रामस्नेही साधु महन्त हिम्मतराम आये, जिनको महाराणा साहिब ग्राम भुवाणातक पेश्वाई करके उदयपुरमें लेआये, वह नवलखा बागके महलोंमें ठहरे, और इन्हीं दिनोंमें महाराणा साहिबके हक़ीक़ी मामा लालसिंह और उनके पुत्र डूंगरसिंह रुख़सत होकर बीकानेरकी तरफ़ रवानह हुए. महाराणा साहिबका श्वशुर बांसवाड़ा के ज़िले गढ़ीका जागीरदार चहुवान रत्नसिंह जो कुछ अ़रसहसे उदयपुरमें आया हुआ था, उसने विक्रमी प्रथम भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० ता० २१ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० ९ ऑगस्ट] को महाराणा साहिबको दावत दी. महाराणा साहिबने भी उसे रावकी पदवी, ताज़ीम, बांहपसाव और रुख़्सती पानका बीड़ा इनायत करके उसकी इ़ज़्ज़त बढ़ाई, जो पहिले गढ़ीवालोंको मुयस्सर नहीं हुई थी. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ [हि० ता० १६ शअ़्बान = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब मए कुल ज़नानी सवारी और सर्दार व पासबानोंके धव्वा बदनमल्लकी हवेलीपर मिह्मान हुए. यह जल्सह बड़ी धूम धामके साथ हुआ, और महाराणा साहिब पांच दिनतक उसके मकानपर रहे. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० ९ रमज़ान = ई० ता० २३ नोवेम्बर] को शाहपुराके राजाधिराज नाहरसिंह लक्ष्मणसिंहोतके तलवार बंधी. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० ता० २० रमज़ान = ई० ता० ४ डिसेम्बर] को एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्रूक साहिब उदयपुर आये, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रमज़ान = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को शामके वक्त महलोंके बड़े चौकमें आम दर्बार हुआ. महाराणा साहिब चांदीके सुनहरी कामवाले बड़े सिंहासनपर और उनकी दाहिनी तरफ़ कर्नेल् ब्रूक वग़ैरह २० अंग्रेज़, जिनके बाद ग़ैर रियासतोंके वकील, और बाईं तरफ़ मेवाड़के सर्दार और सामने भी मेवाड़के बड़े सर्दारोंमेंसे और पीछेको बड़े बड़े अह्लकार कुर्सियोंपर मौजूद थे. फिर कर्नेल् ब्रूकने अव्वल दरजहका ग्रेण्ड कमाण्डर ऑफ़ दि स्टार ऑफ़ इंडियाका तमग़ह व गलेका हार वग़ैरह पहिनाकर कपड़ेके झंडेमें महाराणा साहिबको वह चिन्ह दिया, कि जिसमें एक तरफ़ क्षत्री और एक तरफ़ भील जिनके बीचमें सूर्यके आकारके ऊपर एकलिंगेश्वरकी मूर्ति वग़ैरह और नीचे दोहाके दो पद (जो दृढ़ रक्खे धर्मको तिहिं रक्खे करतार) थे. इस के बाद लॉर्ड मेयो गवर्नर जेनरल हिन्दके ख़रीतेका तर्जमह पढ़ा गया, फिर दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. इस तमग़ेके बारेमें चन्द महीनों पहिले ख़ानगी तौरपर बहुत कुछ बह्स हुई थी, और महाराणा साहिबकी तरफ़से पोलिटिकल एजेएटकी मारिफ़त उ़ज़ हुआ था, कि

इस रियासतके मालिक ज़मानह क़दीमसे हिन्दवा सूरज कहलाते हैं, जिनको स्टारकी ज़ुरूरत नहीं है. हम विदून स्टार मिलनेके ही गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी मिहर्बानियोंके शुक्रगुज़ार हैं, जिसपर लॉर्ड मेयोकी तरफ़से जवाब मिला, कि हमारे मुल्कमें बराबरी वाले बादशाह बादशाहोंके लिये तमग़ह भेजते हैं, और वे उसको बड़ी इ़ज़्ज़तका बाइस समझते हैं, इसलिये आपको भी दूसरा ख़याल न करना चाहिये. तब महाराणा साहिबने कहा, कि अगर गवर्मेण्टकी यही मर्ज़ी है, तो हमारे लिये तमग़ह उदयपुरमें भेजदेवें. लॉर्ड मेयोने यह बात कुबूल करके कर्नेल् ब्रूकके साथ यह तमग़ह भेजदिया.

विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १ [हि० ता० १५ ज़िल्हिज = ई० १८७२ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को शिवरतीके महाराज गजसिंहकी बाईका विवाह हुआ, और महाराणा साहिब उनकी हवेलीपर हथलेवा छुड़ानेके लिये गये. विक्रमी १९२९ वैशाख शुक्ल ९ [हि० १२८९ ता० ८ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० १७ मई] को लक्षचण्डीकी समाप्ति नये महलोंमें हुई. इस कार्यमें ब्रह्मचारी मथुरादासकी सलाहसे हज़ारों रुपया ख़र्च हुआ. अख़ीरमें दूसरे मुख़ालिफ़ ब्राह्मणोंने मथुरादासपर यह दावा किया, कि यह पूर्णाहुती और कुण्ड व मण्डप शास्त्रके अनुसार नहीं हुए, इसलिये शान्ति होनी चाहिये. इस बह्समें मुझ (कविराजा श्यामलदास) को महाराणा साहिबने पंच ठहराया. आख़रकार कुण्डके बनानेमें ग़लती पाई गई. महाराणा साहिबने ख़ानगी तौरपर शान्ति करवाई. इसी तरह मथुरादासने कर्मान्तरी अमृतराम वग़ैरहका कुसूर दिखलानेके लिये भाद्रपद शुक्ल १५ के दिन महालय श्राद्ध करना अनुचित बतलाया. दोनों तरफ़से सुबूत पेश हुए, अन्तमें मथुरादासका दावा ख़ारिज रहा. उन दिनों ब्राह्मणोंमें आपसकी असूयाके कारण इस क़िस्मके कई मुक़द्दमे पेश होते थे.

इन्हीं दिनोंमें लांबा और रूपाहेलीका मुक़द्दमह ख़त्म हुआ, जिसका हाल इस-तरहपर है, कि बदनोरके भाइयोंमें रूपाहेली और लांबा दो ठिकाने महाराणा साहिबके जागीरदार हैं. रूपाहेलीके गांव तस्वारिया और लांबाकी सर्हदपर लांबाके जागीरदार बाघसिंहने एक तालाब बनवाकर उसमें पानी लानेको कुछ दूरतक खाई खुदवाई, जिसपर रूपाहेलीवाले जमइ़यत लेकर उस खाईको तोड़ने गये. उधर लांबावाले भी आपहुंचे; लांबाके जागीरदारका बेटा बहादुरसिंह, उसका भाई लक्ष्मणसिंह, हमीरसिंह, और ज़िले अजमेर न्यारांका गौड़ बिड़दसिंह, ४ आदमी मारेगये, और रूपाहेलीकी तरफ़ छोटी रूपाहेलीके जागीरदारका भाई और दूसरे दो आदमी मारेजानेके अ़लावह तरफ़ैनके चन्द आदमी ज़ख़्मी हुए. यह लड़ाई विक्रमी १९१२ [हि० १२७२ = ई० १८५५] में हुई थी. सर्दारोंकी मुख़ालफ़तके सबब इस मुक़द्दमेकी

शिकायत पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् लॉरेन्स साहिबके पास पहुंची. बदनौरका ठाकुर प्रतापसिंह बाघसिंहका मददगार था, उसकी पैरवीसे कर्नेल् लॉरेन्सने दोनों जागीरदारोंको तो यह जवाब दिया, कि इस मुक़द्दमहमें हम दस्तन्दाज़ी नहीं करसके, तुम लोग महाराणा साहिबके पास जाओ; लेकिन् रियासतमें अपनी राय यह लिख भेजी, कि रूपाहेली वालोंकी ज़ियादती है इसलिये गांव तस्वारिया खूनके एवज़ बाघसिंहको दिलाया जावे. यह मुक़द्दमह कई वर्षोंतक चलता रहा. बाद इसके तस्वारिया और लांबाकी सर्हदका मुक़द्दमह तो अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी मारिफ़त तय होगया, लेकिन् मूंडकटीका मुक़द्दमह बाक़ी रहा. बाघसिंहकी तरफ़से पैरवी होती रही. आख़रकार कर्नेल् ब्रूककी सिफ़ारिशसे यह मुक़द्दमह महाराणा साहिबने पंचायतके सुपुर्द किया, जिसमें बेदलाका राव बख़्तसिंह, भींडरके महाराजका पुत्र मदनसिंह, महता ज़ालिमसिंह रामसिंहोत, कोठारी छगनलाल, बख़्शी मथुरादास, और ढींकड़िया उदयराम थे. विक्रमी १९२८ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १२८९ ता० २० मुहर्रम = .ई० १८७२ ता० ३० मार्च] को पंचायतने यह फ़ैसलह किया, कि बन्दूक़ तो पेश्तर लांबाकी तरफ़से चली, लेकिन् तालाबकी खाई तोड़नेमें पेशक़दमी रूपाहेलीकी है, और लांबाके ४ आदमी मुअ़ज़्ज़ज़ मारेगये, इसलिये ग्राम तस्वारिया मूडकटीमें रूपाहेलीसे लांबाको दिलाया जावे. इस फ़ैसलेकी तामीलके लिये महकमहख़ाससे कई ताकीदें हुईं, लेकिन् रूपाहेली वालोंने तामील नहीं की. तब उदयपुरसे दो तोप, भीम पल्टन, स्वरूप पल्टन और शम्भु पल्टनके निशान और रिसालह वगैरह सवार और जहाज़पुर, मांडलगढ़ वगैरहकी सर्कारी जमइयतें मए महता गोकुलचन्दके भेजी गईं, और देवगढ़, बदनौर, आसींद, भैंसरोड़, शाहपुरा, भगवानपुरा, दौलतगढ़ और संग्रामगढ़ वगैरह सर्दारोंकी जमइयतें भी फ़ौजके शामिल हुईं. विक्रमी १९२९ वैशाख शुक्ल ८ [हि० १२८९ ता० ६ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८७२ ता० १५ मई] को महता गोकुलचन्दने फ़ौज लेकर गांव तस्वारियापर क़बज़ह करलिया; चन्द आदमी मुक़ाबलह करनेवाले वहां थे, वे रूपाहेली चलेगये. विक्रमी १९१२ [हि० १२७२ = .ई० १८५५] में लड़ाई हुई, तब रूपाहेलीका जागीरदार सवाईसिंह था, वह महाराणा स्वरूपसिंहके सामने गुज़रगया. उसका बेटा बलवन्तसिंह उ़ज़्र करता रहा, वह भी विक्रमी १९२८ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२८८ ता० २६ रजब = .ई० १८७१ ता० १२ ऑक्टोबर] को मरगया, उसका एक कम उ़म्र लड़का चत्रसिंह इसवक़ रूपाहेलीका ज़ागीरदार था, जिसकी मा और उसके चचा लालसिंह व माधवसिंहने फ़ौज ख़र्च देकर यह गुज़ारिश की, कि गांव तस्वारिया ख़ालिसहमें रहनेसे तो हमको कुछ उ़ज़्र नहीं, लेकिन् लांबा

वालोंको न मिले. महाराणा साहिबने भी उस बडे जागीरदारकी अर्ज़पर लिहाज़ करके फ़ौज खर्च लेनेके बाद तस्वारिया ख़ालिसहमें रक्खा.

विक्रमी १९२९ ज्येष्ठ कृष्ण ९ [हि०१२८९ ता० २२ रबीउ़ल्अव्वल = ई०१८७२ ता० ३१ मई] को महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी मेड़तणीने कोठारी केसरीसिंहकी हवेलीके क़रीब बाज़ारमें विष्णु (अभयस्वरूपबिहारी) का मन्दिर और बावड़ी तय्यार करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा हुई. इन्हीं दिनोंमें बीकानेरके महाराजा सर्दारसिंह गुज़रगये, जिनकी ख़बर आनेपर विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० ३ जून] को मातमी दर्बार हुआ. उक्त महाराजाके कोई औलाद न थी, इसलिये चन्द हक़दारोंने वारिस बननेके लिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीमें दर्ख्वास्तें पेश कीं. महाराणा साहिबने अपने मामा लालसिंहके बेटे डूंगरसिंहको, जो हक़दार भी था मुतबन्ना क़रार दियेजानेके मत्लबसे कर्नेल् ब्रूकके नाम सिफ़ारिशी चिट्ठी लिखी और सहीहवाले अर्जुनसिंहको आबूपर भेजा. इस मददका बहुत अच्छा असर हुआ, और डूंगरसिंह बीकानेरकी गद्दीपर बिठायागया. इस इह्सानमन्दीके शुक्रियहमें मामा लालसिंह और महाराज डूंगर-सिंहने एक पत्र महाराणा साहिबको लिखभेजा, जिसका मत्लब यह है, कि हमको आपके तुफ़ैलसे बीकानेरका राज्य मिला है. वह अस्ल पत्र महाराणा साहिबकी खास पेटीमें मौजूद है. हक़ीक़तमें इस सिफ़ारिशका गवर्मेंट अंग्रेज़ीने बहुत लिहाज़ रक्खा और सहीहवाले अर्जुनसिंहको इस ख़िदमतकी नेकनामी मिली.

विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ [हि० ता० २ शअ्बान = ई० ता० ६ ऑक्टोबर] को पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् निक्सन विलायत जानेकी रुख़्सती मुलाक़ात करनेके लिये महाराणा साहिबके पास आये, और दूसरे दिन रवानह होगये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रमज़ान = ई० ता० १३ नोवेम्बर] को झालरापाटणके महाराज-राणा पृथ्वीसिंह नाथद्वारेकी यात्रा करते हुए उदयपुर आये. महाराणा साहिब उन्हें पेश्वाई कर लेआये, १५ तोपकी सलामी उदयपुरके तोपख़ानहसे सर हुई. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रमज़ान = ई० ता० १४ नोवेम्बर] को महाराजराणा महलोंमें महाराणा साहिबकी मुलाक़ातके लिये आये, जिनको ११ किश्तियोंमें ख़िल्अ़त और १ हाथी व २ घोड़े दियेगये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रमज़ान = ई० ता० १५ नोवेम्बर] को महाराजराणाके डेरोंमें महाराणा साहिब तश्रीफ़ लेगये. उन्होंने हाथी, घोड़े, ज़ेवर, वस्त्र और शस्त्र वगैरह कई चीज़ें पेश कीं. इसके बाद चन्द ख़ानगी मुलाक़ातें व शिकार वगैरह हुई, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = ई० ता० २८ नोवेम्बर] को वह अपनी रियासतकी तरफ़ रवानह होगये.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ता० १ शव्वाल = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को खैरवाड़ाके फ़र्स्ट असिस्टैण्ट मेक्कीसन साहिब मेवाड़के क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेएट होकर उदयपुर आये. विक्रमी पौष कृष्ण १० [हि० ता० २३ शव्वाल = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को कर्नेल् हैचिन्सन साहिब मेवाड़के क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेएट होकर आये. इसवक्त महाराणा साहिब नाहरमगरेमें थे, उसी जगह मुलाक़ात हुई. दूसरे रोज़ उक्त साहिब उदयपुर चले आये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल २ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० १८७३ ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंहके गुज़रजानेकी ख़बर मिलनेपर महाराणा साहिबने मातमी दर्बार किया. विक्रमी १९३० आषाढ़ कृष्ण १ [हि० ता० १५ रबीउस्सानी = ई० ता० ११ जून] को एक अंग्रेज़ने महलोंके चौकमें औंधेसिर लटककर दांतोंमें रस्सोंके सहारे तोपको पकड़ चलानेका तमाशह दिखलाया. महाराणा साहिब मए पोलिटिकल एजेंटके स्वरूपविलासमें बैठे देखरहे थे, और बहुतसे लोग चौकमें जमा थे; बारूद ज़ियादह भरनेसे तोप फट गई जिसके टुकड़ोंकी चोटसे एक आदमी जानसे मरा और चन्द ज़ख़्मी हुए; अगर्चि तोपके टुकड़े दूर दूरतक गये, लेकिन् महाराणा साहिबकी तरफ़ ख़ैरियत रही.

शम्भुनिवासका महल तो पेश्तर टेलर साहिबकी निगरानीमें तय्यार होगया था, लेकिन् उसको बढ़ाकर दक्षिणी तरफ़ दोमन्ज़िला महल फिर बनवाया गया, जिसका उत्सव और वास्तु मुहूर्त विक्रमी श्रावण कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १७ जुलाई] को हुआ. इस वक्त बहुत अच्छा जल्सह किया गया था. यह शम्भुनिवासका दक्षिणी हिस्सह डॉक्टर कनिङ्घम साहिबकी निगरानीमें तय्यार हुआ. इस जल्सहमें महता राय पन्नालालको पैरमें सोनेके लंगर, साह अम्बाव मुरड्याको मोतियोंकी माला और गांव, महासाणी रत्नलालको बैठक, तथा बाक़ी सर्दार, चारण, पासबान, और गजधर वग़ैरह सैकड़ों आदमियोंको ज़ेवर, सरोपाव व हाथी वग़ैरह इन्आममें मिले. इस जल्सहमें मुझे (कविराजा श्यामलदास) को एक उम्दह सरोपाव और हाथकी सुवर्णमयी पहुंचियां इनायत हुई थीं. इसी सालमें कर्नेल् हैचिन्सन साहिबकी सलाहके मुताबिक़ स्टाम्प और रेजिस्टरीका क़ाइदह मुक़र्रर हुआ, और साहिबकी मारिफ़त बनारसका रहनेवाला मुन्शी मुहम्मद क़ुद्रतुल्लाह बुलाया जाकर विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ता० १५ जमादियुस्सानी = ई० ता० ९ ऑगस्ट] को यह (रेजिस्टरी और स्टाम्पका) महकमह क़ाइम हुआ; और इन्हीं दिनोंमें उक्त साहिबकी सलाहके मुवाफ़िक़ एक महकमह तवारीख़का भी क़ाइम किया गया, जिसमें पेश्तर तो बख़्शी मथुरादास और ढींकड़िया उदयराम वग़ैरह लोग भरती हुए, लेकिन् काम नहीं

चलनेके सबब यह महकमह मेरे (कविराजा श्यामलदास) और पुरोहित पद्मनाथके सुपुर्द किया गया और कुछ काम भी जारी होगया था, परन्तु पेश्तर ऐसा काम हम लोगोंने कभी नहीं किया था; इस नातजर्बहकारीके सबब बग़ैर पूरा सामान एकट्ठा करनेके कामका प्रारम्भ करदिया, और थोड़ेही अर्सहके बाद महाराणा साहिबका भी परलोकवास होगया, इत्यादि कई कारणोंसे यह महकमह टूटगया, लेकिन् मैं अपने तौरपर इस कामका सामान एकट्ठा करनेसे न रुका, जो मुझको इस तवारीख़के प्रारम्भ समयमें बहुत उपयोगी हुआ.

विक्रमी आश्विन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ शअ्बान = ई० ता० ६ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब उदयपुरसे रवानह होकर मए ज़नानी सवारीके एकलिंगेश्वरकी पुरी, देलवाड़ा, पलाणा, राजनगर और केलवे मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १८ शअ्बान = ई० ता० ११ ऑक्टोबर] को गढ़बोर पहुंचे, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २१ शअ्बान = ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को वहांसे लौटकर केलवे, देपुर और नाहरमगरे होते हुए विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ रमज़ान = ई० ता० २३ ऑक्टोबर] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० १२९१ ता० ५ मुहर्रम = ई० १८७४ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को शाहपुराके रामस्नेही महन्त हिम्मतराम अपनी सम्प्रदायकी रीतिका फूलडोल (१) करनेके लिये उदयपुरमें आये. महाराणा साहिब उनको पेश्तरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई कर नौलखाके बाग़में लेआये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ मुहर्रम = ई० ता० २ मार्च] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् पेली उदयपुर आये. महाराणा साहिब मए पोलिटिकल एजेण्ट हचिन्सन और अपने सर्दारोंके मामूली पेश्वाई करके उनको लेआये और दूसरे रोज़ शामको वह वापस रवानह होगये. विक्रमी चैत्र कृष्ण ३ [हि० ता० १६ मुहर्रम = ई० ता० ६ मार्च] को पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् हचिन्सन छुट्टीपर विलायत गये. विक्रमी १९३१ चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = ई० ता० २४ मार्च] को मेजर ब्राडफ़ोर्ड क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट होकर खेरवाड़ाके रास्ते उदयपुर आये.

विक्रमी वैशाख शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २३ एप्रिल]

---

(१) शाहपुराके रामस्नेही साधु होलीके दूसरे दिन फूलडौलका उत्सव मानते हैं. इस उत्सव पर दूर दूरसे रामद्वारोंके रामस्नेही साधु आकर अपने महन्तको हाज़िरी देते हैं, और उनको माननेवाले हज़ारों यात्री भी दर्शन करनेको आते हैं. यह जल्सह हर साल शाहपुरेमें होता है, लेकिन इस वर्षका उत्सव महाराणा साहिबकी इच्छानुसार उदयपुरमें किया गया.

को महाराणा साहिबकी ऋौरस माता (बागौरके कुंवर शार्दूलसिंहकी पत्नी) नन्दकुंवरने ठाकुर श्री गोकुलचन्द्रमाका मन्दिर महलोंके क़रीब बनवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बड़ी धूमधामके साथ हुई. यह वल्लभकुलकी सेवाके ठाकुर हैं. इस प्रतिष्ठामें हज़ारों रुपये इन्ऋाम, इक्राम व भोजन वगै़रहमें ख़र्च हुए. सर्दार, चारण, पासवान, ऋह्लकार, मन्दिरके तऋल्लुक़दार ऋौर गजधर वगै़रह लोगोंको हज़ारों रुपयेका ज़ेवर, वस्त्र व हाथी, घोड़े इन्ऋाममें मिले. मुझ (कविराजा श्यामलदास) को भी मोतियों की माला, सर्पेच, उम्दह ख़िल्ऋत ऋौर हाथी मिला था. यह हाल विस्तारके भयसे ऋधिक नहीं लिखागया है. विक्रमी प्रथम ऋाषाढ़ कृष्ण १० [हि० ता० २३ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० ९ जून] को क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ मेजर ब्राडफ़ोर्ड साहिब रुख़्सतपर गये, ऋौर विक्रमी प्रथम ऋाषाढ़ शुक्ल ४ [हि० ता० ३ जमादियुल्ऋव्वल = .ई० ता० १८ जून] को उनकी जगह कर्नेल् राइट साहिब ऋाये.

ऋब हम फिर गुज़रे हुए दो वर्षकी पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ हेचिन्सन ऋौर ब्राडफ़ोर्डकी रिपोर्टका शेष हाल पूरा करते हैं:–

पहिली रिपोर्ट .ईसवी १८७२–७३ [वि० १९२९ = हि० १२८९–९०] की जिसमें ५५०५ पेटियां ऋफ़ीमकी कांटेपर चढ़ीं, जिससे साइरमें बहुत फ़ायदह हुऋा; ऋौर १००००० एक लाख यात्री ऋौर १००० गाड़ियोंकी ऋामदोरफ्त खैरवाड़ाकी सड़कपर हुई. यह सड़क टॉमस विलिऋम साहिबकी निगरानी ऋौर मिह्नतसे खैरवाड़ाके क़रीब पहुंचगई है. इस सड़कपर मज़्दूरीका काम भी लोगोंसे लियागया है, ऋौर हरएक गमेती अपनी ऋपनी पालकी हद्में उसी पालके आदमीसे काम लियेजानेका दावा करते हैं. ऋौर मालका इन्तिज़ाम १० वर्षका ऋौसत देखकर गांववार लगानपर लगाया गया है. ऋौर दर्बार इस इन्तिज़ामसे ऋपने मुल्कका फ़ायदह समझते हैं, लेकिन् मुझको इस बातका डर है, कि अह्लकार लोग इस बातमें बखेड़ा डालेंगे जो लाटा कूंताको पसन्द करते हैं; ऋौर दूसरी दिक़त यह है, कि काम्दार लोग बन्दोबस्तके कामसे वाक़िफ़ नहीं हैं.

फ़ौज्दारी जुर्म इस सालमें बहुत हुए, जिससे मालूम होता है, कि जान व माल की हिफ़ाज़त नहीं होती. इस सालमें ८७ डकैतियां ग्रामोंपर हुईं, जिससे १२७२३०) रुपयोंका माल गया; ८९ धाड़े रास्तोंपर हुए, जिससे ५८१२५) रुपयोंका माल ग़ारत हुआ; ऋौर ६० ख़ून हुए, ऋौर ९१ मुक़द्दमे खुद कुशीके दाइर हुए (ऋौर पिछले सालके मिलाकर) ११३ मुक़द्दमोंमेंसे २५ मर्दोंके, ८८ ऋौरतोंके, जिन्होंने डूबकर या ऋफ़ीम खाकर जानें दीं.

महाराणा साहिबने हालमें फ़ौज्दारी और पुलिसका भी .उम्दह इन्तिज़ाम किया है. कुल मेवाड़के ७ हल्के करके, उनमेंसे पांचपर एक पुलिस मैजिस्ट्रेट (नाइब फ़ौज्दार) मुक़र्रर किया, जिसकी १५०) रुपया माहवार तन्ख्वाह करदी, और पुलिसमें नये आदमी बढ़ाये गये, थानेदारोंकी तन्ख्वाह भी बढ़ाकर रु॰ ३०) माहवार की गई. ताज़ीरातहिन्द और ज़ाबितह क़ानून फ़ौज्दारीके मुवाफ़िक़ कार्रवाई शुरू हुई, और फ़ौज्दारी व पुलिसके अफ्सर मुन्शी सामिनअलीख़ांके मातहत कियेगये हैं, जिसको कि दर्बारने ख़ास इसी कामकी दुरुस्तीके लिये फिर मुक़र्रर किया है; और दो ज़िले याने छठा जहाज़पुर व सातवां मगरा (ज़िला खैरवाड़ा), इनके इन्तिज़ाममें अभी कोई फ़र्क़ नहीं होगा. यह इन्तिज़ाम सब ख़ालिसहके लिये जानना चाहिये. मेवाड़के सर्दार अपनेको ख़ुद मुख़्तार जानकर मुक़द्दमोंका जवाब भी देरमें देते हैं, जिससे बड़ी दिक़्क़त रहती है, और नाथद्वाराके गोस्वामीने भी सर्दारोंकी देखादेखी दर्बारसे ख़ुद मुख़्तार होना चाहा. .ईसवी १८७१ [वि॰ १९२८ = हि॰ १२८८] में उनपर फ़ौज भेजी गई, लेकिन् बिदून दर्बारकी हुकूमत क़ाइम किये वापस बुलालीगई, और .ईसवी १८७२ फ़ेब्रुअरी [वि॰ १९२८ माघ = हि॰ १२८८ ज़िल्हिज] में भींडरके कुंवरकी ख़िद्मत के .एवज़ उनके बाप महाराज हमीरसिंहको घाणेरावकी बैठक दी गई, इससे दूसरे सर्दार नाराज़ हुए और भींडरके नीचे बैठनेसे इन्कार किया, लेकिन् दशहरेपर सब लोग आये, और भींडर महाराजको हिदायत होगई, कि वे दर्बारमें न आवें (१). मोघिया व बावरियोंका सख़्त बन्दोबस्त किया गया, जो तक्लीफ़ देनेवाली क़ौमें हैं. बहुतेरोंके शस्त्र और ऊंट लेकर ज़मानत तलब कीगई, और जिन्होंने ज़मानत नहीं दी उनको जेलख़ानह में भेजदिया. टोंक वालोंने अपने .इलाके नीबाहेड़ासे उनको एकदम निकालदिया. साहिब लिखते हैं, कि इस बे रहम क़ौमका ऐसा बन्दोबस्त होना चाहिये, कि जैसा अगले ज़मानहमें ठगोंका हुआ था. इनको निगरानीमें रखकर ऐसा काम लियाजावे, जिसकी आमदनीसे इनका मए कुटुम्बके गुज़ारा चले, वर्नह एक ज़िलेसे निकालनेपर दूसरे ज़िलेको तक्लीफ़ देंगे. और डाकका इन्तिज़ाम अच्छा रहा.

जूनसे ऑगस्टतक शहर उदयपुरमें हैज़ेका ज़ोर रहा, जिसमें ३३१ आदमी मरे, और पानीकी कमीका बन्दोबस्त करनेके लिये उदयसागरसे पीछोलेको भरना

---

(१) इस बातके कई सुबूत हैं, कि महाराणा साहिब चाहे जिसको सर्दारोंकी लाइनमें बैठक देसक्ते हैं. ख़ास इन महाराणा साहिबने आमेटकी बैठक अमरसिंहको दी, जिसका बर्ताव सब सर्दार करते हैं. यह ढ़ज़ आपसकी अदावतसे हुआ, जिसका ज़िक्र हम आगे लिखेंगे.

चाहिये, लेकिन् इसके लिये अच्छा इन्जिनिअर दर्कार है. सफ़ाईके जारी करनेमें यहांके बड़े आदमियोंके हर्ज डालनेसे दिक़त पड़ती है. इन्हीं लोगोंने .ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] की मर्दुमशुमारीमें भी खलल डाला था.

मेयो कॉलिजमें मेवाड़के लड़कोंके रहनेको महाराणा साहिबने बोर्डिंग हाउस बनानेके लिये ३६०००) रुपये दिये.

जावरमें सीसेकी खान जो बहुत वर्षोंसे बन्द थी, जिसका महाराणा साहिबने प्रोफ़ेसर बुशलको भेजकर अपने देशकी उन्नतिके लिये कारखानह जारी किया.
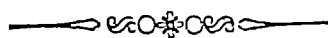
मेजर ई० आर० सी० ब्राडफ़ोर्ड क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की दूसरी रिपोर्ट बाबत् सन् १८७३-७४ ई०

साहिब लिखते हैं, कि इस सालके मुल्की इन्तिज़ाममें कोई अदला बदली नहीं हुई, और दर्बार सब काम खुद देखते हैं, और उनके पास महकमहखासका मुन्शी (महता राय पन्नालाल) रहता है, वही सब कागज़ोंको पेश करके हुक्म चढ़ाता है; और यह शख्स कोठारी केसरीसिंहका रिश्तहदार है, कि जो दो दफ़ा प्रधानेके कामपर मुक़र्रर हुआ था, और वह (कोठारी केसरीसिंह) .ईसवी १८७२ [वि० १९२८ = हि० १२८९] में मरगया. उसने अपने मरनेसे कुछ अरसह पहिले इस्तेफ़ा देदिया था, उसवक़्से प्रधानेका .उह्दह खाली है. थोड़े अरसहमें मैंने इस इन्तिज़ाम को देखा, तो मुझको ज़ियादह पसन्द नहीं है, क्योंकि मुन्शी महकमहखास ज़िम्महदार अफ्सर नहीं है, सब भार महाराणा साहिबपर रखकर वह बरी होसक्ता है. महाराणा साहिब मिलनसार और पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहपर चलते हैं, इसलिये इन्तिज़ाम का काम विना दिक़तके चलता है.

जबसे मैंने अपने कामका चार्ज लिया तबसे महाराणा साहिबसे हमेशह मुला-क़ात होती रही. मैं तअज्जुब करता हूं, कि वे हिन्दुस्तानी रियासतके राजा होकर .ऐश व .इश्रतमें पर्वरिश पानेपर भी सिवा उदयपुरके दूसरी जगहके भी कुछ हालातसे वाक़िफ़ हैं, और उनमें सल्तनत करनेके लाइक़ बहुत गुण हैं.

मेवाड़ एक अलहदह रियासत होनेके सबब .इलाक़ह सर्कार अंग्रेज़ीकी नज़्दीकी रियासतोंके मुवाफ़िक़ उसमें तरक़ी नहीं हुई, क्योंकि थोड़े वर्षोंके पहिले यह मुल्क बे-इन्तिज़ामीकी हालतमें था; और पिछले वर्षमें सर्दारोंका कोई नया बखेड़ा नहीं हुआ, सिर्फ़ महाराणा साहिबके चचा महाराज शक्तिसिंहने बागोरकी हक़दारीके कारण फ़साद

करना चाहा, लेकिन् दर्बारने फ़ौज भेजकर उसको गिरिफ्तार करलिया, और वह उदयपुर लाया गया जो अबतक निगरानीमें है.

मैं अफ्सोस करता हूं, कि नाथद्वाराके गोस्वामीका झगड़ा तय नहीं हुआ, जैसाकि पिछले सालकी रिपोर्टमें ज़िक्र होचुका है. उनके गांवोंपर ख़ालिसह है तोभी वह दर्बारसे मुक़ाबलह करता है. मैं उम्मेद करता हूं, कि उसके वकीलको एजेएटीसे निकालदिया, इस कारण पुराने झगड़ेके तय होनेमें ज़ियादह दिक़त न होगी; इस की गुस्ताख़ीका ख़राब असर मेवाड़के दूसरे सर्दारोंपर भी होता है.

जावरकी खान बन्द कीगई, क्योंकि एक तो कलके बग़ैर खानका पानी नहीं निकल सक्ता था, और ख़र्चके मुक़ाबलेमें फ़ायदह भी कम मालूम हुआ, याने २८ मन लगानेसे २५ तोला चांदी निकल सक्ती है, इसलिये १० महीनेतक काम करनेके बाद बुशल साहिबको .ईसवी ता० ३१ जेन्युअरी [वि० १९३० माघ शुक्ल १४ = हि० १२९० ता० १२ ज़िल्हिज] को रुस्सत देदी. इस सालमें ८६६ पेटियां अफ़ीमकी उदयपुरके कांटेपर चढ़ीं.

इन महाराणा साहिबकी तवारीख़को ख़त्म करके इनकी आख़री बीमारीका हाल लिखते हैं.

महाराणा साहिब गर्मीके मौसममें मए् ज़नानहके गोवर्द्धनविलासमें थे, वहांपर विक्रमी १९३१ द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ३ [हि० १२९१ ता० १ जमादियुस्सानी = .ई० १८७४ ता० १६ जुलाई] को बारह बजे बाद उनके पेटमें कुछ कुछ तक्लीफ़ मालूम हुई, तीसरे पहरके वक्त ज़नानी सवारी तो उदयपुरको रवानह होगई और महाराणा साहिब गोवर्द्धनविलास कुंवरपदाके महलमें ठहरे. दूसरे हम्राही सर्दार पासवान तो ज़नानी सवारीके साथ चलेगये और ठाकुर मनोहरसिंह और मैं (कविराजा श्यामलदास), गढ़ीका चहुवान अमरसिंह, धब्बा बदनमल्ल, धायभाई हुक्मा, धायभाई गणेशलाल और डॉक्टर अक्बरअ़ली मौजूद थे. उस थोड़ी थोड़ी पेटकी तक्लीफ़को मिटानेके लिये डॉक्टरने दवा दी, लेकिन् वह ख़फ़ीफ़ तक्लीफ़ कम न हुई. महाराणा साहिब बड़े ख़ुश मिज़ाज थे, हम लोगोंको शराब पीनेका हुक्म दिया. ठाकुर मनोहरसिंहने और मैंने इन्कार किया, लेकिन् दोबारह हुक्म होनेपर दो दो पियाले लिये; फिर ज्योतिषी लोगोंके कथनानुसार सूरज छिपनेके बाद उदयपुरके महलोंमें तश्रीफ़ लाये, उसी दिनसे बीमारी दिन बदिन बढ़ती गई, और डॉक्टर अक्बरअ़लीका .इलाज होता रहा. विक्रमी द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २० जुलाई] को कुछ बुख़ारकी हरारत मालूम हुई, लेकिन् अभीतक बीमारीका निश्चय नहीं हुआ, कि किस क़िस्मकी बीमारी है. अक्बरअ़लीको भी पूरा इख़्तियार

न था. ज़नानी ड्योढ़ी वगैरह ख़ानगी सलाहसे कई तद्बीरें होती थीं. विक्रमी द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २१ जुलाई] को डॉक्टर अक्बरअलीका इलाज मौकूफ़ कियागया और मुल्ला किफ़ायतअली, अलवरके हकीम, नारायण भट्ट, और रूपनाथका .इलाज शुरू हुआ. इन्होंने भी सौंठ, मिर्च और पीपलकी गोलियां दीं, लेकिन् उससे क्या होता था, बीमारी तो कुछ और ही थी. आख़िर-कार विक्रमी द्वितीय आषाढ़ शुक्ल १४ [हि० ता० १३ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २८ जुलाई] को बेदलाके राव बख़्तसिंहने ज़ोर देकर अर्ज़ की, कि इलाज डॉक्टरका होना चाहिये. तीसरे पहरके वक्त पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् राइट और राव बख़्तसिंह एजेन्सीके सर्जन डॉक्टर बरको लाये. उसने दर्याफ़्त करके कहा, कि कलेजेपर सोज़िश है, जिसमें पीब पड़नेका ख़तरह होगया है; फिर जलौंकें लगाई गईं और डॉक्टर बर व उसके मातहत डॉक्टर अक्बरअलीका इलाज होने लगा. विक्रमी श्रावण कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = ई० ता० ५ ऑगस्ट] को पीछोला तालाब पूरा भरकर १० वर्ष पीछे चद्दर डाकनेकी ख़बर मालूम हुई, कि जिसकी महाराणा साहिब को बहुत बड़ी ख़्वाहिश थी. इन दिनों बीमारीमें भी कुछ सिहत रही, और बर साहिबने भी कहा, कि कुछ हवाख़ोरी करना चाहिये, जिससे विक्रमी श्रावण कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ८ ऑगस्ट] को तामजाम सवार होकर महलोंके चौकतक पधारे. विक्रमी श्रावण शुक्ल २ [हि० ता० १ रजब = .ई० ता० १४ ऑगस्ट] को सिरमें दर्द होकर बुख़ारकी हरारत मालूम हुई; फिर विक्रमी श्रावण शुक्ल १० [हि० ता० ९ रजब = .ई० ता० २२ ऑगस्ट] को तन्दुरुस्ती मालूम होनेपर रोगमुक्तस्नान किया गया, और हाज़िरीन लोगोंने नज़्रें दिखलाईं. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ता० १५ रजब = .ई० ता० २८ ऑगस्ट] को महाराणा साहिब किश्तीमें सवार होकर पीछोला तालाबकी चद्दर देखनेको तशरीफ़ लेगये, वापस आनेपर ज़ुकाम और बुख़ारकी कुछ हरारत मालूम हुई, फिर तन्दुरुस्त होगये. डॉक्टरकी सलाहके मुवाफ़िक़ विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रजब = .ई० ता० ६ सेप्टेम्बर] को घोड़ेपर सवार होकर थोड़ी दूर हवाख़ोरी करआये, लेकिन् बदनमें ताक़त न थी. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रजब = .ई० ता० ९ सेप्टेम्बर] को महकमहख़ासके सेक्रेटरी महता पन्नालालको कर्ण-विलासमें क़ैद किया, जिसका हाल इसतरहपर है, कि यह शख़्स होश्यार व मिह्नती है, जिसने इस रियासतमें इन्तिज़ामी हालतकी बुन्यादको मज़्बूत किया, लेकिन् इसने महाराणा साहिबकी मर्ज़ीके अनुकूल या प्रतिकूल कार्रवाई करके लोगोंपर अपना

रोब जमाना चाहा, और कोठारी केसरीसिंहके तरीक़ेपर अपने मालिकको नक़्शा नुक्सान ख़ानगीमें दिखलाकर, जैसा कि चाहिये था, उनके हुक्मकी तामील दिलसे न की, जिससे कुल रियासती लोग उसके दुश्मन होगये. महाराणा साहिबकी मर्ज़ी घटने पर मौक़ा देखकर लोगोंने जादू वगैरह करनेकी शिकायतें पेश कीं, और क़ैद होनेके बाद और भी कई ग़लतियां दिखलाई गईं, फिर उसके दोस्तोंपर भी नाराज़गी करादी. मैं (कविराजा श्यामलदास) भी उसका दोस्त था, इसलिये ब्रह्मचारी मथुरादास व पाणेरी गोपाल वगैरहने मुझपर भी महाराणा साहिबकी नाराज़गी करानेकी कोशिश की, लेकिन् उनके दिलमें मेरी जगह थी, इससे उन लोगोंकी शिकायतें कारगर न हुईं. महकमह ख़ासका चार्ज राय सोहनलाल कायस्थके सुपुर्द हुआ, लेकिन् काम बराबर न चलसका, जिससे विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० ता० १३ शअ्बान = ई० ता० २५ सेप्टेम्बर] को पुराने प्रधान महता गोकुलचन्द और सहीहवाला अर्जुनसिंहके सुपुर्द कियागया. अब दिन ब दिन कलेजेके फोड़ेकी बीमारीने ज़ोर पकड़ा; आख़रकार विक्रमी आश्विन कृष्ण ९ [हि० ता० २२ शअ्बान = ई० ता० ४ ऑक्टोबर] को नीमचसे डॉक्टर को बुलाया. उसने डॉक्टर बर साहिबके साथ बहुत कुछ कोशिश की, लेकिन् हालत ख़राब होचुकी थी, कोई इलाज कारगर न हुआ, और विक्रमी आश्विन कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शअ्बान = ई० ता० ७ ऑक्टोबर] को तीन घड़ी रात गये शिद्दतसे कलेजेका दर्द शुरू हुआ. ठाकुर मनोहरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास), धव्वा बदनमल्ल, धायभाई हुक्मा, धायभाई रघुलाल, साह जोरावरसिंह सूराणा, महासाणी रत्नलाल, और डॉक्टर अक्बरअली वगैरह महाराणा साहिबके पास मौजूद थे. धायभाई हुक्मा कोठी रेज़िडेन्सीपर जाकर दोनों डॉक्टरोंको लेआया. महाराणा साहिबने उस जांकन्दनीकी हालतमें मुझको कहानी कहनेका हुक्म दिया. मैंने दिलखुशहाल महलकी चोपाड़के दर्वाज़ेमें पलंगके पास बैठकर दो चार फ़िक़े कहानीके कहे और उन्होंने पानी मांगा, तब साह जोरावरसिंह सूराणाने हाथके सहारेसे उन्हें पलंगपर बिठाया, कि उसी दम आंखने चक्कर खाया, और क़रीब साढ़े दस बजे रातके वह इस जहानको छोड़ गये. उस वक़का हाल देखनेवाले जानते हैं, कि हम लोगोंपर एक दम कैसा वज्र टूटपड़ा था. मैं ठाकुर मनोहरसिंह सहित रोता हुआ खुशमहलोंमें आया. वह रात्रि हमारे लिये बड़ी लम्बी चौड़ी होगई. विक्रमी आश्विन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शअ्बान = ई० ता० ८ ऑक्टोबर] को उनके आन्तिक विमानकी तय्यारी हुई. कर्नेल राइट पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ रातको ही कोठीसे महलोंमें आगये थे. ज़नानी ड्योढ़ीका पुख्तह बन्दोबस्त किया गया, कि कोई

सती न होनेपावे. चार सहेलियां सती होनेको उठीं, लेकिन् ज़नानी ड्योढ़ीके किवाड़ बन्द थे, और बाहिर बेदलाका राव बख़्तसिंह वग़ैरह सर्दार और ड्योढ़ीके महता लालचन्द, प्यारचन्द और देवीचन्द वग़ैरह मौजूद थे. उन लोगोंको भीतरसे हज़ारों गालियां दीजाती थीं, लेकिन् ऐसे वक़्में उनको कौन इजाज़त देसक्ता था. महाराणा साहिबके साथ सती न होनेदेनेका यह पहिला अवसर और पुराने ख़यालातका आख़री हुल्लड़ था. महाराणा साहिबके विमानको देखकर कर्नेल् राइटकी आंखोंसे आंसू गिरते थे; शहरकी आम रिआया पांच वर्षके बच्चेसे लेकर बूढ़ोंतक अनुमान २५००० औरत मर्द बड़ी दर्दनाक आवाज़से रोरहे थे. बस इस हालको हम ज़ियादह नहीं लिखसक्ते, देखनेवाले ज़िन्दह रहेंगे तबतक वे नहीं भूलेंगे.

इन महाराणाका स्वभाव ऐसा था, कि ज़बान शर्बतकी तरह मिठाससे भरी हुई, जिस शख़्सने उनसे एक दो दफ़ा बात चीतकी वह ज़िन्दगीभर नहीं भूलनेका; अगर किसीने सलाम किया और वे आंख उठाकर उधर देखते, तो उसको यक़ीन होजाता था, कि महाराणा साहिब मुझपर निहायत मिह्बान हैं. यह महाराणा नर्म मिज़ाज, अव्वल दरजहके अक़्लमन्द, बात करनेमें चतुर, हिन्दी या संस्कृतकी कोई किताब पढ़ते तो ऐसा मालूम होता था, कि मानो अमृत टपका रहे हैं. मैंने हलकी ज़बान उनके मुंहसे कभी नहीं सुनी, अल्बत्तह कानके कच्चे और हरएक आदमीकी बातोंपर अमल करलेते थे. लिहाज़ भी इसक़द्र था, कि जिस आदमीपर मिह्बान होते वह चाहता, तो उनसे बे इन्साफ़ीकी बातपर भी सहीह करवालेता, लेकिन् उसकी दग़ा-बाज़ीको दिलमें ज़ुरूर जानलेते. वे रियासती बन्दोबस्त करना अपने ऊपर फ़र्ज़ जानते थे, लेकिन् .ऐश व .इश्रत और आराम तलबीसे दूसरोंके भरोसेपर छोड़ देते थे. वे आदमीके बड़े क़द्रदान थे, जिन आदमियोंने गद्दीनशीनीके बाद ऐश व.इश्रत और शराब पिलानेकी .आदतोंको ख़ुद मत्लबीपनसे बढ़ाया, मेरे सामने नाकमें सलवट चढ़ाकर उन आदमियोंको दिलसे ख़राब कहते थे. उनको कई तरहके अच्छे बुरे आदमियोंके साथ बर्ताव रहनेसे ख़ूब तजर्बह होगया था, और रियासती इन्तिज़ाम करनेके लाइक़ बने उस वक़्त ईश्वरने उनको दुन्यासे उठालिया. उनका पांच फुट साढ़े चार इंच लम्बा क़द, सुर्ख़ी माइल गेहुवां रंग, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, और शरीर व शरीरके सब अवयव ख़ूबसूरत थे. विक्रमी १९०४ पौष कृष्ण १ [हि० १२६४ ता० १३ मुहर्रम = .ई० १८४७ ता० २२ डिसेम्बर] को इनका जन्म हुआ, २६ वर्ष ९ महीने और १२ दिनकी .उम्र पाई, और १२ वर्ष १० महीने और १२ दिन राज्य किया. इन महाराणा साहिबकी आख़री बीमारीमें दान पुण्य

तथा देहान्त होनेके पीछे उत्तर क्रिया वग़ैरहमें रु० ७३२८२५।॥≡)॥ ख़र्च होनेके अलावह ५ हाथी, ९ घोड़े, २ बैल, और २६९ गौवें दान कीगईं.

इन महाराणा साहिबने अपनी यादगार क़ाइम रखनेके लिये जो मकानात व सड़कें वग़ैरह नये बनवाये तथा उनके समयमें पुराने मकानात वग़ैरहकी मरम्मत हुई, उस में कुल रु० २१५७४४३॥–)॥ ख़र्च हुए, जिसके तफ़्सीलवार नक़्शे अम्बाव मुरड़्याके भेजे हुए हमारे पास आये, उनका खुलासह नीचे दर्ज कियाजाता है :–

नक़्शह नम्बर १ नई तामीरात व मरम्मत मकानात वग़ैरह.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	गोवर्द्धनविलासके काममें.	३५४३७)।
२	महलोंमें, शहरमें और शहरके आसपास पर्चूनी कामोंमें.	१८२५३५)॥।
३	कोठी रेज़िडेन्सीके तअ़ल्लुक़.	१०४६३८॥)।
४	ज़नानह महलोंमें काम बना.	१२६२२॥)॥
५	बग्घीख़ानहके तअ़ल्लुक़	१७५४८॥–)
६	महा सतियोंमें छत्रियोंके काममें.	२९७१९।–)॥
७	नाव डूंडों (किश्तियों) के काम में.	१२४२४॥–)।
८	जगमन्दिर, जगन्निवासमें पर्चूनी काम खाते.	३६५९॥≡)
९	धुलाई, पुताई व चित्रकारीके काम खाते.	८४८३–)॥
१०	महलोंके बाहिर ख़ालिसाई काममें.	१३३२६।–)
११	भटियाणी चौहटेमें बेमालीके रावकी हवेलीके काममें.	५१३९३।)॥
१२	शम्भुनिवास महलकी तामीरमें.	११२७५२।=)।
१३	सूरजपौल दर्वाज़हके बाहिर सरायकी तामीरमें.	१०१३१=)२
१४	हांथीपौल दर्वाज़हके बाहिर सरायकी तामीरमें.	११५५९–)॥१

१५	मद्रसहकी तामीरमें.	४६१६३॥ु॥१
१६	जगमन्दिरमें डण्डेकी तामीरमें.	२१७५३॥ु॥१
१७	हाथीपोल दर्वाज़हपर नया मकान बना उसमें.	११०९३ =ु१
१८	भाणेज मोतीसिंहके कोठी बनी उसमें.	३५०२ =ु
१९	जगन्निवासमें शम्भुप्रकाश नामके नये महलकी तामीरमें.	२३१५२॥ -ु॥२
२०	उदयपुर, खैरवाड़ा, मेड़ता, व मगरवाड़के डाक बंगलोंकी तामीरमें.	२५११७॥ ≡ु॥१
२१	अमलके कांटेके मकानकी तामीरमें.	९०९६ -ु॥
२२	घुड़नालोंकी पायगाहमें नया काम बना उसमें.	७२२२ -ु॥
२३	दिलखुशहाल महलकी तामीरमें.	११५०० -ु॥
२४	कुंवरपदाके महलोंकी मरम्मतमें.	९०१० ≡ु
२५	शम्भुनिवासके पास दोमंज़िला नया महल बना उसकी तामीरमें.	८३४१९ु॥
२६	बहूजी साहिबके नया मन्दिर बना उसमें.	६५३७३ु॥
२७	हुसैनाबाईके मकानके लिये जगह मोल लीगई.	३०००ु
२८	नाई व सीसारमाकी नदीके काममें.	६७९७॥ =ु॥
२९	बागमें काम बना जिसमें.	३८३९ु॥
	मीज़ान	९३६२७२ -ु॥१

नक़्शह नम्बर २ तामीरात सड़क व रास्तह.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	नीमचकी सड़क खाते.	४४२७१८। -ु॥
२	खैरवाड़ाकी सड़क खाते.	२१५७७२ -ु।

३	शहर व शहरके आसपास पर्चूनी सड़कों वगैरहके कामोंमें.	६५७३४।≡)१
४	नीमचसे नसीराबादतक सड़क खाते.	११६८८६।≡)।
५	देबारीसे पगल्याकी नाल देसूरीतक सड़क खाते.	११३४८)१
६	कैलासपुरीके रास्तहकी सड़क खाते.	५०१२।=)२
७	बेदला व गोगूंदाकी सड़क खाते.	१०७८५॥=)॥
८	कमलोदकी सड़क खाते.	१४०७१॥-)२
९	नाहरमगराकी सड़क खाते.	१८०५७॥=)॥२

मीज़ान. ९८८३८७=)२

नक़्शह नम्बर ३ तामीरात मुतअल्लकह पर्गनात.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	पर्चूनी कामोंमें.	२४४४०॥)।
२	खेमलीके तालाब खाते.	२१४६८॥-)।
३	मगरामें खैरवाड़ाके काममें.	४८०५।)॥
४	नाहरमगराके काममें.	१०६८२५॥-)।
५	चित्तौड़में गढ़के काम खाते.	२३२६।)॥
६	भीलवाड़ामें शहर कोटके काम व डाक बंगले बने उनकी लागतमें.	३११७४॥≡)॥
७	जहाज़पुरके कामोंमें.	१८२७३।≡)।
८	सायराके कामोंमें.	२२४८॥=)॥
९	राजनगर की पाल व महल वगैरहके कामोंमें.	१२२९=)।

मीज़ान. २१३५९३)

नक्शह नम्बर ४ तामीरात मुतअल्लिकह .इलाक़ह गैर.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	नीमचमें सर्कारी बंगलेकी तामीरमें.	३९८६)॥
२	आबू पहाड़पर नये बंगलेकी तामीरमें.	४५९७॥ ≡)
३	अजमेरके बंगलेकी तामीरमें (१).	७६५०)
४	एजेण्ट साहिबने महाराणा साहिबके लिये सामान मंगाया उसमें.	२९५७। =)।
मीज़ान.		११११९। -)॥

मुख़्तसर तफ़्सील.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	शहरमें वा शहरके आस पासके कामोंमें.	९३६२७२ -)॥१
२	सड़कोंकी तामीरमें.	९८८३८७ =)२
३	पर्गनों व ज़िलोंमें.	२१३५९३)
४	गैर .इलाक़हमें जो मकान वगैरह बने उनमें.	११११९। -)॥
	मीज़ान.	२१५७४४३॥ -)॥

(१) यह बंगला मेयो कॉलेजके बोर्डिंग हाउसके लिये बना था, जिसके लिये नक्शहमें लिखे मुवाफ़िक़ रुपया दिये जानेके अलावह मेयो कॉलेजके लिये रु० १०००००), और मेवाड़की कोठीके लिये क़रीबन् रु० ४००००) कल्दार महाराणा साहिबने अलग दिया था.

शेष संग्रह.

गोकुलचन्द्रमाजीके मन्दिरकी प्रशस्तिः

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥ श्रीसरस्वत्यै नमः॥ श्र्येकलिङ्गो जयति॥
एकं ब्रह्म यदीक्ष्यते थ बहुधा मायेति रज्जुर्यथा सर्पादि प्रथया विभाति हि
तथा ब्रह्मैव सर्व्वञ्जगत् ॥ तत्वन्तत्वमहो विषीदासि मृषा जातो मरुक्ष्माजले
संसारे जनसूचयन् सजयतात्सच्छ्र्येकलिङ्गाभिधः॥ १ ॥ राधायाश्च कपो-
लकुन्तललसल्लुब्धद्विरेफाङ्कितः श्रीवक्षस्तटमण्डितोरतिपतिक्रीडाकलापण्डितः॥
श्रीवंशीरवमोहिताखिलचलद्गोपालदाराकुलः पायादेषमुनीन्द्रवन्दितपदश्रीदेवकी-
नन्दनः ॥ २ ॥ या विद्या भूतधात्री त्रिभुवनजननी ह्यागमानान्निदान-
ञ्जीवेशादिप्रभेत्त्री विषयपरिणता भासयन्तीह चार्थान् ॥ चैतन्यस्योपरा
गाच्चितिविषयपदम्मन्यमाना प्रवृत्ता साहं विद्येति मत्वा सपरिकरगणा तत्क्ष-
णन्नाशमेति ॥ ३ ॥ श्रीमत्सदानन्दमनाद्यनन्तं बोधैकरूपं च सदात्मकं
तत् ॥ यन्मायया भाति समस्तविश्वं रज्जौ यथा ही रजतञ्च शुक्तौ ॥ ४ ॥
काश्मीरमण्डललसद्भवनम्महोयत् सारस्वतं निगमवार्धिमयं ह्यचिन्त्यम् ॥
वागीश्वरान्निजगुरुप्रथितानुभावं वन्दे यतीन्द्रमनिशं सुयशःशरीरम् ॥ ५ ॥
आसीच्छ्रीक्षत्रमूर्द्धा मुकुटतटमणिः शम्भुभक्तोद्विजन्मा बापाख्यः श्र्येकलिङ्गाप्त-
विविधविषया विन्ध्यभूमण्डलश्रीः॥ श्रीमत्सूर्यान्ववायार्णवसकलशशीभूमिपालां-
श्च जित्वा यावद्भूमौ सुतान् स्वानवनितलगतःक्ष्माधिपालाँश्चकार ॥ ६ ॥ जातो
यद्वंशवार्द्धेः सकलहिमकरः कोपि वीरो धरण्यां चित्राद्रौ शासयन् गामुदयपुर-
मिति स्वीयनामाङ्कितं यत् ॥ स्थानं सत्कारयित्वाकबरयवनपेनैव युद्धं च कृत्वा क्रव्यैः
सन्तर्पयित्वा ह्युदयनरपतीराक्षसानाङ्कुलानि ॥ ७॥ ज्वालाकारकरालशोणितझरी-
यन्त्रैर्दृढैश्चञ्चलैः कालाकारकृपाणहस्तवलितैर्नृत्यत्कबन्धैर्भुवः॥ कृत्वालङ्कृतिमेषयच्च
वसनं श्रीचित्रकूटाभिधन्त्यक्त्वाब्दे युगबाहुषट्क्षितिमिते प्रोक्ते पुरे प्राविशत् ॥ ८ ॥
सोयं कार्यवशादवाप्य नगरं झाडोलसंज्ञं पुनः स्मृत्वा तत्र पदं स्वकीयमगमत्कैला-
ससंज्ञं महत् ॥ वर्षेस्मिन् वसुहस्तषट्क्षितिमिते राष्ट्राभिषिक्तोभवत्तस्यायं तनय-
प्रतापउदितः सन्दर्शितेऽब्दे सुधीः॥ ९ ॥ यस्यायं यत्प्रतापेन युधि मुहुरथो दह्यमान-
स्तरुष्काधीशःसंज्ञान्न लेभे न च जयमपि सद्भानुना भूप्रदेशे ॥ तेनायं श्रीप्रतापाधिप
इति गदितो वीरधीरोविवस्वांश्चावण्डाख्ये पुरे यः खगशररसभूसम्मिते स्वर्जगाम
॥१०॥ प्रोक्ते स्वीये पुरेब्दे ह्यमरनरपतिर्लब्धराज्याभिषेकस्तत्सूनुः कारयित्वामरसदन-
मयञ्जाहगीराभिधेन ॥ म्लेच्छाधीशेन कृत्वा करनगरसभूसम्मिते हायने यः

सन्धिं लोकञ्च शैवं गिरिमुनिरसभूसम्मिते ह्यालुलोके ॥ ११ ॥ तस्यापत्यङ्कृता- रि गंदितसुसमये कर्णसिंहोनवीनः कर्णोराष्ट्राधिरूढः क्षितिभरमतुलम्पाकशाला- न्निधाय ॥ हस्ते पीनां विचित्रां रतिसुखवलितांतः पुरङ्कारयित्वा पेदे कैलासकान्तं जलधिवसुरसक्ष्मामितेऽब्दे क्षितीन्द्रः ॥ १२ ॥ निर्दिष्टे हायनेऽस्मिञ्जगदिति नृपतिस्तत्सुतो राष्ट्रभारन्धृत्वा स्कन्धेऽवहद्योयवननरपतेर्जोहगीराभिधस्य ॥ सूनोः पित्रार्दितस्यापि सुशरणपदङ्खुर्मसंज्ञस्य चासीत् पित्रा स्वर्गे स्थितेऽमुं यवननरपति- म्भावयामास चित्रम् ॥ १३ ॥ सोयं सम्प्रेशयन्तं गुमटमथ जगन्मंदिरे राजधानी- म्प्रासादङ्कारयित्वा क्षितिशरकलितानीह सत्पत्तनानि ॥ ईशं संस्थाप्य तस्मिन् जगत इति सहस्राणि सप्तेभकानां षट्पञ्चाशद्धयानामददत सुतरां याचकेभ्यो नरेन्द्रः ॥ १४ ॥ वर्षे खेन्द्वद्रिभूम्याकलनवति जगद्भूमिपाले सुरेन्द्रञ्जेतुं याते नरे- न्द्रोभवदथ तनयस्तस्य सद्राजसिहः ॥ आरम्भं राजवार्द्धेरसशशिगिरिभूसम्मिते- ऽब्दे प्रतिष्ठाङ्कृत्वा षट्काण्डसप्तेन्दुयुजि शुभसमास्वेपवीरोथ रेजे ॥ १५ ॥ यस्मि- ञ्छासति भूतलञ्जलनिधिन्त्यक्त्वागतोद्वारकानाथोऽब्धौ मधुरे वसन् त्रिभुवनम्पूत- म्प्रकुर्वन्सदा ॥ श्रीनाथोपि तथैव गोकुलपदं मुक्त्वागमत्सादरं येनाकारि च सङ्गरस्तु तुमुलश्चौरङ्गजेबेन यः ॥ १६ ॥ तेनामोचि हि जेजियाभिधकरः श्रीमन्मरु क्ष्मावलत्स्फूर्जद्योधपुरं यदा परिधृतं श्री केलिवाटो ददे ॥ तत्तस्मायजिताय राष्ट्र- मपि यत् स्वीयन्ततोदापितम्म्लेच्छाधीशवराच्च सन्नयभुजा भीतिः परा भूभृता ॥ ॥ १७ ॥ देवप्रासाददेशे मृतयवनचिताचत्वराणि प्रवृत्तान्याज्ञप्तानीह तेनाथ यवन पतिना येन रुद्धानि सद्यः ॥ सर्वत्रैवापि गोद्विड्धरणिपतिसुतायाकबर्संज्ञकाय दत्वा भीतिङ्गतोयं मुनिगुणगिरिभूसम्मिते राजसिंहः ॥ १८ ॥ निर्दिष्टेब्दे धरण्यामवनितल- मसौ शासमानः सुतोस्य जातः श्रीमज्जयाख्यो नरपतितिलकः श्रीजयाब्धिं व्यधा- त्सः ॥ युद्धं चौरङ्गजेबस्य सुभटपृतनाभिश्चकाराति घोरं वर्षेस्मिन्बाणभूताऽग- विधुसुकलिते नाकसंपद्बभूव ॥ १९ ॥ प्रोक्ते संवत्सरे सावमरनरपतिः प्राप्य राष्ट्र- म्पितुस्तु प्राज्ञो धेनुद्विपो नो परिचरणमथो कन्यका न प्रदेया ॥ पत्रञ्चेत्थन्तु तैर्यन्नियमनवलितङ्कारयित्वात्तधैर्यो योमे स्याद्भागिनेयो निजविषयपदे राज्यभारस्य भर्ता ॥ २० ॥ इत्यादेशाक्तचित्तान् जयभटपुरावित्तान् महीपान् महीन्द्रः स्वे- चक्रेऽमित्रहन्ता नगरसमुनिभूसम्मिते स्वर्लुलोके ॥ उक्ते कालेथ भास्वानरिति- मिरचमूर्ध्वंसिदीव्यत्प्रतापस्तत्सूनुः श्रीनृपेन्द्रः समरहरिरभूच्छासयन् गामुदा- राम् ॥ २१ ॥ येन श्रीमत्तडागे गुमट विरहिता श्रीप्रपञ्चादिनाम्नि प्रासादे कारि सद्यस्त्रिदिवमदमुषि क्षिप्रमेवातिधन्या ॥ प्रासादालि र्विचित्रा खनिधिमुनिसु-

धांशुश्रितेऽब्दे नृपेण प्रोद्यत्कैवल्यमेतेन निरुपमपदं ह्यमेव व्यलोकि ॥ २२ ॥ निर्दिष्टेऽब्दे धरायां विदित भवहरिः क्ष्माधिपालः सुतोस्य भूतः प्लुष्टारिवर्गः सरासि हि जगतां सन्निवासं विशालं ॥ प्रासादङ्कारयामास सुवलिवलिचन्द्रावते-भ्योगृहीत्वा श्रीरामादिं पुरं सत्प्रथितजयपुरे माधवं भागिनेयं ॥ २३ ॥ ज्येष्ठी-भूतं विधायाशु सुनयनिपुणं प्राज्यराज्याधिनाथं वर्षेऽस्मिन्दिव्यलोक न्नगखवसु-विधुद्योतिते स्वीचकार ॥ कालेतस्मिन्प्रतापाधिपइति विदितश्चात्तराष्ट्रोस्य सूनु-र्भेजे खाष्टाष्टभूयक् समय गतदिनेऽभीतिमन्यैर्दुरापाम् ॥ २४ ॥ श्रीमत्सद्राजसिंहः क्षितिपतिरभवत्तस्य सूनुः शरण्यः सप्तेन्द्वष्टस्थिरायुक्समयविलसितेऽब्दे पदं स्वीच-कार ॥ योगीन्द्राणामगम्यं ह्यवनितलमसो शासयन् यस्य पुत्रः प्रोक्ते वर्षेऽरिसिंहो-नरपतिरभवत् क्षत्रमूर्द्धन्यनाथः ॥ २५ ॥ यस्मिन्रक्षाति भूतलं समजनि श्रीरत्नसिंहो द्वयोह्युत्पातो भुवने भयैकनिलयस्तत्वाष्टभूसम्मिते ॥ सङ्ग्रामश्च सुरासुरोद्भवइव श्रीमन्महाराष्ट्रिकैः श्रुत्वामुम्प्रलयञ्जनाश्च विदिताः सम्मेनिरे तेतियम् ॥ २६ ॥ सङ्ग्रामेवंतिकायां सलुमरनृपतिः पाढसिंहो ह्यरीणाम् भित्वा सेनान्दुरापान्नि-जवलनिचयैः सूर्यविम्बम्बिभेद ॥ तत्रैव श्री सहायादिपुरपतिरिहोमेदसिंहस्त-थैव प्राज्यं राज्यं सुरेन्द्रस्य सपदि लसितं प्राप्तवानुग्रवीर्यः ॥ २७ ॥ युग्मं ॥ योसौ सङ्गरमेत्य माल्जिसिंधियासेनातउग्रम्पुनश्चम्वा स्वस्य भटालिसंहतिकराङ्कत्वाथ दानान् मनाक् ॥ निर्वृत्ताम्प्रतिपक्षगाञ्च पृतनां श्री गोडवाडं ददौ देशं तन्नियमस्य सन्नयनिधिः सत्कारयित्वा दलं ॥ २८ ॥ दीव्यद्योधपुराऽधिनाथविजयः प्राख्यायतेनापि यत् साहस्रे ननु सादिनामनुदिनम्मेभृत्यतायाः पदे ॥ भूयास्तामिति-वोधितेन मरुभूपालेन भास्वच्छवींरेजे राजकुले जितारिररिसिंहः क्ष्माधिपालोन्वहम् ॥ २९ ॥ श्रीमज्जावदनीमचाख्यविदितन्देशंगनीमाय यो दत्वा स्वीयजनार्त्तिनाश-नविधौ सेनाभृतो तस्य तम् ॥ पश्चाच्चामरसंज्ञके गढपदे ह्यादाय सद्वाहिनीं यातोयङ्किल तत्र वुंदिपातिना दुर्भूभुजा तत्कृतम् ॥ ३० ॥ कृत्वा छद्मवृथाऽजितेन निहतस्तत्रैवसोऽपि स्वयं सौवर्णीकृतयष्टिनास्य पुरुषेणाग्र्यं भृशन्ताडितः ॥ भालेसा-वयने किलेह निरयं भुक्त्वा तथा चान्तकं नक्षत्राष्टविधुश्रिते हि समये सद्योऽभजत्स्वः-पदम् ॥ ३१ ॥ आदिष्टेऽस्मिन् महीभृत् समजनि समये धीरहम्मीरसिंहः सिंहो-ऽमित्रेभकुम्भस्थलनिधनविधौ सङ्गराराण्यमध्ये ॥ वेदाग्न्यष्टक्षितीज्ये विलसित-समये येन सद्यो व्यलोकि ह्यद्कैवल्यमेतेन सुरमुनिगणैः प्रार्थनीयं त्रिलोक्या-म् ॥ ३२ ॥ भीमः शत्रुविदारणे रणगतो दाने भुवां रक्षणे साधूनाञ्जनतार्त्तिनाशन विधावोजस्विनान्धीमताम् ॥ शम्भोर्ध्यानकलाविचारकलने माने परेपाम्पु

नर्विख्यातः किल भीमसिंहनृपतिर्ह्यन्वर्थनाम्नाभवत् ॥ ३३ ॥ वेदाष्टाष्टेन्दुवर्षे समजनि समरो हड्कियाखारभूमौ स्वीयैः सेवाभटैर्ये बहुलबलमहाराष्ट्रिकानां समूहैः ॥ नष्टास्तत्र प्रवीरा ह्युभयबलगता बालिरावो निरुद्धः कारायां वार्द्धिसप्ताष्ट विधुसुकलिते सन्धिरासीन्महीपैः ॥ ३४ ॥ गौरंडैरागतोत्र प्रथितमतिबलन्मानुषेषु प्रवीरष्टाटाख्योयस्तदीयो नयचयलसितो जएठसंस्थानभाक् सन् ॥ कर्नेलः कान्तिकातः परिचरणरतो भीमभूपस्य चासीद्वासो वर्षे लकायाञ्जलधिवसुगज क्ष्मामितेऽयं सुतोस्य ॥ ३५ ॥ लावण्यन्तस्य किम्मे किल विदितमतिर्भाविवित्पुष्पधन्वा कृत्वा साम्बान्निमित्तङ्करणमिति जहौ यस्य सोयं ह्युदारः ॥ राष्ट्रं सम्प्राप्य रेजे भवचरणरतः श्रीयुवानो नृपालः कालः शत्रुव्रजानां विबुधकुललसङ्गीत कीर्तिर्विशालः ॥ ३६ ॥ वस्वष्टाष्टेन्दुवर्षे ह्युदितनरपतिः प्राप्य चाजादिमेरप्रख्यं सत्पत्तनं लाठपदसमधिरूढाय सद्विएटकाय ॥ दृष्टिन्दातुङ्गतोयं ह्यवनिपनिकरान् क्रान्तनक्षत्रकान्तीन्तीर्थंव्रध्नायमानोनिजविषयगतां राजधानीमवाप ॥ ३७ ॥ मेनेयं सेतुरन्यो ललितकृतिरतैः कारिता सेतुनायो दीर्घो नद्यो तथोच्चैर्विलसति सरसः श्री पिछोलाभिधस्य ॥ सोयं श्री मद्युवानो बहुलबुधवरैरावृतो नित्यकृत्ये शृएवन्यामं सुशास्त्रार्थमभजत शिवज्ज्यायसा धौतचेताः ॥ ३८ ॥ आहूतोजातरूप्याचलवसतिजुपा किन्नु सद्यः स्वकीयं राष्ट्रन्त्यक्त्वा गतो ऽसौ नरपतितनयाजानिना श्रीयुवानः ॥ सख्यं स्वीयं विधातुन्निजरिपुदहनो ऽयं विदित्वेति सम्यक् बाणाङ्काष्टेन्दुवर्षे विदितसुसमये सद्दिने भूपवर्यः ॥ ३९ तस्यायं सरदारसिंह नृपतिर्ज्जातः सुतोभास्करो भूभागस्य शरारुमानवसरःसंशोषणैकप्रभः ॥ विद्वद्वृन्दरथाङ्गमोदनपरोभूजानिसत्पद्मिनीनाथो नाथकृतादरोभवरतिर्विन्ध्याचलम्भूपयन् ॥ ४० ॥ कृत्वा यात्रां महीपोऽहितवनदहनः प्राप्तवान् स्वं पदं यो निध्यङ्काष्टेन्दुवर्षे विलसितसमये सो यमेवाति सद्यः ॥ निर्दिष्टेऽस्मिंश्च काले प्रथितमतिबलच्छ्रीसुरूपोमहीभृज्जातः सन्नीतिकूपार इति सुविदितः शम्भुपादाब्जभृङ्गः ॥४१॥ अस्ति श्रीमतिमान् गुरुर्गुणगणैर्लोके पुरा यच्छ्रुतम् भूपः कोपि सुरूपसिंह इति किम्मत्वा सुरूपः स्वयम् ॥ मातुं यद्यशसा भरेण च पुनः पादैः स्वकीयैर्मुहुः सम्प्राप्याथ तुलाविधीन् जनचयैर्नाद्यापि संलक्ष्यते ॥ ४२ ॥ आक्रान्तेपृथिवीतलेपि निखिले गौरएडभूजानिभिर्नो सन्धामुररीचकार चतुरः कुर्वन् प्रजापालनम् ॥ मन्वादिस्मृतिवाक्यतो बुधगणैः सम्भूय शक्रोपमोनोजातो न जनिष्यते क्षितितले कारुएयरत्नाकरः ॥ ४३ ॥ वार्धीन्द्वङ्कक्षितीड्ये ह्युदितनरपतिर्विक्रमाम्भोजबन्धोर्वर्षे गौरएडसेना भजत ननु यदा दावमेवातिसद्यः ॥ दाहे गौरएडकानान्तृणमहिमवताङ्केपि नष्टावशिष्टा ये याताः श्रीसुरूपं शरणमिह बुधा

रक्षितास्तेथ तेन ॥ ४४ ॥ सन्दिश्यन्परमङ्गवां भुवि पुनः संरक्षणं धर्मकं क्षत्राणा-
मिह सव्यधात्तु विपुलङ्गोवर्द्धनाख्यं पुरं ॥ स्थित्वा तत्र वनेषु गाश्च बहुशः सद्वेम-
सम्भूषिता दिव्या ह्येष सुरूपसिंह नृपतिः सम्पालयँश्चारयन् ॥ ४५ ॥ सोऽयं-
म्भूपस्तुलां यच्छ्रुतिविधिवलितां संविधित्सुः शरण्यः पुण्यम्भूपैकमान्यन्निखिल-
निगमविच्छ्रीसदानन्दमूर्तिम् ॥ कृत्वा तामग्रतः क्ष्मावलयदिनमणि भूसुरांस्तर्पयित्वा
मत्वात्मानञ्च धन्यं शतमखमुदितो राजतेस्मात्र विन्ध्ये ॥ ४६ ॥ मत्वेमन्नरवा-
हनन्तु निधयः सद्यः स्वयं ह्यागताद्दश्यन्ते कृतिभिः किलेह किमहो श्रीर्वा किमेषा
द्रुतम् ॥ गोपालापरनामकन्निजधवं सद्धर्मसम्पादितं सन्मुक्तामणिहेमकूटकलिता-
नन्तप्रचारन्धनम् ॥ ४७ ॥ येनैषा रूप्यमुद्रा निजविषयपदे मुद्रिता स्वस्य नाम्ना
देशे देशेन्वचारि प्रथितमतिजुषाऽकिम्पचानाधिपोयम् ॥ अष्टक्ष्माङ्केन्दुवर्षे ह्युदित-
नरपतिः प्राप्तनाकाधिसम्पत् तस्यापत्यम्महीभृत् समभवदतुलः शम्भुरेषो परः
किम् ॥ ४८ ॥ कैलासाधिपतित्वमास्थितवति श्रीमत्सुरूपे नृपे शम्भुः शम्भुरिवा-
परः सजयति श्रीविन्ध्यभूमण्डयन् ॥ दण्ड्यानाशु विदण्डयन् परिगणान् संख-
ण्डयन् पालयन् सत्साधूनथ कोविदानपि सदा प्रोत्साहयन् वत्सलः ॥ ४९ ॥ चि-
त्रं शम्भुसुरूपमप्यतुलनङ्गार्त्तस्वरं धिकृतम् येनेहापि विमृश्य भासुरवपुर्धीरः सुमेरुर्द्रु-
तम् ॥ खण्डान रूपभरेण मापनविधौ चण्डान् विधाय स्वकान् सम्प्राप्तोपि तुला-
विधीन् जनचयैः सन्ताप्यते भाक्तये ॥ ५० ॥ कैलासः किलकामदन्निजधवं विन्ध्या-
चलस्थं बुधा जानन् किन्तु विधाय शीतकरणप्रोद्यन्नुस्वकीयान् द्रुतम् ॥ खण्डा-
न्द्यतमिस्रनाशनविधौ चण्डान् विवस्वत्पथा लीढाञ्छम्भुनिवासकादिमिषतोविन्ध्ये
स्वयं राजते ॥ ५१ ॥ यादुर्गा चण्डदैत्यप्रमथनरसिका चण्डिका भूतधात्री भूत्वासौ
लक्षचण्डी हिमगिरितनया मोदमाना किमत्र ॥ विन्ध्ये जाता स्वकीयम्पतिमपि
नियतम्भूपतिम्मन्यमाना विप्रेभ्योदापयन्ती कनकगिरिमथो शम्भुना क्रीडति-
स्म ॥ ५२ ॥

॥ अथ प्रथमपट्टिकाशेषमापूर्य्यते ॥ दृष्ट्वा पान्थान् श्रमाक्तानथ पशु-
निचयान् कण्टकैर्दन्तुरैयद्दूरेषा चाच्छमार्गैर्ननु कृतिकुशलैर्भूषिताकारि येन ॥
रुग्णान् दीनाननाथान्निजविषयगतान्व्युत्पिपत्सूंश्च बालांश्छालावैद्यौषधीनामरु-
णमुखगविद्योदधेः शम्भुनाम्ना ॥ ५३ ॥ दृष्ट्वा दुर्लोकवृत्तिम्पिशुनमुखज-
नानन्दयन्तीं सतान्तान्धावन्तींसद्धरित्र्याम्महितमपि महामानमामर्दयन्तीम् ॥
क्षोणीशानां क्षणाय क्षपितकलिमलो भाविनाम्पुम्परीक्षाप्टीकालङ्कारयुक्तां सनर-
पतिरसौ कारयन्राजतेस्म ॥ ५४ ॥ मासं मासं सुसाम्बं श्रुतिगदितपथादर्चयन्

स्नापयन्स वित्तान्पत्नीभिराढ्यानपि विबुधगणान् भूसुरान् भोजयन् यत् ॥ वासोभिर्द्रव्यभूषादिभिरपि सततन्तोषयन्ताम्भुवङ्गाः सौवर्णानीह दत्वा शतमखमुदितो मोदते कान्तिकान्तः ॥ ५५ ॥ भ्वग्न्यङ्केन्दुश्रिते ऽब्दे नरपतितिलके शम्भुभूपे त्रिलोक्याङ्कैलासस्याधिपत्यञ्जुषति सति परं ह्रीशशुक्लेतरस्मिन् ॥ शैवं यत्पार्थिवाद्यर्चनमतिललितं सञ्जुषाणे त्रयोदश्यान्धीरे धर्ममूर्तौ शिवनिशि विबुधैरीड्यपादारविन्दे ॥ ५६ ॥ प्रोक्ते वर्षे सुयोगे ह्युदितपदगते मार्गशीर्षेथ मासे सल्लग्ने चोच्चसंस्थेशुभखचरसमाजे दिनेऽसौ दिनेशः ब्राह्मे भौमे सुभद्रासनमुदयपदम्भ्राजयन् यस्य पुत्रो भूपः श्रीसज्जनेन्द्रो जयति च जगतीपृष्ठभागेत्र विन्ध्ये ॥५७ ॥ क्षात्रं संस्कार मेषः करगुणनिधिशश्यङ्किते हायनेयं शत्रूणाङ्कालदण्डं विबुधकुलवतां ब्रह्मदण्डञ्जनस्य ॥ सन्धादण्डम्परेशोरतिपतिरमणः सन्दधानः शरण्यं वर्ण्यङ्कव्याजदण्डङ्कलयति विबुधाः सज्जनक्ष्माधिपालः ॥ ५८ ॥ कश्चिद्भूपालवर्योव्रतविधिरसिकः शोधितुं स्वं शरीरन्दातुं यद्गोसहस्रङ्कृतविमलमतिस्तास्थिवानुग्रधैर्यः ॥ श्रुत्वेत्थं किन्नु सद्योह्युदयपदमगाद्यामदैर्घ्यञ्च कृत्वा धेनूनान्तच्च दृष्ट्वा सुजनविमुदितो राजते खेंशुमाली ॥ ५९ ॥ योधृत्वा ब्रह्मचर्यन्निगमफणिवचः पाठनायैव सद्य श्चित्रंश्रीसज्जनोरं रचयति सुपथो रूप्यमुद्राददानः ॥ विप्रेभ्यो यान्परीक्ष्य प्रचयति च तान् सप्रतिष्ठाधनाढ्यान्यावज्जीवं कृतारिर्जयति च जगती येन राज्ञातिधन्या ॥ ६० ॥ केचित्कैलासवासः कलिमलकदनो जातएवात्र विन्ध्ये दृष्ट्वा वेदांश्च वर्णान् कलिकलुषरतान्तारयन्सज्जनेन्द्रः ॥ गीर्भिर्लेखाश्रिताभीरचयति वलितान् सज्जना वै वदन्ति तिष्यैनोडाकिनीभिर्नयचयलसितो राजते भूमिपालः ॥ ६१ ॥ इङ्लण्डीयादिविद्याब्धिमथनरसिकश्रीलसन्नागरेणाचार्यस्थानस्थविद्याब्धिसकलशशिनात्रेति संविश्रुतेन ॥ शम्भोर्यत्वम्महोसीति निखिलनृपसद्भालयोग्यम्महीयो भ्राजच्छ्रीमाद्विहारिप्रथितपदजुषा शम्भुभक्तेन सद्यः ॥ ६२ ॥ श्रीमन्नैष्ठिकमास्थितेन महतामाद्येन सज्जातिना मान्येनाथ महीभृतां क्षितितले गौरण्डकानामपि ॥ यद्वै भारतपत्तनेशितुरनेनेष्टेन शिष्टेन च प्रेष्टैर्नीतिभरैर्गुणैः सुजटितो भूपालरत्नं यतः ॥ ६३ ॥ श्रीमद्वाणीविलासन्त्रिदिवपतिपरिश्लाघ्यभाग्यं समस्तग्रंथग्रामालिमालं प्ररचयति विधिः सज्जनेन्द्रोतिमात्रम् ॥ रम्यन्नाकद्रुमाभं विपथरतिमतान्तर्कजालप्रभेदे स्वेष्टं श्रीश्र्येकलिङ्गं शिवनिशि सततं याति संसेवितुन्तम् ॥ ६४ ॥ योसौ श्रीमज्जलेशः सुजननरपते ह्युत्तमाङ्गेथ सेतौ रुग्णो जातोजयाब्धेमिपतइति भवान् शिल्पिभिर्वैद्यवर्यैः ॥ ग्रावक्षारैः शिलाभिर्निरुजममुमयन्तं यतो भावयत्यैतैर्लक्षैर्मुद्रिकाभिर्लसितसुसलिलो जीवनन्नो जहाति ॥ ६५ ॥

यत्पूर्वजात्समरसिंहनृपाधिपालाच्छ्रीनाथनामतनयो जनि यः कनिष्टः ॥ वागोरनाथइति यङ्कृतवान्नृपालञ्जज्ञे ततोत्र किल भीमपदप्रसिद्धः ॥ ६६ ॥ यस्यायं सबदानसिंहइति यो जातः सुतः क्ष्मातले धर्मिष्टः करुणानिधिः समजनि श्रीशेरसिंह स्ततः ॥ शार्दूलप्रथिमप्रतीततनयः शार्दूलसिंहोभवज्ज्येष्ठो यस्य कलत्रमत्र विदितञ्ज्येष्टं शरण्यं सताम् ॥ ६७ ॥ नन्दाह्यानन्दकन्दा वितरणविधुरा कापिचैपाथ नाम्ना धाम्नाऽधर्मालिविध्वंसनविधिरसिका चान्द्रिका चित्रमेतत् ॥ काले शम्भुं कुमारं नृपमपि सुषुवे मेदपाटाधिनाथं ह्यन्वर्थं येन राज्ञा जयति गुणमयी मूर्त्तिरत्रापि धन्या ॥ ६८ ॥ सेयं स्वर्गौरिवाद्यापि जयति जननी शम्भुभूपस्य नन्दा मासं मासं सुरेज्यं ह्यवनिसुरचयान् स्नापयन्तीह विष्णुम् ॥ जिष्णुं लोकत्रयस्यापि वसुसुवसनैर्भोजनेस्तर्पयन्ती शय्याभूषाभिरेतद्बुलिमलदहना चार्चयन्ती सदारान् ॥ ६९ ॥ साधूनां सद्यतीनाम्परिचरणरता पेयदेयादिभिर्या द्रव्यैरेषा पुनाना मुनिजनलसितं विन्ध्यभूमण्डलं यत् ॥ गेहान्वित्तादिसंघान् वितरति महिता भूसुरेभ्यो भवानी दारिद्र्यं दानवाद्यन्दलयति विबुधानाममित्रं विचित्रम् ॥ ७० ॥ पत्नीहीनाश्चदीना परिणयनपथा ज्यामराये गृहस्थाः कन्यादानैर्विचित्रैरिह जननि मुदे देवपित्रर्चनाय ॥ कंसाराते स्तथैते विपुलधनचयास्ते क्रियन्ते त्वयेति नोजाताभाविनी वा ननु तव सविधान्तःपुरेत्रेति चित्रम् ॥ ७१ ॥ पुत्री पौत्री प्रपौत्री भवसि जननि यच्छक्तसिंहस्य धन्या भ्राजच्छ्रीमहलेलस्य भुवि सुविदिताच्छत्रसिंहस्य नाम्ना ॥ वीकानेराधिनाथात्मजपदभजतोलालसिंहस्त्वदीयो भ्राता यस्यात्मजोयन्निजविषयपदे पर्वतेन्द्राभिधोद्य ॥ ७२ ॥ भ्रात्रीयस्ते च पुत्रोभवति जननि यन्मेदपाटाधिनाथोवीकानेराधिनाथो विलसति सुतरां क्षत्रमूर्द्धाभिवन्द्यः ॥ स्त्रीरत्नंस्त्वादृशं संस्फुरति कलियुगे धर्ममत्तेभसिंहे स्थिटो गोपालमूर्त्तिस्तव मतिमकरोन्मन्दिरायात्मनोयम् ॥ ७३ ॥ पूर्णोसौ पूर्णकामोऽखिलभववसनो बालरूपोथ खर्वम्प्रासादं वाञ्छतिस्म प्रमुदितवदनो नेति चित्रं कवीन्द्राः ॥ क्षीराब्धीशोपि गोष्ठेषु सुरमुनिनतो वाञ्छतिस्म प्रभाते गोपालो गोकुलेस्मिन धृतमनुजवपुः क्षीरमल्पन्न किं सः ॥ ७४ ॥ पारिव्रज्ये स्थितोपि प्रणमति सततम्मातरं सर्ववन्द्यो धर्मोह्यपोत्र जानन् तव मतिरिति यन्मन्दिरङ्कारयामि॥गोपालस्याहमद्यैव विमलमतिमाञ्छम्भुभूपोच्छमूर्त्तिर्मातुर्भक्तो धरायामवददथ निजान् कारयध्वन्तदिष्टम् ॥ ७५ ॥ प्रासादस्य विलक्षतां विमलतान्दृष्ट्वाऽथ तत्स्फीततां गोपालः करणं स्वकीयमकरोद्वेधा हि खर्वं यतः ॥ प्रीतः स्वेष्टतमाप्तितस्त्रिभुवनव्यापी त्रिलोकीपतिर्जातो गोकुलचन्द्रमा विजयते भक्तान्द्रुतन्तारयन् ॥ ७६ ॥ प्रासादनिर्माण विधौ तु लक्षं लक्षं सदावर्त्तनधर्मवृन्दे ॥ लक्षं सहस्राणि खवेदवन्ति भूपाकृतो गोकुलसोम-

कस्य ॥७७॥ बीकानेराधिनाथेन विहितसमये मातुलोपायनं यन्नीतन्ते भ्रातृपुत्रेण जननि सकलं हस्तलक्षद्वयाढ्यम् ॥ दत्तन्तद्याचकेभ्यः परिचरणविधौ गोकुलाब्जस्य सम्यग् धन्यस्ते पितृवर्गः कृत इति विधिना सज्जनिस्ते कृतात्र ॥ ७८ ॥ सार्द्धेन्दुलक्षन्तु प्रतिष्ठितावस्थैहैव जातम्बुधभूसुरेभ्यः॥ दत्तं हुतन्दानविधौ तथाग्नौ तुलाविधौ मातरिति प्रयोगात् ॥७९ ॥ सप्तामी मुनयो व्रजन्तु नियतं मत्साक्षिभावं पुनर्गोत्राः सप्त भवन्तु सत्कृतिमयेऽस्मिन्नुत्सवे किम्बुधाः ॥ मुद्राणां मुनिलक्षकाणि मनसा संकल्पितानि त्वया भ्राजन्ते ननु तत्र तत्र लसिते सज्जातरूप्यस्य यत् ॥ ८०॥ चित्रम्मातस्त्वदीये विलसति महिते मन्दिरीयप्रतिष्ठाकृत्ये त्रेता चतुर्धा भवनतिललितो लोलुपो हव्यपुञ्जे॥ हव्ये सन्मण्डपे यद्किल यजनविधावेक एवेति मत्वा चेष्टो यो नेष्टमेतन् मम विवुधगणाजाननेवेति सद्यः॥८१॥जायन्तान्नामकामन्ननु धरणिभृताम्मन्दिराणि प्रतिष्टाकृत्यानीमानि चित्रं तव जननि लसन् मन्दिरीयोत्सवे यत्॥ ऋत्विक् ते ये च जाप्ये धरणिसुरचयास्ते वृताःस्वर्णभूषावासोभिःस्विष्टमूल्यैः शतमखलसितान्निर्ज्जरांस्तर्पयन्ति ॥ ८२ ॥ पदं स्वर्गन्त्यक्त्वाऽभवदथ महीन्द्रः सुरपतिर्यतः पौरोहित्यम्पदमपि तथा शम्भुमिपतः ॥ भजन्वागीशोयं विलसति बुधेभ्यो नृपतितैः प्रतिष्ठाकृत्येऽस्मिन्विदितशिवराजाख्यविबुधः ॥ ८३ ॥ अकामः कामारिः श्रितचरणचञ्चुश्च चतुरस्तथा श्रौते स्मार्ते ननु वुधजनेभ्योरसमुखः सुधारामः श्रीमान्निखिलनिगमानन्दरसिकः प्रातिष्ठाकृत्ये ऽस्मिञ्जयति पृथिवीदेवलसितः॥ ८४ ॥ सपाद्रक्ताङ्कर्त्तुन्द्रविणनिचयैरेपपरभृत्समस्तां सामग्रीं स्फुरति किल चोक्तोत्सववरे ॥ सवाईलालाख्योवुधनिजकुटुम्बव्यसनवित् स्फुटन्धर्माध्यक्षो भवचरणपादाब्जमधुपः ॥ ८५ ॥ गार्हस्थ्येपि स्थितायैव विमलमतिना शम्भुभूपेन यस्मै मान्यम्पैतामहं यन् निखिलनयभुजाऽदायि सम्मोदतेत्र ॥ ब्राह्मन्तेजो दधानः किल यजनविधौ यज्ञशालामवाप्य श्रीमान्सन्माथुरोयङ्कृतमतिलसितो धर्ममूर्त्ति र्धरायाम् ॥ ८६ ॥ सप्ताहं यस्य हर्म्ये स्वजनपरिवृतोन्तः पुरेणावृतश्च दिव्यान्भोगांश्च भुंजन्नवसदतिमुदा धातरेतत्तवेदम्॥सेवासंभारवृन्दङ्कृतमतिविपुलं शम्भुभूपस्य चित्रन्धन्यस्त्वन्तेथ सूनूरघुरिति विदितो भाति वैकुण्ठचेताः ॥ ८७॥ सन्धातारमयम्मुदा नृपपतिः श्रीशम्भुसिंहः स्वयं राज्ञां रावपदेन भूषिततनुं कृत्वा तथा वैभवैः॥ भातिस्म प्रियवल्लभन्ननु पुनर्देवारिदेशे धनैर्वापी चाच्छजला ह्यकारि विजले येनाद्य पान्थार्तिहा॥८८॥ धाता यं वदनः पुमर्थसदनः क्षान्तिङ्क्षितेरामुपन् विद्वत्साधुजनान् जुपन् परिचरञ्छ्रीशम्भुसिंहन्नृपम् ॥ पेयैर्भोज्यवरैरवाप्तविभवोद्युक्तोत्सवे भृत्यतामातन्वञ्जयतीह सद्गुणगणालङ्कारसम्भूपितः॥ ८९ ॥ अस्तिश्रीशम्भुभूपस्य मणिमयमिव प्रीतिपा-

त्रं विचित्रं योसौ सत्सांवलाख्यः कविकुलमुकुटो नीतिधामाचरिष्णुः ॥ प्रासादस्य-प्रतिष्ठाविधिपरिचरणे स्थास्नुरप्येपसंसद्यद्यापीह प्रवीणोभवति नरपतेः सज्जनस्याति-मात्रम् ॥ ९० ॥ कैलासीयति मेदपाटविषये सच्छग्नलालाख्यया जातः शम्भुसखो महीभृति पुनः सच्छ्रेयेकलिङ्गे सति संस्थाप्याथ निधीनिहैव नयविद्धृत्वा ऽचलाया रसं ह्यादेशात्सुमहीभृतो घनइव द्रव्यं मुहुर्वर्पति ॥ ९१ ॥ दृष्ट्वा गौरण्डनीतिन्निजविपय-पदे प्राड्विवाकः कृतोयन्नीत्या सम्बोध्य सम्यङ् ननु विशदमतिर्यः पनालालसंज्ञः॥ संधां स्वीयान्दधानो ह्यवनिपतिपतेः शम्भुभूपस्य वैश्यः प्रासादीयप्रतिष्ठाकृतिपरि-चरणे मोदते कान्तिकान्तः ॥ ९२ ॥ लालाख्यः प्यारसंज्ञो भवति च रसिकः श्री-भवे देवसंज्ञो राज्ञाम्मान्याः कुलीना धृतनरतनवोन्तःपुराध्यक्षभाजः ॥ भौमान् भोगा-ञ्जुपाणास्त्रिदशजनिजुपोदर्शिते ह्युत्सवे ऽमी शम्भो मात्रादिकानाम्परिचरणविधौ प्रीतिमन्तो भवन्ति ॥ ९३ ॥ धाता यः सुगणेश एप विदितः क्षान्तिं क्षितेरामुप-न्विद्वत्साधुजनाञ्जुपन्परिचरञ्छ्रीशम्भुसिंहं नृपम् ॥ पेयै भोज्यवरैरवाप्तविभवो ह्युक्तोत्सवे भृत्यतामातन्वञ्जयतीह सद्गुणगणालङ्कारसंभूपितः ॥ ९४ ॥ सम्य-ञ्ज्योतिर्विदांयन्मुकुटमथ परञ्जीवनं रूपमेतद्धृत्वा चाङ्गञ्चतुर्धा निगमसुरतरुं शम्भुभूजानिमेतम् ॥ अङ्गीभूयात्र चित्रं परिचरति मुहूर्त्तादिसंशोध्यमानम्मानन्नक्षत्र-चारस्य जयति ललितम्मूर्त्तिमद्योतमानम् ॥ ९५ ॥ क्ष्माङ्गाङ्केंदुश्रितेऽब्दे सुरगुरुदिव-से शम्भुभूजानिनाथः प्रासादस्य प्रतिष्ठामरचयत सुमध्ये दिनम्पौपणेऽस्मिन् ॥ सल्लग्ने गोकुलाब्जस्य निजनृपकुलैरावृत्तोमाधवेऽसौ मासे पक्षे वलक्षे शुभभवनभजत्खेचर-ग्राममाले ॥ ९६ ॥ अमृतरामइतिप्रथितश्रुतिस्मृतिपु दक्षमतिर्गदितोधुना ॥ अ-खिलकर्मकुलन्नतु कारयन् नृपवरैरिह दीव्यति भूसुरः ॥ ९७ ॥ अस्ति श्रीवल्लभाचार्य कुलमतुलमद्यापि सद्योयदेतद्भक्तिन्निर्वाणवल्लीमधिकृतपुरुपे द्योद्रुमे स्थापयत्सत् ॥ विष्णोर्जिष्णोस्त्रिलोक्या अपि विबुधगणालङ्करिष्णोश्च तस्मै प्रीत्यैश्रीशम्भुभूपोमुररि-पुजयनं ह्यर्पयन् राजतेस्म ॥ ९८ ॥ श्रीगोकुलचन्द्रमसे भूवाणासामताकवीथाख्यान् ॥ अयुतोत्पत्तीन्ग्रामान्तणवाखेडं समर्पयच्छम्भुः ॥ ९९ ॥ आसीच्छ्रीसांख्ययोगा-ब्धिमथनरसिकः पाणिनीये च शेपो मीमांसामौलिरत्नं श्रुतिशिखरविदान्दैशिकेन्द्रो महात्मा ॥ राज्ञामप्येकमान्यो निखिलनगधरापोडशज्ञाद्विपेन्द्रो धन्योसौ शङ्करा-र्यो नतयति सुततिः श्री सदानन्दमूर्तिः ॥ १०० ॥ वर्षे काण्डाग्निनिध्य-ब्जकलितकरणे वाहुले मासि पक्षे तच्छिश्यः काशिदत्तः सुजनमनुजपस्याज्ञयायं-वलक्षे ॥ गोत्रे कृष्णात्रिचित्रे ह्यकृत कृतमतिः कृष्णदत्तात्मजोऽलं सौरे चैनाम्प्रश-स्तिं सुभुजगदिवसे मेदपाटीयजातिः ॥ १०१ ॥ मुद्रिकाणां सहस्रन्तु भूमीनाम्प-

ञ्चकन्तथा ॥ काशिदत्ताय नन्देयमदान्मोदसमन्विता ॥ १०२ ॥ विद्वद्वृन्दसहस्र-पत्रसवितुः श्रीकाशिदत्तस्य वै ज्योतिर्विद्वरपूज्यजीवनसुतः शिश्यो द्वितीयादिने ॥ वेदत्र्यङ्ककुहायने शुचिसिते रामप्रतापोऽलिखत्प्रीत्यागुर्जरगौड़जातिरिह चाशुद्ध-म्बुधैः क्षम्यताम् ॥१०३ ॥ सूत्रधारश्वेनरामः प्रासादङ्कृतवान् स्वयम् ॥ तत्पुत्र-जीवनाख्येन टंकितैषा प्रशस्तिका ॥ १०४ ॥ श्रीरस्तु॥ श्रीकल्याणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

तोटक छन्द.

रजताचल भूप सरूप गये । नृपआसन शम्भु नृपाल भये ॥
शिशु भूप निहार प्रबन्ध चह्यो । अंगरेजनको अधिकार रह्यो ॥ १ ॥
सिरदारन की इक मेल सभा । निज स्वारथ साधक हीन प्रभा ॥
कर खारज पंच निकार दिये । युग भृत्तिनकों मुखतार किये ॥ २ ॥
जब बागिय होय प्रजा निकरी । हटनाल हि बंध करी बिकरी ॥
फिर शम्भुनिवास अवास बन्यो । महिपालहिको अधिकार मन्यो॥३॥
पद केहरिसिंह प्रधान दियो । जिहि दिग्घ अकाल प्रबन्ध कियो॥
फिर खास सभा बनवाय भले । निज शासनसे सब काम चले ॥ ४॥
अजमेर पधारन काज चले । तिहिं ठाँ हितकारक लाठ मिले ॥
नृप भल्लहिकी अभिलाष फली । दिय इज्जत शम्भु दिवान बली ॥५॥
अति उत्तम राजप्रबन्ध किये । लघु उम्मरमें जशवास लिये ॥
तगमो बड़ क्वीन पठाय दियो । फिर शम्भु हिमाचलवासकियो॥६॥
नृप सज्जन आशय राख हिये । फतमाल बिभाषय लेख किये ॥
कविराज यहै इतिहास कथा । किय शम्भुनिधान विधान जथा॥७॥

महाराणा शम्भुसिंह,

उन्नीसवां प्रकरण समाप्त.

वीसवां प्रकरण,

महाराणा सज्जनसिंह.
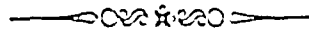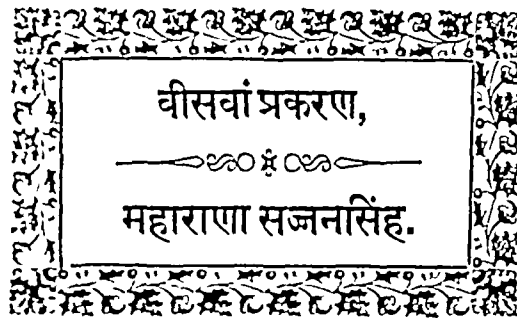
जबकि हमलोग महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी दाहक्रिया विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२९१ ता० २६ शश्र्वान = ई० १८७४ ता० ८ ऑक्टोबर] को करके क़रीब दो बजे दिनके वापस शहरमें आये, तो उसवक्त क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ शहरके दर्वाज़े बन्द और ठौर ठौर फ़ौजके गार्ड तईनात थे, बाक़ी शहरमें सन्नाटे और रोनेके सिवा कोई दूसरी बात नहीं दीख पड़ती थी. इन महाराणाके कोई औलाद नहीं थी, इसलिये बेदलाका राव बख़्तसिंह जो दाना सर्दार और अपने मालिकका ख़ैरख़्वाह था, महाराणा साहिबकी आख़री सवारीमें साथ न गया, इस ख़यालसे कि शायद गद्दीनशीनीकी बाबत कोई बखेड़ा न पैदा होजावे. उसने राजद्वारमें रहकर गद्दी नशीनीके मुआमलेमें पोलिटिकल एजेण्ट से सलाह करनेके बाद कुल उमराव, सर्दार वगै़रह लोगोंको अपने अपने मकानोंसे महलोंमें बुलवाकर सलाह की, कि गद्दी ख़ाली न रहनी चाहिये, जिसको बिठाना हो आजही बिठा दियाजावे. यह सुनकर सब लोग सोच विचार करने लगे, तब राव बख़्तसिंहने कहा, कि अगर कुल लोगोंको मेरी राय मन्ज़ूर हो, तो महाराज शक्तिसिंहके पुत्र सज्जनसिंहको, जो गद्दीका मुस्तहक़ है बिठादेना चाहिये. इस रायको तमाम लोगोंने पसन्द किया, और यह

राय ज़नानी ड्योढ़ीमें मालूम कराईजानेपर वहांसे भी मन्जूरी आगई. तब पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् राइट साहिब तो शम्भुनिवासको चलेगये, और रियासती लोगोंने महाराणा सज्जनसिंह साहिबको सिफ़ेद पोशाक पहिनाकर दरीखानह सभाशिरोमणिमें लाकर गद्दीपर बिठादिया. फिर बेदलाके राव बख्तसिंहने दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणा साहिबके सिरसे ग़मीकी चादर दूर करके कानोंमें मोती पहिनाये, और चारणोंने उनको महाराणा शम्भुसिंह व स्वरूपसिंहका नाम लेकर शुभाशिष दी. इसके बाद महाराणा साहिब छोटी चित्रशालीमें पधारगये. उस समय अस्मदादिकोंका शोकसंतप्त दिल पसीज पसीजकर आंखोंसे आंसू टपकते थे, क्योंकि एक तो जवान मालिकके चलेजाने और दूसरे जानशीन होनेवालेका बचपन तथा महाराज शक्तिसिंहकी बुरी आदतोंका असर उनके मिज़ाजमें होनेका भय था, जिससे नाउम्मेदी और शोक संतापने हम लोगोंको घबरा रक्खा था, लेकिन् पेट भरनेकी फ़िक्रसे दिलको मज्बूत करके सब कामोंमें शरीक रहना पड़ा. सूर्यास्त होनेके बाद महाराणा साहिबके हुक्मसे शहरके दर्वाज़े खोलेगये, और कारख़ानेजातके दारोग़ोंने कुंजियां नज्र कीं, वे सबको वापस मिलीं, और शहरमें महाराणा सज्जनसिंह साहिबके नामकी दुहाई फेरी गई. मस्ल मश्हूर है, कि "होनहार बिरवानके चिकने चिकने पात", महाराणा साहिब तो गद्दीपर बैठतेही औरके और होगये. पेश्तर उनमें बिल्कुल लड़कपन मालूम होता था, अब एकदम दानाई झलकने लगी. उसी दिनसे दिलसे यह कोशिश करने लगे, कि अस्मदादि महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी मिहर्बानी वालोंका रंज घटाया जावे. उनकी ऐसी नेक आदतें और बुद्धिमानी देखकर छोटे बड़े नौकरोंको हिम्मत होगई, कि इनकी ख़िद्मत करनेका नतीजह ठीक होगा, लेकिन् कई मत्लबी लोग अपना अपना गिरोह बनाने और महाराणा साहिबको अपने क़ाबूमें लेनेकी कोशिशें करने लगे, जैसाकि रियासतोंमें खुद मत्लबी लोगोंका शुरूमें दस्तूर होता है. महाराणा साहिब तो बड़े तेज़ तबीअत थे, खैरख्वाह लोगोंकी बातोंपर ज़ियादह तवज्जुह करने लगे, यहांतक कि महाराज शक्तिसिंहकी रायको भी नापसन्द करने लगे, लेकिन् उनकी बुज़ुर्गीको माननेका जितना हक़ है बराबर मानते रहे.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण १ [हि० ता० १४ रमज़ान = .ई० ता० २६ ऑक्टोबर] को गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से गद्दीनशीनीकी मन्ज़ूरी आई, जिसकी खुशख़बरी पोलिटिकल एजेएट राइट साहिबने महलोंमें आकर सुनाई. फिर विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १८ रमज़ान = .ई० ता० ३० ऑक्टोबर] को पोलिटिकल एजेएट राइट साहिब छोटी चित्रशालीमें दर्बार हुआ जहां आये. यहां दर्बार होनेके समय

उमराव सर्दारोंमें बैठककी बाबत बहुत तक्रार और हुज्जत हुई. वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने घाणेराव ठाकुरके ऊपर पांचवें नम्बरकी बैठक भींडरके महाराज हमीरसिंहको .इनायत की थी. ऐसा पेश्तरसे भी होता रहा है, याने महाराणा दूसरे अमरसिंहने उमरावोंकी नशिस्त क़ाइम की, उसके बाद महाराणा दूसरे जगत्सिंहने देवगढ़के रावत् को बेगूंके ऊपर सातवीं बैठक दी, और इसी तरह बानसीके ऊपर भैंसरोड़, और पारसोलीके ऊपर कुरावड़को नशिस्त मिली थी. ज़मानह हालमें महाराणा शम्भुसिंह साहिबने आमेटके ऊपर मेजाके रावत् अमरसिंहको नशिस्त .इनायत की. अगर हम ऐसी नज़ीरें बड़ी ओल (दाहिनी लाइन) के सर्दारोंमें ढूंढें, तो बहुत मिलसक्ती हैं, लेकिन् तवालतके सबब ऊपर लिखी बातें मिसालके तौर लिखी हैं. ऐसी हुज्जत पेश्तर कभी पेश न आई, जिसका कारण भींडर महाराजके पुत्र मदनसिंहकी बेपर्वाई और घमंड हुआ; उसने दूसरे सर्दारोंको तुच्छ और अपनेको अक़्लमन्द दिखलाकर जब्रन तामील करवाना ज़ाहिर किया, जिसपर दूसरे सर्दारोंने भी मदनसिंहकी इस बेपर्वाईसे रंजीदह होकर महाराणा साहिबकी ख़िद्मतमें दावा पेश करदिया; लेकिन् महाराणा शम्भुसिंह साहिबने इन लोगोंको लाजवाब करदिया था, यहांतककि बीजोलियाके राव गोविन्ददासके बड़े बेटे बैरीशालको मदनसिंहके नीचे बिठलाकर तामील करवादी थी. इस वक़ महाराणा साहिबकी कम .उम्र और बेइख़्तियारीके मौक़ेपर दावा फिर सरसब्ज़ हुआ, बल्कि इसवक़ महलोंमें दर्बार हुआ, जिसमें सर्दार एकट्ठे हुए उसवक़ बैठकपर सर्दारोंके आपसमें फ़साद होजानेकी नौबत पहुंची; लेकिन् पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् राइट साहिब एक हाथसे बेगूंके रावत् मेघसिंह और दूसरे हाथसे कुंवर मदनसिंहको समझाइशके तौर थामकर महलोंके नीचेतक रुख़्सत कर आये; फिर दूसरे सर्दारोंको भी पान बीड़े देकर बिदा किया. कर्नेल् राइटने इस फ़सादकी रिपोर्ट सद्रमें करदी. इसवक़् कुंवर मदनसिंहकी आदतसे कुल रियासती लोग व ख़ासकर उसके रिश्तहदार भी बख़िलाफ़ थे, सबोंने यही चाहा कि इस बातमें हतक करवाकर मदनसिंहका ग़ुरूर तोड़दिया जावे. इस शख़्सको ऐसा ग़ुरूर था, कि जिसने अख़ीरमें वर्तमान महाराणा साहिबको भी नाराज़ किया, जिसका ज़िक्र हम आगे लिखेंगे.

इन्हीं दिनोंमें महता पन्नालालको जो कर्णविलासमें क़ैद था, कर्नेल् राइट साहिबकी सलाहसे रिहाई होकर मेवाड़के बाहिर चलेजानेका हुक्म मिला, और महाराज सोहनसिंहको वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने अपने आख़री वक़्में उदयपुरसे चलेजानेका हुक्म दिया था, वह शहरसे दो मील ईशान कोण खुशाल (खुशहाल) बाग़में जारहा. उसने दावा किया, कि समर्थसिंहकी गोद होनेके कारण मेवाड़की गद्दीका हक़दार मैं हूं,

लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने इस दावेको कुवूल नहीं किया, और उसे अपनी जागीर बागोरको चलेजानेका हुक्म मिला, और महाराज शक्तिसिंहको बागोरकी हवेलीमें रहनेका हुक्म होकर जागीरके एवज़ राज्यसे नक्द रुपया ६५०००) के क़रीब सालानह मुक़र्रर करदिया गया.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० ता० १५ शव्वाल = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को राज्याभिषेकोत्सव होनेके बाद विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० ता० १६ शव्वाल = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणा साहिब श्रीएकलिङ्गेश्वरके दर्शन करनेको पधारे और मन्दिरसे घोड़ा, सरोपाव व तलवार पाकर वापस उदयपुर आये. यह दस्तूर क़दीमसे चला आता है, कि मेवाड़के राजा श्रीएकलिंगेश्वर महादेव, और उनके दीवान महाराणा साहिब हैं; जिस तरहपर, कि महाराणा साहिब अपने मातहत मेवाड़के सर्दारोंको गद्दीनशीनीका दस्तूर देते हैं उसीतरह वे श्री एकलिंगेश्वरके मन्दिरसे हासिल करते हैं. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ शव्वाल = ई० ता० २८ नोवेम्बर] को कर्नेल् राइट साहिब पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ महाराणी क्वीन विक्टोरियाकी तरफ़ से गद्दी नशीनीका ख़िल्अत लाये, महलोंके अन्दर छोटी चित्रशालीमें दर्बार हुआ, १ हाथी, २ घोड़े और सरोपाव वग़ैरह पेश होकर गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से ख़रीतह पढ़ा गया और दस्तूरके मुवाफ़िक़ तोपोंकी सलामी सरहुई, फिर दर्बार वर्ख़ास्त हुआ. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = ई० ता० ९ डिसेम्बर] को शुक्रग्रस्त सूर्योपराग दिखाई दिया, याने शुक्रके तारेकी छाया सूर्यमें दिखाई दी. यह पर्व सैकड़ों वर्षोंमें होता है. जो इस समयपर बापूदेव शास्त्री वग़ैरह ज्योतिषियोंके गणितसे ठीक समयपर मिलगया. विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड नार्थब्रूक साहिबका ख़रीतह लेकर पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् राइट साहिब आये, रेज़िडेन्सीसे रवानह हुए, तब ११ तोपकी सलामी रियासती तोपख़ानहसे सर हुई और छोटी चित्रशालीमें दर्बार हुआ, ख़रीतह पढ़ा गया उस वक्त २१ तोपकी सलामी सर हुई. विक्रमी माघ शुक्ल ६ [हि० १२९२ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८७५ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा साहिबने स्वकीय पुस्तकालय याने ख़ास कुतबख़ानह बड़ी चित्रशालीमें बनाकर उसका नाम "सज्जन वाणी विलास" रक्खा, और यह पुस्तकालय मेरे (कविराजा श्यामलदास) के सुपुर्द किया. इस पुस्तकालयकी पुस्तकोंपर लगानेके लिये सुवर्ण मुद्रा बनवाकर उसमें यह श्लोक खुदवायाः-

सज्जनेन्द्र नरेन्द्रेण निर्मितम् पुस्तकालयम् ॥
आकरं सारग्रंथानामिदं वाणीविलासकम् ॥ १ ॥

अब इस पुस्तकालयमें संस्कृत, भाषा, अंग्रेज़ी व फ़ार्सी वग़ैरह ज़बानोंकी बहुत-सी किताबें हैं. विक्रमी माघ शुक्ल ११ [हि० ता० ९ मुहर्रम = .ई० ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह लॉयल साहिबकी तज्वीज़से भरतपुरका वकील दीवान जानी बिहारीलाल महाराणा साहिबका गार्डिअन (द्रष्टा) और अध्यापक नियत होकर आया. यह शख़्स व्यवहारमें रहकर ऋषियोंकी तरह बर्ताव रखने वाला और संस्कृत, हिन्दी, फ़ार्सी और अंग्रेज़ीका विद्वान और उसकी आदतमें हरएक आदमीको फ़ायदह पहुंचाना और वह अ़क्लमन्दी व नर्म मिज़ाजी वग़ैरह ख़ूबियोंसे भराहुआ है. इस शख़्सके मुक़र्रर होनेसे महाराणा साहिबको बहुत फ़ायदह हुआ, शुरूमें उसने धमकियां देकर हरएकको डराया, लेकिन् ज्यों ज्यों वह शामिल रहनेलगा, सब लोगोंको तसल्ली होती गई, कि इसकी मौजूदगीमें किसीका बेजा नुक्सान न होगा, और महाराणा साहिब भी उसकी नेक नसीहतोंपर पूरा पूरा अ़मल करते थे; महाराणा साहिबने उसको परमपूज्य और गुरुका ख़िताब देकर अंग्रेज़ी पढ़नेका आरम्भ किया. अगर जानी बिहारीलाल दोचार वर्ष यहां रहता, तो वे अच्छे विद्वान होजाते, तोभी उसका थोड़ाही रहना बहुत मुफ़ीद हुआ. अच्छे आदमीकी हर जगह ख़्वाहिश होती है; उसके मालिक भरतपुरके महाराजा जशवन्त-सिंहने लॉयल साहिबसे बहुत तक़ाज़ा करके १ सालके बाद उसे पीछा बुलवा लिया. रुख़्सत होनेके वक़्त उसने उदयपुरमें तन्ख़्वाह व इन्आ़म इक्राम लेना हर्गिज़ मन्ज़ूर न किया, और अबतक इस रियासतका पूरा ख़ैरख़्वाह बना हुआ है. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १ [हि० ता० २९ मुहर्रम = .ई० ता० ८ मार्च] को कर्नेल् राइट साहिब मेवाड़ एजेन्सीसे तब्दील होगये, और विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ सफ़र = .ई० ता० २६ मार्च] को उनकी जगह बग़्दादसे तब्दील होकर चार्ल्स हर्बर्ट साहिब उदयपुरमें आये. महाराणा साहिबने मामूलके मुवाफ़िक़ पेश्वाई की. विक्रमी १९३२ चैत्र शुक्ल ३ [हि० ता० १ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० ८ एप्रिल] को जयपुरके महाराजा रामसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूर लेकर मलावाका ठाकुर आनन्दसिंह व बख़्शी जवाहिरलाल आया, जिन्होंने १ हाथी, २ घोड़े, सरोपावकी किश्तियां और ज़ेवर वग़ैरह सामान पेश किया. इन दिनोंमें महाराणा साहिबका सम्बन्ध होनेके बारेमें बहस चली, जोधपुर और ईडर दो रियास-तोंसे पैग़ाम आये; इसमें मुसाहिबोंके दो फ़िर्क़े होगये. आख़िरकार ईडरका सम्बन्ध मन्ज़ूर होकर शादी होना क़रार पाया और विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० ता० २४ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० ३० मई] को विवाहका प्रारम्भ होकर गणपति-

स्थापन हुआ; उसी दिन पुरोहित शिवराजकी तरफ़से बनवारेकी गोठ (शादीकी दावतका जल्सह) हुई. इसी दिनसे हमेशह शादीकी धूमधाम, दावतें और जल्से होने लगे, क्योंकि एक अरसहसे दो तीन महाराणाओंकी शादियां ख़ानगी तौरपर हुई थीं, और इसवक़ कुल बातें दस्तूरके मुवाफ़िक़ हुईं. महाराणा साहिबके लिये पहिले मन्नत मानी गई थी, कि चतुर्भुजनाथ (१) के दर्शन करने बाद शादी कीजायेगी, इसलिये विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० ता० २६ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० १ जून] को एकलिंगेश्वर और राजनगर होते हुए विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० ३ जून] को गढ़बोर पहुंचे. वहां मन्नतके मुवाफ़िक़ भेट पूजन करके विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० ४ जून] को वापस राजनगर मक़ाम हुआ, दूसरे दिन कांकड़ोलीमें द्वारकाधीशके दर्शन करके पलाणे आये, फिर चंपाबाग़में मक़ाम करनेके बाद विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ता० २ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० ७ जून] को उदयपुरके राज्यमहलोंमें दाख़िल होगये. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १२ जून] को मेरे (कविराजा श्यामलदास) के मकानपर महाराणा साहिब तश्रीफ़ लाये और मेरी तरफ़की ग़रीबी दावतको क़बूल करके मुझको ताज़ीम व चांदीकी छड़ी बख़्शी, और काग़ज़ोंपर लगानेके लिये चरण शरणकी बड़ी छाप (मुहर) रखनेका हुक्म दिया, जिसमें यह दोहा खुदवाया गयाः—

दोहा.

महारान रघुवंश मनि । सज्जन पूरक आस ॥
चरणशरण ते मुद्रिका । श्यामल दास प्रकास ॥ १ ॥

और यह आज्ञा दी, कि जब तक ताज़ीमके मुवाफ़िक़ जागीर न दीजावे तबतक सवारी, लवाज़िमह और ख़र्च सर्कारसे .इनायत होता रहेगा. इसी तरह बागोर, करजाली, शिवरती, बेदला, देलवाड़ा, सर्दारगढ़ वग़ैरह सर्दारों और महता गोकुलचन्द, कोठारी बलवन्तसिंह, सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह, धव्वा राव बदनमल्ल, साह ज़ोरावरसिंह सूराणा, महता लालचन्द, महता गोपालदास, कायस्थ प्राणनाथ, पुरोहित श्यामनाथ, धायभाई गणेशलाल, महासाणी रत्नलाल, पुरोहित उदयलाल, कायस्थ

---

(१) यहां विष्णु भगवानका प्रसिद्ध मन्दिर देमूरीकी नालके क़रीब महाराणा हमीरसिंहके समयका बना हुआ उदयपुरसे वायव्य कोणको क़रीब २५ कोसके फ़ासिलेपर है.

अक्षयचन्द, ढींकड़िया तेजराम, पांडे किशोरराय, राय सोहनलाल और सेठ जवाहिरमल्ल वगैरह अह्लकार व पासवानोंने दावतें देकर बड़ी धूमधामके साथ जल्से किये. उन लोगोंको खिल्अ़त, जेवर और .इज़्ज़त दीगई. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १० [हि० ता० २३ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २८ जून] के दिन महाराणा साहिबको यज्ञोपवीत हुआ, और विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० ३० जून] को बरनिकासी होकर बरातका मक़ाम गोवर्द्धनविलास हुआ. जहां तीन रोज़ मक़ाम रहकर बारहपाल, परसाद, धूलेव, बीछीवाड़ा, समेरा और बीलाड़ामें मक़ाम होने बाद विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १२ जुलाई] को महाराणा साहिब ईडर दाखिल हुए. इस वक्त खैरवाड़ाका फ़र्स्ट असिस्टैण्ट पोलिटिकल एजेण्ट मेजर कैनिंग साहिब भी साथ था. ईडरके महाराजा केसरीसिंह और महीकांठाके पोलिटिकल एजेण्ट दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई करके महाराणा साहिबको डेरोंमें लेगये. सायंकालको (गोधूलिक) लग्न था, उस समय महाराणा साहिबने ईडरके महलोंमें पधारकर महाराजा केसरीसिंहकी बहिन (महाराजा जवानसिंहकी बेटी) के साथ विवाह किया, और मए महाराणी साहिबाके वापस डेरोंमें पधारगये. दूसरे दिन महाराणा साहिबकी सालगिरह थी, जिसके जल्से व खुशीमें रात दिन नाच व राग रंग होता रहा. इसके बाद दस्तूरके मुवाफ़िक़ ईडरके महाराजा केसरीसिंहसे मुलाक़ातें होकर विक्रमी श्रावण कृष्ण २ [हि० ता० १६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २० जुलाई] को वहांसे कूच हुआ, और रास्तेमें बीलाड़े, समेरे, बीछीवाड़े, धूलेव, परसाद व बारहपाल मक़ाम करते हुए विक्रमी श्रावण कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २८ जुलाई] को महाराणा गोवर्द्धनविलासमें दाखिल हुए. इस सफ़रमें सब तरहकी खुशी और आरामका बन्दोबस्त था, लेकिन् बारिशके सबब लोगोंको जो तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं वे भी भूलनेके लाइक़ नहीं हैं, जिसमें भी धूलेव, बीछीवाड़ा और बीलाड़ाके मक़ामकी हालत तो बराती लोगोंको ज़िन्दगी भर याद रहेगी, कि इन स्थानों पर ज़र्दोज़ी, कम्ख़ाब, और गोटा किनारीके जुलूसी कपड़े कीचड़में मिलगये, परन्तु ऐसी खुशीके मौक़ेपर उस नुक्सानकी किसीने कुछ पर्वा न की. विक्रमी श्रावण शुक्ल १ [हि० ता० २९ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २ ऑगस्ट] को महाराणा साहिब मए लश्करके उदयपुरमें पधारगये.

इन दिनोंमें कामकी अब्तरी होरही थी, रियासती काम पोलिटिकल एजेण्टके इख्तियारमें था, महता गोकुलचन्द और सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह महकमह

ख़ासका काम करते थे, जिनमेंसे अर्जुनसिंहने तो, जो कारगुज़ार और होश्यार आदमी है, पोलिटिकल एजेण्टका मिज़ाज तेज़ देखकर इस्तेफ़ा पेश करदिया, और महता गोकुलचन्द पुराने ढंगका सच्चा और सीधा सादा आदमी था, उसने ज़मानह हालकी वा क़ाइदह कार्रवाईका काम पेश्तर नहीं किया था, इस सबबसे पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् हर्बर्ट साहिबने दिक़ होकर अजमेरसे महता पन्नालालको तलब किया, जिसने वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके समय इस कामको अच्छी तरह अंजाम दिया था. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ४ [हि० ता० ३ शअ्बान = .ई० ता० ४ सेप्टेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्टने महाराणा साहिबसे पन्नालालका सलाम करवाकर विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० ता० ७ शअ्बान =.ई० ता० ८ सेप्टेम्बर] को उसे महकमहख़ासके काममें महता गोकुलचन्दके शामिल करदिया.

इस वर्षमें विक्रमी आश्विन कृष्ण ६ [हि० ता० १९ शअ्बान = .ई० ता० २० सेप्टेम्बर] को ऐसे ज़ोरसे बारिश शुरू हुई, कि जिसका हाल भी तवारीख़में लिखाजाना ज़रूर है. इस रोज़ महाराणा साहिबको पीतमनिवास महलमें जानी बिहारीलाल अंग्रेज़ी पढ़ा रहा था, कि बड़े ज़ोर शोरके साथ बारिश होने लगी, और थोड़ी देरमें जगन्निवास महलकी खिड़कियोंमें पीछोला तालाबका पानी घुसगया, और पहिली मन्ज़िलकी छतसे दो तीन फ़ुट ख़ाली रहा. तब महाराणा साहिबने मुझ (कविराजा श्यामलदास) और महता पन्नालालको बड़ीपालकी हिफ़ाज़तके लिये भेजा. हम दोनों दौड़कर तालाबपर पहुंचे उसवक़ बड़ीपाल (तालाब के बड़े बंध) का किनारा सिर्फ़ पांच या छः इञ्च ख़ाली था. हम लोगोंने तुरन्त अर्जुनखुराके पत्थर तुड़वाकर पानीका निकास किया. इसवक़ अर्जुनखुरा, तालाबका नाला (१) और दूधतलाईमें होकर पानी निकलता है वह नाला, ये तीनों निकास नदियों के मुवाफ़िक़ समोरमें गिरते थे. नीलकंठ महादेवके पास क़रीब पांच या सात फ़ुट तक गहरा पानी बहता था, शहरमें डौंडी पिटवा दी, कि पूर्वी हिस्सेके रहनेवाले लोग अपने अपने घर छोड़कर पश्चिमी तरफ़ चले आवें, क्योंकि बन्ध टूटनेका ख़तरह था. महाराणा साहिब भी अर्जुनखुरेपर आकर पानीके निकासकी तज्वीज़ फ़र्माते थे. अब दूसरी तरफ़का हाल सुनिये. सीसारमा गांवके कई घर पानीमें डूबगये, और लोगोंके घरोंसे खाट, बिछौने, अनाज, और नारियल वग़ैरह सामान बहकर पानीके निकासकी तरफ़ जाताहुआ दिखाई देता था, बागौरकी हवेलीके चौकमें किश्तियां फिरने

(१) यह पुराना नाला बड़ी पालके दक्षिण तरफ़ एक पहाड़ीके सिरेपर है.

लगी; त्रिपोलिया और हनुमान घाटके बीच पानीका ऐसा बहाव था, कि जिसतरह कोई बड़ी नदी अत्यन्त वेगसे बहती हो. ब्रह्मपुरीके कई घर डूबगये, उधर शहरपनाहसे पालके अख़ीर हिस्सेतक स्वरूपसागरकी कुल पालपर एक फ़ुटसे दो फ़ुट गहरे पानी की चद्दर गिरती थी, और इसी तरह क़दीमी निकासका नाला एक नदीके मुवाफ़िक़ ज़ोर शोरसे वहरहा था; अम्बावगढ़के नीचेकी नहर भी पानी कूदनेकी लहर दिखा-रही थी; गुमानिया नाला और धायभाईकी पुलांकी बड़ी नदीका बहाव एक होकर बीचके खेतोंमें पानीकी धारा चलती थी. यह कुल पानी उदयसागर तालाबमें गिरकर उसका बड़ा नाला सिरतक पूरा बहने लगा, और बन्धके ऊपर पानीकी झालकें गिरती थीं जो पूरा मामूली भरनेकी हालतमें पालका हिस्सह बहुत खाली रहा करता है; और लकड़वास, पचोली, कान्हपुर और मटूणके बीचकी ज़मीनपर एक बड़ा तालाब भरकर कड़वा टीमरूतक नदीमें तालाब होगया था. इसी तरह बड़ीके तालाब जान-सागरके नाले वहनेके अलावह बन्धपर होकर पानीकी चद्दर गिरती थी. तीन दिनतक एकसा पानी वरसता रहा. हमारे ख़यालसे ३११ वर्ष के भीतर उदयपुरमें ऐसी बारिश कभी नहीं हुई थी, क्योंकि उदयसागरके नालेके निकाससे पश्चिमकी तरफ़ बन्धके साथ विक्रमी १६२१ [हि० ९७१ = ई० १५६४] में जो पत्थरके चटानोंपर मिट्टी डाली गई थी वह मिट्टी बिल्कुल बहकर कुद्रती पत्थर निकल आये, इससे यक़ीन हुआ, कि निकासका पानी पेश्तर इस जगह कभी नहीं बहा था, और क़रीब दो सौ चालीस वर्ष पेश्तर महाराणा अव्वल जगत्सिंहने उदयसागरके बन्धके पीछे इसी निकासके नालेपर महल बनवाये थे, उनकी जड़ोंमें निकासका पानी कभी नहीं पहुंचा था. इस वक़ उन महलोंके गिर्द इतना पानी वहा, कि महलोंके आस पासकी ज़मीन कटकर गहरी नहरें बनगईं. अलावह इसके बड़ीका तालाब जानसागर, जिसका बन्ध २०७ वर्ष पहिले बना था, बन्धके ऊपर होकर पानी कभी नहीं गिरा, क्योंकि इस वक़ उसपर पानीकी चद्दर बही, जिससे मिट्टी कटकर बड़े बड़े गढ़े होगये, जहां पेश्तर बन्धके साथकी डाली हुई मिट्टी दोनों दीवारोंके बराबर ख़ानहपूर थी. तीसरी यह कहावत मश्हूर है, कि उदयसागरका नाला रोकदिया जावे और बन्धके बराबर पानी भरे, तो तेलियोंकी सरायके पास जगदीशके मन्दिरके ज़ीनोंतक पानी पहुंचे, जिसको लोगोंने शहरमें जगदीशके मन्दिरकी बाबत् मश्हूर करदिया है. यह कहावत ग़लत निकली. विक्रमी १८१० या १५ तकके पैदा हुए कई आदमियोंकी ज़बानी इसी कहावतके साथ सुना, कि उदयसागर पूरा कभी नहीं भरा, तो सोचना चाहिये, कि उन आदमियोंने भी सौ वर्ष पेश्तरके आदमियोंकी ज़बानी सुना होगा;

ऐसे ख़यालोंसे मैं अपनी रायको दुरुस्त जानता हूं. उदयपुरमें वारिशका सालियानह औसत २८ इञ्च माना गया है, इस वर्षमें कुल ४८ इञ्च ५७ सेंट पानी गिरा, जिसमें ज़ियादहतर वर्षा इन्हीं तीन चार दिनोंमें हुई, कि मकानोंके गिरने, सामानके बहने और ज़िराअ़तके वर्बाद होनेसे लाखों रुपयोंका नुक्सान हुआ, पहाड़ोंकी जड़ोंमें दलदल होगई थी, जहां कई दिनोंतक हाथी घोड़ोंके चलनेमें खतरह रहा इत्यादि.

इन दिनोंमें पोलिटिकल एजेण्टकी हिदायतसे महाराणा साहिबके सामने दीवानी फ़ौज्दारी और अपीलकी मिस्लें पेश होती थीं, जानी विहारीलाल और हम लोग उन की मददको हाज़िर रहते. महाराणा साहिब ऐसे ज़हीन थे, कि बाज़ वक्त मिस्ल सुनकर बहुत उम्दह राय फ़र्माते, मानो कुछ अरसहसे इस कामको करते हैं. विहारी-लालने माली और मुल्की इन्तिज़ामके लिये उम्दह उम्दह सलाह महाराणा साहिबको दी, और मुझको शरीक रखकर कहा कि वक्त वक्तके ऊपर इन बातोंको याद दिलाते रहना. महाराणा साहिबने आखर वक्ततक उन बातोंपर अमल रक्खा, जिससे थोड़ी ज़िन्दगीमें नामवरी और फ़ायदह ज़ियादह हासिल करलिया. अफ़्सोस है, कि विहारीलालको उसके मालिककी क़द्रदानी और ताकीदसे विक्रमी आश्विन शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रमज़ान = ई० ता० १२ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबसे रुख़्सत लेनेकी ज़ुरूरत हुई. महाराणा साहिबने एक भारी खिल्अ़त, सर्पेच, मोतियोंकी माला, और ४००) अश्रफ़ियां इनायत कीं, लेकिन उसने एक पघड़ी रखकर बड़ी आजि-ज़ीके साथ बाक़ीके लिये मुआफ़ी चाही. महाराणा साहिबने विहारीलालसे मांगकर उसके रिश्तेदार जानी मुकुन्दलालको अपने पास रखलिया, जो अबतक महाराणा साहिब के इज़्ज़तदार नौकरोंमें मौजूद है, और विहारीलालकी जगह सेठ फरामजी भीखाजी मुक़र्रर हुआ. इन दिनोंमें इंग्लिस्तानका शाहज़ादह महाराणी विक्टोरियाका बड़ा पुत्र प्रिन्स ऑफ़ वेल्स एड्वर्ड ऐल्बर्ट (युवराज) हिन्दुस्तानकी सैरको आनेवाला था, महाराणा साहिबको भी उनकी मुलाक़ातके लिये कर्नेल् हर्बर्ट पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ ने बम्बई जानेको कहा. इस बारेमें बहुत कुछ बहस होकर आख़रको महाराणा साहिबका जाना मन्ज़ूर हुआ, लेकिन् यह उज़्र कियागया, कि हिन्दुस्तानी राजाओंमें महाराणा साहिब अव्वल नम्बर हैं और वहां अक्सर दक्षिण व गुजरातके राजा आवेंगे, इसलिये उस वक्त किसी तरहकी हतक न होनी चाहिये. पोलिटिकल एजेण्टने इक़्रार किया, कि अलावह निज़ाम हैदराबादके और कोई राजा महाराणा साहिबसे अव्वल नम्बर न होगा, और निज़ामके आनेपर भी महाराणा साहिबके लिये कोई तद्बीर निकालकर

दूसरा नम्बर न रक्खाजायेगा. इसी इक़ारपर भरोसा रखकर विक्रमी कार्तिक कृष्ण १ [हि० ता० १४ रमज़ान = .ई० ता० १५ ऑक्टोबर] को उदयपुरसे रवानगी होकर गोवर्द्धनविलासमें मक़ाम हुआ, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रमज़ान = .ई० ता० १९ ऑक्टोबर] को वहांसे रवानह होकर बारहपाल, परसाद, खैरवाड़ा, बीछीवाड़ा, समेल, बाकरोल, हरसोलकी छावनी, और देवगाममें मक़ाम करते हुए विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को अहमदाबाद पहुंचे, वहांकी छावनीका जेनरल और शहरका कलेक्टर वग़ैरह १३ साहिब १॥ कोसतक पेश्वाईको आये. साहिब लोगोंने टोपियां उतारकर सलाम किया, महाराणा साहिब दस्तापोशी करके साथ साथ घोड़ोंपर सवार चले; शहरसे आध मील दूरीपर साहिब लोगोंको रुख़्सत देकर शहरके बाहिर सेठ मगनभाई हटीभाईकी कोठीपर पधारे. उक्त सेठने पगपावंडे नज़, निछावर वग़ैरह दस्तूरके मुवाफ़िक़ किये, और इज़्ज़तदार लोग सलामको आये, जिनकी ख़ातिर कीगई, १९ तोपें सलामीकी छावनीसे सर हुईं. दूसरे रोज़ दिवालीका त्यौहार भी अहमदाबादमें हुआ. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३० [हि० ता० २८ रमज़ान = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को अहमदाबादसे रेल्वे स्टेशनपर पधारे, वहां कलेक्टर वग़ैरह अंग्रेज़ी अफ़्सर मए जंगी फ़ौजकी कम्पनीके मौजूद थे; फ़ौजने सलामी उतारी, और १९ तोपें सलामीकी सर हुईं. फिर स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर क़रीब ११ बजे बड़ौदाके स्टेशनपर पहुंचे. वहांके गायकवाड़ दूसरे सियाजी तो पेश्तर बम्बई चलेगये थे, और रियासतकी तरफ़से मोतमद लोग स्टेशनपर हाज़िर हुए और सलामी की १९ तोपें सर हुईं. फिर शामको क़रीब ५ बजे सूरत पहुंचे, वहां मक़ाम हुआ, मेवाड़ एजेन्सीके सरदफ़्तर सेठ आदरजीकी तरफ़से मिहमानी और दावत हुई. दूसरे रोज़ स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर क़रीब पांच बजे शामको बम्बई पहुंचे, स्टेशनपर गवर्नर बम्बईका सेक्रेटरी और एक फ़ौजी अफ़्सर मए कम्पनी, फ़ौज व सवारोंके पेश्वाईको हाज़िर थे, उनसे मुलाक़ात करके एक बंगलेमें डेरा था वहां पधारे. विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ शव्वाल = .ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को ईडरके महाराजा केसरीसिंह महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात करगये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० २ शव्वाल = .ई० ता० १ नोवेम्बर] को गवर्नर बम्बईसे मुलाक़ात हुई; महाराणा साहिबको लेनेके लिये उनका सेक्रेटरी डेरेतक आया; मए पोलिटिकल एजेण्ट हर्बर्टके बग्घी सवार हो कोठी गवर्नरीको पहुंचे, सर फ़िलिप वुडहाउस गवर्नर बम्बई दर्वाज़ेतक पेश्वाई कर लेगया. दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और

पोलिटिकल एजेएट व मेवाड़के सर्दार और बाई तरफ़ गवर्नर बम्बई व उनके सेक्रेटरी वग़ैरह साहिब बैठे, फिर शौकिया बातें व इत्र पान वग़ैरह होकर जिसतरह आये उसीतरह वापस पधारे. फिर विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० ३ शव्वाल = ई० ता० २ नोवेम्बर] को गवर्नर बम्बई सर फ़िलिप वुडहाउस महाराणा साहिबकी मुलाक़ात को डेरेपर आये, जिसतरह गवर्नरके मकानपर बर्ताव उनकी तरफ़से हुआ उसी तरह महाराणा साहिबने अपने डेरेपर गवर्नरका किया, और शामके वक्त गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड नार्थ ब्रूक रेलमें आये, महाराणा साहिब स्टेशनपर पेश्वाईको गये; वहांपर दक्षिण और गुजरातके कुल राजा लोग मौजूद थे. लॉर्ड साहिबसे मुलाक़ात करके वापस अपने डेरोंको चले आये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ५ [हि० ता० ६ शव्वाल = ई० ता० ३ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब गवर्नर जेनरल हिन्दके डेरेपर मुलाक़ातको गये, बग्घीसे उतरे, जहांतक सेक्रेटरी और दर्वाज़ेतक फ़ॉरेन् सेक्रेटरी व आधे फ़र्शतक लॉर्ड साहिब पेश्वाईको आये, १९ तोपोंकी सलामी सर हुई, दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और उनके ९ सर्दार व बाई तरफ़ गवर्नर जेनरल हिन्द व उनके अफ़्सर लोग थे. मिज़ाजकी ख़ुशी वग़ैरह मामूली बातचीत होकर लॉर्ड गवर्नर जेनरलने खड़े होकर फूलकी माला पहिनाकर इत्र पान महाराणा साहिबको और फ़ॉरेन् सेक्रेटरीने मेवाड़के सर्दारोंको दिया; फिर महाराणा साहिबको लेआये. उसीतरह बग्घीतक पहुंचाया. फिर अपने डेरेपर पधारे, तीसरे पहरको ईडरके महाराजा केसरीसिंहके डेरेपर गये, व दस्तूर मुलाक़ात कर वापस आये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ६ [हि० ता० ५ शव्वाल = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को शामको लाट साहिब महाराणा साहिबके डेरेपर आये. बरामदेकी सीढ़ियोंके पास बग्घीसे उतरे, वहांसे महाराणा साहिब पेश्वाई कर लेआये. गवर्नर जेनरलके हाथपर महाराणा साहिबका हाथ था, दाहिनी तरफ़ लॉर्ड साहिब व उनके अंग्रेज़ अफ़्सर, बाईं तरफ़ महाराणा साहिब व उनके हमराही सर्दार कुर्सियोंपर बैठे. मेवाड़के सर्दारोंने जिनमें मैं (कविराजा श्यामलदास) भी शामिल था, एक एक अश्रफ़ी लॉर्ड साहिबको नज़ दिखलाई. बाद इसके लाट साहिबको फूलोंका हार व इत्र पान महाराणा साहिबने और उनके अफ़्सरोंको बेदलाके राव बख़्तसिंहने दिया, पेश्वाई करलाये वहांतक उसी तरह पहुंचाया. आजके दिन आबूसे एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह स्केअर लॉयल उदयपुरसे आये, क्योंकि महाराणा साहिब व पोलिटिकल एजेएट तो यहां न थे, और लॉर्ड नार्थ ब्रूक बम्बईसे उदयपुर होकर जानेकी ख़्वाहिश रखते थे, इससे लॉयल साहिबने यहां आकर कुल बन्दोबस्त करवाया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १० [हि० ता० ९ शव्वाल = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को शाहज़ादह एड्वर्ड ऐल्बर्ट प्रिन्स

ऑफ़ वेल्सके बम्बई पालवा बन्दरपर जहाज़से उतरनेके समय महाराणा साहिब और दूसरे राजा लोग भी पेश्वाईको गये. बन्दरपर राजा लोगोंके लिये कुर्सियां पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़के इक्रारसे बर्ख़िलाफ़ रक्खी गईं. महाराणा साहिब कुछ बीमारीसे और कुछ इस इख़्तिलाफ़ीकी नाराज़गीसे कुर्सीपर न बैठकर टहलते रहे, और शाहज़ादहके आनेपर मुलाक़ात करके अपने डेरेको वापस चले आये. ऊपर लिखेहुए दोनों कारणों से शाहज़ादहके साथ नहीं गये. इस रंजीदगीका नतीजह यह हुआ, कि उसी दिन से शाहज़ादह और गवर्नर जेनरल हिन्दने राजा लोगोंसे नम्बरवार मुलाक़ात करनेका तरीक़ह तोड़दिया, जिसका नमूनह दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें दिखलाया जावेगा. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि॰ ता॰ १० शव्वाल = .ई॰ ता॰ ९ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब शाहज़ादहकी मुलाक़ातके लिये गये. वलीअह्द आधे फ़र्शतक पेश्वाई करके अपने हाथपर महाराणा साहिबका हाथ रखकर ले गये. दाहिनी तरफ़ कुर्सियोंपर महाराणा साहिब और उनके ९ सर्दार बैठे और बाईं तरफ़ कुर्सियोंपर शाह-ज़ादह और उनके अफ्सर लोग. महाराणा साहिबके ९ सर्दारोंने शाहज़ादहको एक २ अश्रफ़ी नज़ दिखलाई; मिज़ाजपुर्सी वग़ैरह खुशीकी बातें होकर महाराणा साहिबको शाहज़ादहने .इत्र पान देकर जहांसे लाये वहांतक पहुंचाया, और वे अपने डेरेको चले आये. शामके वक़ शाहज़ादहको दिखलानेके लिये बम्बईमें रौशनी हुई, जिसकी कैफ़ियत देखनेके लाइक़ थी. शाहज़ादह और कुल राजा लोग अपने अपने तौरपर सैर करते थे, काच कटोरोंमें सौदागरोंकी दूकानों और कुल मकानोंपर रौशनीकी यह हालत थी, कि मानो हरएक मकान आगका शोला दिखाई देता था, जिनमें रंग रंग के काचके दीपक अनेक क़तारों व बेलबूटोंके ढंगपर देखने वालोंकी निगाहको अपनी तरफ़ खींचते थे. सड़कपर बग्घियोंका हुजूम इस क़द्र था, कि किसीको बग्घी घुमाकर बग़लपर लेनेकी जगह नहीं मिली, धीरे धीरे बग्घियोंकी क़तारकी चालपर अपनी अपनी बग्घियोंको चलाना पड़ा; इसी तरह आदमियोंका भी हुजूम हुआ. हम लोगोंकी बग्घियां भी महाराणा साहिबकी बग्घीसे दूर पड़गईं; बड़ी मुश्किलसे निकलनेका मौक़ा मिला; तब अपने अपने तौरपर डेरोंको आये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि॰ ता॰ ११ शव्वाल = .ई॰ ता॰ १० नोवेम्बर] को पिछले पहर युवराज महाराणा साहिबके डेरेपर आये, बरामदेकी सीढ़ियोंके पास बग्घीसे उतरे, वहांसे महाराणा साहिब उन्हें पेश्वाई कर लेआये, दाहिनी तरफ़ शाहज़ादह व उनके अफ्सर लोग और बाईं तरफ़ महाराणा साहिब व उनके हमराही सर्दार बैठे; थोड़ी देरतक मुहब्बत आमेज़ शौक़िया बातें होती रहीं. महाराणा साहिबकी तरफ़वाले सर्दारोंने शाहज़ादहको एक एक अश्रफ़ी

नज़ दिखलाई. इसके बाद महाराणा साहिबकी तरफ़से शाहज़ादहको तुह्फ़े दियेगये और पेश्वाईकी जगहतक उन्हें वापस पहुंचाया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि॰ ता॰ १२ शव्वाल = .ई॰ ता॰ ११ नोवेम्बर] को शामके वक्त महाराणा साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर बम्बईसे रवानह हुए; विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि॰ ता॰ १३ शव्वाल = .ई॰ ता॰ १२ नोवेम्बर] को ५ घड़ी रात बाक़ी रहे भड़ौचमें पधारकर समुद्रगामिनी नर्मदा नदीमें स्नान करनेके बाद उसी ट्रेनमें सवार होकर बड़ोदाके स्टेशनपर पहुंचे, जहां तोपोंकी और फ़ौजकी सलामी हुई. बाद इसके अहमदाबाद पहुंचे, स्टेशनपर अंग्रेज़ अफ्सर व फ़ौज मौजूद थी, महाराणा साहिब सबकी सलामी लेते हुए सेठ मगनभाई हटीभाईके बंगलेपर पधार गये; सलामीकी १९ तोपें छावनी के तोपखानहसे चलीं. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि॰ ता॰ १५ शव्वाल = .ई॰ ता॰ १४ नोवेम्बर] को वहांसे रवानह होकर देवगाम, हरसोलकी छावनी, बाकरोल, समेरा, सीसोद और धूलेवमें मक़ाम करते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि॰ ता॰ २० शव्वाल = .ई॰ ता॰ १९ नोवेम्बर] को उदयपुरमें दाख़िल हुए. इस सफ़रकी ख़िद्मतमें इस किताबका लिखने वाला (कविराजा श्यामलदास) भी हरवक्त हाज़िर था. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि॰ ता॰ २४ शव्वाल = .ई॰ ता॰ २३ नोवेम्बर] को लॉर्ड नार्थब्रूक बग्घियोंकी डाकके ज़रीएसे दस बजे मंगरवाड़ मक़ामपर पहुंचे, और हाज़िरी खानेके बाद क़रीब पौने पांच बजे उदयपुरसे साढ़े तीन मील फ़ासिलहपर, जहां डेरा खड़ा कियागया था, दाख़िल हुए; वहांसे पांच बजे हाथी सवार होकर मुलाक़ातकी जगह आये. इधरसे महाराणा साहिब भी अपने हमाहियों समेत हाथी सवार होकर पधारे, राजधानीसे पौने तीन मील दूर हाथियोंपर ही मुलाक़ात हुई. दाहिनी तरफ़ लाठ साहिबका हाथी और बाईं तरफ़ महाराणा साहिबका हाथी रहा. महाराणा साहिबके पीछे सर्दार लोगोंके और लाठ साहिबके पीछे साहिब लोगोंके हाथी थे; फिर सूरजपोलके बाहिर हवालाके बराबरसे लाठ साहिब और महाराणा साहिब मए दो दूसरे साहिबोंके एक बग्घीमें और बाक़ी साहिब लोग व सर्दार दूसरी बग्घियोंमें सवार होकर शम्भुनिवास महलमें दाख़िल हुए, जहां लॉर्ड साहिबका डेरा तज्वीज़ कियागया था; २१ तोपें सलामीकी रियासती तोपखानहसे सर हुईं. इसवक्त जिस रास्ते होकर लॉर्ड साहिब आये, उस तरफ़ बाज़ार और महलोंमें रौशनी हुई, और बड़े चौकमें रियासती फ़ौजने व शम्भुनिवासके चौकमें खैरवाड़ाकी भील कॉर्प्सने सलामी ली. लाठ साहिबकी पेश्वाईको उदयपुरसे ४० मील गांव मगरवाड़तक बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंह व मेजाके रावत् अमरसिंह,

और ११ मील गांव डबोकतक महता गोकुलचन्द भेजेगये थे, विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शव्वाल = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को फ़ज्रके सवा नौ बजे महाराणा साहिबकी तरफ़से बेदलाका राव बख़्तसिंह, देलवाड़ाका राज फ़त्हसिंह, बदनौरका ठाकुर केसरीसिंह, आसींदका रावत् अर्जुनसिंह, ये चारों सर्दार लॉर्ड साहिबकी मिज़ाजपुर्सीको भेजेगये. ११ बजे महाराणा साहिब मए बेदलाके राव बख़्तसिंह, सलूंबरके रावत जोधसिंह, देलवाड़ाके राज फ़त्हसिंह, गोगूंदाके राज मानसिंह, बदनौरके ठाकुर केसरीसिंह, बानसीके रावत् मानसिंह, पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंह, आसींदके रावत् अर्जुनसिंह और करजालीके महाराज सूरतसिंहके लॉर्ड साहिबकी मुलाक़ातको शम्भुनिवास पधारे, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात कर वापस आये. फिर लॉर्ड नार्थब्रूक जगमन्दिर महलको मुलाहज़ह फ़र्मानेके बाद हरिदासकी मगरीपर सूअरोंको देखकर किश्तियोंमें रौशनीकी सैर करते हुए वापस आये. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शव्वाल = .ई० ता० २५ नोवेम्बर] को लॉर्ड साहिब महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको महलोंमें आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात हुई; फिर लॉर्ड साहिब गोवर्द्धनविलास, जगन्निवास और महासतीके स्थानोंको देखकर वापस आये. इन मुलाक़ातोंमें हर मौक़ेपर लॉर्ड साहिबकी २१ और महाराणा साहिबकी १९ तोप सलामी रियासती तोपख़ानहसे सर हुईं, इसलिये कि लॉर्ड साहिबके साथ तोपख़ानह न था. फिर मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ शव्वाल = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को ७ बजे लॉर्ड साहिब उदयपुरसे रवानह होकर राजनगर होते हुए जोधपुर चलेगये.

ईडरके महाराजा केसरीसिंह सलूंबर शादी करके विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० १२९३ ता० ८ सफ़र = .ई० १८७६ ता० ५ मार्च] को उदयपुरमें आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात, पेश्वाई वग़ैरह होकर सहेलियोंकी बाड़ीमें ठहरे. विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ सफ़र = .ई० ता० १४ मार्च] को कूच हुआ, बीचमें दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ातें हुईं. इन दिनोंमें पोलिटिकल एजेंट मेवाड़ कर्नेल हर्बर्ट साहिबकी मारिफ़त कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहकी कन्याका संबन्ध महाराणा साहिबके साथ होनेकी बातचीत हुई. विक्रमी १९३३ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रबीउस्सानी = .ई० ता० १९ मई] को कृष्णगढ़से कोटड़ीका ठाकुर मेघसिंह और महता महेशदास गद्दीनशीनीका टीका लाये, और उक्त संबन्धकी बातचीत पुख़्तह की.

इन दिनोंमें नाथद्वाराका गोस्वामी गिरधरलाल अपने क़दीमी ढंगको छोड़कर रईसानह मग़्रूरीके सबब रियासती हुकूमतसे बाहिर निकलनेकी चेष्टा करनेलगा; उसके चाल चलन और इस मग़्रूरीसे महाराणा साहिब व कुल रियासती लोग नाराज़ थे.

आख़रकार उसकी सर्कशी मिटाना मुनासिब जानकर क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मेजर कैनिंग और बेदलाका राव बख़्तसिंह व महता गोकुलचन्द वग़ैरह कौन्सिलके सर्दार फ़ौज लेकर विक्रमी १९३३ वैशाख शुक्ल १५ [हि० १२९३ ता० १३ रबीउस्सानी = .ई० १८७६ ता० ८ मई] को उदयपुरसे रवानह होकर लालबाग़ पहुंचे. उसके कुछ अरसह पहिले गोस्वामी व लालबाबा मए सौ सवार और सौ आदमी हथियार बन्दके लालबाग़में आगये थे. उसवक्त रिसालदार जानमुहम्मदको हुक्म दियागया, कि सवारोंको लेजाकर बाग़को घेरलो, जिससे न कोई बाहिर जाने पावे और न भीतर आने पावे, और आधी फ़ौज व तोपख़ानह, मए अफ़्सर महता गोपालदासके मन्दिरके बन्दोबस्तको भेजेगये. बाद इसके कौन्सिलकी यह राय क़रार पाई, कि पहिले जो हुक्म हुआ है वही क़ाइम रहे, याने गोस्वामी सीधी तरह उदयपुर न जावे, तो गिरिफ़्तार कियाजावे. फिर महता गोकुलचन्दको जो हुक्म पहिले गोस्वामीके नाम लिखागया था लेकर उसके पास भेजा, लेकिन् वह न आया; तब गंगल जमादारको भेजकर गोस्वामी के पास वाले शस्त्रबन्ध सिपाहियोंको हुक्म दियागया, कि तुम बाग़से बाहिर निकलजाओ. इसपर कितनेएक लोग तो निकलगये, और कितनेएक गोस्वामीके पास मौजूद रहे. फिर दोबारह ठाकुर मनोहरसिंह व भाणेज मोतीसिंह समझानेके लिये भेजेगये. इस अरसहमें मन्दिरकी रिपोर्ट आई, कि जो विदेशी विलायती वग़ैरह मन्दिरमें मौजूद हैं उन्होंने मन्दिरके किवाड़ बन्द कर रक्खे हैं, भीतर नहीं जाने देते, बल्कि बन्दूक़ोंकी मुहरियां निकाल रक्खी हैं; तब उनको यह हुक्म दियागया, कि अभी मन्दिरको घेरे रहो. इसके पीछे ठाकुर मनोहरसिंह व भाणेज मोतीसिंहने वापस आकर कहा, कि गोस्वामी अपनी इज़्ज़तकी ख़ातिरी चाहता है, जिसपर कैलवाके जागीरदार, मोहीके जागीरदार, व लाला हरनारायणको भेजकर कहलाया, कि हमको हुक्म है, कि आप उदयपुर चलें, हम आपको .इज़्ज़तके साथ लेजावेंगे, मगर वह टाला टूली करते रहे. तब आधी भील कम्पनी व शम्भु पल्टनके निशान समेत सहीहवाला लक्ष्मणसिंह भेजागया, और हुक्म दियागया, कि लालबाबाको यहां भेजदो और गोस्वामीको पालकीमें बिठाकर उदयपुर लेजाओ. उन्होंने हुक्मके मुवाफ़िक़ गोस्वामीको घेरकर दूसरे लोगोंको हटानेके बाद उसे पालकीमें सवार करादिया, मगर उसने लालबाबाका हाथ पकड़कर अपने सामने पालकीमें बिठालिया. तब ब्रजवासी वग़ैरह क़दीमी लोग जो उस ठिकानेमें हैं, कहने लगे कि अब हमको क्या हुक्म है? तब जीलवाड़ाके सोलंखी राजसिंहको उनके साथ भेजकर हुक्म दिया, कि लालबाबाको लेआओ. उन्होंने जाकर लालबाबाको पालकीमेंसे उठाकर खींचलिया, और कौन्सिलके सामने जय जय शब्द कहते हुए लेआये.

गोस्वामीके पासवाले शस्त्र बन्ध सिपाहियोंके हथियार इस मुवाफ़िक़ छीन लिये गये- तलवार ३२, कटारियां २, ढाल ५, टोपीदार बन्दूक़ १, छुरी १, और ये सब एकट्ठे करायेजाकर अफ़्सर तोपख़ानहके सुपुर्द कियेगये, बाद इसके गोस्वामीको दिनके दो बजे सर्कारी ज़ाबितहके साथ उदयपुरकी तरफ़ रवानह करके लालबाबाको कहागया, कि नीचे लिखी हुई शर्तें आपको मन्ज़ूर हों, तो लिखकर पेश करें, आपको श्री दर्बार गद्दीनशीन करेंगे:-

शर्तें.

१- हमको हर सूरत श्री दर्बारकी हुकूमत व हुक्म मुवाफ़िक़ चलना मन्ज़ूर है, कभी किसी तरहका .उज़्र न होगा.

२- श्री नाथजीकी सेवा सामग्री परंपरासे होती है, जिसमें अभी फ़र्क़ हुआ था, सो अब अगली रीतिके मुवाफ़िक़ दर्बार जो रीति बांध देंगे, उसमें फ़र्क़ न होगा; श्री नाथजीकी सेवा सामग्री गऊ, ब्रजवासी टहलुवे, सेवकोंकी जो परंपरा रीति है वही वर्तेंगे.

३- विदेशी सिपाही लोगोंको नहीं रक्खेंगे, मन्दिर व शहरके लिये, जो ज़ाबितह दर्बार मुक़र्रर करेंगे वह हमको मन्ज़ूर है, और तन्ख़्वाह हम देवेंगे.

४- दीवानी व फ़ौज्दारीका बन्दोबस्त वास्ते श्री दर्बारकी तरफ़से एक अह्लकार मुक़र्रर करदेवें, सो हमको पूछकर काम किया करे.

ये चारों शर्तें हमको मन्ज़ूर हैं, और हम उदयपुर आवेंगे, तब दर्बार बन्दोबस्त बांध देवेंगे वह हमको क़ुबूल है. इसपर उन्होंने दर्ख़्वास्त की, कि सदैवसे हमारे घरका हमको इख़्तियार है, सो हम होश्यार होवें उसवक्त सब इख़्तियार हमको मिले. तब यह तज्वीज़ ठहरी, कि जब यह लालबाबा होश्यार और नेक चालचलनके हों, तो सब इख़्तियार दीवानी व फ़ौज्दारीके इन्हें दिये जावें, और जो कोई इनके ऊपर श्री दर्बारमें अर्ज़ीऊ होवे, तो मिस्ल व आसामी श्री दर्बारमें भेजें, और दर्बारकी अदालतोंके हुक्मकी तामील करें, इसका इक़ारनामह लियाजावे. इसी अरसहमें मन्दिर का बन्दोबस्त राजकी तरफ़से कियागया, याने उनकी सिपाहको निकालकर मौक़े मौक़े पर राजके पहरे मुक़र्रर करदियेगये; फिर लालबाबाको मन्दिरमें जानेकी इजाज़त दीगई, और कौन्सिल बर्ख़ास्त हुई. फिर ८ बजे रातको कौन्सिलका इज्लास हुआ, जिसमें अव्वल वे लोग पेश हुए, जिनको गोस्वामीकी गिरिफ़्तारीके वक्त उनके हम्राही समझकर ब्रजवासी लोगोंने पकड़ लिया था. इन लोगोंमें ५ शख़्स तो रिसालदार व सूबेदार वग़ैरह अफ़्सर और ९ शख़्स कारख़ानोंके दारोगह, अह्लकार, और १ यात्री था, जिनमेंसे आपा व

निर्भयराम तो हिसाबका इल्ज़ाम होनेके सबब हवालातमें रक्खेगये और बाक़ी सब लोग रिहा कियेगये. रिसालदार व सूबेदारको यह हुक्म सुनायागया, कि तुम तन्ख़्वाह पाकर बर्ख़ास्त कियेजाओगे, और तन्ख़्वाह उसवक़्ततक मिलेगी, जब कि हिसाब चुकाया जावेगा; इनके अ़लावह कारख़ानोंके दारोग़ह व अहल्कार वग़ैरह ७ आसामी बदस्तूर अपने अपने उह्देपर बहाल रहे, और यात्री रुख़्सत कियागया. मन्दिर व शहरके बन्दोबस्तके वास्ते यह तज्वीज़ हुई, कि महता गोपालदासको मुक़र्रर करके हुक्म दियाजावे, कि अधिकारीकी सलाहसे यहांके कुल कामका बन्दोबस्त रक्खे, किसी तरहका ख़लल न पड़े. पहिले जो अहल्कार हैं, उनसे सब काम सरिश्तहके मुवाफ़िक़ चलाते रहो; और अधिकारी बाल-कृष्णदास, जो कि वहांका क़दीमी प्रधानेके तौर काम करता है, उसको हुक्म दियाजावे, कि यहांके सब कामका ज़िम्मह तुम्हारा समझो, किसी तरह मन्दिरके काममें ख़लल न आवे, और किसी तरहका नुक्सान या ग़लती होगी, तो जवाब तुमसे लिया जावेगा; और दूसरे अहल्-कारोंको हुक्म दिया जावे, कि अधिकारी व महता गोपालदासके हुक्मकी तामील करें. फिर १० बजे कौन्सिल बर्ख़ास्त हुई. इसके बाद ६ बजे प्रातःकालको मेम्बर लोग मन्दिरमें जाकर ऊपर लिखेहुए हुक्म सुनानेके बाद उदयपुरको रवानह हुए. इस गुसाईंने महाराणा साहिबसे बग़ावत करनेके सिवा अपने बाप दादोंका ढंग छोड़कर मन्दिरके बालभोगमें कमी करदी और यात्रियोंपर दबाव डालकर उनसे धन एकट्ठा किया, और वही धन लाला मुन्शियोंको खिलाकर अपने तईं एक जुदा खुदमुख़्तार रईस बनानेकी कोशिश करना शुरू किया; अ़लावह इसके निर्दयता ऐसी इख़्तियार करली थी, कि कई मनुष्योंको क़ैद करके भूख पियास व मारपीटसे मृतप्राय कर रक्खा था. ये बात देखकर महाराणा स्वरूपसिंहने उक्त गोस्वामीकी बुरी आदतें छुड़ानेकी ग़रज़से धमकीके तौर नाथद्वाराके पट्टेपर ख़ालिसह भेजदिया था, लेकिन् कुछ अरसह बाद समझाइश करके ख़ालिसह वापस उठा लिया. इसी तरह महाराणा शम्भुसिंह साहिबके वक़्तमें भी विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में फिर ख़ालिसह भेजागया, तोभी उसने अपनी आदतें न छोड़ीं, तब मज़्हबी पेश्वाओंके बर्ख़िलाफ़ चालचलनसे गिरधरलालके लिये ऊपर लिखी हुई सज़ा तज्वीज़ कीगई, और उसको उदयपुरमें रखना मस्लिहत न जानकर विक्रमी १९३३ ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० १२९३ ता० २६ रबीउ़स्सानी = ई० १८७६ ता० २१ मई] को मथुरा वृन्दावन भेजदिया, और यह हुक्म हुआ कि वह नेक चलनसे वहां बैठा रहेगा, तो १०००) रुपया माहवारी ख़र्चके लिये नाथद्वारासे मिलता रहेगा; लेकिन् उसने अपनी आदतके मुवाफ़िक़ वहांसे निकलकर कई उपद्रव किये, जिससे उन रुपयोंका मिलना भी बन्द होगया, और अबतक वह कलकत्ता, बम्बई वग़ैरह अंग्रेज़ी अ़मलदारीमें श्रीगोवर्द्धननाथ की भेटमें ख़लल डालता फिरता है. महाराणा साहिबने गिरधरलालकी जगह उनके

पुत्र गोवर्द्धनलालको नाथद्वारेका गोस्वामी मुक़र्रर करके विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल पक्षमें क़रीब पांच वर्षतक ख़ालिसह रहनेके बाद उठन्तरी करदी. पेश्तर गोवर्द्धनलालको उदयपुर बुलाकर दस्तूरके मुवाफ़िक़ सन्मान और आश्वासन किया, फिर विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० ७ जून] को नाथद्वारे पधारकर उनको गद्दीपर बिठानेका दस्तूर अदा करआये, और गोवर्द्धनलालके कम उम्र होनेके कारण नाथद्वारेका प्रबन्ध अपने हाथमें रखकर पेश्तर महता गोपालदासको और बाद उसके मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याको वहांका प्रबन्धकर्त्ता मुक़र्रर किया. इसवक़ बहुतसे बखेड़े उठे, श्रीगोवर्द्धननाथकी भेट जो कोटा व गुजरात वग़ैरहसे आती थी उसमें गिरधरलालने ख़लल डालना चाहा, लेकिन् महाराणा साहिबकी मददसे सब प्रबन्ध अच्छी तरह चलता रहा.

वल्लभकुलके गोस्वामी गिरिराजसे बादशाह आलमगीरके समय गोवर्द्धननाथकी मूर्ति लेकर मेवाड़में आये, जिसका संक्षेप हाल तो महाराणा राजसिंह पहिलेके वृत्तान्तमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ४५३). अब यहांपर वल्लभाचार्यसे लेकर गोवर्द्धनलाल तकका कुर्सीनामह लिखाजाता है:-

१-वल्लभाचार्य.	२-विट्ठलनाथ १.	३-गिरधर १.	४-दामोदर १.
५-विट्ठलनाथ २.	६-गिरधर २.	७-दामोदर २ (१).	८-गिरधर ३.
९-रघुनाथ.	१०-गोविन्द.	११-गोकुलेश.	१२-गोपेश्वर.
१३-कृष्णराय.	१४-गोविन्दराय.	१५-गिरधर ४.	१६-गोवर्द्धनलाल.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १ [हि० ता० २९ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २२ जून] को महाराणा साहिबका कृष्णगढ़का सम्बन्ध पुख़्तह होकर कोठड़ीके मेघसिंह और महता महेशदासको कृष्णगढ़ जानेकी रुख़्सत मिली. इन्हीं दिनोंमें जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहने अपनी बहिनका सम्बन्ध महाराणा साहिबके साथ करनेकी कोशिश राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल स्केअर लॉयल साहिबकी मारिफ़त की. इस मुआमलहमें बाज लोगोंकी यह राय हुई, कि एकदम इन्कार करदिया जावे, लेकिन् महाराणा साहिबने अंग्रेज़ अफ़्सरोंकी मारिफ़तके सवालका जवाब शाइस्तगीके साथ देना चाहा. महता पन्नालाल और पुरोहित पद्मनाथको आबू भेजकर सम्बन्धकी बातोंमें चन्द क़लमें पेश्तर तय करने को पेश कीं, जिन्हें मुन्सिफ़ानह जानकर अंग्रेज़ी अफ़्सर इस मुआमलहसे किनारा करगये; तब जोधपुरके महाराजा साहिबने आशिया चारण कविराजा मुरारिदानको उदयपुर भेजा, वह

(१) यह विक्रमी १७२८ [हि० १०८२ = .ई० १६७१] में गोवर्द्धननाथको लेकर मेवाड़में आये.

विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १४ रजब = .ई॰ ता॰ ५ ऑगस्ट] को यहां आया, और उसकी पेश्वाईके लिये धरयावदके रावत् केसरीसिंह व बेमालीके रावत् लक्ष्मणसिंह धायभाईकी पुलांतक भेजेगये. उक्त कविराजाने जोधपुरमें अपनेको बांहपसाव होनेके सबब यहांसे भी वैसाही बर्ताव रखनेकी दर्ख्वास्त की. तब महाराणा साहिबने पेश्तर मुझ (कविराजा श्यामलदास) को बांहपसाव .इनायत करनेके बाद विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ३ [हि॰ ता॰ १७ रजब = .ई॰ ता॰ ८ ऑगस्ट] को कविराजा मुरारिदानको महलोंमें बुलाकर ताज़ीम और बांहपसावकी .इज़्ज़त दी. इस सम्बन्धके बारेमें बहुत कुछ बात चीत हुई, परन्तु चन्द बातें ऐसी पेश आईं, कि जिनसे यह मुल्तवी रहा, और विक्रमी आश्विन शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १४ रमज़ान = .ई॰ ता॰ ३ ऑक्टोबर] को कविराजा मुरारिदान रुख़्सत होकर जोधपुरको चलागया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १ [हि॰ ता॰ २९ रमज़ान = .ई॰ ता॰ १८ ऑक्टोबर] को कृष्णगढ़ विवाह करनेका प्रारम्भ, अर्थात् गणपतिस्थापन हुआ. इसवक़ भी पहिली शादीके मुवाफ़िक़ सर्दारों, पासवानों, और अहलकारोंकी तरफ़से हमेशह जल्से होते रहे, और महाराणा साहिबने नीचे लिखेहुए नौकरोंको उनके मकानोंपर पधारकर .इज़्ज़तें बख़्शीं. इस किताबके लिखने वाले (कविराजा श्यामलदास) के मकानपर विक्रमी कार्तिक शुक्ल ७ [हि॰ ता॰ ६ शव्वाल = .ई॰ ता॰ २४ ऑक्टोबर] को पधारकर दिनभर विराजे, और शामको बनोलेकी दावत अरोगनेके बाद बड़ी धूमधाम के साथ महलोंको सिधारे. इसीतरह महता गोकुलचन्द, बागौरके महाराज शक्तिसिंह, मामा राठौड़ बख़्तावरसिंह, धव्वा राव बदनमल्ल, ढींकड़िया तेजराम, महता मुरलीधर, करजालीके महाराज सूरतसिंह, महता लालचन्द, शिवरतीके महाराज गजसिंह, पुरोहित पद्मनाथ, पीपलियाके रावत् कृष्णसिंह, धायभाई गणेशलाल, सर्दारगढ़के ठाकुर मनोहरसिंह, ताणाके राज देवीसिंह, पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंह, बेदलाके राव बख़्तसिंह, सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह, कुरावड़के रावत् रत्नसिंह और काकरवाके राणावत उदयसिंह वग़ैरहकी तरफ़से दावतें और जल्से बड़ी धूमधामके साथ होते रहे. इन्हीं दिनोंमें विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि॰ ता॰ १२ शव्वाल = .ई॰ ता॰ ३० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबके इख़्तियारातकी बाबत लॉर्ड साहिबका ख़रीतह आया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि॰ ता॰ १७ शव्वाल = .ई॰ ता॰ ४ नोवेम्बर] को उदयपुरसे बरात याने लश्करका कूच हुआ, और महाराणा साहिब विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि॰ ता॰ २१ शव्वाल = .ई॰ ता॰ ८ नोवेम्बर] को बग्घीकी डाकमें सवार होकर शामके वक़ गुरलां मक़ामपर लश्करमें दाख़िल हुए. वहांसे भीलवाड़ा और भीलवाड़ा

से वनेड़े पहुंचे, राजा गोविन्दसिंहकी तरफ़से क़िलेमें पधरावनी और दावत हुई. वहांसे शाहपुरामें दाख़िल हुए, जहां राजाधिराज नाहरसिंहने पधरावनी व दावत की, यहांसे फूलिया होकर सरवाड़में मकाम हुआ, इस मक़ामपर कृष्णगढ़का महता सौभाग्यसिंह और रघुनाथपुराका जागीरदार राठौड़ भारतसिंह टीकेका दस्तूर लेकर आये. यहांसे चलकर आकोदड़ा और वहांसे गांव दाथे मक़ाम हुआ, जहां विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की फ़ज्रको कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मए कुंवर शार्दूलसिंह, जवानसिंह व वहांके पोलिटिकल एजेण्ट बेली साहिबके पेश्वाईको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात होकर कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मए दोनों पुत्रोंके महाराणा साहिबकी बग्घीमें और पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल हर्बर्ट व जयपुरके पोलिटिकल एजेण्ट दोनों दूसरी बग्घीमें और मेवाड़के सर्दार भी बग्घियोंमें बैठकर कृष्णगढ़ पहुंचे. महाराणा साहिबको डेरोंमें पहुंचाकर महाराजा पृथ्वीसिंह अपने महलोंको सिधारे. शामके वक्त बड़ी धूमधामसे महाराजा पृथ्वीसिंहकी राजकुमारी जवाहिरकुंवर बाईके साथ महाराणा साहिबका विवाह हुआ. इस विवाहमें कृष्णगढ़की तरफ़से महाराणा साहिब और उनकी फ़ौजका आतिथ्य बड़ी मुहब्बतके साथ कियागया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २२ नोवेम्बर] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मेजर वाल्टर साहिब भी इस जल्सेमें शरीक हुए. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल हर्बर्ट साहिबकी जगह मेजर इम्पी साहिब आये, और हर्बर्ट साहिब रुख़्सत होकर गये. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० ता० ९ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब कृष्णगढ़से रवानह होकर गगवाणे और वहांसे अजमेर पहुंचे, एक कोसतक अजमेरके कमिश्नर वग़ैरह ८ साहिब पेश्वाईको आये, महाराणा साहिब आनासागर तालाबपर सेठ शमीरमल्लकी कोठीमें ठहरे. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को पुष्कर स्नान करने गये, और विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ५ डिसेम्बर] को ज़नानी सवारी व बाक़ी फ़ौज उदयपुरको रवानह कीगई, क्योंकि महाराणा साहिबने दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें जाना बड़ी बहसके बाद क़बूल करलिया था. विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्क़ाद = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को अजमेरसे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर जयपुर पहुंचे, वहांके महाराजा सवाई रामसिंह पेश्वाईको स्टेशनपर मौजूद थे. महाराणा साहिब भी गाड़ीसे उतरकर मिले, तरफ़ैनके सर्दारोंने नज़्रें दिखलाईं, फिर स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर विक्रमी पौष शुक्ल ३ [हि० ता० १

ज़िल्हिज = .ई० ता० १८ डिसेम्बर] की शामको दिल्ली पहुंचे, रेलगाड़ीसे स्टेशन के दर्वाज़ेतक लाल बानातका फ़र्श बिछाया गया, और पेश्वाईको दिल्लीके कमिश्नर कर्नेल् डेविस और पुलिसके असिस्टेंएट सुपरिन्टेण्डेएट साहिब, अफ़्सर मुसाहिब मेजर ऑडर्स फ़ॉरिन् डिपार्टमेण्टके अटाची मए फ़ौजी कम्पनी व रिसालेके मौजूद थे. गवर्मेण्टकी तरफ़से १९ तोपोंकी सलामी सर हुई. फिर डेरोंमें पहुंचे उसवक़ भी १९ तोपोंकी सलामी सर्कारी तोपखानहसे सर हुई. महाराणा साहिबसे महाराजा जोधपुरकी मुलाक़ात क़रीब १०५ वर्षसे बन्द थी (१), और महाराणा साहिबकी यह ख़्वाहिश थी, कि कुल राजपूतानहमें एकता फैलाई जावे, इसलिये मालिकोंकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) और जोधपुरके कविराजा मुरारिदानकी मारिफ़त इस बातकी कोशिश होरही थी, लेकिन् रजवाड़ी दस्तूरोंकी रोकसे मौक़ा न मिला. इसवक़ कविराजा मुरारिदान तो जोधपुरमें रहगया और मैंने ख़ान बहादुर भय्या फ़ैज़ुल्लाहख़ांको कहा, कि पेश्तर कौन किसके डेरेपर आवे, इस बह्सको तै करना चाहिये. उसने महाराजा साहिबसे अर्ज़ की. वे तो साफ़ दिल थे, मन्ज़ूर करलिया कि पेश्तर हम महाराणा साहिबके पास जाकर मुलाक़ात करेंगे. विक्रमी पौष शुक्ल ५ [हि० ता० ४ ज़िल्हिज = .ई० ता० २१ डिसेम्बर] की शामको महाराजा जशवन्तसिंह साहिब मुलाक़ातको आये. महाराणा साहिब डेरोंकी ड्योढ़ीतक पेश्वाई करके उन्हें भीतर लेआये, कुर्सियोंपर दोनों महाराजाधिराज और तरफ़ैनके सर्दार बैठगये, थोड़ी देरतक मुहब्बत आमेज़ बातें होती रहीं. रुख़्सत होनेके वक़ महाराणा साहिबने पेश्वाईकी जगहतक महाराजाको पहुंचा दिया. यह सैकड़ों वर्षकी रोक टोकका ख़ातिमह होनेका प्रारम्भ हुआ. दूसरे रोज़ इसीतरह महाराणा साहिब भी जोधपुर महाराजा साहिबके डेरेपर मुलाक़ातको पधारे. शामके वक़ रीवांके महाराजा रघुराजसिंह महाराणा साहिबसे मुलाक़ात करनेको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात हुई. फिर एकान्तमें बात चीत करके वापस गये. विक्रमी पौष शुक्ल ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज = .ई० ता० २३ डिसेम्बर] को लॉर्ड लिटनकी पेश्वाईके लिये महाराणा साहिब और दूसरे राजा लोग स्टेशनपर गये, दिनके दो बजे लॉर्ड साहिब स्पेशल ट्रेनमें आये, महाराणा साहिब और सब राजा लोग उनसे मुलाक़ात करके जुमा मस्जिदतक साथ साथ गये, वहांसे लॉर्ड साहिब अपने डेरोंमें गये, और सब राजा लोग अपने अपने

---

(१) विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = .ई० १८७०] में जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह महाराणा शम्भुसिंह साहिबसे अजमेरके मक़ामपर मिले थे. वह ख़ानगी मुलाक़ात थी, दस्तूरी मुलाक़ात इस वक़्से पहिले नहीं हुई.

डेरोंमें गये. महाराणा साहिब और महाराजा साहिब जोधपुर एक बग्घीमें सवार होकर अपने कैम्पमें तश्रीफ़ लाये. विक्रमी पौष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ ज़िल्हिज = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मुलाक़ातके लिये डेरेपर आये; महाराणा साहिबने मामूलके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात की. उनके बाद झालरापाटनके महाराजराणा दूसरे ज़ालिमसिंह मुलाक़ातको आये. इसके बाद महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर कृष्णगढ़ महाराजाके डेरेपर मुलाक़ातको पधारे. विक्रमी पौष शुक्ल १० [हि० ता० ९ ज़िल्हिज = ई० ता० २६ डिसेम्बर] को पहर दिन चढ़ेके क़रीब महाराणा साहिब लॉर्ड लिटनके डेरेपर मुलाक़ातको पहुंचे. हाथी, रिसाला और पल्टन वग़ैरह लवाज़िमह तो पहिलेही पहुंचादिया था, महाराणा साहिबके साथ ९ सर्दार, बेदलाका राव बख़्तसिंह, बेगमका रावत् तीसरा मेघसिंह, मेजाका रावत् अमरसिंह, पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह, करजालीका बाबा महाराज सूरतसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, पीपलियाका रावत् कृष्णसिंह, ताणाका राज देवीसिंह और बेदलाके रावका पुत्र तख़्तसिंह थे. बग्घीसे उतरनेकी जगहतक फ़ॉरेन् डिपार्टमेण्टके दो सेक्रेटरी और फ़र्शके किनारेतक लॉर्ड लिटन पेश्वाई करके महाराणा साहिबको लेगये. कुर्सियोंपर बैठनेके बाद महाराज राणी विक्टोरियाकी तस्वीरवाला सोनेका चांद और एक निशान लॉर्ड साहिबने महाराणा साहिब को दिया, और दो तोप सलामीकी फिर बढ़ाई गईं. इसके बाद जिसतरह पेश्वाई करके लाये उसी तरह पहुंचागये. फिर महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर अपने डेरोंमें आये. विक्रमी पौष शुक्ल ११ [हि० ता० १० ज़िल्हिज = ई० ता० २७ डिसेम्बर] को लॉर्ड लिटन महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको डेरोंपर आये. इस क़ैसरी दर्बारमें लॉर्ड साहिबने मुलाक़ात व बर्तावके नम्बर तोड़ दिये थे, कि जिससे किसीको नागुवार न गुज़रे, इसवास्ते पेश्तर झालावाड़के राजराणा ज़ालिमसिंहकी मुलाक़ात को गये, और उसके बाद महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये. झालावाड़के डेरोंतक बेगमका रावत् मेघसिंह, मेजाका रावत् अमरसिंह, पारसोलीका राव लक्ष्मण-सिंह और करजालीका महाराज सूरतसिंह पेश्वाईको गये. लॉर्ड साहिबके बग्घीसे उतरने के स्थानतक लाल बानातका फ़र्श बिछाया गया, और महाराणा साहिब पेश्वाई करके उन्हें डेरेमें लेआये. दाहिनी तरफ़ कुर्सीपर लॉर्ड लिटन और उनके पास फ़ॉरेन् सेक्रेटरी, और एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह व दस अंग्रेज़ अफ़्सर दूसरे बैठे, और बाईं तरफ़ महाराणा साहिबके पास पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् ई० सी० इम्पी और फ़र्स्ट असिस्टेण्ट पोलिटिकल एजेण्ट गार्डन और बेदलाका राव बख़्तसिंह, बेगमका रावत् सवाई मेघसिंह, मेजाका रावत् अमरसिंह, पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह, आसींदका

रावत् अर्जुनसिंह, करजालीका महाराज सूरतसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह, ताणाका राज देवीसिंह, केलवाका जागीरदार ओनाड़सिंह, नाना राठोड़ बख़्तावरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास), चहुवान रत्नसिंह, चहुवान अमरसिंह, राणावत उदयसिंह, राठोड़ पृथ्वीसिंह, चहुवान भैरवसिंह, शक्तावत मेघसिंह, चहुवान लक्ष्मणसिंह, बावलासके बाबा हमीरसिंहका पुत्र गोपालसिंह, सर्दारगढ़के ठाकुरका पुत्र प्रतापसिंह, गोगूंदाके राज मानसिंहका पुत्र अजयसिंह, भींडरके महाराज हमीरसिंहका छोटा पुत्र रत्नसिंह. आढ़ा रामलाल चारण, बारहट चतुर्भुज चारण, धव्वा वदनमल्ल, महता पन्नालाल, सेठ जवाहिरमल्ल और जानी मुकुन्दलाल वगैरह सर्दार अहलकार अपनी अपनी जगह कुर्सियोंपर बैठे. फिर महाराणा साहिब और लॉर्ड साहिबके परस्पर शौक़िया बात चीत होकर महाराणा साहिबने लॉर्ड साहिब व उनके ५ अफ़्सरोंको और बाक़ी साहिबोंको राव बख़्तसिंहने इत्र पान देकर रुख़्सत किया, और पेश्वाई की उसी तरह पहुंचादिया. इसीतरह जोधपुर वगैरहके राजाओंसे लॉर्ड साहिबकी मुलाक़ातें हुईं. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि॰ ता॰ ११ ज़िल्हिज = .ई॰ ता॰ २८ डिसेम्बर] को शामके वक़्त कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह डेरोंपर आये, और महाराणा साहिबसे मुलाक़ात करके वापस गये. इसके बाद महाराणा साहिब जोधपुरके डेरोंमें जाकर महाराजा जशवन्तसिंहसे मुलाक़ात कर आये. विक्रमी माघ कृष्ण १ [हि॰ ता॰ १४ ज़िल्हिज = .ई॰ ता॰ ३१ डिसेम्बर] को शामके वक़्त रीवांके महाराजा रघुराजसिंह महाराणाकी मुलाक़ातको आये, और उनके जानेके बाद कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह आये, थोड़ी देर पीछे जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंह आये; महाराणा साहिब ड्योढ़ीतक पेश्वाई करके उन्हें लेआये. कुछ देर बात चीत करके कृष्णगढ़के महाराजा तो वापस चलेगये, और उनके बाद जयपुरके महाराजा साहिबसे बात चीत होती रही. फिर उदयपुरके उमराव, सर्दार व अहलकारोंने महाराजा साहिबको नज़्रें दीं, और महाराजा रामसिंह अपने डेरोंको गये. विक्रमी माघ कृष्ण २ [हि॰ ता॰ १५ ज़िल्हिज = .ई॰ १८७७ ता॰ १ जैन्युअरी] को क़ैसरी दर्बारका जल्सह हुआ, जिसका हाल मुफ़स्सल तौरपर किताब तारीख़ क़ैसरीसे नीचे नक़्ल कियाजाता है:-

दर्बार क़ैसरीकी कैफ़ियत, जो दिल्लीमें पहिली जैन्युअरी सन् १८७७ .ई॰ को हुआ.

किताब मिलनेका इश्तिहार नम्बर ७०; जो हिन्दुस्तानके दफ़्तरख़ानह लन्दनसे १२ जुलाई सन् १८७६ .ई॰ को प्रकाशित हुआ.

जनाब मलिकह मुअज़्ज़महके सेक्रेटरी सल्तनत हिन्दुस्तानकी तरफ़से हिन्दुस्तानके सर्दारोंके नाम.

मैं आपकी गवर्मेंएटकी सूचनाके लिये इस काग़ज़के साथ जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके उस इश्तिहारकी एक नक्ल, जिसमें इस बातका बयान है, कि जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महने ख़िताब "क़ैसरि हिन्द" इख़्तियार फ़र्माया है, भेजता हूं.

जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके इस कामसे यह मुराद है, कि जनाब मौसूफ़ ज़ाबितह और मज्बूतीके साथ अपनी उन खुशगुमानियोंको ज़ाहिर फ़र्मावें, जो वे हमेशहसे हिन्दुस्तानके रईसों और रिआ़याकी निस्बत रखती हैं, और जिनके इज़्हार के लिये उनकी रायमें यह वक्त निहायत मुनासिब है. मेरी गुज़ारिश यह है, कि आप जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तमाम हिन्दुस्तानी अ़मल्दारीमें इस तरक़ीका इश्तिहार, जो ख़िताब और अल्क़ाब शाहीमें कीगई है, ऐसे ढंगपर करें, जो उनके मिहर्बान और दिली इरादोंके मुवाफ़िक़ हो-फ़क़त्.

दस्तख़त सालिसबरी.
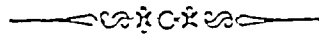
इसी महीनेमें हुज़ूर वाइसरॉय बहादुरकी पेशगाहसे हिन्दुस्तानके तमाम नामी रईसों, फ़रंगिस्तानी बड़े हाकिमों, खुद मुख़्तार व सर्हदी रियासतोंके मालिकों और ग़ैर मुल्कके वज़ीरों, एल्चियों और बड़े दरजहके मुल्की .उह्दहदारों और दर्याई व खुश्की फ़ौजके अफ़्सरोंके नाम, जो हिन्दुस्तानसे तअ़ल्लुक़ रखते हैं, इस ग़रज़से ख़रीते, फ़र्मान और ख़त जारी हुए, कि वे पहिली जेन्युअरी सन् १८७७ .ई० को दिल्ली मक़ामपर दर्बार में शरीक हों. इस हुक्मकी तामीलमें २८ नोवेम्बरसे २२ डिसेम्बर सन् १८७६ .ईसवीतक तमाम तलब किये हुए लोग, और दूसरे बग़ैर बुलाये हुए शायक़ीन अपने अपने खेमों वग़ैरहमें दाख़िल होगये, और गवर्मेंएटकी तरफ़से हरएकके रुतबे और दरजेके मुवाफ़िक़ पेश्वाई, तोपोंकी सलामी और मिह्मान्दारी अदा कीगई. २५ डिसेम्बर को हुज़ूर लॉर्ड लिटन साहिब बहादुर वाइसरॉय दिल्लीमें तश्रीफ़ लाये और २६ तारीख़से ३० तक लॉर्ड साहिबने ऊपर बयान किये हुए रईसोंसे ज़ाबितह और बदलेकी मुलाक़ातें कीं. ३० तारीख़की शामको हुज़ूर वाइसरॉय बहादुरने सुनहरी निशान और तमग़े गवर्नर मद्रास और लेफ़्टिनेएट गवर्नरान बंगाला, ममालिक मग़रबी व शिमाली और पंजाब, और गवर्नरान पुर्तगाल व बम्बई और दूसरे उह्दहदारों और हिन्दुस्तानी रईसोंको उनके दरजहके मुवाफ़िक़ अ़ता फ़र्माये; और हरएक बड़े रईसको हुज़ूर वाइसरॉय बहादुरने मुलाक़ातके वक्त तमग़ह और एक एक झंडा दिया. इस लकड़ीके रेश्मी निशानपर बहुत अच्छा रुपह्री काम बना हुआ था, और लकड़ीके सिरेपर एक एक ताज बनायागया था, और एक छोटी तख़्ती उन झंडोंमें लटकती थी, जिसपर सुनह्री हर्फ़ोंमें हरएक रईसका नाम लिखा हुआ था, और हरएक झण्डेके

फरहरेपर यह भी लिखाहुआ था, कि यह निशान हिन्दुस्तानके शहन्शाहने रईसको दिया है. यह झंडे छप्पन थे, और बाज़े इनमें सुनहरी भी थे.

निशान और तमगे देनेके वक्त वाइसरॉय बहादुरने रईसोंसे फ़र्माया, कि "मैं यह निशान आपको जनाब मलिकह मुअज़्ज़महकी खास बख़्शिशके तौर .इनायत करता हूं और उम्मेद रखता हूं, कि यह शहन्शाही जल्सेकी यादगार रहेगा. जनाब मलिकह मुअज़्ज़महको उम्मेद है, कि इस झण्डेको जब आप लोग खोलेंगे, तो आपको याद होजायेगा, कि किसक़द्र इंग्लिस्तानके तख़्त और आपके खानदानसे नज़्दीकी है; और जनाब मलिकह मुअज़्ज़महका दिली मन्शा यह है, कि आपका खानदान मज़्बूतीके साथ अपनी रियासतपर हुकूमत किया करे; और मैं यह तमगह जनाब क़ैसरि हिन्दके हुक्मके मुवाफ़िक़ आपको देता हूं, और मुझको उम्मेद है, कि आप उसको एक मुद्दत तक पहिनेंगे, और आपके खानदानमें यह शहन्शाही जल्सेकी यादगारके तौरपर रहेगा."

जब ये कार्रवाइयां खत्म होचुकीं, तो ता० १ जैन्युअरी सन् १८७७ ई० को सोमवारके दिन छः बजे सुब्हसे देखनेवाले लोगोंके झुंडके झुंड क़ैसरी तख़्तगाहकी तरफ़ जाने लगे. दर्बारका मक़ाम और वाइसरॉयका जुलूसी तख़्त, जिसको आम लोग चबूतरा कहते हैं, दिल्लीसे चार मील उत्तर पश्चिम कोणकी तरफ़ एक बहुत बड़े मैदानमें, जो तख़्मीनन् १५ मील मुरब्बा होगा, बहुत ख़ूबीके साथ तय्यार किया गया था. वाइसरॉयके जुलूसी तख़्तका चबूतरा छः पहलू (षट्कोण) २८० फ़ीट घेरेमें और ज़मीनसे दस फ़ीट ऊंचा था. इसका लाल रंग और कारचोबी शामियानह सुनहरे थंभोंपर मए सुनहरे कलसोंके जो ७० फ़ीट ऊंचे होंगे बहुत सफ़ाई और दुरुस्तीके साथ खेंचागया था. इस शामियानहपर कई तरहकी तस्वीरें और ढाल, तलवार, चांद और सूरजके चिन्ह और शाही मुहर (घोड़ा और शेर) और कुछ .इबारत मए फ़िक़्रे "वेल्कम" याने मुबारकबादके सुनहरी हर्फ़ोंमें लिखी हुई थी.

चबूतरेके गिर्द सुनहरी जंगला (कटहरा), जिसमें आबी रंगकी गुलकारी (वेल बूटे) थी, बहुत दुरुस्तीके साथ लगायागया था, और लाल बानातका फ़र्श ज़ीने तक बिछाया गया था, चबूतरेपर सुनहरी कुर्सी वाइसरॉयके लिये बिछाईगई थी, जिसपर यह लिखा हुआ था, "मलिकहकी रोशनी हमारी हिदायतको काफ़ी है." इस चबूतरेके तीन तरफ़ बाजेवाले गोरे और तोपें खड़ी थीं. इस चबूतरेके आगे १०० गज़के फ़ासिलहसे एक दूसरा अर्द्धचन्द्राकार चबूतरा मुल्की रईसोंकी नशिस्तके लिये १६० फ़ीट लम्बा ४० फ़ीट चौड़ाईमें ज़मीनसे ३ फ़ीट ऊंचा बनाया गया था. इसका शामियानह सिफ़ेद साठन रेश्मी झालरका सुनहरे रंगके थंभोंपर तनाहुआ

था, फ़र्श ज़ीनेतक लाल बानातका था, उसपर लकड़ीकी कुर्सियां नीले रंगके रेश्मी कपड़ेसे मंढ़ीहुई थीं, और कलाबत्तूनसे रईसका पूरा नाम लिखा हुआ था, और हर रईसके आगे वह झंडा जो सर्कारसे अता हुआ था खड़ा था. वाइसरॉयकी नशिस्तके पीछे नालकी शक्लके दो चबूतरे अस्सी अस्सी फ़ीट लम्बे और चालीस चालीस फ़ीट चौड़े उन लोगोंकी नशिस्तके लिये बने थे, जो अंग्रेज़ी अफ्सर, अंग्रेज़ी अख्बारोंके एडिटर, दिल्ली के रईस और दूसरे मक़ामोंके तअल्लुक़हदार, हिन्दुस्तानी उहदहदार और देशी अख्बारोंके मालिक थे. इन चबूतरोंपर जो खेमह था, उसके थंभे लोहेके नीले रंगके थे. और फ़र्श भी कुर्सी और बेंचोंका नीला था. इन चबूतरोंके दर्वाज़ोंपर एक एक हर्फ़ अंग्रेज़ी ए०, बी०, सी०, डी० वग़ैरह मोटे क़लमसे लिखा हुआ था, और वहां एक एक यूरोपिअन अफ्सर खड़ा था, जो हरएकके टिकटका हर्फ़ पहिचानकर उसके दरजहमें बिठा देता था.

मुल्की रईसोंकी बैठकके ज़ीनेके क़रीब एक एक कम्पनी पल्टनकी खड़ी थी, जिसवक्त कोई राजा या नव्वाब तश्रीफ़ लाता था, तो क़ाइदहके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी अफ्सर पेश्वाई करके उनको नशिस्तगाहतक पहुंचादेते थे, और कम्पनीसे सलामी अदा कीजाती थी. इन चबूतरोंके दोनों बाजुओंपर सर्कारी सवार व पैदल फ़ौज तोपखानह समेत. जो क़रीबन पचास हज़ार होगी, बहुत दुरुस्तीके साथ लाइन बांधे खड़ी थी; एक तरफ़ आम तमाशाई लोग और दूसरी तरफ़ मुल्की रईसोंका जुलूस, याने हाथी, घोड़े और बग्घी वग़ैरह थे. अगर्चि इस तमाम हुजूमकी मर्दुमशुमारी न हुई, मगर तख्मीनह चार लाखके (१) क़रीब किया गया है. जबकि १२ बजेतक तमाम तय्यारियां होचुकीं, तो सवा बारह बजेके क़रीब जनाब वाइसरॉय बहादुरकी सवारी बड़ी शान व शौकतके साथ मए स्टाफ़ अफ्सरों, याने मुसाहिब हमाहियोंके (और बड़े दरजहके साहिब लोग भी, जो क़रीब ४०–५० के होंगे पीछेसे आये) दाखिल हुई. वाइसरॉय बहादुर बग्घीसे उतरकर दक्षिणी दर्वाज़ेकी तरफ़से तश्रीफ़ लाये, और लाल बानाती फ़र्शपरसे, जो दर्वाज़ेसे तख्ततक बिछा हुआ था, गुज़रकर इज्लासके मक़ामपर पहुंचे. दाखिल होतेही बाजे वालोंने सलामीकी गत बजाई और तमाम रईसोंने अपनी नशिस्तगाहसे सीधे खड़े होकर ताज़ीमसे सलाम अदा किया. वाइसरॉयने सबके सलामका जवाब दोनों हाथोंसे देकर टोपीको हरकत दी, और बैठनेके वास्ते हुक्म दिया. सब रईसोंके बैठजाने बाद खुद वाइसरॉय भी अपने मक़ामपर

(१) दिल्ली दर्बार दर्पणमें दो लाखके क़रीब लिखा है.
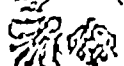
बैठगये. इसके बाद चीफ़ सेक्रेटरी (हेरल्ड) साहिबने हुक्म लेकर सलाम अदा करने के बाद चार पांच सीढ़ियें उतरकर बुलन्द आवाज़से अंग्रेज़ी ज़बानमें ख़िताब लेनेका इश्तिहार पढ़ा, फिर उसका उर्दू तर्जमह सुनाया, जो नीचे लिखा जाता है:–

बाब १० ऐक्ट पार्लिमेन्ट, मत्रियह सन् ३९ जुलूस
मलिकह मुअज़्ज़मह विक्टोरिया.

ऐक्ट इस बातके मत्लबसे है, कि जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह उन शाही ख़िताबों और अल्क़ाबोंमें जो एकही सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीके मुतअ़ल्लिक़ है, एक और ख़िताब ज़ियादह करसकें, २७ एप्रिल सन् १८७६ ई०.

इस सबबसे, कि उस ऐक्टके बाब ६७ के रूसे, जो वास्ते एकड्डा करने तमाम सल्तनत इंग्लिस्तानके बादशाह तीसरे ज्यॉर्ज गुज़रे हुए के सन ४० जुलूसमें जारी हुआ था, कि देशी मिलाप होने केबाद, जो ऊपर बयान हुआ. ख़िताब और अल्क़ाब शाही जो एकही सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीके मुतअ़ल्लिक़ हैं वही हुआ करेंगे, जो बादशाह अपने शाही इश्तिहारके ज़रीएसे, जिसपर एकही सल्तनतकी बड़ी मुहर हो, मुक़र्रर फ़र्मावें; और इस सबबसे, कि ज़िक्र किये हुए ऐक्ट और शाही मुहरी इश्तिहार, तारीख़ १ जेन्युअरी १८०१ ई० के रूसे जनाब मलिकह मुअज़्ज़महके ख़िताब और अल्क़ाब इस वक़्त ये हैं– " विक्टोरिया ख़ुदाके फ़ज़्लसे इंग्लिस्तानकी एकही बड़ी सल्तनत और आइर्लेण्डकी मलिकह और ईसाई धर्म रक्षक. "

बाब ६७, ऐक्ट पार्लिमेण्ट, जो बादशाह तीसरे ज्यॉर्ज के सन जुलूस ३९ व ४०, ई० १८०० में जारी हुआ.

और इस सबबसे कि उस ऐक्टके बाब १६० के रूसे, जो वास्ते उम्दह इन्तिज़ाम हिन्दुस्तानके सन् २१ व २२ जुलूस जनाब मलिकह मुअज़्ज़महमें इज्लास पार्लिमेण्टसे जारी हुआ, यह हुक्म हुआ था, कि सर्कार हिन्दुस्तान, जो इसवक़्त तक जनाब मलिकह मुअज़्ज़महकी तरफ़से सर्कार ईस्ट इंडिया कम्पनी बहादुरकी हुकूमतमें बतौर अमानतके थी, जनाब मलिकह मुअज़्ज़महके सुपुर्द हो; और यह कि इसवक़्तसे मुल्क हिन्दुस्तानपर जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह हुक्मरानी फ़र्मावें और उनके नाम नामीसे उसपर हुकूमत कीजावे; और मस्लिहत यह है, कि यह हुकूमतकी तब्दील व सुपुर्दगी, जो ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ कीगई, उसकी क़ुबूलियत इस ज़रीएसे ज़ाहिर हो, कि जनाब मलिकह मुअज़्ज़महके ख़िताब और अल्क़ाबमें एक

बाब. १६० ऐक्ट पार्लिमेण्ट. जो सन २१ व २२ जुलूस मलिकह मुअज़्ज़मह विक्टोरियामें जारी हुआ.

और लक़ब बढ़ाया जावे, इसलिये बमूजिब मिहर्बान फ़र्मान जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके और मुवाफ़िक़ सलाह व मर्ज़ी मज़्हबी और मुल्की सर्दारों और आम जमाअ़तके जो इस मौजूदह पार्लिएमेण्टमें जमा हैं, और इस पार्लिएमेण्टकी इजाज़तसे नीचे लिखा हुआ हुक्म फ़र्माया गया, कि जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महको जाइज़ होगा, कि सर्कार हिन्दुस्तानकी ऊपर बयान कीहुई तब्दीली और सुपुर्दगीकी क़बूलियत व पसन्दीदगीकी नज़रसे उस ख़िताब और अल्क़ाबमें, जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे मुतअ़ल्लिक़ हैं, शाही मुहरी इश्तिहारके ज़रीएसे ऐसा लक़ब बढ़ावें, जो जनाब मौसूफ़को मुनासिब मालूम हो.

जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महका इश्तिहार अपनी बादशाहीके ख़िताब और अल्क़ाबमें इज़ाफ़ह करनेके बाबत.

जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके हुज़ूरसे जारी हुआ- फ़क़त.

इश्तिहार,

(मलिकह मुअ़ज़्ज़मह विक्टोरिया).

जोकि पार्लिएमेण्टके हालके इज्लासमें एक ऐक्ट इस नामका, "ऐक्ट इस मक़्सदसे कि जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़मह उस शाही ख़िताब व अल्क़ाबमें, जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे मुतअ़ल्लिक़ हैं, एक और लक़ब ज़ियादह करसके" जारी हुआ है; और उस ऐक्टमें लिखा है, कि बड़ी इंग्लिस्तानी और आयर्लेण्डकी सल्तनतको एकट्ठा करनेके ऐक्टके रूसे यह हुक्म हुआ था, कि बाद एकट्ठी होने दोनों मुल्कोंकी सल्तनतके एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीके मुतअ़ल्लिक़ ख़िताब और अल्क़ाब वही हुआ करेंगे, जो बादशाह अपने शाही इश्तिहारके ज़रीएसे, जिसपर एकट्ठी सल्तनतकी बड़ी मुहर हो, मुक़र्रर फ़र्मावे; और उस ऐक्टमें यह भी लिखा है, कि ऐक्ट मज़्कूर और बड़ी मुहरके शाही इश्तिहारके मन्शाके मुवाफ़िक़, जो तारीख़ पहिली जेन्युअरी सन् १८०१ ई० को जारी हुआ है, हमारे हालके ख़िताब और अल्क़ाब यह हैं,- "विक्टोरिया ख़ुदाकी मिहर्बानीसे एकट्ठी बड़ी सल्तनत इंग्लिस्तान और आयर्लेण्डकी मलिकह और ईसाई धर्म रक्षक," और उस ऐक्टमें यह भी लिखा है, कि ऐक्ट बाबत उम्दह इन्तिज़ाम सर्कार हिन्दुस्तानके यह हुक्म जारी हुआ है, कि सल्तनत हिन्द, जो उसवक़्ततक हमारी तरफ़से सर्कार ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुरकी सुपुर्दगीमें अमानतके तौरपर थी, हमारे तअ़ल्लुक़में आजाये, और यह कि अब आगेको हिन्दुस्तानपर हमारी हुकूमत हो, और हमारे नामसे उसपर हुकूमत कीजाये; और मस्लिहत यह है, कि हुकूमतकी तब्दीली और सुपुर्दगी जो ऊपर बयान किये मुवा-

ज़िक्र कीगई, उसकी कुबूलियत इस तौरपर ज़ाहिर कीजाये, कि हमारे खिताब और अल्क़ाब में एक और लक़ब बढ़ाया जाये; और उस ऐक्टमें इन बयानोंके बाद यह हुक्म हुआ है, कि हमको जाइज़ होगा, कि गवर्मेंट हिन्दकी तब्दीली और सुपुर्दगीकी ऊपर बयान कीहुई कुबूलियतकी नज़रसे उस खिताब और अल्क़ाबमें, जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे इसवक्त मुतअ़ल्लक़ हैं, हमारे जारी किये हुए इश्तिहारके ज़रीएसे जिसपर एकट्ठी सल्तनतकी बड़ी मुहर है, ऐसा लक़ब बढ़ावें, जो हमको मुनासिब मालूम हो· इसवास्ते हमने प्रिवी कौन्सिलके वज़ीरोंकी सलाहसे यह मुनासिब समझा, कि यह मुक़र्रर और ज़ाहिर करदें (और उस सलाहसे और उस सलाहके मूजिब इस इश्तिहारके रूसे, यह मुक़र्रर और ज़ाहिर कियाजाता है), कि अबसे जहांतक आसानीके साथ तमाम मौक़ों और तमाम दस्तावेज़ोंमें जिनमें हमारे खिताब और अल्क़ाब काममें लायेजावें, सिवा चार्टर (मुल्की अ़हदनामों), कमिशन (उ़हदोंके फ़र्मान), और लेटर्ज़ पेटेंट (आम खत किताबत), ग्रांट (मुआ़फ़ी व बख़्शिश), और रेट (पर्वानेजात), अपॉइंटमेंट (तक़र्रुरी) और इसी तरहकी तमाम दूसरी दस्तावेज़ों वग़ैरहके जो इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनत इंग्लिस्तानके बाहिर असर न रखती हों, उस खिताब और अल्क़ाबमें जो इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे इसवक्त मुतअ़ल्लक़ हैं, ज़बान लाटिनमें ये शब्द "इण्डिए एम्प्राट्रेक्स" और अंग्रेज़ी ज़बानमें ये शब्द "एम्प्रेस ऑफ़ इण्डिया" (क़ैसरि हिन्द) बढ़ाये जायें.

सिवा इसके हमारी मर्ज़ी और खुशी यह है, कि कमिशन, चार्टर, लेटर्ज़ पेटेंट, ग्रांट, रेट, अपॉइंटमेंट, और इसीतरहकी दूसरी दस्तावेज़ोंमें, जो ऊपर खुसूसियतके साथ अ़लहदह कीगई हैं, वह न बढ़ाया जावे; और इसके सिवा हमारी मर्ज़ी और खुशी यह है, कि तमाम सोने और चांदी और तांबेके नक्द सिक्के, जो इसवक्त जाइज़ व राइज हैं, और तमाम सोने और चांदी और तांबेके नक्द सिक्के जो आज या आज पीछे हमारे हुक्मसे उसी तरहकी इ़बारतसे मस्कूक हों (ढ़ाले जावें), बग़ैर लिहाज़ उस तरक़्क़ीके, जो हमारे खिताब और अल्क़ाबमें कीगई है, ऊपर बयान कीहुई एकट्ठी सल्तनतके राइज और जाइज़ सिक्के समझे जावें; और सिवा इसके यह, कि तमाम सिक्के जो इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनतके ताबे मुल्कोंमेंसे किसीके लिये और किसीमें ढले और जारी हुए हैं, और हमारे इश्तिहारके रूसे उन ताबे मुल्कोंके राइज और जाइज़ सिक्के क़रार दियेगये हैं, और उनपर हमारे खिताब या अल्क़ाब या उनमेंसे कोई हिस्सह दर्ज हो, और तमाम नक्दी सिक्के जो बयान किये हुए इश्तिहारके मुताबिक़ पीछेसे तय्यार और जारी हों बग़ैर लिहाज़ वैसे इज़ाफ़ेके उन ताबे मुल्कोंके जाइज़ और राइज सिक्के रहें, जबतक कि हमारी और कोई मर्ज़ी उसकी निस्बत ज़ाहिर न कीजावे.

हमारे महकमह मक़ाम विन्डसरसे सन् १८७६ ई० ता० २८ एप्रिलको हमारे जुलूसके ३९ वें सालमें जारी हुआ.

बुज़ुर्ग खुदा जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महको सलामत रक्खे.

इसके बाद जनाब वाइसरॉय बहादुरने खड़े होकर एक .उम्दह तक़ीर अंग्रेज़ी ज़बानमें पढ़ी और पीछे उसका तर्जमह साहिब सेक्रेटरी बहादुरने बड़ी सफ़ाईके साथ हिन्दुस्तानी ज़बानमें खड़े होकर सुनाया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:-

जनाब नव्वाब लॉर्ड लिटन साहिब वाइसरॉय बहादुरकी तक़ीरका तर्जमह.

सन् १८५८ ई० के नोवेम्बर महीनेकी पहिली तारीख़को एक इश्तिहार हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़मह इंग्लिस्तानके हुज़ूरसे जारी हुआ था, जिसमें हिन्दुस्तानके रईसों और रिआ़याकी निस्बत जनाब मौसूफ़की तरफ़से ऐसे शाही मिहर्बानी और बुज़ुर्गीके इक़ार दर्ज थे, कि उस तारीख़से आजतक तमाम लोग उनको अपने हक़में अमूल्य सनद समझते हैं.

उसवक़ जो सब इक़ार हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तरफ़से हुए थे, कि जिन के वादेमें कभी फ़र्क़ नहीं आया, अब हमारी ज़बानसे उनका मज़्बूत करना कुछ हाजत नहीं रखता; इन अठारह वर्षकी दिन बदिन बढ़ने वाली सर्सब्ज़ी खुद उनका एक पुख़्तह सुबूत और यह बड़ा जल्सह उनके पूरा होनेकी ज़ाहिर दलील है.

इस सल्तनतके रईस और रिआ़या, जो अपनी अपनी पुश्तैनी इ़ज़्ज़तोंपर बे-ख़लल बर्क़रार और अपनी वाजिबी मस्लिहतोंकी पैरवीमें महफ़ूज़ रहे हैं, उनके लिये अगले ज़मानहकी यह सख़ावत और इन्साफ़ आगेके वास्ते पूरी ज़मानत होगई है. हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़महने, जो ख़िताब "कैसरि हिन्द" इख़्तियार फ़र्माया है, उसके ज़ाहिर करनेके लिये आज हम लोग जमा हुए हैं, और मुझको इस मुल्कमें उन जनाबके क़ाइममक़ाम होनेकी हैसियतसे लाज़िम है, कि उन हज़्रतकी दिली .इनायतें जिनके सबब यह लक़ब मौरूसी ख़िताबोंपर उन्होंने ज़ियादह फ़र्माया है, बयान करूं.

वह जनाब अपने तमाम मुल्कोंमेंसे जो इस दुन्याके सातवें हिस्सहमें शामिल हैं, और जिनमें तीस करोड़ बाशिन्दे आबाद हैं, किसी मुल्कपर इस बड़ी और नामी सल्तनतसे ज़ियादह तवज्जुह नहीं फ़र्माती हैं.

यों तो हर वक़ और हर जगह लाइक़ और कारगुज़ार नौकर इंग्लिस्तानके

बादशाहोंकी सर्कारमें होते रहे हैं, लेकिन् जिनकी दानाई और दिलेरीसे मुल्क हिन्दकी सल्तनत इंग्लिस्तानको हासिल हुई, और क़ाइम रक्खी गई, उनसे ज़ियादह नामवर कभी नहीं हुए. इस बड़े मुआमलहमें जिसमें उन जनाबकी कुल अंग्रेज़ी और देशी रिआयाने अच्छी तरहसे इत्तिफ़ाक़ रक्खा है, इस प्रान्तके बड़े बड़े रईस, जिनके साथ मलिकह मुअज़्ज़महका मेल मिलाप है, या जो उनकी सल्तनतके ताबे हैं, वे भी खैरख्वाहीके तरीक़ेसे मददगार हुए हैं; उनकी फ़ौज लड़ाईकी सख्तियों और फ़त्हकी खुशियोंमें उन जनाबकी फ़ौजोंके साथ शरीक रही है, और उनकी वफ़ादारी और दानाई उन जनाबके मुल्की अम्न व आमानके फ़ायदोंको क़ाइम रखने और उसके आम तौरपर जारी करनेमें सर्कार इंग्लिशियहकी मददगार हुई, और आज उन जनाबके ख़िताब क़ैसरी इख्तियार फ़र्मानेके मुबारक दिनपर उनका हाज़िर होना इस बातकी दलील है, कि वे उन जनाबकी फ़ैज़ पहुंचाने वाली हुकूमतपर पूरा भरोसा रखते हैं, और इस सल्तनतकी मज़्बूतीमें उनका फ़ायदह है.

वह जनाब इस सल्तनतको, जो उनके बुज़ुर्गोंसे हासिल और उनकी बुज़ुर्ग ज़ातसे मज़्बूत तौरपर क़ाइम हुई है, बड़ी जागीर समझती हैं, और इस क़ाबिल जानती हैं, कि यह हमेशह बर्क़रार रहे और ज्योंकी त्यों उनकी औलादको पहुंचे, और उसको अपने ज़बर्दस्त क़ब्ज़हमें रखनेसे अपने ऊपर यह फ़र्ज़ जानती हैं, कि इस मुल्कमें इसतरह हुकूमत करें, कि यहांकी रिआयाकी बिहतरी और मातहत रईसोंके हुक़ूकका बड़े इह्तियातसे लिहाज़ और खयाल रहे, इस वास्ते उन जनाबका यह एक बादशाही इरादह है, कि अपने अल्क़ाबपर एक और लक़ब बढ़ावें, जो आगेको हिन्दुस्तानके सब रईसों और रिआयाके वास्ते हमेशह इस बातका निशान रहे, कि दोनों तरफ़के फ़ायदोंके खयालसे इस सल्तनतकी खैरख्वाही उनपर वाजिब है.

वह खानदानोंका सिल्सिलह, जिनकी हिन्दुस्तानी हुकूमतको तब्दील करके तरक़्क़ीके लिये बुज़ुर्ग खुदाने अंग्रेज़ी सल्तनतकी कुव्वतको इस मुल्कमें क़ाइम किया, ज़बर्दस्त और नेक बादशाहोंसे खाली न था; लेकिन् उनके पिछले क़ाइम मक़ामोंके मुल्की इन्तिज़ामोंसे उनके इलाक़ोंमें अम्न व आमान क़ाइम न रहसका, और लगातार झगड़ा लगा रहनेसे हमेशह खलल आता गया, ज़ईफ़ और कमज़ोर लोग ज़बर्दस्तोंके क़ैदी बने और ज़बर्दस्त अपनी नाक़िस ख्वाहिशोंके ताबे होते गये. इसी तरह बहुतसी खूंरेज़ी और अन्दुरूनी दुश्मनीकी हल चलसे आलीशान खानदान तीमूरिया खराब होकर आखरको तबाह होगया, क्योंकि उनसे पूर्वी मुल्कोंकी कुछ तरक़्क़ी न होसकी.

इन दिनों हज़्रत मलिकह मुअज़्ज़महकी क़ानूनी हिमायतसे किसी मज़्हब और

फ़िर्क़ेमें फ़र्क़ नहीं है, उन जनाबकी हरएक रञ्जय्यत अम्न व आमानके साथ गुज़रान करसक्ती है. हर शरूसको इस सर्कारकी बेतअस्सुबीके सबब इजाज़त है, कि बग़ैर किसी रोकटोकके अपनी अपनी मज़्हबी आज्ञाओं और रस्मोंको अदा करे. बादशाही अधिकारका ज़बर्दस्त हाथ जो बढ़ाया जाता है, वह किसीके बर्बाद करने और दबानेके लिये नहीं है, बल्कि हिमायत और हिदायतके लिये है; और कुल मुल्ककी तरक़ी और सूबोंकी दिनोंदिन बढ़ने वाली सर्सब्ज़ीसे सर्कार अंग्रेज़ीके नेक इन्तिज़ामका नतीजह हर जगह साफ़ ज़ाहिर है.

ऐ ब्रिटिश प्रबन्धकर्त्ता और वफ़ादार उह्दहदारो!

यह .उम्दह नतीजे अक्सर आपही लोगोंकी सिलसिलहवार कोशिशोंसे हासिल हुए हैं, इस सबबसे मैं सबसे पहिले आपही लोगोंपर उन जनाबकी तरफ़से खुशी और एतिबार ज़ाहिर करता हूं, कि आप लोगोंने अपने तमाम .इज़्ज़तदार अगले .उह्-दहदारोंके मुवाफ़िक़ इस बड़ी सल्तनतके फ़ायदहके लिये मिह्नतें उठाई हैं, और इस मुआमलहमें आप लोग मज़्बूत हिम्मत, नेक इरादह और .उम्दह तन्दिहीको, जिसका उदाहरण तवारीख़में नज़र नहीं आता, बराबर काममें लाये हैं. नामवरीके दर्वाज़े हर शरूसके लिये खुले हुए नहीं हैं, लेकिन् नेक कार्रवाईका मौक़ा उसके तलाश करने वालेको हमेशह मिलसक्ता है. ऐसा इत्तिफ़ाक़ कम होता है, कि कोई सर्कार अपने नौकरोंके दरजहकी तरक़्क़ी जल्द जल्द करसके, लेकिन् मुझको यक़ीन है, कि अंग्रेज़ी सर्कारकी नौकरीमें सर्कारी ख़िद्मतें और ज़ाती मिह्नतें ख़िताबी .इज़्ज़तों और ज़ाती फ़ायदोंकी उम्मेदसे बढ़कर हमेशह उत्तेजित करती रहेंगी. हिन्दुस्तानके मुल्की इन्तिज़ाममें हमेशह यह बात रही है और रहेगी, कि बड़े बड़े नतीजों वाले फ़ायदह-मन्द काम अक्सर बड़े दरजहके .उह्दहदारोंके हिस्सेमें नहीं आयेंगे, बल्कि ज़िलेके उन अफ़्सरोंसे मुतअ़ल्लिक़ रहेंगे, कि जिनकी होशयारी और हिम्मतपर कुल इन्तिज़ामका अच्छा होना मुन्हसर है.

उन जनाबके मुल्की और फ़ौजी नौकर जिस ख़ूबीके साथ तमाम हिन्दुस्तानमें ऐसी नाज़ुक और मुश्किल ख़िद्मतें बजा लाये और बजालाते हैं, जो बादशाह अपनी सबसे ज़ियादह और मोतबर रिआयाको सौंपे, उनकी निस्बत मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तारीफ़ और शाबाश बयान करनेमें मुझे बढ़ावेकी गुंजाइश नहीं है.

ऐ क़लम और तलवारके मालिक नौकरो!

जोकि तुम जवानीके शुरूमें बड़ी जवाबदिहीके .उह्दोंपर मुक़र्रर होते हो, और

ख़ुशी ख़ुशी तन्दिहीके साथ कठिन नियमोंकी पाबन्दी करते हो, और अपनी ज़ातसे राज्य प्रबन्धके बड़े बड़े मुश्किल कामोंको बजा लाते हो, और वह भी ऐसे लोगों में रहकर जिनकी बोली, मज़्हब, और रीति रस्म तुम लोगोंसे अलग हैं. इसलिये दुआ करता हूं, कि हमेशह मुश्किल कामोंको बड़ी मज्बूती और नर्मीके साथ अंजाम देते वक्त यह ख़याल तुम्हारा रहनुमा हो, कि जिस तरह हम अपनी क़ौमकी नेकनामी क़ाइम रखते और अपने मज़्हबके नर्म हुक्मोंकी तामील करते हैं, उसी तरह कुल दूसरी क़ौमों और मज़्हबोंके लोगोंको भी, जो इस मुल्कमें बस्ते हैं, .उम्दह इन्तिज़ामके वेश क़ीमती फ़ायदे पहुंचाते रहें.

लेकिन् हिन्दुस्तानमें पश्चिमी शाइस्तगीके दानाईके क़ाइदोंका बर्ताव होनेसे आमदनीके वसीलोंको जो दिनोदिन तरक़्क़ी होती रही है, इस बातमें यह मुल्क सिर्फ़ सर्कारी नौकरोंका ही इह्सानमन्द नहीं है, बल्कि मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी रिआ़यामेंसे उन अंग्रेज़ लोगोंका भी शुक्रगुज़ार है, जो बग़ैर सर्कारी नौकरीके हिन्दुस्तानमें बस्ते हैं. इन लोगों को इंग्लिस्तानके तख़्त और ख़ास मलिकह मुअ़ज़्ज़महसे जो दिली मुहब्बत है, और जो फ़ायदे उन्होंने अपनी मिहनत, अपने हौसले, और आ़म लोगोंके फ़ायदहके कामोंमें बड़ी तन्दिही और व्यवहारिक सभ्य वर्ताओंसे हिन्दुस्तानकी सल्तनतको पहुंचाये हैं उनसे वह जनाब अच्छीतरह वाक़िफ़ हैं और उनकी क़द्र करती हैं. अगर मैं आज ऐसे मौक़ेपर इस बातका इक़ार करके उनका इत्मीनान करूं, तो उन जनाबके शाहानह इरादहके ज़ाहिर करनेमें क़ुसूरवार हूं.

जोकि उन जनाबकी यह ख़्वाहिश है, कि उनकी रिआ़यामेंसे उन लोगोंकी .इ़ज़्ज़त और मर्तबह बढ़ानेके लिये, जिन्होंने उनकी सल्तनतके इस बड़े हिस्सहमें मुल्की नौकरी और ज़ाती नेकियां ज़ाहिर की हैं, मौक़ा हासिल हो. इसलिये वह जनाब दिली ख़ुशीके साथ सिर्फ़ दरजह सितारए हिन्द और तबक़ै ब्रिटिश इंडियाको कुछ बढ़ाना ही नहीं चाहतीं, बल्कि एक नया तमग़ह " इंडियन एम्पाइर " नामी मुक़र्रर फ़र्माती हैं.

ऐ हिन्दुस्तानके फ़ौजोंके अंग्रेज़ी और देशी
अफ्सर और सिपाहियो!

तुम लोगोंने मलिकह मुअ़ज़्ज़महके फ़ौजी गौरवको क़ाइम रखनेके लिये जो जो बहादुरियां हर मौक़ेपर, जबकि तुम साथ साथ लड़ाईके मैदानमें गये हो, दिखाई हैं, उनको वह जनाब ख़ुशी और अभिमानके साथ याद रखती हैं; और जोकि उन जनाबको यकीन है, कि आगेको भी आप हमेशह उसी वफ़ादारीके साथ इस मुश्किल कामकी तामीलमें मुत्तफ़िक़

होकर कारगुज़ार होंगे. इसलिये आपहीको यह भारी ख़िद्मत सौंपी जाती है, जिससे आप उन जनाबके हिन्दुस्तानी इलाक़ोंमें अम्न व आमान और सर्सब्ज़ी क़ाइम रक्खें.

ऐ वालंटिअर सिपाहियो !

आप लोगोंकी कोशिशें, जो ख़ैरख़्वाही और काम्याबीके साथ इस बारेमें ज़ाहिर हुई हैं, कि अगर ज़ुरूरत पड़े, तो सर्कारी फ़ौजके साथ शरीक होकर काम दें, इस क़ाबिल हैं, कि आजके दिन उनकी दिली तारीफ़ कीजावे.

ऐ इस सल्तनतके मातहत रईसो और अमीरो !

आपकी ख़ैरख़्वाही सल्तनतकी मज्बूतीकी ज़ामिन और आपकी ख़ुशहाली सल्तनत की बुज़ुर्गीकी दलील है. जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महको भरोसा है, कि अगर कभी कोई हमलह और धमकी इस सल्तनतके कामोंपर हो, तो आप लोग उसकी हिफ़ाज़तके वास्ते मुस्तइद होजायेंगे, वह जनाब इस मुस्तइदीपर धन्यवाद देती है. मैं हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तरफ़से आप लोगोंको इस मक़ाम दिल्लीके आनेपर शाबाश कहता हूं, और आप लोगोंके इस बड़े जल्सेमें शामिल होनेको सल्तनत इंग्लिस्तानकी निस्बत साफ़ दलील आप लोगोंकी ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी की जानता हूं, जो जनाब शाह-ज़ादह साहिब वेल्सके इस मुल्कमें तश्रीफ़ लानेके वक्त बड़े शौक़से ज़ाहिर हुई थी.

वह जनाब अपने फ़ायदोंको आपकाही फ़ायदह ख़याल फ़र्माती हैं, और वास्ते मज्बूत करने रस्मों एकता और उन तअ़ल्लुक़ातके, जो नेक इत्तिफ़ाक़से सल्तनत इंग्लिस्तान और उसके मातहत अ़हदनामह रखने वालोंके दर्मियान मौजूद हैं, उन जनाबने दिली खुशीके साथ क़ैसरी ख़िताब इख़्तियार फ़र्माया है, जिसका आज मैं इश्तिहार देता हूं.

ऐ हज़्रत क़ैसरि हिन्दकी देशी रिआ़या !

इस सल्तनतकी मौजूदह हालत और उसकी हमेशहकी दुरुस्ती इस बातको चाहती है, कि इसका बन्दोबस्त और इन्तिज़ाम ऐसे बड़े दरजहके अंग्रेज़ी हाकिमों और इन्तिज़ाम करनेवालोंके सुपुर्द हो, जोकि इस तद्बीरके क़ाइदोंसे वाक़िफ़ हैं और जिनके मुताबिक़ कार्रवाई कियाजाना हुकूमत क़ैसरीके सिल्सिलेके लिये लाज़िम है.

मुल्की बिह्तरीके कामोंमें हिन्दुस्तानकी लगातार तरक़्की होना, जो उसकी मुल्की इ़ज़्ज़तको लाज़िम और दिनोदिन बढ़नेवाली ताक़तका सबब है, अक्सर इन्हीं होश्यार लोगोंकी उम्दह तद्बीरोंका नतीजह है, और ज़ुरूर है, कि अभी मुद्दत

दराज़तक पश्चिमी .इल्म, हुनर और बर्ताव, जो सुलह और लड़ाईके मौक़ोंपर यूरोपीय देशोंकी मौजूदह बड़ाईका सबब हैं, पूर्वी मुल्कोंमें आम फ़ायदहके वास्ते बदस्तूर इन्हींके ज़रीएसे जारी रहें. यह ज़रूर है, कि आप सब साहिब लोग जो हिन्दुस्तानके रहनेवाले हैं, चाहे आपकी क़ौम और मज़्हब कुछ ही क्यों न हो, इस मुल्कके इन्तिज़ाममें अंग्रेज़ी रिआयाके साथ अपनी अपनी लियाक़तके मुवाफ़िक़ शरीक होनेका बहुत कुछ हक़ रखते हैं. इस हक़की बुन्याद ऐन इन्साफ़पर है, और इसको इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तानके बड़े बड़े मुन्तज़िमोंने बार बार क़ुबूल किया है, और यही शाही पार्लिएमेण्टके ज़ाबितोंसे भी साबित है, और सर्कार हिन्दुस्तान भी उसको अपने ऊपर वाजिब और अपनी मुल्की तद्बीरोंके मुवाफ़िक़ समझती है; इसलिये सर्कार हिन्दुस्तान खुशीके साथ देखती है, कि चन्द गुज़श्तह वर्षोंमें हिन्दुस्तानी मुल्की मुलाज़िमों और ख़ासकर उन लोगोंके तरीके़ कारगुज़ारी व चालचलनमें बहुत कुछ तरक़्क़ी हुई है, जो बड़े .उह्दोंपर मुक़र्रर हैं.

इस बड़ी सल्तनतका इन्तिज़ाम इस बातको चाहता है, 'कि जो लोग उसमें शरीक हैं, उनमेंसे बहुतसे आदमी सिर्फ़ .इल्मी लियाक़त रखने वाले ही न हों, बल्कि उनकी आदतें और चालचलन नेक हों. इसलिये जो लोग ख़ासकर ख़ानदान, मर्तबह और मौरूसी .इज़्ज़तके सबब आप लोगोंमें ज़ाती तौरपर बड़े हैं, उनपर वाजिब है, कि अपनी ज़ात और अपनी औलादको इस बड़ी ख़िदमतके लिये, जिसका रास्तह उनके वास्ते खुला है लाइक़ बनावें; और यह बात सिर्फ़ उस तालीमके क़ुबूल करनेसे हासिल होसक्ती है, जिससे आदमी उन क़ाइदोंको समझने और बर्तनेके क़ाबिल हो, जिनको मलिकह क़ैसरि हिन्दकी गवर्मेण्टने कभी हाथसे नहीं जाने दिया.

आप सब लोगोंको वाजिब है, कि मुल्कदारीके कामोंमें अपने वास्ते वफ़ादारी बेग़रज़ी, इन्साफ़, सच्चाई और मज्बूतीको, जो मुल्की बर्तावकी हद है, हमेशह दिलमें क़ाइम रक्खें. इस सूरतमें उन जनाबकी गवर्मेण्ट मुल्की बन्दोबस्तमें आप लोगोंकी मदद करना और उसमें शामिल रहना बड़ी खुशीके साथ मन्ज़ूर करेगी. क्योंकि यह सर्कार दुन्याके हरएक हिस्सेमें जहां जहां उसकी हुकूमत है, अपनी फ़ौजी ताक़तपर इतना भरोसा नहीं करती, जितनाकि अपनी ऐसी रज़ामन्द रअ़य्यतपर रखती है, जो एकता और दिली ख़ैरख़्वाहीसे उसका हुक्म मानती और तख़्तकी हिफ़ाज़तमें तन्दिही ज़ाहिर करती है, क्योंकि वह जानती है, कि हमेशह क़ाइम रहनेवाली बिह्तरी और आराम इसीकी सलामतीपर निर्भर है.

वह जनाब कमज़ोर रियासतोंको फ़त्ह करलेने या आस पासके .इलाक़ोंको

छीनकर मिलालेनेमें अपनी हिन्दुस्तानी सल्तनतकी तरक़्क़ी नहीं समझती हैं, बल्कि इस बातमें कि, उनकी हिन्दुस्तानी रिआया इस नर्म और मुन्सिफ़ानह हुकूमतमें शरीक होकर रफ़्तह रफ़्तह और लियाक़तके साथ उन बर्तावोंको काममें लावे, जिसमें किसीतरहकी रोक टोक न हो. लेकिन् उन जनाबकी ग़रज़ और उनके फ़र्ज़ सिर्फ़ वही नहीं हैं, जो उनकी हुकूमतसे तअ़ल्लुक़ रखते हैं. वह जनाब साफ़ निय्यतके साथ यह भी ख्वाहिश रखती हैं, कि उन मुल्कोंके रईसोंसे भी, जो इस सल्तनतकी सर्हदपर हैं, और उसकी हिमायतके सायेमें मुद्दतोंसे खुदमुख्तार रहे हैं, पूरी मुहब्बत और दोस्तीको मज़्बूत रक्खें; हां अगर कभी इस सल्तनतके अम्न व आमानको किसी बाहिरकी धमकीसे कुछ ख़तरह होगा, तो क़ैसरि हिन्द अपने मौरूसी मुल्कोंकी हिमायतमें किसीतरहकी कमी नहीं करेंगी. बाहिर वाले दुश्मनका हिन्दुस्तानकी सल्तनतपर हमलह करना, मानो तमाम पूर्वी मुल्कोंकी तरक़्क़ी और सर्सब्ज़ीपर हमलह करना है; और इस सूरतमें उन जनाबको अपनी सल्तनतके बेहद सामान और अपने अ़हदनामह वालों, रईसों व मातह्तोंकी दिलेरी और वफ़ादारी और अपनी रिआयाकी मुहब्बत व खैरख्वाहीसे हरएक हमलह करने वालेको हटादेने और सज़ा देनेके लिये पूरी ताक़त हासिल है.

एशियाके दूर दूर वाले मुल्कोंके जिन बादशाहोंने अपने अपने वकीलोंको मुबारक-बादके ख़त देकर भेजा है, उनका इस मुबारक जल्सहमें हाज़िर होना इस बातकी गवाही है, कि सर्कार हिन्दुस्तानकी तद्बीर सुल्हपसन्द और उसके आस पासके कुल मुल्कोंके साथ उसका दोस्तानह बर्ताव है. मैं यह चाहता हूं, कि उन जनाबकी सर्कार हिन्दकी तरफ़से इस शाहानह जल्सहमें जनाब खान क़िलातको और उन प्रतिनिधियोंको, जो दूर दराज़ सफ़र तय करके एशियाई अ़हदनामह रखने वालोंकी तरफ़से अंग्रेज़ी हदोंके अन्दर विकालतके तौरपर हाज़िर हुए हैं, और हमारे इज़्ज़तदार मिह्मान नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुर इलाक़ह गोवाको और बाहिरी सीग़हकी कौन्सिलके अफ़्सरोंको शुभागमन कहूं.

ऐ हिन्दुस्तानके रईसो और रिआया !

अब मैं खुशीके साथ आप लोगोंको यह फ़र्मान आली शान, जो आपकी क़ैसरि मलिकह मुअ़ज़्ज़महने अपने शाही और क़ैसरी नामसे आप लोगोंको आज भेजा है, सुनाता हूं. यह वह इबारत है, जो आज सुब्ह उन जनाबकी तरफ़से तारके ज़रीएसे मेरे पास पहुंची है.

हम विक्टोरिया खुदाके फ़ज़्लसे इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनतकी मलिकह और क़ैसरि हिन्द, अपने नाइब सल्तनतकी मारिफ़त अपने कुल मुल्की और फ़ौजी सर्दारोंको और तमाम रईसों व अमीरों और रिआयाको, जो दिल्लीमें इसवक़ जमा हैं, अपनी शाही और क़ैसरी दुआ पहुंचाती और अपनी दिली तवज्जुह और शाहानह मिहर्बानी से सल्तनत हिन्दुस्तानकी रिआयाका इत्मीनान करती हैं.

जो आदर सत्कार हिन्दुस्तानकी रिआयाने हमारे प्यारे बेटेके साथ किया उससे हमको दिली खुशी हासिल हुई, और हमारे खानदान और तख़्तकी निस्बत उनकी इस वफ़ादारी और खैरख़्वाहीने हमारे दिलपर बड़ा असर किया.

हमको उम्मेद है, कि इस मुबारक मौक़ेके सबब हमारे और हमारी रिआयाके दर्मियान मुहब्बतका सिल्सिलह ज़ियादह मज़्बूत हो; और हरएक बड़ा व छोटा इस बातका यक़ीन करले, कि हमारी हुकूमतमें उनको बड़े उसूल (सिद्धान्त), याने आज़ादी और इन्साफ़ हासिल हैं, और हमारी सल्तनतमें उनकी खुशीकी ज़ियादती और उनकी सर्सब्ज़ीकी तरक़ी और उनकी बिह्तरीके बढ़ते रहनेका भी हमेशह खयाल है.

मैं यक़ीन करता हूं, कि आप लोग इन मिहर्बानी भरेहुए लफ़्ज़ोंकी बड़ी क़द्र करेंगे.

बुज़ुर्ग खुदा जनाब विक्टोरिया, एकठी सल्तनतकी मलिकह और क़ैसरि हिन्दुस्तान को हमेशह सलामत रक्खे.
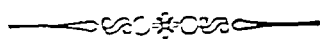
जब श्रीमान् वाइसरॉय अपनी तक़ीर ख़त्म करचुके, तो तमाम हाज़िरीन जल्सह खड़े हुए और उनकी तरफ़से तथा फ़ौजकी तरफ़से कई बार "हुर्रा" (जयजयकार) की आवाज़ बुलन्द हुई, और दाहिने बाएं, जो तोपख़ाने जमे हुए थे उनसे तीन तीन फ़ाइर तोपोंके सरहुए, और जो पैदल पल्टनें जमी हुई थीं उन्होंने दो दो फ़ाइर बन्दूक़ोंके छोड़े. यह कार्रवाई तीन बार कीगई. इसके बाद नव्वाब वाइसरॉय बहादुर अपने इज्लाससे उठ खड़े हुए और रईसोंकी तरफ़ सलाम करके मुसाहिबों और सेक्रेटरियों समेत अपने ख़ेमोंको तश्रीफ़ लेगये. उसीवक़्तसे नम्बरवार राजा और नव्वाब भी अपनी सवारियोंपर रवानह होने लगे, और एक बजेसे छः बजेतक तमाम मैदान खाली होगया. इस अर्द्धचन्द्राकार दर्बारमें भारतवर्षके ६३ राजा लोग थे, जिनके नाम नीचे लिखेजाते हैं:-

१-- बुन्देला क्षत्री महाराजा रणजोरसिंह अजयगढ़के.
२-- मरहटा महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ बड़ोदाके.
३-- बुन्देला क्षत्री महाराजा भान प्रतापसिंह बिजावरके.

४-- जाट महाराजा जशवन्तसिंह भरतपुरके.
५-- बुन्देला क्षत्री महाराजा जयसिंहदेव चर्खारीके.
६-- बुन्देला क्षत्री महाराजा भवानीसिंह दतियाके.
७-- मरहटा महाराजा जियाजी राव सेंधिया ग्वालियरके.
८-- मरहटा महाराजा तुकाजी राव हुल्कर इन्दौरके.
९-- कछवाहा क्षत्री महाराजा सवाई रामसिंह जयपुरके.
१०- डोगरा क्षत्री महाराजा रणवीरसिंह जम्मू (कश्मीर) के.
११- राठोड़ क्षत्री महाराजा जशवन्तसिंह मारवाड़ जोधपुरके.
१२- सीसोदिया क्षत्री महाराणा सज्जनसिंह मेवाड़ उदयपुरके.
१३- यादव क्षत्री महाराजा अर्जुनपाल करौलीके.
१४- राठोड़ क्षत्री महाराजा पृथ्वीसिंह कृष्णगढ़के.
१५- बुन्देला क्षत्री महाराजा रुद्र प्रतापसिंह पन्नाके.
१६- यादव क्षत्री महाराजा चमराजेन्द्र वदियर मैसोरके.
१७- वाघेला क्षत्री महाराजा रघुराजसिंह रीवांके.
१८- बुन्देला क्षत्री महाराजा महेन्द्र प्रतापसिंह ओर्छाके.
१९- नरूका कछवाहा क्षत्री महाराव राजा मंगलसिंह अलवरके.
२०- चहुवान हाड़ा क्षत्री महाराव राजा रामसिंह बूंदीके.
२१- झाला क्षत्री महाराज राणा ज़ालिमसिंह झालरापाटणके.
२२- जाट महाराजा राणा निहालसिंह धौलपुरके.
२३- क्षत्री राजा हीराचन्द बिलासपुरके.
२४- बमराके राजा.
२५- रघुवंशी क्षत्री राजा रघुवरदयालसिंह वरौंदाके.
२६- क्षत्री राजा श्यामसिंह चम्बाके.
२७- पुंवार क्षत्री राजा विष्णुनाथसिंह छत्रपुरके.
२८- पुंवार क्षत्री राजा कृष्णाजी राव देवासके.
२९- पुंवार क्षत्री महाराजा आनन्दराव धारके.
३०- जाट राजा विक्रमसिंह सिक्ख फ़रीदकोटके.
३१- सिक्ख (सिद्धू जाट) राजा रघुबीरसिंह जींदके.
३२- राजा उदितप्रतापदेव खरौंदके.
३३- राजवंशी राजा नृपेन्द्र नारायण भूप कूचबिहारके.

३४- चन्द्रवंशी क्षत्री राजा विजयसेन मंडीके.
३५- सिक्ख (सिद्धू जाट) राजा हीरासिंह नाभाके.
३६- क्षत्री राजा शमशेरप्रकाश नाहन (सिरमौर) के.
३७- गोहिल क्षत्री राजा गंभीरसिंह राजपीपलाके.
३८- राठौड़ क्षत्री राजा रणजीतसिंह रतलामके.
३९- गूजर महाराजा हिन्दूपत समथरके.
४०- क्षत्री राजा नरसेन सुकेतके.
४१- क्षत्री राजा प्रतापशाह टिहरी (गढ़वाल) के.
४२- बुंदेला क्षत्री राव लक्ष्मणसिंह जागीरदार जिगनी.
४३- पठान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद इब्राहीम अलीख़ां टोंकके.
४४- अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद मुख़्तार हुसैन अलीख़ां पाटौदीके.
४५- अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद इब्राहीम अलीख़ां मालेरकोटलाके.
४६- मुग़ल मुसल्मान नव्वाब अलाउद्दीन अहमदख़ां लोहारूके.
४७- मुसल्मान नव्वाब महाबतख़ां जूनागढ़के.
४८- पठान मुसल्मान नव्वाब इस्माईलख़ां जावराके.
४९- अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद मुश्ताक़ अलीख़ां दुजानाके.
५०- दाऊदपोत्रा मुसल्मान नव्वाब सादिक़ मुहम्मदख़ां बहावलपुरके.
५१- क्षत्री राव छत्रपति जागीरदार अलीपुरा.
५२- मिराज़ी खेल अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब शाहजहां बेगम भोपालकी.
५३- पठान मुसल्मान निज़ाम मीर महबूब अलीख़ां हैदराबादके.
५४- सिक्ख (जाट) सर्दार बिश्नसिंह कलसियाके.
५५- गोहिल क्षत्री ठाकुर तख़्तसिंह भावनगरके.
५६- जाड़ेजा क्षत्री ठाकुर वाघजी मोरवीके.
५७- डोडिया क्षत्री ठाकुर दुलेसिंह पीपलोदाके.
५८- ब्राह्मन चौबे अनिरुद्धसिंह जागीरदार पालदेव.
५९- बिलोची मुसल्मान मीर अलीमुरादख़ां खैरपुरके.
६०- महन्त कौंडका.
६१- महन्त नन्दगांव.
६२- जाड़ेजा क्षत्री जाम श्री विभाजी नवानगरके.
६३- दीवान दुर्जनसिंह जागीरदार टोड़ी फ़तहपुरके.

श्री मती महाराणीके "राज राजेश्वरी" की पदवी ग्रहण करनेके उत्सवमें गवर्मेण्ट ऑफ़ इण्डियाने हिन्दुस्तानके रईसों और साधारण लोगोंपर जो अनेक अनुग्रह किये हैं, उन्हें हम संक्षेपके साथ नीचे लिखते हैं:-

सलामी.

जम्मूं, ग्वालियर, इन्दौर, उदयपुर और त्रावणकोरके महाराजाओं व महाराजा दलीपसिंहकी सलामी उनकी ज़िन्दगीभरके लिये १९ के बदले २१ तोप कीगई, और महाराजा जयपुरकी १७ से बढ़कर २१.

जोधपुर और रीवांके महाराजाओंके लिये उनकी ज़िन्दगीभरके लिये १७ से बढ़कर १९ तोपकी सलामी नियत हुई; और नव्वाब मन्सूर अलीख़ां नाज़िम बंगाल व महाराजा सर जंगबहादुर दीवान नयपालकी सलामी १९ तोप नियत कीगई.

कृष्णगढ़ और ओर्च्छाके महाराजाओंकी सलामी उनके जीवन समय तकके लिये १५ तोपके बदले १७ मुक़र्रर हुई, नव्वाब टोंककी ११ से बढ़कर १७, हैदराबादके दीवान सर सालारजंग बहादुरकी १७ और भूपालकी बेगमके पति व हैदराबादके शम्सुल्उमरा नामी दूसरे मंत्रीकी सलामी नये सिरसे १७ तोप नियत हुई.

नव्वाब रामपुर और ध्रांगधड़ाके राजाकी सलामी उम्रभरके लिये १३ से १५ तोप हुई. भावनगरके ठाकुर, नवानगरके जाम, और जूनागढ़के नव्वाबकी ११ से बढ़कर १५, और अर्काटके शाहज़ादह व बेगम भूपालकी सम्बन्धिनी कुद्सियह बेगमकी सलामी नये सिरसे १५ तोप मुक़र्रर हुई.

महाराजा पन्ना, राजा जींद और राजा नाभाकी ११ से १३ तोपकी सलामी ज़िन्दगीभरके लिये होगई, और महाराणी तंजोर, महाराजा विज़ियानगरम, और महाराजा वर्दवानको नये सिरसे १३ तोपकी सलामी मिली.

मुकल्लाके नक़ीब और शिबहरके जमादारको १२ तोपकी सलामी उम्रभरके लिये मिली.

मालेरकोटलाके नव्वाबकी सलामी ज़िन्दगीभरके लिये ९ से ११, और मोरवीके ठाकुर व टिहरीके राजाके लिये नये सिरसे ११ तोपकी सलामी मुक़र्रर हुई.

नीचे लिखीहुई जगहोंके राजाओं, सर्दारों या ठाकुरोंके वास्ते उनके जीवन समयके लिये नये सिरसे ९ तोपकी सलामी नियत हुई:-

धर्मपुर, धरोल, बलरामपुर, बांसदा, बरोंदा, गोंडल, जंजीरा, खरोंद, किलचीपुर,

लिमरी, मेहर, पालीताणा, राजकोट, सकूतरा, सचीन, वढ़वान और वांकानेर.

यहां यह भी लिखना आवश्यक है, कि ता० १ जेन्युअरी सन् १८७७ ई० से श्रीमती राजराजेश्वरीकी आज्ञानुसार उनकी सलामी १०१ तोप और राजसी झंडे तथा हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरलकी सलामी ३१ तोप नियत हुई.

नीचे लिखे हुए राजा और अधिकारी लोग "कौन्सिलर ऑफ़ दि एम्प्रेस" (राजराजेश्वरीके सलाहकार) नियत हुए:-

(जीवन समयतक).

महाराजा कश्मीर, श्री रणवीरसिंह, जी० सी० एस० आइ०
बूंदी, श्री रामसिंह, जी० सी० एस० आइ०
ग्वालियर, श्री जियाजीराव सेंधिया, जी० सी० एस० आइ०, जी० सी० बी०
इन्दौर, श्री तुकाजीराव हुल्कर, जी० सी० एस० आइ०
महाराजा जयपुर, श्री रामसिंह, जी० सी० एस० आइ०
ट्रावणकोर, श्री राम वर्मा, जी० सी० एस० आइ०
जींद, श्री रघुवीरसिंह, जी० सी० एस० आइ०
नव्वाब रामपुर, कल्ब अलीखां, जी० सी० एस० आइ०

(पदका अधिकार रहनेतक).

श्रीयुत रिचर्ड प्लेन्टेजिनेट केम्बल, जी० सी० एस० आइ०, ड्यूक ऑफ़ बकिङ्घम ऐन्ड शान्डास, मद्रासके गवर्नर; सर पी० ई० वुडहाउस, जी० सी० एस० आइ०, के० सी० बी०, बम्बईके गवर्नर; सर एफ़० पी० हेन्स, के० सी० बी०, हिन्दुस्तानके कमाण्डर इन्चीफ़; सर रिचर्ड टेम्पल, बैरोनेट्, के० सी० एस० आइ०, बंगालके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; सर ज्यॉर्ज कौपर, बैरोनेट्, सी० बी०, पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; सर रॉबर्ट हेनरी डेविस, के० सी० एस० आइ०, पंजाबके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; सर जॉन स्ट्रेची, के० सी० एस० आइ०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; मेजर जेनरल सर एच० डब्ल्यू० नॉर्मन, के० सी० बी०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; ऑनरेबल ए० हॉबहाउस, क्यू० सी०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; कर्नल् सर ए० क्लार्क, आर० ई०, के० सी० एम० जी०, सी० बी०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; ऑनरेबल ई० सी० बेली, सी० एस० आइ०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; सर ए० जे० आर्बथनाट, के० सी० एस० आइ०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर.

नीचे लिखे हुए राजाओंको प्रथम श्रेणीके स्टार ऑफ़ इन्डिया (जी० सी० एस० आइ०) की पदवी मिली:-

श्रीयुत महाराव राजा रामसिंह, बूंदी; महाराजा ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह, बनारस; महाराजा जशवन्तसिंह, भरतपुर; प्रिन्स अज़ीमजाह ज़हीरुद्दौलह बहादुर, अर्काट.

इन लोगोंको दूसरी श्रेणीके स्टार ऑफ़ इन्डिया (के० सी० एस० आइ०) की पदवी मिलीः-

श्री शिवाजी छत्रपति, राजा कोल्हापुर; राजा आनन्दराव पंवार, धारवाले; श्री मानसिंहजी, राजा ध्रांगधड़ा; श्री विभाजी जाम, नवानगर; आर० जे० मैकूडॉनल्ड, श्री मती महाराजराणीकी हिन्दुस्तानकी समुद्री सेनाके कमान्डर इनूचीफ़; सर जी० ई० डब्ल्यू० कौपर, बैरोनेट्, सी० बी०, बंगाल सिविलसर्विस, पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; जेम्स फ़िट्ज़ स्टीवन साहिब, श्रीमती महाराजराणीके सलाहकार और गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके पूर्व मेम्बर; आर्थर हॉबहाउस साहिब, श्रीमती महाराजराणीके सलाहकार और गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके दूसरे मेम्बर; एडवर्ड क्लाइव वेली साहिब, सी० एस० आइ०, बंगाल सिविलसर्विस, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके तीसरे मेम्बर.

तीसरे दरजहके स्टार ऑफ़ इन्डिया (सी० एस० आइ०) की पदवी २५ आदमियोंको मिली, जिनमें मथुराके सेठ गोविन्ददास, कश्मीरके दीवान ज्वालासहाय और त्रावणकोरके दीवान शिशिया शास्त्रीको भी गिनना चाहिये.

नीचे लिखेहुए राजाओंको उनके नामोंके सामने लिखी हुई पदवियां मिलींः-

महाराजा गायकवाड़ वड़ोदाको "फ़र्ज़न्द ख़ास दौलत इंगलिशियह" (अंग्रेज़ी सर्कारके मुख्य बेटे); महाराजा ग्वालियरको "हिसामुस्सल्तनत" (राज्यकी तलवार); महाराजा कश्मीरको "इन्द्र महेन्द्र बहादुर, सिपरि सल्तनत" (राज्यकी ढाल); महाराजा अजयगढ़को "सवाई"; महाराजा बिजावरको "सवाई"; महाराजा चर्खारीको "सिपह्दारि मुल्क" (देशके सेनापति); और महाराजा दतियाको "लोकेन्द्र".

नीचे लिखे हुए सर्दारों और रईसोंको "महाराजा" की पदवी उनकी ज़िन्दगीभरके लिये मिलीः-

आनन्दराव पंवार, धारके राजा; छत्रसिंह बहादुर राजा समथरके; धनुर्जय नारायण भंजदेव, सूबे उड़ीसामें क़िले क्योंझारके राजा; देवीसिंहदेव, पुरीके राजा (उड़ीसा); जगदेन्द्रनाथराय (राजा नाटोरके घरानेकी बड़ी शाखामेंसे); राजा जितेन्द्रमोहन टागोर, कृष्णचन्द्र, मोरभंज (उड़ीसा) वाले; महिपतसिंह रईस, पटना; ऑनरेबूल राजा नरेन्द्रकृष्ण, रईस सोभाबाज़ार (कलकत्ता); राजा कृष्णसिंह, सुसांगके राजा (इ़लाक़ह मैमनसिंह); राजा रमानाथ टागोर, कलकत्ताके.

नीचे लिखी हुई राणियोंको उनके जीवन समयके लिये "महाराणी" की पदवी मिलीः-

राणी हरसुन्दरी देवी, सिरसोल (वर्दवान) वाली; राणी हगनकुमारी, पंद्रा (मान भूम) वाली; राणी सूरतसुन्दरी देवी, राजशाही की.

राजा सर दिनकर राव, के० सी० एस० आइ० को "राजा मशीरि ख़ास बहादुर" (राजा मुख्य सलाहकार बहादुर) की पदवी उनकी ज़िन्दगीके लिये मिली.

नीचे लिखे हुए सर्दारों और रईसोंको उनकी ज़िन्दगीके लिये "राजा बहादुर" की पदवी मिलीः-

रघुबरदयालसिंह, बरौंदाके राजा; खल्क़सिंह (खड्गसिंह), सुरीलाके राजा; उदित प्रतापदेव, खरौंदके राजा; राजा विश्वेश्वर मालिया, रईस सिरसोल (वर्दवान); राजा हरिवल्लभसिंह, रईस विहार; राजा हरनाथ, चौधरी दुबलहट्टी (राजशाही); राजा मंगलसिंह, भिणाय (अजमेर) वाले; राजा रामरंजन चक्रवर्ती, वीरभूम.

नीचे लिखे हुए महाशयोंको उनके जीवन समयके लिये "राजा" की पदवी मिलीः-

बाबू अजीतसिंह, रईस तरौल (प्रतापगढ़); बाबा बलवन्तराव, रईस जबलपुर; बलवन्तसिंह, रईस गगवाना; डमरू कुमार वेंकट अप्पा नायडो, ज़मींदार कालाहस्ती (ज़िला उत्तरी अर्काट); राजा देवीसिंह, रईस राजगढ़; दिगम्बर मित्र, सी० एस० आइ० (कलकत्ता); राव गंगाधर रामराव, ज़मींदार पितापुर (गोदावरी प्रान्त); राव चत्रसिंह, जागीरदार कन्याधाना; हरिश्चन्द्र चौधरी, मैमनसिंह; कमलकृष्ण, रईस सोभाबाज़ार (कलकत्ता); राय बहादुर क्षेत्रमोहनसिंह, रईस दीनाजपुर; कुंवर हरनारायणसिंह, हाथरस; कुंवर लक्ष्मणसिंह, डिपुटी कलेक्टर बुलन्दशहर; सरटी माधवराव, के० सी० एस० आइ०, बड़ोदाके दीवान; ठाकुर माधवसिंह, रईस सावर (अजमेर); प्रतापसिंह, रईस पीसांगण (अजमेर); रामनारायणसिंह, जागीरदार खेड़ा (मुंघेर); श्यामानन्द दे, रईस बालासोर; श्यामशंकर राव, रईस व्यूटा; सर्दार सूरतसिंह मजीठिया, सी० एस० आइ०; राव साहिब त्र्यम्बकजी नाना अहीर, नागपुरके राव; कन्दोकिशोर भूपति, ज़मींदार सुकिंडा (उड़ीसा).

नीचे लिखेहुए शख़्सोंको "राव बहादुर" का ख़िताब मिलाः-

राव बख़्तसिंह, बेदला (मेवाड़); भभूतसिंह, ठाकुर पोहकरण (राजपूतानह); भगवन्तराव देशपांडे, एलिचपुर; दाजी नीलकंठ नगारकर, इंजिनिअरिंग कॉलेज बम्बईके प्रोफ़ेसर; गोपालराव हरी, जज अदालत मुतालबे ख़फ़ीफ़ह अहमदाबाद

गोकुलजी झाला, जूनागढ़ (काठियावाड़); जगजीवनदास खुशहालदास, सूरत के डिपुटी कलेक्टर; राव साहिब हरिनारायण, अहमद नगरके पुलिस इन्स्पेक्टर; राव छत्रपति, जागीरदार अलीपुरा; केसरीसिंह, ठाकुर कुचामण (राजपूतानह); केरो लक्ष्मण छत्रे, दक्षिण कॉलेजके गणितविद्याके प्रोफ़ेसर; खांडेराव विश्वनाथ उर्फ़ राव साहिब रास्ते, दूसरे दरजहके सर्दार (दक्षिण); केशवराव भास्कर, डिपुटी असिस्टैंएट पोलिटिकल एजेएट काठियावाड़; खुशाभाई सिराभाई रेवाकांठाके दफ़्तरदार; दीवान लालसिंह, मुरूतारकार तअल्लुक़ह गिनी इलाक़ह कलक्टरी हैदराबाद सिन्ध; लक्ष्मणसिंह, जिगनीके राव; माधवराव वासुदेव वरवे, कोल्हापुरके कारबारी; मकाजी धनजी, ध्रांगधड़ाके पूर्व कारबारी; नन्दशंकर तुलजाशंकर, असिस्टैंएट पोलिटिकल एजेएट जनावरा व सोठ (रेवाकांठा); नारायण राव अनन्त मुतालक कर्द (.इलाक़ह सितारा); नारायण भाई डांडीकर, डाइरेक्टर सरिश्तह तालीम बरार; प्रेमाभाई हेमाभाई, अह्मदाबाद; राव पृथ्वीसिंह, जागीरदार टोड़ी फ़तहपुर; शिवनाथसिंह, ठाकुर खरवा (राजपूतानह); शिवराम पांडवरंग, बम्बई; सदाशिव रघुनाथ जोशी, कारबारी मधोल; श्रीबालंग्या मोरथली, इलाक़ह कनाड़ाका; त्रिमल्लराव वैंकटेश, धारवाड़की अदालत मुतालबे खफ़ीफ़हका पूर्व जज; विनायक राव जनार्दन कीर्तने, बड़ोदाका नाइब दीवान; धारीदास अज्जूभाई, नरियाद .इलाक़ह कैरा (बम्बई) का; वामनराव पीताम्बर, सरिश्तहदार सावन्तवाड़ी; वासुदेव बापूजी, असिस्टैंएट इंजिनिअर सीगह तामीरात सर्कारी, बम्बई.

नीचे लिखेहुए शख़्सोंने "राय बहादुर" का ख़िताब पायाः—

आर्कट नारायण स्वामी मुडलियर, बंगलोर; बाबू अनुद्धप्रसाद राय, मुर्शिदाबाद; बाबू वैद्यनाथ पण्डित, ज़मींदार क़िले दर्पण .इलाक़ह कटकके; लाला बद्रीदास, श्रीमान् वाइसरॉय बहादुरका मुक़ीम; छादी सोविया, कुर्गके असिस्टैंएट कमिश्नर; दासमल्ल, होश्यारपुरके पूर्व तह्सीलदार; बाबू दुर्गाप्रसादसिंह, ज़मींदार मधुबनी, .इलाक़ह चंपारनके; बाबू गोलकचन्द्र चौधरी, चटगांव; बाबू गोपालमोहन सर्कार, गवर्मेएट हाउसका ख़ज़ानची; हरिश्चन्द्र यादवजी, सरदफ़्तर प्रेसिडेन्सी पे ऑफ़िस, बम्बई; यला मलप्पा चेटी, बंगलोर; राय कल्यानसिंह, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट अमृतसर; ऑनरेबल बाबू कृस्टोदास पाल, लेजिस्लेटिव कौन्सिल बंगालके मेम्बर; कन्हैयालाल, असिस्टैंएट डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेण्डेएट पुलिस पंजाब; लक्ष्मणराव, महाराजा साहिब मैसोरके मुसाहिब; ठाकुर मंगलसिंह, अलवरकी रिजेन्सी कौन्सिलके मेम्बर; बरूशी नर सप्पा, महाराजा साहिब मैसोरके मुसाहिब; बाबू नारायणचन्द्र चौधरी, ज़मींदार चूड़ामन, पर्गनह दीनाजपुर, ज़िला राजशाही; बाबू नुमाइंचरण बोस, ज़मींदार कोठार (.इलाक़ह बालासोर);

रामरत्न सेठ, मिथांमीरका साहूकार; डॉक्टर राजेन्द्रलाल मित्र, कलकत्ता; ऑनरेबल बाबू रामशंकर सेन, बंगालकी लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर; बाबू चौधरी रुद्रप्रसाद, ज़मींदार नामपुर .इलाक़ह सीतामढ़ी; पंडित रूपनारायण, अलवरकी रिजेन्सी कौन्सिल के मेम्बर; बाबू राधावल्लभसिंहदेव, ज़मींदार बंकोड़ा; राय साहिबसिंह दिल्लीके ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; बाबू सूर्जकांत आचार्य, ज़मींदार मोरतगाची (मैमनसिंह); राय उमरावसिंह, दिल्लीके ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; बाबू उग्रनारायणसिंह, ज़मींदार सोपल (भागलपुर).

जिन शख़्सोंको "राव साहिब" का ख़िताब मिला, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

ठाकुर बहादुरसिंह, रईस मसऊदा (.इलाक़ह अजमेर); गोविन्दराव कृष्णा भास्कर निमार; ठाकुर हरिसिंह, रईस देवलिया(इलाक़ह अजमेर); ठाकुर कल्याणसिंह, रईस जूनिया (.इलाक़ह अजमेर); माधवराव गंगाधर, रईस नागपुरका चटनवीस; ठाकुर माधवसिंह, रईस करोर (.इलाक़ह अजमेर); राजावा महेत, नागपुर; ठाकुर रणजीतसिंह, रईस बांदणवाड़ा (.इलाक़ह अजमेर).

"राव" का ख़िताब पानेवाले शख़्सोंके नाम नीचे लिखे मुवाफ़िक़ हैं:—

भारमल्ल बरारका रावत्, मेरवाड़ा इलाक़ह राजपूतानह; जादवराव पांडे, रईस भंडारा; उमा, ककराका रावत् (मेरवाड़ा, इलाक़ह राजपूतानह); अनिरुद्धसिंह, जागीरदार पालदेव (सेंट्रल इंडिया).

"राय" का ख़िताब पाने वालोंके नामः-

विष्णुस्वरूप, अजमेरका पुलिस इन्स्पेक्टर; सेठ चान्दमल्ल, अजमेरका ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; कोठारी छगनलाल, रियासत मेवाड़के महकमह मालका बड़ा हाकिम और ख़ज़ानहका मुहतमिम; महता पन्नालाल, रियासत मेवाड़का नाइब दीवान; सेठ शमीरमल्ल, अजमेरका ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट.

राय मुन्शी अमीनचन्द, अजमेरके जुडीशल असिस्टैंट कमिश्नरको उसके जीवन समयतक "सर्दार बहादुर" की पदवी मिली.

रत्नसिंह (रईस रोह्तास ज़िले झेलम), सेंट्रल इंडियाके डिस्ट्रिक्ट सुपरिण्टेन्डेण्ट पुलिसको "सर्दार" का ख़िताब मिला.

ठाकुर हीरा, रईस पर्गनह देवर इलाक़ह मेरवाड़ा (राजपूतानह) को "ठाकुर रावत्" का पद मिला.

लक्ष्मीनारायणसिंह, जागीरदार कैरा (सिंहभूम) को "ठाकुर" का ख़िताब मिला.

नीचे लिखे हुए शख़्सोंने "नव्वाब" का ख़िताब हासिल कियाः-

एह्सनुल्लाहख़ां बहादुर, ढाकाके; सय्यद अब्दुलहुसैन, मुंघेरके; महमूद अलीख़ां

बहादुर, छतारी ज़िले बुलन्दशहरके; ऑनरेबल मीर मुहम्मदअली, फ़रीदपुर इलाक़ह बंगालके.

" खान बहादुर " का ख़िताब पानेवाले शरूसोंके नामः-

अब्दुर्रहीमखां खलफ़ शाहनवाज़खां, ईसा खेल ज़िला बन्नूं; औलाद हुसैन, पहाड़सर इलाक़ह भरतपुरके, असिस्टैण्ट कमिश्नर सेंट्रल इंडिया; अब्दुल् क़ादिरअली, शहर मैसोरके असिस्टेण्ट कमिश्नर और मैजिस्ट्रेट; मौलवी अब्दुल्लतीफ़, कलकत्ताके डिपुटी मैजिस्ट्रेट; अलीखां, ज़मींदार मुंघेर; नव्वाब इलहदादखां, किरांचीके; भीखनखां, ज़मींदार परसोनी (पश्चिमी तिरहुत); बामनजी सुहराबजी, असिस्टैण्ट इंजिनिअर सीग़ह तामीरात सर्कारी, बम्बई; चेतनशाह, पेशावरके असिस्टैण्ट सर्जन; रूस्टजी रुस्तमजी, बड़ौदाके चीफ़ जस्टिस; दावर रुस्तमजी खुर्शेदजी मोदी, सूरत; दाद मुहम्मद ज़करानी, जैकबआबाद; क़ाज़ी इब्राहीम मुहम्मद, बम्बई; गौस शाह क़ादिरी, मकानदार इलाक़ह कोहिस्तान, बाबा बूदन; इमामुद्दीनखां, बंगलोर; जमशेदजी धनजी भाई वाडिया, बम्बईके जहाज़ी कमठानोंके सर्दार; क़ाज़ी मुहियुद्दीन साहिब, मैसोर; सय्यद क़ाबिलशाह, बर्नाहर तअ़ल्लुक़ह नागोर (सिन्ध); मुहम्मद जान, ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट अमृतसर; मौलवी मासूम मियां, बालापुर इलाक़ह अकोला; मुहम्मदअली, असिस्टेंट कमिश्नर, बंगलोर; मीर हैदर अलीखां, मैसोर; मुहम्मद रशीदखां चौधरी, ज़मींदार नाटोर (राजशाही); सय्यद मुहम्मद अबूसईद, ज़मींदार पटना व गया; मनूचिहरजी काऊसजी, असिस्टैंट इन्जिनिअर सीग़ह तामीरात सर्कारी, बम्बई; क़ाज़ी मीर जलालुद्दीन, बम्बई; मिर्ज़ा अलीमुहम्मद, किरांची (सिन्ध); मीर गुलहसन, हैदराबाद (सिन्ध); सय्यद मुरादअलीशाह, रोड़ी इलाक़ह शिकारपुर; मीर हाफ़िज़अली, मुतवल्ली दर्गाह अजमेर; मीरनिज़ाम अली, अजमेरके ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट; नुसरवानजी रूस्टजी, अहमदनगर (बम्बई); पिस्तनजी जहांगीर, कमिश्नर बन्दोबस्त बड़ोदा; पारूमल्ल, हैदराबाद (सिन्ध); पीरबख़्श, कोहावर, ज़मींदार शिकारपुर; रहमतखां, पंजाबके पुलिस इन्स्पेक्टर; रुस्तमजी सुहराबजी, भड़ोच इलाक़ह गुजरातके; क़ाज़ी शिहाबुद्दीन, महकमह माल बड़ौदाके बड़े अफ़्सर; जमादार स्वालिह हिन्दी, जूनागढ़ (बम्बई); वलीमुहम्मद डंगन, भरगरी तअ़ल्लुक़ह अमरकोट, (सिन्ध).

निम्न लिखित शरूसोंको " खान " का ख़िताब मिलाः-

बुद्धाखां, हतून मेरवाड़ा (.इलाक़ह, राजपूतानह); फ़तहखां, चंग मेरवाड़ा (.इलाक़ह राजपूतानह).

नीचे लिखे हुए रईसों और शरीफ़ोंको " महाराजा बहादुर ", " राजा " व " नव्वाबका " ख़िताब मिलाः-

महाराजा सर जे० मंगलसिंह बहादुर, के० सी० एस० आइ०, गद्धोर (मुंघेर) को "महाराजा बहादुर" का ख़िताब; धर्म्मजीतसिंह देव, रईस उदयपुर वाके छोटा नागपुरको "राजा" (रियासत सम्बन्धी) का ख़िताब; पदवल्लभराव, ज़मींदार अवल (उड़ीसा) को उसके जीवन समय तक "राजा" का ख़िताब; और नव्वाब ख़्वाजिह अब्दुल्ग़नी, रईस ढाका, सी० एस० आइ० को "नव्वाब" का ख़िताब मिला.

नीचे लिखे हुए शख़्सोंको उनके जीवन समयतकके लिये वह ख़िताब मिले, जो उनके नामोंके सामने लिखे गये हैं.-

दीवान ग़यासुद्दीन अलीख़ां सज्जादह नशीन, अजमेर वालेको "शैखुल मशाइख़"; और सर्दार इन्द्रसिंह भदौरिया, ज़ैलदार पटियाला और मेम्बर पंजाब युनिवर्सिटी कॉलिज लाहौरको "मलाज़ुल् .उलमा वल् फ़ुज़ला".

दीवान गजराजसिंह, जस्सू (मध्य प्रदेश) के दीवानको "दीवान बहादुर" का ख़िताब उसकी ज़िन्दगी भरके लिये मिला.

पंडित मनफूल, सी० एस० आइ०, ऑनरेरी असिस्टैंएट कमिश्नरको उसके जीवन समयतक "दीवान" का ख़िताब मिला.

नीचे लिखे हुए शख़्सोंको "ऑनरेरी असिस्टैंट कमिश्नर" का ख़िताब दिया गयाः-

नव्वाब अब्दुल मजीदख़ां, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; सर्दार अजीतसिंह अटारीवाला (अमृतसर); आग़ा कलब आबिद, एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; कर्नेल् धनराज (गंजा ज़िले गुजरातका), एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; सय्यद हादी हुसैनख़ां दिल्ली निवासी, एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; सय्यद क़ाइमअली, एक्स्ट्रा असिस्टैंट कमिश्नर; राय मूलसिंह (ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट), गूजरांवाला; सोढ़ी मानसिंह (फ़ीरोज़पुरका) मैजिस्ट्रेट और ऑनरेरी एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; मुहम्मद सुल्तानख़ां, एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; मिर्ज़ा आज़मबेग, एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; पंडित मोतीलाल काथजो, एक्स्ट्रा असिस्टैंएट कमिश्नर; नव्वाब नवाज़िश अलीख़ां क़ज़्लबाश, लाहौर; दीवान शंकरनाथ लाहौरका ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट.

इस जल्सहमें हिन्दुस्तानके कुल जेलख़ानोंमेंसे १५९८८ क़ैदी छोड़ेगये.

पहिली जैन्युअरी सन् १८७७ .ई० की मुआफ़ीका इश्तिहार.

श्रीमान् नव्वाब वाइसरॉय बहादुर कौन्सिलके इज्लासमें सन् १८५९ .ई० की मुआफ़ीकी शर्तोंपर ग़ौर फ़र्माकर इश्तिहार देते हैं, कि जो लोग बग़ावतके मुखिया थे उनके अपराधोंको क्षमा न किया जाना रद्द किया गया, और अब उन लोगोंको इख़्तियार है, कि फ़क़त ज़िलेके हाकिमोंको अपने वापस आनेकी इत्तिला करने और आगेको

नेक चलन रहनेकी शर्तपर अपने घरोंको वापस चले आवें; परन्तु यह ज़ुरूर है, कि ऐसे लोग जिस ज़िलेमें रहते हों, जब उसकी सीमासे बाहिर जाना चाहें, पहिले इस बातकी इत्तिला ज़िलेके हाकिमोंको करदें.

क़ातिलों (वधकों) और बाग़ी फ़ौजके मुखियोंके अपराध क्षमा न कियाजाना बदस्तूर क़ाइम रहेगा, और ऊपर दर्ज किये हुए इश्तिहारकी कोई इबारत दिल्लीके पूर्व बादशाहके बेटे फ़ीरोज़शाहसे सम्बन्ध न रक्खेगी.
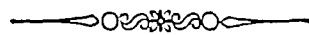
अब हम क़ैसरी दर्बारका हाल छोड़कर फिर ख़ास महाराणा साहिबकी तवारीख़ शुरू करते हैं.

महाराणा साहिब क़ैसरी दर्बारमें मए ९ सर्दारोंके कुर्सियोंपर बैठे और ८ आदमी पासवानोंमेंसे लवाज़िमह लेकर खड़े रहे. दर्बार बर्ख़ास्त होनेके बाद महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर अपने डेरोंमें आये, और शामके वक़ मए पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ व राव बख़्तसिंहके बग्घीमें सवार होकर लाट साहिबके डेरोंपर पहुंचे, जहां साहिब लोगोंके लिये खाना व नाच रंग वग़ैरह होरहा था. दूसरे राजा लोग भी जरीदह तौरपर वहां आये, और जल्सह बर्ख़ास्त होनेके बाद अपने अपने डेरोंको वापस गये. विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण ३ [हि० ता० १६ ज़िल्हिज = ई० ता० २ जैन्युअरी] को गवर्नर जेनरल हिन्द और कुल राजा लोग घुड़दौड़ देखनेके लिये गये, महाराणा साहिब भी वहां पधारे. इस घुड़दौड़में जोधपुर महाराजा साहिबके घोड़ोंकी ज़ियादह तारीफ़ हुई. विक्रमी माघ कृष्ण ४ [हि० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० ता० ३ जैन्युअरी] को क़ाइम मक़ाम एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह सी० के० एम० वाल्टर साहिब महाराणा साहिबके डेरोंपर आये, और मुलाक़ात करके वापस गये. फिर मंडी (ज़िला पंजाब) के राजा विजयसेन महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये, और कुर्सियोंपर दर्बार होकर उनसे मुलाक़ात हुई. महाराणा साहिब ने पेश्वाईके लिये दो तीन क़दम बढ़कर उनका सलाम लिया. यह राजा बहुत सादा मिज़ाज, संस्कृत पढ़े लिखे, प्रसन्न मुख, छोटे क़दवाले, खूबसूरत और मिलनसार थे. महाराणा साहिबने थोड़ी देरके बाद इत्र पान देकर उन्हें रुख़्सत किया. शामके वक्त इन्दौरके महाराजा तुकाजीराव हुल्कर महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये, जिनको महाराणा साहिब ड्योढ़ीतक पेश्वाई करके डेरेमें लेआये; पेश्तर कुर्सियोंका दर्बार हुआ, फिर उक्त महाराजाने मित्रताकी अधिकताके कारण भोजनके लिये कहा, और उसीवक़ भोजनकी तय्यारी हुई. महाराणा साहिब और महाराजा साहिबके बैठनेको जुदे जुदे बैठके और थाल परोसे गये, और दोनों महाराजाओंने चन्द सर्दारों सहित बड़े प्रेमके साथ भोजन किया; फिर मित्रताकी बातें होती रहीं, और क़रीब पहर रात व्यतीत होनेपर

महाराजा हुल्कर अपने डेरोंको गये. विक्रमी माघ कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्हिज = ई० ता० ४ जैन्युअरी] को महाराणा साहिबने बग्घी सवार होकर पेश्तर इन्दौरके महाराजा तुक्काजीराव हुल्करसे और बाद उसके रीवांके महाराजा रघुराजसिंहसे उनके डेरोंपर मुलाक़ात करके लाल क़िलेके क़रीब जमुनामें स्नान किया, और शामके वक्त जुमा मस्जिदमें पहुंचे, जहां कुल राजा लोग और गवर्नर जेनरल हिन्द व साहिबान अंग्रेज़ रौशनी व आतिशबाज़ी देखनेको आये थे. यह आतिशबाज़ी लाइक़ देखने और तारीफ़के थी, पानीके मुवाफ़िक़ आगकी चद्दरका गिरना, फ़व्वारोंका छूटना, क्वीन विक्टोरिया कैसरि हिन्दकी अग्निमय तस्वीरका दिखाई देना, आस्मानपर फूलवाड़ीके मुवाफ़िक़ रंग वरंगके सितारोंका छाजाना ऐसा दिखाई देता था, मानो बूंटेदार शामियानह खड़ा कियागया है. रौशनी देखकर महाराणा साहिब अपने डेरोंपर चलेआये, और दूसरे लोग भी विखरगये. विक्रमी माघ कृष्ण ६ [हि० ता० १९ ज़िल्हिज = .ई० ता० ५ जैन्युअरी] को परेडके चौगानमें गवर्नर जेनरल हिन्दने कुल राजा लोगोंके लवाज़िमों याने हाथी, फ़ौज और सवारों वगैरहको देखा. उसके बाद कुल राजा लोग और लाट साहिब अपनी अपनी बग्घियोंमें सवार होकर परेडके चौकमें खड़े रहे, और अंग्रेज़ी पल्टनों, तोपखानों व रिसालोंकी क़वाइद देखकर अपने अपने डेरोंमें आये. विक्रमी माघ कृष्ण ७ [हि० ता० २० ज़िल्हिज = .ई० ता० ६ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब मए एजेण्ट साहिबके बादशाही लाल क़िला देखनेको गये. अगर्चि इस शहरमें बहुतसी छोटी बड़ी .इमारतें देखनेके लाइक़ हैं, लेकिन् क़ुतुब साहिबकी लाट, जुमा मस्जिद, लाल क़िलेकी दीवार, दीवान ख़ास और मोती मस्जिद सबसे ज़ियादह मश्हूर हैं. दीवान ख़ास और मोती मस्जिदमें श्वेत पाषाणके बीचमें काले पत्थरकी पच्ची कारी देखकर दिल नहीं चाहता, कि इस जगहसे हटकर दूसरी जगह चलें. लाल क़िलेके अन्दर दीवान आम, दीवान ख़ास व मोती मस्जिदके सिवा विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] के ग़द्रमें कुल बादशाही मकान गिरवाये जाकर गोरोंकी फ़ौजके लिये बारकें बनवादी गई हैं. महाराणा साहिब क़िला देखकर डेरोंमें वापस आये. विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्हिज = ई० ता० ७ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब पिछली ३ घड़ी रात बाक़ी रहे दिल्लीसे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर उदयपुरकी तरफ़ रवानह हुए. विक्रमी माघ कृष्ण ९ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = .ई० ता० ८ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब जयपुरके स्टेशनपर पधारे. जयपुरके महाराजा रामसिंह साहिब और जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह साहिब पहिले रोज़ आगये थे, दोनों महाराजाधिराजों ने स्टेशनपर पधारकर महाराणा साहिबसे मुलाकात की. फिर महाराजा जशवन्तसिंह

करलिये जावें, जिसमें खर्चकी कुछ ज़रूरत न हो, सिर्फ़ एक सरिश्तहदारकी तनख्वाह और कन्टिन्जेंट खर्चका बन्दोबस्त करना पड़ेगा. इज्लास काइम करनेकी सलाहका बड़ा मददगार दीवान जानी विहारीलाल तो इसवक्त अपने उह्देपर वापस चलागया था और इस बड़े कामकी तामीलके लिये मुझहीको हुक्म मिला. मैंने ऊपर लिखी हुई तज्वीज़के मुवाफ़िक़ ऑनरेरी मेम्बरोंकी फ़िहरिस्त बनाकर नज्र की, जिसमें १ - बेदलाका राव बख्तसिंह चहुवान, २ - देलवाड़ाका राज फ़त्हसिंह झाला, ३ - पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह चहुवान, ४ - आसींदका रावत् अर्जुनसिंह चूंडावत, ५ - शिवरतीका महाराज बाबा गजसिंह, ६ - सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह डोडिया, ७ - ताणाका राज देवीसिंह झाला, ८ - काकरवाका उदयसिंह राणावत, ९ - मैं (कविराजा श्यामलदास), १० - भाणेज मोतीसिंह राठौड़, ११ - सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह, १२ - धब्बा राव बदनमल्ल, १३ - मह्ता तख्तसिंह, व १४ - पुरोहित पद्मनाथ वगैरहके नाम [illegible]न्युअरीये, और ऊपर लिखी हुई अदालतोंसे अमलेके लिये अह्लकार छांटकर मुन्शी[illegible]ने हाथी[illegible]को, जो एक होश्यार अह्लकार ठिकाने बदनोरकी विकालत करता था, [illegible]ाहिब अपनी [illegible]यत किया. पेश्तर इन्साफ़ी कार्रवाईका अख़ीर महकमह ख़ासके हुक्मसे ह[illegible]ल्टनों, तोपख़ानों [illegible], फ़ौज्दारी, व स्टाम्प रेजिस्टरी वगैरहके इन्तिज़ामका शुरू महता रा[illegible]घ कृष्ण[illegible]के हाथसे हुआ था, इसलिये तामील और समाअतका काम उसीके हाथमें र[illegible]ना वाजिब जानकर महकमहख़ासमें रक्खा गया, क्योंकि महाराणा साहिबकी बुद्धिमानी और मेरी सलाह व अर्ज़से इन्तिज़ामी हालतकी तब्दीली और दुरुस्ती हुई; लेकिन् इन कामोंके मूलकी मज्बूती जो बिल्कुल अंधेरेमें रौशनीके मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हुई, महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी बुद्धिमानीसे समझना चाहिये. इस कौन्सिलका नाम इज्लासख़ास रक्खा गया और ऊपर लिखे हुए मेम्बरोंको महाराणा साहिबकी तरफ़से ख़ास रुक़े लिखेगये, जिनमेंसे मैं अपने रुक़ेकी नक़्ल बतौर नमूनह नीचे लिखता हूं, और यही मज़्मून सब रुक़ोंका जानना चाहियेः-

ख़ास रुक़ेकी नक़्ल.

नम्बर ४८ ॥ श्रीएकलिंगजी. ॥

श्रीबाणनाथजी. श्रीनाथजी.

॥ स्वस्तिश्री दधिवाडिया श्यामलदासजी जोग अपर ॥ म्हांको दिली इरादो यो है, कि राज्यको काम इन्साफके साथ चाले जीमें मुल्की बिहबूदी होवे अर अमनो आमान

रहे, इवास्ते थाने इजलासपासका मेम्बर मुकरर किया गया है, सो थे वक्त इजलास ऐसी नेक राय देवे, कि महां की मुराद ऊपर जाहिर कीगई है वा हासिल होवे, संवत् १९३३ का वर्ष चेत वदि ७ भोमे.

इन कौन्सिलका जन्मदिन विक्रमी १९३३ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १२९४ ता० २४ सफ़र = ई० १८७७ ता० १० मार्च] को मानागया. कौन्सिलके नियत होनेसे पहिले इन्तिज़ामी हालत हुक्मके आधीन थी, और अब समयानुसार न्यायके तअल्लुक होकर मैं महाराणा साहिबके मन्शाके मुवाफ़िक़ कुल रियासती महकमोंको सलाह और मदद देनेपर मुक़र्रर हुआ. परन्तु इस कामको पार लगाने वाला सबसे बड़ा मददगार कर्नेल् इम्पी, पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ था. इस समयमें माली कामोंकी तरफ़ भी तवज्जुह करनी पड़ी, और पहाड़ी ज़िलेका हाकिम पंडित रघुनाथराव, जिसकी शिकायत बहुत दिनोंसे सुनी जाती थी, इसवक्त चन्द आदमियोंके शिकायत पेश करनेपर राजधानीमें बुलाया गया. महाराणा साहिबने उसे बुलाकर फ़र्माया, कि तेरे रिश्वत लेने और रिआयाको तक्लीफ़ देने वगैरहकी बहुतसी शिकायतें सुनी गई हैं, और पहाड़ी रिआया तेरी बेईमानीके सुबूतमें खास तेरे हाथकी तहरीरें पेश करनेको कहती है; अगर ऐसाही हो, तो सच सच अर्ज़ करदेनेसे तेरा किसीक़द्र बचाव हो सक्ता है. इसपर उक्त पंडितने बड़ी मज़्बूतीकेसाथ अर्ज़ की, कि इन बातोंमेंसे यदि एक भी सच्ची निकले, तो हुज़ूरकी मर्ज़ी हो सो सज़ा देव. तब महाराणा साहिबने अपीलके हाकिम मौलवी अब्दुर्रहमानखांको मए कायस्थ जोगावरनाथ माथुर, कायस्थ मोतीलाल भटनागर, ढीकड़िया जगन्नाथ तथा चन्द अहलकारोंके पहाड़ी ज़िलेकी तरफ़ तह्क़ीक़ातके वास्ते रवानह किया. इन लोगोंने मक़ाम कोटड़ामें तह्क़ीक़ात शुरू की, और यहांसे ही दिन बदिन पंडितकी बे इन्साफ़ी, बेरहमी, और बेईमानी ज़ाहिर होने लगी. आखिरकार कुल पहाड़ी ज़िलेकी तह्क़ीक़ात होचुकनेपर ३०००००) तीन लाख रुपयेका गबन और रिश्वत रघुनाथरावपर साबित हुई, जिसकी मिसल मिसल सुबूतोंके साथ तय्यार होकर तामीलके लिये महकमहखासमें भेजी गई. पंडित रघुनाथराव और उसके मातहत अहलकार क़ैद कियेगये; क्योंकि इन लोगोंने सिर्फ़ रिश्वत और गबन ही नहीं किया, बल्कि भील वगैरह गरीब रिआयापर यहांतक जुल्म किया, कि उनमेंसे सैकड़ों लोग अपने बालबच्चे बेचनेपर भी छुटकारा नहीं पाते थे.

इसी ज़िलेमें ऋषभदेवका एक प्रसिद्ध मन्दिर, जिसको जैन और वैष्णव दोनों मानते हैं, पहाड़ी ज़िलेके अहलकारोंके तअल्लुक़में होनेके सबब तह्क़ीक़ातके सीगहमें आया, जिसकी निस्बत मौलवी अब्दुर्रहमानखां व महासाणी मोतीलाल वगैरहकी रिपोर्टोंसे मालूम हुआ,

कि क़रीबन् एक लाख रुपया इस मन्दिरके ख़ास ख़ज़ानहका लोगोंने खुर्द बुर्द करडाला, जिसमें भंडारी जवाना और खेमराज सरगिरोह थे. पूरी पूरी तह्क़ीक़ात होकर मिस्लें मए सुबूतोंके पेश हुईं, जिसपर महाराणा साहिबने मन्दिरका उम्दह इन्तिज़ाम करके उदयपुरमें एक कमिटी बाज़ारके मोतबर साहूकारों व अह्लकारोंकी मुक़र्रर करदी, कि जिनकी रायसे मन्दिरका कुल इन्तिज़ाम उम्दह तौरपर हुआ करे, जो अबतक महकमह देवस्थानके तअल्लुक़में उसीतरह क़ाइम है; और इसीतरह खैरवाड़ाकी लाइनके सवारोंपर रिसालदार हरदेवका जुल्म साबित होकर वह अपने उह्देसे मौक़ूफ़ करदियागया. यह तह्क़ीक़ाती कार्रवाई विक्रमी १९३४ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२९४ ता० ३० सफ़र = ई० १८७७ ता० १७ मार्च] के बाद से शुरू होकर आषाढ़ और श्रावणके महीने तक ख़त्म हुई. इस तह्क़ीक़ातकी शाखें बहुत फैलगई थीं, इसलिये मस्लिहत समझकर बाज़की ख़ानगी तौरपर और बाज़की ऑफ़िशिअल तौरपर कुछ तामील करवाईजानेके बाद बाक़ी ज़ेर तज्वीज़ रक्खी गईं, और पहाड़ी ज़िलेके अगले कुल हाकिम व अह्लकार मौक़ूफ़ होकर महता अखेसिंह उस ज़िलेका हाकिम मए नये अमलेके नियत कियागया, जिसके प्रबन्धके लिये राजधानीमें "शैलकान्तार सम्बन्धिनी सभा" के नामसे एक नया महकमह जानी मुकुन्दलालके सुपुर्द होकर महाराणा साहिबने इस ज़िलेको खास अपनी निगरानीमें रक्खा. विक्रमी ज्येष्ठ [हि० रबीउस्सानी = ई० मई] में कुम्भलगढ़की तरफ़ दौरा हुआ, तब विक्रमी द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ९ [हि० ता० २२ जमादियुलअव्वल = ई० ता० ५ जून] को महाराणा साहिब सर्दारगढ़ पधारे, उसवक्त मनोहरसिंहको सोलह उमरावोंकी बराबर इज़्ज़त और सामनेकी लाइनमें शाहपुराके नीचे बैठक और गांव जैतपुरा, जो फ़ौजखर्चके रुपयोंकी बाबत् राज्यमें गिरवी था, वापस .इनायत कियागया, और फ़ौजखर्चके रुपयोंमें बहुत कुछ छूट करनेके बाद जो रुपये बाक़ी रहे उनकी क़िस्तें बांधदी गईं. इसके अलावह ठाकुरका ख़िताब, पर्वानहमें सुप्रसाद, और नावमें ऊपर तख़्तके सामने बैठक वग़ैरह अव्वल श्रेणीके सर्दारोंके मुवाफ़िक़ कुल .इज़्ज़तें इनायत करके वापस उदयपुर पधारगये. महाराणा साहिबने कुल मेवाड़का माली और मुल्की इन्तिज़ाम नये सिरसे करनेका पक्का इरादह करलिया था, परन्तु इस वर्षमें बहुत कम बारिश होनेके सबब पेश्तर कह्तका बन्दोबस्त करना पड़ा. पहाड़ी ज़िले और मेवाड़में तालाब वग़ैरह कारख़ाने जारी कियेगये, कि जिससे ग़रीब लोगोंको तक्लीफ़ नहो, और महाराणा साहिबने अपने इज़्ज़तदार पासवानोंमेंसे ४ आदमियोंको गिर्दावर मुक़र्रर किया, कि वे कह्तका बन्दोबस्त और इन्तिज़ामी हालतको दुरुस्त करनेकी रिपोर्ट करते रहें. इस कार्रवाईसे इन्तिज़ामकी हालत बदलकर दुरुस्त होने लगी.

साहिबकी तीसरी शादी ईडरके महाराजा जवानसिंहकी छोटी कन्या केसरकुंवरबाईके साथ होना क़रार पाया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २९ नोवेम्बर] को बरात रवानह होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ता० १ ज़िल्हिज = .ई० ता० ७ डिसेम्बर] को ईडर पहुंची, और उसीदिन विवाह हुआ; विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० ता० १० ज़िल्हिज =.ई० ता० १६ डिसेम्बर] को महाराणा साहिब वहांसे रवानह होकर मूंडेटी, पाल और खैरवाड़े होकर विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = .ई० ता० २८ डिसेम्बर] को गोवर्द्धनविलासमें पहुंचे. जाड़ेका मौसम होनेके सबब इस सफ़रमें किसी तरहकी तक्लीफ़ न हुई.

इसके बाद महाराणा साहिब चारभुजा, कुम्भलगढ़ और राजनगरकी सैर करके नाहरमगरे पधारगये. इसी अ़रसहमें एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह स्केअर लॉयल साहिब देसूरी के रास्तेसे राजनगर आये, महाराणा साहिब उक्त साहिबके आनेसे पहिले ही नाहरमगरेसे राजनगर पहुंच गये थे, विक्रमी माघ शुक्ल १२ [हि० १२९५ ता० ११ सफ़र = ई० १८७८ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को मुलाक़ात होकर नमकके बारेमें बातचीत हुई. गवर्मेण्टकी तरफ़से मिस्टर होम, वाइसरॉयकी कौन्सिलका मेम्बर और पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् इम्पी, और महाराणा साहिबकी तरफ़से मैं (कविराजा श्यामलदास) और महता राय पन्नालालने इस मुआ़मलहमें बातचीत की. बहुत कुछ बहस होनेके बाद नमककी राहदारी और खारी नमक मौक़ूफ़ होनेका हर्जानह और मेवाड़की रिआ़याके लिये दो लाख मन नमक एक रुपये मनके हिसाबसे और दो हज़ार मन नमक बिना क़ीमत ख़ास कोठार ख़र्चके लिये पचभद्रासे देना क़रार पाया. इसके बाद उक्त साहिब लोग दौरेपर रवानह हुए, और महाराणा साहिब भी विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ता० १८ सफ़र = ई० ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को नाहरमगरे होकर उदयपुर पधारगये. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० ता० १९ सफ़र = ई० ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को बम्बईके गवर्नर सर रिचर्ड टेम्पल उदयपुर आये, १७ तोप सलामीकी सर हुईं, और पेश्वाईके एवज़ महाराणा साहिब कोठीपर जाकर मिल आये, रौशनी व खाना वग़ैरह होकर विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ९ [हि० ता० २२ सफ़र = ई० ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उक्त साहिब वापस गये.

अब हम वह बात लिखते हैं, जो कि महाराणा साहिबकी .उम्दह कार्रवाइयोंमेंसे एक है, याने शहर उदयपुरमें हमेशह चोरियोंका होना और हर साल दो चार ख़ून होकर क़ातिलों का भागजाना, शहरके बाज़ार व गली कूचोंका गन्दा रहना, गाय, भैंस, सांढ, बकरे वग़ैरह लावारिस मवेशीका कस्रतसे बाज़ार और गलियोंमें घूमना देखकर इसबातका बन्दो-बस्त करनेके लिये महाराणा साहिबका इरादह हुआ. इसी अ़रसहमें महता शेरसिंहकी

हवेलीपर एक गुसाई पहरा दे रहा था, उसको किसीने गोलीकी देकर मारडाला, और क़ातिलका पता न लगा. तब महाराणा साहिबने पुलिसका .उम्दह इन्तिज़ाम करनेके लिये मुझे फ़र्माया. मैंने अर्ज़ की, कि विक्रमी १९३० [हि० १२९० = .ई० १८७३] में महाराणा शम्भुसिंह साहिबने भी इन बातोंका बन्दोबस्त करनेके लिये हुक्म दिया था. लेकिन मज़्हबी और हिमायती लोगोंके झुल्लड़से उनको अपना इरादह छोड़ना पड़ा. इसपर उन्होंने मुस्तइदीके साथ फ़र्माया, कि मैं इस बन्दोबस्तको बिदून पूरा किये न छोड़ूंगा; तब मैंने अर्ज़ की, कि इस काममें इतनी बातोंकी ज़रूरत है- अव्वल तो श्री हुज़ूरको अपने हुक्मकी पाबन्दी रखना; दूसरे इस कामके लिये एक ज़ी .इज़्ज़त, दिलावर, मिहनती और आलिम व तजर्बहकार अफ़्सरका नियत होना; तीसरे उस अफ़्सर की मददके लिये आला मुसाहिबोंमेंसे किसी शख़्सका मुक़र्रर कियाजाना; और चौथे शुरू इन्तिज़ाममें .इब्रतके लिये अगर चन्द सख़्त सज़ाएं भी देनी पड़ें, तो शिकायत होनेपर उनके लिये नर्म हुक्म न हो, क्योंकि ऐसे हुक्मसे लोगोंको हौसिलह होकर काममें हमेशह ख़लल पड़ेगा. तब महाराणा साहिबने ये सब बातें क़बूल फ़र्माकर कर्नेल् इम्पी साहिबको बुलाया, और मैंने ऊपर बयान कीहुई बातें पेश कीं. साहिब बहादुरने भी मेरी रायको पसन्द फ़र्माकर इस कामके पूरा करनेकी सलाह दी. महाराणा साहिबने पूछा, कि इस कामका अफ़्सर नियत कियाजानेके लाइक़ कौन शख़्स है ? मैंने अपीलके हाकिम मौलवी अब्दुर्रहमानखांकी सिफ़ारिश की. महाराणा साहिबने उक्त मौलवीको सुपरिन्टेण्डेण्ट पुलिस और मुझको उसका मददगार बनाया. इस कार्रवाईके करनेमें बहुतसी दिक़्क़तें पेश आईं, जिनमेंसे कुछ यहांपर लिखी जाती हैं. जोकि बाज़ारोंमें लावारिस सांड़ और बकरोंके फिरनेके सबब कई आदमी उनकी टक्करसे ज़ख़्मी होते और ग़ल्लह फ़रोशों व शाक तर्कारी बेचने वालोंका नुक़्सान होता था और सैकड़ों पत्थर व लकड़ियोंकी चोटोंसे वे भी ख़ुद मारे मारे फिरते थे, इसलिये इन पशुओंको आरामसे रखनेके वास्ते एक गोशाला (कांजी हाउस) बनाई गई, जहां घास और ख़िद्मतगारोंका पूरा बन्दोबस्त होकर बाज़ारोंमें से अनाथ पशुओंको घेरनेका हुक्म दियागया. कान्स्टेबलोंको सांड़ घेरते देखकर बाज़ारके महाजनोंने एकदम झुल्लड़ करके हड़ताल डालदी. चन्द बदमआशोंने, जिनके दिलोंमें ऋषभदेवकी तह्क़ीक़ातसे जलन उठ रही थी, इस बग़ावतके मुखिया बनकर सेठ चम्पालाल को अपना सरगिरोह बनाया. चम्पालाल अगर्चि अपनी ज़ातसे सीधा सादा और नेक मिज़ाज आदमी था, लेकिन् इन दूसरे चालाक आदमियोंके दममें आकर महाराणा साहिबसे सामना करनेको तय्यार होगया, परन्तु मुसलमान बोहरे, जो उदयपुरमें बड़े व्यापारी हैं, उनके शरीक न हुए, और कहा कि हम महाराणा साहिबसे सामना करके उनके बदख़्वाह नहीं बन

सके. हटनाल खोलनेकी बहुतसी कोशिशें कीगई, परन्तु कुछ कारगर न हुई, तब विक्रमी १९३४ फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० १२९५ ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० १८७८ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] की रातको सेठ चम्पालाल, बोरद्या तिलोकचन्द, चौधरी भीमराज, सिंगवी गुलाबचन्द और शूरपुरया साहिबलालको उनके घरोंसे गिरिफ्तार करके महलोंमें क़ैद करदिया. दूसरे दिन प्रातः समय कर्नेल् इम्पी साहिब महाराणा साहिबके पास आये, और इन पांचों मुखियाओंको बुलाकर समझाया. पेश्तर तो उन्होंने पूरी बग़ावतकी बातें कीं, लेकिन् पीछे धमकानेसे होशमें आकर हटनाल खोलदी. उसी दिनसे महाराणा साहिबने नगरसेठ और चारों चौवटिया लोगोंकी ताक़त बेफ़ायदह जानकर बोहरा लोगोंके गिरोहको उनसे अलहदह रखनेकी पॉलिसी रक्खी. इस बारेमें पुलिसकी कुल कार्रवाई लिखनेसे बयानको तवालत होनेके सबब हम मुख्तसर तौरपर सिर्फ़ इतनाही लिखते हैं, कि पुलिस के नियत होनेसे कई काम सीग़ह पुलिस अथवा ग़ैर सीग़हके भी दुरुस्त हुए. सुतालबह खफ़ीफ़ह, जिससे छोटे छोटे लेनदेनमें सुभीता हुआ, इन्सदाद वारिदातका पूरा पूरा इन्तिज़ाम, मुहताजखानह और पागलखानहका खोला जाना, गोशाला (कांजी हाउस) का क़ाइम होना, आवारह कुत्तोंका बन्दोबस्त, लड़के लड़कियोंके गुम होजानेको रोकने का प्रबन्ध, गिराहुआ माल असली मालिकको मिलनेका प्रबन्ध, रौशनी व शहर सफ़ाईका बन्दोबस्त, आम सड़कों व गली कूचोंमें बेजा मकान बढ़ानेकी रोक टोक, शाक तर्कारी व मेवा बेचने वालोंसे चुंगी मुआफ़ होकर उनका मुनासिब प्रबन्ध कियाजाना, वग़ैरह कई बन्दोबस्त नवीन होकर शहरको पूरा पूरा आराम मिला. इस पुलिसके इन्तिज़ामको रोकने के लिये मज्हबी, मत्लबी, हिमायती और असूयक लोगोंने बहुत कुछ हमले किये, लेकिन् महाराणा साहिबकी क़ाइम मिज़ाजी और मौलवी अब्दुर्रहमानखांकी कारगुज़ारी व लाला केसरीलाल इन्स्पेक्टर वग़ैरह होश्यार अहलकारोंकी तन्दिहीसे यह इन्तिज़ाम बहुत अच्छा होगया.

दूसरा बड़ा काम महाराणा साहिबने यह किया, कि सेटलमेण्टका बन्दोबस्त करनेके लिये गवर्मेण्टसे पेश्तर एक उम्दह अफ्सर तलब किया. इस कामकी सलाह देनेके वास्ते कर्नेल् इम्पी साहिब पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की रिपोर्टको कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने फ़ॉरिन् ऑफ़िसमें भेजकर पश्चिमोत्तर देशके सेटलमेण्ट ऑफ़िससे डब्ल्यु० एच० स्मिथ साहिबको बुलाया. उसने एक महीनेतक मेवाड़के ज़िलोंमें दौरा करके सेटलमेण्ट जारी करनेके लिये एक उम्दह रिपोर्ट की, जिसमें बहुतसी बातें जुग्राफ़ियह सम्बन्धी जानकर इस जगह दर्ज नहीं की गई हैं. सेटलमेण्टके लिये उसकी यह राय थी, कि यह काम लगातार जारी रखनेसे ४ वर्षमें खत्म होसक्ता है, और खर्च नीचे लिखे मुवाफ़िक़ होगाः-

.इनायत करके चीठीपर लिखदिया, कि हमने खुश होकर यह चिट्ठी .इनायत की है.

इसी वर्षमें एक बहुत बड़ा काम यह कियागया, कि नवलखा बाग़के महलोंमें विक्रमी १९३४ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२९४ ता० २० जमादियुस्सानी = ई० १८७७ ता० २ जुलाई] को देशहितैषिणी सभा क़ाइम हुई, जिसमें बड़े बड़े नेक कामोंकी बुन्याद डाली गई थी, जिसका वृत्तान्त विद्यमान महाराणा श्री फ़त्हसिंह साहिबके हालमें वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभाके साथ लिखा जायेगा.

विक्रमी १९३५ चैत्र शुक्ल १०[हि० १२९५ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० १८७८ ता० १२ एप्रिल] को मेजर केडल मेवाड़का पोलिटिकल एजेण्ट मुक़र्रर होकर उदयपुरमें आया. यह एजेण्ट भी महाराणा साहिबका मददगार बना रहा. अब महाराणा साहिबको मेवाड़के मुल्की इन्तिज़ामकी फ़िक्र हुई. इसवक़ मेवाड़में छोटे बड़े तीस पर्गने गिनेजाते थे, जिनमेंसे बाज़ बाज़ तो एकही गांवके और बाज़ ज़िलेवार थे, जैसाकि डब्ल्यु० एच० स्मिथ साहिबने अपनी रिपोर्टमें लिखा है, और पांच मुल्की नाइब फ़ौज्दारोंसे फ़ौज्दारी का इन्तिज़ाम होता था. इन नाइब फ़ौज्दारोंसे बहुत फ़ायदह हुआ, याने फ़ौज्दारी इन्तिज़ामकी जड़ मुल्कमें क़ाइम हुई, लेकिन् इसवक़ यह सोचा गया, कि नाइब फ़ौज्दार और हाकिमोंका जुदा जुदा प्रबन्ध रहनेसे इख्तिलाफ़ रायके सबब रिआयाकी ज़ेरबारीका अन्देशह है. आखरकार नियाबतको तोड़कर ग्यारह निज़ामतें बनाई गईं, जिनमें दस माली व इन्तिज़ामी और एक साइर है. ज़िले मगरेका हाकिम महता अक्षयसिंह, ज़िले गिरवाका हाकिम महता तख्तसिंह, ज़िले कुम्भलगढ़का हाकिम कायस्थ ज़ोरावरनाथ, ज़िले सहाड़ांका हाकिम महता रघुनाथसिंह, ज़िले राशमीका हाकिम महता गोपालदास, ज़िले छोटी सादड़ीका हाकिम महता केसरीसिंह, ज़िले चित्तौड़गढ़ का हाकिम ढींकड़िया जगन्नाथ, ज़िले मांडलगढ़का हाकिम महता विठ्ठलदास, ज़िले जहाज़पुरका हाकिम महता लक्ष्मीलाल, ज़िले भीलवाड़ाका हाकिम कश्मीरी पंडित रामनारायण और देश दाणका हाकिम कश्मीरी पंडित ब्रजनाथ नियत किया गया. इन लोगोंकी तन्ख्वाह अव्वल दरजह २००) और दूसरे दरजह १५०) रुपया माहवार मुक़र्रर कीगई, और मैजिस्ट्रेटीके इख्तियारात दियेजाकर ज़रूरतके मुवाफ़िक़ दीवानी व फ़ौज्दारीका अमलह भी क़ाइम किया गया. इस इन्तिज़ामका पूरा हाल हम जुग्राफ़ियहमें लिख आये हैं. इसवक़ महाराणा साहिब व पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ और महकमहख़ास (महता राय पन्नालाल) की तथा मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) व माली व मुल्की हाकिमोंकी एक राय होकर इन्तिज़ामी हालतमें दिन बदिन तरक्क़ी होने लगी. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रमज़ान = ई० ता० ३ सेप्टेम्बर] को वेदलाके राव बहादुर राव बख्तसिंहको

"[illegible] इन्डिअन एम्पायर" यानी सी० आइ० ई० का ख़िताब और तमगह गवर्मेण्ट हिन्दकी तरफ़से आया, जो महाराणा साहिबके सामने दर्बारमें पोलिटिकल एजेण्टने दिया.

अब मैं महाराणा साहिबके दौरेका हाल लिखता हूं, जो उन्होंने अपने किये हुए इन्तिज़ामकी निगरानीके लिये किया था. मार्गशीर्ष महीनेके प्रारम्भमें इस दौरेका इरादह किया गया, लेकिन उसी अरसहमें महाराणा साहिबके पेटमें बड़े ज़ोर शोरसे दर्द चलने लगा; बड़े [illegible] डॉक्टर पार्गी शेपर्ड व रेज़िडेन्सी सर्जन डॉक्टर वीटमन और महाराणा साहिबके ख़ास डॉक्टर अकबरअलीका इलाज होता रहा, मगर दर्दमें कुछ फ़र्क़ न पड़ा, तब आब व हवा बदलनेके लिये नाहरमगरे पधारे. वहां जानेसे आधा फ़र्क़ मालूम होनेपर दौरेका इरादह पक्का करके विक्रमी १९३५ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ [हि० १२९५ ता० ३ ज़िल्हिज = ई० १८७८ ता० २८ नोवेम्बर] को नाहरमगरेसे रवानह होकर बाठेड़ पहुंचे. रावत दुलेलसिंहने बड़ी ख़ुशीसे बहुत उम्दह दावत दी, और महाराणा साहिबको घोड़ा व सरोपाव नज़ किये; चारणों, अहल्कारों, तथा पासवानोंको सरोपाव दिये. महाराणा साहिबने भी दुलेलसिंहको ख़ास तौरपर इसी तरहसे नज़र देनेके अलावह ख़िल्अत वगैरह इनायत किये. इसी दिनसे महाराणा साहिबकी बीमारी बिल्कुल जाती रही. महाराणा साहिबके साथ क़रीब ५००० आदमियोंकी भीड़भाड़ थी, लेकिन मुल्की सर्दारों वगैरहकी आमदो-रफ़्तसे कभी ६००० और कभी ७००० और कभी ८००० तक घटबढ़ जाती थी. उस वक़्त भींडरका महाराज हमीरसिंह बहुत बीमार था, तोभी महाराणा साहिबकी मिह्मान्दारीके लिये भींडरमें बड़ी धूमधामसे तय्यारी होगई, परन्तु ईश्वरकी कुद्रतसे महाराणा साहिब बाठेड़ पधारे उसी दिन हमीरसिंहका इन्तिकाल होगया. यह सर्दार फ़य्याज़ी और मिलनसारीमें मश्हूर और नामवर था. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को महाराणा साहिबका मक़ाम कानोड़ ग्राममें हुआ. रावत उम्मेदसिंहने बड़े अदब व आदाब और मुहब्बतके साथ मिह्मान्दारी करके हाथी, घोड़ा, सरोपाव और ज़ेवर वगैरह नज़ किया. महाराणा साहिबने भी उसे ख़िल्अत वगैरह इनायत करके मिहर्बानी की. दूसरे रोज़ वहांसे बोहेड़े रावत अर्जुनसिंहके यहां भोजन करके बानसीके रावत मानसिंहके मिह्मान हुए. वहां भी अच्छी तरह पधरावनी हुई, और दूसरे रोज़ विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज = ई० ता० १ डिसेम्बर] को बड़ी सादड़ी तश्रीफ़ लाये. राज शिवसिंहने बड़ी मुहब्बत और स्वामिभक्तिके साथ पेश्वाई, पगमंडे वगैरह अदब आदाबकी रस्म अदा करके दो रोज़तक धूमधामके साथ मिह्मान्दारी की, और हाथी, घोड़े, ज़ेवर, सरोपाव वगैरह नज़ करके चारण, अहल्कार व पासवानोंको

भी सरोपाव दिये. महाराणा साहिबने भी इस मौक़ेपर शिवसिंहको "राज राणा" का ख़िताब और ख़िल्अ़त .इनायत किया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ ज़िल्हिज = .ई० ता ३० डिसेम्बर] को छोटी सादड़ीमें मक़ाम हुआ. दूसरे रोज़ वहां मक़ाम करके कालाखेत वग़ैरह वीरान ज़मीनोंको मुलाहज़ह फ़र्माकर दीवानी, फ़ौज्दारी व माली कामों तथा रिआ़याके हालात दर्याफ़्त किये. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० ता० १० ज़िल्हिज = .ई० ता० ५ डिसेम्बर] को नीमचकी छावनी पहुंचे, जहां मैजिस्ट्रेट सद्र व कर्नेल् फ़ौज तथा नीमचका सूबा पेश्वाईको आये, और २१ तोपें सलामीकी सर हुईं. दूसरे रोज़ मक़ाम करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० ता० १२ ज़िल्हिज = .ई० ता० ७ डिसेम्बर] को अंग्रेज़ी फ़ौजकी जनेली क़वाइद देखी और अठाणे, कणेरे तथा बेगम होते हुए विक्रमी पौष कृष्ण ३ [हि० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० ता० १२ डिसेम्बर] को मांडलगढ़में दाख़िल हुए; वहांपर क़िले और ज़िले की निगरानी करनेके बाद सतपड़ा पहाड़में शिकार और बीजोलियाकी दावत क़ुबूल करके विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को अमरगढ़ और विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ ज़िल्हिज = ई० ता० १८ डिसेम्बर] को जहाज़पुर पहुंचे. दूसरे रोज़ ईंटूंदा वग़ैरह ज़िला देखते हुए देवलीकी छावनी और वहांसे राजमहलोंकी तरफ़ तश्रीफ़ लेगये. विक्रमी पौष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ ज़िल्हिज = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को वापस जहाज़पुर आये, और वहां की रिआ़या व इन्तिज़ामी हालतको मुलाहज़ह फ़र्माकर महता राय पन्नालाल और उसके भाई लछमीलालकी कोशिशसे कुएं व तालाब बनवाने और मद्रसह जारी करने वग़ैरह .उम्दह बन्दोबस्त किये. फिर विक्रमी पौष शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २४ डिसेम्बर] को वहांसे रवानह होकर विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्हिज = ई० ता० २५ डिसेम्बर] के दिन इस इतिहासके कर्त्ता (कविराजा श्यामलदास) के गांव ढोकलिये पधारे. उस वक्त महाराणा साहिबके साथ शाहपुराका राजाधिराज नाहरसिंह, बनेड़ाका राजा गोविन्दसिंह, मदारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, भदेसरका रावत् भोपालसिंह, ताणाका राज देवीसिंह, हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह, मगरोपका बाबा गिरवरसिंह, काकरवाका उदयसिंह वग़ैरह और कुल ख़ैराड़ व पूर्वी मेवाड़के सर्दार, क़रीब ७-८ हज़ार आदमियोंकी भीड़-भाड़ थी. महाराणा साहिबने मेरे बनवाये हुए मकानमें विराजकर मए फ़ौजके रूखी सूखी दावत क़ुबूल फ़र्माई. अगर्चि पेश्तर ही मुझको बहुत कुछ इज़्ज़त इनायत होचुकी थी, लेकिन् इसवक्त "कविराजाका ख़िताब" और ख़ास मौक़ेमें जुहार बख़्शनेके अ़लावह

अजाची (महाराणाके सिवा दूसरेसे न मांगनेवाला) बनाकर इस दरजहके मुताबिक़ जायदाद .इनायत करनेका मुजरा और नज़ानह करवाया, और पहिले जो बड़ी मुहर .इनायत की थी उसीके मुताबिक़ चरण शरणकी दूसरी छाप बख़्शी, जिसमें यह श्लोक खुदा है:-

श्लोक.

राणाश्रीसज्जनेन्द्रस्य चरणाब्जप्रसादतः ॥
कविराजपदख्यातश्यामलस्यैव मुद्रिका ॥ १ ॥

इसके सिवा मुझको पैरमें सुवर्णके तोड़े व खिल्अ़त और मेरे बन्धु वग़ैरहको कंठी व खिल्अ़त .इनायत करके बरसल्यावास, पारसोली व बसी होते हुए विक्रमी पौष शुक्ल ५ [हि॰ १२९६ ता॰ ३ मुहर्रम = ई॰ ता॰ २८ डिसेम्बर] को चित्तौड़ पहुंच-गये. विक्रमी पौष शुक्ल १० [हि॰ ता॰ ९ मुहर्रम = ई॰ १८७९ ता॰ ३ जैन्युअरी] को वहांसे चले और काकरवेमें उदयसिंहके यहां दावत अरोगकर ताणे पधारे. राज देवीसिंहको नशिस्तमें तरक्की दी और खिल्अ़त इनायत किया. दूसरे रोज़ देवीसिंहकी तरफ़से कुल फ़ौजको दावत दीगई. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि॰ ता॰ ११ मुहर्रम = ई॰ ता॰ ५ जैन्युअरी] को नाहरमगरे और विक्रमी माघ शुक्ल १ [हि॰ ता॰ २९ मुहर्रम = ई॰ ता॰ २३ जैन्युअरी] को उदयपुरमें दाखिल होगये. इस इन्तिज़ामी वर्षके ख़त्म होनेपर सब उ़हदहदारोंने अपने अपने उ़हदोंकी सालियानह रिपोर्टें पेश कीं, जिनका मुख़्तसर हाल नीचे लिखाजाता है:—

जबसे महाराणा साहिबने मुल्की इन्तिज़ाम हाथमें लिया, तबसे जमामें तरक़्क़ी, ख़र्चमें किफ़ायत और इन्तिज़ामकी दुरुस्ती होनेके अलावह प्रजाको हरतरह आराम रहा. इन बातोंकी तफ़्सील तवारीख़में लिखना तवालतमें दाख़िल है. इज्लासख़ास नामी कौन्सिलके बनने और ज़िलोंमें दीवानी व फ़ौज्दारीका सुधार होनेसे प्रजाको पूरा पूरा इन्साफ़ मिलने लगा, और अहल्कारोंको भी ज़ाबितहकी कार्रवाई करनेका ढंग याद करनेसे ज़मानहके मुवाफ़िक़ हौसिलह होने लगा. विक्रमी १९३३ चैत्र कृष्ण ११ [हि॰ १२९४ ता॰ २४ सफ़र = ई॰ १८७७ ता॰ १० मार्च] से विक्रमी १९३५ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि॰ १२९५ ता॰ १३ रजब = ई॰ १८७८ ता॰ १४ जुलाई] तक इस कौन्सिल (इज्लास-ख़ास) में १२०२ मुक़द्दमे फ़ैसल हुए, जिनमें ६७३ दीवानी, ४४३ फ़ौज्दारी, ३० रेजिस्टरीके, २९ महकमह मालके, १३ फ़ौजके, और १९ ज़िले मगराके थे. कौन्सिलके प्रारंभ समयमें इतनी मिस्लोंका फ़ैसल होना मेम्बरोंकी तन्दिही और अदालतके सरिश्तहदार मुन्शी अली हुसैनकी उ़म्दह कारगुज़ारीका नतीजह समझना चाहिये.

अब हम माली सीग़ेके बन्दोबस्तका थोड़ासा नमूनह दिखलाना चाहते हैं, जिसमें

बड़े उलझाड़का सीग़ह साइर था, उसका इन्तिज़ाम महाराणा साहिबकी बुद्धिमानी व उनके ख़ैरख़्वाह अहलकारोंकी तन्दिहीसे दुरुस्त कियागया. साइरका शाहानह इख़्तियार मेवाड़के राजाओंको ज़मानह क़दीमसे हासिल है, जैसा कि चित्तौड़गढ़पर रामपोल दर्वाज़हके बाहिरी तरफ़ दक्षिणी दीवारपर विक्रमी १५९३ की प्रशस्ति (देखो महाराणा उदयसिंह का प्रकरण, पृष्ठ १४२) से ज़ाहिर है, और मुसल्मानोंकी बादशाहतके ज़मानहमें आलमगीरके अह्दमें महाराणा दूसरे अमरसिंहने जो घोड़ोंके सौदागरको राहदारीका पर्वानह (१) दिया था, उससे भी साबित है, लेकिन् साइरका लगान मरहटोंके ग़द्रमें बिल्कुल बर्बादीकी हालतको पहुंच चुका था. कर्नेल् टॉडने जिसतरह दूसरे रियासती सीग़ोंपर निगाह डाली उसी तरह इस सीग़हमें भी ख़ूब दिल लगाया. पहिले इस काममें ज़ियादहतर ठेका या मुक़ाता होता था; विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] तक इस रक़मकी यही हालत रही, और अक्सर सेठ ज़ोरावरमल्ल इस रक़मका ठेकेदार रहा. महाराणा स्वरूपसिंहने ठेका तोड़दिया, और ख़ालिसहमें रखकर कोठारी केसरीसिंहको दारोग़ह साइर बनाया. इस शख़्सने बड़ी तन्दिहीके साथ समुद्रको कूज़ेमें किया, याने सैकड़ों चीज़ोंकी लगान क़ाइम करके ज़बानी जमा ख़र्चको बहियोंमें दर्ज किया, और उसके बाद दो वर्ष केशवराम झंवर, ५ वर्ष गोविन्दराव पण्डित, फिर प्रतापमल्ल झंवर, उसके पीछे केवलराम भंडारी, जिसके बाद विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] तक

---

(१) पर्वानहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्रीगणेसजी प्रसादातु ॥ ॥ श्रीएकलींगजी प्रसादातु लिहि. हि.

स्वस्तिश्री ऊदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणां श्री अमरसींघजी आदेसातु, समस्त दाण्या कस्य, १ अप्र सोदागर इलयारपांरा घोड़ा १८, रोढ २, ऊंट २, मुरादषांरे घोड़ा १६, रोढ ४, ऊंट ३ लेजाए हे, सो चोलण मत करे, सं० १७५५ व्रपे मगसर सुदी ५ रोज.

डालचन्द वावेलने काम किया. फिर यह काम पण्डित व्रजनाथके हाथमें आया. हम कहसक्ते हैं, कि इस सीगहकी तरक़्क़ी और दुरुस्ती करनेवाले तीन शख़्स समझने चाहियें, याने अव्वल कर्नेल् टॉड, दूसरा कोठारी केसरीसिंह और तीसरा पण्डित व्रजनाथ. इस काममें तरक़्क़ी करनेकी वनिस्वत दुरुस्ती करनेमें ज़ियादह मिह्नत दर्कार थी. विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = .ई० १८५१]से विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = .ई० १८७७] तक का नक़्शह हम नीचे लिखते हैं, जिससे जमा ख़र्चका हाल मालूम होगाः-

जमा ख़र्च संवत् १९०८ से १९३४ तक.

संवत्.	आमदनी.	ख़र्च.	कैफ़ियत.
१९०८	३८७२४७॥।-॥	५८११३।	
१९०९	३८६२८९॥≡।	६०९६१॥-॥	
१९१०	३४६१११॥।)॥।	५९६४२॥।)॥	
१९११	३६२५४७ -॥।	६१०४५॥।≡॥	
१९१२	३६६६०८	६२३६४।=॥।	
१९१३	३८९७१४॥=।	५९३११॥।≡॥	
१९१४	४३७८९६॥	५९०४८॥।)॥	
१९१५	४४७७३२	५७५८२॥।)॥।	
१९१६	४७८०१५॥	५८६२३॥)।	
१९१७	४३२४४४ ≡।	५८७९९ =॥।	
१९१८	३९८५६१ -॥।	५५६३४ -	
१९१९	४२६०३५।≡	६२७९१ ≡।	
१९२०	४४९३१५।=।	६९३२४॥≡॥।	
१९२१	४१६७१७॥=।	७२३००।-॥।	
१९२२	३८३८६७॥।-।	७०८४६	
१९२३	३८२४६१ ।)।	७४४५६ ≡	
१९२४	४४९३१४।-।	६७६४१ -।	

[हि० ता० ८ शअ्बान = .ई० ता० २८ जुलाई] को श्री वाणनाथका लिंग, जो चन्द्रमहलके ऊपर गुम्बज़में था, वहांसे अखाड़ेके महलमें स्थापन कियागया. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रमज़ान = .ई० ता० २६ ऑगस्ट] को कृष्णपोल दर्वाज़ह के बाहिर शम्भु पल्टन और सज्जन पल्टनके लिये लैन तय्यार करवानेका खात मुहूर्त कियागया. विक्रमी प्रथम आश्विन शुक्ल ६ [हि० ता० ४ शव्वाल = .ई० ता० २१ सेप्टेम्बर] को मेजर केडल साहिब जो छुट्टीपर विलायत गये थे, वापस आये. विक्रमी प्रथम आश्विन शुक्ल १२ [हि० ता० १० शव्वाल = .ई० ता० २७ सेप्टेम्बर] को महाराणा साहिब बग्घीकी डाकमें चित्तौड़गढ़ इस प्रयोजनसे पधारे, कि क़िलेका जीर्णोद्धार और महलोंकी दुरुस्तीका प्रारम्भ कियाजावे; और वहां पधारकर पद्मिनीके तालाबपर के महल और पुराने महलोंको तय्यार करवानेके लिये नक्शे बनवाकर हुक्म देनेके बाद विक्रमी द्वितीय आश्विन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शव्वाल = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को पीछे उदयपुर पधार गये. विक्रमी द्वितीय आश्विन शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = .ई० ता० १६ ऑक्टोबर] को मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट केडल साहिब अंडमानके कमिश्नर नियत होकर उदयपुरसे रवानह हुए, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १० नोवेम्बर] को उनकी जगह मेजर सी० के० एम० वाल्टर साहिब उदयपुरमें आये. मेजर केडलने महाराणा साहिबको रियासतकी इन्तिज़ामी हालत दुरुस्त करनेमें अच्छी तरह मदद दी, और वाल्टर साहिबके आनेसे भी वैसीही मदद मिलती रही.

इन दिनोंमें कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहने अपनी राजकुमारी (उदयपुरकी महाराणी) को कृष्णगढ़ बुलाकर महाराणा साहिबको भी मिह्मान करनेके लिये बहुत कुछ आग्रह किया. जोकि महाराणा साहिबके चित्तमें कुल रियासतोंके साथ दोस्तानह बर्ताव बढ़ानेकी बहुत इच्छा थी, इसलिये उनका निमंत्रण क़बूल करके विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्हिज = .ई० ता० १० डिसेम्बर] को उदयपुरसे कूच किया और बेमाली, आसींद, बदनौर, संग्रामगढ़ वगैरह ठिकाने वालोंकी मिह्मान्दारियां स्वीकार करते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० १२९७ ता० ९ मुहर्रम = .ई० ता० २३ डिसेम्बर] को नसीराबाद पहुंचे. वहां ख़बर मिली, कि कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह बहुत बीमार हैं, तब विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ मुहर्रम = .ई० ता० २५ डिसेम्बर] को उनकी सिहतपुर्सीके लिये जरीदह तौरपर रेलके ज़रीएसे कृष्णगढ़को रवानह हुए. उसी समय तार द्वारा ख़बर मिली, कि महाराजा कृष्णगढ़का देहान्त होगया. महाराणा साहिबने ठाकुर मनोहर-

सिंहसे और मुझसे कहा, कि अब कृष्णगढ़ चलकर क्या करना चाहिये, क्योंकि उदयपुरके महाराणा अपने पिताकी दग्ध क्रियामें भी नहीं जाते हैं. तब हम दोनोंने निवेदन किया, कि यह रीति उपद्रवके समयमें इस सबबसे प्रचलित होगई थी, कि राज्याधिकारीके दग्ध स्थानपर जानेसे पीछेको राजधानीमें बग़ावत पैदा होजानेका भय था, लेकिन् इस समय किसी तरहका ख़तरह नहीं है, इसलिये पुरानी रीतिका नफ़ा नुक़्सान सोचलेना चाहिये. सिवा इसके कुटुम्ब तथा सम्बन्धी जनोंके साथ जैसा व्यवहार सामान्य गृहस्थका है वैसाही राजा लोगोंका भी है. महाराणा साहिबने कहा, कि मृत महाराजा एक तो कृष्णगढ़के महाराजा और दूसरे हमारे श्वशुर हैं इसलिये ऐसे अवसरपर हम पुरानी रूढ़ीको तोड़ना उचित जानते हैं. तब हम लोगोंने भी उनकी उचित आज्ञामें सम्मति दी. जब महाराणा साहिब कृष्णगढ़ पहुंचे, तो वहांके मनुष्योंको यह उम्मेद न थी, कि वे दग्धक्रियामें शरीक होंगे, परन्तु महाराणा साहिब एकदम दग्ध क्षेत्रमें चले गये. अगर्चि महाराजा पृथ्वीसिंह विद्वान, निर्लोभी, परिजन पोषक और सबकी प्रतिपाल करने वाले थे, परन्तु सिवा उनके फ़र्ज़न्दों और एक दो सेवकोंके किसीके मुखपर रंज न देखकर महाराणा साहिबको वहांके रियासती लोगोंसे बड़ी नफ़रत हुई, कि कैसे निष्ठुर (कठोर हृदय) सेवक हैं, कि ऐसे रंजके समयपर भी बड़ी लंबी चौड़ी बातें बनारहे हैं. दग्धक्रिया होचुकनेके बाद महाराणा साहिब वहांसे फूलमहलमें आये, और शामके वक़्त मातमी दर्बारमें पधारकर महाराजा शार्दूलसिंह और उनके भाइयोंको खूब तसल्ली दी. इसी तरह अन्तःपुरमें भी आश्वासना करवाई. महाराजा शार्दूलसिंहने ऐसे समयपर महाराणा साहिबके पधारने और आश्वासना देनेका बहुत बहुत धन्यवाद दिया. महाराणा साहिब रात्रिभर वहां रहकर दूसरे दिन रेल द्वारा मक़ाम नसीराबादको अपने लश्करमें पहुंचगये. फिर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० ता० १३ मुहर्रम = ई० ता० २७ डिसेम्बर] को मए लश्करके अजमेरमें पहुंचे; स्टेशनपर कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड, एजेण्ट गवर्नरजेनरल राजपूतानह मए दूसरे साहिब लोगोंके पेश्वाईको आये, और महाराणा साहिबके साथ बग्घीमें सवार होकर डेरेपर पहुंचे. यहांसे विक्रमी पौष कृष्ण २ [हि० ता० १६ मुहर्रम = ई० ता० ३० डिसेम्बर] को पौने ग्यारह बजे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर ४ बजे शामको जयपुर पहुंचे. महाराजा सवाई रामसिंह साहिब मए पोलिटिकल एजेण्ट बैनन साहिब व खेतड़ीके राजा अजीतसिंह, और ठाकुर फ़त्हसिंह वग़ैरह सर्दारोंके पेश्वाईको स्टेशनपर खड़े थे, और रेलगाड़ीसे बग्घीतक लाल बानातका फ़र्श बिछाया गया था. रेलसे उतरनेके बाद महाराणा साहिब और महाराजा साहिब दोनों आपसमें जुहार करके

मिले; फिर पोलिटिकल एजेएटने सलाम किया और जयपुरके सर्दारोंने सलाम करके नज़ें दिखलाई. इसके बाद महाराणा साहिबके सर्दारोंमेंसे देलवाड़ेका राजराणा फ़त्हसिंह, बदनोरका ठाकुर केसरीसिंह, कुरावड़का रावत् रत्नसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, और मैं (ढोकलियाका कविराजा श्यामलदास) महाराजा साहिबको नज़ दिखलाकर मिले, और उस समय मैंने यह दोहा कहाः—

दोहा.

आज बधाई अखिल जग अरिगन पाई ताप ॥
सेवक भये विदेह लखि सज्जन राम मिलाप ॥ १ ॥

जयपुरके पोलिटिकल एजेएटने इस दोहेकी एक नक्ल मांगी, जो मैंने उनके कहनेके मुवाफ़िक़ लिखकर भेजदी. साहिबको विदा करनेके बाद दोनों अधीश एक बग्घीमें सवार होकर सर्दार व पासवानोंकी बग्घियों सहित सांगानेरी दर्वाज़हसे राज्य महलोंमें पहुंचे और शवरता नामी सभा स्थानमें दर्बार हुआ. फिर महाराणा साहिबको सुखनिवास महलमें पहुंचाकर महाराजा साहिब अपने महलमें गये. विक्रमी १९३६ पौष कृष्ण ४ [हि० १२९७ ता० १८ मुहर्रम = .ई० १८८० ता० १ जेन्युअरी] को दोनों अधीश एक बग्घीमें सवार होकर रामनिवास बाग़में पाठशालाके विद्यार्थियोंका जल्सह देखनेको गये, और वहांपर हेडमास्टरकी स्पीच सुनकर विद्यार्थियोंका कुतूहल देखनेके बाद वापस महलोंमें आये. रात्रिके समय दोनों अधीशोंने मए सभ्यजनोंके नाटकशालामें पधारकर जहांगीर बादशाहका नाटक देखा. यह नाटकशाला इन्हीं महाराजा साहिबने बड़े ख़र्चसे बनवाकर बम्बईसे पार्सी वग़ैरह शिक्षित मनुष्योंको बुलवाया, और स्त्रियोंकी जगह जयपुर की वेश्याओंको तालीम दिलाकर तय्यार करवाया. इस नाटकमें वस्त्र, भूषण वग़ैरह सामग्री समयानुसार, और बोलचाल, पठन पाठन आदि सब बातें अद्भुत और चरित्रकी सत्यता दिखलानेवाली थीं. परियोंका उड़ना, पहाड़ों व मकानोंकी दिखावट, और फ़िरिश्तोंका ज़मीन व आकाशसे प्रगट होना, देखनेवालोंके नेत्रोंको अत्यन्त आनन्द देता था. मैंने ऐसा नाटक पहिले कभी नहीं देखा था. नाटक देखकर वापस आनेके बाद दोनों अधीशोंने अपने अपने स्थानमें शयन किया. दूसरे दिन दोनों अधीशोंने दस्तकारीका स्कूल और पानी लानेके नलोंका इंजिन वग़ैरह अवलोकन करके रात्रिको बद्रेमुनीर और बेनज़ीरका बेनज़ीर नाटक देखा और वहांसे आकर अपने अपने स्थानमें शयन किया. विक्रमी पौष कृष्ण ६ [हि० ता० २० मुहर्रम = .ई० ता० ३ जेन्युअरी] को महाराणा साहिब खातीपुरेकी

तरफ़ चीतेसे हरिणोंका शिकार करनेको पधारे. महाराजा साहिबकी तरफ़से खेतड़ीके राजा अजीतसिंह और ठाकुर फ़त्हसिंह वग़ैरह साथ हाज़िर थे. एक हरिण चीतेसे और ३ सूअर गोलीसे शिकार होनेके बाद महाराणा साहिब वापस आये. विक्रमी पौष कृष्ण ७ [हि० ता० २१ मुहर्रम = .ई० ता० ४ जैन्युअरी] को ठाकुर फ़त्हसिंहकी तरफ़से मेवाड़के सर्दार व पासवानोंकी दावत हुई, और शामके चार बजे दोनों अधीश रामनिवास बाग़में जानवर वग़ैरह देखनेको गये; रातकेवक्त अल्लाहदीन और अजीब व ग़रीब चराग़का नाटक हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ मुहर्रम = .ई० ता० ५ जैन्युअरी] को गैसका कारख़ानह और हवाई मज्लिसका नाटक देखा. विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ मुहर्रम = .ई० ता० ६ जैन्युअरी] को दोनों अधीशोंका मिलना हुआ, और बादल महल, नये महल, अंटाघर, और महाराजा कॉलेजमें विद्यार्थियों को देखकर रात्रिके समय लैली मजनूंका नाटक देखा, जहां तुकाजीराव हुल्कर इन्दौरके ज्येष्ठ और कनिष्ठ पुत्र भी, जो राजपूतानहकी सैर करते हुए जयपुरमें आये थे, नाटक देखनेमें शरीक हुए. विक्रमी पौष कृष्ण १० [हि० ता० २४ मुहर्रम = .ई० ता० ७ जैन्युअरी] को इन्दौरके ज्येष्ठ और कनिष्ठ कुमार महाराणा साहिब से मिलनेको सुखनिवास महलमें आये, और सायंकालको महाराणा साहिब व महाराजा साहिब उक्त राजकुमारोंसे मिलनेके लिये उनके स्थानपर गये. फिर महाराजा साहिब और महाराणा साहिबने क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ दर्बार करके दोनों तरफ़से ज़ेवर व सरोपावकी किश्तियां और हाथी, घोड़े दे लेकर बड़े स्नेहके साथ ११ बजे रात्रिको महाराणा साहिबने कृष्णगढ़की तरफ़ प्रस्थान किया, और रात्रिके १२ बजे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर रवानह होगये; रेलवे स्टेशनतक महाराजा साहिब पहुंचानेको आये. इस क़िस्मका मेल मिलाप इन बड़े राजाओंमें होना महाराणा सज्जनसिंह साहिबकी सज्जनतासे प्रारम्भ हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ११ [हि० ता० २५ मुहर्रम = .ई० ता० ८ जैन्युअरी] को प्रातःकालके ५ बजे महाराणा साहिब कृष्णगढ़के स्टेशनपर पहुंचे, जहां महाराजा शार्दूलसिंह अग्रगामिताके लिये उपस्थित थे. यहांसे दोनों महाराजा एक बग्घीमें सवार होकर फूल महलमें पहुंचे. तीन रोज़तक कृष्णगढ़में स्नेहपूर्वक निवास किया, और महाराजा शार्दूलसिंह व उनके भाइयोंको रंगीन पोशाकें और उनकी सर्कारको दावत देकर शोक निवर्त्तन किया; फिर विक्रमी पौष कृष्ण १३ [हि० ता० २७ मुहर्रम = .ई० ता० १० जैन्युअरी] को चार बजे वहांसे रवानह हुए. महाराजा शार्दूलसिंह स्टेशनतक पहुंचानेको आये. महाराणा साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर ५ बजे शामको अजमेर पहुंचे. स्टेशनपर अग्रगामिताके

लिये कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब और उनके सेक्रेटरी टाल्बट साहिब मौजूद थे, मेरवाड़ा बटालिअनने सलामी उतारी. उक्त साहिब अधीशको डेरेतक पहुंचागये. फिर महाराणा साहिबके मामा बख्तावरसिंहकी तरफ़से उनके मकानपर दावत हुई. इसके बाद विक्रमी पौष कृष्ण १४ [हि० ता० २८ मुहर्रम = ई० ता० ११ जैन्युअरी] को साहिब लोगोंसे मुलाक़ात करके दूसरे रोज़ विक्रमी पौष शुक्ल १ [हि० ता० २९ मुहर्रम = ई० ता० १२ जैन्युअरी] को प्रातः कालके ३॥ बजे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर रायपुर पहुंचे, जहां क़रीब १००० आदमी लश्करके पेश्तर भेजे हुए मौजूद थे. यहांपर नींबाजके ठाकुर चत्रसिंहका सलाम हुआ, और स्टेशनसे बग्घी सवार होकर ९ बजे रायपुर पहुंचे. वहांके ठाकुर हरिसिंहकी तरफ़से पगपावंडे वगैरह अदब आदाबकी रस्में अदा होकर दावत हुई. इसी मक़ामपर जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह साहिबकी तरफ़से आगेवाका जागीरदार बख्तावरसिंह आया. विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० ३० मुहर्रम = ई० ता० १३ जैन्युअरी] को रायपुरके ठाकुर हरिसिंह व नींबाजके ठाकुर चत्रसिंहकी तरफ़से घोड़ा व सरोपाव नज़ हुए, महाराणा साहिबने भी उनको खिल्अत देकर वहांसे कूच किया. रास्तेमें चंडावलके ठाकुर शक्तिसिंहकी दावत स्वीकार करके सोजत और दूसरे रोज़ पाली, और वहांसे बूशीमें मक़ाम हुआ, जहां जोधपुर के महाराजा साहिब भी महाराणा साहिबसे मिलनेको मौजूद थे, लेकिन् अपने छोटे भाईको अधिक बीमार सुनकर उसी वक्त मुलाक़ात करके जोधपुर चलेगये, और अपने भाई महाराज प्रतापसिंह व कविराजा मुरारिदानको आतिथ्यके लिये छोड़ गये. यहांसे रवानह होकर महाराणा साहिब जीवंद होते हुए विक्रमी पौष शुक्ल ६ [हि० ता० ४ सफ़र = ई० ता० १७ जैन्युअरी] को घाणेराव पहुंचे. यह ठिकाना पेश्तर मेवाड़के मातह्त था, लेकिन् महाराणा अरिसिंहके समय गोड़वाड़के साथ मारवाड़में चलागया. ठाकुर जोधसिंहकी तरफ़से मए फ़ौजके अच्छी तरहसे दावत हुई, उस ७ वर्षकी उम्र वाले ठाकुरकी बात चीत सुनकर महाराणा साहिब बहुत खुश हुए. विक्रमी पौष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = ई० ता० १८ जैन्युअरी] को कुम्भलगढ़ पधारे. इसवक्त महाराज प्रतापसिंह और कविराजा मुरारिदान भी साथ थे. विक्रमी पौष शुक्ल ९ [हि० ता० ७ सफ़र = ई० ता० २० जैन्युअरी] को ज़नानी सवारी उदयपुरसे घाणेराव आई. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ सफ़र = ई० ता० २४ जैन्युअरी] को महाराज प्रतापसिंह और कविराजा मुरारिदानको जोधपुरकी तरफ़ विदा करके महाराणा साहिब गढ़बोर पहुंचे, वहांसे केलवे, राजनगर और नाथद्वारा होते हुए विक्रमी माघ कृष्ण ५ [हि० ता० १९ सफ़र = ई० ता० १ फ़ेब्रुअरी] को नाहरमगरे दाखिल

हुए, और वहां सैर व शिकार करनेके बाद विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १२ [हि॰ ता॰ २६ रबीउल्अव्वल = .ई॰ ता॰ ८ मार्च] को उदयपुर पहुंचे.

इन दिनोंमें महाराजा जोधपुरके पुत्रोत्सव हुआ, जिसमें पेश्तर जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंह वहां आये, और उनके जानेके बाद महाराणा साहिबको भी बड़े हठ और प्रीतिके साथ निमंत्रण देकर बुलाया. महाराणा साहिबने, जो इन रियासतोंमें परस्पर आमदोरफ़्त और प्रीति बढ़ाना चाहते थे, विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ७ [हि॰ ता॰ ६ रबीउस्सानी = .ई॰ ता॰ १८ मार्च] को जरीदह नौरपर क़रीब २५० आदमी सहित उदयपुरसे जोधपुरकी तरफ़ प्रस्थान किया. महाराजा साहिबकी तरफ़से कविराजा मुरारिदान और आगेवाका जागीरदार बख्तावरसिंह लेनेको आये. मारवाड़की सहद सरहद की नालतक घाणेरावके ठाकुर जोधसिंह और खीमाराके ठाकुर गुमानसिंहने अग्रगामिता की. बग्घी, हाथी, घोड़े और रथोंकी डाकमें विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि॰ ता॰ ९ रबीउस्सानी = .ई॰ ता॰ २१ मार्च] को महाराणा साहिब जोधपुर पहुंचे. महाराजा साहिब जोधपुरने वहांसे पांच कोस गांव सोगड़ातक पेश्वाई की. महाराणा साहिब राई के बागमें ठहरे, जहां कि महाराजा साहिब हमेशह रहते हैं. जबतक महाराणा साहिब वहां ठहरे प्रतिदिन राग रंग व शिकार और घुड़दौड़के जल्से होते रहे. कविराजा मुरारिदान, महता विजयसिंह, और महाराज किशोरसिंहने दोनों अधीशोंको अपने अपने स्थानपर अदब आदाबके साथ मिहमान करके बड़ी धूमधामसे दावतें दीं. महाराणा साहिबने जोधपुरके युवराजको भूषण वस्त्र भेजे, और परस्पर दोनों अधीशोंने दर्बार करके हाथी, घोड़े व ज़ेवरकी किश्तियां देनेका दस्तूर अदा किया. महाराणा दूसरे जगत्सिंहके युवराज प्रतापसिंह विक्रमी १७९७ [हि॰ ११५३ = .ई॰ १७४०] में शादी करनेको जोधपुर गये थे, जिसके बाद महाराणा सज्जनसिंहने इस रवाजको नवीन किया. फिर विक्रमी चैत्र कृष्ण ११ [हि॰ ता॰ २४ रबीउस्सानी = .ई॰ ता॰ ५ एप्रिल] को जोधपुरसे रवानह होकर झालामंडके ठाकुर राणावत ज़ोरावरसिंहके वहां दोनों अधीश मिहमान हुए. विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि॰ ता॰ २५ रबीउस्सानी = .ई॰ ता॰ ६ एप्रिल] को वहांसे प्रस्थान करके महाराजा साहिब जोधपुर और उनके भाइयोंको विदा करनेके बाद महाराणा साहिब पाली और वहांसे देसूरी व राजनगर होते हुए विक्रमी चैत्र कृष्ण १४ [हि॰ ता॰ २७ रबीउस्सानी = .ई॰ ता॰ ८ एप्रिल] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. मैं (कविराजा श्यामलदास) इस यात्रामें संग नहीं था, क्योंकि मेरे बड़े भाई ओनाड़सिंह अधिक बीमार थे. महाराणा साहिब जब उनकी सिहतपुर्सीके लिये मकानपर पधारे, तब मुझे उन्हींके पास छोड़ गये थे. अफ्सोस कि ओनाड़सिंहका देहान्त विक्रमी चैत्र

कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रबीउस्सानी = .ई० ता० २ एप्रिल] को होगया. महाराणा साहिबने उनकी उत्तर क्रियामें ३०००) तीन हज़ार रुपये देकर बहुत कुछ आश्वासना की.

विक्रमी १९३७ आषाढ़ कृष्ण ११ [हि० १२९७ ता० २४ रजब = .ई० १८८० ता० ३ जुलाई] को कुल मेवाड़के किसान लोग. जो क़रीब तीन चार हज़ारके थे, उदयपुरमें आये, और मेवाड़में ज़िराअ़त बोनेकी हड़ताल करदी; क्योंकि पुराने ज़मानहसे इस देशमें ज़िराअ़तका हासिल लटाई बटाईसे लियाजाता था. इन दिनोंमें सेटलमेण्टकी पैमाइश शुरू होनेके सबब उन लोगोंने, जिनको पुरानी रीतिसे फ़ायदह पहुंचता था, किसानोंको बर्गलाया, और इसी मौक़ेपर जंगलातका महकमह भी क़ाइम हुआ, जिससे एकदम नई नई बातें देखकर लोग घबरा गये. महाराणा साहिबने इन लोगोंको शम्भुनिवासमें बुलाकर बहुत कुछ तसल्ली दी और समझाया, लेकिन् उनमें कोई समझदार व मुख़्तार शख़्स नथा कि सुनता समझता, विना समझे बूझे जो जिसके जीमें आया उसीतरह वायवैला करने लगे. दूसरे रोज़ महाराणा साहिबने इस इतिहासके कर्त्ता (कविराजा श्यामलदास) और महता राय पन्नालालको इन लोगोंके समझानेका हुक्म दिया. हम दोनोंने बहुतेरा समझाया, लेकिन् उनका ख़याल न बदला, तब महाराणा साहिबने महता राय पन्नालालको कुछ पैदल और सवारोंकी जमइयतके साथ मेवाड़में यह हुक्म देकर भेजा, कि जो लोग बदमआश हों उनको क़ैद करके बाक़ी किसानोंको तसल्ली देकर हल जुतवादो. महता पन्नालाल और सेटलमेण्ट ऑफ़िसर विंगेट साहिबने बड़ी अ़क्लमन्दी और समझाइशके साथ इस बलवेको दबादिया.

महाराणा साहिब दिलसे चाहते थे, कि राजा और प्रजाकी एकता और दोनोंके फ़ायदे दिन बदिन बढ़ते रहें, और इसी अभिप्रायको ज़ाहिर करनेके लिये विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ शअ़्बान = .ई० ता० १६ जुलाई] को महाराणा साहिबकी सालगिरहके दर्बारमे पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् वाल्टर साहिबने एक स्पीच दी. जिसके पढ़नेसे पाठक लोगोंको मालूम होगा, कि महाराणा साहिबका ख़याल अपने देशकी उन्नतिकी तरफ़ कैसा था.

वाल्टर साहिबकी स्पीचका खुलासह.

आप लोग सब जानते हों, कि श्री मन्महाराणा साहिब रात दिन प्रजा और देशकी भलाई और विद्या तथा गुणोंके प्रचारमें उद्यत रहते हैं. इस देशमें आप लोगोंको उचित है, कि जहांतक होसके उनकी मदद करो. अबतक श्रीयुत महाराणा साहिबने जो कार्य किये हैं, और जिनका अब प्रारम्भ होरहा है वे सब प्रजा और देशकी भलाईके निमित्त हैं, और विचारसे किये हैं; उन सब कार्योंके परिणाम आप

लोगोंने अच्छे देखे हैं, और देखोगे, जिनसे आगे पीछे सदा भलाई और उपकार रहेगा.

ऐसे राजा, जो दिलसे देशकी तरक्क़ी करना चाहते थे, उनके कामोंमें हर्ज डालनेवाले भी ख़ुद्मत्लबी लोग तय्यार थे, लेकिन् महाराणा साहिबने किसीकी पर्वा नकी, मुल्की व माली कामोंके इन्तिज़ामको जहांतक होसका दुरुस्त किया, जमाको बढ़ाया और ख़र्चको घटाया.
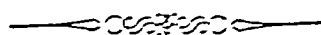
विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १३ [हि० ता० ११ शअ्बान = ई० ता० २० जुलाई] को जोधपुरसे कविराजा मुरारिदान और कंटालियाका ठाकुर गोवर्द्धनसिंह महाराणा साहिबकी गद्दीनशीनीका दस्तूर लेकर आये, उनकी पेश्वाईके लिये में (कविराजा श्यामलदास) और हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह चंपाबाग़तक भेजे गये. यह रीति १२६ वर्षतक दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे बन्द रही, जो अब दोनों महाराजाधिराजोंकी अक्लमन्दी और मुहब्बतसे फिर जारी हुई. विक्रमी श्रावण कृष्ण ३ [हि० ता० १५ शअ्बान = ई० ता० २४ जुलाई] को टीका नज़ हुआ, और विक्रमी श्रावण कृष्ण ९ [हि० ता० २१ शअ्बान = ई० ता० ३० जुलाई] को दोनों सर्दार जोधपुरकी तरफ़ बिदा कियेगये.

विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रमज़ान = ई० ता० २० ऑगस्ट] को महाराणा साहिबने मेवाड़की रॉयल कौन्सिलका नाम महद्राज सभा रखकर, जो पहिले इज्लासख़ासके नामसे प्रसिद्ध थी, इस कौन्सिलको महकमहख़ाससे अलहदह करदिया, और मुख़्तसर क़ाइदे बनाकर मेम्बरोंकी संख्या भी बढ़ादी. पहिले इस सभाकी कार्रवाईकी तामील, जो महकमहख़ासकी मारिफ़त होती थी, अब अलहदह कौन्सिलके इख़्तियारमें कीगई. इस सभाका सेक्रेटरी मेम्बर पंड्या मोहनलाल विष्णुलालको बनाया और नीचे लिखेहुए मेम्बर मुक़र्रर कियेगये:—

बेदलाका राव तख़्तसिंह.	देलवाड़ाका राजराणा फ़त्हसिंह.
आसींदका रावत् अर्जुनसिंह.	पारसोलीका राव रत्नसिंह.
शिवरतीका बावा गजसिंह.	सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह.
ताणाका राज देवीसिंह.	मामा बख़्तावरसिंह.
शिवपुरका महाराज रायसिंह.	काकरवाका राणावत उदयसिंह.
कविराजा श्यामलदास.	राय पन्नालाल.
सहीहवाला अर्जुनसिंह.	महता तख़्तसिंह.
पुरोहित पद्मनाथ.	जानी मुकुन्दलाल.
पण्डित ब्रजनाथ.	पंड्या मोहनलाल.

फिर शामके ५॥ बजे महाराणा साहिबने महद्राजसभा काइम करनेका दर्बार कुंवर-पदाके महलमें किया, जिसमें ऊपर लिखेहुए १८ मेम्बरोंके अलावह कर्नेल् सी० के० एम० वाल्टर साहिब बहादुर, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़, कर्नेल् ब्लेअर साहिब बहादुर, मिस्टर ए० विंगेट साहिब बहादुर, सी० एस०, सी० आइ० ई०, खैरवाड़ाके डॉक्टर मलन साहिब बहादुर, और पादरी डॉक्टर जेम्स शेपर्ड साहिब बहादुर, आये. इसके बाद महाराणा साहिबने खड़े होकर मुख्तसर तक्रीर फ़र्माई, जो नीचे दर्ज कीजाती है :—

"ऐ मेम्बरान जल्से राज्य श्री महद्राज सभा ! यह तो ज़ाहिर ही है, कि हमारे तख़्त नशीन होनेके पहिले ही इस मुल्क मेवाड़के उम्दह इन्तिज़ामके लिये एक बड़ी अदालतकी निहायत ज़रूरत थी, लिहाज़ा विक्रमी १९३३ के सालमें राज्ये श्री इज्लास ख़ास नामी अदालत हमारे हुक्मके बमूजिब मुक़र्रर हुई. जिसवक्त यह अदालत काइम कीगई, तो उसवक्तपर ठीक हमारी यह दिली ख़्वाहिश व मनशा था, कि इसीकी कार्रवाईसे हमारे सब उमराव, सर्दार अहलकार और पासवान वग़ैरह इन्साफ़के प्रबन्धसे बख़ूबी वाक़िफ़ियत हासिल करें; क्योंकि जब कार अदालत उम्दह तौरसे तर्तीब दियाजावे, तो किसीको किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो, बल्कि इन्तिज़ाम व इन्साफ़की उम्दगी जानलें. इन तीन साल गुज़श्तहमें राज्ये श्री इज्लास ख़ासकी कार्रवाईके ज़रीएसे हमारे मुल्क मेवाड़की बहुतसी बातोंमें बड़ी तरक़्क़ी हुई; हमारे मुल्कके बाशिन्दोंमें कौन कौन कैसे कैसे उमराव, सर्दार, अहलकार और पासवान वग़ैरह हैं यह भी मालूम होगया. किस किस ने इस अदालतकी कार्रवाईमें दिलोजानसे मदद की, और किस किसने न की, और किन किन बातोंमें कोताही रही. ये सब बातें हमको बख़ूबी रोशन होगईं, लेकिन् अस्ल मत्लब तो यह है, कि इसी राज्ये श्री इज्लासख़ाससे बहुतकर मुल्कका फ़ायदह ही हुआ."

"अब आज हम राज्ये श्री इज्लासख़ासका नाम तब्दील करके बा क़ाइदह यह राज्ये श्री महद्राज सभा मुक़र्रर और क़ाइम करते हैं, और उसकी कार्रवाई हस्बुल-हुक्म हमारे अंजाम देनेके लिये हमारे तमाम उमराव, सर्दार व अहलकार और पासवानोंमेंसे अच्छे अच्छे लाइक़ अठारह मेम्बरोंको चुनकर मुक़र्रर करते हैं और राज मेवाड़का सब कारोबार दो बड़ी अदालतों, याने राज्ये श्री महद्राज सभा और राज्ये श्री महकमहख़ासमें तक़्सीम कर एक क़ानून बनाम "क़वाइद इन्तिज़ाम मुल्क मेवाड़ नम्बर १ बाबत् संवत् १९३७" बनाकर जारी करते हैं, जिससे उम्मेद है, कि सब

मेम्बरान इस राज्ये श्री महद्राज सभाके कारोबारको दिलोजानसे ऐसी उम्दगी और इन्साफ़के साथ करेंगे, कि हमको तो निहायत खुशी हासिल हो और रअ्य्यतको आरामसे एकसा इन्साफ़ मिले, और मेम्बरानकी लियाक़त और कार्रवाई हमारे दिलपर रोज़ ब रोज़ नक्श होकर उन लोगोंपर हमारी मुहब्बत और मिहर्बानीका इज्हार हो. यह बात भी बख़ूबी याद रखनेके लाइक़ है, कि हमारी नज़र हरएक मेम्बरकी कार्रवाई पर ज़रूर रहेगी; अगर हम ज़ाहिरमें कुछ फ़र्मावें या नहीं. श्रीएकलिंगजीसे यही अ़र्ज़ है, कि इस राज्ये श्री महद्राज सभाको क़ाइम रखकर सब मेम्बरोंसे इन्साफ़ और उम्दह कामोंकी नामवरी करावें, और ज़ियादह क्या."
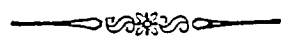
बाद इसके साहिब पोलिटिकल एजेएट बहादुर मुल्क मेवाड़ने भी खड़े होकर एक उम्दह तक़रीर फ़र्माई, जो नीचे दर्ज कीजाती हैः-

ऐ राज्येश्री महद्राजसभाके मेम्बरो !

"आज हम श्री महाराणा साहिबको इस राज्य श्री महद्राज सभामें वार्तालाप करते देखकर निहायत खुश हुए. बेशक श्री महाराणा साहिबकी नज़र इन्साफ़ और इस मुल्क के इन्तिज़ामपर है. सब मेम्बरानको लाज़िम है, कि श्री महाराणा साहिबकी ख़्वाहिश और हुक्मके मुवाफ़िक़ इस बड़ी अ़दालतकी कार्रवाई इन्साफ़के साथ अंजाम देकर उन को खुश और रिआ़याको आराम दें, जिससे उनकी तारीफ़ इस मुल्क और ग़ैर मुल्कोंमें हो और आप सबकी भी नामवरी हो".
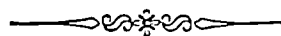
यह फ़र्माकर साहिब मौसूफ़ बैठगये, और राज्य श्री महद्राज सभाकी तरफ़से श्री हुज़ूरको मुख़ातिब करके एक शुक्रियह कविराजा श्यामलदासने मेम्बरोंकी तरफ़से पढ़ा, जो नीचे दर्ज कियाजाता हैः-

"श्री हुज़ूर, इससे बढ़कर और कौन वक्त शुक्रियह अदा करनेका होगा, कि जब हम देखते हैं, कि हमारे श्री हुज़ूर अपने राज मेवाड़के हम सब उमराव, सर्दार, अहलकार पासवान और रअ्य्यतके आराम और फ़ायदेके वास्ते कितनी तरहके बन्दोबस्त मुतअ़ल्लिक़ इन्साफ़ कैसी दिलेरीके साथ करते हैं, कि जो कुछ अभी श्री हुज़ूरने हम लोगोंकी हिदायतके लिये फ़र्माया वह हमने अच्छी तरहसे सुना, जवाब में फ़र्मांबर्दारीके साथ अ़र्ज़ करनेमें आता है, कि किसी कामको अच्छी तरहसे अंजाम देनेका क़स्द करना दुन्यामें बड़ा मुश्किल काम है, लेकिन् इतना तो बेशक है, कि हम लोग श्री हुज़ूरके

हुक्मके व मूजिब, जो काम हमारे ज़िम्मह किया गया है, वह हस्बुल हुक्म अंजाम देंगे; और श्री एकलिङ्गजी हम लोगोंकी मदद करके श्री हुज़ूरके फ़र्मानेके बमूजिब नामवरी हासिल कराकर इस भारी कामको नेकनामीके साथ अंजाम दिलावें. इसके अलावह यह हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि जो काम श्री हुज़ूर हम लोगोंके सुपुर्द करते हैं वह काम हमेशहसे ख़ास श्री हुज़ूरके ही करनेका है, लेकिन् यह श्री हुज़ूरकी बेदार-मग़ज़ी और इन्साफ़ फैलानेका नतीजह है, कि हम लोगोंको अपने पूरे भरोसे वाले ख़याल फ़र्माकर इतना मुश्किल और बड़ा काम हमारे सुपुर्द किया. बेशक जब मालिक बुद्धिमान और समझदार होते हैं, तब ऐसे बड़े बड़े इन्साफ़के काम ज़ुहूरमें आकर मुल्क और गैर मुल्कमें अपने खास मुल्ककी नेकनामी और शुह्रत फैलती है. श्रीएकलिङ्गजी ऐसे मालिककी .उम्र दराज़ करके हम लोगोंकी पर्वरिश मुहब्बत और मिह्र्बानीके साथ करावें.

इसके बाद सब मेम्बरोंने श्रीहुज़ूरको नज़ानह किया, और सेक्रेटरीने नीचे लिखीहुई इबारत पढ़कर सुनाईः-

शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा.

तुम प्रथम इष्टधर्मका ध्यान करके चित्तको आपसकी रू रिआयतसे हटाओ, किसी पर अपने लोभ व दूसरोंको अपने तरफ़दार बनाने व दग़ागत, अदावत, तरफ़दारी, व अपनी बेजा बातपर ज़िद, सुस्ती, अदमतवज्जुही वग़ैरह सबबोंसे ज़ुल्म और बे इन्साफ़ी मत करो, जो सलाह या तज्वीज़ गुप्त रखनी हो, प्रगट मत करो; ग़बन और रिश्वत जो कि बहुत बुरे और अख़ीरमें नुक्सान देनेवाले काम हैं, छोडकर अपनेको अद्ल व इन्साफ़पर क़ाइम कर यह श्री मदेकलिङ्गेश्वर और श्री मन्महिमहेन्द्र यावदार्यकुल-कमलदिवाकरके चित्र हैं सो ऊपर लिखे हुए मन्शासे स्पर्श करके स्वामिभक्तता पूर्वक, जो काम सुपुर्द कियागया है अंजाम देते रहो.
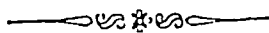
फिर राज्य श्री महद्राजसभाके सब अह्लकारोंका नज़ानह होकर श्री हुज़ूरने साहिब लोगों और मेम्बरोंको फूलोंके हार अपने हाथसे पहिनाये और जल्सह बर्ख़ास्त हुआ.

विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० ता० ११ शव्वाल = .ई० ता० १७ सेप्टेम्बर] को जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिसकी ख़बर तार द्वारा आने पर महाराणा साहिबको बहुत अफ़्सोस हुआ, और विक्रमी आश्विन कृष्ण ४ [हि० ता० १६ शव्वाल = .ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को दस्तूरके मुवाफ़िक़ मातमी दर्बार कियागया. हक़ीक़तमें महाराजा रामसिंहके दुन्यासे उठजानेके कारण राजपूतानहकी ताक़तमें ख़लल आगया, यदि उनका शरीर कुछ समय फिर क़ाइम रहता, तो महाराणा साहिब और उनकी दोस्तीका फल मिलना, याने राजपूतानहकी तरक़्क़ी होना संभव था.
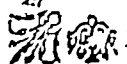
महाराणा साहिब विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २२ ऑक्टोबर] को उदयपुरसे मातमपुर्सीके लिये बग्घियोंकी डाक द्वारा जयपुरको रवानह हुए. ठाकुर मनोहरसिंह सर्दारगढ़का, रायसिंह शिवगढ़का, मामा बख़्तावरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास), महता राय पन्नालाल, राणावत उदयसिंह, महाराज प्रतापसिंह, राठौड़ एथ्वीसिंह, पुरोहित पद्मनाथ, जानी मुकुन्दलाल, बड़वा लखमीचन्द, धायभाई हुकमा और पाणेरी उदयराम, बाज़ बग्घियों और बाज़ घोड़ोंपर सवार साथ थे. उदयपुरसे रवानह होकर सर्दारगढ़ और आसींदमें मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १९ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २४ ऑक्टोबर] को ५ बजे नयानगरसे रेलपर सवार हुए और ८ बजे अजमेर पहुंचे. कमिश्नर साण्डर्सन साहिब स्टेशनपर पेश्वाईको आये, फिर ११ बजे रेल सवार हुए. कृष्णगढ़के स्टेशनपर महाराजा शार्दूलसिंह मए अपने भाइयोंके खड़े थे, महाराणा साहिबने उनसे मुलाक़ात करके लौटते वक़ ठहरनेका इक़ार किया. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० ता० २० ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २५ ऑक्टोबर] को सुब्हके ७ बजे जयपुर पहुंचे. मातमीके सबब पेश्वाई और तोपोंकी सलामीके लिये महाराणा साहिबने इन्कार करादिया था. शवरताके महलमें जयपुरके विद्यमान महाराजाधिराज सवाई माधवसिंह मातमी दर्बार किये हुए बिराजे थे. महाराणा साहिबने वहां पहुंचकर वैकुण्ठवासी महाराजा साहिबके देहान्तका बहुत अफ़्सोस किया और उनके सर्दार उमरावोंको तसल्ली देकर रामबाग़में पधारगये, जहां कि डेरा था. साढ़ा तीन बजे एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये. शामके वक़ महाराजा सवाई माधवसिंह खुद जाकर महाराणा साहिबको अपने महलोंमें लेआये. दस्तूरी दर्बार और २५ तोपोंकी सलामी सर हुई. उस दिन तो शोकके कारण महाराणा साहिब वापस अपने डेरोंमें लौट आये, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २६ ऑक्टोबर] को जयपुरके महलोंमें पधारगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २२ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को माजीके बाग़में ब्राडफ़ोर्ड साहिबसे मुलाक़ात की और शामके वक़ जयपुरके महलोंमें कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड और जयपुरके महाराजा माधवसिंह सहित महाराणा साहिबने सलाह मश्वरेकी बातचीत की. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १० [हि० ता० २३ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २८ ऑक्टोबर] को कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब अजमेर को रवानह होगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबने जयपुरसे कूच किया. महाराजा

सवाई माधवसिंह बड़े स्नेहके साथ स्टेशनतक पहुंचानेको आये. फिर कृष्णगढ़के स्टेशनपरसे महाराजा शार्दूलसिंह अग्रगामिता करके उन्हें अपने महलोंमें लेगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ३० ऑक्टोबर] को अजमेर, वहांसे बदनौर और सर्दारगढ़ मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ ज़िल्काद = ई० ता० २ नोवेम्बर] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. राजधानियोंमें इस तरहका वर्ताव और आमदोरफ़्त महाराणा साहिबकी अक़्लमन्दीसे शुरू हुआ. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० १२९८ ता० १ मुहर्रम = ई० ता० ४ डिसेम्बर] को एजेण्ट गवर्नरजेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब मामूली दौरा करते हुए उदयपुर आये. विक्रमी माघ कृष्ण ११ [हि० ता० २५ सफ़र = ई० १८८१ ता० २६ जैन्युअरी] को महता मुरलीधरके पौत्र और राय पन्नालालके पुत्र फ़तहलालके विवाहके निमित्त महाराणा साहिबको मए ज़नानी सवारियोंके पन्नालालने बड़ी धूमधामके साथ अपने मकानपर मिह्मान किया. महाराणा साहिबने फ़तहलालको पैरमें सुवर्ण भूषण और पन्नालाल व मुरलीधरको ख़िल्अ़त इनायत किये. कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब आबूसे विलायतको छुट्टीपर गये, इसलिये विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ८ [हि० ता० ७ रबीउस्सानी = ई० ता० ८ मार्च] को सी० के० एम वाल्टर साहिब उदयपुरसे क़ाइम मक़ाम एजेण्ट गवर्नरजेनरल होकर आबूको गये.

इसी वर्षमें भीलोंका बड़ा भारी बलवा हुआ, जिसका हाल इस तरहपर है, कि जब मुल्क मेवाड़की खानहशुमारी होनेका हुक्म हुआ और चन्द अहलकार पहाड़ी ज़िलेमें भीलोंकी खानहशुमारीके लिये नियत हुए, तो भील लोग, जो जानवरोंके मुवाफ़िक़ जंगली मनुष्य हैं, घरों व आदमियोंकी गिनती होनेके कारण कई तरहके ख़याल करने लगे. उनके पूछनेपर अहलकारोंने तो समझाइश करदी, लेकिन् दूसरे लोगोंने उनका गंवारपन देखकर हंसीके तौरपर कहदिया, कि बूढ़ी औरतें बूढ़ोंको, और जवान जवानोंको, मोटी लम्बी मोटे लम्बोंको और छोटी पतली छोटे पतलोंको दिलाई जायेंगी. ऐसी वाहियात बातोंपर उन जंगली मनुष्योंको विश्वास होगया, और दो चार हज़ार भीलोंने गांव जावदकी माताके मन्दिरपर एकट्ठे होकर हलफ़ (१) के साथ इक़ार करलिया, कि सब एकट्ठे होकर सर्कारी आदमियोंसे सामना करें. उसीके मुताबिक़ इन लोगोंमें तक़ार फैल रही थी,

---

(१) भीलोंमें हलफ़का यह क़ाइदह है, कि एक बर्तनमें पानीके साथ केसर घोलकर एक एक आदमी थोड़ासा पानी पीलेता है, और ज़मीनपर कुंडल बनाकर उसमें तलवार और तलवारपर अफ़ीम रखकर थोड़ी थोड़ी खालेते हैं.

कि बारहपालके थानेदार सुन्दरलालने जानी मुकुन्दलालको इस मत्लबकी रिपोर्ट लिखी, कि जमादार फ़त्हमुहम्मद जागीरदार मौज़े अजवदा, भीलान बारहपाल फले गूहरकी निस्वत ज़मीन दबानेका दावेदार है और उसने अपने सुबूतमें गमेती बड़ा रूपा व कुबेरा साकिन पडूनाको गवाह क़रार दिया है, इसलिये उक्त गवाहोंको गवाही देनेके वास्ते सवार अक्बरहुसैनको भेजकर बुलाया. तीसरे पहर सवार शाहमुहम्मद टीडीकी चौकी वालेने आकर मुझसे रिपोर्ट की, कि अक्बरहुसैन और भीलान पडूनासे कुछ तक्रार होगई है. इस ख़बरके मिलतेही मैं सवारान चौकी बारहपाल व टीडीको साथ लेकर मौक़ेपर रवानह हुआ, तब भीलोंने एकट्ठे होकर हमपर तीर चलाये, जो ऊपर होकर निकल गये. मैं भीलोंकी नटखटी देखकर आगेको न बढ़ा, लौटकर टीडीमें चला आया; वहांपर मुसाफ़िरोंकी ज़बानी मालूम हुआ, कि एक थानेके और दूसरे चौकीके सवारको तो भीलोंने क़त्ल करडाला; सुनाजाता है, कि ये लोग थानह बारहपालपर फ़साद करनेको एकट्ठे होते जाते हैं, इसलिये जमइयत भेजनी चाहिये.

यह रिपोर्ट विक्रमी चैत्र कृष्ण ११ [हि० ता० २५ रबीउस्सानी = .ई० ता० २६ मार्च] को दिनके १२ बजे जानी मुकुन्दलालके पास पहुंची, और उसी दिन शामके वक्त ख़बर मिली, कि बारहपाल, टीडी और पडूणाके भीलोंने एकट्ठे होकर बारहपालका थानह व चौकी जलादी, थानहदार और उसके हमराही सवार व पैदल सब मारेगये, भील तीन चार हज़ार एकट्ठे होरहे हैं. यह ख़बर सुनकर महाराणा साहिबने फ़ौजके कमांडिंग अफ़्सर मामा अमानसिंह और लोनार्गिन साहिब तथा मुझ (कविराजा श्यामलदास) को हुक्म दिया, कि पांच कम्पनी शम्भु और सज्जन पल्टनकी, एक रिसाला व पचास सवार बॉडीगार्डके और दो तोपें लेकर फ़ौरन् रवानह होजाओ. हम लोग रातके दो बजे उदयपुरसे रवानह हुए. रास्तहमें काया और बारहपालके बीच एक बुढ़िया औरत बुरे हाल पागलके मुवाफ़िक़ सामने मिली; उसने कहा, कि मैं गोवर्द्धन कलालकी औरत हूं, मेरे बेटे, बहू और बालबच्चे, थानहदार, सवार, सिपाही कुल मारेगये. हम लोगोंने उसको तसल्ली देकर उदयपुरकी तरफ़ भेजा. आगे बढ़े तो डाक बंगलेके क़रीब सड़कपर एक सिपाहीकी लाश मिली, जिसको उठवाकर चौकीके क़रीब पहुंचवाया. बारहपालमें जाकर देखा, तो कलालका घर, थानेका मकान और दूकानें जल रही थीं. थानेके क़रीब मुर्दह घोड़ोंकी कई लाशें मिलीं. उसीके क़रीब खेतमें एक कलालिन औरतकी लाश और डाकबंगलेके नज़्दीक थानेदार सुन्दरलालको मरा पड़ा पाया. हमने आमके दरख़्तके नीचे बैठकर मर्द व औरतोंकी लाशें एकट्ठी करवाईं, जो कुल १७ थीं. इसी अरसहमें एक झोंपड़ीमेंसे गोवर्द्धन कलालके बेटेकी

वह तीन चार वर्षके लड़केको गोदमें लिये हुए हमारे पास आई; उसके होश हवास ठिकाने नहीं थे. उस औरतके रीढ़की हड्डीपर कमरके क़रीब तलवारका ज़ख़्म था, और उसके बच्चेके पैरकी दोनों एड़ियां तलवारसे कटी हुई थीं. यह हालत देखकर हमको बहुत रहम आया. औरतकी ज़बानसे हे महाराज, हे महाराज, हे महाराज, यही आवाज़ निकलती थी. यह कलाल दस बीस हज़ार रुपयेकी जमा पूंजी रखता था, इसने चन्द महीने हुए दारूका ठेका लेकर दूसरे कलालोंकी दूकानें बन्द करवा दी थीं, इस सबबसे भील लोग उसपर जल रहे थे, और इसी कारण उसके घरको बर्बाद किया. यह औरत और बच्चा एक झोंपड़ीमें जाछुपनेके सबब बचगये. हमने औरतको पानी पिलाकर कुछ पूरी और तर्कारी दी, और उसकी बहुत कुछ तसल्ली की; परन्तु उसने रंजकी हालतमें कुछ न खाया, सिर्फ़ अपने बच्चेको खिलाया. उस औरतके कहनेसे उसके जलते हुए घरमेंसे पीतलका एक बर्तन निकाला गया, जिसमें पैसे और रुपये मिलाकर ५०) रुपयोंका माल था, और यह औरत व बच्चा पीतलके बर्तन सहित एक गाड़ीमें बिठाये जाकर उदयपुर पहुंचादियेगये. हिन्दुओंकी लाशें एकट्ठी कराईजाकर जलवादी गईं, और मुसल्मानोंकी दफ़्नाईगईं. हम लोगोंने डाक बंगलेमें डेरा किया, जहां हमको एक बूढ़ा चौकीदार मिला. उसने कहा, कि पडूना और बारहपालकी तरफ़से आकर दो तीन हज़ार भीलोंने थाने पर हमलह किया, उस हालतमें थोड़ी देरतक तो सिपाही और थानहदार मुक़ाबलह करते रहे, लेकिन् जब भीलोंने थानेमें आग लगा दी, तब सर्कारी मुलाज़िम भागकर पूर्वकी तरफ़ एक टेकरीपर जाचढे, और कुछ देर मुक़ाबलह करनेके बाद उदयपुरकी तरफ़ भाग निकले, परन्तु भीलोंने पीछेसे हमलह करदिया, जिससे वे सब मारेगये; फिर सब भील कलालके घरसे शराब पीकर पागल होगये. अगर कल सर्कारी फ़ौज आती, तो सैकड़ों भील गिरिफ़्तार होसक्ते. मुझको भीलोंने इस वास्ते नहीं मारा, कि यह टॉमस विलिअम साहिबका आदमी है, जिन्होंने सड़ककी मज़दूरीमें हज़ारों रुपये देकर हमारी पर्वरिश की थी.

हमारी फ़ौजके आदमी चारों तरफ़ फैलगये, और बारहपालके सैकड़ों घर जलाकर ख़ाक करदिये गये. जोगियोंके फलेके क़रीब भैरा गमेतीके घरपर दो सिंधी सवार ज़ख़्मी मिले, जिनको उस गमेतीकी औरतने बचाया था. हमारे साथ सिंधी जमादार फ़तहमुहम्मद और जमादार जानमुहम्मद, जमादार बहादुर और जमादार ख़ानमुहम्मद थे. वे दोनों ज़ख़्मी सवार जानमुहम्मदके रिसालेके थे, जिनको हमने उदयपुर पहुंचाया. भील लोग चारों तरफ़ पहाड़ोंपर फ़ाइरे, फ़ाइरे करते तथा किलकारियां मारते थे और जब फ़ौजके सिपाही नज़्दीक पहुंचते, तो भाग जाते. रातभर इसी तरह हल चल

मची रही और गोलियां चलती रहीं. विक्रमी चैत्र कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० २८ मार्च] को दिनभर भीलोंके घर जलाये गये, और उनपर फ़ौजका हमलह होता रहा, लेकिन् सघन झाड़ी और पहाड़ोंमें भीलोंके इधर उधर भागजानेसे कुछ मुक़ाबलह न हुआ. शामके चार बजे हमारे ऊंट चरते हुए झाड़ीमें दूर निकलगये थे, भीलोंने तीरोंकी चोटसे उनमेंसे दो को मारडाला. इसपर बिगुल हुआ, बिगुल होते ही हमारे सिपाही वहां जा पहुंचे, परन्तु भील लोग भाग गये. विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० २९ मार्च] को हम लोग यह सलाह कर रहे थे, कि भीलोंकी मवेशी और बाल बच्चोंका पता लगाकर हमलह करें. मैं रोटी खा रहा था, कि उसी वक्त एक सवार महाराणा साहिबका ख़ास रुक़ा लेकर आया, जिसका मत्लब यह था, कि अलसीगढ़, पई और कोटड़ाके भीलोंने भी बग़ावत की और कामदार धूलचन्द नागोरी तथा एक दो पुलिसके सिपाहियोंको मारडाला, उनपर भैंसरोड़गढ़के रावत् प्रतापसिंह, महाराज रायसिंह और मौलवी अब्दुर्रहमानख़ांको जमइयत देकर भेजा. इन लोगोंने दो भीलोंको मारकर सज़ा दी. भीलोंने केवड़ाकी नालकी चौकियां जला दीं; उस तरफ़ कुरावड़के रावत् रत्नसिंह, महता तख़्तसिंह व बाठर्डाके रावत्के बेटे मदनसिंह वग़ैरहको जमइयत देकर भेजा, उन लोगोंने भी बन्दोबस्त किया; तुम तीन रोज़से बैठे हुए हो, परन्तु अभीतक कुछ कार्रवाई नहीं की. परसाद गांवमें मगराके हाकिम महता अक्षयसिंहको चार हज़ार भीलोंने रोक रक्खा है, उसको मदद देना चाहिये. हम लोगोंको यह हुक्म पढ़कर बहुत रंज हुआ. मैंने रोटी खाना छोड़दिया, और उसी दम घोड़ोंपर सवार होकर आगे चले; दोनों तरफ़ ढोलकी आवाज़ व किलकारियां सुनाई पड़ती थीं, लेकिन् हमलहके वारमें वे लोग नआये. धूप ऐसी तेज़ थी, कि सवार और सिपाही घबरायेजाते थे; टीडीकी नदीपरके पहुंचकर घोड़े व आदमियोंने पानी पीया. इस मौक़ेपर मामा अमानसिंह और लोनार्गिन साहिबकी बहादुरी लाइक़ तारीफ़के थी, और चारों सिंधी जमादारोंकी हिम्मत भी कम न थी. मामा अमानसिंह घोड़ेसे गिरगया, जिससे उसके पैरमें सख़्त चोट आई, परन्तु उसीवक्त घोड़ेपर सवार होकर कहा, कि मुझको कुछ चोट नहीं लगी. हम लोग गधेड़ाघाटीमें पहुंचे, जहां भीलोंने दरख़्त काटकर रास्तह बन्द कररक्खा था, रास्तह साफ़ कराकर हम आगे बढ़े. उस तंग घाटीके दोनों ओरकी पहाड़ियोंपरसे हज़ारों भील तीर और बन्दूक़ोंसे मुक़ाबलह करने लगे. इधरसे भी फ़ाइर होते थे. हज़ारों तीर हमारे ऊपर गिरे, लेकिन् ईश्वरकी कृपासे किसीके ज़ख़्म न लगा. दो भील मारेगये, जिनकी लाशें वे लोग उठा लेगये. इस हमलहके बाद भील दूरदूरसे किलकारियां

करते नज़र आते थे. पडूणाकी दक्षिणी हदपर सिन्धी सवारोंने हमलह करके एक भीलका सिर काट लिया, जिसको परसादमें पहुंचकर एक दरख़्तपर लटकादिया. महता अक्षयसिंह सलूंबर और चामंडकी जमइयतके आजानेसे पहिले रोज़ जयसमुद्र चलागया. हमने परसादके मक़ामपर शामको सुना, कि श्रीऋषभदेवकी पुरीको ६-७ हज़ार भीलोंने घेर रक्खा है. कल मन्दिरको लूटकर सर्कारी मुलाज़िमोंको मारडालेंगे, और परसों खैरवाड़ेकी छावनीपर हमलह करेंगे. विक्रमी १९३८ चैत्र शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउस्सानी = ई० ता० ३० मार्च] के ५ बजे हम परसादसे आगेको रवानह हुए; नज़्दीककी पहाड़ियोंपर भील किलकारियां करने लगे, उनके तीर और हमारी गोलियां चलती थीं. लोनार्गिन साहिब, मामा अमानसिंह और मेरे (कविराजा श्यामलदासके) हाथसे ६ भील मारे गये, लेकिन् उनकी लाशें वे उठा लेगये. पीपलीकी पालके क़रीब एक बड़े पहाड़की जड़में छापा मारनेकी ग़रज़से झाड़ी और पत्थरोंकी आड़में १०० या २०० भील हथियारबन्ध छुपरहे थे, हमारे एड्वांस गार्डके २० सवार मए दयालाल चोंडेनाके फ़ौजसे एक मील फ़ासिलहपर आगे जा रहे थे; भीलोंने उनपर हमलह किया. लेकिन उन्होंने बिगुल दिया, जिसकी आवाज़ सुनतेही मए पल्टन और रिसालहके हम लोग पहुंचगये. इस धावेमें क़रीब २० या २५ भीलोंके सिर काटगये, जिनमें खरवड़के गमेतीका लड़का और दूसरे भी २-३ मशहूर भील मारे गये. इसी जगहसे सख़्त लड़ाई शुरू हुई, दोनों तरफ़के पहाड़ोंपरसे भीलोंकी किलकारियां, तीरों की बारिश और बन्दूक़ोंके फ़ाइर होते थे. हमारी तरफ़से भी बन्दूक़ोंकी बाढ़ झड़ रही थी, लेकिन सिवा सड़कके दोनों तरफ़की पहाड़ी व झाड़ीमें फ़ौजका हमलह होना दुश्वार कठिन था. मेरे घोड़ेके आगे एक सिपाही चला जाता था, उसके पैरकी पिंडली में गोली लगी. मैंने उसको ऊंटपर चढ़ाया. एक बंजारा, जो हमारे साथ आरहा था, उसकी गर्दनमें एक तीर लगा और किसीका कुछ नुक्सान न हुआ. ईश्वरकी कुदरतको देखना चाहिये. कि हमारी फ़ौजमें इतने तीरोंकी बौछाड़ आती थी. कि फ़ौजके कई आदमियोंने चुन चुन कर अपने पास मुठे बांध लिये. इस हमलहमें हमारी फ़ौजके अफ़्सरों और सिपाहियोंकी दिलेरी लाइक़ तारीफ़के थी. जमादार वज़ीरखां मेरे मना करनेपर भी घोड़ेसे उतर उतर कर भीलोंपर बन्दूकके फ़ाइर करता था; लोनार्गिन साहिब व मामा अमानसिंह दोनोंके आगे पीछे बड़ी बहादुरीके साथ सिपाहगरी और हिफ़ाज़त करते जाते थे. इन्हीं दोनों अफ़्सरोंकी हिदायत और फ़ौजको तर्तीबवार लड़ानेसे दुश्मनोंका नुक्सान और हमारी हिफ़ाज़त रही. चारों सिन्धी जमादारोंने भी बढ़ बढ़कर बहादुरी दिखलाई. इस मुक़ाबलहमें क़रीबन तीस पैंतीस भील मारेगये, लेकिन उनकी

लाशोंको उनके साथी लोग उठा लेगये. इसके बाद हम लोग ऋषभदेवमें पहुंचे, उस वक्त वहांके सर्कारी मुलाज़िम और पुजारियोंको नई जान मिलनेकी खुशी हुई. २००० भीलोंने पूर्वी तरफ़से शहरपर हमलह किया, दयालाल चोंईसा ५० सवार लेकर पहुंचा, २ भील मारेगये, और बाक़ी भाग गये. हम लोगोंने मन्दिरके बचावके लिये शहरमें डेरा किया; कुल फ़ौजको उस दिन सर्कारकी तरफ़से खाना दियागया. रातभर ७ या ८ हज़ार भील चारों तरफ़ किलकारियां करते रहे. तीन रोज़तक इस तरह भीलोंका ग़लबह रहा. मैं इस कोशिशमें था, कि किसी तरह यह बलवह दबाया जावे. इन भीलोंमें बड़ा सरगिरोह बीलककी पालका नीमा गमेती और दूसरे दरजहपर पीपलीका खेमा और सगतड़ीका जोयता थे. चौथे रोज़ श्री ऋषभदेवके पुजारी खेमराज भंडारीने कहा, कि हुक्म हो, तो मैं इन लोगोंको समझाइश करूं. मैं तो दिलसे चाहता ही था, उसको इजाज़त दी. खेमराजने बीलकमें जाकर भीलोंको समझाया, क्योंकि भील लोग श्री ऋषभदेवके मन्दिर और पुजारियोंपर भरोसा रखते हैं, इसवास्ते उनकी समझाइश मानकर कुछ रुकगये. इस अरसहमें कागदर और ढणकावाड़ाकी पालवाले गमेती मुझसे आमिले, जो बीलक वालोंसे अदावत रखते थे, उनको तसल्ली देनेसे कागदर वालोंने ऋषभदेव और खैरवाड़ाके बीचका रास्तह खोल-दिया, जिससे यह फ़ायदह हुआ, कि गुजरात और सूरतके जो २०० या ३०० यात्री रुके हुए थे, उनको रवानह करदिया; फिर भीलोंसे सुलहकी बात चीत होने लगी. इसी अरसहमें मैं खैरवाड़े जाकर टेम्पल साहिबसे मिल आया. उन्होंने अपनी फ़ौजके चार भील अफ़्सर भीलोंको समझानेके लिये मेरे पास भेजदिये. उन लोगोंने भी बहुत कुछ समझाइश की, जिससे उदयपुरकी डाक और रास्तह जारी होगया. भीलोंने २४ क़लमें अपने उज़ोंकी पेश कीं, जिनमेंसे १५ को तो मैंने उन्हें समझाकर रद करदिया और ९ मन्ज़ूरीके लिये उदयपुर भेजीं, जिसके जवाबमें मेरे नाम महाराणा साहिबका ख़ास रुक्का व महता राय पन्नालालका काग़ज़, जिसके साथ उन क़लमोंकी फ़र्द मए मन्ज़ूरीके थी, आया, जिनमेंसे ख़ास रुक्के और महता पन्नालालके काग़ज़की नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती हैः—

खास रुक़्क़हकी नक़्ल.

श्रीमदेकलिङ्गेश्वरो जयति.

खानगी.

कविराजा श्यामलदासजी,

॥ थांरी अरजी आई, जवाब न आवारी लीखी, सो सायत आजतक मैं काल परसुंरी.

लिषी चिठ्यां मांरी पहुंच गई होवेगा. अब ज्यो थांरा पाना २, एक २४ को, दुजो वांमेंसूं ९ कलमां छांट भेजी ज्यो मए अरजी, जींमेंकी ६ बाबत थांरी राय है, पहुची; हो सक्यो जत्री जलदी कर राय सोच, लिषवामें आवे है; ९ कलम तो वी ज्यो थां न्यारी टाल भेजी, और १ ज्यो कलम धूलेवकी लागतकी बाबत जींपर थां (अरज) अस्यो निसान कियो ज्या, और १ माफी कसूर, जुमले ११ ही कलमांरो हाल विस्तार सुं वास्ते पूरी वाकबी होजावाके पन्नालालजी तीरांसुं जो कागद लिषायो है वींसु वाकिफ होय अमल करोगा; और वातां तो सब मंजूर मंजूर, ई तरे राय तलब सूं हे, सीरफ़ कसूर माफीमें ज्यो एक दोय राय लिषी है वांने आछयां सोचज्यो; क्योंके कुछ न कुछ हुवा बगेर आयंदा तकलीफ रहे, ईं वास्ते कसूर तो माफ करणोईज हे, पण जुरमानारो — — आगे सूं भी रिवाज है.

महता राय पन्नालालके काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

कविराजाजी श्री श्यामलदासजी,

आपकी अरजी श्री जी हुज़ूर दाम इक्बालहूमें चेत सुद १२ मय गमेत्यां की अरजी वा आपकी रायकी ९ कलमकी फरद सुदां आई, अर मुष बात बड़ी पडूणा, बारापालका कसूर माफीकी लषी, सो बेशक या बात विचारके काबिल है, सो ईंपर श्री जी हुज़ूर गोर फरमाय हुकम फरमायो जीं माफ़क आपने लिषूं हूं, के यो कसूर माफीके काबिल नहीं हे, प्रंत ईं वलवाने रफे करवाके वास्ते ईंमें अत्री सुरतां सुं तेह करणो ठीक है. अगर मुमकिन वे वाने समजाया जावे, के यो कसूर अस्यो छोटो नहीं है, के माफ करदियो जावे, बलके ईं कसूरके एवज ज्यानकीज सजा होवो जरूर हो, प्रंत थे सारा लोग अरज करो हो, तो थांने रय्यत समज जुरमाना प्र अर आयंदाके वास्ते मुचरको कुल पालां वालाको नीचे लष्या मुजब पेस होवा प्र होसके. मुचलको ईं मजमूनसुं गमेती लोग कुल पालांरा लषे, के पडूणा, बारापालरो कसूर माफीकी मां अरज करी, सो पावंदी फरमाय ज्यानकी सजाको कसूर हो सो जुरमाना की सजापर माफ फरमायो, सो तो प्रवरसके साथ है; अब आयंदे कसूरवारके वास्ते

मदत करां नहीं, एकट कर कसूरवारने बचावां नहीं, बलके कोई पालवाला कसूर करेगा, तो मे चाकरीमें हाजर रहे कसूरवारने सजा देवामें हुकमकी तामील करांगा.

ओर जुरमानो अस्यो वेणो चावे, के जींमें वांकी बीलकुल खराबी नहीं होयजावे, याने हेसीयत माफक होवे, जींमें राजकी हुकुमत रहे, वांने इबरत होयजावे जीं अंदाज सुं होवे; सो ईंने विचार आप ई वातको अषत्यार समज तजवीज करदेवे. वसुली मवेसी वा रोकडसुं लीजावे. अगर या मुमकिन नहीं हो, तो कुल पालांरा गमेती अठे आय श्री जी हुजूरमें दस्तवस्ता माफी कसुरकी मांगे, तो वीं बखत मुनासब हुक्म, याने आयंदाके लिये हीदायतका तोरपर हुकमके साथ रुबरु माफ कीयोजावे, ओर आयंदाके लिये मुचलको भी लीयोजावे.

जुरमानापर भी पलल नहीं वे सके, ओर अठे भी हाजर होवाकी सुरत नहीं होवे, तो भी यो कसुर ई तरेही तो माफ नहीं वे, के मांकी अरज सु माफ हुवो, याने कसुर माफ होवो अेक आसान अे लोग समजे, अर यूं जाणलेवे के यो कसुर परवरससे माफ हुवो हे. जींतरे होवे जींमे रोब ओर आयंदाके लिये ईबरत बणी रहेवे. पआलमें या वात आवे हे, के साअत कसुरवार पालांपर जुरमाना कबुल करलेवे.

फौज जावे जद जुरमानो देवे ही है, अर यो रवाज भी है, सो आगला रवाजसुं भी पालां वालाने आछां समजायस करणी, क्योंके वां भी तो सारी कलमां सदीवरी पेश कीदी, तो या भी सदीव कीज काररवाई है; अवारकी काररवाई सु तो ज्यान की एवज ज्यान लेवा कीज सजा होवे है, सो माफ करी जावे है; अर या नहीं जचे अर अठे आवाकी जचे अर वचन पात्री चावे, तो वे सके जो मुनासव वचन पात्री करदेवे, अठे आवाअ दस्तवस्ता श्री जी हुजुरमें अरज कर वापस माफ होजावेगा. या नहीं होवे, तो तीसरी वात मुचरको आइंदाके लिये मजबूत अलग अलग पालको लेकर माफ करणो ठीक हे. अगर यांमेंसु कोई सुरत नहीं निकले अर यूंही माफ कीदो-जावे, तो आयंदा यांने होसलो रहेगा, जींरी तकलीफ दिकत नहीं मिटेगा, जींसु ईंकी कोसिस करे अर ज्यो वात तह पावे, जलदी खवर लपे. ईंके साथ अब या भी आपने लपदी जावे है, के यां सुरतांअ तेह नहीं पावे अर पाली माफी कसुरहीज करणो पडे तोभी आपने अपत्यार है, जस्यो मोको मुनासव होवे अर साथ रोबके वे. लोग यो कसूर माफ वेणो आसान समझ आइंदा ष्याल रापे जीं रीतसु माफ होवाकी पक्की जवान दे देवे, अर अठे लपभेजे सो प्रवानो भेजदीयो जावेगा; और २४ कलमांमें सु ९ कलमां आप छांटकर भेजी सो ठीक हे, वे कावील मंजुरी केईज है, सो मंजुर ही फरमाई, ना मंजुरीके काविल ही ज्यो आप कोशिश कर टाल ही दीदी. एक बिलककी

बोलाईकी कलम फेर दरज कर इग्याराही कलमांरो पानो भेज्यो है, इग्यारामें माफी कसूरकी कलमको जवाव ई चिठीमें लप्यो हे, वाकी कलमांरो हुकम पानासुं मालुम होवेगा. अब यो मजमून भी आप देखलेवे, अर माफी कसुरकी जीं त्रे तेह पावे वींकी आप लप-भेजे, सो वीं मुजव प्रवानो भेजदियोजावे, अर दुजी कलमांके लिये प्रवानाका मजमुनमें कम वेस तुले, तो वींकी भी लपेगा, सो वीं मुजव प्रवानो भेजदियो जावे, देरी नहीं वे; मुप ज्यादा खयाल फसाद आगे फेलवाको हे, सो ज्यांतक होसके जलदी नकी कर जवाव लपेगा, सरफ माफी कसुरकी वड़ी वात हे; अर ईमें ऊपर लिपी वातांकी कोसीस वेणो जरुर समज सारो हाल लप्यो हे, सो ईमें कोसिससुं कोई वात तेह पाय जावे, तो वीं माफक प्रवानामें लिपी जावे, ई सवव प्रवानो नहीं भेज्यो गयो, मसुदो कलम कलम रा हुकम रो भेज्यो हे, आप वेसक ई माफक जवान देवेगा. मतलव यो हे के वडी कलम कसुर माफीरी हे, ऊप्र लपी हुई दो तीन सरतांपर ते वेणी चावे, अर यो आप खयाल रपावे, के मुचरको ऊप्र लप्या मजमुनको तो हरएक सरत ज्यो ते पावे जींरे ही साथ लेणो जरूर हे, अर दो सरतां लपी ज्यांमेंसूं कोई तेह नहीं पावे, तोभी मुचरको तो ऊपर लप्यो जीं तरे लेणो जरुर हे सो लेलेवेगा, क्युंकि वे जवानी इकरार तो कम्पूरवारने मदत नहीं देवाको वा अकट नहीं करवाको करही चुका हे, सीरफ़ तहरीर में लेणो सो लेलेवेगा. अगर अठासुं मजमुन लप्यो जींमें कम वेस तुले तो कम वेस करलेवेगा, परन्तु मुचरको आयंदाके वास्ते जरूर लेवे. कुल पालां वारारो ईमें हरज रेहवामें आगाने दिकत ज्यादा मालम देवे हे, जींसुं वीस्तार लपी हे, सो उमेद हे के आप ईमें आछां कोसिस करेगा, अर श्री जी हजुरको रुको ई साथ भेज्यो हे पास दसपतांको, सो वींका मुतलवने आछां समम्क हुकम मुजव तामील कर जवाव जलदी भेजसी, सं० १९३७ चेत सुद १३, ता० १२ अपरेल सन् १८८१ ई० रातकी दस वज्यां लप्यो. द० रा० पनालाल.

मैं उन ११ कलमोंकी बाबत, जिनका ज़िक्र ऊपरके काग़ज़में लिखागया है, भीलोंसे बातचीत और समझाइश करने लगा. एक दिन मैं और मामा अमानसिंह लश्करसे थोड़ी दूरपर अकेले जाकर भीलोंसे मिले, और बीलकके गमेती नीमा व पीपलीके खेमाको बहुत कुछ समझाया, लेकिन् उस वक्त हज़ार डेढ़ हज़ार भील मौजूद थे, उनमेंसे बाज़ बाज़ सुलहको नापसन्द करके लड़ाई करनेके लिये जहालतसे बोल उठते थे; तब गमेती लोग उनको समझाइश करते. कोई बकता था, कि दर्बार हमको न मारें, तो हम फ़िरंगियोंको मुल्कसे निकाल देवें. तब मैंने उन

जानवरोंको समझाया, कि फ़िरंगी लोग बड़े ज़बर्दस्त और श्री दर्बारके मित्र व मददगार हैं, इसलिये तुमको उनकी निस्बत ऐसा ख़याल नहीं करना चाहिये. फिर शाम होगई और भीलोंकी सर्कशी देखकर जमादार जानमुहम्मद, फ़त्हमुहम्मद, ख़ानमुहम्मद और वज़ीरख़ांने मुझको इशारेसे कहा, कि अब अंधेरेमें इन लोगोंके बीच ठहरना अच्छा नहीं. हम उठकर अपने लश्करमें चले आये. इसी तरह हमेशह समझाइश करते थे, लेकिन् वे जानवर हर रोज़ कोई न कोई नई बात ले उठते. आख़िरकार विक्रमी १९३८ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १२९८ ता० १९ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८८१ ता० १९ एप्रिल] को उदयपुरसे कर्नेल् ब्लेअर साहिब फ़र्स्ट असिस्टैंएट पोलिटिकल एजेंएट मेवाड़, छावनी खेरवाड़ा बटालिअनके कमान अफ़्सर और विंगेट साहिब मेवाड़के सेटलमेंएट ऑफ़िसर दोनों आपहुंचे. ब्लेअर साहिब भीलोंको समझानेके लिये जानेलगे, तब मैंने भीलोंकी कमअक़्ली और जहालत बयान करके उन्हें मना किया, लेकिन् वे किसीको साथ न लेकर अकेले चलेगये. एक पहाड़पर तीन चार हज़ार भील एकट्ठे होरहे थे, साहिबको दूरसे रोककर कहा, कि तुम दिल्ली वाले हो चलेजाओ, हमारे मालिक श्री दर्बार हैं, उनके भेजे हुए हाकिम आये हैं उन्हींसे हम बात चीत करेंगे. तब साहिबने बड़ी नर्मीसे एक दो गमेतियोंको पास बुलाकर कहा, कि हम तुम्हारी सब तक्लीफ़ मिटादेंगे, और वे तक्लीफ़ें कौनसी हैं सो कहो. तब उन्होंने पहिले ज़मानहके मुवाफ़िक़ आज़ादी हासिल होने, जमादार बालगोविन्दका नियत किया हुआ बराड़ मुआफ़ किये जाने और हालमें ख़ानहशुमारी व ज़मीनकी पैमाइश कीजाना मौक़ूफ़ रखनेके लिये बहुत कुछ कहा. साहिबने उनको तसल्ली दी, कि हम महाराणा साहिबके अफ़्सरोंसे कहकर तुम्हारी तक्लीफ़ मिटादेंगे. फिर डेरोंमें पहुंचकर साहिबने मामा अमानसिंहको और मुझको बुलाकर कहा, कि भीलोंको बराड़के रुपये देनेमें उज़्र है, और ख़ानहशुमारी वगैरहसे उनको तक्लीफ़ नहो, इस बारेमें पत्थरपर खुदवाकर एक सुरह ऋषभदेवके पास गड़वादीजावे; तब मैंने बराड़के लिये बहुत बहस की. ईसपर साहिबने कहा, कि देखो जी यह भीलोंकी बगावत बहुत दूर दूर तक फैलगई है, जो राजकी फ़ौजसे नहीं दबेगी और गवर्मेंएटकी फ़ौज बुलाई जायेगी. यह याद रखना चाहिये, कि सर्कारी फ़ौजका आना रियासतके लिये अच्छा न होगा, और बराड़ तो जमादार बालगोविन्दने इन लोगोंपर लगाया है. तब मैंने जवाब दिया, कि गवर्मेंएट अंग्रेज़ीसे पहिले १३५० वर्षतक इन लोगोंपर श्री दर्बारकी हुकूमत रही है, यदि हम लोग इनको दबानेकी ताक़त न रखते, तो ये लोग महाराणा साहिबके ज़ेर हुक्म किस तरह रहते. तब साहिबने झुंझलाकर कहा, कि आज शामतक आप उनको समझालो, वर्नह कल हम मुनासिब फ़ैसलह करेंगे, क्योंकि इस बग़ावतसे गवर्मेंएट और ग़रीब

रिआयाका बहुत नुक्सान है. हम दोनों अपने डेरोंमें आये, और गमेती भीलोंको बुलाकर श्री ऋषभदेवकी पुरीके बाहिर एक टीलेपर मैं और मामा अमानसिंह कुर्सियोंपर जा बैठे, क़रीबन् १०० से ज़ियादह गमेती लोग हमारे गिर्द आ बैठे, और ६ - ७ हज़ारके लगभग भील पासवाली पहाड़ियोंपर एकत्र होगये. मैंने भीलोंको समझाइश करना शुरू किया. यक़ीन था, कि मुआमलह तय होजाता, लेकिन् शहरके महाजन लोगोंका बहुतसा हुजूम एकट्ठा होगया, इसलिये मैंने ललकारकर अपने आदमियोंसे कहा, कि इनको हटाओ, और वे लोग एक दम उठभागे. यह देखकर शराब पीये हुए एक भीलने जाना, कि गमेतियोंपर दग़ाबाज़ी हुई, और उसने बन्दूक़ चलाई, जो हमारी पल्टनके एक सिपाही के पैरकी पिंडलीमें आलगी. गोली लगतेही सिपाहियोंने भीलोंपर फ़ाइर शुरू करदी; गमेती लोग उठ भागे. एक गमेतीने तीर खींचकर मेरी छातीमें मारना चहा, लेकिन् नठारा के गोकलिया भीलने छीनलिया, जिसको मैंने सलूंबरवालोंकी क़ैदसे छुड़ाया था. इस हुल्लड़से सुलहकी एवज़ एकदम लड़ाई फैलगई, और साहिब लोग घोड़ोंपर सवार होकर तने तनहा खैरवाड़ाको भागे. भीलोंने उनके डेरोंमेंसे कुछ सामान लूटलिया. तब हमने एक कम्पनी और ५० सवार भेजे, जो उनका बचा हुआ सामान और अमलेके लोगोंको लेआये, रातभर हल्ला गिल्ला होता रहा. कर्नेल् ब्लेअरने तार देकर बम्बईसे अंग्रेज़ी फ़ौज तलब की, और एजेएट गवर्नर जेनरल कर्नेल् वाल्टरको लिख भेजा, कि राजकी फ़ौजने भीलोंके साथ दग़ाबाज़ी की; और भीलोंको ख़त लिख भेजे, कि राजके अफ्सरोंने तुम्हारे साथ दग़ाबाज़ी की, इसलिये अब हम तुम्हारे मददगार हैं. इस नाज़ुक हालतको देखकर मुझे बहुत रंज हुआ, क्योंकि मरने और लड़ाई करनेकी तो कुछ फ़िक्र न थी, लेकिन् अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी मध्यस्थताके समय ऐसा होनेसे रियासती हुकूक़में ख़लल आनेका ख़ौफ़ था; चारों तरफ़ हज़ारों भील वावैला कर रहे थे. दूसरे रोज़ धूलेव (श्री ऋषभदेवकी पुरी) के बनियोंने भीलोंके पास जाकर उन्हें समझाइश की, तब मैंने मस्लिहत समझकर आधा बराड़ (सर्कारी ख़िराज जो पालोंपर सालियानह लगता है) छोड़ना और ख़ानहशुमारीसे आइन्दह उनको तक्लीफ़ न होना पत्थरमें खुदवा-देनेकी दर्ख्वास्त मन्ज़ूर की. उसी वक़ वे लोग चुपचाप होगये, और अपने पटवारियोंसे एक अर्ज़ी श्री महाराणा साहिबके नाम और दूसरा काग़ज़ कर्नेल् ब्लेअरके नाम इस मज़्मूनका लिखाभेजा, कि इसवक़ जो लड़ाई शुरू होगई उसमें राजके अफ्सरोंकी तरफ़से किसी तरहकी दग़ाबाज़ी नहीं हुई, हमारी तरफ़के शराब पीये हुए एक भीलने नशेकी हालतमे गोली चलादी थी, जो एक सिपाहीके फिर मैंने भीलोंको पैरमें जा लगी, इस सबबसे फ़ौजकी तरफ़से भी गोलियां चलने लगगईं.

कहलाया, कि तुम सुलहका नज्ज़ानह करनेको यहां मत आओ, हम वहां आवेंगे, क्योंकि फ़ौज के सिपाहियों व भीलोंकी जहालतका खौफ़ था. मामा अमानसिंह और मैं दोनों एक माइल के फ़ासिलहपर जाकर भीलोंसे मिले. उन सब गमेतियोंने आकर हमको नज्ज़ें दिखलाईं, उसवक़ बिल्कुल अम्न होकर रास्तह व डाक जारी होगई. मैंने भीलोंकी तसल्लीके लिये सुरहका पत्थर खुदवाना शुरू करदिया, और मंजूरीके लिये अर्ज़ी लिखकर दयालाल चोंईसाको उदयपुर भेजा. दूसरे रोज़ मैं चालीस सवार लेकर खैरवाड़ा मक़ामपर ब्लेअर साहिबसे मिलनेको गया. छावनीमें बड़ी घबराहट मच रही थी, मेरे जानेसे लोगोंको कुछ तसल्ली हुई. साहिबने घबराकर डूंगरपुरके रावल उदयसिंहको भी मददके लिये वहां बुलालिया था. मैं साहिबके पास गया, इसवक़ वह बहुत गुस्सेमें थे, लेकिन् कुल कार्रवाई और भीलोंके काग़ज़ दिखलानेसे चुप होगये. फिर मैं वापस धूलेवको चलाआया. फ़ौजके सिपाहीका किसी भीलके घरमें घुसजाना और कुछ चीज़ जब्रन लेआना वग़ैरह कार्रवाइयोंसे मामा अमानसिंहकी और मेरी यह राय हुई, कि अब अम्न क़ाइम होगया है, इसलिये फ़ौजको उदयपुरकी तरफ़ रवानह करदेना चाहिये. विक्रमी वैशाख कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २४ एप्रिल] को फ़ौजका मक़ाम परसादमें हुआ और मामा अमानसिंह और मैं धूलेवमें ठहरगये, जहां कुल गमेती लोग हमारे पास आये. ऋषभदेवमें बैठकर हमने उनकी तसल्ली की, और मन्दिरका बन्दोबस्त करके हम भी शामको परसादमें आपहुंचे. इस मक़ामपर दयालाल चोंईसा उदयपुरसे मन्जूरीके काग़ज़ात और भीलोंके नाम तसल्लीके पर्वाने लेकर आया, जिनको भील लोगोंकी तसल्लीके लिये पालोंमें भेजकर विक्रमी वैशाख कृष्ण १२ [हि० ता० २५ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २५ एप्रिल] को हम उदयपुर चले आये. उदयपुरमें अक्सर सर्दार उमराव और उनकी जमइयतें मौजूद थीं, लेकिन् सुलह होजानेके कारण उनको रुख्सत देदी गई. कर्नेल् ब्लेअर साहिबके लिखनेसे वाल्टर साहिबने शम्भुनिवासमें एक कोर्ट की, जिसमें महाराणा साहिब, कर्नेल् वाल्टर, डॉक्टर स्ट्रैटन रेज़िडेण्ट मेवाड़, और विंगेट साहिबने बैठकर मुझको वहां बुलाया. वाल्टर साहिबने कुल लड़ाईका हाल उलट पलट सवालोंके साथ दर्याफ्त किया, लेकिन् हमारी कार्रवाई दुरुस्त होनेके सबब किसी क़िस्मकी खामी न निकली. इसके बाद विक्रमी वैशाख कृष्ण १४ [हि० ता० २७ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २७ एप्रिल] को कर्नेल् वाल्टर आबूको चले गये. महाराणा साहिबने इस कार्रवाईसे खुश होकर मुझको दोनों पैरोंमें सुवर्णके दोहरा लंगर इनायत किये.

विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = ई० ता० १ मई] को

२८- देलवाड़ाके राज फ़त्हसिंहका पुत्र ज़ालिमसिंह.

२९- मेजाके रावत् अमरसिंहका पुत्र राजसिंह.

३०- पारसोलीके राव रत्नसिंहका पुत्र देवीसिंह.

३१- करजालीके महाराज सूरतसिंहका पुत्र हिम्मतसिंह.

३२- शिवपुरका रायसिंह.

३३- बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंहका पुत्र अक्षयसिंह.

३४- काकरवाका राणावत उदयसिंह.

३५- मंगरोपका बाबा गिरवरसिंह.

३६- गुड़लांका बाबा शेरसिंह.

३७- पहूनाका राणावत जोधसिंह.

३८- गाडरमालाका बाबा केसरीसिंह.

३९- मुरोलीका भाटी शिवनाथसिंह.

४०- दौलतगढ़का नवलसिंह.

४१- साटोलाका रावत् तख़्तसिंह.

४२- बसीका वैरीशाल.

४३- मंडप्याका बाबा चत्रसिंह.

४४- कूंचोलीका राणावत् इन्द्रसिंह.

४५- आगरयाका राठौड़ सर्दारसिंह.

४६- रख्यावलका केसरीसिंह.

४७- हरणेईका राठौड़ प्रतापसिंह.

४८- राठौड़ पृथ्वीसिंह.

४९- तीरोलीका बाबा भोपालसिंह.

५०- बोरजका खेड़ाका चहुवान भैरवसिंह.

५१- मामा बख़्तावरसिंह.

५२- मामा अमानसिंह.

५३- आर्ज्याका चावड़ा प्रतापसिंह.

५४- चांपावत नारायणदास, जयपुरके चांपावत ज़ोरावरसिंहका पुत्र.

५५- चांपावत फ़त्हसिंहका पुत्र गुमानसिंह.

५६- कोल्यारीका शक्तावत रणजीतसिंह.

५७- श्यामपुराका प्रतापसिंह.

५८- कालाकोटका चूंडावत रूपसिंह.

५९- जीवाणाका राणावत केसरीसिंह.

६०- मदारयाका शक्तावत मेघसिंह.

६१- दिवालाका राठौड़ गुलाबसिंह.

६२- सालेराका चहुवान गिरवरसिंह.

६३- बोरजका चहुवान बख़्तावरसिंह.

६४- चहुवान लछमणसिंह.

६५- बावळासके महाराजका पुत्र भोपालसिंह.

६६- ताणाके राज देवीसिंहका पुत्र अमरसिंह

६७- जरखाणाके बाबा जशवन्तसिंहका पुत्र मदनसिंह.

६८- ईंटालीके राठौड़ ईशरदासका पुत्र एकलिंगदास.

६९- खेराबादके बाबा जोधसिंहका पोता बाघसिंह.

चारण.

१- कविराजा श्यामलदास. २- बारहट रामसिंह. ३- आड़ा रामलाल.

४- दधिवाड़िया चमनसिंह. ५- बारहट चंडीदान. ६- महियारिया मोड़सिंह.
७- बारहट कृष्णसिंह. ८- उज्वल फ़तहकरण. ९- राव बख़्तावर.

अह्लकार, पासवान व धायभाई वग़ैरह.

१- महता राय पन्नालाल. २- कोठारी बलवन्तसिंह.
३- सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह. ४- महता विठ्ठलदास.
५- महता मुरलीधर. ६- महता तख़्तसिंह.
७- महता लालचन्द. ८- कोठारी मोतीसिंह.
९- महता गोपालदास. १०- महता माधवसिंह.
११- पुरोहित पद्मनाथ. १२- सेठ राय शमीरमल्ल अजमेरका.
१३- सेठ जवाहिरमल्ल. १४- महता लछमीलाल.
१५- महता देवीचन्द. १६- कायस्थ प्राणनाथ.
१७- महासाणी रत्नलाल. १८- पंड्या मोहनलाल.
१९- पण्डित ब्रजनाथ. २०- जानी मुकुन्दलाल.
२१- मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां. २२- डॉक्टर अक्बरअली.
२३- मुन्शी अलीहुसैन. २४- पंडित वंशीधर.
२५- पांडे किशोरराय. २६- पंडित भवानीनारायण.
२७- जंगलातका अफ़्सर विष्णुसिंह. २८- पुरोहित सन्तोषलाल.
२९- देपुरा रघुनाथसिंह. ३०- मुन्शी मुईनुद्दीन.
३१- पाणेरी उदयराम. ३२- बड़वा लखमीचन्द.
३३- पुरोहित उदयलाल. ३४- पुरोहित सवाईलाल.
३५- महता अर्जुनसिंह. ३६- धायभाई बख़्तावर.
३७- ज्योतिषी मुकुटराम. ३८- ज्योतिषी गणेशराम.
३९- ज्योतिषी रघुनाथ. ४०- ज्योतिषी जीवनराम.
४१- पंडित सुब्रह्मण्य शास्त्री. ४२- पाणेरी गिरधरलाल.
४३- चौईसा हीरालाल. ४४- चौईसा पुरुषोत्तम.
४५- चौईसा राखीलाल. ४६- साह ज़ोरावरसिंह सूराणाका पुत्र दौलतसिंह.
४७- भंडारी शिवलाल. ४८- कायस्थ कुन्दनलाल.
४९- ख़वास शिवराज. ५०- धायभाई हुक्मीचन्द.
५१- कायस्थ दलीचन्द. ५२- कायस्थ ज़ालिमचन्द.
५३- ढींकड़्या श्रीकृष्ण.

५४- कायस्थ मोहनलाल.
५५- कायस्थ अर्जुनसिंह.
५६- कायस्थ गुमानचन्द.
५७- कायस्थ मगनलाल.
५८- ढींकड्या रामलाल.
५९- मुरड्या अम्बाव.
६०- मुन्शी कायस्थ धनलाल.
६१- कायस्थ ॐकारनाथ.
६२- नथमल भोटा.
६३- ढींकड्या नाथूलाल.
६४- ढींकड्या गणेशलाल.
६५- भट भवानीशंकर.
६६- महता रघुनाथसिंह.
६७- ढींकड्या जगन्नाथ.
६८- महता भोपालसिंह.
६९- कायस्थ नीमनाथ.
७०- सहीहवाला लक्ष्मणसिंह.
७१- मौलवी अब्दुल्ग़नी.
७२- महता मनोहरसिंह.
७३- धायभाई गणेशलाल.
७४- ढींकड्या गोपाल.
७५- धायभाई चतुर्भुज.
७६- धायभाई सुखलाल.
७७- धायभाई गुमाना.
७८- ब्रह्मचारी मथुरादासका पुत्र मोड़ीलाल.

राज्यके नौकर यूरोपिअन व यूरेशिअन.

१- मिस्टर लोनार्गिन अफ्सर फ़ौज.
२- मिसेज़ लोनार्गिन डॉक्टर मेरी.
३- मिस वील.
४- मिसेज़ वील.
५- इंजिनिअर टॉमस विलिअम.
६- हेडमास्टर ज्यॉर्ज वेअर्ड.
७- मिस्टर जर्मनी.

इनके अलावह और भी देशी विदेशी लोगोंकी भीड़ जमा होती जाती थी. महाराणा साहिबने क़िले चित्तौड़की सड़कों और इमारतोंकी मरम्मत बड़ी तेज़ीके साथ करवाई. गंभीरी नदीके पश्चिम तरफ़ क़स्बे चित्तौड़से आध मीलके फ़ासिलेपर उत्तरकी तरफ़ गवर्नर जेनरल हिन्द और उनके कैम्प व मुलाज़िमोंके लिये उम्दह डेरे वाक़ाइदह खड़े करवाये गये, और दक्षिणकी तरफ़ महाराणा साहिबके डेरे मए सर्दारान, अहलकारान व फ़ौजके खड़े कियेगये, और बीचमें एक बड़ा दालान रंग व रंगे कपड़ोंसे मंढाहुआ सोनेके कलशोंसे आरास्तह दर्बारके वास्ते तय्यार कराया गया. यह कुल तय्यारियां होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २२ नोवेम्बर] को चार बजेके वक़्त गवर्नरजेनरल हिन्द मार्किस ऑफ़ रिपन स्पेशल ट्रेन द्वारा अजमेरसे चित्तौड़गढ़ पहुंचे. महाराणा साहिब भी अग्रगामिताके लिये स्टेशनपर उपस्थित थे. लाट साहिबने गाड़ीसे उतरकर बड़ी मुहब्बत

के साथ दस्तापोशी की, और टोपी उतारकर मिज़ाजकी ख़ुशी पूछी. महाराणा साहिबने भी मुहब्बत आमेज़ लफ़्ज़ोंमें जवाब दिया. स्टेशनपर ३२ हाथियोंकी दो क़तारें बहुत .उम्दह ज़ेवर और झूल वग़ैरह सामानसे आरास्तह खड़ी थीं, उनमेंसे सबसे आगे वाले हाथीपर लाट साहिबके एडिकांग, उनके पीछे दाहिनी तरफ़ वाले हाथीपर मार्क्विस ऑफ़ रिपन और बाईं तरफ़ वालेपर महाराणा साहिब विराजकर डेरोंको पधारे. लाट साहिबके पीछेवाली क़तारमें हरएक हाथीपर दो दो अंग्रेज़ अफ़्सर, और महाराणा साहिबके पीछेकी क़तारमें हरएक हाथीपर दो दो सर्दार थे; प्लैट फ़ार्मसे लाट साहिबके डेरोंतक दुतरफ़ह महाराणा साहिबकी फ़ौजके सर्दार व सरबन्दी फ़ौज, रिसाले और पैदल पल्टनोंकी क़तार जमी हुई सलामी उतारती जाती थी. लाट साहिब आहिस्तह आहिस्तह चलकर अपने डेरोंके बाहिर महाराणा साहिब सहित हाथियोंपर सवार खड़े रहे. हम लोगोंका एक एक हाथी उनके सामने होकर गुज़रता रहा और लाट साहिब हरएक सर्दारका सलाम बड़ी मुहब्बतके साथ लेतेगये, और डॉक्टर स्ट्रैटन रेज़िडेण्ट मेवाड़ हरएक सर्दारका नाम मए ठिकाने और क़ौमके बताते गये. महाराणा साहिब तो अपने डेरोंमें चले आये और लाट साहिबने हाथीसे उतरकर अपने डेरोंमें आराम किया. दोनों तरफ़ शाही डेरों, तोपख़ानों, रिसालों और पल्टनोंका जमाव और .उम्दह तर्तीबके साथ महाराणा साहिबके डेरोंमें सर्दारोंका क़ियाम देखकर देखने वालोंके दिल ख़ुश होते थे. दोनों कैम्पोंका बन्दोबस्त उदयपुरकी पुलिसके सुपुर्द हुआ था, जिसको मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस और इन्स्पेक्टर लाला केसरीलालने बहुत .उम्दह तौरपर किया. रॉयल इंजिनिअर मरे, और कोठारी बलवन्तसिंहने भी कैम्प वग़ैरहकी सर्बराहका बहुत .उम्दह इन्तिज़ाम रक्खा. इस जल्सहमें डॉक्टर स्ट्रैटन रेज़िडेण्ट मेवाड़ और सेटल्मेण्ट अफ़्सर ए० विंगेटने एक महीना पहिलेसे बड़ी कोशिशके साथ इन्तिज़ाम करवाया. कुल कामोंमें मदद देनेके लिये महता राय पन्नालाल और मुझ (कविराजा श्यामलदास) को हुक्म था, जो कुछ होसका हम लोगोंने भी किया. इस जल्सहकी मिह्मानीमें रियासती नौकरोंमेंसे कोठारी बलवन्तसिंह, ढींकड़्या जगन्नाथ हाकिम चित्तौड़गढ़, मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस, और महकमह जंगलातके अफ़्सर विष्णुसिंहकी मिह्नत और कोशिश अव्वल दरजहकी थी. इनके अलावह हरएक कारख़ानहके दारोग़ह और छोटे बड़े अह्लकारोंने बड़ी तन्दिहीके साथ नौकरी दी.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्हिज = .ई० ता० २३ नोवेम्बर] को १० बजेसे पहिले उमराव, सर्दार, अह्लकार व पासबान वग़ैरह राजके मुलाज़िम और गवर्मेण्टअंग्रेज़ीके अफ़्सर व अंग्रेज़ी लेडियां दर्बारके मक़ाममें आकर सब अपने अपने दरजेके

मुवाफ़िक़ कुर्सियोंपर बैठगये. कुर्सियोंकी चार लाइन मेवाड़ी सर्दारों व अहलकारोंके लिये और एक लाइन अंग्रेज़ी अफ्सरोंके लिये, और उसके पीछे अंग्रेज़ी लेडियोंके लिये उम्दह काम की कुर्सियां रक्खी गई थीं. पश्चिम तरफ़ कुछ ऊंची जगहपर लाट साहिब और महाराणा साहिबके लिये दो उम्दह चांदीके मुनहृल काम वाले सिंहासन रक्खे गये थे, जिनमें दाहिनी तरफ़के सिंहासनपर मार्क्विस ऑफ़ रिपन बैठे, और महाराणा साहिब उसी मकान के एक दूसरे कमरेमें तश्रीफ़ लाये, जहां लाट साहिबके एडिकांग आये और महाराणा साहिबको आस्मानी रंगका एक बड़े घेरवाला चुगा पहिनाकर वह हार गलेमें पहिनाया, जो उस ख़िताबके लिये था. फिर महाराणा साहिब उक्त एडिकांगों सहित दालानमें पहुंचे. लाट साहिबने उन्हें "ग्रेण्ड कमांडर स्टार ऑफ़ दि इण्डिया" का तमगह देकर अपने बाईं तरफ़के सिंहासनपर बिठाया. उस वक्त अंग्रेज़ी तोपखानहसे महाराणा साहिबके लिये २१ तोपें सलामीकी सर हुईं. कुल रस्में अदा होकर थोड़ी देरके बाद मार्क्विस ऑफ़ रिपन और महाराणा साहिब अपने अपने डेरोंमें सिधारे. दिनके एक बजे लाट साहिब बग्घी सवार होकर महाराणा साहिबके डेरोंमें आये. मेवाड़की फ़ौजने क़ाइदह के साथ सलामी उतारी और तोपखानहसे सलामीके फ़ाइर सर होकर दर्बारके बड़े डेरेमें सोने के सिंहासनोंपर मार्क्विस ऑफ़ रिपन और महाराणा साहिब और दोनों तरफ़ कुल उमराव, सर्दार, अहलकार, व अंग्रेज़ी अफ्सर कुर्सियोंपर बैठे; कुछ देरतक दस्तूरी बात चीत होनेके बाद लाट साहिब वापस रुख़्सत हुए, और राज्यके तोपखानह व फ़ौजसे सलामीकी मामूली रस्म अदा हुई.

शामके वक्त लाट साहिब बग्घी सवार होकर क़िला देखनेको गये. डॉक्टर स्ट्रैटन रेज़िडेण्ट मेवाड़ने एक छोटीसी किताब लाट साहिब और उनके मुसाहिबोंको दी, जिसमें मेवाड़ और चित्तौड़ गढ़का तवारीख़ी हाल और पुरानी इमारतोंका बयान था, और जो मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) शामलातसे लिखकर तय्यार की गई थी. इस पुस्तकके ज़रीएसे क़िलेकी सैर करके लाट साहिब वापस डेरोंमें आये. रात्रिके समय खाना हुआ, उसमें लाट साहिब और एक सौ के क़रीब अंग्रेज़ और लेडियां मौजूद थीं. खाना खानेके बाद महाराणा साहिबकी तरफ़से कर्नेल् वाल्टर साहिबने और उसके जवाबमें लाट साहिबने जो स्पीच दी उन दोनोंका तर्जमह नीचे लिखा जाता है:—

श्री दर्बारकी तरफ़से कर्नेल् सी॰ के॰ एम॰ वाल्टर साहिब बहादुर रेज़िडेण्ट मेवाड़की दी हुई स्पीचका तर्जमह.

मैं सच्चे दिलसे ज़ाहिर करता हूं, कि आज मैं अपने सर्दारों समेत इस प्राचीन राजधानी चित्तौड़में, जिसका बड़प्पन कई वर्षोंसे होता चला आया है, आपसे मिलकर

बहुत खुश हुआ हूं. इस चित्तोड़ शहरको हम सब बड़ा प्रसिद्ध और प्रिय समझते हैं, जिसकी रक्षा करने और जिसको अपने अधिकार (हुकूमत) में रखनेके लिये हमारे बुजुर्गोंने गत समयमें अपने अमूल्य प्राण अर्पण किये हैं. इस यादगारके निमित्त मेवाड़के सीसोदिया राजाओंने अपनी पदवी चित्तौड़ा रक्खी है. अपना आजका मिलाप आपसकी उस दोस्तीका अधिक होना है, जो सन् १८१८ ई० के समयसे ब्रिटिश गवर्मेण्ट और राज मेवाड़के साथ चलीआती है; और उस दृढ़ मैत्रीका सुबूत यह है, कि आपने मुझे श्री महाराजराणी कैसरि हिन्दकी तरफ़से "स्टार ऑफ़ इण्डिया" की उच्च पदवी दी. इस प्रतिष्ठित पदवीसे श्रीमतीने बड़ी मिहर्बानीके साथ मुझे "नाइट ग्रेण्ड कमाण्डर" नियत किया. इस पदवीके सबबसे हमारी आपसकी मैत्रीको तरक़ी और दृढ़ता होगी. मैं इस पदवीको बड़े आनन्दसे स्वीकार करता हूं और मैं सच्चे दिलसे श्रीमती महाराजराणी भारतेश्वरी और आपको धन्यवाद देता हूं, और मुझे पूरा यक़ीन है, कि इस पदवीके कारण मेरे राज्य और मेरी प्रजाकी सरसब्ज़ी और बिह्तरी होगी. जबसेकि मैंने आपके शील स्वभाव और दूसरे बहुतसे उत्तम गुणोंकी प्रशंसा सुनी है, तबसे मुझको आपसे मिलनेकी दिली ख्वाहिश थी, और खुश हूं, कि मेरी वह अभिलाषा आज पूरी हुई. ईश्वर श्रीमती महाराजराणी भारतेश्वरीको बहुत अरसह तक खुशी और इक्बालमन्दीके साथ राज्याधिकारपर क़ाइम रक्खे, और आपका प्रबन्ध भारतवासियोंके लिये फ़ायदह पहुंचाने वाला और आपकी नेकनामीको बढ़ाने वाला हो, जिससे हिन्दुस्तानकी प्रजाके चित्तोंमें आपके राज्यशासनकी यादगार हमेशह के लिये क़ाइम रहे.

स्पीच देने समय मौके मौकेपर हाज़िरीन जल्सह आल्हाद ध्वनिके साथ अपनी प्रसन्नता प्रगट करते रहे, और बड़ी देरतक स्पीचकी समाप्तिके पीछे भी उच्च स्वरसे आनन्द ध्वनि होती रही. इसके पश्चात् श्रीमान् वाइसरॉयने ऊपरकी स्पीचके जवाबमें नीचे लिखी हुई स्पीच दीः-

चित्तौड़के जल्सेमें वाइसरॉयकी स्पीच.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनो ! मैं आप लोगोको यक़ीन दिलाता हूं, कि श्री महाराणा साहिब उदयपुरकी तरफ़से जो जाम तन्दुरुस्ती तज्वीज़ हुआ है, उसका मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूं, और जिन शब्दोंमें महाराणा साहिबने यह जाम तन्दुरुस्ती तज्वीज़ किया है उनका असर मेरे दिलपर बहुत ही हुआ. ऐ मेम साहिबो और

जेंटलमेनों, मैं निश्चय जानता हूं, कि इस मौकेपर हाज़िरीन जल्सेमेंसे कोई शख़्स ऐसा न होगा, जो उन शब्दोंको सुनकर प्रसन्न न हुआ हो, जिनमें कि श्री महाराणा साहिबकी तरफ़से स्पीच पढ़ीगई, और कोई इंग्लिशमैन ऐसा न होगा, जिसको इस बातका फ़ख़ न हुआ हो, कि ऐसे उत्तम वाक्य एक हिन्दुस्तानी रईसके मुंहसे निकले. मैं इस अवसरपर मौजूद होनेसे बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं, और ख़ासकर इस बातसे प्रसन्न हूं, कि पहिली ही बार अपनी महाराजराणी क़ैसरि हिन्दकी तरफ़से मुझे आज्ञा मिली है, कि मैं इस देशके एक रईसको पूरी रीतिके साथ " नाइट ग्रैण्ड कमाण्डर ऑफ़ दि स्टार ऑफ़ इंडिया " की पदवी दूं, और यह ऐसा अवसर है, कि वह पदवी श्रीमान् महाराजा साहिब मेवाड़को दीगई. मैं इस बातसे बहुत ख़ुश हूं, क्योंकि श्री महाराणा साहिब प्रतिष्ठित प्राचीन और उत्तम कुलीन क्षत्रियोंमेंसे अव्वल दरजहके हैं. यह ख़ानदान हिन्दुस्तानके इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध है. मैं इस बातसे और भी अधिक प्रसन्न हुआ, कि श्री महाराणा साहिब केवल अपने उन्हीं उत्तम बर्तावों, और शील स्वभावोंसे प्रसिद्ध नहीं हैं, जोकि उनके बड़े ख़ानदानमें पाये जाते हैं, बल्कि उस बुद्धिमानी और बुद्धिवारीमें भी प्रसिद्ध हैं, जिससे वे अपनी प्रजापर हुकूमत करते हैं— और इसलिये मैं इस बातको बहुत ही योग्य समझता हूं, कि मैंने अपने अधिकारके समयमें पहिली ही बार ऐसे प्रतिष्ठित ख़ानदानी रईसको अपने बादशाहके नामसे यह पद दिया. मुझे यह भी निश्चित हुआ, कि यह स्थान बड़ा योग्य है, जिस जगहमें इस पदवीके देनेको सभा हुई है.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनों, श्री महाराणाजीने हमको बड़े मनोहर वाक्योंसे चित्तौड़के इतिहासकी वह बातें याद दिलाई हैं, कि जिनके सबबसे चित्तौड़ प्रसिद्ध है. वे यादगारें उस वीरताका स्मरण कराती हैं, कि जो अन्य इतिहासोंमें बहुत कम मिलती है, और जिन वीरताओंमें इनके पुरुषा ही प्रसिद्ध नहीं थे, बरन उनके प्रसिद्ध घरानेकी स्त्रियां भी प्रसिद्ध थीं. इस क़िलेकी चोटीके गिर्द राजस्थानकी बहादुरियोंकी यादगारें जमा हैं. वे बहादुरीकी यादगार चीज़ें जो मैंने आज देखीं, याने वे सादे पत्थर जो वर्तमान समयके राजपूतोंके हाथसे यहां लगे हैं. उन पत्थरोंके देखनेसे हमको उन मनुष्योंका वह समय याद आता है, जबकि उनको यह निश्चित होगया, कि हमारे देशकी प्रतिष्ठा जाती है, तो उस बड़प्पनको क़ाइम रखनेके लिये आप भी संग्राम भूमिमें लड़मरे.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनों, निस्सन्देह हम सबको अपने तई धन्यवाद देना चाहिये, कि हम इस उम्दह मौकेपर मौजूद हुए हैं, जो सबतरह ख़ुशीसे

भराहुआ है, और मुझे बहुतही प्रसन्नताका काम सौंपागया, कि मैंने इस कुलीन प्रतिष्ठित रईसके गलेमें वह प्रतिष्ठित तमगृह पहिनाया, जिसको बड़ी प्रतिष्ठाके साथ हमारी श्री मती महाराजराणी खुद पहिनती हैं, और इसी तमगेको इसके शाही खानदानके लोग इज़्ज़तका चिन्ह मानकर पहिनते हैं; मैं इसवक्तमें यह सुन-कर प्रसन्न हुआ, कि श्री महाराणा साहिब कैसे सच्चे दिलसे इस तमगेका अर्थ लगाते हैं. चाहे कुछ लोगोंका यह खयाल हो, कि ऐसे प्राचीन घरानेका अधिकारी इस तमगेको वर्तमान समयकी उपाधि मानेगा, परन्तु श्री महाराणा साहिबने न्यायके साथ इसकी जांच करली है. उन्होंने समझलिया है, कि अगर्चि यह तमगह नई उपाधि है, परन्तु यह इसलिये क़ाइम हुई है, कि बादशाह और उसकी हिन्दुस्तानी अमल्दारीमें एकताका दृढ़ सम्बन्ध ज़ाहिर हो, और यह कि एक तरफ़ प्रीतिका और दूसरी तरफ़ वफ़ादारीका पूरा खयाल है. मुझे आशा है, कि इन दोनोंकी एकतासे ताज इंग्लिस्तान और हिन्दुस्तानके राजा व रईसोंका दुनियावी सम्बन्ध दिनो दिन ज़ियादह मज़्बूत होता रहेगा.

ऐ मेम साहिबो और जेंटल्मेनो, मुझे ज़ियादह कहनेकी ज़रूरत नहीं है, मैं केवल आप लोगोंसे यह चाहता हूं, कि तन्दुरुस्तीका एक जाम पियाजाये, जिसके लिये मैं उम्मेद करता हूं, कि आप सब बड़े आनन्दके साथ उसे नोश करेंगे. मैं आपसे चाहता हूं, कि आप अपनी तरफ़से इस रईसानह मिहमानदारीका धन्यवाद प्रकट करें जोकि हमारे लिये कीगई है, और हमारे बड़े कुलीन आतिथ्य करनेके लिये कृपा मांगें, कि इनकी बड़ी अवस्था हो, और इनका ख़ान्दान हमेशह क़ाइम रहे, जिसके कि वे पूरे योग्य हैं.

यह जाम तन्दुरुस्ती बड़े हर्षसे पियागया [illegible]

[illegible]

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० १२९९ ता० १ मुहर्रम = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को प्रातःकालके ८ बजे महाराणा साहिब मए अपने आठ सर्दारों और मुसाहिबोंके लाट साहिबसे रुस्सती मुलाकात करनेको उनके डेरोंपर पधारे. लाट साहिबने महाराणा साहिबसे कहा, कि मैं इस पुराने क़िलेके देखने और आपकी मिह्मानदारीसे निहायत खुश होकर शुक्रियह अदा करता हूं. कुछ देर ठहरनेके बाद् महाराणा साहिब अपने डेरोंको वापस आये, और सुबहके ११ बजे लाट साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर अजमेरको सिधारे. महाराणा साहिबने अपने मिह्मानको रेल्वे स्टेशनतक पहुंचाया.

इस जल्सेमें स्वदेशी और विदेशी लोगोंका जो हुजूम एकट्ठा हुआ था, उसकी संख्या बाज़ अख़्बारोंमें ९०००० नव्वे हज़ार और लोगोंकी ज़बानी पचास साठ हज़ार के क़रीब सुनी जाती है, लेकिन् मेरा अनुमान लोगोंके ज़बानी बयानसे कुछ कम है. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ३ मुहर्रम = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब क़िलेपर पधारकर फ़ौजकी हाज़िरी लेनेके बाद वापस डेरोंमें आये. इन्हीं दिनोंमें स्वामी दयानन्द् सरस्वती भी चित्तौड़ गढ़की तलहटीमें आगये थे, और स्वामी जीवनगिरि पेश्तरसे ही वहां मौजूद थे, दोनोंने आपसमें शास्त्रार्थ करनेका इरादह ज़ाहिर किया, लेकिन् महाराणा साहिबने विवाद् बढ़जानेके ख़यालसे शास्त्रार्थ न होने दिया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ५ मुहर्रम = .ई० ता० २८ नोवेम्बर] को कर्नेल् सी० के० एम वाल्टर साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह चित्तौड़में आये. उक्त साहिबको चित्तौड़में आनेके बाद शरदीकी बीमारी होगई थी, इस सबबसे विक्रमी पौष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ मुहर्रम = .ई० ता० २० डिसेम्बर] को वापस रवानह होगये, और इसी दिन बम्बईके कमाण्डर इञ्चीफ़ आये, जिनकी महाराणा साहिबने बहुत अच्छी ख़ातिरदारी की.

इतने अरसहतक महाराणा साहिबका चित्तौड़में ठहरना इस सबबसे हुआ, कि क़िले और उसके पुराने मकानोंकी मरम्मत करानेका बन्दोबस्त कियागया और इस कामके लिये २४०००) सालानह मरम्मत ख़र्च मुक़र्रर करके इसी मौक़ेपर ढींकड़िया जगन्नाथको बैठककी इज़्ज़त बख़्शी. विक्रमी पौष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को महाराणा साहिब ज़नानह समेत स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर मांडल पधारे, और वहांसे बागोरमें महाराज शक्तिसिंहके यहां मिह्मान रहकर विक्रमी माघ शुक्ल ५ [हि० ता० ३ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८८२ ता० २४ जैन्युअरी] को उदयपुरमें दाख़िल होगये.

विक्रमी १९३९ चैत्र शुक्ल २ [हि० १२९९ ता० १ जमादियुल्अव्वल

.ई० १८८२ ता० २१ मार्च] को महाराणा साहिब महता माधवसिंहके मकानपर मिह्मान हुए, और उसको ख़िल्अ़त और पैरमें सुवर्ण भूषण बख़्शा. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ता० २० जमादियुस्सानी = .ई० ता० ९ मई] को रेज़िडेन्सी मेवाड़के .उह्देपर कर्नेल् यूएन् स्मिथ क़ाइममक़ाम नियत होकर आये, और डॉक्टर स्ट्रैटन वहांसे तब्दील होकर रेज़िडेन्सी जयपुरके .उह्देपर गये.

इसी अ़रसहमें भौराईकी पालवाले भीलोंने मगरा ज़िलेके गिर्दावर दयालाल चौंईसाको घेरकर फ़साद खड़ा किया, और उनके साथ नठाराके भीलोंने भी सिर उठाया, जिनकी सज़ादिहीके लिये मामा अमानसिंह मए फ़ौजके भेजागया. उसने कई गमेतियों को गिरिफ़्तार करके भीलोंको पूरे तौरपर सज़ा दी, और महता गोविन्दसिंह हाकिम मगराने भी इस मौक़ेपर तन्दिहीके साथ काम दिया, जिसके .एवज़ विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० २९ मई] के दिन मामा अमानसिंहको पैरमें सोनेके लंगर और महता गोविन्दसिंहको ख़िल्अ़त इनायत कियागया. भौराईकी पालवाले भीलोंको बड़े लुटेरे और सर्कश देखकर महाराणा साहिबने वहां एक क़िला बनवाया और मज़्बूत थानह रखनेका हुक्म दिया.

इस वर्षके प्रारम्भमें महाराणा साहिबने मुझ (कविराजा श्यामलदास) को बाग़ बनाने के लिये हाथीपोल दर्वाज़हके बाहिर हवालेमें १० बीघेके अनुमान ज़मीन .इनायत की. जोकि महाराणा साहिबको अपने शहरकी रौनक़ बढ़ाने और .इमारती कामोंका बहुत शौक़ था, इसलिये दो तीन बार इस बग़ीचेमें पधारकर रास्तह, पट्टियां व .इमारत वग़ैरह बनवाने और दरख़्त लगानेका तर्ज़ अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ डलवाया, और विक्रमी आश्विन शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को हुक्म देकर श्री करणी माताके मन्दिरमें मूर्त्ति स्थापनाकी प्रतिष्ठा करवाई. विक्रमी आश्विन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्हिज = .ई० ता० १८ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबने इस बग़ीचेमें पधारकर मेरी तरफ़का ग़रीबी आतिथ्य क़बूल किया और मुझको ख़िल्अ़त बख़्शकर बग़ीचेका नाम "श्यामल बाग़" रक्खा. इस अवसरपर मैंने मारवाड़ी भाषामें एक काव्य बनाकर सुनाया, जो नीचे दर्ज कियाजाता है:-

छप्पय.

जिम जुहार ताजीम, पाय लंगर हिम पटके ॥
पूरण बांह पशाव, खळां अदवां मन खटके ॥
जाहर छड़ी जळेब, छाप कागळ बड़ छापण ॥

मांझो पाघ मझार, थरू बीड़ो जस थापण ॥
कविदास तेण कविराज कर, कठिन अंक विधि कापिया ॥
कर शुभ निगाह श्यामळ कुरव, सज्जन राण समापिया ॥ १ ॥

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० १३०० ता० १३ मुहर्रम = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को महाराणा साहिबकी भूवा कीकाबाजी (१) कृष्णगढ़से उदयपुर आई. महाराणा साहिब बड़े आदरके साथ चंपाबाग़ तक पेश्वाई करके उनको महलोंमें लाये. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २५ मुहर्रम = .ई० ता० ७ डिसेम्बर] को शहरमें सज्जन-हॉस्पिटल नामी शिफ़ाख़ानह खोलागया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० ता० ३० मुहर्रम = .ई० ता० १२ डिसेम्बर] को कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेन्सी मेवाड़के .उह्देपर वापस आये, और दो रोज़ बाद कर्नेल् स्मिथ गये. इन्हीं दिनोंमें काशीसे प्रसिद्ध विद्वान बाबू हरिश्चन्द्र आया, जिसको मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० ता० १२ सफ़र = ई० ता० २४ डिसेम्बर] को ख़िल्अ़त देकर विदा किया. विक्रमी माघ शुक्ल २ [हि० ता० ३० रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८८३ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को ४ घड़ी दिन चढ़े ईडरवाली छोटी महाराणी साहिबाके गर्भसे महाराजकुमारका जन्म हुआ. इस समयकी ख़ुशीका बयान नहीं होसक्ता, क्यौंकि ५५ वर्षके बाद इस रियासतमें यह आनन्दका समय प्राप्त हुआ था. उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, मांडलगढ़, जहाज़पुर वग़ैरह सर्कारी स्थानों और उमराव लोगोंके ठिकानोंमें ख़बर पहुंचतेही बड़ी ख़ुशीके साथ तोपोंके फ़ाइर और जल्से शुरू होगये. महाराणा साहिब स्वरूपविलासमें आ विराजे, और हम लोगोंने उनके सामने मुट्ठियां भरभर कर हज़ारों रुपये और अश्रफ़ियां ग़रीबोंको लुटाना शुरू किया. केवल उदयपुरमें ही नहीं बल्कि जयपुर, जोधपुर वग़ैरह राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंमें भी इस ख़बरके पहुंचतेही तोपोंकी सलामी और ख़ुशीके जल्से शुरू होगये. महाराणा साहिबने इस मौक़ेपर १० लाख रुपया ख़र्च करना तज्वीज़ किया था, लेकिन् अफ्सोस कि उसी रोज़ रात्रिके १२ बजे उस आनन्द दायक कुमारका परलोकवास होगया और ख़ुशीके .एवज़ चारों तरफ़ शोक छागया. विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ७ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा साहिबकी भूवा सौभाग्य कुंवर रीवांसे उदयपुर आई, जिनको महाराणा साहिब चंपाबाग़ तक पेश्वाई करके महलोंमें लेआये. यह महाराणा सर्दारसिंहकी बेटी और रीवांके महाराजा

(१) यह महाराणा भीमसिंहकी पोती और कुंवर अमरसिंहकी बेटी कृष्णगढ़के महाराजा शार्दूल-सिंहकी दादी हैं.

रघुराजसिंहकी टीकेत महाराणी थीं. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराणा साहिबसे विदा होकर जोधपुरकी तरफ़ गये. विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २७ मार्च] को महाराणा साहिबने मुझे महाराजा जशवन्तसिंह साहिबकी सिह्हतपुर्सीके लिये जोधपुर भेजा, क्योंकि उक्त महाराजा साहिबके कण्ठमें बहुत सख़्त दर्द होगया था. जोधपुरसे वापस आनेके कुछ दिन बाद मेरी आंखमें सख़्त दर्द पैदा हुआ, जिसका इ़लाज पादरी डॉक्टर समरविल और रेज़िडेन्सी सर्जन डॉक्टर मलन साहिबने दो महीनेतक किया, लेकिन् कुछ फ़ायदह न हुआ, तब विक्रमी १९४० आषाढ़ कृष्ण २ [हि० ता० १६ शअ़्बान = .ई० ता० २२ जून] को महाराणा साहिबने साइरके दारोग़ह, महद्राज सभाके मेम्बर और मेरे मित्र पंडित ब्रजनाथको साथ देकर मुझे इन्दौर भेजा. वहां डॉक्टर कीगनने मेरा बहुत अच्छा इलाज किया. ईश्वरने कुछ दिनोंके लिये फिर ज़िन्दगी और आंखकी रौशनी बख़्शी जिससे मैं अबतक अपने शारीरक व्यवहार और यथाशक्ति अपने स्वामीकी सेवा करता हूं. विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ शव्वाल = .ई० ता० १८ ऑगस्ट] को महाराणा साहिबने सज्जनगढ़का खातमुहूर्त्त किया. इस मौक़ेपर मैं भी इन्दौरसे आकर जल्सेमें शरीक होगया.

इसी अरसहमें जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह साहिब मए अपने भ्राता कर्नेल् प्रतापसिंहके उदयपुरमें आये, जिसका हाल इस तरहपर है, कि महाराणा साहिबने जबसे राजपूतानहमें एकता फैलाई और इन महाराजा साहिबसे मित्रता की, और महाराजा साहिबकी बहिनके साथ महाराणा साहिबकी शादी करदेनेका विचार हुआ, तबसे दिन ब दिन स्नेह बढ़ता ही गया; सिवा इसके बहुत दिनोंसे महाराजा साहिब भी उदयपुरमें आनेका विचार करते थे. आख़िरकार विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० १३०१ ता० २५ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८८४ ता० २४ मार्च] को जोधपुरसे प्रस्थान करके पाली, अजमेर, व चित्तौड़गढ़ होकर स्पेशल ट्रेन द्वारा विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २७ मार्च] के दिन प्रातः कालके ७॥ बजे नींबाहेड़ाके स्टेशनपर पहुंचे. महाराजा साहिबके साथ उनके छोटे भ्राता कर्नेल् प्रतापसिंह, महाराज ज़ोरावरसिंहका पुत्र फ़तहसिंह, नीमाजका ठाकुर छत्रसिंह, रोयटका ठाकुर गिरधारीसिंह, भूमलियाका ठाकुर रणजीतसिंह, कविराजा मुरारिदान, ख़ानबहादुर फ़ैज़ुल्लाहख़ां, शोभावत रणजीतसिंह, फ़ज़्लरुसूल, रिसालदार वज़ीरअ़ली, महता कुन्दनलाल, ड्योढ़ीदार शोभावत सहसकरण, और

मीर फ़य्याज़अली वगैरह अनुमान ३०० आदमी थे. महाराणा साहिबकी तरफ़से पेश्वाईके लिये हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह, भदेसरका रावत् भोपालसिंह, कायस्थ फूलनाथ, और कायस्थ ज़ालिमचन्द स्टेशनपर मौजूद थे; सर्बराहकी सब सामग्री का प्रबन्ध भी महाराणा साहिबकी तरफ़से होगया था. नव्वाब टोंककी तरफ़से नींबाहेड़ाका आमिल और शाहज़ादह मह्मूदखां मौजूद था. वहांसे बग्घी, घोड़े, हाथी व पालकी वगैरहकी डाक लगी हुई थी, महाराजा साहिब शामके ४॥ बजे रवानह हुए और मंगरवाड़के बंगलेमें भोजन व शयन करके विक्रमी १९४१ चैत्र शुक्ल १ [हि० ता० २९ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २८ मार्च] को दस बजे डबोक के बंगलेमें पहुंचे, जहां कुछ देर ठहरकर ११॥। बजे उदयपुरके सूरजपोल दर्वाज़ह बाहिर चंपाबाग़में दाख़िल होगये. महाराजा साहिबने महाराणा साहिबको बीमार होनेके कारण पेश्वाई करनेके लिये मना करदिया था, इसलिये महाराणा साहिब तो न गये, और मैं (कविराजा श्यामलदास) और महता तख़्तसिंह, दोनों धव्वा वदनमल्लकी बावड़ीतक जाकर उक्त महाराजाको लेआये. शामके वक्त महाराजा साहिब चंपाबाग़से बग्घी सवार होकर उदयपुरके फ़ौजी रिसाले, बैण्ड बाजे और बॉडीगार्डके साथ सूरज पोल दर्वाज़हके रास्तेसे बड़े बाज़ारमें होकर शम्भुनिवासमें बग्घीसे उतरे. वहांपर सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास) और महता राय पन्नालाल अग्रगामिता करके उन्हें भीतर लेगये. महाराणा साहिब और महाराजा साहिब आपसमें मिलकर बहुत खुश हुए. फिर महाराणा साहिब तो अखाड़ेके महल में पधारे और महाराजा साहिबने शम्भुनिवासमें शयन किया. इनकी सर्बराहके लिये मैं (कविराजा श्यामलदास) और महासाणी मोतीलाल मए कई अह्लकारोंके तईनात कियेगये थे. दूसरे दिन विक्रमी चैत्र शुक्ल ३ [हि० ता० १ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २९ मार्च] को महाराजा साहिबने जल विमान नामक नौकामें सवार होकर पीछोला तालाबकी सैर की, और गनगौरका मेला देखा. महाराणा साहिबने बीमारी की नाताक़तीके सबब सवारी नहीं की. विक्रमी चैत्र शुक्ल ४ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ३० मार्च] को शहरकोटके क़रीब तीखल्या पहाड़में एक सुनहरी शेरनीके आनेकी ख़बर मिली, लेकिन् महाराणा साहिब तो बीमारीके सबब न पधारसके, और महाराजा साहिबने जाकर उस शेरनीका शिकार किया. विक्रमी चैत्र शुक्ल ५ [हि० ता० ३ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ३१ मार्च] को महाराणा साहिब और महाराजा साहिब दोनोंने बड़ी नावमें सवार होकर गनगौरका मेला व आतिशबाज़ीका तमाशा देखा. इसी तरह दूसरे और तीसरे

दिन भी मुहब्बतके साथ मिलना जुलना हुआ और सैर व तमाशा देखागया.

इन्हीं दिनोंमें कृष्णगढ़के महाराजा शार्दूलसिंह साहिब भी उदयपुरमें आ पहुंचे. यह विक्रमी चैत्र शुक्ल ६ [हि० ता० ४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १ एप्रिल] को कृष्णगढ़से रवानह होकर विक्रमी चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २ एप्रिल] के प्रातःकालको नींबाहेड़े, शामको मंगरवाड़ और विक्रमी चैत्र शुक्ल ८ [हि० ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ३ एप्रिल] के रोज़ क़रीब ११ बजे दिनको उदयपुरमें दाख़िल हुए. इन दिनोंमें महाराणा साहिबकी तबीअत अलील होनेके सबब पेश्वाई नहीं हुई, और सरबराह वग़ैरहका .उम्दह बन्दोबस्त किया गया. विक्रमी चैत्र शुक्ल ९ [हि० ता० ७ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ४ एप्रिल] को दोनों महाराजा साहिबोंके कहनेपर महाराणा साहिबने बड़ी पोलके रास्तहसे तख़्तकी सवारी की, और दोनों महाराजा साहिब घोड़ोंपर सवार होकर मुहब्बतके कारण तख़्तके आगे होलिये. गनगोर घाटसे तीनों अधीश नाव सवार होकर मेला, आतिशबाज़ी व तालाबकी सैर देखते हुए शम्भुनिवासमें पहुचे, और अपने अपने स्थानोंमें शयन किया. विक्रमी चैत्र शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ५ एप्रिल] को तीनों महाराजाओंने शामके वक्त शम्भुनिवास महलमें शौक़िया बातें कीं. दूसरे दिन भी इसी प्रकारका वर्ताव रहनेके बाद विक्रमी चैत्र शुक्ल १२ [हि० ता० १० जमादि-युस्सानी = .ई० ता० ७ एप्रिल] की शामको महाराणा साहिबने दस्तूरी दर्बार करके अपने सर्दारों व अहलकारोंसे महाराजा साहिब जोधपुरको नज़ानह करनेका दस्तूर करवाया. इसी तरह दूसरा दिन भी खुशीके साथ गुज़रा, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १२ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ९ एप्रिल] को शामके ६॥ बजे मेरे (कविराजा श्यामलदासके) बाग़में तीनों अधीश पधारे और मेरी तरफ़की रूखी सूखी दावत कुबूल फ़र्माकर महलोंमें तश्रीफ़ लेआये. विक्रमी चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १३ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १० एप्रिल] को महाराजा जशवन्तसिंह साहिब बग्घी सवार होकर श्री एकलिङ्गेश्वरके दर्शन करके वापस उदयपुर में पधारे. विक्रमी वैशाख कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० ११ एप्रिल] को तीनों अधीश हाथियोंकी लड़ाई देखकर मामा बख़्तावरसिंहकी हवेलीपर पधारे और उसकी तरफ़की गोट अरोगकर महलोंमें तश्रीफ़ लेआये. विक्रमी वैशाख कृष्ण २ [हि० ता० १५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १२ एप्रिल] को फ़ौजके लोग शक्तावत् केसरीसिंह वग़ैरहको बोहड़ासे उदयपुरमें लाये, जिसका तफ़्सीलवार हाल आगे लिखाजायेगा. विक्रमी वैशाख कृष्ण ३ [हि० ता० १६ जामादियुस्सानी = .ई० ता०

१३ एप्रिल] को तीनों अधीशोंने शामके वक्त नौका सवार होकर धींगा गनगौर (१) का मेला देखा. विक्रमी वैशाख कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १४ एप्रिल] के दिन तीनों अधीश रेज़िडेंसीको तश्रीफ़ लेगये, जहां कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेएट मेवाड़की तरफ़से उनकी दावत थी; खाना, नाच, राग रंग व इत्र पान होनेके बाद तीनों अधीश वापस महलोंमें तश्रीफ़ लाये. फिर वैशाख कृष्ण ५-६ [हि० ता० १८-१९ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १५-१६ एप्रिल] को जगमन्दिर व जगन्निवासका देखना, हौज़ व फ़व्वारोंका जल्सह और गोवर्द्धनविलास व उदयपुरकी फ़ौजका परेड देखना वग़ैरह होता रहा. विक्रमी वैशाख कृष्ण ७ [हि० ता० २० जमादियुस्सानी = .ई० ता० १७ एप्रिल] की शामको जोधपुरके महाराजा साहिबको रुख़सत दीगई, महाराणा साहिबने दस्तूरके मुवाफ़िक़ वस्त्रालङ्कारकी २१ किश्तियां और लड़ाईका एक हाथी मेदिनी-मल्ल और दो घोड़े महाराजा जशवन्तसिंह साहिबको, ४ किश्तियां और १ घोड़ा महाराज प्रतापसिंहको, और ३ किश्तियां तथा १ घोड़ा कुंवर फ़तूहसिंहको दिया. अलावह इन चीज़ोंके मुहब्बत व रिश्तहदारीके सबब श्री महाराजा साहिबको सवारीके लिये दो हाथीके बच्चे और दो घोड़े, तलवारें, खुकुड़ी, और जमधर वग़ैरह शस्त्र ज़ियादह देकर खुद महाराणा साहिब नाहरमगरेतक पहुंचानेको गये. फिर महाराजा साहिब तो राजसमुद्र होते हुए देसूरीकी तरफ़ होकर मारवाड़को सिधारे, और महाराणा साहिब मए कृष्णगढ़ महाराजा साहिबके उदयपुर आये. विक्रमी वैशाख कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २३ एप्रिल] को महाराजा कृष्णगढ़ महाराणा साहिबके पास दस्तूरी दर्बारमें शम्भुनिवास आये, जिनको १५ किश्तियां वस्त्रालङ्कार की और एक हाथी व दो घोड़े दियेगये. फिर महाराणा साहिब महाराजा साहिबके पास खुशमहलमें जाकर विदायगीका दस्तूरी दर्बार करके वापस आये. शामके वक्त दोनों अधीश महता माधवसिंहके मकानपर तश्रीफ़ लेगये, और दावतका भोजन अरोगकर वापस आये. इसी तरह विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ रजब = .ई० ता० २८ एप्रिल] को महता तख़्तसिंहकी हवेलीपर दावत हुई, और दोनों अधीश तश्रीफ़ लेगये. विक्रमी वैशाख शुक्ल ६ [हि० ता० ५ रजब = .ई० ता० १ मई] के दिन महाराणा साहिबने कृष्णगढ़के महाराजा साहिब और अपनी भूवा कीका बाजीको विदा किया. उदयपुरसे कूच होकर सहेलियोंकी बाड़ीमें मक़ाम हुआ.

---

(१) धींगा गनगौरका त्योहार किसी दूसरी रियासतमें नहीं होता, महाराणा साहिबके पूर्वजोंमेंसे किसीने बे क़ाइदह इस गनगौरका निकालना शुरू किया, और इसी सबबसे यह त्योहार धींगा गनगौरके नामसे प्रसिद्ध हुआ. हमारी तह्क़ीक़ातसे महाराणा अव्वल राजसिंहका इस त्योहारको प्रचलित करना पायाजाता है.

महाराणा साहिब भी इनको पहुंचानेके लिये सहेलियोंकी बाड़ी पधारे थे, सो रातभर वहां ही रहे, और कृष्णगढ़ वाली महाराणी साहिबा अपनी दादीको पहुंचानेके लिये नाथद्वारेतक गईं. दूसरे दिन सुब्हके वक्त कृष्णगढ़के महाराजा सहेलियोंकी बाड़ीसे रवानह हुए और श्री एकलिङ्गेश्वर, नाथद्वारा, कांकड़ोली व शाहपुरा होते हुए कृष्णगढ़ पहुचे. इन महाराजाओंके उदयपुरमें आनेका जलसह बड़ी धूमधामके साथ हुआ, जिसमें क़रीब ८००००) अस्सी हज़ार रुपया ख़र्च पड़ा.

बोहड़ेपर फ़ौजका भेजा जाना.

बोहड़ेका ठिकाना उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने भींडर महाराज मुह्कमसिंहके छोटे बेटे फ़तहसिंहको जागीरमें दिया था. जब फ़तहसिंह बिना सन्तानके मरगया और भींडरके महाराज ज़ोरावरसिंहके कोई पुत्र न रहा, तब ग्राम सकतपुरा (१) का शक्तावत बख़्तावरसिंह फ़तहसिंहके गोद रक्खा गया, और भींडर महाराज ज़ोरावर-सिंहका देहान्त होनेपर महाराज हमीरसिंह भी पान्सलसे दत्तक लायागया. इस ठिकाने वाले भींडरसे बहुत दूर मिलते थे. तब बख़्तावरसिंहने फ़तहसिंहके दत्तक होनेके कारण भींडर महाराज ज़ोरावरसिंहकी गोद बैठनेका दावा किया, और बहुतसी लड़ाइयां लड़ा, लेकिन् भींडरपर हमीरसिंह ही साबित रहा. विक्रमी १९१७ [हि० १२७७ = .ई० १८६०] में बख़्तावरसिंह भी बिना सन्तानके मरगया, परन्तु मरते वक्त सकतपुरा (शक्तिपुरा) से अपने भतीजे अदोतसिंहको गोद रखगया. इसके बाद महाराणा स्वरूपसिंह साहिबका भी देहान्त होगया, और उदयपुरमें महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी बाल्यावस्थाके कारण राज्य कार्यों में एजेएटीका प्रबन्ध होगया, और पंच सर्दार राज्यके मुसाहिब बने. यह बोहड़ेका दावा भींडर वाले हमीरसिंहने विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = .ई० १८६१] में एजेएट साहिबके सामने पेश किया, लेकिन् अदोतसिंहको महाराणा स्वरूपसिंह साहिबने मन्जूर करलिया था, इसलिये अदोतसिंह ही क़ाइम रक्खा गया, मगर इस वक्त यह क़रार पाकर, कि अदोतसिंहके पुत्र हो, तो वह छोटा माना जावे, और बड़ेका मर्तबह भींडर महाराज हमीरसिंहके छोटे पुत्र शक्तिसिंहको हासिल हो, देवाखेड़ा और बांसड़ा नामके दो ग्राम शक्तिसिंहके क़ब्ज़हमें करादिये गये,

(१) सकतपुरा वाले भींडरसे कई पीढ़ियोंमें मिलते हैं.

परन्तु ईश्वरकी इच्छासे थोड़े ही दिन बाद शक्तिसिंह भी गुज़र गया, और उसके एक छोटा पुत्र था वह भी मरगया; तब भींडर महाराज हमीरसिंहने अपने तीसरे पुत्र रत्नसिंहको अदोतसिंहके दत्तक रखनेका दावा किया, जिसको महाराणा शम्भुसिंह साहिबने मन्ज़ूर फ़र्मालिया, लेकिन् अदोतसिंहने उसे स्वीकार नहीं किया, बल्कि भींडर व बोहड़ा-वालोंके आपसमें कई जगह लड़ाइयां भी हुईं, परन्तु कुछ मत्लब न निकला. तब महाराणा शम्भुसिंह साहिबके वैकुण्ठवास होने बाद भींडरके महाराज मदनसिंहने महाराणा सज्जनसिंह साहिबकी सेवामें रत्नसिंहका दावा पेश किया. उसको महाराणा साहिबने स्वीकार करके रत्नसिंहको अदोतसिंहके ज्येष्ठ पुत्रकी नशिस्तपर बिठाकर बांसड़ा व देवाखेड़ा उसके ख़र्चके लिये अदोतसिंहसे दिलवानेकी आज्ञा दी. अदोतसिंहने अधीशकी आज्ञाके विरुद्ध सकतपुरासे अपने भतीजे केसरी-सिंहको दत्तक रखलिया, और रत्नसिंहको ग्राम देनेसे इन्कार किया. तब अधीशने नाराज़ होकर बोहड़ा पट्टाके ग्राम मंगरवाड़, देवाखेड़ा व बांसड़ापर ख़ालिसह भेजदिया. अदोतसिंहने कहा, कि अधीश तो हमारे स्वामी हैं, बोहड़ा भी छीन लेवें, तो हाज़िर है, लेकिन् भींडर महाराजको तो एक बीघा ज़मीन भी देना मन्ज़ूर नहीं; और मैंने केसरीसिंहको दत्तक रक्खा है वही ठिकानेका मालिक होगा. आख़रकार विक्रमी १९४० फाल्गुन शुक्ल [हि० १३०१ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८८४ मार्च] में अदोतसिंहका इन्तिक़ाल होगया, तब भींडरके महाराज मदनसिंह और रत्नसिंहने अपना हक़ मिलनेका दावा किया. इसपर महाराणा साहिबने सात दिनकी मीआदका एक तह्रीरी हुक्म केसरीसिंह व उसके जागीरदारों तथा बख़्तावरसिंह और अदोतसिंहकी स्त्रियोंके नाम लिखा भेजा, कि तुम लोग इस मीआदके भीतर यहां चले आओ, अगर उदूल हुक्मी करोगे, तो सज़ा पाओगे. इसी हुक्मके साथ महता गोपालदासको मए तीन सौ सिपाहियोंके बोहड़ेपर सर्कारी क़ब्ज़ह करनेके लिये भेजदिया, क्योंकि इस रियासतके कुल जागीरदार राजपूतोंमें आम क़ाइदह है, कि जब किसी जागीरदारका इन्तिक़ाल होजाता है तो उसके ठिकानेपर शुरूमें सर्कारी ख़ालिसह भेजदिया जाता है, और कुछ दिनों बाद उस जागीरदारके बेटेको वही ठिकाना और वही ख़िताब इनायत होजाता है; परन्तु केसरीसिंहने महता गोपालदासको बोहड़ा ग्रामके भीतर नहीं घुसनेदिया, और कहलादिया, कि भीतर आओगे तो हम गोलियां चलावेंगे. आख़रकार उदूल हुक्मीके कारण विक्रमी चैत्र कृष्ण ७ [हि० ता० २० जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० १९ मार्च] की पिछली रातको उदयपुरसे बोहड़ेकी तरफ़ फ़ौज रवानह हुई. शम्भु और सज्जन पल्टन और फ़र्स्ट केवलरी रिसाला

दो तोपें और तोपखानह व पल्टनका अफ़्सर लोनार्गिन साहिब और राय पन्नालाल महताका छोटा भाई लक्ष्मीलाल रवानह हुए, और मगरा ज़िलेसे भीमपल्टन तथा चित्तौड़गढ़से भीलपल्टन भेजी गई. वोहड़ेमें पहुंचकर महता लक्ष्मीलालने उन लोगों को बहुत कुछ समझाया, लेकिन् उन्होंने हुक्मकी तामील करनेसे इन्कार किया, तब गोलन्दाज़ी शुरू कीगई. अगर्चि वोहड़ेमें कोई क़िला नहीं है, लेकिन् रावत्‌के मकानके चारों तरफ़ प्रजाके घर होनेके सबब वह बेलाग है, और भीतर पानीका एक कुआं भी मौजूद है. इसके अलावह खानेपीनेका सामान भी उन लोगोंने एकट्ठा करलिया था, और आम रास्ते मज़्बूत फाटकोंसे बन्द करदिये थे. अधीशकी आज्ञा थी, कि फ़ौज भी हमारी और भीतरके राजपूत भी हमारे ही हैं, और दोनों तरफ़के आदमी मारेजानेमें हमारा ही नुक्सान है, इसलिये बग़ैर ख़ूंरेज़ीके वे लोग चले आवें तो ठीक है. फ़ौजके अफ्सरोंने भी उनके डरानेके लिये गोले चलाये. सुब्ह शाम गोले चलते रहे, लेकिन् उन लोगोंने हुक्मकी तामील बिल्कुल न की, तब फ़ौजको हमलह करनेका हुक्म पहुंचा. विक्रमी १९४१ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १३०१ ता० ९ जमा-दियुस्सानी = ई० १८८४ ता० ६ एप्रिल] को प्रातः कालके छः बजेसे फ़ौजने हमलह शुरू किया. वोहड़ेमें केसरीसिंहके पास ४०० लड़नेवाले आदमी मौजूद थे, तोपोंसे ग्रामके रास्तेकी फाटकें तोड़दी गईं, और पैदलोंने हमलह करदिया. भीतरसे भी जिन लोगोंने मोर्चे लेरक्खे थे, गोलियोंके चलानेमें कोताही न की; दो आदमी भीलपल्टन के मारेगये. थोड़ी देरके बाद उन लोगोंने पछेवड़ी फेरी, जोकि लड़ाई बन्द करनेकी प्रार्थना का एक चिन्ह है. यह देखकर फ़ौजके अफ्सरोंने बिगुल बजाकर लड़ाई बन्द करदी; लेकिन् कुछ देर पीछे धोखा देकर वोहड़े वालोंने एक दम बन्दूकें चलाईं, परन्तु फ़ौजके आदमियोंको नुक्सान नहीं पहुंचा, वर्नह इस हमलेमें सौ दोसौ आदमियोंका माराजाना संभव था. गांवमें आग भी लगगई. दिनके तीन बजे केसरीसिंह व शोभालाल कामदार, जो इस फ़सादका मूल कारण था, मए औरत, बच्चों व राजपूतोंके मकानसे निकलकर फ़ौजके आदमियोंपर गोलियां चलाते हुए निकल भागे. जो लोग उनको भागते वक्त गिरिफ्तार करनेके बन्दोबस्तपर थे उन्होंने पीछा किया, परन्तु वोहड़ा वालोंने भागकर एक मोर्चा जालिया, जिसको कि उन्होंने एक खेतमें मिट्टीसे तय्यार किया था, और वहांसे गोलियां चलाने लगे. जब फ़ौजवालोंने हमलह करके उस मोर्चेको तोड़डाला, तो वे लोग लड़ते हुए एक नालेमें पहुंचे, और वहां भी मोर्चा लेकर लड़ने लगे. फ़ौजके लोगोंने हमलह करके उस मोर्चेको भी छीन लिया, तब वे लोग पहाड़की तरफ़ चले, लेकिन् फ़ौजका हमलह ज़बर्दस्त होनेके कारण

ओरतोंको छोड़कर मैदानमें खड़े होगये, और मुस्तइदीके साथ गोलियां चलाने लगे. इस वक्त रिसालदार बहादुर गुलशेरखांके दाहिनी पसलीमें गोली लगी, और वह गिरा; उसके गिरते ही रिसाले वालोंने जोशमें आकर एकदम हमलह करदिया. इस हमलेमें दफ़ेदार हीरासिंहकी छातीमें गोली लगी. इन दोनों अफ़्सरोंके मारेजानेसे सिपाहियोंने ऐसी तेज़ीसे हमलह किया, कि उनको दूसरी दफ़ा बन्दूकें नहीं भरने दीं, और केसरीसिंह व शोभालाल वगैरहके हथियार डलवाकर उन्हें क़ैद करलिया. वे लोग ओरतों समेत फ़ौजमें लायेगये. महता लक्ष्मीलाल ने ओरतोंको तो रसीद लेकर बानसीके रावत् मानसिंहके सुपुर्द करदिया, और ३८ आदमी पकड़े गये. १३ आदमी ज़ख़्मी होकर गिरिफ़्तार हुए, और बाक़ी आग लगजानेसे धुएंकी धुंधलाहटमें भागगये. महता लक्ष्मीलालने महाराणा साहिबकी आज्ञानुसार बोहड़ाका बन्दोबस्त महता गोपालदासके सुपुर्द करके फ़ौज और क़ैदियों समेत वहांसे कूच किया. ये लोग विक्रमी वैशाख कृष्ण २ [हि० ता० १५ जमादियुस्सानी = ई० ता० १२ एप्रिल] की शामको ५ बजे उदयपुरमें हाज़िर होगये.

लड़ाईमें मारेजाने वालों और ज़ख़्मियोंकी फ़िह्रिस्त.

राज्यकी फ़ौजके जो आदमी और घोड़े मारेगये और ज़ख़्मी हुए वे नीचे दर्ज किये जाते हैं:-

(मारेगये)

१- रिसालदार बहादुर गुलशेरखां, दूसरे रिसालेका.
२- दफ़ेदार हीरासिंह, दूसरे रिसालेका.
३- नायक धनलाल, तीसरी कम्पनी चित्तौड़ पल्टनका.
४- राजपूत गुलाबसिंह सिपाही, सज्जनपल्टन कम्पनी अव्वलका.

(ज़ख़्मी हुए)

१- तोपख़ानहके लेफ़्टिनेण्ट मुम्ताज़अलीके पैरमें ख़फ़ीफ़ गोली लगी.
२- सिकन्दरख़ां रिसाले अव्वल छव्वीसकी जांघमें सख़्त गोली लगी, जो निकाली गई.

३- महबुल्लाहखां रिसाले अव्वल छब्बीसके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

४- राजपूत गुलाबसिंह सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेको ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

५- कुबेरसिंह सज्जनपल्टन तीसरी कम्पनी वालेके पैरमें सख़्त गोली लगी.

६- देवीसिंह सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेके पैरमें गोलीकी चरपट लगी.

७- गोविन्दसिंह चहुवान सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेके पैरोंमें गोलीकी चरपट लगी.

८- सूबहदार गणेशराम सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

९- लैस करीमबख़्श दूसरे रिसाले वालेके कानके पास गोली लगी.

१०- दूसरे रिसालेके सवार सुखमखांकी जांघमें सख़्त गोली लगी.

११- अह्मदखां सवार, रिसाला दुवुमके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

१२- नायक हरजी सोमाका, मुलाज़िम भील कम्पनी अव्वल चित्तौड़ पल्टनके मुंहपर सख़्त गोली लगी.

१३- सिपाही जामा मेघाका, भील कम्पनी दुवुम चित्तौड़ पल्टनके सख़्त गोली लगी.

१४- बिगुल्ची भोगा दल्लाका, मुलाज़िम भील कम्पनी अव्वल चित्तौड़ पल्टनके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

(घोड़े जो मरे और ज़ख़्मी हुए)

१- तोपख़ानहका सर्कारी घोड़ा, जिसपर लेफ़्टिनेएट मुम्ताज़अ़ली सवार था, मारा गया.

१- दूसरे रिसालेके सुखमख़ांका घोड़ा ज़ख़्मी हुआ.

१- अह्मदखां दूसरे रिसालेके सवारका घोड़ा ज़ख़्मी हुआ.

बोहड़ा वालोंके जो लोग मारेगये और ज़ख़्मी हुए उनकी फ़िह्रिस्त नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है:-

(मारेगये)

१- चूंडावत तख़्तसिंह ग्राम सुरेड़ाका; २- अभयसिंह सोलंखी सेमारीका; ३- गुलाबसिंह चूंडावत बोहड़ाका; ४- ब्राह्मण मोड़ा चौदेसा; ५- विलायती कमालख़ां ग्राम खेजड़ीका; ६- चाकर प्यारा; ७- चाकर गोपाल्या; ८- शक्तावन

हमीरसिंह मांडकलाका; ९- बाबा भगवानदास ग्राम खेजड़ीका; १०- सिपाही यार-मुहम्मदख़ां बड़ी सादड़ीका; ११- जवानसिंह सारंगदेवोत भूरक्याका; १२- कुशाल-सिंह राठौड़ ग्राम सीवासका; १३- गुमानसिंह भाखरोत गुढ़ाका; १४- रूपा चाकर; १५- चाकर पन्ना; १६- चाकर पृथ्वीराज; १७- ब्राह्मण नाम ना मालूम; १८- महाजन नाम ना मालूम.

(ज़ख्मी हुए)

१- गिरवरसिंह वलद किशोरसिंह शक्तावत, .उम्र वर्ष १८, सिकने बोहड़ा. यह शख्स केसरीसिंहका भाई है, इसके कमरमें गोली लगी जो पार होकर निकलगई, और बाएं हाथके पहुंचेपर फिर एक दूसरी गोली लगी.

२- बाघजी वलद जवानसिंह शक्तावत सि० बोहड़ा, .उम्र वर्ष ४५, बाएं पैरकी पिंडलीपर गोली लगी.

३- नवलसिंह वलद पनजी सि० सेमारी क़ौम शक्तावत, .उम्र २४ वर्ष; दाहिने पैरके टख़्नेपर गोली लगी.

४- दूलहसिंह वलद बलवन्तसिंह क़ौम राजपूत राठौड़, सि० खेजड़ी, .उम्र २५ वर्ष; दाहिने पैरमें गोली लगी.

५- चतरसिंह वलद गुमानसिंह क़ौम राजपूत भागलोत सि० खेजड़ी, .उम्र २५ वर्ष; मुंहपर गोली लगी.

६- माधवसिंह वलद अनोपसिंह राजपूत कूंपावत सि० सीवास, .उम्र ४५ वर्ष; कमरमें गोली लगी.

७- सुजानसिंह वलद बदनसिंह शक्तावत सि० सीवास, .उम्र २० वर्ष; बाएं पैरमें गोली लगी.

८- रघुनाथसिंह वलद गुमानसिंह राजपूत कूंपावत सि० सीवास, .उम्र १८ वर्ष; दाहिनी तरफ़ खवेपर और बाएं पैरमें दो गोलियां लगीं.

९- उदयसिंह वलद गुलाबसिंह राजपूत शक्तावत सि० सेमारी, .उम्र २८ साल; दोनों पैरकी पिंडलियोंमें गोली लगी.

१०- मुहम्मदख़ां वलद अहमदख़ां मुसलमान, .उम्र ३२ वर्ष; दाहिने हाथके बीचमें और खवों वग़ैरहपर चोट लगी.

११- रत्नसिंह वलद पहाड़सिंह राजपूत राठौड़ सि० खेजड़ी, .उम्र ३० साल; बाएं गोड़ेपर गोली लगी, जिससे ढांकणी जाती रही, और एक गोली हाथके बीचमें लगी.

ता० ७ ऑगस्ट] को कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेण्ट मेवाड़ जो छुट्टीपर विलायत गये थे, वापस उदयपुरमें आये, और कर्नेल् यूएन स्मिथ काइममकाम रेज़िडेण्ट मेवाड़ गये. इन दिनों महाराणा साहिबके शरीरमें कई तरहकी बीमारियां खड़ी होगई थीं, जिनमें पेटकी कुरकुरी तो बार बार इस तरह चलने लगी, कि जान निकलनेका ख़ौफ़ था. महाराणा साहिबने डॉक्टरोंका इलाज बन्द करके दिल्लीके नामी हकीम महमूदख़ांको बुलाया, लेकिन् उससे भी कुछ फ़ायदह न हुआ. तक्लीफ़के सबब अफ़ीम और शराबका इस्तेमाल भी बहुत बढ़गया, तब लाचार आबोहवा तब्दील करनेका इरादह हुआ, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्हिज = .ई० ता० २० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब जोधपुरकी तरफ़ रवानह हुए. महाराणा साहिबका ख़याल था, कि मारवाड़की खुश्क हवासे ज़रूर फ़ायदह होगा. देसूरीतक खींवाड़ाके ठाकुर वग़ैरह सर्दार और जोधपुरसे पांच कोस मोगड़ातक महाराजा साहिब खुद पेश्वाई करके महाराणा साहिबको राजधानीमें लेगये. महाराजा जशवन्तसिंह साहिबकी मिह्मानदारी और मुहब्बतमें दिन ब दिन तरक़्क़ी होती रही, और उधर महाराणा साहिबके बदनमें बीमारी बढ़ती गई जिसके दूर करनेको अफ़ीम और शराबका इस्तेमाल भी बढ़ा. इन दिनोंमें मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) माताका देहान्त होगया था, इस सबबसे ३०००) रुपया द्वादशाहके लिये इनायत करके महाराणा साहिब मुझे उदयपुरमेंही छोड़गये थे, पीछेसे मेरे पेटमें भी कुरकुरी ऐसी चली, कि ज़िन्दगीकी उम्मेद न रही, लेकिन् डॉक्टर पादरी समरविल साहिब और मिट्ठनलालकी दवासे आराम होगया. उसी नाताक़तीकी हालतमें कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेण्ट मेवाड़ने मुझे बुलाकर कहा, कि महाराणा साहिबके शरीरमें बीमारी बढ़ती जाती है, और उनके यहां मौजूद न होने व कामकी कस्रतके सबब मेरा तो जोधपुर जाना ठीक नहीं, लेकिन् आप जासक्ते हैं या नहीं? फिर डॉक्टर समरविल साहिबसे भी पूछा, तो उन्होंने कहा, कि पालकीकी डाकमें चलेजावें, तो कुछ नुक्सान नहीं. तब विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० १३०२ ता० २७ मुहर्रम = .ई० ता० १६ नोवेम्बर] को रातके बारह बजे पालकीमें सवार होकर मैं उदयपुरसे रवानह हुआ, और राजनगर होता हुआ जवालियाके स्टेशनसे रेलमें बैठकर दो दिन और दो रातके अरसहमें जोधपुर पहुंचा. वहां जाकर मैंने महाराणा साहिबसे ख़ानगी तौरपर बहुत कुछ अर्ज़ की, तो फ़र्माया, कि महाराजा साहिब रवानह नहीं होने देते. तब मैंने महाराजा साहिबको कर्नेल् वाल्टर साहिबकी चिट्ठी दी, जिसमें महाराणा साहिबको जल्दी रुख़्सत देनेके लिये बहुत कुछ लिखा था, और मैंने भी महाराजा साहिबको बहुत समझाया, तब उन्होंने मंजूर किया. जोधपुर महाराजा साहिबको भी कलकत्ते जाना था, इसलिये कहा कि हम महाराणा साहिबको अजमेर

तक पहुंचाकर कलकत्ते चलेजावेंगे. फिर दोनों अधीश जोधपुरसे सवार होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ सफ़र = ई० ता० २६ नोवेम्बर] की शामको स्पेशल ट्रेनमें विराजे, और विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ सफ़र = ई० ता० २७ नोवेम्बर] को अजमेर पहुंचे. कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब वग़ैरह लोग स्टेशनपर पेश्वाईको आये, मगर ट्रेनको देरी होजानेके कारण पीछे चले गये, और बेली साहिब व उणियाराके रावराजा वहां ठहरे रहे. रेलसे उतरकर दोनों अधीश मेयो कॉलेज देखनेके बाद महाराजा कृष्णगढ़के बंगलेमें ठहरे, जहां बारह बजे एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब मुलाक़ातको आये. मामूली बातोंके सिवा काठियावाड़के ज़िले जामनगरके महाराजाने जो अपनी मुसल्मान पासवानके लड़केको नाजाइज़ तौरपर वलीअह्द बनाकर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे मंजूरी मंगाली थी उस विषयमें बातचीत हुई. महाराणा साहिब और महाराजा साहिबने ब्राडफ़ोर्ड साहिबको कहा, कि ऐसा नहीं होना चाहिये, जिसपर साहिबने बहुत कुछ बह्स की, और कहा, कि आप राजपूतानहमें और वह काठियावाड़में हैं. इसपर महाराणा साहिबने कहा, कि अगर्चि वह ठिकाना राजपूतानहकी हदसे बाहिर है, लेकिन् हमारे हमक़ौम राजपूतोंका है, इसलिये हमको उनकी तरफ़दारी करना लाज़िम है, क्योंकि अंग्रेज़ लोग भी अपनी क़ौमके लिये तरफ़दारी करते हैं. थोड़ी देरतक बह्स होनेके बाद ब्राडफ़ोर्ड साहिबने कहा, कि मैं इस मुक़द्दमहकी मिस्ल मंगाकर आपके पास भेजूंगा, यह कहकर साहिब रुख़्सत हुए, और महाराणा साहिबने चित्तौड़गढ़ व महाराजा साहिबने कलकत्तेकी तरफ़ प्रस्थान किया. महाराणा साहिबके बदनमें इन दिनों कमज़ोरी और बीमारी बढ़तीजाती थी. कर्नेल् वाल्टर साहिब इसवक़ उदयपुरसे चित्तौड़गढ़की तरफ़ रवानह होगये थे, जो विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १४ सफ़र = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को रास्तहमें देबरी मक़ामपर मिले और मुझको कहा, कि ऐसी हालतमें आप जाकर महाराणा साहिबको लेआये, यह बहुत अच्छा किया. आख़िरकार विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ सफ़र = ई० ता० ७ डिसेम्बर] की शामके ६॥ बजे महाराणा साहिब बग्घीकी सवारी से उदयपुरमें दाख़िल होगये. ईश्वरकी इच्छाको कोई नहीं रोक सक्ता, विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २१ सफ़र = ई० ता० १० डिसेम्बर] को अर्द्धरात्रि व्यतीत हुई होगी, कि एकदम महाराणा साहिबको तासीर (मूर्च्छा) आई. उस समय डॉक्टर अक्बरअली, पाणेरी उदयराम, मामा अमानसिंह, महता प्यारचन्द आदि लोग मौजूद थे. डॉक्टर अक्बरअलीने इलाज शुरू किया और बारहट कृष्णसिंह बग्घीमें बैठकर रेज़िडेन्सीसे डॉक्टर जेम्स शेपर्डको बुला लाया. उन्होंने भी बहुत कुछ कोशिश की. यह ख़बर
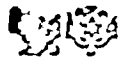
सुनकर मैं (कविराजा श्यामलदास), राय पन्नालाल, ठाकुर मनोहरसिंह, जानी मुकुन्दलाल, और मौलवी अब्दुर्रहमानखां वगैरह भी दौड़ दौड़कर महाराणा साहिबके पास पहुंचे. रातभर इलाज होता रहा, पैर, पिंडलियों और गर्दनपर ब्लिस्टर लगाये गये, जिससे दूसरे दिन क़रीब ८ बजे प्रातःकालको कुछ होश आया. इस वक्त महाराणा साहिबने खैरातके लिये १००००) रुपयोंका संकल्प किया और कुछ बातचीत भी की. थोड़ी देरके बाद माणक महलसे सूरज चौपाड़में पधारे, क्योंकि माणक महलमें काच लगे हुए थे, जिनके अक्ससे इस बीमारीका बढ़ना डॉक्टरोंने बयान किया था. कर्नेल् वाल्टर साहिब जो इसवक्त दौरेपर थे, फ़ौरन् तार देकर उदयपुरमें बुलाये गये. इसी रोज़ याने विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि॰ ता॰ २२ सफ़र = .ई॰ ता॰ ११ डिसेम्बर] के दिन महाराणा साहिबके शरीरपर कुछ कुछ उन्माद (जुनून) के आसार मालूम हुए, परन्तु रात्रिमें निद्रा आजानेसे फिर दुरुस्त होगये. विक्रमी पौष कृष्ण १० [हि॰ ता॰ २३ सफ़र = .ई॰ ता॰ १२ डिसेम्बर] को अर्द्धरात्रिके पीछे निद्रा नहीं आई, जिससे उन्माद बढ़ने लगा. विक्रमी पौष कृष्ण ११–१२–१३ [हि॰ ता॰ २४–२५–२६ सफ़र = .ई॰ ता॰ १३–१४–१५ डिसेम्बर] तक जुनून बहुत बढ़गया, यहांतक कि सब को नाउम्मेदी होगई. विक्रमी पौष कृष्ण १४ [हि॰ ता॰ २७ सफ़र = .ई॰ ता॰ १६ डिसेम्बर] को मनुष्योंकी पहिचान जाती रही. इसवक्त डॉक्टर जेम्स शेपर्ड, डॉक्टर सर्जन मलन और विंगेट साहिब मौजूद थे, इलाज होता रहा. डॉक्टरोंने क्लोरल नामी दवा दी, जिससे रात्रिके बारह बजे निद्रा आगई, और सुब्हतक नींद लेनेसे फिर होश हवास दुरुस्त होगये. विक्रमी पौष कृष्ण ऽऽ से शुक्ल ५ [हि॰ ता॰ २८ सफ़र से ३ रबीउ़ल्अव्वल = .ई॰ ता॰ १७ से २२ डिसेम्बर] तक बीमारीमें अच्छी तरह आराम होकर सिर्फ़ नकाहत ही बाक़ी रही थी. विक्रमी पौष शुक्ल ६ [हि॰ ता॰ ४ रबीउ़ल्अव्वल = .ई॰ ता॰ २३ डिसेम्बर] को पहर दिन चढ़ेके वक्त महाराणा साहिबने फ़र्माया, कि आज हमारी तबीअ़त दुरुस्त है, इसलिये जीमण मंगवाना चाहिये; चुनाचि खुदने जीमण आरोगा और ठाकुर मनोहरसिंह, बारहट कृष्णसिंह और उज्वल फ़तहकरणको भी अपने सामने बिठाकर जिमाया. इसके बाद महाराज शक्तिसिंह आये उनसे बातें कीं. सायंकालके वक्त जब मैं महलोंमें अपनी ओवरीपर भोजन करनेको गया, तो ६॥। बजे नारायण मर्दन्या दौड़ा हुआ मेरे पास आया, कि जल्दी चलो. मैं दौड़कर गया, तो देखता क्या हूं कि महाराणा साहिबको बड़ी सख्त तासीर (मूर्च्छा) आरही है. डॉक्टर रेवरेण्ड जेम्स शेपर्ड, एम॰ ए॰, एम॰ डी॰, और रेज़िडेन्सी सर्जन डॉक्टर मलन, और डॉक्टर अकबरअली बहुत कोशिश करने लगे. महाराज शक्तिसिंह भी दौड़कर आया. महता राय
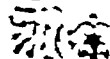
किया. प्रजाके इन्साफ़के लिये कौन्सिल क़ाइम करना, सेटल्मेण्ट जारी करके पक्के बन्दोवस्तका प्रबन्ध करना; इसके सिवा सर्हदपर साइरका बन्दोबस्त, पुलिसका इन्तिज़ाम, जंगी फ़ौज और तोपखानहकी दुरुस्ती, महकमह देवस्थानकी तरक़्क़ी, तवारीख़ वीरविनोदके लिये महकमह क़ाइम करना, और ऐतिहासिक पुस्तकोंका संचय, विद्याको उन्नति देना और उसके प्रबन्धके लिये एज्युकेशन (विद्या सम्बन्धी) कमिटी क़ाइम करना, और स्त्रियोंके लिये अस्पताल जारी करना, वगैरह बहुतसे उपयोगी और प्रशंसनीय काम किये. चित्तौड़से राजधानीतक रेलवे बनानेका हुक्म दिया; और गैर रियासतोंसे मेल मिलाप बढ़ाया. पोलिटिकल मुआमलातमें भी यह अच्छी ताक़त रखते थे; अंग्रेज़ अफ़्सरोंसे हरएक मुआमलहके वक्त बह्स करके दोस्तीसे काम्याब होते थे. उदयपुर शहरको इन्होंने ऐसी रौनक़ दी, कि खूबसूरतीका एक नया नमूनह बनगया. सज्जननिवास बाग़, और सज्जनगढ़के महलोंकी तामीर, और जयसमुद्र तालाबके बन्धकी तथा क़िले चित्तौड़की इमारतोंकी थोड़ीसी मरम्मत; ये सब बातें एक अरसहतक उनकी अक्लमन्दीको ज़ाहिर करेंगी. इन महाराणाके बड़े बड़े इरादे थे, लेकिन् अफ़्सोस, कि समयसे पहिले परलोकवास होजानेके कारण वह उन सब इरादोंको अपने दिलहीमें लेगये.

इन महाराणाकी पहिली शादी ईडरके महाराजा जवानसिंहकी बेटी और केसरीसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में, दूसरी शादी कृष्णगढके महाराजा पृथ्वीसिंहकी बेटी और शार्दूलसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में, और तीसरी शादी ईडरके महाराजा जवानसिंहकी दूसरी बेटी और केसरीसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] में हुई थी.

उक्त महाराणा साहिबके अह्द हुकूमतमें जो तामीरात सम्बन्धी नये काम हुए, याने महलात, मकानात व सड़कें वगैरह तय्यार कराई गईं, और पुराने मकानात वगैरह की मरम्मत हुई, उसमें कुल रु० २६१६२३१॥॥२ खर्च हुए, जिसकी तफ़्सील अस्बाब मुरद्याके भेजे हुए नक्शोंसे खुलासहके तौरपर नीचे दर्ज कीजाती है:-

नक्शह तामीर व मरम्मत मकानात वगैरह.

नम्बर	नाम काम.	कुल लागत.
१	शहरमें तथा शहरके आसपासके मकानों वगैरहकी तामीर व मरम्मतमें.	१२७८३३६। -॥२

२	सड़कोंकी तामीर व मरम्मतमें.	६६८७६५॥=)।
३	पर्गनों व ज़िलोंमें मकानों व तालाबों वग़ैरहकी तामीर व मरम्मतमें.	६५१६७७॥=)॥
४	ग़ैर इलाक़हके मकानात वग़ैरहकी तामीर व मरम्मतमें.	९४५१।=)॥।
	मीज़ान.	२६१६२३१)॥।२

मेवाड़का अहृदनामह.

एचिसन् साहिबकी अहृदनामोंकी किताब जिल्द चौथी उर्दूकी
पृष्ठ १०, और तीसरी अंग्रेज़ीकी पृष्ठ १७.

अहृदनामह नम्बर १ जो दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और मेवाड़के
महाराणा भीमसिंहके क़रार पाया.

अहृदनामह ऑनरेबल् अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराणा भीमसिंह राणा उदयपुरके दर्मियान, मिस्टर चार्ल्स थ्योफ़िलस मेट्कॉफकी मारिफ़त, जिनको ऑनरेबल् कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल् मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज, के० जी०, गवर्नर जेनरल बहादुरने पूरा अधिकार दिया था; और ठाकुर अजीतसिंहकी मारिफ़त, जिसको उक्त महाराणा साहिबकी तरफ़से पूरे इख़्तियार मिले थे, तै पाया.

शर्त अव्वल- दोस्ती, मिलाप, और एकता हमेशहके लिये दोनों सर्कारोंके बीचमें पुश्तोंतक क़ाइम रहेगी, और दोस्त व दुश्मन एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके समझे जावेंगे.

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह रियासत और मुल्क उदयपुरकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी- महाराणा साहिब उदयपुर हमेशह सर्कार अंग्रेज़ीकी इताअत किया-करेंगे, उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और किसी दूसरे रईस व रियासतसे तअल्लुक़ न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महाराणा साहिब उदयपुर किसी राजा या रियासतमे सर्कार अंग्रेज़ीकी मन्जूरी और इत्तिलाके बग़ैर सुलह न करेंगे, परन्तु उनकी मामूली दोस्तानह लिखा पढ़ी दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त पांचवीं- महाराणा साहिब उदयपुर किसी ग़ैरपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और जो कभी इत्तिफ़ाक़से तकार या झगड़ा किसीसे होगा, तो वह सर्पंची और फ़ैसलेके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द होगा.

शर्त छठी- उदयपुरकी मुल्क हालकी चौथाई आमदनी सालानह पांच वर्षतक सर्कार अंग्रेज़ीको बतौर ख़िराज अदा होगी, और उसके पीछे आठ हिस्सोंमेंसे तीन हिस्से हमेशहके वास्ते अदा किये जावेंगे. महाराणा साहिब ख़िराजके सम्बन्धका कुछ वासितह किसी और हुकूमतसे न रक्खेंगे, और अगर कोई इस क़िस्मका दावा पेश करेगा, तो अंग्रेज़ी सर्कार वादह करती है, कि वह उसका जवाब देगी.

शर्त सातवीं- जोकि महाराणा साहिब बयान करते हैं, कि उनके मुल्कमेंसे अक्सर .इलाके नाजाइज़ रीतिसे औरोंके क़ब्ज़ेमें आगये हैं, और वह चाहते हैं, कि उनको वापस दिलवाये जावें, और सर्कार अंग्रेज़ी ब वजह सहीह सहीह वाक़िफ़ियत न होनेके इस वक़्त पक्का वादह इस विषयमें नहीं करसक्ती, लेकिन् फिर भी इक़ार किया-जाता है, कि अंग्रेज़ी सर्कार हमेशह मुल्क उदयपुरकी बिह्तरीका लिहाज़ रक्खेगी, और हर मुआमलेका अस्ली हाल दर्याफ़्त करनेके बाद हर मौक़ेपर, जबकि वाजिब मालूम होगा, इस मक़्सदको पूरा करनेके लिये बखूबी कोशिश करेगी; और जो .इलाके इस तरह उदयपुरको अंग्रेज़ी सर्कारकी मददसे वापस मिलेंगे उनकी आमदनीके आठ हिस्सों मेंसे तीन हिस्से हमेशहके वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीको (ख़िराजके तौर) अदा होंगे.

शर्त आठवीं- राज उदयपुरकी फ़ौज रियासतकी हैसियतके बमूजिब सर्कार अंग्रेज़ीके तलब करनेपर दीजावेगी.

शर्त नवीं- महाराणा साहिब उदयपुर हमेशह अपने मुल्कके बाइख़्तियार हाकिम रहेंगे, और उनके राज्यमें अंग्रेज़ी अदालती हुकूमत जारी न होगी.

शर्त दसवीं- यह दस शर्तोंका अह्दनामह दिल्लीके मक़ामपर तय्यार होकर मिस्टर चार्ल्स थ्योफ़िलस मेट्कॉफ़ और ठाकुर अजीतसिंह बहादुरके दस्तख़त और मुहरसे ख़त्म हुआ; और हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल् गवर्नर जेनरल बहादुर और महाराणा

भीमसिंहजीकी तरफ़से इस अ़हृदनामहकी तस्दीक़ आजकी तारीख़से एक महीनेके अ़रसहमें होजावेगी-फ़क़त.

मक़ाम दिल्ली, तारीख़ १३ जैन्युअरी सन् १८१८ ई०

दस्तख़त सी० टी० मेट्कॉफ़. मुहर घड़ी

गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.

दस्तख़त ठाकुर अजीतसिंह.

दस्तख़त हेस्टिंग्ज़.

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने तारीख़ २२ जैन्युअरी सन् १८१८ ई० को मक़ाम ऊंचड़में तस्दीक़ किया.

दस्तख़त जे० एडम,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

ऊपर दर्ज किये हुए अ़हृदनामहके सिवा और भी चन्द अ़हृदनामे रियासत मेवाड़ और गवर्मेण्ट हिन्दके दर्मियान समय समयपर हुए हैं, परन्तु सबसे पहिला मुख्य अ़हृदनामह यही है.

महाराणा सज्जनसिंह,

वीसवां प्रकरण समाप्त.
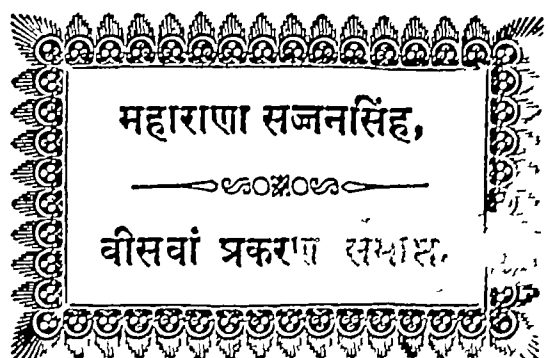
महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत
इतिहास वीरविनोद समाप्त (१).

(१) स्वर्गवासी कविराजा श्यामलदासने इस इतिहासको यहीं तक लिखा था, अतः उनका बनाया हुआ ग्रन्थ यहांपर समाप्त कियागया.